श्रीलिङ्गपुराण भाषा ॥

जिसमें

अनेकप्रकार के इतिहास मूर्तिप्रतिष्ठा व पूजा का फल पापोंके प्रायश्चित्त श्रीविष्णुके सम्पूर्ण अवतार व योग साधनादि हजारों विषय अतिविस्तारसे चमत्कारपूर्वक वर्णितहैं जिनके पढ़ने से चित्त अतिप्रसन्न होता है औ अनन्त पुण्य की प्राप्ति भी होती है ॥

जिसको

सद्गुणग्राहक, परिडतसुखदायक, भरतखण्ड के परमहि-
तैषी, आर्यों की उन्नति में अहोरात्र
लकिशोर (सी, आई, ई) की आ
महाराज गुलाबसिंह के मुख्य
सिंहतजी के पुत्र अलवर मान्यवर

दुर्गाप्रसाद ने

श्रीपण्डित सरयूप्रसादजी के द्वारा संस्कृत लिङ्गपुराण का आर्यभाषा में अनुवाद किया ॥

तीसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
नवम्बर सन् १८९७ ई० ॥

लिङ्गपुराण का सूचीपत्र ॥

उत्तरार्द्ध का सूचीपत्र

भूमिका

विदितहो कि धर्म, अर्थ, काम औ मोक्ष ये चार पदार्थ इसअसार संसारमें सार भूत हैं इसीलिये सब मनुष्य अपनी २ रुचिके अनुसार इनकी प्राप्तिके लिये यत्न करते हैं। इनचारोंमें भी धर्म प्रधान है धर्म के सेवन से ये सब प्राप्तहोते हैं। श्रीवेद व्यासजीने भी कहा है कि (ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष नचकश्चिच्छृणोतिमे। धर्मादर्थश्च कामश्च सकिमर्थनसेव्यते) धर्मकी प्राप्ति अपने २ वर्ण औ आश्रम के लिये कथित वैदिक कर्म के अनुष्ठानसे सदाहोतीरही। इसीसे पूर्व कालमें सब त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय औ वैश्य वेद पढ़ने में अतिपरिश्रम करते थे औ वेदपढ़ तदुक्त कर्म का अनुष्ठान कर अपना अभीष्ट फल पाते थे। परंतु कलियुग के मनुष्य ऐसे अल्पायुष् औ मन्दबुद्धि होंगे कि जो जन्मभर में अति परिश्रम करनेसे भी संपूर्ण वेद न पढ़सकेंगे। यह विचार कलियुग के मनुष्योंपर दयाकर परमकारुणिक श्री कृष्णद्वैपायन मुनि ने वेदके चार विभाग कर दिये इसी से उनका नाम वेदव्यास भया औ वेदकाही आशय लेकर अठारहपुराण औ महाभारत नाम इतिहास द्वापर युग के अंत में रचे कि जिनके पठनआदिसे थोड़े परिश्रम करके भी कलियुगके मन्दबुद्धि आर्यजनों को धर्मका ज्ञान भलीभांति होजाता था। औ धर्माचरण करनेसे उत्तम २ फल पातेथे। परंतु पुराणआदि का तात्पर्य्य समझने के लिये संस्कृत का बोधहोना चाहिये। औ वर्त्तमान समय में आर्य लोकों से प्रायः संस्कृत विद्याका अभ्यास छूटगया है। इसीसे पुराण आदिका परिशीलन नहीं कर सक्ते औ वर्णाश्रम धर्म को नहीं जानते। जब धर्म का ज्ञानही न हुआ तो धर्माचरण क्योंकर होसक्ता है। औ धर्माचरण के बिना आयुष्, बुद्धि, बल, ऐश्वर्य, तेज, विद्या, धन, पौरुष, संतान, कीर्त्ति आदि से हीन होगये औ प्रतिदिन होते जाते हैं। यह दुर्दशा अपने बंधु आर्यजनों की देख औ सब पुरुषार्थ प्राप्ति का मूल ज्ञान पूर्वक धर्माचरण औ धर्मज्ञानका मूल पुराण इतिहास आदिका परिशीलन जान औ आर्यजनों को प्रायः संस्कृत भाषा के अनभिज्ञ देख विज्ञातिविज्ञ भारतवर्ष के परमहितैषी आर्यजनों की वृद्धि होने के लिये बद्धकक्ष अतिदक्ष हुनर वंशावतंस अवधअखबार पत्र सम्पादक श्रीमुन्शी नवलकिशोर साहब ने यह इच्छा की कि सब पुराण यदि आर्यभाषामें अनुवाद कियेजायँ तो सबआर्यजन उनका अभिप्राय सुगमता से जान सकें औ यथार्थ धर्मका स्वरूप पहिचान दुराचरणों से निवृत्तहो सत्कर्म में प्रवृत्तहोयँ। औ ईश्वरके अनुग्रहसे सब प्रकारके क्लेशोंसे छुट अपारिमित आनन्द पावें। यहमनमें निश्चयकर मुन्शी साहबने इसकार्य में सत्कार पूर्वक हम को नियुक्त किया। हमने भी उनकी इच्छानुसार अठारह पुराणों में ग्यारहवें पुराण औ ग्यारह सहस्र श्लोक प्रमाण श्री लिंगपुराण का आर्यभाषा में अनुवाद किया। इसपुराण में अनेक उत्तम २ विषय भरे हैं। जिनके पठनसे धर्मका स्वरूप औ श्रीसदाशिव का प्रभाव ज्ञात होता है। अब हम आशा रखते हैं कि सरल हृदय औ क्षमाशील सज्जन इसपुराण के पाठक आर्यजन अशुद्धता आदि दोषों पर दृष्टि न देकर केवल गुण ग्रहणही करेंगे औ ईश्वरके अनुग्रह से कल्याण के भागी होंगे ॥ शुभम् ॥

श्रीपण्डितदुर्गाप्रसाद

जयपुर

मईसन् १८८९ ई०



लिङ्गपुराण का भाषा अनुवाद

पूर्वार्द्ध ॥

पहिला अध्याय

दो० विबुध मुकुट मणि दीपिका नीराजित दिनरैन ।
विघ्न हरैं हेरम्ब के चरण कमल सुखदैन १
भजौं नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु ।
भक्त मनोरथ कल्पतरु भवसागर के सेतु २
ब्रह्म विष्णु शिव रूपसे सृष्टि स्थिति संहार ।
करत ताहि जगदीश को विनवौं बारम्बार ३

एकसमय श्रीनारदमुनि शैलेश, संगमेश्वर, हिरण्यगर्भ, स्वर्लीन, अविमुक्त, महालय, रौद्र, गोप्रक्षक, पाशुपत, विघ्नेश्वर, केदार, गोमायुकेश्वर, हिरण्यगर्भ, चन्द्रेश्वर, ईशान, त्रिविष्टप और शुक्रेश्वर आदि उत्तम २ शिवक्षेत्रों में श्रीमहादेव जीका पूजन करते हुये औ संसार का चमत्कार देखतेहुये नैमिषारण्य में पहुँचे वहां सब शौनक आदि मुनि नारदजी को देख अतिमुदित भये औ बड़ी प्रीतिसे आगत स्वागत कर

उत्तम आसनपर वैठाय उनका सत्कारसे पूजन करते भये। नारदजी भी परमभक्ति से मुनियों के प्रति शिव जी का माहात्म्य सुनाने लगे इसी अवसरमें व्यासजीके शिष्य औ सव पुराण इतिहास आदिके जाननेहारे श्री सूतजी भी ऋषियों के दर्शन के अर्थ नैमिषारण्य में आये उनको देख सव मुनि मुदित भये औ भली भांति सत्कारकर आदरसे वैठाय कहने लगे कि हे सूतजी आपने श्रीवेदव्यासजी का वहुत आराधन किया है औ उन्होंने भी अनुग्रह से सव पुराण आपको पढ़ाये अव आप वह संहिता हमको सुनाइये जिसमें शिवलिङ्गका माहात्म्य विशेष करके वर्णितहै इस समय अनेक क्षेत्रों में शिव पूजन करतहुये नारदमुनि भी यहां प्राप्त भयेहैं ये परम शिवभक्त हैं औ आप तथा हमभी महादेवजी के चरणारविंदके आराधनमें तत्पर हैं इसलिये अव आप नारदजी के सम्मुखही पुराण सुनावें कि आपका भी परिश्रम सफल होय। यह मुनियों का वचन सुन अति हर्षित हो सव मुनियों को तथा नारदजी को प्रणामकर सूतजी पुराण कहने लगे॥

दो॰ पञ्चानन चतुराननहिं व्यासहि विष्णु समान।
वार वार शिर नायके वरणौं लिङ्गपुरान १

शब्द ब्रह्मस्वरूप औ शब्द ब्रह्मका प्रकाश करनेहारा वर्णही जिसके अवयव अर्थात् अंग हैं वह परमात्मा अनेक रूपसे स्थितहै तोभी अव्यक्त अर्थात् अप्रकटरूप है अकार, उकार, मकार रूपसे स्थूल और सूक्ष्म तथा परात्पर है अर्थात् स्थूल सूक्ष्म औ परात्पर

ये तीनि जिसकी अवस्था हैं वह ओंकारस्वरूप परमात्मा कि ऋग्वेद जिसका मुख, सामवेद जिसकी जिह्वा, यजुर्वेद ग्रीवा अर्थात् गर्दन औ अथर्वण वेद जिसका हृदय है औ वह जन्म मरण आदि से रहित सर्व्व व्यापक है औ वहीतमोगुणसे कालरुद्र, रजोगुणसे हिरण्यगर्भ अर्थात् ब्रह्मा, सत्वगुण करिकेविष्णु होताहै औ जब निर्गुण अर्थात् सत्व, रज, तम इनतीनों गुणों से रहित होता है तब महेश्वर अर्थात परमात्मस्वरूपहै औ जो परमात्मा अव्यक्त औ जीवको व्याप्त करके महत्तत्व, अहंकार, शब्द, रस, रूप, गंध, स्पर्श इन सात रूपों से औ पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांचकर्मेन्द्रिय, पंचमहाभूत औ मन, इन सोलह प्रकारोंसे तथा महत्तत्त्व आदि सात पांच कर्मेन्द्रिय, पांचज्ञानेन्द्रिय, पांच महाभूत, मन, अव्यक्त, ध्याता, धेय इन छव्वीसों भेदों से स्थित है औ अजोद्भव अर्थात् माया अथवा ब्रह्माका उत्पत्ति स्थान है औ लिंगरूपसे संसार का सृष्टि स्थिति संहार जो परमात्मा करताहै उसको बारबार प्रणाम कर परम मंगल दायक औ सब पाप दूर करनेहारा लिंगपुराण हे मुनीश्वरो अब हम आपको श्रवण कराते हैं आपभी प्रीति से सुनें॥

दूसरा अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जो अति उत्तम लिंग पुराण ईशानकल्पका वृत्तांत लेकर संसार के उद्धार के लिये श्रीब्रह्माजी ने रचाहै वह कोटि श्लोक प्रमाणहै।

औ सब पुराणोंकी संख्या सौकरोर श्लोकथी उसका सार लेकर श्री वेदव्यास जी ने कलियुग के जीवोंका कल्याण होने के लिये चारलक्ष श्लोकों में अठारहपुराण द्वापरमें रचे उनपुराणोंमें पाहिला ब्रह्मपुराण है औ ग्यारहवां यह लिंगपुराण है औ ग्यारहसहस्र श्लोक इसकी संख्याहै और इसमें जो विषय वर्णित हैं उनकी अनुक्रमणि का हम कहते हैं प्राधानिकसर्ग,प्राकृतसर्ग वैकृतसर्ग,अंडकी उत्पत्ति,अंडके आठआवरण,रजोगुणसे विष्णुका उद्भव, कालरुद्रका वर्णन, विष्णु का जलमें शयन, प्रजापतियों का सर्ग, पृथ्वीका उद्धार, ब्रह्माका दिन रात, ब्रह्मा का आयुष, ब्रह्मसवनयुग,कल्प, दिव्य, मानुष, आर्ष, पितृ, ध्रौव्यवर्षोंकी संख्या, पितरोंकी उत्पत्ति, आश्रमियोंका धर्म, जगत् का संक्षेप, देवी की उत्पत्ति, ब्रह्मा का स्त्री पुरुष भाव मिथुनसे सृष्टि, रुद्रकी आठ आख्या जो रोदनांतर में कही हैं ब्रह्मा विष्णुका विवाद औ लिंगकी उत्पत्ति,शिलाद का तप औ इन्द्रका दर्शन देना,पुत्रकी प्रार्थना पुत्रका दुर्लभत्व कहना, इन्द्रका शिलाद से संवाद, ब्रह्माकी कमल से उत्पत्ति, कलियुगमें गुरु शिष्य को शिवका दर्शन, व्यासजी के अवतार कल्पमन्वंतर आदिका कथन, कल्पों के नाम,वाराह कल्पमें विष्णुका वराहत्त्व,विष्णुका वराहत्व, मेघ वाहन कल्प का वृत्तांत औ रुद्र का गौरव ऋषियों के मध्य में शिवजी के लिंग का प्रादुर्भाव लिंग का आराधन स्नानकी विधि,शौच का लक्षण, काशीके तथा अन्य क्षेत्रों के माहात्म्य का वर्णन, भूमि पर शिवालय तथा विष्णु मन्दिरों की सं-

स्या, इस ब्रह्मांड के अन्तरिक्ष में देवालयों का वर्णन, दक्ष का भूमि पर गिरना, स्वारोचिषमन्वन्तरमें दक्षको शाप औ शाप मोक्ष कैलासका वर्णन पाशुपति योग चार युगों का प्रमाण औ युगों का धर्म, सन्ध्यांश का वर्णन सन्ध्यासमय में शिवजी का वृत्तांत शिवकाश्मशानवास चन्द्रकलाओं की उत्पत्ति, शिवजी का विवाह, पुत्रों का उत्पन्न करना, बहुत काल मैथुन के कारण जगत् का क्षय होना, देवताओं प्रति सतीजीका शाप, त्रिपुर वध करके विष्णुकी रक्षा, शिवजी का वीर्य त्याग और स्कन्दकी उत्पत्ति, ग्रहणआदि कालों में लिंगस्नानका फल, क्षुप औ दधीचि का विवाद, दधीचि औ विष्णु का विवाद, नन्दी नाम करिके शिवजी की उत्पत्ति पतिव्रता का आख्यान, पशुपाश का विचार, प्रवृत्ति औ निवृत्तिका लक्षण, वशिष्ठ जी के पुत्रों की उत्पत्ति औ उनके वंशका वर्णन, राजाओं की शक्तिका नाश, कौशिक की दुष्टता, कामधेनु का बंधन, वशिष्ठजी का पुत्रशोक, अरुंधती का विलाप, स्नुषांका भेजना औ गर्भमेंस्थित बालका वचन, पराशर, व्यास औ शुकदेव जी के अवतार का वर्णन वशिष्ठ जीका किया राक्षसों का संहार, देवताओं का परमार्थ विज्ञान औ प्रसाद, पुलस्त्य गुरुकी आज्ञा से पुराण का रचना, भुवनोंका प्रमाण, ग्रह नक्षत्र आदिकों की गति जीवित पुरुष के श्राद्ध का विधान, श्राद्ध के अधिकारी, श्राद्ध की विधि, नांदीश्राद्धकी विधि, अध्ययन की विधि, पंचयज्ञ का प्रभाव, पंचयज्ञकी विधि, रजस्वला स्त्रीकीवृत्ति,

पुत्र की विशिष्टता, चारों वर्णों में मैथुन की विधि, सब वर्णों में भक्ष्याभक्ष्यका विधान, सब का प्रायश्चित्त, नरकों का स्वरूप कर्मानुसार दंडका वर्णन, स्वर्गी औ नारकी जीवों के दूसरे जन्म में चिह्न, अनेक प्रकार के दानों का वर्णन, प्रेतराज के नगर का वर्णन, पंचाक्षर मंत्रका कल्प रुद्रका माहात्म्य, वृत्रका औ इन्द्रका घोरयुद्ध, विश्वरूप का विमर्दन, श्वेतमुनि औ मृत्यु का संवाद, श्वेत के अर्थ मृत्यु का नाश, देवदारु वन में शिवजी का प्रवेश, शिवजी का औ सुदर्शन का आख्यान, क्रम सम्मान का लक्षण, श्रद्धा करिकेही रुद्र की प्रसन्नता, ब्रह्माजी की मधुकैटभ नाम दैत्यों करिके नष्ट ज्ञानता ब्रह्माजी को ज्ञान उपदेश करनेके अर्थ विष्णु जीका मत्स्य अवतार, सर्व अवस्थाओं में लीलासे ही विष्णुजी के अवतार शिवजी के अनुग्रह से, कृष्णतथा प्रद्युम्न की उत्पत्ति, मंदराचल धारण के लिये विष्णु का कूर्मावतार, संकर्षण, औ कौशिकी का अवतार, यादवों की उत्पत्ति, विष्णुका यादवों में अवतार, श्री कृष्णके मातुल कंसकी दुष्टता, कृष्ण की बालक्रीड़ा, पुत्र प्राप्ति के लिये श्रीकृष्ण जीने किया शिवाराधन रुद्रसे कपाल विषे जलकी उत्पत्ति, पृथुराजका किया भूमि दोहन, देवासुर संग्राम विषे विष्णु जी के प्रति भृगुमुनि का शाप, कृष्ण का द्वारका में निवास, दुर्वासा मुनिका विष्णु के प्रति शाप, वृष्णि औ अंधकोंके नाश के लिये पिंडारक क्षेत्र निवासी ऋषियों का शाप, समुद्र में एरका नाम तृणकी उत्पत्ति, औ एरकासे यादवों का

परस्पर युद्धऔ सबका संहार सब यादवों का संहारकर श्री कृष्णजी का भी अपनी इच्छा से अपने लोक को गमन, ब्रह्मा के मोक्षका ज्ञान विस्तार पूर्वक, इंद्र हस्ती मृगरूपी अंधक, अग्नि, दक्ष औ कामदेव, तथाब्रह्माजी, असुर, हलाहल, दैत्य इनकी अवज्ञा महादेवजीने करीहुई, जलंधर का वध, सुदर्शन की उत्पत्ति विष्णु जी को उत्तम आयुधों की प्राप्ति, रुद्रके चरित्र, विष्णु ब्रह्मा और इंद्र का प्रभाव, शिवलोक का वर्णन, भूमि पर रुद्रलोक, पाताल में हाटकेश्वर का वर्णन, तपका लक्षण, ब्राह्मणों का वैभव, सब मूर्त्तियों में लिंगमूर्त्ति का आधिक्य इतने विषय इस लिङ्गपुराण में विस्तार से अपने २ अवसर में वर्णन किये हैं यह सब पुराण का संक्षेप जो पुरुष जाने औ कीर्त्तन करे वह सब पापोंसे मुक्त हो ब्रह्मलोक पावे॥

तीसरा अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो वह परमेश्वर अलिंग अर्थात् निर्गुण है लिंग अर्थात् प्रकृतिका मूल है उसीको शिव कहते हैं और प्रधान प्रकृति, अव्यक्त ये लिङ्गके नाम हैं वह शिव शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, वर्ण से हीन निर्गुण, ध्रुव, अलक्ष्य है उसको अलिंग कहते हैं और वह शब्द स्पर्शादिकों करके युक्त होता है तब स्थूल स्वरूप लिंग कहाता है उस परमेश्वर के लिंग माया करके पूर्वोक्त छब्बीस रूपों करके विस्तारको प्राप्त होरहे हैं उन्हींसेही तीन देवता उत्पन्न भये उन तीनों

देवों में एक संसार को उत्पन्न कर्त्ता है दूसरा पालन औ तीसरा संहार कर्त्ता है औ वह शिव सब जगत्‌में व्याप्त है इससे जगत् भी परब्रह्म का स्वरूपही है औ उस परमेश्वर से उत्पन्न हुये ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ये विश्व, प्राज्ञ औ तैजस संज्ञक हैं वह रुद्रही जगत्‌का बीज अर्थात् कारण है औ इसी रुद्रको नित्य बुद्धि स्वभाव से पुराणों में परमात्मा अर्थात् तुरीय, ब्रह्मा, मुनि, शिव आदि नामोंसे कहते हैं औ सृष्टि के आदि में वह प्रकृति शिव की इच्छा से व्यक्त अर्थात् प्रकट होती है उसीसे महत्तत्त्व आदि स्थूल भूतों पर्य्यंत जगत् उत्पन्न होताहै वह माया अजा कहाती है औ लोहित, शुक्ल कृष्ण उस के वर्ण हैं एक है औ अनेकप्रकार की प्रजाको उत्पन्न करतीहै यह जीव प्रीति से उसकी सेवा करता हुआ उसके आधीन रहताहै जब वह जीव मायाको भली भांति भोग लेता है तब उसको त्याग देता है वह माया परमेश्वर करके अधिष्ठित हुई २ सब जगत् को उत्पन्न करती है सृष्टि के समय तीन गुणों करके युक्त प्रधानसे ईश्वरकी इच्छा करके महत्तत्व उत्पन्न होता है वह महत्तत्त्व आत्मा करके अधिष्ठित परमेश्वर की प्रेरणा से अव्यक्तमें प्रवेशकर व्यक्त सृष्टिको उत्पन्न करताहै उस महत्तत्त्वसे संकल्पाध्यवसायिकावृत्ति अर्थात् सात्विक, अहङ्कार, त्रिगुण, रजोधिक, अहङ्कार उत्पन्न भये औ रजोगुण करके अधिक व्याप्तही तामस अहंकार उत्पन्न हुआ औ महात्तत्त्व सेही सृष्टि करनेवाले भूत तन्मात्र अर्थात् शब्द स्पर्शादिक उत्पन्न भये अहंकार से शब्द

तन्मात्र औ शब्द तन्मात्रसे आकाश उत्पन्न हुआ औ आकाश ने शब्द को आवरण किया इसीसे आकाश शब्द का कारण कहाया आकाशसे स्पर्श तन्मात्र औ स्पर्श तन्मात्र से वायु उत्पन्न भया वायुसे रूप तन्मात्र औ रूप तन्मात्र से अग्नि, अग्निसे रस तन्मात्र औ रस तन्मात्रसे जल, जलसे गन्ध तन्मात्र औ गन्ध तन्मात्रसे भूमि उत्पन्न भई आकाशने स्पर्श मात्र को आवरण किया वायु ने रूप मात्र को अग्नि ने रसमात्र को जल ने गन्धमात्र को आवरण किया पृथ्वी में पांच गुण हैं जल में चार अग्नि में तीन वायु में दो गुण औ आकाश में एक गुण है। इस प्रकार तन्मात्रा और पंच महाभूतों की उत्पत्ति परस्पर जाननी चाहिये। सात्विक राजस तामस सर्गकी प्रवृत्ति युगपत् अर्थात् एककाल मेंही होता है परंतु यहां अहंकार सेही सबकी सर्ग अर्थात् उत्पत्ति लिखी है और इस जीव को शब्दादिकों का बोध होनेके अर्थ परमेश्वरने पांच ज्ञानेन्द्रिय औ पांच कर्मेन्द्रिय रचे और मन उभयात्मक अर्थात् ज्ञानेन्द्रिय औ कर्मेन्द्रिय दोनोंके गुण से रचा। महत्तत्त्व आदिकों ने जलबुद्बुद की भांति इसअंड को उत्पन्न किया औ ब्रह्मा विष्णु रुद्र औ यह संपूर्ण विश्व उसके भीतर उत्पन्न भया औ यह अंड चारों ओर आकाशसे व्याप्तहै औ आकाश अहंकारकरके वेष्टितहै अहंकार महत्तत्त्व करके औ महत्तत्त्व प्रधान करके वेष्टित है। औ इस अंडका आत्मा ब्रह्माहै। इस प्रकारके कई कोटि ब्रह्मांड और भी हैं औ सबमें ब्रह्मा

विष्णु शिव पृथक् २ रहैं। इस प्रकार सर्ग औ प्रति-सर्ग का करने वाला वही परमेश्वर है। रजोगुण करके युक्तहो सृष्टिकरता है सत्वगुण को अवलंबन कर पालन औ तमोगुण से सब सृष्टिका संहार वहीकरता है। इस प्रकार वही परमेश्वर तीनरूप धारण कर सृष्टिस्थिति संहार सदा किया करता है इससे ब्रह्मा विष्णु रुद्र वह एकही परमेश्वर है वह ब्रह्मा इस सृष्टिका रचने हारा इस अंडके मध्यमें स्थित है। हे मुनीश्वरो यह हमने प्रथम प्राकृत सर्ग आपको सुनाया है॥

चौथा अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस सर्ग का जितना समय है वही ब्रह्माजीका दिन है औ दिनके बराबरही उनकी रात्रि है। दिन में सब देवता ऋषि मनुष्य आदिक उत्पन्न होते हैं औ रात्रिको सब लीन हो जाते हैं। वह ब्रह्माजी का दिन चार सहस्र युगका है इतने समयमें चौदह मनु बीत जाते हैं १ चारयुगोंका प्रमाण क्रमसे दिव्य वर्ष चार सहस्र तीन सहस्र दो सहस्र औ एक सहस्र हैं। औ इनकी सन्ध्या क्रम से चार सौ तीन सौ दो सौ औ एक सौ वर्ष है। आरोग्य पुरुष जितने समय में पंद्रह निमेष करे उतने काल का नाम काष्ठा है। तीस काष्ठा की एक कला तीस कलाका एक मुहूर्त्त पंद्रह मुहूर्त्त का दिन औ पंद्रह मुहूर्त्त की रात्रि पंद्रह दिनका पक्ष वही पितरों का दिन औ दूसरा पक्ष पितरों की रात्रि होती है। अर्थात् कृष्णपक्ष

पितरों का दिन औ शुक्लपक्ष रात्रि है। औ मनुष्यों के तीस महीने में पितरों का एक महीना पूरा होता है। औ मनुष्यों के तीनसौ साठ महीने में पितरों का एक वर्ष होता है। औ मनुष्यों के सौवर्ष करके पितरों के तीन वर्ष औ दस महीने होते हैं मनुष्यों का एक वर्ष देवताओं का दिनरात्रि है जिसमें उत्तरायण दिन औ दक्षिणायन रात्रि होती है। इस प्रकार मनुष्यों के तीन वर्ष का देवताओं का महीना होता है। मनुष्यों के सौ वर्ष करके देवताओं के तीन महीने औ दश दिन होते हैं। मनुष्यों के तीनसौ साठ वर्ष करके देवताओं का एक वर्ष होता है। तीन हज़ार औ तीस वर्ष का एक सप्तर्षि वर्ष होता है। औ मनुष्यों के नौ हज़ार वर्ष औ नव्वे वर्ष करके ध्रुव का एक वर्ष होता है। मनुष्यों के छत्तीस हज़ार वर्ष का एक दिव्य वर्ष होताहै तीनलाख साठ हज़ार मनुष्य वर्षोंके दिव्यहज़ार वर्ष होते हैं। दिव्य प्रमाण से ही युगों की कल्पना है पहिला कृतयुग दूसरा त्रेता तीसरा द्वापर और चौथा कलियुग कहाता है कृतयुग का प्रमाण १४४०००० वर्ष हैं और त्रेताका प्रमाण १०८०००० द्वापर का प्रमाण ७२०००० कलियुगका प्रमाण ३६०००० यह चारों युगोंका काल अपनी २ सन्ध्या विना कहा है औ यह सब मिलकर ३६००००० होता है और चारोंयुगों की संध्या का प्रमाण ३६०००० यहहै इतने इकहत्तर गुणे चारोंयुगों के तीन काल में एक मनु व्यतीत होता है इसवर्षों के समूह करके मन्वंतर की संख्या कही है मनुष्य मा-

नसे ३०६७२०००० इतने वर्ष सब मनुओंके होते हैं एक सहस्र चतुर्युगका एककल्प होताहै इसप्रकार ब्रह्मा जी अपने दिन के आरंभ में सृष्टि करते हैं औ रात्रि को सबका संहार होता है। उसमें अट्ठाइस करोड़ देवता हैं। औ मन्वंतर में३९२००००००० यह संख्या है औ कल्प व्यतीत होनेपर ७८०००००००००० यह संख्या होती है। औ प्रलय के समय महर्लोक में रहने वाले भी जनलोक में चले जाते हैं। दो सहस्र कोटि आठसौ कोटि दो सहस्र कल्प आठसौ कोटि तिरसठ कोटि सत्तर नियुत यह आधे दिव्य कल्प की संख्या है। इसी से कल्प की संख्या भी ज्ञात होती है। औ हज़ार कल्प करके ब्रह्माका एक वर्ष होता है औ आठ हज़ार ब्रह्माकेवर्षों करके ब्रह्माका युग होता है औ ब्रह्मा के सहस्र युग करके एक विष्णु दिन होता है औ विष्णु के नौ हज़ार दिन करके एकरुद्र दिन होता है। अब कल्पों के नाम कहते हैं भवोद्भव, तप, भव्य, रंभकल्प, वह्नि, हव्यवाह, सावित्र, सर्व, उशिक, कुशिक, गांधार, ऋषभ, षड्ज, गांधारीय, मध्यम, वैराज, निषाद, मेघवाहन, पंचम, चित्रक, सांकृति, ज्ञान, मन, दर्श, बृंहद, श्वेतलोहित, रक्त, पीतवासा, असित ये ब्रह्मा के कल्प कहे हैं। इस प्रकारब्रह्माकी रात्रि दिनसे करोड़ों कल्प बीतगये औ करोड़ोंही बीतेंगे। महा प्रलय के समय में सब विश्व प्रलय होते हैं औ पीछे शिव की आज्ञा से प्रलय का भी प्रलय होजाता है। इसप्रकार सब का प्रलय होने के अनंतर प्रकृति औ पुरुष

दोही शेष रहते हैं। इस प्रकार गुणोंके वैधर्म्य से सृष्टि औ समता से प्रलय होताहै औ इसका हेतु वही महेश्वर है। इसप्रकार अनगिनत सर्ग वह परमेश्वर करता है औ असंख्यात कल्प तथा ब्रह्मा विष्णु रुद्र भी असंख्यातही उत्पन्न होते हैं परंतु वह महेश्वर एकही है। इस भांति प्रकृति से प्राकृत सर्ग होते हैं। औ उस परमेश्वर की वृत्ति सत्त्व, रज, तम, इनतीन गुणों करके तीन प्रकार की है। उस अप्राकृतिक का आदि मध्य अन्त नहीं है। ब्रह्मा का आयुष् दोपरार्द्ध है औ जो कुछ ब्रह्मा अपने दिन में रचता है रात्रि में उसका नाश होजाता है। औ भूः, भुवः, स्वः, ये लोक तो नष्टहो जाते हैं औ इनसे ऊपर के लोक बचते हैं। इस रीति सबका संहार कर जलमें ब्रह्मा जी शयन करते हैं इससे उन्हीं का नाम नारायण है। फिरि रात्रि व्यतीत होनेपर ब्रह्मा जी उठे औ देखा कि सब शून्य पड़ा है तब सृष्टिकरने का विचार किया औ जलमें डूबीहुई भूमि को वराहरूप धरके निकाला औ पहिलीरीति से अपनेस्थान पर स्थापन किया। औ उसमें नदी, नद, समुद्र, सब अपने अपने स्थानपर बनाय पर्वतों को रचकर भू आदि चारलोक रचतेभये औ सब जीवों के सिरजनेका विचारकिया ॥

पांचवां अध्याय ॥

सूतजीकहतेहैं कि हे मुनीश्वरो जब ब्रह्माजीने सृष्टि रचने की इच्छाकरी तब उनको तम, मोह, महामोह, ता-

मिश्र, अंध इस पांचप्रकार की अविद्या ने घेरा उसकाल में जो ब्रह्माजी ने सृष्टि रची वह मुख्य न भई औ ब्रह्माजीने विचार किया कि यह सृष्टि कुछ कार्य्य साधक नहीं और रचनी चाहिये तब वृक्ष रचे पीछे उनसे पशु देवता और मनुष्य क्रमसे उत्पन्न भये औ ब्रह्माजी से महत्तत्त्वआदि भूततन्मात्रासर्ग दूसरा भया तीसरा इंद्रियोंका सर्गहुआ चौथा मुख्य सर्ग अर्थात् वृक्ष आदि उत्पन्न भये पांचवांसर्ग पशु आदि छठवां देवता सातवां मनुष्य आठवां अनुग्रह सर्ग औ नवां कौमार सर्ग ब्रह्माजीने किया ये नव प्रकार के प्राकृतसर्गही वैकृत कहातेहैं फिर ब्रह्माजीने अपने अग्रभागसे सनक सनन्दन सनातन आदि मुनि उत्पन्न किये जोकि नैःकर्म्य अर्थात् कर्मके त्यागसे जीवन्मुक्तिभये फिर योगविद्याकरके मरीचि, भृगु, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, अत्रि, वशिष्ठ ये नवपुत्र ब्रह्मवादी औ अपने तुल्य ब्रह्माजीने उत्पन्न किये। संकल्प धर्म औ अधर्म को भी उत्पन्न किया। इस प्रकार बारह प्रजा ब्रह्माजी की भई औ आदि में ऋभु औ सनत्कुमार को सनातनने उत्पन्नकिया वे दोनों ब्रह्मवादी ऊर्ध्वरेता औ ब्रह्माजीके तुल्यभये। फिर ब्रह्माजीने राजा स्वायंभुवमनु औ रानी शतरूपाको उत्पन्न किया। औ शतरूपा रानीने स्वायंभुव मनु से दोपुत्र एकका नाम प्रियव्रत औ दूसरेका नाम उत्तानपाद भये औ तीनकन्या भी बड़ी का नाम आकूती बिचली का नाम देवहूती औ छोटीका नाम प्रसूती उत्पन्न भई उनमें आकूती को रुचिनामक प्रजापतिने ब्याहा औ देवहूती को कर्दम

ऋषिने व्याहा औ प्रसूति दक्षप्रजापतिके संग विवाही गई। दक्षिणा सहित यज्ञ आकूति से उत्पन्न भये। फिर दक्षिणानेभी दिव्य बारह कन्या उत्पन्न करी और देवहूती के अरुंधती इत्यादि १० कन्या और कपिल नामकपुत्र जिनको श्रीविष्णु के २४ अवतारों में एक अवतार गिनते हैं॥ औ प्रसूति में भी दक्षप्रजापति से चौबीस कन्या उत्पन्न भईं जिनके नाम येहैं। श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तुष्टि,मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, सिद्धि, कीर्ति, ख्याति,कांति,संभूति,स्मृति,प्रीति, क्षमा, संतति, अनसूया, ऊर्जा, स्वाहा, स्वधा इसमें से श्रद्धासे लेकर कीर्त्ति पर्यंत तेरह कन्या दक्षप्रजापति ने धर्मको विवाहीं। औ ख्याति, तथा कांतिभार्गव मुनिसे व्याही गईं। संभूतिको मरीचिने औ स्मृति अंगिरा मुनिने, प्रीति को पुलस्त्य ने, क्षमाको पुलहने, संतति को क्रतुने, अनसूया को अत्रिने, ऊर्जाको वशिष्ठने, स्वाहा को अग्निने, औ स्वधाको पितरोंने व्याहा। जो दक्षप्रजापति की मानसी कन्या सती नामथी वह रुद्रसे विवाही गई। सृष्टिके प्रारंभमें ब्रह्माजी ने शिवजीको अर्द्ध नारीश्वर देखकर कहा कि आप स्त्री पुरुष विभागकरें तब शिवजीके देहसे सतीजी पृथक् होगई जगत् में जितनी स्त्री जाति हैं सब सतीका अंशहैं। और संपूर्णपुरुष जाति तथा ग्यारह रुद्रशिवजीका अंशहैं। ब्रह्माजीने सतीजीको देखकर दक्षप्रजापतिसे कहा कि यह सतीहम सबकी माता है इसको तुम अपनी पुत्री बनाओ क्योंकि पुम् नाम नरक से पुत्रीही रक्षा करती है इसलिये

यह विश्व की माता आपकी पुत्रीहोगी। यह ब्रह्माजी का वचन सुन दक्षप्रजापति ने सतीजी को अपनी कन्या बनाय बड़े आदर से रुद्र को विवाह दिया। जो धर्मकी तेरह पत्नी श्रद्धाआदि पीछे कहीं उनमें काम, दर्प, नियम, संतोष, लोभ, श्रुत, दंड, समयबोध, अप्रमाद, विनय, व्यवसाय, क्षेम, सुख औ यश ये उत्पन्न भये उनमें क्रिया से दण्ड समय उत्पन्न भये औ बुद्धिमें अप्रमाद औ बोध ये दो पुत्र धर्मसे उत्पन्न भये इस प्रकार पंद्रह पुत्र धर्म के भये। भृगु की पत्नी ख्यातिमें लक्ष्मी उत्पन्न भई जो विष्णुजी की प्रिया भई औ धाता तथा विधाता नामक दो पुत्रभी भये जो मेरु पर्वत के जामाता बने। मरीचि की पत्नी प्रसूति में मारीच नामपुत्र जिसका नाम पूर्णमास भी है औ तुष्टि, दृष्टि, कृषि औ अपिचित ये चार कन्या भी उत्पन्न भईं। पुलह से क्षमा में कर्दम नाम एक पुत्र औ एक अति उत्तम पुत्री उत्पन्न भई पुलस्त्य से प्रीति में दत्तोर्ण वेदबाहु औ दृषद्वती नाम कन्या भई। क्रतुसे सन्नति में साठहजार पुत्र उत्पन्न भये जो बालखिल्य कहाये। अंगिरा मुनिकी पत्नी स्मृति से सिनीवाली, कुहू, राका, औ अनुमतिये चार कन्या औ अग्नि नाम पुत्र उत्पन्न भया औ अत्रि मुनिकी अनसूया स्त्री में एक श्रुतिनाम कन्या औ सत्यनेत्र, भाव्य, मूर्ति, शनैश्चर, आप, सोम ये पांचपुत्र भये। वशिष्ठजी से ऊर्जा में रज, ह्रस्व, ऊर्ध्वबाहु, सवन, अनय, सुतपा औ शुक्र ये सात पुत्र उत्पन्न भये। जो अभिमानी भगवान् रुद्ररूप ब्रह्माका

पुत्र औ जगत् का प्राण अग्नि है उससे स्वाहा में ती-
नों लोकों के कल्याण के अर्थ तीन पुत्र उत्पन्न भये॥

छठवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो पहिले अध्यायके
अन्त में हमने कहा कि अग्नि के तीन पुत्र भये उनके
नाम पवमान,पावक औ शुचि ये हैं जिनमें पवमान तो
अरणी आदि में संघर्ष से उत्पन्न हुआ पावक विद्युत्
अर्थात् बिजली से निकला औ शुचि सूर्य्यकी प्रभासे
भया ये तीनों स्वाहाके पुत्र हैं। अब इनके पुत्र पौत्रों
की संख्या सुनो कि सब मिलकर उञ्चास भये जो सब
यज्ञों में आराधन कियेजाते हैं औ सबके सब तपस्वी
व्रतधारी प्रजाके पति औ रुद्रस्वरूप भये पितर भी दो
प्रकार के हैं एक यज्वा अर्थात् यज्ञ करने वाले और
दूसरे अयज्वा। उनमें यज्वाओं का नाम अग्निष्वात्ताः
हैं और दूसरे बर्हिषिद कहाते हैं। स्वधा में अग्निष्वा-
त्ताओं से मानसी कन्या उत्पन्न भई उसका नाम मेना
रक्खा गया। वह मेना हिमालय से विवाही गई औ
उससे मैनाक, क्रौंच ये दो पुत्र औ उमा तथा सब ज-
गत्को पावन करनेहारी गंगा ये दो कन्या भईं। मेरु
पर्वत की स्वधानाम स्त्री में मानसी कन्या धरणी नाम
भई अमृत पान करनेवाले पितर औ ऋषियोंका कुल
अब हम विस्तार से कहेंगे। दक्षकी कन्या सती प्रथम
रुद्रसे व्याही गई फिर दक्ष की निंदाकर अपना देह
त्यागकिया औ पार्वती रूपसे फिर महादेवजीकेही सं-

ग विवाह किया सतीजी के देह त्यागके समय ब्रह्माजी की प्रार्थना से अनेक रुद्र महादेवजी ने उत्पन्न किये जो सबलोक के पूज्य औ महादेवजी के तुल्यथे जिन्होंने सब जगत् को व्याप्त करलिया जरामरणसे रहित बड़े प्रभाव करके युक्त उन अनेक रुद्रों को देख ब्रह्माजी ने कहा कि हे रुद्रो तुम जो त्रिनेत्र, नील लोहित, दीर्घ, ह्रस्व, वामन, हिरण्यकेश, दृष्टिघ्न, नित्यबुद्ध, निर्मल, सर्वज्ञ, निर्द्वन्द्व, वीतराग, विश्वात्मा शिवजी के पुत्र औ सर्वव्यापी हो तुमको नमस्कार होय। इसप्रकार रुद्रों की स्तुति करके ब्रह्मा जी शिवजी की प्रदक्षिणा और प्रणामकर प्रार्थना करने लगे कि महाराज यह अजर अमर प्रजा आपने उत्पन्न की परन्तु मृत्युयुक्त प्रजा होनी योग्य थी तब महादेवजी ने कहा कि हमारी प्रजा तो अमरही होगी परन्तु मृत्युयुक्त प्रजा तुम रचो यह महादेवजी की आज्ञा पाय सम्पूर्ण चराचर जगत् ब्रह्माजीने रचा। और शिवजी भी अपने रुद्रोंसहित निवास करनेलगे। वह निष्फल परमात्माने अपनी इच्छा से शरीर धारण किया उसीको वेदके जाननेवाले ब्राह्मण स्थाणु कहतेहैं। वह दयाकरके संसार का कल्याण करताहै इसी से शंकर कहाया विरक्त पुरुष मुक्तिको ही कल्याण कहतेहैं। औ पुरुष जो विषय का त्यागकरे वही मुक्त है औ वैराग्य से विषय का त्याग होता है। विशिष्ट ज्ञान अर्थात् संसारका निवर्तकज्ञान और त्याग इसका मेलन शिवजीके अनुग्रह सेही होसक्ताहै। धर्म ज्ञान वैराग्य औ ऐश्वर्य्य शिवजीसे ही प्राप्तहोताहै। और यह

शंकरही रुद्रहै औ कण्ठ उसका नील और सब देह लोहित होने से नीललोहित और पिनाक नाम धनुष के धारने से पिनाकी कहाताहै। इससे रुद्र और सदाशिव में कुछ भेद नहीं। जगत् में बड़े २ पापी भी शिवजीके शरण होनेसे मुक्ति पाते हैं नरक में कभी नहीं जाते। इसप्रकार सूतजी से सुन मुनि बोले कि हे सूतजी अहंकारसे लेकर मायापर्यन्त अट्ठाईस किरोड़ नरकहैं। उन में पापी पड़ेहुये अपने कर्मोंका फल भोगते हैं। और शिवजीका आश्रय नहीलेते। जो सदाशिव सब जीवों का आश्रय अव्यय जगत् का स्वामी तमोगुण करके कालरुद्र को रजोगुण से ब्रह्माको और सत्वगुणकरके विष्णुको उत्पन्न करते हैं और निर्गुण रहने से साक्षात् महेश्वरहैं उनका आश्रयकरनेसे नरकमें जीव नहीं जाते परन्तु अब आप यह सुनावें कि कौन से कर्म से नरक में जीव जाते हैं॥

सातवां अध्याय॥

यह मुनियोंका वचन सुन सूत जी बोले कि हे मुनीश्वरो शिवजीका रहस्य और प्रभाव हम संक्षेप से वर्णन करते हैं सब तत्त्व के जाननेहारे परम वैराग्य में स्थित प्राणायाम आदियोग के आठ अङ्गोंकरके युक्त करुणा आदि गुणों से भूषित बड़े २ योगी भी कर्म के अनुसार स्वर्ग और नरकमें जातेहैं। शिव जी के अनुग्रह से ज्ञान उत्पन्न होता है ज्ञान से योग में प्रवृत्ति होती है योग से मुक्ति मिलतीहै इससे सबका मूलकारण वह शिवजी का

अनुग्रहहीहै। यहसुन ऋषियोंने सूतजी से पूंछा कि जो शिवजीके अनुग्रह से ही ज्ञान और योगहोताहै तो दिव्य महेश्वर योग का स्वरूप आप हम से कहें और वह परमेश्वर योगमार्ग करके किसप्रकार और किसकाल में अनुग्रह करता है यह भी वर्णन कीजिये। यह सुन सूतजीकहनेलगे कि देवता ऋषि और पितरोंके सन्मुख नन्दीने जो योग सनत्कुमारको सुनायाहै वह आपसुनें द्वापरकेअन्तमें व्यासजीके अवतार योगाचार्योंकेअवतार और कलिमें शिवजीकेअवतार तथा प्रभुके चारशिष्य और उनके अनेक प्रशिष्यभये कि जिनसेजगत् में योगकीप्रवृत्तिभई इस प्रकार वहज्ञानशिष्य परम्पराकरके शिवजी के मुख से ही संसार में पहुँचा है। कि जिसके अधिकारी ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण हैं यह सुन ऋषि पूछते भये कि हे सूतजी कौनसे कल्प और किस द्वापर में व्यासभये यह आपकहें तब सूतजी ने कहा कि इस वाराह कल्प में और वैवस्वत मन्वन्तर में जो व्यास और रुद्र भये हैं इस भांति और मन्वन्तरों में भी जो भये उन सबको वेद और पुराण के अनुसार हम यथाक्रम कहते हैं। क्रतु, सत्यभार्गव, अङ्गिरा, सविता, मृत्यु, शतक्रतु, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, त्रिवृत, शततेजा, नारायण, तरक्षु, अरुणि, देव, कृतंजय ऋतंजय, भरद्वाज, गौतम, वाचश्रवा शुष्मायणि, तृणविन्दु, रुक्ष, शक्ति, पराशर, जातुकर्ण्य, और साक्षात् विष्णुका स्वरूप कृष्ण द्वैपायन ये अट्ठाइस व्यास भये। और अब कल्प में जितने योगेश्वर हुये और कलिमें रुद्रके

अवतार तथा बारह कल्पके वैवस्वत मन्वन्तर में जो अवतार हुये उनको हम वर्णन करतेहैं आप श्रवणकरें। यह सूतजीका वचन सुन मुनिबोले कि हे सूतजी प्रथमतो आप वाराह कल्प तथा और कल्पोंके मन्वन्तर वर्णन कीजिये। औ वैवस्वत मन्वन्तर में जो सिद्धभये हैं उनको भी कथन कीजिये। यह सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पहिला मनु स्वायम्भुव दूसरा स्वारोचिष तीसरा उत्तम इसीभांति तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, धर्मसावर्णिक, पिशंग, पिशङ्गाभ, शबल, वर्णक ये चौदहमनु अकारसे लेकर औकार पर्यन्त चौदह स्वरोंका रूप है और श्वेत, पाण्डु, रक्त, ताम्र, पीत, कापिल, कृष्ण, श्याम, धूम्र, पिशङ्ग, विवर्ण, शबल, कालन्धुर ये चौदह मनुओंके वर्णहैं। इसप्रकार ये मनु स्वरस्वरूप हैं। यह वर्तमान वैवस्वत मनु ऋकार रूप कृष्ण वर्ण सातवांहै। इसमें हम परमेश्वर के योगावतार औ शिष्यों की सन्तति वर्णन करते हैं। प्रथम कलिमें रुद्रका अवतार श्वेत नामक फिर सुतार, मदन, सुहोत्र, कंकण, कंक, लोकाक्षि, जैगीषव्य, दधिवाहन, ऋषभ, मुनि, उग्र, अत्रि, सुवालक, बालि, गौतम, वेदशीर्ष, गोकर्ण, गुहावासी, शिखंडभूत, जटामाली, अट्टहास, दारुक, लांगली, महाकाय, शूली, मुंडीश्वर, सहिष्णु, सोमशर्मा, औलकुलीश ये अट्ठाईस योगाचार्य वैवस्वत मन्वन्तर के कहेहैं। और इन प्रत्येक के चार २ शिष्य हैं उन के नाम वर्णन करतेहैं। श्वेत, श्वेतशिखण्डी, श्वेतास्य, श्वेतलोहित, दुन्दुभि, शतरूप, ऋचीक, केतुमान,

विकोश, विकेश, विपाश, शापनाशन, । सुमुख, दुर्मुख, दुर्दम, दुरतिक्रम, सनक, सनन्द, सनातन, सनत्कुमार, सुधामा, विरजा, शंखपाद, वैरज, मेघ सारस्वत, सुवाहन, मेघवाहन, कपिल, आसुरि, पंचशिख, इल्वल, पराशर, गर्भभार्गव, अंगिरा, बलबंधु, निरामित्र, केतुशृङ्ग, तपोधन, लंबोदर, लंब, लंबाक्ष, लंबकेश, । सर्वज्ञ, समबुद्धि, साध्य, सर्व, सुधामा, काश्यप, वशिष्ठ, विरजा, । अत्रि, देवसद, श्रवण, श्रविष्ठ, कुणि, कुणिबाहु, कुशरीर, कुनेत्र, । काश्यप, उशना, च्यवन, बृहस्पति, उतथ्य, वामदेव, महायोग, महाबल, वाचःश्रवा, ऋचीक, श्यावश्व, यतीश्वर, । हिरण्यनाभ, कौशल्य, लोकाक्षि, कुथुमि, । सुमंतु, बर्बरी, कबंध, कुशिकंधर, । प्लक्ष, दाल्भ्यायनि, केतुमान्, गौतम, । भल्लावि, मधुपिंग, श्वेतकेतु, तपोनिधि, । उशिक, बृहदश्व, देवल, कवि, । शालिहोत्र अग्निवेश, युवनाश्व, शरद्वसु, छगल, कुंडकर्ण, कुंभ, प्रवाहक उलूक, विद्युत, शंबूक, आश्वलायन, । अक्षपाद, कुमार, उलूकवत्स, कुशिक, गर्ग, मित्र, कौरुष्य ये योगाचार्यों के शिष्य महात्मा योग और ज्ञान में तत्पर । पाशुपत, सिद्ध औ भस्मकरके उद्धूलित जिनका सब शरीरहै होतेभये । इनके हजारों शिष्य और प्रशिष्य पाशुपत योग को पाय रुद्रलोक को जाते भये। पिशाचसे देवता पर्यंत सब जीव पशु कहाते हैं उन सब का स्वामी होने से शिवजी का नाम पशुपति है उस पशुपतिका बनायाहुआ योग पाशुपति कहाता है । यह पाशुपतियोग सब जीवोंको परमऐश्वर्य्य देनेहाराहै ॥

आठवां अध्याय॥

सूतजीकहते हैं कि हे मुनीश्वरो, अब हम योगके स्थानसे संक्षेप से वर्णन करते हैं जो शिवजीने जगत् के कल्याणके अर्थ आप कल्पना करेहैं। कंठसे नीचे और नाभिके ऊपर वितास्तिमात्र उत्तम योगस्थान हैं। नाभि से नीचे मूलाधार नाम औ भ्रूमध्यमें आवर्त्त येभीयोग स्थान हैं। आत्माको सर्वार्थ ज्ञानकी प्राप्तिहोनाही योग है। औ आत्माके प्रसाद से सब प्रकार की एकाग्रता होजाती है। परन्तु वह प्रसाद का स्वरूप स्वसंवेद्य है अर्थात् आत्मा के विना कोई दूसरा नहीं जानसकता औ ब्रह्मादिक भी उसका वर्णन नहीं करसके योगशब्द करके वह निर्वाण माहेश्वर पद कहाजाताहै। औ उस निर्वाणपदका हेतु ज्ञान है। ज्ञानसेही पापदग्ध होते हैं जो सब इन्द्रियोंको रोकता है उसको योगसिद्धि होती है औ चित्तवृत्ति के निरोध अर्थात् रोकने कोही योग कहते हैं उस योगके साधन आठ प्रकार के हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, औ आठवां समाधि। अब इनका क्रम से लक्षण कहते हैं तप औ उपरम का नाम यम है। और यम का प्रथम हेतु अहिंसा है। सत्य अस्तेय अर्थात् चोरी न करना ब्रह्मचर्य अपरिग्रह ये नियमहैं परंतु नियम का हेतु यम ही है। अपने तुल्य सब जीवों को देखना और किसी को क्लेश न देना इसी का नाम अहिंसा है अहिंसा से आत्मज्ञान की सिद्धि होती है देखा सुना औ यथार्थ

जिसका अनुभव कियाहो उसका कथन करना यही सत्यहै जिसमें किसीको पीड़ा न होय । अश्लीलबात कभी न कहै । और दूसरेके दोष जानकर भी न कहै । परद्रव्यको मन वचन कर्म करके आपदामें भी न लेना अस्तेय कहाता है मन वचन कर्म करके मैथुनसेवचना ब्रह्मचर्यहै यहयती औ ब्रह्मचारियोंका धर्महै जिनके पत्नी न हो। और जे गृहस्थ हैं वेअपनीस्त्रीका समयपर प्रसंग करें परस्त्रीसे विमुखरहें उनकेलिये यहीब्रह्मचर्यहै अपनी स्त्री भोगके समय पवित्र होतीहै पुरुष मैथुन के अनन्तर स्नानकरलेवे । इसप्रकार रहनेवाला गृहस्थभी ब्रह्मचारी ही होता है ब्राह्मण, देवता, अग्नि,गुरु आदि के पूजन में विधि करके जो हिंसा वहअहिंसाहीहै । बुद्धिमान् पुरुष सदा स्त्रियोंका त्याग रक्खे और उनको शव अर्थात् मरेजीव के तुल्य समझे । जैसी बुद्धि विष्ठा औ मूत्रत्याग करने के समय होती है वही बुद्धि अपनी स्त्री की रति के समय भी रखनी चाहिये । अंगारके तुल्य स्त्री है औ घृत कुंभके समान पुरुष है इसहेतु पुरुषको स्त्री से दूररहना योग्य है । भोग से विषयोंमें तृप्ति नहीं होती केवल विचार से होती है । इसलिये मन वचन कर्म करके विषयों में वैराग्य करनाही योग्यहै कामकभी विषयों के उपभोग से शांत नहीं होता उलटा बढ़ताहै जैसे घीके गिरने से अग्नि । इसलिये सबका त्याग करनाही उचितहै । वैराग्य न होनेसे मनुष्य अनेक योनियों में जन्म लेता फिरता है । न कर्म करके न प्रजा से न द्रव्यसे मोक्षहोय केवल त्याग से ही मोक्ष होताहै

इसलिये तन मन वचन से वैराग्य करना उचित है । रति की निवृत्ति ब्रह्मचर्यहै ये संक्षेपसे हमने यम कहे । अब नियम कहते हैं । अनीहा अर्थात् किसी वस्तु की विशेष इच्छा न करना, शौच, तुष्टि, तप, जप, शिवका ध्यान, प्रत्याहारिक, आसन आभ्यंतर शौच ये सब नियम हैं प्रथम बाह्य शौच करना चाहिये जो स्नानादि से होता है । स्नान तीनप्रकार का है एक आग्नेय अर्थात् भस्मस्नान, दूसरा वारुण अर्थात् जलसे, तीसरा ब्राह्म अर्थात् मंत्रस्नान है । परंतु बाहर से कितनाही शौच करे और मृत्तिका से देह को लीप २ कर स्नान करे जो अन्तःकरण शुद्ध न होय तो वह सदा मलीनही है । क्योंकि मत्स्य मंडूक आदि सदा जल में डूबे रहते हैं वे क्या शुद्ध होजातेहैं इस से आंतर शौचही मुख्यहै वैराग्य रूप मृत्तिका से शरीर को लिप्त करके आत्मज्ञानरूप जल में स्नान करे यह मुख्य शौच है । शुद्ध पुरुषकोही सिद्ध होती है अशुद्ध को नहीं । जो पुरुष न्याय से मिले धन करके संतुष्ट रहे और गये अर्थका स्मरण न करे वह संतोषी कहाताहै । चांद्रायण आदि व्रतों का आचरण तप कहाताहै प्रणव के स्वाध्यायका नाम जप है वह तीनप्रकारका है उनमें वाचिक जप, अधम उपांशु अर्थात् अपने को भलीप्रकार सुनिपरे मध्य, और मानसजप उत्तमोत्तम । मन वचन कर्म करके शिवका प्रणिधान और गुरु में निश्चलभक्ति यह ही शिवका ध्यानहै सब विषयोंसे निवृत्त करके इंद्रियों को रोकना प्रत्याहार कहाता है । चित्त को हृदय कमल

जिसका अनुभव कियाहो उसका कथन करना यही सत्यहै जिसमें किसीको पीड़ा न होय। अश्लीलबात कभी न कहे। और दूसरेके दोष जानकर भी न कहे। परद्रव्यको मन वचन कर्म करके आपदामें भी न लेना अस्तेय कहाता है मन वचन कर्म करके मैथुनसेवचना ब्रह्मचर्यहै यहयती औ ब्रह्मचारियोंका धर्महै जिनके पत्नी न हो। और जे गृहस्थ हैं वेअपनीस्त्रीका समयपर प्रसंग करें परस्त्रीसे विमुखरहें उनकेलिये यहीब्रह्मचर्यहै अपनी स्त्री भोगके समय पवित्र होतीहै पुरुष मैथुन के अनन्तर स्नानकरलेवे। इसप्रकार रहनेवाला गृहस्थभी ब्रह्मचारी ही होता है ब्राह्मण, देवता, अग्नि,गुरु आदि के पूजन में विधि करके जो हिंसा वहअहिंसाहीहै। बुद्धिमान् पुरुष सदा स्त्रियोंका त्याग रक्खे और उनको शव अर्थात् मरेजीव के तुल्य समझे। जैसी बुद्धि विष्ठा औ मूत्रत्याग करने के समय होती है वही बुद्धि अपनी स्त्री की रति के समय भी रखनी चाहिये। अंगारके तुल्य स्त्री है औ घृत कुंभके समान पुरुष है इसहेतु पुरुषको स्त्री से दूररहना योग्य है। भोग से विषयों में तृप्ति नहीं होती केवल विचार से होती है। इसलिये मन वचन कर्म करके विषयों में वैराग्य करनाही योग्यहै कामकभी विषयों के उपभोग से शांत नहीं होता उलटा बढ़ताहै जैसे घीके गिरने से अग्नि। इसलिये सबका त्याग करनाही उचितहै। वैराग्य न होनेसे मनुष्य अनेक योनियों में जन्म लेता फिरता है। न कर्म करके न प्रजा से न द्रव्यसे मोक्षहोय केवल त्याग से ही मोक्ष होताहै

इसलिये तन मन वचन से वैराग्य करना उचित है। रति की निवृत्ति ब्रह्मचर्यहै ये संक्षेपसे हमने यम कहे। अब नियम कहते हैं। अनीहा अर्थात् किसी वस्तु की विशेष इच्छा न करना, शौच, तुष्टि, तप, जप, शिवका ध्यान,प्रह्मादिक, आसन आभ्यंतर शौच ये सब नियम हैं प्रथम बाह्य शौच करना चाहिये जो स्नानादि से होता है। स्नान तीनप्रकार का है एक आग्नेय अर्थात् भस्मस्नान, दूसरा वारुण अर्थात् जलसे, तीसरा ब्राह्म अर्थात् मंत्रस्नान है। परंतु बाहर से कितनाही शौच करे और मृत्तिका से देह को लीप २ कर स्नान करे जो अन्तःकरण शुद्ध न होय तो वह सदा मलीनही है। क्योंकि मत्स्य मंडूक आदि सदा जल में डूबे रहते हैं वे क्या शुद्ध होजातेहैं इस से आंतर शौचही मुख्यहै वैराग्य रूप मृत्तिका से शरीर को लिप्त करके आत्म-ज्ञानरूप जल में स्नान करे यह मुख्य शौच है। शुद्ध पुरुषकोही सिद्ध होती है अशुद्ध को नहीं। जो पुरुष न्याय से मिले धन करके संतुष्ट रहे और गये अर्थका स्मरण न करे,वह संतोषी कहाताहै। चांद्रायण आदि व्रतों का आचरण तप कहाताहै प्रणव का स्वाध्यायका नाम जप है वह तीनप्रकारका है उनमें वाचिक जप, अधम उपांशु अर्थात अपने को भलीप्रकार सुनिपरे मध्य, और मानसजप उत्तमोत्तम। मन वचन कर्म करके शिवका प्रणिधान और गुरू में निश्चलभक्ति यह ही शिवका ध्यानहै सब विषयोंसे निवृत्त करके इंद्रियों को रोकना प्रत्याहार कहाता है। चित्त को हृदय कमल

आदि स्थानों में रोकना धारणा कहाती है। और उसी धारणा का जो स्वस्थता से ध्यान वह समाधीहै। उसी स्थानमें जो सर्वविषयोंसे निवृत्त चित्तकी एकाग्रता उस का नाम ध्यानहै। सम्पूर्ण अर्थ चैतन्य स्वरूप देखपड़े और स्थूल सूक्ष्म लिंग ये तीनप्रकारके देहलीन होजायँ उसका नाम समाधि है।सब समाधियों का कारण प्राणायाम है। देहके वायुका नाम प्राण है और उसके रोकने को यम कहते हैं। वह प्राणायाम मंद मध्य और उत्तम इन तीनप्रकार का होता है। मंदप्राणायाम बारह मात्रा का है अर्थात् बारह लघु अक्षर जितने काल में उच्चारण होय उतने काल प्राणवायुको रोकना मंद प्राणायाम है। चौबीस मात्रा का मध्य और छत्तीसमात्रा का प्राणायाम उत्तम होता है। मंद प्राणायाम करने से प्रस्वेद मध्य से कंप और उत्तम से उत्थान अर्थात् प्राणायाम के समय आसनसे ऊंचाहोजाय। आनंदके देनेहारे योगमें निद्राकी भांति घूर्णन। रोमांच ध्वनि करके युक्त अपने अंगों का कंपन होताहै उत्तम प्राणायाम में प्रस्वेदके अनंतर समाधि रूप मूर्च्छा होती है। वह प्राणायाम सगर्भ और अगर्भ दो प्रकारका है जिस में मंत्रका जप करे वह सगर्भ जप बिना अगर्भ प्राणायाम होताहै जिसभांति हाथी शरभ अथवा सिंह पहिले दुराधर्ष होताहै पीछे क्रमसे दमन करते २ अपने वश होजाता है इसीप्रकार वायु भी पहिले दुराधर्ष है पीछे अभ्याससे अपने वश होता है। इसप्रकार जो पुरुष रीति से प्राणायाम का अभ्यास करे उसके मन वाक्

और देह के सब दोष दूर होजाते हैं। और प्राणायाम सेही शांति प्रशांति दीप्ति और प्रसाद सिद्ध होते हैं। सहज और आगंतुक पापों के नाशका नाम शांति है। वचनों का भलीभांति संयम प्रशांति कहाता है। सर्वत्र प्रकाश का नाम दीप्ति है इन्द्रिय, बुद्धि और प्राण आदि वायु की प्रसन्नता ही प्रसाद कहाता है। वायु दश प्रकार का है प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त, धनंजय ये उनके नाम हैं। पयाण करनेसे प्राण आहार आदिको अपनयन अर्थात् नीचे लेजाने से अपान, अंगको व्यान मन अर्थात् नवानेसे व्यान कर्मों के उद्वेजन करने से उदान औ गात्रों की समता करनेसे समान कहाताहै उद्गार अर्थात् डकार लेनेके समय नागनामा वायु है। उन्मीलन अर्थात् विकास में कूर्म छीक में कृकर उबासी लेने के समय देवदत्त और धनंजय वायु बड़ा शब्द करनेके समय है जो सब अंगों में स्थित है। इन दश वायुओं का प्रसादही तुरीया कहाताहै। विस्वर, महान्,मन,ब्रह्म, चित्ति, स्मृति, ख्याति, संवित्, ईश्वर, मति ये सब महत्तत्त्वरूप बुद्धिके नाम हैं। द्वन्द्वोंके अर्थात् शीत उष्ण आदिजोड़ों के उपतापन न होने से विस्वर सब तत्त्वोंके प्रथम उत्पन्न होने से महान् मननकरनेसे मनबृहत् अर्थात् बड़ा होने से औ वृद्धि से ब्रह्मभोग के लिये सब कर्मों का संचय करने से चित्ति स्मरण करने से स्मृति, जानने से संवित् प्रसिद्ध से ख्याति सबतत्त्वों के स्वामी होनेसे और सबपदार्थ जानने से ईश्वर माननेसे मति

कहाती है। और अर्थ का बोध करनेसे बुद्धि कहातीहै। इसबुद्धिका प्रसाद प्राणायामसेही होता है। सब दोषों को प्राणायाम दग्धकर्त्ता हैं धारणासे पातक दग्ध होते हैं। प्रत्याहार से विषयों को विषकी भांति जानता है। ध्यान से अनीश्वर गुण दूर होते हैं समाधि से बुद्धि वृद्धि होतीहै। उत्तम स्थानमें प्राप्तहोकर योगके आठ अंगोंको साधन करे और आसनों काभी अभ्यासकरे। विना उत्तम स्थान औ उत्तम कालके योग सिद्धि नहीं होती इसलिये जलके समीप अग्निके समीप सूखे पत्ते जहां बहुत होयँ जीव बहुत होयँ श्मशान गोष्ठ चतुष्पथ जहां शब्द बहुतहोय जहां भयहोय चैत्य बल्मीक के समीप अशुभदेश जहां दुर्जन अथवा मच्छर बहुत होयँ ऐसे स्थानों में योगी न रहे। जहां देह को बाधा न होय चित्त प्रसन्न रहे ऐसे सुन्दर स्थान पर्वत की गुफा आदि में रहे अथवा कोई शिवक्षेत्रहो वा और कोई उत्तम स्थान हो जिसमें कोई जीव न हो सुन्दर लिपाहुआ दर्पणोदर की भांति स्वच्छ अगरु के धूप से धूपित अनेक पुष्प पत्र फलों से शोभित कुशाकरके युक्त स्थान योगी के लिये होना चाहिये। ऐसे स्थानमें उत्तम आसन पर बैठकर गुरु, गणेश, शिव, पार्वती औ शिष्यों करके सहित योगीश्वरों को प्रणाम करके योगका प्रारंभकरे। स्वस्तिक अथवा पद्मासनबांधकर दोनों जानु बराबर करके दोनों पार्ष्णि अर्थात् ऐड़ियों के बीच वृषण औ लिंग को करके शिरको कुछ ऊंचा उठाय मुखको थोड़ासा खोल दांतों का आपस में स्पर्श

बचाता हुआ सर्व ओर से दृष्टिको रोक नासिका के अग्रको देखता हुआ तमोगुण को रजोगुणसे और रजोगुण को सत्वगुण से आच्छादन कर केवल सत्व में स्थिर होकर शिवध्यान का सभ्यास करे। वह परमात्मा शुद्ध दीपशिखाकर और ओंकार करके प्रतिपाद्य जो है उसका अपने हृदय कमलकी कर्णिका में ध्यान करे। अथवा नाभिके नीचे तीन अंगुल पर एक कमल का ध्यान करे उसमें अष्टकोण अथवा पंचकोण औ उसपर त्रिकोण ध्यावे फिर धर्म्म आदि चारका ध्यानकर उसमें सूर्य चंद्र औ अग्निमंडल उसके ऊपर सत्व रज तमका ध्यानकर उनपर पार्वती जी सहित श्री महादेवजी का ध्यानकरे। अथवा नाभि, गल, भ्रूमध्य, ललाट अथवा मस्तकमें ध्यान करे द्विदल, षोड़शदल, द्वादशदल, दशदल, षट्दल औ चतुर्दल ये कमल क्रमसे भ्रूमध्य, कंठ, वक्षस्थल, हृदय, नाभि और मूलाधार में हैं इनमें श्रीसदाशिव जी को ध्यावे नाभिकमल में सदाशिवको ललाट में चन्द्रचूड़ भ्रूमध्य में शंकर का ध्यान करे और उस दिव्य शाश्वत स्थान में निर्मल, निष्कल, शांत, ज्ञानस्वरूप, निरालंब, अतर्क्य, विनाश उत्पत्ति से रहित, आनंद स्वरूप, सूक्ष्मसे सूक्ष्म औ स्थूल से स्थूल ध्यानगम्य, शुद्ध चैतन्य स्वरूप श्रीमहादेवजी को हृदय कमल में ध्यान करे। सुषुम्णा मार्ग करके मंद मध्यम औ उत्तम कुंभकों से ध्यान करे। फिर बत्तीस मात्रा करके रेचक करे। अथवा रेचक पूरकको छोड़कर कुंभकही में स्थिर होजाय औ सदाशिवका

स्मरण करे उस स्मरण से जीव औ ईश्वर की एकता होती है औ ब्रह्मानन्द उत्पन्न होताहै। बारह प्राणायामकी एक धारणा बारह धारणा का एक ध्यान औ बारह ध्यान की समाधि होती है। ज्ञानी के संपर्कसे अथवा यत्न करने से शीघ्र अथवा विलंब करके पूर्व जन्म के अभ्यास के अनुसार योगसिद्धि होती है। औ योगाभ्यास करने के समय विघ्न भी बहुत होते हैं परंतु जोगुरू समीपहोय तो सबविघ्न दूरहोकरसिद्धिहोतीहै॥

नवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो अब हम योगके विघ्न कहतेहैं। आलस्य,व्याधि,प्रमाद,संशय,चित्तकी अनवस्थिति, अश्रद्धा, भ्रांति, तीनप्रकार का दुःख दौर्मनस्य अयोग्य विषयों में चित्तकी चंचलता। ये दश योग में विघ्न हैं। अब इनके लक्षण कहते हैं शरीर औ चित्तके भारीपने से योग में प्रवृत्त न होना आलस्य कहाताहै। धातुओं के न्यून अधिक होने से कर्मज अथवा दोषज जो रोग वे व्याधि कहाते हैं। समाधि साधनों का भावना न करना प्रमाद है। यह अथवा वह इसभांति के विकल्प का नाम संशय है योग में स्थिरता न रखनी अनवस्थिति कहाती है फल सिद्धि में संदेह का नाम अश्रद्धा है। गुरु देवता आदि में विपरीत देखना भ्रांति है। आध्यात्मिक अर्थात् शरीर औ मानस दुःख आधिभौतिक अर्थात् दूसरे प्राणि का किया दुःख औ आधिदैविक अर्थात् शीत उष्ण आदि का दुःख ये

तीनप्रकार के दुःख हैं तमोगुण और रजोगुण से जब मन मलीन होजाय उसको दौर्मनस्य कहते हैं। योग्य अयोग्य विनासमझे अनेक विषयोंमें चित्तको लेजाना विषय लोलता कहाती है। ये सब योगियोंको विघ्नहैं। जो योगी अत्यन्तउत्साह से युक्त होताहै उसके सब विघ्न दूरहोजाते हैं। जब विघ्न दूर भये तो सिद्धि होती है। ये विघ्न भी सिद्धिके सूचन करनेहारे हैं। जो विघ्नों से बचजाय तो पहिली सिद्धि प्रतिभा है दूसरी श्रवणा, तीसरी वार्त्ता, चौथी दर्शना, पांचवीं आस्वादा औ छः ठीं वेदना। ये छः सिद्धि छोटी सिद्धि हैं। जो योगी इन का त्यागकरे तो बड़ी सिद्धि प्राप्ति होतीहै। सब पदार्थों के ज्ञानका नाम प्रतिभा है। सब शब्दों का श्रवण होकर उनका यथार्थ ज्ञान होजाना श्रवणा सिद्धि है। स्पर्शका ठीक ज्ञान वेदना सिद्धि है दिव्योंका भी विना यत्नही दर्शन होना दर्शनासिद्धि है। दिव्य गंधों का ज्ञान वार्त्तासिद्धि औ दिव्यरसों का ठीक २ ज्ञान आस्वादा सिद्धि कहाती है। बुद्धिकरके योगी इस जगत्में ब्रह्मलोक पर्यंत सब अपने देह में जानताहै। इस देह में चौंसठ गुण समान हैं औ वे गुण सच्चिदानन्द रूप आत्माको दुःखमें डालनेहारे हैं इसलिये उनका त्याग करना ठीक है। पिशाचमें उनकी पृथिवीसम्बन्धी राक्षसों के पुरमें जलसम्बन्धी। यक्षों के तेजसम्बन्धी गंधर्वोंके वायुसम्बन्धी इन्द्रलोक में आकाशसम्बन्धी सोमलोक में मनसम्बन्धी प्रजापतिलोक में अहंकार सम्बन्धी और ब्रह्मलोक में बोधसम्बन्धी गुण है।

पार्थिव में आठगुण हैं जल में सोलह तेज में चौबीस वायु में बत्तीस औ आकाशमें चालीस इसभांति और भी जानो। गन्ध रस रूप शब्द स्पर्श ये प्रत्येक आठ२ भेद के हैं। फिर बाकी मन आदि में भी आठ २ गुण हैं अर्थात् मन में अरतालीस अहंकार में छप्पन औ ब्रह्मबोध में चौंसठ गुण हैं। जो योगी विचारकर ब्रह्मलोक पर्यंत जो पदार्थ औपसर्गिक अर्थात् योग में विघ्न करनेवालाहो त्यागकरे वही परमसुख को प्राप्त होता है। स्थूलता अर्थात् मोटेपन ह्रस्वता अर्थात् वामन होजाना बालकपन वृद्धता यौवन अनेक जाति के स्वरूप धारणा पृथ्वी विना चारही तत्त्वों करके देह धारणा नित्य सुगन्धि रहना ये आठ पार्थिव ऐश्वर्य अर्थात् गुण हैं। जल में भूमि के भांति निवास करना समुद्र पान करलेने की भी सामर्थ्य जहां जलकी इच्छा हो वहांही जलका दर्शन जो वस्तु भक्षण किया चाहे वह रसयुक्त होजाय पृथ्वी औ जल विना तीन तत्त्वों करके देहधारणा विना पात्रही हाथ में जल को धर लेना शरीर में व्रण न होना देहमें उत्तम कांति होना ये आठ औ पहिले आठ मिलकर सोलह ऐश्वर्य जल के हैं। देह से अग्नि का निर्माण अग्नि के ताप का भय न होना दग्ध हुये लोकको भी पूर्ववत् कर देना जलमें अग्नि को स्थापन करना हाथ में अग्नि लेना स्मरण करने से अग्नि का प्रकट होना भस्म हुये पदार्थ को फिर वही पदार्थ बनादेना दो तत्त्व अर्थात् वायु औ आकाश करके देहधारण यों चौबीस अग्नि के ऐश्वर्य

हैं मनोगति अर्थात् जहां मनकी इच्छा होय वहां चले जाना भूतों के बीचमें लीन होजाना पर्वत आदि महा भार भी कंधेपर धरलेना लघु अर्थात् हलके गुरु अर्थात् भारी होजाना हाथमें वायु को धरलेना अंगुलि के प्रहारसेही भूमि को कंपाय देना एक आकाशतत्त्व करकेही देह धारण करना ये वायु के ऐश्वर्यहैं। देह की छाया न होय इंद्रियों का प्रत्यक्ष दर्शन होना आकाश गमन इन्द्रियोंके अर्थ का ज्ञान दूर से शब्द सुन लेना सब शब्दों का ज्ञान होना तन्मात्राओं के स्वरूप का ज्ञान सब प्राणियों का दर्शन ये आकाश के ऐश्वर्य हैं। इन ऐश्वर्यों करके युक्त कायव्यूह सामर्थ्यवान् कहाता है। जो वस्तु चाहे उसकी प्राप्ति जहां जाने की इच्छा करे वहां पहुँच जाय सबको अपने प्रभाव से दबासके सब गुप्तपदार्थों का ज्ञान होजाय जैसी इच्छा हो वैसाही रूप होजाय सब जीववश होजायँ अपना रूप सब को प्रिय लगे सब संसार का दर्शन होय ये मानस गुण हैं। छेदन ताड़न बंध संसार का परिवर्तन सर्व भूत प्रसाद मृत्यु औ कालका जय ये अहंकारके ऐश्वर्य हैं। विना कारण जगत् की सृष्टि अनुग्रह प्रलय अधिकार लोक वृत्ति का प्रवर्त्तन असादृश्य इन व्यक्तको पृथक् पृथक् निर्माण संसार रचने की सामर्थ्य ये ब्राह्म ऐश्वर्य हैं। यह ब्रह्म ऐश्वर्य का तत्त्व कहा है। यही प्रधान सम्बन्धी वैष्णव पद है इसके गुण ब्रह्माके विना कोई नहीं जान सकता है। परन्तु जो अनन्त गुणों करके युक्त सर्वदा वर्त्तमान शैव ऐश्वर्य है उसको विष्णु

भी नहीं जानसकते। ये चौसठ ऐश्वर्य व्यवहार कार में तो सिद्धि कहाते हैं औ समाधिके समय येही विघ्न हैं सो इनको परम वैराग्य से रोकना चाहिये। विषयों का औ भयों का नाश होना जान करके अश्रद्धा से सबका त्याग करना वैराग्य है। विषयों से चित्त को रोक कर जितने सिद्ध रूप विघ्न ब्राह्म ऐश्वर्य तक होयँ सबका त्याग करने से महेश्वर का अनुग्रह होता है। औ महेश्वर की प्रसन्नता से वह निर्म्मल मुक्ति होती है। जो योगी संसार के जीवों के अनुग्रह के अर्त्थ अथवा लीलाके निमित्त सिद्धियों का त्याग न करै वह भी सुखी होता है। कभी भूमिको छोड़ आकाशमें हीं क्रीड़ा करताहै। कहीं वेद और उसके सूच्म अर्थों कोही प्रकट करता है। कहीं कोई बात सुनकर उसकी श्लोक रचनाही करता है कभी अनेक दंडक आदि छंदों में अथवा पद्मआदि बंधों में काव्यही रचताहै। कहीं मृग पत्ती आदि सब जीवों की भाषाही समझ रहा है। स्थावरसे लेकर ब्रह्मा पर्यन्तसब संसार उसको हस्तामलक की भांति प्रत्यत्त होजाता है। बहुत कहां तक कहें हजारों विज्ञान उस योगी में उत्पन्न हो जाते हैं। अनेक तेजो रूप देवताओं के देह औ विमान देखता है। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, यम, अग्नि, वरुण आदि सब देवताओं को देखता है। ग्रह, नत्तत्र, तारा हजारों भुवन, औ पाताल में रहने वालों को भी वह योगी अपने आत्मविद्या रूप दीप करके समाधि के समय देखता है। औ प्रसादरूप अमृत करके पूर्ण सत्व

रूप पात्र में स्थित जो वह आत्म विद्या रूप दीपक उस करके सब तमको दूरकर आत्मामें ईश्वर को देखता है। उसी परमेश्वर के अनुग्रह से धर्म, ऐश्वर्य, ज्ञान, वैराग्य औ मोक्ष होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं शिव की महिमा विस्तार से तो करोड़ों वर्षोंमें भी वर्णन नहीं होसक्ती इसलिये शैवयोग में स्थिर रहना चाहिये ॥

दशवां अध्याय

सूतजी कहते हैं कि मुनीश्वरो जो पुरुष सत्यवादी जितेन्द्रिय धर्मज्ञ साधु शिवात्मा दयावान् तपस्वी संन्यासी विरक्त ज्ञानी दानी अलुब्ध योगी श्रुति स्मृति जानने हारे औ श्रौतस्मार्त्त कर्मका अनुष्ठान करने हारे हैं उनके ऊपर परमेश्वर का अनुग्रह होता है। सत् शब्द का अर्थ ब्रह्म है अन्त में उसको जो पावे अर्थात् अन्त में ब्रह्म सायुज्य पावें वे सन्त कहाते हैं दश इन्द्रियों के विषय में और पूर्वोक्त आठ प्रकार के ऐश्वर्य में जो पुरुष न तो हर्ष करे औ न शोक करे वे जितात्मा कहाते हैं। स्वर्ग आदि सुख को देने हारे श्रुति स्मृति प्रतिपादित वर्ण आश्रम आदि धर्म के जानने से धर्मज्ञ कहाता है। विद्याके साधन से साधु गुरुकी सेवा करने से ब्रह्मचारी क्रियाओं के साधन से गृहस्थ वनमें तप करने से वानप्रस्थ मोक्षके लिये यत्न करने से यति और योग साधन से योगी कहाता है। इस प्रकार आश्रम धर्मोंके साधन से साधु कहाता है ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, औ यती ये चार आश्रम हैं धर्म औ

अधर्म ये दोनों शब्द क्रिया के वाचक हैं कुशल कर्म को धर्म औ अकुशल कर्म को अधर्म कहते हैं जिससे इष्टफल की प्राप्ति होय उसका नाम धर्म औ जिससे अनिष्ट फल मिले वह अधर्म कहाता है। जो वृद्ध अलोलुप अदाम्भिक जितेन्द्रिय विनय करके युक्त औ सरल स्वभाव वाले पुरुष होयँ वे आचार्य कहाते हैं। अथवा सब धर्मोंका आचरण करे सबको आचार में स्थापन करे वही आचार्य्य होता है। देखे हुये अर्थको पूछने से जो न छिपावे यथार्थ कहदेवे वही सत्यवादी है। ब्रह्मचर्य्य, मौन, निराहार, अहिंसा, शांति इनका नाम तप है। जो पुरुष सब जीवों के हित अहित को अपनी भांति समझे उसका नाम दयावान्‌है। गुणवान्‌ को जो [illegible] नाम [illegible] वह दान ती-नि भांति [illegible]। [illegible]। श्रुति स्मृति करके [illegible] औ [illegible] शिष्टाचार से विरुद्ध न [illegible] है माया रूप जो कर्म का फल उसके त्यागने से योगी शिवात्मा होता है। सब संगों से निवृत्तहो युक्त योगी कहाता है। विषयों में अलुब्ध होने से संयमी कहाता है अपने निमित्त अथवा और के निमित्त जिसके इन्द्रिय मिथ्या न प्रवृत्त होवें वह शम युक्त कहाता है। जो अनिष्ट से उद्वेग न करे औ इष्ट से प्रसन्न न हो औ प्रीति संताप तथा विषाद से निवृत्त होय वही विरक्त है। भले बुरे सब भांति के कर्मों के न्यास अर्थात्‌ त्याग का नाम संन्यास है। प्रधानसे लेकर परमाणु पर्य्यंत

जो जड़ चैतन्य उनसे पृथक् ईश्वर को जानना ज्ञान कहाता है। इस प्रकार के ज्ञान औ श्रद्धा से युक्त जो पुरुष उसके ऊपर अवश्यही शंकर का अनुग्रह होता है। परमेश्वर में भक्ति होने से ही मुक्ति मिलती है। क्योंकि भक्ति करके युक्त अयोग्य पुरुषके ऊपर भी परमेश्वर प्रसन्न होता है। ज्ञान, ध्यान, पाठ जप, तप, अध्ययन, अध्यापन, दान आदि सब उपाय भक्ति की प्राप्ति के लियेहैं। हजारों चांद्रायण सैकड़ों प्राजापत्य और भी अनेक भांति के मासोपवासों से भक्ति ही उत्तम है। जो परमेश्वरमें भक्ति हीन हैं वे स्वर्गादिकों की प्राप्ति के लिये कर्मजाल में मग्न होते हैं परन्तु भक्त तो अपनी दृढ़ भक्ति से ही सब कुछ पाते हैं। शिवभक्तों के दर्शन करने सेही स्वर्ग आदि उत्तम लोक मनुष्यों को प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रआदि देवता भक्ति करकेही उत्तम पदको प्राप्त भयेहैं। भक्तिसेही मुनियों का बल औ सौभाग्य है। इतनी कथा सुनाय सूत जी बोले कि हे मुनीश्वरो शिवजी ने काशी में जिस प्रकार मधुर वाणी से पार्वतीजी को कथा सुनाई वह हम आपको श्रवण कराते हैं। एक समय काशी क्षेत्रमें पार्वतीजी शिवजी से पूछती भई कि महाराज आप किस कर्म करके वश होते हैं तप से विद्या से अथवा योगाभ्यास करके आपका अनुग्रह होता है यह आप कृपाकर कहें। यह पार्वतीजीका वचन सुन शिवजी हँसकर कहने लगे कि हे पार्वती जिस प्रकार तुमने पूछा इसी भांति ब्रह्माजीने भी हमसे पूर्वकाल में पूछा

था जब श्वेतकल्पमें श्वेतवर्ण सद्योजात नाम हमको देखा रक्तकल्पमें रक्तवर्ण वामदेव नाम पीतकल्पमें पीत वर्ण तत्पुरुष नाम कृष्णवर्ण अघोर नाम औ विश्व रूप कल्प में विश्व रूप ईशान नाम से देख ब्रह्माजीने कहा कि हे सद्योजात वामदेव तत्पुरुष अघोर ईशान आपका दर्शन हमको भया अब आप कृपाकर कहें। कि किस प्रकार आप वश होते हैं औ कहां आपका ध्यान करना चाहिये। यह ब्रह्माजी का वचन सुन श्री महादेवजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी केवल श्रद्धा से ही हम वश होते हैं। औ जो लिङ्ग समुद्र में विष्णुजी ने औ तुम ने देखाथा उसमें हमारी पूजाकरनी चाहिये। सद्योजात आदि पांचमंत्रों से पंचवक्त्र रूपकी पूजा करनी चाहिये औ आजभी आपने भक्तिसेही हमारा दर्शन पाया है। तब ब्रह्माजी ने कहा कि आपमें मेरी दृढ भक्ति होय यह मैं चाहताहूं तब हमने ब्रह्माजी को अपनी दृढ भक्ति दी। इससे हे पार्वती भक्तिही हमारे वश करने का उपाय है। और द्विजों को लिंग में सदा हमको पूजना चाहिये। श्रद्धा परमधर्म है श्रद्धाही ज्ञान, तप, हवन, आदि सब कर्मों का फल देनेवाली है श्रद्धा सेहीस्वर्ग औ मोक्षमिलताहै। औ सदा श्रद्धा करनेसेही मेरा दर्शन होता है॥

ग्यारहवां अध्याय॥

यह सूतजीके मुख कमलसे शिवजीका माहात्म्य सुन कर मुनि पूछते भये कि हेसूतजी किसप्रकार सद्योजात

वामदेवतत्पुरुष अघोर औ ईशानको ब्रह्माजीने देखा सो आप वर्णन करें। तब सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो उनतीसवां कल्प श्वेत लोहित नाम था उसमें ब्रह्माजी समाधि लगाये परमेश्वर का ध्यान कर रहे थे कि एक कुमार शिखाकरके युक्त श्वेत लोहित वर्ण सद्योजात नामक प्रकट भया। तब ब्रह्माजी उस कुमार को देख अति प्रसन्न हो अपने हृदयमें उसीका ध्यान करनेलगे औ ध्यान करते २ जाना कि यह साक्षात् परमेश्वरहै तब अति मुदित हो प्रणाम करतेभये तब सद्योजात के चार शिष्य श्वेतवर्ण सुनंद, नंदन, विश्वनंदन औ उपनंदन उत्पन्न भये जो सद्योजात परब्रह्मका सदा सेवन करतेहैं फिर सद्योजात के आगे श्वेत मुनि उत्पन्न भये जिनका नाम हरभी है। वे सब सद्योजातमहेश्वरको परम भक्ति से वेदपाठ करतेहुये प्रपन्नभये अर्थात् शरणागतभये। तब से जो पुरुष विश्वेश्वर श्रीमहादेवजी को तद्गत चित्त होके प्राणायाम में ध्यान करते हैं वे सब पापों से मुक्तहो विष्णुलोकके भी ऊपर रुद्रलोकमें प्राप्त होते हैं॥

बारहवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो तीसवें कल्पका नाम रक्त है जिसमें ब्रह्माजी ने रक्तवर्ण धारण किया। ब्रह्माजी पुत्र कामना से ध्यान करते थे कि एक कुमार रक्तवर्ण और रक्तवर्ण के ही वस्त्र भूषण पहिने रक्त जिस के नेत्र बड़ा प्रतापी प्रकट भया। ब्रह्माजी ने भी उस को ध्यान से जाना कि यह परमेश्वर है तब प्रणाम कि-

या औ बहुत सी स्तुति करी तब उस कुमार ने कहा कि हे ब्रह्मन् तुमने पुत्र कामनासे ध्यान किया औ मेरा दर्शन पाय बहुत विनय से स्तुति करी इसलिये कल्प २ में सब जगत् के प्रभु परमेश्वर मुझको भली भांति जानोगे। इसके अनंतर चार कुमार विरजा, विवाहु, विशोक, विश्वभावन नामक और उत्पन्न भये। वेचारों भी ब्रह्मण्य ब्रह्माजीके तुल्य चीर रक्तवर्ण के वस्त्र,भूषण माला आदि से भूषितथे। वेभी हज़ार वर्षके अनन्तर उस वामदेव रूप ब्रह्माका चिन्तन करते हुये लोकों के अनुग्रहके लिये औ शिष्यों के कल्याण के अर्थ सम्पूर्ण धर्म्मका उपदेश करके महादेवकी देहमेंही लीन हो जाते भये। इस भांति और भी जो द्विजों में श्रेष्ठ भक्ति से वामदेव ईश्वर का ध्यान करें वे भी सब पापों से मुक्त हो रुद्रलोक में प्राप्त होते हैं जहांसे फिर आवृत्ति अर्थात् संसार में आगमन नहीं होता॥

तेरहवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इकतीसवां पीतवासा नाम कल्पहै जिस में ब्रह्माजी ने पीतवर्ण धारण किया ब्रह्माजी पुत्र के अर्थ ध्यान करते थे कि पीतवर्ण एक कुमार प्रकट भया जो पीतवर्ण के वस्त्र भूषण आदि पहिने पीत गन्धसे अनुलिप्त सुवर्णका यज्ञोपवीत धारे पीतही पगड़ी बांधे था। ब्रह्माजी ने भी ध्यानसे जाना कि यह जगत् का प्रभु परमेश्वर है। तब ब्रह्माजी महेश्वरका ध्यान करने लगे इसी अवसरमें एक गौ जो

महेश्वर के मुखसे निकली थी औ जिसके चार चरण चार हस्त चार मुख चार स्तन चार नेत्र चार शृङ्ग औ चारदंष्ट्रांकुरथे ब्रह्माजीने देखी। बत्तीस गुणों करके युक्त महेश्वरी उस धेनुको देख महादेवजीने कहा कि हे मति हे स्मृति यहां आव। यह शिवजीका वचन सुन वह धेनु भी हाथ जोड़ सम्मुख खड़ी भई तब महादेवजी ने कहा कि तू रुद्राणी हो औ पुत्र के अर्थ तप करतेहुये ब्रह्माजी के प्रति ब्राह्मणों के हितके लिये उस धेनुको देते भये। ब्रह्माजी भी धेनुरूप तत्पुरुष गायत्री को पाय जपने लगे औ महादेवजी के शरण में प्राप्त भये। तब शिवजीने प्रसन्नहो ब्रह्माजीको ऐश्वर्य ज्ञानकी सम्पत्ति योग औ वैराग्य दिया। फिर तत्पुरुषनाम महादेवके समीप दिव्य कुमार प्रकट भये जो पीत वस्त्र, भूषण, माल्य औ अनुलेपन धारण किये थे। औ बड़े तेजस्वी ब्राह्मणों का हित करने हारे धर्म औ योगबल करके युक्त थे। वे एक सहस्र वर्ष तक तत्पुरुष के समीप निवास करके यज्ञ करनेहारे मुनियों को महायोग का उपदेश कर महेश्वर की देह में प्रवेश करते भये। इस भांति औरभी जो पुरुष नियतात्मा औ जितेन्द्रिय होके परमेश्वर की शरण में प्राप्तहोते हैं वेभी सब पापों से मुक्त हो कर महादेवमें ही लीन होते हैं जहां लीन होनेपर फिर पुनरावृत्ति नहीं होती अर्थात् फिर जन्म नहीं होता॥

चौदहवां अध्याय॥

सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो जब वह पीतकल्प

वीत गया तब असित अर्थात् कृष्ण कल्प प्रवृत्त भया। जब सर्वत्र जल व्याप्त होरहाथा ब्रह्माजीने सृष्टि रचने की इच्छाकरी औ ध्यान करने लगे पुत्र की कामनासे ध्यान करते २ ब्रह्माजी का कृष्णवर्ण होगया तब एक कुमार कृष्णवर्ण बड़ा तेजस्वी कृष्णवर्ण के वस्त्र भूषण माल्य अनुलेपन धारण किये अघोर नाम उत्पन्न भया उसको देख ब्रह्माजीने ध्यानसे जाना कि यह परमेश्वर है तब प्रणाम किया औ प्राणायाम के समय उस महेश्वर का ध्यान करने लगे ध्यान करते २ ब्रह्माजी को अघोरका दर्शनभया फिर अघोर के समीप चार कुमार उत्पन्न भये जो कृष्णवर्णके वस्त्रभूषण माल्य अनुलेपन धारण किये थे और उनके नाम कृष्ण, कृष्णशिख, कृष्णास्य और कृष्णवस्त्र थे वे सहस्र वर्ष पर्य्यन्त योग करके परमेश्वर का आराधन कर और अपने शिष्योंको योगका उपदेश दे परमेश्वर में लीन होते भये इस भांति जो परमेश्वर का स्मरण औरभी पुरुष करते हैं वे रुद्रलोक पाते हैं॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो जब वह अतिभयानक कृष्णवर्ण कल्प समाप्त भया तब ब्रह्माजी परब्रह्मस्वरूप अघोर की स्तुति करने लगे उनकी स्तुति सुनकर प्रसन्न हो अघोर कहनेलगे कि हे ब्रह्माजी ब्रह्महत्या आदि बड़े घोर पातक अनेक उपपातक कायिक पाप वाचिक पाप मानसिक पाप और भी अनेक भांति

के पाप जो जानकर अथवा विना जाने किये होंय हंस
मन्त्र इसी रूपसे हरते हैं अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यः इत्यादि
हंसारा मंत्र एकलाख जपने से ब्रह्महत्या दूर होती है
उससे आधा जप करने से वाचिक पाप उससे आधे जप
से मानस और चारगुणा जप करनेसे जानकर किये पाप
और आठ गुणा करनेसे क्रोधकर किये सब पातक उप-
पातक दूर होते हैं लक्ष जप करने से वीरहत्या और
कोटि जपसे भ्रूणहत्या और दश लक्ष जप से मातृहत्या
दूर होती हैं गोहत्या करने हारा कृतघ्न स्त्रीघातक और
भी अनेक पापों से युक्त मनुष्य दशहजार जप करने से
निष्पाप होजाता है। पैष्टी सुरा पीनेवाला लक्षजप कर-
ने से औ वारुणी पीनेवाला पचासहजार जप करके
विना स्नान किये भोजन करने हारा एक सहस्र जप
से गायत्री जप और अग्निहोत्र विना किये भोजन
करने हारा भी एक सहस्र जप करके शुद्ध होता है।
ब्राह्मण का धन हरने हारा औ सुवर्ण चोराने हारा
दशलक्ष जप करने से शुद्ध होता है गुरुस्त्री में गमन
करके वाला माता को वध अथवा ब्राह्मण का वध कर-
ने हारा भी दशलक्ष जपसे निष्पाप होजाता है पापी
पुरुषों के संसर्ग से भी पाप लगता है वह पाप दशह-
जार जप करने से दूर होता है। संसर्ग करके लगेहुये
बड़े पातक की निवृत्ति के लिये एक लक्ष मानस जप
करै अथवा चारलक्ष उपांशु जप करे अथवा आठ लक्ष
वाचिक जप करे महापातक से आधा जप उपपातक
दूरहोने के अर्थ करे विना जाने किये पाप दूर होने

को उपपातक के जपसे आधा जपकरे ब्रह्महत्या सुरा-
पान सुवर्ण की चोरी औ गुरुस्त्रीगमन ये महापातक
कहाते हैं इनका करनेहारा ब्राह्मण रुद्र गायत्री करके
कपिलागौ का मूत्रपीवै और गन्धद्वारा इस मन्त्र कर-
के उसी का गोबर ऊपर ग्रहण करे भूमिपर न गिरनेदेवे
(तेजोसिशुक्रं) इस मंत्र करके कपिलाका घृत (आप्या
यस्व) इस मंत्र करके दूध और (दधिक्राव्ण) इस मंत्र
करके दही और (देवस्यत्वा) इस मन्त्र करके कुशाका
जल लेकर सबको सुवर्ण के पात्र में इकट्ठाकर अघोर
मंत्र से अभिमंत्रित करे अथवा ताम्र के पात्रमें कमलके
अथवा पलाशके पत्रमेंही इकट्ठाकर लेवे और उसमें
सब रत्नों करके युक्त सुवर्ण भी गेरे फिर एक लक्ष अघोर
मंत्र जप कर घृत आदिसे हवन भी करे घृत, चारु,
समिधा, तिल, यव, धान्य इन द्रव्योंसे अलग २ हवन
करे सब की सात २ आहुति देवे जो ये वस्तु न मिलें
तो केवल घृत सेही हवन करे पीछे आठ द्रोण घृत से
अघोर मन्त्र करके सदा शिवको स्नान करावे और
दिन रात्रि उपवास करे दूसरे दिन प्रभातही स्नानकर
उस पंचगव्यको प्राशन करे अर्थात् पीजावे और आ-
चमन कर गायत्री का जप करे इस विधि के करने से
कृतघ्न, ब्रह्मघाती, भ्रूणहा, वीरघाती, गुरुघाती, मित्र
घाती, विश्वासघातक, सुवर्ण की चोरी करने हारा, गुरु
दारगामी, परदाराका धर्षण करने हारा, ब्राह्मणका धन
हरने हारा, गोघाती, मातापिताका घातक, देवता की
मूर्त्ति आदिको उखाड़ने वाला ये सब बड़े बड़े पापी

शुद्ध होजाते हैं और भी कायिक, वाचिक, मानस, पाप इस प्रायश्चित्त के करने से दूर होजाते हैं अधिक माहात्म्य कहां तक वर्णन करें अनेक जन्मों के पाप इस विधि से दूर होतेहैं यह विधि हमने प्रसङ्ग से वर्णनकी सब पाप निवृत्ति होनेके अर्थ इस अघोर मन्त्र का जप अवश्य द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णों को करना उचित है ॥

सोलहवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो असित कल्प के अनन्तर विश्वरूप कल्प भया उसमें ब्रह्माजी पुत्रकामना से तप करते थे कि विश्वरूपा सरस्वती उत्पन्न भई जो विश्वके सब वर्णों से युक्त वस्त्र भूषण, माला अनुलेपन आदिधारण किये और विश्वमाता विश्वके यज्ञोपवीत उष्णीष गन्ध आदि धारे थी और वही ईशान देव नामक भीथी उस ईशानदेव परमेश्वर शुद्ध स्फटिकके तुल्य निर्मल सब वस्त्र भूषण धारे हुये को देख मनमें उस सर्वव्यापी और सब के स्वामीका ध्यान कर ब्रह्माजी स्तुति करने लगे ॥

॥ स्तोत्र ॥

ओमीशाननमस्तेऽस्तुमहादेवनमोऽस्तुते। नमोऽस्तुसर्वविद्यानामीशानपरमेश्वर॥ १॥ नमोऽस्तुसर्वभूतानामीशानवृषवाहन। ब्रह्मणोऽधिपतेतुभ्यंब्रह्मणेब्रह्मरूपिणे २ नमोब्रह्माधिपतयेशिवंमेऽस्तुसदाशिव । ओङ्कारमूर्त्तेदेवेशसद्योजातनमोनमः ॥ ३ ॥ प्रपद्येत्वांप्रपन्नोऽस्मिस

द्योजातायवैनमः। अभवेचभवेतुभ्यं तथानातिभवेन मः॥४॥ भवोद्भवभवेशानमांभजस्वमहाद्युते। वामदेवनमस्तुभ्यंज्येष्ठायवरदायच॥५॥ नमोरुद्रायकालाय कलनायनमोनमः। नमोविकरणायैव कालवर्णायवर्णिने॥६॥ बलायबलिनांनित्यंसदाविकरणायते। बलप्रमथनायैवबलिनेब्रह्मरूपिणे॥७॥ सर्व्वभूतेश्वरेशायभूतानांदमनायच। नमोन्मनायदेवाय नमस्तुभ्यंमहाद्युते॥८॥ वामदेवायवामायनमस्तुभ्यंमहात्मने। ज्येष्ठायचैवश्रेष्ठाय रुद्रायवरदायच। कालहंत्रनमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यंमहात्मने॥९॥

इस स्तुतिसे ब्रह्माजी ईशानदेवकी स्तुति करतेभये जो पुरुष इस स्तोत्रका पाठकरे वह ब्रह्मलोक पावे और जो श्राद्धके समय ब्राह्मणोंको सुनावे उसके पितर उत्तम गति को प्राप्त होवें॥

इस भांति ब्रह्माजी को स्तुति करते और बार २ प्रणाम करते देख परमेश्वर ईशानदेव ने कहा कि मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूं मांगजो चाहताहै तब ब्रह्माजी कर जोर बड़ी नम्रता और भक्तिसे प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु यह चतुष्पादा, चतुर्मुखी, चतुश्शृङ्गी, चतुस्तनी, चतुर्दंष्ट्रा, चतुर्हस्ता, चतुर्नेत्रा विश्वरूपा गौ कौनहै और इसका नाम गोत्र और प्रभाव क्या है यह आप अनुग्रह कर मुझे उपदेश कीजिये यह ब्रह्माजीका वचन सुन ईशानदेव सब मंत्रोंका रहस्य अति पवित्र मंगल देनेहारा अपने पुत्र ब्रह्माजी के प्रतिकथन करने लगे कि हे ब्रह्माजी सब मंत्रों का रहस्य अति पवित्र यह

हम कहते हैं अब जो कल्प वर्त्तमान है इसका विश्वरूप कल्प नाम है इसमें तुमने तो ब्रह्म पद प्राप्त किया और मेरे वाम अङ्गमे उत्पन्न श्रीविष्णुजी को वैकुण्ठ पद मिला अब यह तेंतीसवां कल्पहै और हजारों कल्प तथा हजारों ब्रह्मा तुमसे पहिले बीत चुके हैं तुम्हारा मांडव्य गोत्र है और हमारे पुत्र रूपसे उत्पन्न भये हो इसलिये तुमको वह परब्रह्मरूप आनन्द जाननायोग्य है और तुम्हारे में योग, सांख्य, तप, विद्या, विधि, क्रिया, प्रियभाषण, सत्य, दया, वेद, अहिंसा, सद्बुद्धि, क्षमा, ध्यान, ध्येय, दम, शांति, ज्ञान, अविद्या, बुद्धि, धैर्य्य, कांति, नीति, ख्याति, मेधा, लज्जा, दृष्टि, सरस्वती, तुष्टि, पुष्टि, कर्म और प्रसन्नता ये गुण हैं यह विश्वरूपा धेनु तुम्हारी उत्पत्ति करनेहारी है इस में ये बत्तीस गुण हैं और ककार आदि बत्तीस अक्षर इसका स्वरूप है इसलिये वे गुण तुममें भी हैं सो यह भगवती चतुर्मुखी जगत् के उत्पन्न करने हारी प्रकृति मेरे से उपजी है जिसको तत्त्ववेत्ता पुरुष गौरी, माया, विद्या, कृष्णा हैमवती, प्रधान और प्रकृति इत्यादि नामों से पुकारते हैं यह माया अजा अर्थात् उत्पन्न नहीं होतीहै रक्त शुक्ल और कृष्ण इसके वर्ण हैं सब सृष्टि के सिर्जने हारी है और मैंभी विश्वरूप अजा अर्थात् किसीसे उत्पन्न नहीं होता हूं इतना ब्रह्माजी के प्रति महादेवजी कथन कर अनेक प्रकार के कुमार उत्पन्न करते भये कोई इनमें जटा धारे कोई आधा शिर और कोई २ सम्पूर्ण शिर मुड़वाये कोई मयूर के पङ्ख शिरपर धारे ये सब [illegible]

हज़ार वर्ष तक योग करके महेश्वर का आराधन कर और योग का उपदेश अपने शिष्य प्रशिष्यों को देकर शिवमेंही लीन होते भये ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह सद्योजात आदि शिवजी के अवतारों की कथा हमने संक्षेप से तुमको सुनाई इस कथा को जो पढ़े और सुनावे अथवा सुने वह ब्रह्मलोक पावे अब ऋषिलोग सूतजी से पूछते भये हे सूतजी किस भांति लिङ्ग उत्पन्न भया और लिङ्ग में किस प्रकार शिवजी की पूजा करनी योग्य है यह आप कहैं और लिङ्ग कौन है तथा लिङ्गी कौन है यहभी आप कथन कीजिये यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो यहही प्रश्न सब देवता ब्रह्माजी के प्रति करते भये कि हे महाराज यह लिङ्ग क्योंकर उत्पन्न भया और लिङ्ग में किस भांति शिवजी की पूजा करनी चाहिये लिङ्ग क्याहै और लिङ्गी कौन है यह सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि प्रधानका नाम लिङ्ग है और परमेश्वर लिङ्गी कहाता है जो समुद्र में हमारी और विष्णुजी की रक्षा के अर्थ प्रकट भया जब वैमानिक सर्ग अर्थात् देवताओं की सृष्टि समाप्त भई औ चार हज़ार युगके अन्तमें वृष्टि न होनेसे स्थावर जङ्गम सब शुष्क होगये और पशु, पक्षी, मनुष्य, वृक्ष, पिशाच, राक्षस, गन्धर्व आदि सब सूर्य्यके किरणों से दग्ध हो गये और पीछे समुद्र ने सबको अपने जलमें डुबोलिया

की ओर प्रवेश करतेभये इसभांति हजारवर्ष तक चले गये परन्तु लिङ्ग का अन्त न पाया और हमभी ऊपर को बहुत उड़े परन्तु लिङ्ग का अग्र न देखा तब दोनों व्याकुल हो लौट आये और बार २ उस परमेश्वर को प्रणामकर उसकी माया से मोहित हो विचार करनेलगे कि यह क्या है कि जिसका कहीं अन्त न पार यह विचार करते करते एक ओर प्लुतस्वर से ॐ ॐ यह शब्द सुनपड़ा। तब हम दोनों विचार करने लगे कि यह क्या शब्द है तो लिङ्ग के दक्षिण ओर ॐकारका स्वरूप देख पड़ा। कि जिसका प्रथम अक्षर अकार दूसरा उकार और तीसरा मकारहै। उनमें सूर्यमण्डल के तुल्य अकार दक्षिण की ओर प्रकाशमानहै। अग्नि की भांति देदीप्यमान उकार उत्तर की ओर है। चन्द्रमण्डल के सदृश मकार मध्य में विराजमान है। और उसके ऊपर शुद्ध स्फटिक के तुल्यतुरीयातीत, अमृत, निष्फल, निरुपद्रव, निर्द्वन्द्व, शून्य बाह्य, अभ्यन्तरसे रहित आदि अन्त करके वर्जित परम आनन्द का कारण विराजमानहै जिस प्रणव में तीन मात्रा ऋक् यजु औ सामरूप हैं और आधी मात्रा उसके ऊपरहै और उसी प्रणवसे वेद उत्पन्न भया औ उस वेद सेही विष्णु जीने परमेश्वरको जाना। जिस रुद्रको मन और इन्द्रिय नहीं जान सकतीं वही प्रणव का वाचक है। और उसी प्रणव के अकार अक्षर से ब्रह्मा उकार से विष्णु औ मकार से शिव उत्पन्न भये। अकार सृष्टिकर्त्ता है उकार सबको मोहकरनेहाराहै औ मकार सदा अनुग्रह

व्याप्त हैं पूर्वकाल में अव्यक्त मैंने रचा और चौबीस तत्त्व रचे और तुम तथा अनेक ब्रह्माण्ड निर्माण किये बुद्धिको हमने ही रचा और उसमें तीन प्रकार का अहङ्कार, पांच तन्मात्रा, मन, देह, इन्द्रिय, आकाश, आदि पांचभूत सब मैंने रचे हैं यह उनका वचनसुन हमको बहुत क्षोभ हुआ और उस प्रलयकालकेसमुद्र में दोनों का युद्ध होने लगा और बहुत काल तक हम दोनों का घोर युद्ध भया तब हमारी कलह निवृत्ति करने और हमको ज्ञान देने के अर्थ एक लिङ्ग हमारे सम्मुख प्रकट भया जो हज़ारों अग्निकी ज्वालाओंसे व्याप्त और अतिप्रकाशमान मानों सैकड़ों प्रलयाग्नि इकट्ठे होगये हैं और क्षय वृद्धि से रहित जिस के आदि अन्त का ठीकही नहीं जिसको उपमा देने के लिये कोई पदार्थ बुद्धि परही नहीं ठहरता उस लिङ्ग को देख हम दोनों मोहित हुये तब विष्णुजी ने हमसे कहा कि [illegible] [illegible] यह कह कर वाराह रूप धारते भये और हमने हंस का रूप धारा उसी दिनसे हमको हंस कहते हैं हम अति वेग से ऊपरको उड़े और विष्णुजी भी अञ्जनके पर्वत सा जिसका आकार दश योजन चौड़ा और शत योजन लम्बा और मेरु पर्वत की भांति अति ऊंचा अतिश्वेत और तीक्ष्ण जिसकी दंष्ट्रा प्रलय के सूर्य की भांति अतितेजस्वी बड़ाघोर शब्द करने हारा छोटे २ जिसके पैर अति दृढ़ देह वाराह बनकर लिङ्ग के नीचे

उस परमेश्वर का उदर फकार दक्षिणपार्श्व वकार वामपार्श्व भकार स्कन्ध मकार हृदय। यकार आदिसात वर्ण जिसके सातों धातु हकार आत्मा औ क्षकार जिस परमेश्वर का क्रोध रूप उस पार्वतीसहित परमेश्वर को देख विष्णु भगवान् वारवार प्रणामकर ऊपर को देखते भये कि ॐकार से उत्पन्न पांचकला करके युक्त शुद्धस्फटिक के तुल्य अड़तीस अक्षर का सब धर्म अर्थ का साधन करनेहारा बुद्धिकावर्द्धक ईशानःसर्वविद्यानां यह मन्त्र देख पड़ा दूसरा मन्त्र तत्पुरुषायविद्महे यह गायत्रीरूप हरितवर्ण वश्य करनेहारा चौवीस अक्षरों का औ चार कला करके युक्त ऋग्वेद का देखा। तीसरा अघोरमन्त्र आठकला करके युक्त तेंतीस अक्षर का आभिचारिक कृष्णवर्ण अथर्ववेदका देखा, चौथा सद्योजात मन्त्र यजुर्वेदका पैंतीस अक्षरों करके युक्त शान्ति करने हारा श्वेतवर्ण दृष्टि आया पांचवां वामदेवमन्त्र सामवेद का रक्तवर्ण तेरह कला करके युक्त, जगत् के वृद्धि औ संहार करनेहारा छियासठ वर्ण का देखा इन पांच मन्त्रों को पायकर विष्णुजी वहुत काल जप करते भये। वहुत कालके अनन्तर ऋक् यजु सामवेद स्वरूप चौसठ कला जिसकी कान्ति ईशान मन्त्र जिसका मुकुट तत्पुरुष मन्त्र मुख अघोरमन्त्र हृदय वामदेवमन्त्र गुह्य और सद्योजातमन्त्र जिस परमेश्वर के चरणथे। वड़े २ सर्पों के भूषण धारे चारों ओर जिसके हाथ पांव नेत्र मुख थे सबके स्वामी और सृष्टि स्थिति संहार करनेहारे उसपरमेश्वर को देखा औ हाथ

किया करता है। मकार प्रभु औ बीजवान् है अकार बीज है प्रधान पुरुषेश्वर उकार रूपविष्णु योनि है। उस बीजवान् के लिङ्गसे अकाररूप बीज उत्पन्नहोकर उकार रूप योनिमें गिरा औ चारों ओर वृद्धिकोप्राप्त होने लगा औ सुवर्ण का अण्ड होकर बहुत कालजल में रहा औ कई हज़ार वर्ष के अनन्तर उस अण्ड के दो भाग परमेश्वर ने किये जिनमें ऊपर का भाग आकाश औ नीचे का पृथिवी भया औ उसी अण्ड से चतुर्मुख ब्रह्मा उत्पन्न भये कि जिनने सब लोक रचे इस प्रकार ॐ ॐ शब्द से यह ब्रह्माण्ड भया यह यजुर्वेद जानने हारे कहते हैं। औ इसी भांति ऋग्वेद औ सामवेद में भी कहाहै। इस प्रकार हम दोनोंउस लिङ्गरूप परमेश्वर को जान श्रुतियोंसे स्तुति करते भये। वह परमेश्वरभी हमारी स्तुतिसे प्रसन्नहो शब्द मय रूप धार कर हँसते हुये हमारे सम्मुख उस लिङ्ग में प्रकट भये। अकार जिनका मस्तक, आकार ललाट इकार दहिनानेत्र, ईकार बामनेत्र, उकार दहिना कर्ण ऊकार बामकर्ण, ऋकार दक्षिण कपोल, ॠकार बाम कपोल, लृकार दक्षिण नासिका, लॄकार बाम नासिका एकार ऊपर का ओष्ठ, ऐकार नीचेका ओष्ठ, ओकार ऊपर की दन्तपङ्क्ति, औकार नीचे की दन्तपङ्क्ति, अं ऊपर का तालु औ अः नीचे का। इसी भांति ककार आदि पांच अक्षर दाहिनी ओरके पांच हाथ चकार आदिपांच अक्षर बाईंओर के पांच हाथ टकार आदि पांचअक्षर दक्षिण पाद औ तकार आदि पांच वर्ण बामपाद पकार

खायच। श्वेतास्यायमहास्यायनमस्तेश्वेतलोहिते १४
सुतारायविशिष्टायनमोदुन्दुभिनेहर। शतरूपविरूपा
यनमःकेतुमतेसदा १५ ऋद्धिशोकविशोकाय पिनाका
यकपर्दिने। विपाशायसुपाशायनमस्तेपापनाशिने १६
सुहोत्रायहविष्याय सुब्रह्मण्यायसूरिणे। सुमुखायसुव
क्त्रायदुर्दमायदमायच १७ कङ्कायकङ्करूपायकङ्कणी
कृतपन्नग। सनकायनमस्तुभ्यंसनातनसनन्दन १८
सनत्कुमारसारङ्गमारणायमहात्मने। लोकाक्षिणेत्रिधा
मायनमोविरजसेसदा १९ शङ्खपालायशेषायरजसे
तमसेनमः। सारस्वतायमेघायमेघवाहनतेनमः २०
सुवाहायविवाहायविवादवरदायच। नमःशिवायरुद्राय
प्रधानायनमोनमः २१ त्रिगुणायनमस्तुभ्यं चतुर्व्यूहा
त्मनेनमः। संसारायनमस्तुभ्यंनमःसंसारहेतवे २२
मोक्षायमोक्षरूपाय मोक्षकर्त्रेनमोनमः। आत्मनेऋष
येतुभ्यंस्वामिनेविष्णवेनमः २३ नमोभगवतेतुभ्यंना
गानाम्पतयेनमः। ॐकारायनमस्तुभ्यंसर्वज्ञायनमो
नमः २४ सर्वायचनमस्तुभ्यंनमोनारायणायच। नमोहि
रण्यगर्भायआदिदेवायतेनमः २५ नमोऽस्त्वजायपत
ये प्रजानांव्यूहहेतवे। महादेवायदेवानामीश्वरायनमो
नमः २६ शर्वायचनमस्तुभ्यंसत्यायेशमनायच। ब्रह्म
णेचैवभूतानांसर्वज्ञायनमोनमः २७ महात्मनेनमस्तु
भ्यंप्रज्ञारूपायवैनमः। चितयेचितिरूपायस्मृतिरूपाय
वैनमः २८ ज्ञानायज्ञानगम्यायनमस्तेसंविदेसदा।
शिखरायनमस्तुभ्यंनीलकण्ठायवैनमः २९ अर्द्धनारी
शरीराय अव्यक्तायनमोनमः। एकादशविभेदायस्था

जोरि बड़ी भक्ति से श्रीविष्णुजी स्तुति करने लगे।

अठारहवां अध्याय॥

शिवस्तुति॥

विष्णुरुवाच। एकाक्षरायरुद्रायअकारायात्मरूपिणे। उंकारायादिदेवायविद्यादेहायवैनमः १ तृतीयाय मकारायशिवायपरमात्मने। सूर्य्याग्निसोमवर्णाय जमानायवैनमः २ अग्नयेरुद्ररूपायरुद्राणांपतयेनमः। शिवायाशिवमन्त्रायसद्योजातायवेधसे ३ वामायवामदेवायवरदायामृतायते। अघोरायातिघोराय सद्योजातायरंहसे ४ ईशानायश्मशानायअतिवेगायवेगिने। नमोऽस्तुश्रुतिपादायऊर्द्धलिङ्गायलिङ्गिने ५ हेमलिङ्गायहेमायवारिलिङ्गायचाम्भसे। शिवायशिवलिङ्गाय व्यापिनेव्योमव्यापिने ६ वायवेवायुवेगायनमस्तेवायुव्यापिने। तेजसेतेजसांभर्त्रे नमस्तेजोधिव्यापिने ७ जलायजलभूताय नमस्तेजलव्यापिने। पृथिव्यैचान्तरिक्षाय पृथिवीव्यापिनेनमः ८ शब्दस्पर्शस्वरूपायरसगन्धायगन्धिने। गणाधिपतयेतुभ्यंगुह्याद्गुह्यतमायते ९ अनन्तायविरूपायअनन्तानामयायच। शाश्वतायवरिष्ठायवारिगर्भाययोगिने १० संस्थितायाम्भसांमध्ये आवयोर्मध्यवर्त्तसे। गोप्त्रेहर्त्रेसदाकर्त्रेनिधनायेश्वरायच ११ अचेतनायचिन्त्याय चेतनायासहारिणे। अरूपायसुरूपायअनङ्गायाङ्गहारिणे १२ भस्मदिग्धशरीरायभानुसोमाग्निहेतवे। श्वेतायश्वेतवर्णायतुहिनाद्रिचरायच १३ सुश्वेतायसुवक्त्राय नमःश्वेतशि

खायच । श्वेतास्यायमहास्यायनमस्तेश्वेतलोहिते १४
सुतारायविशिष्टायनमोदुन्दुभिनेहर । शतरूपविरूपा-
यनमःकेतुमतेसदा १५ ऋद्धिशोकविशोकाय पिनाका
यकपर्दिने । विपाशायसुपाशायनमस्तेपापनाशिने १६
सुहोत्रायहविष्याय सुब्रह्मण्यायसूरिणे । सुमुखायसुव
क्त्रायदुर्दमायदमायच १७ कङ्कायकङ्करूपायकङ्कणी
कृतपन्नग । सनकायनमस्तुभ्यंसनातनसनन्दन १८
सनत्कुमारसारङ्गमारणायमहात्मने । लोकाक्षिणेत्रिधा
मायनमोविरजसेसदा १९ शङ्खपालायशेषायरजसे
तमसेनमः । सारस्वतायमेघायमेघवाहनतेनम २०
सुवाहायविवाहायविवादवरदायच । नमःशिवायरुद्राय
प्रधानायनमोनमः २१ त्रिगुणायनमस्तुभ्यं चतुर्व्यूहा
त्मनेनमः । संसारायनमस्तुभ्यंनमःसंसारहेतवे २२
मोक्षायमोक्षरूपाय मोक्षकर्त्रेनमोनमः । आत्मनेऋष
येतुभ्यंस्वामिनेविष्णवेनमः २३ नमोभगवतेतुभ्यंना
गानाम्पतयेनमः । ॐकारायनमस्तुभ्यंसर्वज्ञायनमो
नमः २४ सर्वायचनमस्तुभ्यंनमोनारायणायच । नमोहि
रण्यगर्भायआदिदेवायतेनमः २५ नमोऽस्त्वजायपत
ये प्रजानांव्यूहहेतवे । महादेवायदेवानामीश्वरायनमो
नमः २६ शर्वायचनमस्तुभ्यंसत्यायशमनायच । ब्रह्म
णेचैवभूतानांसर्वज्ञायनमोनमः २७ महात्मनेनमस्तु
भ्यंप्रज्ञारूपायवैनमः । चितयेचितिरूपायस्मृतिरूपाय
वैनमः २८ ज्ञानायज्ञानगम्यायनमस्तेसंविदेसदा ।
शिखरायनमस्तुभ्यंनीलकण्ठायवैनमः २९ अर्द्धनारी
शरीराय अव्यक्तायनमोनमः । एकादशविभेदायस्था

जोरि बड़ी भक्ति से श्रीविष्णुजी स्तुति करने लगे।

अठारहवां अध्याय॥

शिवस्तुति॥

विष्णुरुवाच। एकाक्षरायरुद्रायअकारायात्मरूपिणे। उंकारायादिदेवायविद्यादेहायवैनमः १ तृतीयाय मकारायशिवायपरमात्मने। सूर्य्याग्निसोमवर्णायय जमानायवैनमः २ अग्नयेरुद्ररूपायरुद्राणांपतयेनमः। शिवायशिवमन्त्रायसद्योजातायवेधसे ३ वामायवामदेवायवरदायामृतायते। अघोरायातिघोराय सद्योजा [illegible] ४ [illegible] । [illegible] ५ [illegible] । [illegible] व्यापिनेव्योमव्यापिने ६ वायवेवायुवेगायनमस्तेवायुव्यापिने। तेजसेतेजसांभर्त्रे नमस्तेजोधिव्यापिने ७ जलायजलभूताय नमस्तेजलव्यापिने। पृथिव्यैचान्तरिक्षाय पृथिवीव्यापिनेनमः ८ शब्दस्पर्शस्वरूपायरसगन्धायगन्धिने। गणाधिपतयेतुभ्यंगुह्याद्गुह्यतमाय ते ९ अनन्तायविरूपायअनन्तानामयायच। शाश्वतायवरिष्ठायवारिगर्भाययोगिने १० संस्थितायाम्भसांमध्येआवयोर्मध्यवर्च्चसे। गोप्त्रेहर्त्रेसदाकर्त्रेनिधनायेश्वरायच ११ अचेतनायाचिन्त्याय चेतनायासहारिणे। अरूपायसुरूपायअनङ्गायाङ्गहारिणे १२ भस्मदिग्धशरीरायभानुसोमाग्निहेतवे। श्वेतायश्वेतवर्णायतुहिनाद्रिचरायच १३ सुश्वेतायसुवक्त्राय नमःश्वेतशि

देना चाहते हैं तो यही वर मिले कि आपके चरणों में हम दोनोंकी दृढ़ भक्ति होय यह उनकी प्रार्थना सुन श्रीमहादेव जी दृढ़भक्ति अपने चरणोंमें देते भये । विष्णुजी भूमि पर दण्डवत्प्रणाम कर कहने लगे कि महाराज आप हमारा विवाद दूरकरने के अर्थ प्रकटभये यह परम अनुग्रह किया । यह कर जोरि विनती करते हुये श्रीविष्णु जी का वचन सुन हँसकर महादेवजीने कहा कि हे विष्णुजी उत्पत्ति स्थिति संहार के कर्त्ता आप हैं तुम इस चराचर जगत् का पालन करो । मैं ही ब्रह्मा विष्णु रुद्र रूपसे सृष्टि स्थिति संहार करताहूं इसलिये तुम तीनों मेराही रूप हो । तुम इस मोहको छोड़ कर जगतका पालन करो पाद्मकल्पमें ब्रह्माजी तुम्हारे पुत्र होंगे तबभी तुम दोनों को मेरा दर्शन होगा इतनाकह महादेवजी वहांही अन्तर्द्धान भये उसी दिनसे जगत् में शिवलिङ्गकी पूजाका प्रचार भया लिङ्गकी वेदी अर्थात् जलहरी पार्वती और लिङ्ग साक्षात् शिवकारूप है । सब जगत् का उसी में लय होता है इसलिये उसका नाम लिङ्गहै यह लिङ्ग का आख्यान जो ब्राह्मण शिवलिङ्ग के समीप पठन करे वह भी शिवरूप होजाय इस में कुछ सन्देह नहीं ॥

बीसवां अध्याय ॥

सब ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी पाद्मकल्पमें ब्रह्माजी पद्मसे किस भांति उपजे औ ब्रह्माजी तथा विष्णुजी को किस भांति शिव जी का दर्शन भया यह सब

णवेतेनमःसदा ३० नमःसोमायसूर्य्याय भवायभव
हारिणे। यशस्करायदेवायशङ्करायेश्वरायच ३१
नमोऽम्बिकाधिपतयेउमायाःपतयेनमः। हिरण्यवाह
वेतुभ्यंनमस्तेहेमरेतसे ३२ नीलकेशायचित्तायशितिक
ण्ठायवैनमः। कपर्दिनेनमस्तुभ्यंनागाङ्गाभरणायच३३
वृषारूढायसर्वस्यकर्त्रेहर्त्रेनमोनमः॥ इति॥
ब्रह्माजी कहते हैं कि हे देवताओ इस प्रकार विष्णु जी स्तुति कर बार२ प्रणाम करते भये। यह सब पापों के दूर करने हारा स्तोत्र जो पाठ करै अथवा वेद के जानने वाले ब्राह्मणोंको सुनावे वह पापीभी ब्रह्मलोक पावे। इसलिये यह विष्णुजी का कहा हुआ स्तोत्र सब पाप दूर करने के अर्थ नित्य पठन करना और ब्राह्मणोंको श्रवण कराना चाहिये॥

उन्नीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो इस प्रकार स्तुति सुनि महादेव जी प्रसन्न होकर कहने लगे कि हम तुम से प्रसन्नहैं तुम भय छोड़ हमारा दर्शन करो तुमदोनों मेरी देहसे उत्पन्न भयेहो यहसब सृष्टि के उत्पन्न करने हारा ब्रह्मा मेरे दक्षिण अङ्गसे और विष्णु वाम अङ्गसे उत्पन्न भया है अब मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं जो वर तुमको चाहिये वह मांगो। इतना कह महादेव जी प्रीतिसे अपने हस्त करके हमारे शरीरको स्पर्श करते भये। यह महादेव जीका वचन सुन विष्णुजी कहने लगे कि हे नाथ जो आप हम पर प्रसन्न हैं और वर

देना चाहते हैं तो यही वर मिलै कि आपके चरणों में हम दोनोंकी दृढ़ भक्ति होय. यह उनकी प्रार्थना सुन श्रीमहादेव जी दृढ़भक्ति अपने चरणोंमें देते भये। विष्णुजी भूमि पर दण्डवत्प्रणाम कर कहने लगे कि महाराज आप हमारा विवाद दूरकरने के अर्थ प्रकटभये यह परम अनुग्रह किया। यह कर जोरि विनती करते हुये श्रीविष्णु जी का वचन सुन हँसकर महादेवजीने कहा कि हे विष्णुजी उत्पत्ति स्थिति संहार के कर्त्ता आप हैं तुम इस चराचर जगत का पालन करो। मैं ही ब्रह्मा विष्णु रुद्र रूपसे सृष्टि स्थिति संहार करताहूं इसलिये तुम तीनों मेराही रूप हो। तुम इस मोहको छोड़ कर जगतका पालन करो पाद्मकल्पमें ब्रह्माजी तुम्हारे पुत्र होंगे तबभी तुम दोनों को मेरा दर्शन होगा इतनाकह महादेवजी वहांही अन्तर्द्धान भये उसी दिनसे जगत् में शिवलिङ्गकी पूजाका प्रचार भया लिङ्गकी वेदी अर्थात् जलहरी पार्वती और लिङ्ग साक्षात् शिवकारूप है। सब जगत् का उसी में लय होता है इसलिये उसका नाम लिङ्गहै यह लिङ्ग का आख्यान जो ब्राह्मण शिवलिङ्ग के समीप पठन करे वह भी शिवरूप होजाय इस में कुछ सन्देह नहीं॥

बीसवां अध्याय॥

सब ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी पाद्मकल्पमें ब्रह्माजी पद्मसे किस भांति उपजे औ ब्रह्माजी तथा विष्णुजी को किस भांति शिव जी का दर्शन भया यह सब

वृत्तान्त आप विस्तार से कथन करें। यह मुनियों का वचन सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो उस प्रलयके समय सब जगत् जलमय हो रहाथा औ अन्धकार चारों ओर व्याप्त होरहा था। उस समुद्र में शंख, चक्र, गदा, पद्म, धारण किये नील मेघ के तुल्य जिनका वर्ण कमल से नेत्र मुकुट धारे आठ जिनके भुज बड़े विस्तार औ ऊँचाई करके युक्त जो हजार फणों करके युक्त शेषनाग रूप शय्यापर लक्ष्मीजी सहित अचिन्त्य योग में स्थित होकर श्रीविष्णुजी शयन करते भये। उस समय श्रीविष्णुजी ने अपने क्रीड़ा के निमित्त शतयोजन विस्तार वाला एक कमल बड़े ऊंचे वज्रदण्ड करके युक्त अपनी नाभिसेउत्पन्न किया और उस कमल से क्रीड़ा करने लगे। इस अवसर में चतुर्मुख ब्रह्मा वहां आये औ विष्णुजीको देख बड़े आश्चर्य से कहने लगे कि तुम कौनहो औ इस समुद्रके बीच क्यों सोतेहो। यह ब्रह्माजीका वचन सुन विष्णुजी उठ बैठे औ कहने लगे कि प्रतिकल्प में हम यहांही शयन करते हैं। औ आकाश भूमि स्वर्ग आदिके हमहीं प्रभु हैं। इतना कह फिर ब्रह्मा जीसे कहा कि तुम कौन हो औ कहां से आये कहां जावोगे कहां रहते हो औ हम तुम्हारा क्या सत्कारकरें। यह विष्णुजी का वचन सुन शम्भुकी मायासे मोहित हुये २ विष्णुजीको विनाजाने ब्रह्माजी कहने लगे कि जैसे तुम जगत् के प्रभु अपने को कहते हो इसी भांति हम भी जगत् के स्वामी औ सिरजनेहारे हैं। यह ब्रह्माजी का वचन सुन विष्णुजी

को बड़ा आश्चर्य भया औ ब्रह्माजी की आज्ञा पाय वि-
ष्णुजी उनके मुख में प्रवेश करते भये वहां ब्रह्माजी के
उदर में अठारह द्वीप सात समुद्र बड़े २ पर्वत सात
लोक ब्राह्मण आदि चारवर्ण और अनेक भांतिके स्था-
वर जङ्गम विष्णुजी देखते भये औ विस्मित हो विचार
करते लगे कि बड़ाभारी तप ब्रह्माजी का है। औ इधर
उधर विचरने लगे परन्तु हजारों वर्ष तक कभी अन्त
न पाया तब फिर मुखके मार्ग बाहर निकल आये औ
ब्रह्माजी से कहने लगे कि आप के उदर का कुछ अन्त
नहीं परन्तु मेरे उदर में भी आप प्रवेश करें औ इन
सब लोकों को देखें यह विष्णुजी की वाणी सुन ब्रह्मा-
जी उनके उदर में प्रवेश करते भये और वहां सबलो-
कों को देख भ्रमण करने लगे परन्तु अन्त न पाया औ
विष्णुजी भी अपने सब मुख आदि द्वारों को रोक कर
शयन करते भये। ब्रह्माजी को बाहर निकलनेकी इच्छा
भई जब किसी ओर भी राह न मिली तो सूक्ष्म रूप
धार विष्णुजी की नाभि के मार्ग कमलनाल के सहारे
बाहर निकल आये औ उस नाभिकमल के ऊपर वि-
राजमान होगये इसी अवसरमें शूल हस्तमें लिये सुन्दर
वस्त्र धारे महादेवजी वहां आये और उनके चरणों से
पीड़ित हुये समुद्र जलके विन्दु आकाशतक पहुंचे औ
अतिशीतल कभी अतिउष्ण वायु चलने लगी । यह
बड़ा आश्चर्य देख ब्रह्माजी विष्णुजी से कहने लगे कि
ये जल के विन्दु औ यह प्रचण्ड पवन इस कमल को
कम्पायमान कर रहा है यह क्या उपद्रव है यह आपकहैं।

यहब्रह्माजीका वचन सुन विष्णुजी मनमें विचार करने लगे कि यह हमारे नाभिकमल में कौनजीवहै जो बहुत मीठी २ बातें बना रहा है यह मनमें विचार कर विष्णु जी बोले कि तुम कौन हो औ क्या भय तुम को भया है। तब ब्रह्माजी बोले कि जिस प्रकार आपने हमारे उदर में प्रवेश कर सब लोक देखे इसी भांति हमने भी आपके उदरमें देखे परन्तु जब हमने बाहर निकलना चाहा तब आपने ईर्षासे हमको वशकरनेके अर्थ सबद्वार रोक लिये तब हम सूक्ष्मरूप धार कमलनाल केमार्ग बाहर निकल आये इसमें आप कुछबुरा न मानें औ हमारे को जो आज्ञा करनी होय करें हम आपके आधीन हैं। यह ब्रह्माजीकी बड़ी मधुरवाणी सुन विष्णु जी बोले कि हमने आप को बोध कराने के अर्थ सबद्वार रोकेथे इस में आपकुछ क्षोभ न करना। आप हमारे मान्य औ पूज्यहैं इसलिये जो कुछ हमसे अपकार बनपड़ाहो क्षमाकरें। औ इसकमल से आपनीचे उतरें हम आपका भार नहीं सम्हार सकते हैं। आप जगत्गुरु हैं। तब ब्रह्माजीने कहा कि आप वरमांगो हम देंगे। तब विष्णुजीनेकहा कि यहीवरहै कि आपइस कमल से नीचे उतर आवें औहमारे पुत्र बनें। तोआप भी परमहर्षको पावेंगे। आज से तुम सबके स्वामी श्वेत उष्णीष अर्थात् पगड़ी धारेरहो औ पद्मयोनि तुम्हारा नाम होगा औ हमारे पुत्र होकर सातलोक के स्वामी होगे। यह तो विष्णुजी ने कहा औ ब्रह्माजी ने भी जो वर विष्णुजी ने मांगेथे उनको देकर सब मनके विकल्प

दूरकरते भये इसी अवसर में देखा कि सूर्यकेतुल्य प्रकाशमान बड़ा जिनका मुख बड़ी २ दंष्ट्रा ऊंचे जिनके केश दशभुजा त्रिशूल हाथ में लिये भयङ्कर रूपधारे मूंजकी मेखला पहिने बड़ा स्थूल जिनका मेढ़ भयानक शब्द करतेहुये शिवजी चले आते हैं ब्रह्माजी विष्णुजीसे कहने लगे कि यह ऐसा भयङ्कर पुरुष कौनहै जो सबदिशा औ आकाशको व्याप्त किये तेजपुञ्ज सा इधरही चलाआता है तब विष्णु जी बोले कि ठीक है इनके चरणों से सब समुद्र व्याकुल होरहा है औ जल के बिन्दुओं से तुम भीगगये। औ इनकी नासिका के पवन से यह हमारा नाभिकमल तुम्हारे सहित कांपताहै ये साक्षात् पार्वतीप्राणनाथ जगत्के आदि अन्त करने हारे महादेवजी हैं अब हम दोनों इनकी स्तुति करें। यह सुन क्रोध कर ब्रह्माजी बोले कि आप अपने स्वरूप को औ हमारे स्वरूपको नहीं जानते। यह हमसे अधिक और महादेव नामक कौन है। यह सुन विष्णुजी बोले कि ब्रह्माजी ऐसा आप न कहें ये जगत् के हेतु हैं औ सब बीज इनके हैं ये बीजवान् हैं। पुराण पुरुष परमेश्वर इनकोही कहते हैं। यह जगत् इनका खिलौना है बीजवान्येहैं। आप बीजहैं औ हमयोनिहैं। प्रधान, अव्यय, अव्यक्त, प्रकृति, तमयोनि ये सबहमारे नामहैं। यहसुन ब्रह्माजी बोले कि हम क्योंकर बीज हैं औ ये बीजवान् और आपयोनि क्योंकर हैं यह मेरा सन्देह आप निवृत्तकरें। तब विष्णुजी बोले कि इनसे अधिक कोई नहीं है इनने अपने दोभाग किये हैं एक

प्रकृति दूसरा पुरुष इनका बीज सृष्टिके आदिमें हमारी जलरूप योनिमें गिरा और सुवर्णका अण्ड होगया और सहस्रवर्ष तक उसी जलमें रहा फिरवायुसे उसके दो भाग होगये एक पृथिवी दूसरा आकाश और यह मेरु पर्वत उसी अण्ड का उल्व अर्थात् जेर है जो गर्भ में अण्डके ऊपर वेष्टन लिपटा रहता है और उस अण्ड के मध्य में हिरण्यगर्भ चतुर्मुख ब्रह्माजी उत्पन्न भये और उन्होंनेसूर्य, चन्द्र, तारा, नक्षत्रपर्यन्त सबलोक शून्य देख विचारकिया कि हम कौन हैं तब सबयतियों के स्वामी अतिसुन्दर स्वरूप वे कुमार उत्पन्नभये। फिर हजार वर्ष के अन्तर अतितेजस्वी कमल के तुल्य जिनके नेत्र श्रीमान् सनत्कुमार, ऋभु, सनक, सनातन, सनन्दन येसब ऊर्ध्वरेता कुमार उत्पन्न भये। ये सब अतिज्ञानी जगत् की स्थिति के हेतु तापत्रय करके रहित हैं थोड़ा सुख बहुत दुःख जीवन मरण बार २ जन्मलेना इत्यादि क्लेश इस संसारमें हैं स्वर्ग में भी थोड़ा ही सुख है औ नरक में केवल दुःख है औ भावी कभी नहीं टलती यह विचारकर तीन तो ज्ञान में प्रवृत्त भये औ ऋभु तथा सनत्कुमार दो तुम्हारे पास रहे जब वे सनक आदि ज्ञान में प्रवृत्त होगये तब तुम शिवजी की माया से मूढ़ भये औ इसी भांति सब जीव ईश्वरकी माया से मोहित होरहे हैं। जिसप्रकार सब जगत् में मेरु पर्वत प्रसिद्ध है उसीभांति महादेवका माहात्म्य प्रसिद्ध है। इस प्रकार ईश्वर को जान औ हम को समझ कर तथा सब जगत् के गुरु महादेवजीको मान

प्रणवयुक्त सामवेद करके स्तुति करो नहींतो येक्रोधसे तुमको औ हमको दग्ध करदेंगे। इसलिये हम आपको आगे कर श्री महादेव जीकी स्तुति करते हैं॥

इक्कीसवां अध्याय॥

सूतजीकहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार विचार कर ब्रह्माजीको आगेकर व्यतीत,वर्त्तमान, औभविष्य वैदिकनामों करके विष्णु जी यह स्तुति श्रीमहादेवजी की करनेलगे॥

विष्णुरुवाच॥ नमस्तुभ्यंभगवतेसुव्रतानन्ततेजसे। नमःक्षेत्राधिपतयेबीजिनेशूलिनेनमः १ सुमेढ्रायाच्यमेढ्रायदण्डिनेरूक्षरेतसे। नमोज्येष्ठायश्रेष्ठायपूर्वायप्रथमायच २ नमोमान्यायपूज्यायसद्योजातायवैनमः। गह्वरायघटेशायव्योमचीराम्बरायच ३ नमस्तेह्यस्मदादीनांभूतानांप्रभवेनमः। वेदानांप्रभवेचैव स्मृतीनांप्रभवेनमः ४ प्रभवेकर्मदानानांद्रव्याणांप्रभवेनमः। नमो योगस्यप्रभवे साङ्ख्यस्यप्रभवेनमः ५ नमोध्रुवनिबद्धानामृषीणांप्रभवेनमः। ऋक्षाणांप्रभवेतुभ्यंग्रहाणांप्रभवेनमः ६ वैद्युताशनिमेघानांगर्जितप्रभवेनमः। महोदधीनांप्रभवेद्वीपानांप्रभवेनमः ७ अद्रीणांप्रभवेचैववर्षाणांप्रभवेनमः। नमोनदीनांप्रभवे नदानांप्रभवेनमः ८ महौषधीनांप्रभवे वृक्षाणांप्रभवेनमः। धर्म्मवृक्षायधर्म्माय स्थितीनांप्रभवेनमः ९ प्रभवेचपरार्द्धस्यपरस्य प्रभवेनमः। नमोरसानांप्रभवे रत्नानांप्रभवेनमः १० क्षणानांप्रभवेचैव लवानांप्रभवेनमः। अहोरात्रार्द्धमासा

नांमासानांप्रभवेनमः ११ ऋतूनांप्रभवेतुभ्यं सङ्ख्यायाः
प्रभवेनमः। प्रभवेचापरार्द्धस्य परार्द्धप्रभवेनमः १
नमःपुराणप्रभवेसर्गाणांप्रभवेनमः। मन्वन्तराणांप्र
वे योगस्यप्रभवेनमः १३ चतुर्विधस्यसर्गस्यप्रभवे
नन्तचक्षुषे। कल्पोदयनिबन्धानांवार्त्तानांप्रभवेनमः १
नमोविश्वस्यप्रभवे ब्रह्माधिपतयेनमः। विद्यानांप्रभ
चैव विद्याधिपतयेनमः १५ नमोव्रताधिपतये व्रतान
प्रभवेनमः। मन्त्राणांप्रभवेतुभ्यं मन्त्राधिपतयेनमः १
पितॄणांपतयेचैव पशूनांपतयेनमः। वाग्वृषायनमस्तुभ्
पुराणवृषभायच १७ नमःपशूनांपतयेगोवृषेन्द्रध्वज
यच। प्रजापतीनांपतये सिद्धीनांपतयेनमः १८ दैत
दानवसङ्घानां राक्षसांपतयेनमः। गन्धर्वाणांचपतये
क्षाणांपतयेनमः १९ गरुडोरगसर्पाणां पक्षिणांपतये
नमः। सर्वगुह्यपिशाचानांगुह्याधिपतयेनमः २० गोक
र्णायचगोप्त्रेचशंकुकर्णायवैनमः। वराहायाप्रमेयाय
ऋक्षायविरजायच २१ नमोरसानांपतयेगणानांपतये
नमः। अम्भसांपतयेचैवओजसांपतयेनमः २२ नमो
स्तुलक्ष्मीपतये श्रीपतेभूपतेनमः। बलाबलसमूहायअ
क्षोभ्यक्षोभणायच २३ दीप्तशृङ्गैकशृङ्गायवृषभायककु
द्मिने। नमःस्थैर्यायवपुषेतेजसानुव्रतायच २४ अती
तायभविष्यायवर्तमानायवैनमः। सुवर्चसेचवीर्यायशू
रायह्यजितायच २५ वरदायवरेण्यायपुरुषायमहात्मने।
नमोभूतायभव्याय महतेप्रभवायच २६ जनायचनम
स्तुभ्यंतपसेवरदायच। अणवेमहतेचैवनमःसर्वगताय
च २७ नमोबन्धायमोक्षायस्वर्गायनरकायच। नमोभ

वायदेवायइज्याययाजकायच २८ प्रत्युदीर्णायदीप्ता
यतत्त्वायातिगुणायच । नमःपाशायशस्त्रायनमोस्त्वाभ
रणायच २९ हुतायउपहूतायप्रहुतप्राशितायच । न
मोस्त्विष्टायपूर्त्ताय अग्निष्टोमद्विजायच ३० सदस्याय
नमश्चैवदक्षिणावभृथायच । अहिंसायाप्रलोभायपशु
मन्त्रौषधायच ३१ नमःपुष्टिप्रदानायसुशीलायसुशीलि
ने।अतीतायभविष्यायवर्त्तमानायतेनमः ३२ सुवर्च्चसेच
वीर्य्यायशूरायह्यजितायच। वरदायवरेण्यायपुरुषायम
हात्मने ३३ नमोभूतायभव्यायमहतेचाभयायच । ज
रासिद्धनमस्तुभ्यमयसेवरदायच ३४ अधरेमहतेचैव
नमःसस्तुपतायच। नमश्चेन्द्रियपत्राणांलेलिहानायस्र
ग्विणे ३५ विश्वायविश्वरूपायविश्वतःशिरसेनमः ।
सर्व्वतःपाणिपादायरुद्रायाप्रतिमायच ३६ नमोहव्याय
कव्यायहव्यवाहायवैनमः । नमःसिद्धायमेध्यायइष्टाये
ज्यापरायच ३७ सुवीरायसुघोरायअक्षोभ्यक्षोभणाय
च । सुप्रजायसुमेधायदीप्तायभास्करायच ३८ नमो
बुद्धायशुद्धायविस्तृतायमतायच । नमःस्थूलायसूक्ष्मा
यदृश्यादृश्यायसर्वशः ३९ वर्षतेज्वलतेचैव वायवेशि
शिरायच । नमस्तेवक्रकेशाय ऊरुवक्षःशिखायच ४०
नमोनमःसुवर्णायतपनीयनिभायच । विरूपाक्षायलिङ्गा
यपिङ्गलायमहौजसे ४१ वृष्टिघ्नायनमश्चैवनमःसौम्ये
क्षणायच । नमोधूम्रायश्वेतायकृष्णायलोहितायच ४२
पिशितायपिशङ्गायपीतायचनिषङ्गिणे । नमस्तेसविशे
षाय निर्विशेषायवैनमः ४३ नमइज्यायपूज्यायउपजी
व्यायवैनमः । नमःक्षेम्यायवृद्धायवत्सलायनमोनमः ४४

नमोभूतायसत्यायसत्यासत्यायवैनमः। नमोवैपद्मवर्णा
यमृत्युघ्नायचमृत्यवे ४५ नमोगौरायश्यामायकद्रवेलो
हितायच। महासन्ध्याभ्रवर्णायचारुदीप्तायदीक्षिणे
४६ नमःकमलहस्तायदिग्वासायकपर्दिने। अप्रमाणा
यसर्व्वायअव्ययायामरायच४७ नमोरूपायगन्धायशा
श्वतायाक्षतायच। पुरस्ताद्बृंहतेचैव विभ्रान्तायकृता
यच ४८ दुर्गमायमहेशायक्रोधायकपिलायच। तर्क्या
तर्क्यशरीरायबलिनेरंहसायच ४९ सिकत्यायप्रवाह्या
यस्थितायप्रसृतायच। सुमेधसेकुलालायनमस्तेशशि
खण्डिने ५० चित्रायचित्रवेषाय चित्रवर्णायमेधसे।
चेकितानायतुष्टायनमस्तेनिहितायच ५१ नमःक्षान्ता
यदान्तायवज्रसंहननायच। रक्षोघ्नायविषघ्नायशिति
कण्ठोर्द्ध्वमन्यवे ५२ लेलिहायकृतान्तायतिग्मायुधधरा
यच। सम्मोदायप्रमोदाय यतिवेद्यायतेनमः ५३ अ
नामयायशर्व्वायमहाकालायवैनमः। प्रणवप्रणवेशायभ
गनेत्रान्तकायच ५४ मृगव्याधायदक्षाय दक्षयज्ञान्त
कायच। सर्व्वभूतात्मभूताय सर्व्वेशातिशयायच ५५
पुरघ्नायसुशस्त्राय धन्विनेऽथपरश्वधे। पूषदन्तविना
शायभगनेत्रान्तकायच ५६ कामदायवरिष्ठायकामा
ङ्गदहनायच। रङ्गकरालवक्त्राय नागेन्द्रवदनायच ५७
दैत्यानामन्तकेशाय दैत्याक्रन्दकरायच। हिमघ्नायचती
क्ष्णाय आर्द्रचर्मधरायच ५८ श्मशानरतिनित्याय न
मोस्तूल्मुकधारिणे। नमस्तेप्राणपालाय मुण्डमालाध
रायच ५९ प्रहीणशोकैर्विविधैर्भूतैःपरिवृतायच। नर
नारीशरीरायदेव्याःप्रियकरायच ६० जटिनेमुण्डिने

चैवव्यालयज्ञोपवीतिने । नमोस्तुन्नृत्यशीलायउपनृत्यप्रियायच ६१ मन्यवेगीतशीलाय मुनिभिर्गीयतेनमः । कटङ्कटायतिग्माय अप्रियायप्रियायच ६२ विभीषणायभीष्माय भगप्रमथनायच । सिद्धसङ्घानुगीतायमहाभागायचैवनमः ६३ नमोमुक्ताट्टहासाय क्ष्वेडितास्फोटितायच । नर्दतेकूर्दतेचैवनमःप्रमुदितात्मने ६४ नमोमृडायश्वसते धावतेधिष्ठितेनमः । ध्यायतेजृम्भतेचैवरुदतेद्रवतेनमः ६५ वल्गतेक्रीडतेचैवलम्बोदरशरीरिणे । नमोकृत्यायकृत्याय मुण्डायविकटायच ६६ नमउन्मत्तदेहाय किङ्किणीकायचैवनमः । नमोविकृतवेषायक्रूरायामर्षणायच ६७ अप्रमेयायगोप्त्रेचदीप्तायानिर्गुणायच । वामप्रियायवामाय चूडामणिधरायच ६८ नमस्तोकायतनवे गुणैरप्रमितायच । नमोगुण्यायगुह्यायअगम्यगमनायच ६९ लोकधात्रीत्वियंभूमिः पादौसज्जनसेवितौ । सर्वेषांसिद्धयोगानामधिष्ठानन्तवोदरम् ७० मध्येऽन्तरिक्षविस्तीर्णंतारागणविभूषितम् । स्वातेःपथइवाभाति श्रीमान्हारस्तवोरसि ७१ दिशोदशभुजास्तुभ्यंकेयूराङ्गदभूषिताः । विस्तीर्णपरिणाहश्चनीलाञ्जनचयोपमः ७२ कण्ठस्तेशोभतेश्रीमान् हेमसूत्रविभूषितः । दंष्ट्राकरालदुर्द्धर्षमनौपम्यंमुखंतथा ७३ पद्ममालाकृतोष्णीषंशिरोद्यौःशोभतेऽधिकम् । दीप्तिःसूर्येवपुश्चन्द्रेस्थैर्यंशैलेऽनिलेबलम् ७४ औष्ण्यमग्नौतथाशैत्यमप्सुशब्दोऽम्बरेतथा । अक्षराक्षरनिष्पन्दात्गुणानेतान्विदुर्बुधाः ७५ जपोजप्योमहादेवोमहायोगोमहेश्वरः । पुरेशयोगुहावासीखेचरोरजनीचरः । ७६

तपोनिधिर्गुहगुरुर्नन्दनोनन्दवर्द्धनः । हयशीर्षःपयोधा
ताविधाताभूतभावनः ७७ बोधव्योबोधितानेतादुर्द्धर्ष
दुष्प्रकम्पनः।बृहद्रथोभीमकर्म्माबृहत्कीर्तिर्धनञ्जयः७८
घण्टाप्रियोध्वजीछत्रीपिनाकीध्वजिनीपतिः । कवची
ह्टिशीखड्गी धनुर्हस्तःपरश्वधीः ७९ अघस्मरोऽनघ
शूरोदेवराजोऽरिमर्दनः । त्वांप्रासाद्यपुरास्माभिर्द्विषन्ते
निहतायुधि ८० अग्निःसदार्णवाम्भस्त्वंपिबन्नपिनत
प्यसे । क्रोधाकारःप्रसन्नात्माकामदःकामगःप्रियः ८१
ब्रह्मचारीचगाधश्चब्रह्मण्यःशिष्टपूजितः । देवानामक्ष
यःकोशस्त्वयायज्ञःप्रकल्पितः ८२ हव्यंतदेववहतिवे
दोक्तंहव्यवाहनः । प्रीतेत्वयिमहादेव वयंप्रीताभवाम
हे ८३ भवानीशोनादिमांस्त्वंचसर्वलोकानांत्वंब्रह्मकर्ता
दिसर्गः । साङ्ख्याःप्रकृतेःपरमंत्वांविदित्वाक्षीणध्याना
स्त्वामस्मृत्युंविशन्ति ८४ योगाश्चत्वांध्यायिनोनित्यसि
द्धिं ज्ञात्वायोगान्संत्यजन्तेपुनस्तान् । येचाप्यन्येत्वांप्रप
न्नाविशुद्धाःस्वकर्मभिस्तेदिव्यभोगाभवन्ति ८५ अप्र
संख्येयतत्त्वस्ययथाविद्मःस्वशक्तितः । कीर्तितंतवमा
हात्म्यमपारस्यमहात्मनः ॥ शिवोनोभवसर्वत्रयोऽसि
सोऽसिनमोस्तुते ८६ ॥

सूतजीकहतेहैंकिहे मुनीश्वरो यह ब्रह्मा और विष्णु
जी का किया स्तोत्र जो भक्ति से ब्राह्मणों को सुनावै
अथवा आपश्रवणकरे वहदशहजारअश्वमेधकाफल
पावे।पापीमनुष्यभी इस स्तोत्रको शिवलिङ्ग के समीप
बैठ सुने अथवा आप पाठकरे वहभी अवश्य ब्रह्मलोक
पावे । श्राद्धमें,देवकर्ममें,यज्ञमें अथवा सत्पुरुषोंके समीप

जो इसस्तोत्रका पठन करे वह भी ब्रह्माजी के समीप निवास करे॥

बाईसवांअध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसभांति सत्यस्तुति ब्रह्मा औविष्णुजीसे श्रवण कर श्री महादेवजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये और उन दोनों को जानते भी थे परन्तु क्रीड़ा के निमित्त पूछते भये कि तुम दोनों कौन हो जो आपसमें बड़ी प्रीति रखकर इस घोर समुद्रमें स्थितहो रहे हो। यह महादेव जी का वचन सुन ब्रह्माजी और विष्णु जी आपुसमें देखकहनेलगे कि हे भगवन् क्या आप हमको नहींजानते आपने हीतो हमकोअपनी इच्छासे उत्पन्नकिया है। यह उनका वचन सुन श्री महादेवजी प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे ब्रह्माजीहे विष्णु जी हम इस तुम्हारी दृढ़ भक्ति से और उत्तम स्तुति से बहुत प्रसन्न भये हैं जो कुछ वर आपको चाहिये मांगो। यह शिवजी का वचन सुन विष्णुजी ने कहा कि महाराज आपके दर्शन पाये इससे अधिक और क्या वर होगा जो आप मुझपर प्रसन्न हैं तो अपने चरणारविन्द में दृढ़भक्ति देवो यह विष्णुजीसे सुन उनको अपने में दृढ़ भक्ति देते भये औ ब्रह्माजी से भी महादेवजी कहते भये कि तुम इस लोक के कर्त्ता होगे और सब जगत् के स्वामी रहोगे। इतना कह प्रीतिसे दोनोंकी पीठ परहाथ फेर कर कहा कि तुम दोनों मेरे को अति प्रिय हो औ मेरे तुल्यहो। अब हम जाते हैं तुम भी प्रसन्नरहो औ अपना

अपना व्यवहार करो। इतना कह महादेवजी तो वहांही अन्तर्द्धान भये। औ ब्रह्माजी भी विष्णुजी से ज्ञान पाय प्रजा सिरजने की इच्छा से उग्रतप करने लगे। बहुतकाल तप किया परन्तु कुछ सिद्ध न भया तबतो ब्रह्माजीको दुःख औ क्रोध भया नेत्रों से अश्रु के बिन्दु गिरे। उन वात, पित्त, कफरूप बिन्दुओं से महाविषकरके युक्त बड़े भयानक सर्प उत्पन्न भये। उन सर्पों को देख ब्रह्माजी बड़े दुःखी भये औ कहने लगे कि हमारे तपको धिक्कार है जो पहिले ही यह जगत के संहार करनेहारी प्रजा उत्पन्न भई अब क्या करें। इतना कहतेही ब्रह्माजी दुःख से मूर्च्छित हो गिरपड़े औ प्राण त्यागदिये। उस समय उनके देह से बड़ी दीनता के साथ रोतेहुये रुद्र निकले। रोने सेही उनका नाम रुद्र भया। वेही ब्रह्माजी के प्राण थे औ सब जीवों के प्राणभी वही हैं। शिवजी ने ब्रह्माजी की यह दशा देख दयासे फिर उनके प्राण दिये औ चैतन्य किया। ब्रह्माजी भी शिवजी को देख [illegible] कर लिये॥

तेईसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह ब्रह्माजीका वचन सुन ब्रह्माजीके बोधके लिये हँसकर शिवजी कहनेलगे कि श्वेतकल्प में हम श्वेतवर्ण थे औ श्वेतवस्त्र, श्वेत माला, श्वेत पगड़ी, श्वेतअस्थि, श्वेतरोम, औ श्वे-

तही हमारा रुधिर था इसीहेतु उस कल्पका नाम श्वेत कल्प भया। औ उस कल्प में मेरे से उत्पन्न भई गायत्री देवीभी श्वेतवर्ण ही थी। औ तुमने बड़े उग्रतप से हमको जाना तव हम सद्योजात भये। सद्योजात ब्रह्मकोही कहते हैं यह गुह्यबात है इसको जो जाने वह मेरे लोक में वास करे। जब फिर लोहितकल्प भया तब हमारे वर्ण वस्त्र आदि सब रक्तवर्ण थे औ गायत्री देवीके भी मांस, अस्थि, दुग्ध, स्तन, नेत्र आदि सब रक्तवर्ण थे। उस कल्पमें वर्ण के वदल जाने से औ योगकी वामता से हमारा नाम वामदेव भया औ तुमने हमारा आराधन किया। इसभांति हम वामदेव नाम से भूमि पर प्रसिद्ध भये। इस हमारे वामदेव अवतार होने को जो कोई जाने वह भी जन्म मरण से रहित हो रुद्रलोक में निवास करे। फिर जब हम पीतवर्ण भये तब उस कल्पका नाम पीतकल्प भया औ हमारे से उपजी हुई गायत्रीदेवी भी पीतवर्ण ही भई औ उसके दुग्ध आदि सब पीतवर्ण थे। उस कल्प में भी तुमने योग करके हमारा आराधन किया तब हम तत्पुरुषरूप से प्रकटे। उस तत्पुरुषरूप को औ वेदमाता गायत्री को जाने वह भी सदा शिवलोक में निवास करे फिर जब हमने अतिभयङ्कर कृष्णवर्ण धारण किया उस कल्प का नाम कृष्णकल्प भया। उस कल्प में हमारे से उत्पन्न भई गायत्री भी कृष्णवर्ण थी औ तुमने हमारा आराधन किया तब हम अघोररूप से प्रकट भये। उस हमारे अघोररूप को जो पुरुष जाने उसके लिये

हम अतिशान्त होते हैं। फिर हमने विश्वरूप धारण किया औ हम से उत्पन्न भई गायत्री देवी भी विश्वरूपा अर्थात् अनेकवर्णों करके युक्तथी उस कल्प का नाम विश्वरूपकल्प भया। उस कल्पमें भी तुमने बड़ी समाधि से हमको जाना। उस हमारे विश्वरूप अवतार को जो कोई जाने उसको हम बहुत कल्याण देते हैं। ये चार अवतार हमारे भये। औ गायत्रीदेवी भी सब पातक दूर करनेहारी औ अतिपवित्र चार रूपसे होती भई औ पांचवां विश्वरूप अवतार औ विश्वरूपा गायत्री होतीभई। मोक्ष, धर्म्म, अर्थ औ काम ये चार पुरुषार्थ हैं। औ जीव भी जरायुज आदि भेदोंसे चार भांति के हैं। चार आश्रम हैं धर्म्म के पादभी चार हैं औ सद्योजात आदि हमारे पुत्रभी चार हैं औ हम विश्वरूप हैं। यह लोक भी चार युगों के भेदसे चार भांति का है। भूलोक,भुवर्लोक,स्वर्लोक,महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक और इन सब से परे विष्णुलोक है। पहिले सात लोक बड़े तप से मिलते हैं औ विष्णुलोक तो बहुतही दुर्लभ है जहां से फिर आगमन नहीं होता उसके आगे स्कन्दलोक है। उससे आगे पार्व्वतीलोकहै उससेभी आगे शिवलोकहै। जिस शिवलोक में निर्म्मम निरहङ्कार काम क्रोधसे रहित बड़े तपस्वी योगी जाते हैं। औ इस गायत्री देवीके विष्णुलोक स्कन्दलोक पार्व्वतीलोक औ शिवलोक ये चार चरण हैं। इससे और भी सब पशु चतुष्पाद होंगे औ चार स्तन भी इनके होंगे। औ हमारे मुखसे गिराहुआ

सोमरूप अमृत जगत् का जीवन उनके स्तन में नि: वास करेगा। फिर यही देवी द्विपदा होगी औ क्रिया रूप धारेगी तब इसके स्तनभी दो होंगे। औ तबसेही नर नारी सब द्विपद औ दो स्तन वाले होंगे। फिर जब इस देवी ने विश्वरूप धारा तब से प्रजाभी अनेकवर्ण की भई। हम सर्वव्यापी हैं औ अमोघ वीर्य हैं हमारे मुख में अग्नि निवास करता है इसी से अग्नि पवित्र है जो पुरुष तप के प्रभाव से सर्वव्यापी मुझको जानेंगे वे मनुष्य देहको त्याग सदा मेरे समीप निवासकरेंगे। यह शिवजीके मुखारविन्दसे सुन ब्रह्माजी प्रणाम कर कहने लगे कि महाराज इस आपके रूपको औ इस देवी गायत्री के रूप को जो जाने उसको आप परम पद देवें। यह ब्रह्माजी की प्रार्थना शिवजी महाराज ने अङ्गीकार करी। सूतजी कहते हैं कि विद्वान् पुरुष उस सदाशिवको औ उस देवी को सर्वव्यापी समझे जिस से ब्रह्मसायुज्यको प्राप्त होय॥

चौबीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस भांति शिवजी का वचन सुन ब्रह्माजी फिरभी शिवजी के प्रति पूछते भये कि हे नाथ हे सब देवताओंके गुरु ये जो आपके अवतार हैं इनका दर्शन कौन युग में किस ध्यानसे औ किस तप से पुरुषों को होसक्ता है। यह ब्रह्माजी का वचन सुन औ उनको बड़ी भक्तिसे करजोर सम्मुख खड़े देख हँसकर कहने लगे कि हे ब्रह्माजी न तो तपसे

न शीलसे औ न धर्मसे न तीर्थों से न बड़ी भारी दक्षिणा वाले यज्ञों से न वेद के पढ़ने से न धन से न शास्त्रसे मनुष्य मेरा दर्शन पाते हैं केवल ध्यान से ही हमारे को देखसक्ते हैं। वाराह कल्पके सातवें मन्वन्तरमें सबलोकों का प्रकाश करनेहारा औ कल्पका स्वामी मेरा अवतार औ तुम्हारा पौत्र वैवस्वत मनु होगा। औ उसी कल्पके द्वापर युगके अन्तमें लोक के अनुग्रह के अर्थ औ ब्राह्मणों के हित के लिये हमारा अवतार होगा। जब द्वापरके अन्तमें व्यासजी होंगे तबब्राह्मणों के अर्थ शिखायुक्त श्वेत मुनिनामक मेरा अवतार होगा औ हिमालय पर्वत के छागल नाम शिखरमें मेरा निवास होगा औ वहां मेरे शिष्य श्वेत, श्वेत शिख, श्वेतास्य, श्वेतलोहित ये चारों भी शिखायुतहोंगे ये चारोंब्राह्मण वेदके पारगामी ध्यान योग करके मेरे समीप प्राप्त होंगे। फिर दूसरे द्वापर में सत्यनामक व्यास होंगे औ सुतार नामक हमारा अवतार जगत् के कल्याण के अर्थ होगा दुंदुभि, शतरूप, ऋचीक, औ केतुमान् ये चार हमारे शिष्यहोंगे। येचारों भी ध्यानयोगको प्राप्तहोकर शिवलोक में प्राप्त होंगे। तीसरे द्वापरमें भार्गव तो व्यास होंगे औ दमननामक हमारा अवतार होगा तबभी विकोश, विकेश, विपाश, औ शापनाशन ये चार शिष्य हमारे होंगे वे चारों भी योग के बलसे रुद्रलोक को जायँगे। चौथे द्वापर में अङ्गिरा तो व्यास होंगे औ सुहोत्रनामक हमारा अवतार होगा। वहां भी बड़े तपस्वी ब्राह्मण दृढ़व्रत औ योगाभ्यासी मेरे चार पुत्र अर्थात् शिष्य होंगे जिनके नाम

सुमुख, दुर्मुख, दुर्दम औ दुरतिक्रम, ये होंगे । औ सब के सब सूक्ष्म योगगति को प्राप्त हो सब पापों को दग्धकर रुद्रलोक को जायँगे । पांचवें द्वापर में सविता व्यास होंगे औ लोकों के अनुग्रह के अर्थ कंकनाम हमारा अवतार होगा औ सनक, सनन्दन, सनातन औ सनत्कुमार ये चार हमारे शिष्य होंगे औ हमारे समीप निवास करेंगे । छठे द्वापर में मृत्यु तो व्यास होंगे औ लोकाक्षी नाम हमारा अवतार होगा औ सुधामा, विरजा, शंखपाद, रज ये चार शिष्य हमारे बड़े महात्मा औ योगी ध्यान करने से हमारे समीप पहुंचेंगे । सातवें द्वापर में इन्द्र व्यास होंगे औ विभु नामक हमारा अवतार होगा औ जैगीषव्यभी हमको कथन करेंगे । सारस्वत, मेघ, मेघवाहन, औ सुवाहन ये हमारे चारशिष्य बड़े योगी होंगे औ उसी मार्ग से हमारा ध्यान कर रुद्रलोक में प्राप्त होंगे । औ आठवें द्वापर में वशिष्ठ तो व्यास होंगे औ दधिवाहन नाम हमारा अवतार होगा औ कपिल, आसुरि, पंचशिख औ इल्वल ये चार बड़े महात्मा हमारे शिष्य होंगे कि जिनके तुल्य कोई दूसरा न होगा येभी उस महेश्वर योग को प्राप्तहो बहुत काल हमारा आराधन कर हमारे समीप पहुँचेंगे कि जहांसे फिर आवृत्त न होय। नवम द्वापरमें सारस्वत तो व्यास होंगे औ ऋषभ नाम हमारा अवतार होगा। पराशर,गर्भ,भार्गव औ आङ्गिरा ये चार हमारे शिष्य होंगे जो बड़े महात्मा औ वेदके पारगामी ज्ञानी ध्यान मार्गमें प्रवृत्त होके शिवलोक में

प्राप्त होंगे। दशम द्वापर में त्रिधामनाम तो व्यास होंगे औ हिमालय में भृगुनाम हमारा अवतार होगा जिनके नामसे वह पर्वत शृंग भृगुतुंग कहावेगा औ अति पवित्र होगा। तबभी हमारे चार पुत्र दृढव्रत बड़ेतपस्वी बलबन्धु, निरामित्र, केतुशृङ्ग औ तपोधन ये होंगे जो योग के बलसे सब पापों को दग्धकर शिवलोकमें वास करेंगे। ग्यारहवें द्वापर में त्रिव्रत नामके व्यास होंगे औ उग्र नामका हमारा अवतार गङ्गाद्वारक्षेत्र में होगा। औ लम्बोदर, लम्बाक्ष, लम्बकेश औ प्रलम्ब ये चार हमारेशिष्य माहेश्वरयोगको प्राप्त होकर शिवलोक पावेंगे। बारहवें द्वापर में शततेजा नाम व्यास होंगे औ हैतुक वनमें अत्रिनामक हमारा अवतार होगा। सर्वज्ञ, समबुद्धि, साध्य, सर्व ये चार हमारे शिष्य परम शैव भस्म करके भूषित देह बड़े तपस्वी होंगे औ योगके सामर्थ्यसे रुद्रलोक पावेंगे। तेरहवें द्वापरमें नारायण तो व्यास होंगे औ महामुनि बालिनामक हमारा अवतार होगा। औ सुधामा, काश्यप, वशिष्ठ और विरजा येचार हमारे पुत्र बड़े योगी औ ऊर्द्ध्वरेता होंगे जो माहेश्वर योगको पाय शिवलोकको जायँगे चौदहवें द्वापरमें तरक्षु नाम व्यास होंगे औ अङ्गिराके वंशमें गोतम नाम हमारा अवतार होगा जिनके नामसे वह स्थान गौतम वन कहावेगा। औ अत्रि, देवसद, श्रवण औ श्रविष्टक ये बड़े महात्मा औ योगी माहेश्वर योग को पाय रुद्रलोकमें जायँगे। पन्द्रहवें द्वापरमें त्रय्यारुणि तो व्यासहोंगे और वेदशिरा नामक हमारा अवतार होगा

औ वेदशिरोत्तमक अस्त्रभी हम प्रकट करेंगे और हिमालयमें सरस्वतीके तटपर वेदशीर्ष नामक पर्वत हमारा स्थान होगा और कुणि, कुणिबाहु, कुशरीर औ कुनेत्र ये चारबड़े योगी और ऊर्द्ध्वरेताहोंगे जो माहेश्वर योगके प्रभावसे शिवलोकमें बासकरेंगे। सोलहवें द्वापरमें देव नामकव्यास औ गोकर्ण नामक हमारा अवतार होगा जिनके नाम से वह स्थान गोकर्णवन कहावेगा। वहांभी काश्यप, उशना, च्यवन औ बृहस्पति येहमारे पुत्रहोंगे वेभी ध्यानयोग करके शिवलोक में सदा बास करेंगे। सत्रहवें द्वापरमें कृतंजय नाम तो व्यास और हिमालयके बड़े ऊंचे शिखरपर महालय क्षेत्र में गुहावासी नामक हमारा अवतार होगा। वह महालय क्षेत्र भी बड़ी सिद्धि और पुण्यका देनेवाला होगा। तबभी हमारे पुत्र ब्रह्मवादी योगके जाननेवाले निर्मम निरहंकार उतथ्य, वामदेव, महायोग, औ महाबल ये होंगे। औ इन चारों के हजारों शिष्यबड़े योगी कलियुगमें होंगे जो महालयक्षेत्र में हमारे चरणका दर्शन कर कैलासमें प्राप्त होंगे और भी जो पुरुष कलियुग में ध्यान में तत्पर होंगे और महालयक्षेत्र में जाकर माहेश्वर पदकादर्शन करेंगे वे अपना औ दशपुरुष पहिले तथा दश पुरुष अगले इन सबका उद्धार करेंगे औ मेरे अनुग्रह से रुद्रलोकमें बासकरेंगे। अठारहवें द्वापर में ऋतंजयनाम व्यास औ हिमालय के शिखर में शिखण्डी नाम हमारा अवतार होगा जिससे वह क्षेत्र बड़ा सिद्धिदायक होगा औ शिखण्डि वन कहावेगा औ वाचश्रवा, ऋचीक,

श्यावाश्व औ यतीश्वर ये चार हमारे शिष्य बड़े योगी औ वेदपारग होंगे ये भी माहेश्वर योग को पाय शिवलोक जायँगे। उन्नीसवें द्वापरमें भरद्वाज मुनि व्यासहोंगे जटामाली नाम हमारा अवतार हिमालय के जटायुपर्वतमें होगा औ हिरण्यनाभ कौशल्य लोकाक्षी औ कुथुमि येचार शिष्य बड़ेयोगी औ ऊर्द्ध्वरेताहोंगे औ ध्यान योगसे शिवलोक पावेंगे। बीसवें द्वापरमें गौतम मुनि व्यास होंगे औ अट्टहास नामक हमारा अवतार होगा। जिनके नामसे वहस्थान हिमालय पर्वत में अट्टहास नामक कहावेगा जिस क्षेत्रको देवता,मनुष्य,यक्ष, सिद्ध, चारण सब सेवन करेंगे। वहांभी सुमन्तु,बर्बरी,कबन्ध औ कुशिकन्धर ये चार हमारे शिष्य बड़े महात्मा औ नियतव्रत होंगे औ माहेश्वर योग को पाय शिवलोकमें वासकरेंगे इक्कीसवें द्वापरमें वाचःश्रवा मुनि तो व्यास होंगे औ दारुकनाम हमारा अवतार होगा जिनके नाम से देवदारुवन बड़ाक्षेत्र होगा औ प्लक्षदाल्भ्यायनि केतुमान औ गौतम ये चार हमारे शिष्य होंगे जो नैष्ठिक व्रतसे शिवलोक पावेंगे। बाईसवें द्वापरमें शुष्मायण नाम तो व्यास होंगे औ हल धारण किये भीम नामक हमारा अवतार काशीमें होगा जहां इन्द्रादि सबदेवता हमारा दर्शन करेंगे औ सुधार्मिक भार्गवी मधुपिङ्ग औ श्वेतकेतु ये चार हमारे शिष्य ध्यान में परायण माहेश्वर योग को पाय रुद्रलोक में वास करेंगे। तेईसवें द्वापर में तृणबिन्दु मुनि तो व्यास होंगे औ श्वेत नामक हमारा अवतार होगा तब हम जिस पर्वत में

कालको जीर्ण करेंगे वह कालंजर पर्वत कहावेगा। और उशिक, ब्रहदश्व, देवल, कवि ये चार शिष्य हमारे होंगे जो माहेश्वर योगको पाय रुद्रलोकको जायँगे। चौबीसवें द्वापर में रुक्षमुनि तो व्यासहोंगे औ शूलीनाम हमारा अवतार नैमिषारण्यमें होगा औ शालिहोत्र अग्निवेश युवनाश्व औ शरद्वसु ये चारशिष्य होंगे जो उसी मार्ग से शिवलोक पावेंगे। पच्चीसवें द्वापर में वशिष्ठजी के पुत्र शक्तिमुनि तो व्यास होंगे और दण्ड धारण किये मुंडीश्वरनामक हमारा अवतार होगा। और छगल कुण्डकर्ण कुभांड और प्रवाहक ये चार शिष्य होंगे जो माहेश्वर योगको पाय शिवलोक में जायँगे। छब्बीसवें द्वापर में पराशर तो व्यासहोंगे और पुरभद्र वटक्षेत्र में सहिष्णु नाम हमारा अवतार होगा। उलूक विद्युत शम्बूक औ आश्वलायन ये चार हमारे शिष्य होंगे जो माहेश्वर योग के माहात्म्य से रुद्रलोकमें प्राप्त होंगे सत्ताईसवें द्वापरमें जातूकर्ण्य तो व्यासहोंगे औ सोमशर्म्मा ब्राह्मण हमारा अवतार प्रभासक्षेत्र में होगा। औ अक्षपाद कुमार उलूक औ वत्स ये चार हमारे शिष्य बड़े योगी औ शुद्ध बुद्धि होंगे जो माहेश्वर योग को पाय रुद्रलोक को जायँगे। अट्ठाईसवें द्वापर के अन्त में पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन तो व्यास होंगे औ छठे अंश करके वसुदेव के पुत्र यदुवंश में विष्णु का अवतार श्रीकृष्ण होंगे और हम भी श्मशानमें पड़ा एक अनाथ ब्राह्मण ब्रह्मचारी का शरीर देख लोकों को विस्मय करने के अर्थ

योगमाया करके उस शरीर में प्रवेश करेंगे। औ दिव्य मेरुकी गुहा में तुम्हारे और विष्णुजी के साथ निवास करेंगे औ लकुली हमारा नाम होगा औ वह क्षेत्र जहां हमारा अवतार होगा कायावतार क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध होगा औ बड़ी सिद्धिका देनेहारा होगा औ जब तक भूमि रहेगी तब तक उस क्षेत्र का प्रभाव रहेगा। वहां भी बड़े तपस्वी कुशिक, गर्ग, मित्र, और कौरुष्य ये चार शिष्य महात्मा योगी ब्राह्मण वेद के पारगामी होंगे जो माहेश्वर योग को प्राप्त होकर रुद्रलोक को जायँगे। ये जितने पाशुपत सिद्ध हमने वर्णन किये सब भस्म करके भूषित लिंग की पूजा में तत्पर हमारे परमभक्त जितेन्द्रिय ध्याननिष्ठ औ योगी होंगे। संसार बन्धके छेदने के अर्थ औ आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये बड़ाभारी उपाय पाशुपत योग है। अनेक योग मार्ग औ अनेकज्ञान मार्ग जगत् में हैं परन्तु पञ्चाक्षरी विद्या के बिना किसी से भी सिद्धि नहीं होती। जो पुरुष सब द्वन्द्व छोड़कर तप करता है वही पके फल की भांति मुक्ति के लिये उपस्थित रहता है। पाशुपत योगके एक दिन अभ्यास करने से भी जो गति मिलती है वह न सांख्य औ न पंचरात्रसे मिले। यह अठाईस युगों के अवतार मनुसे कृष्ण पर्यंत कहे इनमें कृष्ण द्वैपायन व्यास वेद का विभाग करेंगे। सूतजी कहते हैं कि इस प्रकार महादेवजी से सुन ब्रह्माजी प्रणाम करते भये और हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगे कि महाराज सब वेद यही गाते हैं कि सब देवता औ गण विष्णुमय हैं

औ विष्णु के विना कोई दूसरी गति नहीं औ विष्णुही कल्याणदायक हैं इस भांति जिनकी महिमा वेद ने बखानी है वे बड़े ज्ञानी श्रीविष्णु भगवान् भी सदा आपकी पूजा औ प्रणाम क्यों किया करते हैं। यह ब्रह्माजी का वचन सुन बड़ी प्रीति से महादेवजी ने कहा कि तुम इन्द्र औ विष्णु तथाबड़े २ मुनि सबहमारे लिङ्गकी पूजा कर २ अपने २ पदों को प्राप्त भये हैं। इससे सदा हमको पूजते हैं। लिङ्ग पूजा विना निश्चल पद नहीं मिलता इस हेतु सदा विष्णु भगवान हमारे लिङ्गको भक्ति से पूजतेहैं। इस भांति ब्रह्माजी के ऊपर अनुग्रह कर औ सृष्टि रचने की आज्ञादे वहांही अन्तर्द्धान होते भये ब्रह्माजी भी उनको बार २ प्रणाम कर उनकी आज्ञा पाय जगत् रचने में प्रवृत्त भये॥

पचीसवां अध्याय॥

सब ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी लिङ्ग में सदा शिव की पूजा किस विधि से होती है यह आप कृपा कर कहैं। सूतजी कहते हैं कि यह पूजन का विधान एक समय नगनन्दनी श्रीपार्वतीजी ने महादेवजी से पूछाथा सो उनको श्रीमहादेवजीने बड़ी प्रीतिसे उपदेश किया उस समय शालंकायन का पुत्र नन्दी भी वहां था उसने सब पूजन विधान श्रवण किया औ ब्रह्माजी के पुत्र सनत्कुमारजी के प्रति उपदेश किया सनत्कुमारजी ने श्रीवेदव्यासजी को सुनाया औ श्री व्यासजी से हमने पाया वह सब पूजन विधान आप-

को हम सुनाते हैं। शैलादी अर्थात् नन्दी सनत्कुमार जी से कहते हैं कि अब हम ब्राह्मणों के कल्याण के अर्थ स्नान विधान प्रथम कहते हैं जो साक्षात् शिवजी ने पार्व्वतीजी के प्रति कथन किया है। इस विधि से एक बार भी स्नान कर महादेवजी की पूजा करे औ ब्रह्म कूर्च अर्थात् एक प्रकार का पंचगव्य जो पुरुष पान करे उसके सब पाप दूर होयँ। ब्राह्मणों के लिये तीन प्रकार का स्नान महादेवजीने कहा है पहिला वारुण स्नान दूसरा आग्नेय अर्थात् भस्म स्नान तीसरा मन्त्र स्नान इन तीनों स्नानों को विधि से कर परमेश्वर की पूजा करे। जिसका अन्तःकरण शुद्ध न होय वह चाहे जितने जल से अथवा भस्म से स्नान करे परन्तु शुद्ध नहीं होता। भाव दुष्ट पुरुष चाहे जैसी नदी नद सरोवर आदि में स्नान करे उसका शुद्ध होना कठिन है। मनुष्यों का चित्त कमल अज्ञान रूप रात्रि से संकुचित होरहा है इसको ज्ञान सूर्य के किरणों से विकसित करना उचित है। मृत्तिका गोमय अर्थात् गौ का गोबर तिल पुष्प औ भस्म ये सब वस्तु लेकर स्नान करने को नदी आदि के तटपर जाय तीरपर कुशा रखकर तीर को धोय आचमन कर हाथ पांव शुद्ध कर शरीर का मल उतार स्नान करे। उद्धृतासिवराहेण इत्यादि मन्त्र करके मृत्तिका लेकर शरीर में लेपकर स्नान करे पीछे सुन्दर वस्त्र धारणकर (गन्धद्वारांदुराधर्षां) इस मन्त्र से कपिला गौ के गोमय करके शरीर को लेपन कर स्नान करे फिर उस

मलिन वस्त्रको त्याग सुन्दर श्वेत वस्त्र पहिन जल में वरुण का ध्यान कर मानसिक उपचारों से वरुण की पूजा कर तीन आचमन ले जल को अभिमन्त्रणकर शिवका स्मरण करता हुआ जल में प्रवेश करे वहां गोता लगाय अघमर्षण मन्त्र को तीन बार जपे औ जल में सूर्य चन्द्र अग्नि इन तीनों के मण्डलों का ध्यान करे फिर आचमनकर पुण्यकी वृद्धिके अर्थ उस जलसे निकल तीर्थ में प्रवेशकरे। वहां गोशृङ्ग अथवा पलाशपत्र का पुटक अर्थात् दोना में कुशा और पुष्पों के सहित जल लेकर रुद्र मंत्र करके अथवा पवमान-त्वरित मंत्र शान्ति मन्त्र औ पंच ब्रह्म मन्त्रों करके इन मन्त्रों के देवता औ ऋषियों का स्मरण करता हुआ अपने मस्तक पर अभिषेक करे फिर पंचवक्त्र श्रीसदाशिवका अपने हृदय में ध्यान करे औ अपने सूत्रकी रीति से आचमन करे। फिर कुशका पवित्र हाथ में लेकर सुन्दर पवित्र आसन पर बैठ कुशा सहित जल से अभ्युक्षण कर दहिने हाथसे तीन आचमनकर सब हिंसा औ पाप दूर होने के लिये तीन प्रदक्षिणा करे। हे सनत्कुमारजी ब्राह्मणोंके कल्याण के अर्थ यह स्नान विधान हमने संक्षेप से वर्णन किया है॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी इस भांति स्नानकर वेदमाता गायत्री का (आयातुवरदादेवी) इस मन्त्रसे आवाहन करे औ पाद्य आचमन अर्घ आदि

सब उपचारसे गायत्री का पूजन कर तीन प्राणायाम करे। फिर बैठ कर अथवा खड़ा होकर एक हजार अथवा पांचसौ वा अष्टोत्तर शतही प्रणव करके युक्त गायत्रीको नियमसे जपै जपके अनन्तर पूजनकर अर्घ दे शिरसे प्रणाम कर(उत्तरेशिखरेजाता) इस मन्त्र से गायत्री का विसर्जन करे। फिर उदुत्यंजातवेदसं। चित्रन्देवानां। इन मन्त्रोंसे सूर्य को प्रणाम कर ऋग् यजु सामवेद में जो सूर्य के सूक्त हैं उनका पाठ करै पीछे तीन प्रदक्षिणा कर आत्मा अन्तरात्मा औ परमात्मा का ध्यानकर सूर्य ब्रह्मा अग्नि को प्रणामकरे फिर मुनि पितर देवता इन सबका आवाहन कर पूर्वमुख अथवा उत्तर मुख होकर तीर्थ के जलसे तर्पण करै पुष्पयुक्त जलसे देवताओं का कुशा युक्त जलसे मुनियों का तिल युक्त जलसे पितरों का औ गन्ध युक्त जलसे सब जीवों का तर्पण करे। यज्ञोपवीती अर्थात् सव्य यज्ञोपवीत धारण कर देवतर्पण कण्ठमें यज्ञोपवीत धारण ऋषि तर्पण और अपसव्य यज्ञोपवीत धारण कर पितृ तर्पण करे। अंगुलियों के अग्रसे देव तर्पण कनिष्ठा अंगुलिसे ऋषितर्पण और दाहिने अंगुष्ठ से पितरों का तर्पण करे। फिर ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ मनुष्ययज्ञ भूतयज्ञ और पितृयज्ञ करे। अपनी शाखा का पाठकरना ब्रह्मयज्ञ है अग्नि में हवन करना देव यज्ञ है वेदवेत्ता ब्राह्मणों को भक्तिसे प्रणाम कर अन्न आदि देना मनुष्य यज्ञ है। सब भूतोंको विधिसे बलि देना भूत यज्ञ है। और पितरों के निमित्त श्राद्ध ब्राह्म-

ण भोजन आदि कराना पितृयज्ञ है। ये पांच यज्ञ सब अर्थोंके सिद्ध होने के लिये सदा करने चाहिये। इन सब यज्ञों में ब्रह्मयज्ञ मुख्य है जिसके करने से इन्द्र आदि सब देवता प्रसन्न होते हैं। और करने वाला ब्रह्मलोक में निवास करता है। पितर, वेद, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सब ब्रह्मयज्ञ के करने से प्रसन्न होते हैं। ब्रह्मयज्ञ करनेको ब्राह्मण ग्रामके बाहर जाय कि जहांसे ग्राम दृष्टि न आवै वहां बैठकर पूर्व उत्तर अथवा ईशान को मुखकर आचमन करे। ऋग्वेदकी प्रसन्नता के अर्थ तीन आचमन यजुर्वेद की प्रसन्नताके हेतु दोबार जल से ओष्ठ मार्जन सामवेद के प्रीत्यर्थ मस्तक में जलसे मार्जन अथर्वण वेदकी प्रसन्नता के लिये नेत्रों को जल से स्पर्श अठारह पुराणोंके लिये पवित्र जलसे नासिका सौर आदि उपपुराण शैव आदि पुण्य इतिहासों की प्रसन्नता के लिये कर्ण और सब कल्पों की प्रीति के लिये हृदय को स्पर्श करे। इस भांति आचमनकर दर्भ मुष्टि बिछाय सुवर्ण की अंगूठी पहिन कुशा हाथ में लेकर ब्रह्मयज्ञ करे। जो ब्राह्मण पंचयज्ञ किये बिना भोजन करे वह शूकर की योनि में जाय इसलिये पंचयज्ञ अवश्य करना चाहिये इस भांति ब्रह्मयज्ञ कर स्नान करै पीछे तीर्थ का जल लेकर अपने स्थान पर आय घर के बाहर ही हाथ पावँ धोय भस्म स्नान करै अग्निहोत्र का भस्म लेकर प्रणवसे उसका शोधन करे। परंतु सूर्य्य उदय होने के अनन्तर जो अग्निहोत्र कियाजाय उस की भस्म लेवे क्योंकि दिन में सूर्य्य ज्योतिस्वरूप है

और सायंकाल में अग्नि ज्योतिःस्वरूप है। इसलिये सूर्योदय विना जो अग्निहोत्र हो वह ठीक नहीं और उसकी भस्म भी ठीक नहीं। ईशान मंत्र से शिर तत्पुरुष से मुख अघोर मंत्रसे उरःस्थल अर्थात् छाती वामदेव करके गुह्य सद्योजात करके पाद ओं प्रणव करके सब अंगोंमें अभिषेककरे। इसभांति भस्म स्नान कर हाथ पाँव धोय शिव स्मरण करता हुआ कुशा ले कर मन्त्रस्नान करै। आपोहिष्ठा। आदिमंत्र तथा और भी वेदों के पवित्र मंत्रों से स्नान करे। यह स्नान विधान ब्राह्मणों के कल्याण के हेतु हमने कहा है इस विधि से जो एक बार भी स्नान करे वह परमगति पावे॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

नन्दी कहतेहैं कि हे सनत्कुमारजी अब हम संक्षेपसे लिङ्गपूजाका विधान वर्णन करते हैं क्योंकि विस्तार से तो कई सौ वर्ष में भी वर्णन नहीं होसक्ता। इस विधि से स्नान कर पूजा के स्थान में प्रवेश करे और प्राणायाम कर श्रीत्र्यम्बक परमेश्वर का ध्यान करे कि पांच जिनके मुख दशभुजा शुद्ध स्फटिक के तुल्य वर्ण सुन्दर वस्त्र भूषण पहिरे हैं इस भांति ध्यान करने से अपनी देह शुद्धकर प्रणव युक्त मूलमंत्र से न्यास करे नमःशिवाय इस सूत्रमें सब वेद और मंत्र सूक्ष्म रूप से निवास करते हैं जिस भांति वटके छोटे से बीज में इतना बड़ा वट वृक्ष रहता है इसी भांति इस छोटे मंत्र में सब वेद निवास करते हैं पूजा के स्थान को चन्दन

के जलसे सेंचन करे। पीछे सब पूजा द्रव्योंका क्षालन आदिसे शोधनकरे। सब द्रव्योंका शोधन प्रणवसे करे। प्रोक्षण अर्घ पाद्य आचमन आदि के पात्र स्थापन करे और इन सब को शुद्ध शीतल जलसे पूर्णकर दर्भों से ढकदे और अवगुंठन करे फिर इन सब पात्रों में उशीर, चंदन, जाति, कंकोल, कर्पूर, शतावरी, तमाल इन सबको चूर्णकर प्रणव से डाले और भी अनेक भांति के पुष्प इन पात्रों में गेरे। कुशा अक्षत यव धान तिल घृत श्वेत सर्षप और भस्म ये सब अर्घ्य पात्र में गेरे। कुश पुष्प यव धान शतावरी तमाल और भस्म ये प्रोक्षणी पात्र में गेरे पंचाक्षर मंत्र रुद्र गायत्री और प्रणव से इन पात्रों को अभिमंत्रण करे फिर प्रोक्षणीय पात्र के जलसे प्रणव युक्त ईशानादि पंचमंत्रों से सब पूजा द्रव्यों को प्रोक्षण करे। फिर शिवजी के दहिनी ओर नन्दी की अर्थात् मेरीपूजा करे और मेरा यह ध्यान करे कि देदीप्यमान अग्नि के तुल्य जिसका वर्ण तीन नेत्र चन्द्र की कला मस्तक पर धारे सम्पूर्ण भूषण और पुष्प माला पहिने सौम्य स्वरूप और वानर के तुल्य जिसके चार मुख ऐसा मेरा ध्यान कर मेरे उत्तर भागमें मेरीभार्य्याका ध्यान करे कि अत्यन्त सुन्दर रूपवती और पतिव्रताहै और पार्वतीजी के चरणों का मण्डन कर रही है इसभांति ध्यानकर दोनों की पूजा कर मन्दिर के भीतर जाय शिवजीके पांच मस्तकों पर सद्योजात आदि पांच मन्त्रोंसे पुष्पांजलिदेवे पीछे गन्ध पुष्प धूप आदि अनेक उपचारों से साधारण पूजन

करके कार्तिकेय गणपति और पार्वतीजी को पूज कर शिवलिङ्ग का निर्माल्य दूर करे। पीछे प्रणव आदि में ओंनमः जिनके अन्त में ऐसे सब मंत्रोंको पढ़ अष्ट दल कमल रूप आसन परमेश्वर को निवेदन करे। जिस अष्टदलका पूर्वदल अणिमा सिद्धि है। दक्षिणदल लघिमा पश्चिम महिमा उत्तर दल प्राप्ति अग्निकोण का दल प्राकाम्य नैर्ऋत्यका दल ईशित्व वायव्य का वशित्व और ईशान्यका दल सर्वज्ञत्व सिद्धिहै। सोममण्डल जिसकी कर्णिका उसके नीचे सूर्यमण्डल उसके भी नीचे अग्निमण्डल है। धर्म आदि चारों कोणों में और अव्यक्त आदि चारों दिशाओं में हैं। सोममण्डल के ऊपर तीनगुण गुणों के ऊपर तीन आत्मा और उनके ऊपर शिवपीठिका अर्थात् शिवजी की जलहरी का कल्पना करे फिर सद्योजातंप्रपद्यामि इस मंत्र से परमेश्वर को आवाहन कर वामदेव मंत्र से आसन के ऊपर स्थापन करे। फिर रुद्रगायत्री करके सान्निध्य औ अघोर मन्त्र से निरोधन तथा ईशानमंत्र से पूजन करे। पाद्य आचमन अर्घ्य ये सब परमेश्वर को देवे फिर सुन्दर शीतल सुगन्ध चन्दन के जल से पञ्चगव्य से स्नान करावे फिर गौ के घृत से शहत से इक्षु रस से श्रीमहादेवजी को वेद के मन्त्र औ प्रणव का पठन करताहुआ सुन्दर पात्रसे अभिषेक करे। औ लिङ्ग को भली भांति धोवे शुद्ध श्वेत वस्त्र से पोंछ कर सम्मुख विराजमान करे। फिर सुवर्ण चांदी तांवा आदि के पात्र अथवा कमल का पत्र पलाश पत्र शङ्ख

मृत्तिका पात्र आदि को लेकर सुन्दर जल से पूर्ण करे औ उस जल में कुश अपामार्ग कर्प्पूर जातिपुष्प चम्पा श्वेत करवीर मल्लिका कमल उत्पल चन्दन आदि गेरकर (सद्योजात) आदि मन्त्रोंसे अभिमन्त्रण करके श्रीमहादेवजी को अभिषेक करे। औ अभिषेक के मंत्र ये हैं पवमान, वामदेव, सूक्त, रुद्राध्याय, नीलरुद्र, श्रीसूक्त, रात्रिसूक्त, चमक, होतार, अथर्वशिर, शांतिमंत्र, भारुण्ड, अरुण, वारुण, ज्येष्ठ, वेदव्रत, आन्तर, पुरुषसूक्त, त्वरित, रुद्र, कपिकपर्द्दी, आवोराज, साम, बृहच्चन्द्र, विष्णु, विरूपाक्ष, स्कन्द, शिवक्रीसोरिचा, पञ्चब्रह्म, मन्त्र, पञ्चाक्षर, औ केवल प्रणव इन सबमन्त्रों से जो महादेवजीको एकबारभी स्नान करावे उसके सब पाप दूर होते हैं। इस विधि से अभिषेक करै वस्त्र यज्ञोपवीत आचमनीय गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य सुगंधित जल ये सब परमेश्वर को निवेदन करे फिर आचमन दे रत्नजटित मुकुट भूषण ताम्बूल ये सब उपचार प्रणव से समर्प्पण करे। फिर लिङ्ग के मस्तक पर शिवजी का ध्यान करे कि शुद्ध स्फटिक के तुल्य जिनका वर्ण सबदेवों के कारण ब्रह्म विष्णु आदि देवता औ सब ऋषियों करके सेवित वेदवेत्ता औ वेदांतों के भी अगोचर आदि मध्य अंत करके रहित संसार रोग करके पीड़ित जीवोंके लिये सिद्ध औषध इस भांति शिवतत्त्व का ध्यान करे औ प्रणव करकेही लिङ्ग के मस्तकपर पूजन करे फिर नमस्कार और प्रदक्षिणा कर स्तोत्र पाठ करे औ अर्घ्य देकर श्रीपरमेश्वर के

चरणों में पुष्पाञ्जलि देवे इस भांति पूजाकर अपने आत्मा में परमेश्वर को आरोपणकर पूजा समाप्त करे यह संक्षेप से पूजा विधान हमने कहा है अब आभ्यन्तर लिङ्गार्चन हम कहते हैं॥

अट्ठाईसवां अध्याय

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी अपने हृत्कमल में अग्निमण्डल का ध्यान करे उसके ऊपर सूर्यमण्डल चन्द्रमण्डल तीनगुण औ तीन आत्मा का ध्यान कर उसके ऊपर शुद्ध चैतन्य परमेश्वर अर्द्ध नारीश्वर का ध्यान करे। चिंतन करने से अनेक पदार्थ ध्यान में आते हैं परन्तु सब से चित्त को रोक परमेश्वरके ध्यान में लगावे नहीं तो उस परमेश्वर का ज्ञान किसी भांति भी नहीं होसक्ता। ध्येय ध्यान यजमान पुरुष औ प्रयोजन ये पदार्थहैं। पुरनाम देहकाहै उसमें जो निवासकरै वह पुरुषहै याज्यको जो यज्ञसे यजन करै वह यजमान है महेश्वर ध्येयहै। परमेश्वर का चिंतन ध्यान कहाताहै। ज्ञान उत्पन्न होना प्रयोजनहै जो इन पदार्थोंको अच्छी रीति से जाने वह ठीक तत्त्व ज्ञान पाताहै यहां छब्बीस तत्त्वहैं जिनमें छब्बीसवां ध्येय पच्चीसवां ध्याता चौबीसवां अव्यक्त महत्तत्त्व आदि सात तत्त्व अर्थात् महत्तत्त्व अहंकार शब्दादि पांचतन्मात्रा। पांच कर्मेन्द्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय मन पंच महाभूत ये छब्बीस तत्त्व हैं इन में छब्बीसवां तत्त्व शिवही वेदका औ उस संसार का कर्त्ता भर्त्ता और हर्त्ता है। इसी परमेश्वर ने ब्रह्मा को उत्पन्न

कियाहै और वह विश्वाधिक विश्वात्मा औ विश्वरूपहै। जिस भांति माता पिता विना पुत्र नहीं उत्पन्न होता इसी भांति तीनों जगत् शिवके विना नहीं उत्पन्न हो सक्के। यह नन्दी से सुन सनत्कुमारजी पूछने लगे कि कर्त्ता अर्थात् करने वाला औ कारयिता अर्थात् कराने हारा जो वह परमेश्वर है औ नित्य शुद्ध बुद्धि औ निष्क्रिय है तो वह अल्पात्मा जीवको क्योंकर बन्धमोक्ष दे सक्काहै यह आप कहैं नन्दी कहतेहैं हे सनत्कुमारजी इस सब जगत् को कालही सिरजता है औ वह काल परमेश्वर के आधीनहै इसलिये सब जीवों को कालके द्वारा परमेश्वर कर्मानुसार बन्ध मोक्ष देसक्का है मनभी निष्क्रिय परमेश्वर का ध्यान करनेसे निष्क्रिय होजाता है उस परमेश्वरके रूपसे यह जगत् स्थित होरहा है क्योंकि सब जगत् परमेश्वर की अष्टमूर्ति है आकाश, पृथ्वी, वायु, तेज, जल, यजमान, सूर्य्य, चन्द्र ये परमेश्वर की आठ मूर्ति हैं इनके विना जगत् नहीं है। इसलिये विचार करने से यही ज्ञात होता है कि यह जगत् श्री सदाशिव का स्थूल रूपहै। औ उस परमेश्वरका सूक्ष्म रूप तो किसीभांति वर्णन नहीं होसक्का क्योंकि वह रूप मन वचन के अगोचर है। आनन्दंब्रह्मणो विद्वान्। इस श्रुति में आनन्द पद रुद्रकाही वाचक है औ रुद्रकी विभूति ही सब जगत् में व्याप्त हो रही है। सर्व्वंखल्विदम्ब्रह्म। इस श्रुति का भी अर्थ यही है कि सब जगत् रुद्र है इसलिये उसको विभु जानकर उसकाध्यान करना उचित है। चतुर व्यूह मार्ग करके अर्थात् ध्येय

ध्यान यजमान औ प्रयोजन रूप से जो विचार कर परमेश्वर को जाने वह मुक्त होता है। मोक्ष का कारण वैराग्य औ संसार का हेतु ममत्व है। ब्रह्माजीने बुद्धि के लिये बहुत सी चिन्ता रची। परन्तु रौद्री चिन्ता अर्थात् रुद्र का चिन्तन करना सब चिन्ताओंमें मुख्य है। इन्द्रकी चिन्ता ऐंद्री और सौम्या अर्थात् सोम की चिन्ता तथा नारायण सूर्य्य अग्नि आदि की चिन्ता भी रुद्र की चिन्ताहीहै परन्तु मुख्य नहीं है। वह परमेश्वर मैंही हूं, परमेश्वर में हूं यह दो प्रकारकी चिन्ता जिसको होय वह भक्त परमेश्वरसे भिन्न नहीं है इसीसे इस चिन्ता को ब्राह्मी चिन्ता कहते हैं। हे सनत्कुमारजी पहिले चराचर जगत् को परब्रह्मस्वरूप ध्यान करे। फिर परमेश्वर का ध्यान करता हुआ चर अचर का विभाग छोड़ देवे। जिस पुरुष को त्याज्य अर्थात् त्यागनेके योग्य ग्राह्य ग्रहण करनेके योग्य, लभ्य, अलभ्य, कृत्य, अकृत्य नहीं है उसको ब्राह्मी चिन्ता कहते हैं औ वह पुरुष सदा सन्तुष्ट रहताहै। यह आभ्यन्तर पूजन हमने वर्णन किया। इस भांति पूजन करनेहारे पुरुष सदा नमस्कार आदि करके पूजनीय हैं चाहे वे कुरूप, विकृत कैसेही होवैं कल्याणकी इच्छावाला पुरुष कभी उनकी परीक्षा न करे औ जो उनकी निन्दा करते हैं वे सदा दुःखभागी होतेहैं जिस भांति देवदारु वनमें मुनि रुद्र की निन्दाकर दुःखी होते भये। इसलियेवर्ण आश्रम में रहनेवाले पुरुषोंको ब्रह्मवेत्ता औ वर्णाश्रम हीन ज्ञानी पुरुष सदा सेवन करने औ वन्दने चाहिये॥

उनतीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि देवदारु वनमें बड़े २ तपस्वी थे उनके साथ क्या वृत्तान्त भया औ शिवजी क्योंकर देवदारु वन में गये यह हम सुनना चाहतेहैं आप कृपा कर सुनावें। सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह सनत्कुमारजीका प्रश्नसुन कुछ हँसकर नन्दी कहने लगे कि हे सनत्कुमारजी एक समय देवदारुवन में शिवजी की प्रसन्नता के लिये अपने स्त्री पुत्रों के सहित मुनि बड़ा उग्र तप करते भये। श्रीमहादेवजीने भी प्रवृत्ति मार्ग में तत्पर उन मुनियों को ज्ञान देनेके अर्थ औ उनकी परीक्षा के लिये विकृत रूप धारा कि कृष्णवर्ण दो भुजा विषमनेत्र जिनके थे औ नाचते गाते हँसते औ भ्रू विलास करते दिव्य देवदारु वनमें प्रवेश करते भये। औ वहां मुनियों की स्त्रियों को देख ऐसा नृत्य औ गान किया कि सब स्त्री उनपर मोहित होगईं औ पीछे उठ लगीं। बड़ी २ पतिव्रता भी अपनी पर्णकुटी छोड़ व्याकुलहो वस्त्रभूषण आदिकीसुध भूल उनके पीछे होगईं औ उनको देख २ हाव भाव करने लगीं। औ कोई २ स्त्री हँसकर शिवजीको देख २ प्रसन्न होतीं औ वस्त्र कांची आदि गिरजानेपर भी सुध नहीं करतीं औ बड़े प्रेम से गातीथीं। कोई मूर्च्छित हो भूमिपर गिरीं कोई २ काम के वश हो निर्लज्ज होगईं औ आपुस में आलिङ्गन करने लगीं। कोई अपने बंधुओं के सम्मुख हो उनका मार्ग रोक २

खड़ी होगईं औ अनेक प्रकारकी चेष्टा करने लगीं इस भांति उनका चित्त विकृत हुआ देखकर भी श्रीशिवजी शुभ अशुभ कुछभी न कहते भये। परंतु वे मुनि अपनी प्राणप्यारियों की यह दशा देख बड़ा कोप करते भये और भांति२के कठोर वचन और शाप शिवजीके प्रति देने लगे परंतु शिवजी के सम्मुख सबका प्रभाव अस्त होगया जिस भांति सूर्य्य के आगे ताराओंका तेज। सुनते हैं कि ब्रह्माजी का बड़ा उत्तम यज्ञ ऋषिशापसे नष्ट होगया भृगु के शाप से विष्णुजी को दश अवतार लेने पड़े। गौतममुनि ने क्रोध करके इन्द्र के वृषण भूमि पर गिरादिये वशिष्ठजी के शापसे वसुओं को गर्भ में वास करना पड़ा। अगस्त्यमुनि के शापसे राजा नहुष सर्प्प होगया। विष्णु का निवास क्षीरसमुद्र ब्राह्मणोंने क्षारसमुद्र करदिया। फिर विष्णुजी ने काशीमें अवि-मुक्तेश्वर में जाय बहुतकाल दुग्ध से महादेवजी का अभिषेक किया और ब्रह्माजी तथा और मुनियों को सङ्ग ले बड़ी श्रद्धा से शिवजी को प्रसन्नकर उनके अनु-ग्रह से फिर अपने निवासस्थान क्षीरसमुद्र को पहिली भांति किया। धर्म्मने माण्डव्य का शाप पाया। यादव

ही उठ उस देवदारुवन से ब्रह्माजी के समीप गये और घबड़ाकर अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया ब्रह्माजीभी क्षणमात्र मनमें विचार और शिवजी को प्रणाम कर कहने लगे कि तुमको धिक्कारहै हाथ लगी निधि तुम ने गँवादी तुम बड़े मन्दभागी और दुर्बुद्धि हो। गृहस्थी के घर कुरूप, सुरूप, मूर्ख, पण्डित, मलिन, नीच चाहे जैसा अतिथि जाय उसकी पूजा करनी उचित है फिर वह तो साक्षात् परमेश्वर देव दारुवन में प्राप्त भये थे कि जिनके दर्शन देवताओंको भी दुर्लभहैं तुमसे उनका भी सत्कार न बनपड़ा देखो सुदर्शनमुनि ने अतिथि पूजासेही अकाल मृत्यु जीतलिया गृहस्थ के उद्धारके लिये और आत्मशुद्धि के अर्थ अतिथि पूजा के विना कोई उपाय नहीं है। पूर्वकाल में सुदर्शन नाम गृहस्थी मुनि मृत्यु के जीतने को प्रतिज्ञा करताभया और अपनी पतिव्रता स्त्री से कहने लगा कि हे प्रिये तुम्हारे घरमें जो अतिथि आवे उसका कभी अपमान मतकरो क्योंकि अतिथि साक्षात् शिवका स्वरूप है इसलिये अतिथि को अपना शरीर अर्पण करने में भी कुछ सन्देह मत करो यह पति का वचन सुन उस पतिव्रता को बड़ा दुःखहुआ और रुदन करती हुई कहने लगी कि यह आप क्यों कहते हैं कि शरीर भी अर्पण कर दो तब सुदर्शनमुनि ने कहा कि हे पतिव्रते मेरे वचन में कुछ विकल्प मतकर अतिथि को शिव स्वरूपजान कर सब वस्तु जो उसको प्रिय होयँ अर्पण करो यह पति की आज्ञा पाय वह पतिव्रता अतिथि सत्कार में

प्रवृत्त हुई। इसभांति कुछ काल व्यतीत होने के अनंतर उनकी श्रद्धा परीक्षा के लिये साक्षात् धर्म ब्राह्मण का रूप धार सुदर्शन मुनि के घर आये। उनको देख उस पतिव्रता ने बहुत सत्कार किया। धर्म भी उसका किया सत्कार स्वीकार कर कहने लगे कि हे भद्रे तेरा पति कहां है। जो हम को प्रसन्न किया चाहती है तो अपना शरीर हमारे समर्पण कर भोजन आदि से हमको संतोष नहीं होगा। यह धर्म का वचन सुन लज्जित हो अपने पतिका वचन स्मरण करती हुई नेत्र बन्द कर धर्म के प्रति अपने को अर्पण करने के लिये प्रवृत्त भई। इसी अवसर में घरके द्वारपर सुदर्शन मुनि आय पहुँचे और बाहिर से पुकारे कि हे प्रिये तू कहां है हमारे समीप आ तबतो अतिथि बोला कि हे सुदर्शन तुम्हारी भार्या के साथ हम मैथुन में प्रवृत्त हैं और अब सुरत का अंत है हम बहुत प्रसन्न भयेहैं। तब सुदर्शन ने कहा कि आप प्रसन्नता से भोगकरो हम भीतर नहीं आते। यह सुनतेही प्रसन्नहो धर्म ने अपना स्वरूप सुदर्शन को दिखाया और जो वरमांगा वह देकर कहा कि हे सुदर्शन तुम कुछ संदेह मत करना हमने तुम्हारी स्त्री से भोग नहीं किया है केवल तुम्हारी श्रद्धा देखने आयेथे। तुमने अपने धर्म से मृत्यु जीति लिया इतना कह सुदर्शन के तपकी प्रशंसा करते हुये धर्म वहांही अन्तर्द्धानभये। इतनी कथा सुनाय ब्रह्माजी कहने लगे कि अतिथियों की सदा पूजाकरनी चाहिये परंतु तुम भाग्यहीन हो कि शिवजी का भी तुमने अनादर किया

अब उनकी ही शरण में जाओ यह ब्रह्माजी का वचन सुन बड़े आकुल होय सब मुनि प्रार्थना करने लगे कि महाराज हम से बड़ा अनर्थ बन पड़ा कि साक्षात् महादेवजी की हम ने निन्दा करी और अज्ञान से उनको शापदिया परंतु हमारे शाप की शक्ति उन पर कुंठित होगई अब आप कृपा से ऐसा उपाय उपदेश करें कि जिससे महादेवजीका अनुग्रह होय और उनका दर्शन पावैं। यह सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि प्रथम तो श्रद्धा करके गुरूसे वेद पढ़े फिर उनका अर्थ विचार कर सब धर्मोंको जाने इसप्रकार बारहवर्ष वेदाभ्यासकर विवाह करै और पुत्र उत्पन्न करे जो सदाचार होय और उनके लिये कुछ वृत्ति का उपाय कर देवे। फिर अग्निष्टोम आदि यज्ञों से परमेश्वर का यजन कर वन में जाय रहे और अग्निमेंही परमेश्वर का पूजन करे। इस भांति बारह वर्ष एक वर्ष छः महीने अथवा बारह दिनहीं शांत चित्त हो दुग्ध पान करके वन में निवास करे पीछे यज्ञ के सब पात्र जो काष्ठ के होयँ उनका अग्नि में हवन करदे मृत्तिका के पात्र जल में छोड़ दे धातु के पात्र गुरु के अर्पण कर और जो कुछ धन पास हो सब ब्राह्मणों को बांट गुरु को प्रणाम कर विरक्त यति अर्थात् संन्यासी होजाय शिखा और यज्ञोपवीतको त्याग। भूस्स्वाहा। इस मंत्र से पांच आहुति जल में देवे। इसके अनन्तर मुक्तिके लिये अनशन व्रतकरै अथवा केवल जलवृक्षके पत्र दुग्ध अथवा फलसे अपना निर्वाह करे इस प्रकार छः महीने अथवा एक वर्ष बितावे जो जी-

प्रवृत्त हुई। इसभांति कुछ काल व्यतीत होने के अनंतर उनकी श्रद्धा परीक्षा के लिये साक्षात् धर्म ब्राह्मण का रूप धार सुदर्शन मुनि के घर आये। उनको देख उस पतिव्रता ने बहुत सत्कार किया। धर्म भी उसका किया सत्कार स्वीकार कर कहने लगे कि हे भद्रे तेरा पति कहां है। जो हम को प्रसन्न किया चाहती है तो अपना शरीर हमारे समर्पण कर भोजन आदि से हमको संतोष नहीं होगा। यह धर्म का वचन सुन लज्जित हो अपने पतिका वचन स्मरण करती हुई नेत्र बन्द कर धर्म के प्रति अपने को अर्पण करने के लिये प्रवृत्त भई। इसी अवसर में घरके द्वारपर सुदर्शन मुनि आय पहुँचे और बाहिर से पुकारे कि हे प्रिये तू कहां है हमारे समीप आ तबतो अतिथि बोला किहे सुदर्शन तुम्हारी भार्या के साथ हम मैथुन में प्रवृत्त हैं और अब सुरत का अंत है हम बहुत प्रसन्न भयेहैं। तब सुदर्शन ने कहा कि आप प्रसन्नता से भोगकरो हम भीतर नहीं आते। यह सुनतेही प्रसन्नहो धर्म ने अपना स्वरूप सुदर्शन को दिखाया और जो वरमांगा वह देकर कहा कि हे सुदर्शन तुम कुछ संदेह मत करना हमने तुम्हारी स्त्री से भोग नहीं किया है केवल तुम्हारी श्रद्धा देखने आयेथे। तुमने अपने धर्म से मृत्यु जीति लिया इतना कह सुदर्शन के तपकी प्रशंसा करते हुये धर्म वहांही अन्तर्द्धानभये। इतनी कथा सुनाय ब्रह्माजी कहने लगे कि अतिथियों की सदा पूजाकरनी चाहिये परंतु तुम भाग्यहीन हो कि शिवजी का भी तुमने अनादर किया

अब उनकी ही शरण में जाओ यह ब्रह्माजी का वचन सुन बड़े आकुल होय सब मुनि प्रार्थना करने लगे कि महाराज हम से बड़ा अनर्थ बन पड़ा कि साक्षात् महादेवजी की हम ने निन्दा करी और अज्ञान से उनको शापदिया परंतु हमारे शाप की शक्ति उन पर कुंठित होगई अब आप कम से ऐसा उपाय उपदेश करें कि जिससे महादेवजीका अनुग्रह होय और उनका दर्शन पावैं। यह सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि प्रथम तो श्रद्धा करके गुरूसे वेद पढे फिर उनका अर्थ विचार कर सब धर्मोंको जाने इसप्रकार बारहवर्ष वेदाभ्यासकर विवाह करै और पुत्र उत्पन्न करै जो सदाचार होय और उनके लिये कुछ वृत्ति का उपाय कर देवे। फिर अग्निष्टोम आदि यज्ञों से परमेश्वर का यजन कर वन में जाय रहे और अग्निमेंही परमेश्वर का पूजन करै। इस भांति बारह वर्ष एक वर्ष छः महीने अथवा बारह दिनहीं शांत चित्त हो दुग्ध पान करके वन में निवास करे पीछे यज्ञ के सब पात्र जो काष्ठ के होयँ उनका अग्नि में हवन करदे मृत्तिका के पात्र जल में छोड़ दे धातु के पात्र गुरु के अर्पण कर और जो कुछ धन पास हो सब ब्राह्मणों को बांट गुरु को प्रणाम कर विरक्त यति अर्थात् संन्यासी होजाय शिखा और यज्ञोपवीतको त्याग। भूस्स्वाहा। इस मंत्र से पांच आहुति जल में देवे। इसके अनन्तर मुक्तिके लिये अनशन व्रतकरै अथवा केवल जलवृक्षके पत्र दुग्ध अथवा फलसे अपना निर्वाह करे इस प्रकार छः महीने अथवा एक वर्ष बितावें जो जी-

ता रह जाय तो प्रस्थान आदि करे। इस प्रकार से शिव सायुज्य मिलती है परंतु जिसके अन्तःकरण में दृढ़ भक्ति होय वह उसी क्षण मुक्ति पाता है विधि, त्याग, यज्ञ, दान, व्रत, होम, शास्त्र, वेद आदि से कुछ प्रयोजन नहीं जो अन्तःकरण में दृढ़ शिवभक्ति होय। श्वेतमुनि ने शिवभक्ति सेही मृत्युको जीताहै इससे श्री महादेवजीमें तुमभी दृढ़भक्ति रक्खो॥

तीसवां अध्याय॥

नन्दी कहतेहैं कि हे सनत्कुमारजी यह ब्रह्माजीका वचन सुन सब मुनि पूछते भये कि महाराज श्वेतमुनि कौन थे कृपाकर उनकी कथा आप हमको सुनावें यह मुनियों का वचन सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि एक पर्वत की कन्दरा में श्वेतमुनि तप किया करतेथे उनकी मृत्यु समीप आई तब (नमस्तेरुद्रमन्यवे) इत्यादि रुद्राध्याय से श्रीमहादेवजी की स्तुति करने लगे। इस अवसर में काल भगवान् भी श्वेतमुनिका आयुष समाप्त भया जान उनको लेजाने के अर्थ उनके आश्रम में आये श्वेतमुनि भी काल को देखकर त्र्यम्बक भगवान् का स्मरण करते हुये पूजन करने लगे औ कहने लगे कि हमारी मृत्यु क्या करसक्ती है श्रीमहादेवजीके अनुग्रहसे हमहीं मृत्युके भी मृत्यु होगये हैं। उनको देख काल भगवान् ने हँसकर कहा कि हे श्वेतमुनि अब हमारे पास चले आओ इस पूजा पाठसे क्या फल है। शिव,

ब्रह्मा, विष्णु आदि कोई भी हमारे ग्रासकिये जीव के छुटाने को समर्थ नहीं यह तुम्हारी रुद्र पूजा हमारा कुछ नहीं कर सक्ती। तुम्हारी आयुष समाप्त होगई है अब हम क्षणमात्रमें तुमको यमलोक ले चलते हैं। यह कालका वचन सुन हा रुद्र हा रुद्र इस भांति ऊँचेस्वरसे श्वेतमुनि विलाप करने लगा औ शिवजी के लिंग को दीनदृष्टि से देखता हुआ व्याकुल हो कालके प्रति कहने लगा कि हे काल इस लिङ्गमें हमारे प्रभु भक्तों का भय हरनेहारे श्रीमहादेवजी विराजमान हैं इसलिये तुम अपने स्थानकोजाओ हमारा कुछनहीं करसक्ते। यह श्वेतका वाक्य सुनतेही बड़े क्रोधसे गर्जकर काल भगवान् ने अपने पाश करके श्वेत मुनिको बांधलिया औ कहा कि हे श्वेत यमलोक में लेजानेके अर्थ हमने तुझे बांध लिया अबरुद्र ने तेरा क्या सहाय किया कहां शिव कहां तेरी भक्ति कहां पूजा औ पूजा का फल औ कहां हम अब हमने तुमको बांध लिया इस लिङ्ग में जो रुद्र स्थित है वह निश्चेष्ट है इसलिये उसकी पूजा करनी उचित नहीं। इतना कहतेही नन्दी आदि गण तथा पार्वतीजी सहित श्रीमहादेवजी अति शीघ्रतासे वहां प्रगट भये और बड़ा घोर उनका रूप देखतेही कालके प्राण मुक्त होगये और भूमि पर गिर पड़ा। इस भांति शिवजी के दर्शनसेही काल को गिरा देख श्वेत मुनि अति प्रसन्नता से बड़ा शब्द करते भये और पार्वती सहित श्रीमहादेवजीको भक्ति से प्रणाम किया और भी सब मुनियों ने श्रीमहादेवजी के चरणों पर मस्तक

नचाया आकाश से देवताओं ने वहुत उत्तम सुगन्ध पुष्पों की वर्षा करी इस भांति शिवजी का प्रभाव देख नन्दी ने प्रणाम कर कहा कि महाराज यह मूर्ख काल अपने अज्ञान से मृत्यु वशभया अव इसके ऊपर और इस ब्राह्मण के ऊपर आप अनुग्रह करें यह नन्दी का वचन स्वीकार कर दोनों पर अनुग्रह कर श्रीमहादेवजी अन्तर्द्धान होते भये। इसलिये मृत्युंजय परमेश्वर की सदा भक्ति से पूजा करनी चाहिये जिससे भुक्ति मुक्ति मिले। वहुत प्रलाप से क्या फल है हे मुनीश्वरो तुम भी भक्ति से श्रीमहादेवजी का आराधन करो जिससे यह तुम्हारा शोक निवृत्त होय। नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी यह ब्रह्माजीसे सुन सव मुनि पूछते भये कि महाराज कौन से जप, यज्ञ, अथवा व्रत से परमेश्वर के भक्त होजायँ यह आप कृपा कर कहैं। तव ब्रह्माजी ने कहा कि हे मुनीश्वरो न दान से न यज्ञ तप विद्यायोग होम व्रत वेदशास्त्र आदि किसी से भक्ति होवै [illegible] से ही भक्ति होती है इतना [illegible] सव मुनि अपने आश्रम में जाय शिवजी का आराधन करने लगे। नन्दी कहते हैं कि शिवभक्ति धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, विजय आदि देतीहै। पूर्व्वकालमें दधीचि मुनि देवताओं के सहित इन्द्र औ विष्णुजी को जीत अपने पाद के प्रहार से राजाक्षुपको मारताभया और उनके अस्थि वज्रके होगये यह सव शिवभक्ति का प्रताप है। मैंने भी महादेव के कीर्त्तन से मृत्युको जीत

लिया। और श्वेत मुनि भी महादेवजी के अनुग्रह करके मृत्यु के मुखसे निकल आया॥

इकतीसवां अध्याय॥

सनत्कुमारजी पूछते हैं कि नन्दीश्वरजी देवदारु वन के निवासी मुनि क्योंकर महादेवजी की शरण में प्राप्त भये यह आप कहैं नन्दी कहतेहैं कि हे सनत्कुमारजी ब्रह्माजी ने बड़े तपस्वी और तेज करके अग्नि के तुल्य देवदारु वन के निवासी उन मुनियों से कहा कि हे मुनीश्वरो देवदेव श्रीमहादेवजी को जानना चाहिये इससे अधिक कोई पदार्थ नहीं है। देवता ऋषि पितर आदि सब का वही प्रभु है। हजार युग के अंत में काल रूपसे सब का संहार वही करता है। वही अपने तेजसे सब प्रजाको सिरजता है। वही इन्द्र रुद्र चन्द्र विष्णु रूप धरे है सत्ययुग में वह योगी, त्रेतामें क्रतु द्वापर में कालाग्नि, औ कलियुग में धर्मकेतु नाम से प्रसिद्धहै। इन रुद्र की चार मूर्तियों का परिडत जन ध्यान करते हैं (बाहर चतुरस्र भीतर अष्टदल पिंडिका समीप सुन्दर वृत्त इसभांति लिङ्ग को पूजे) तमोगुण अग्नि, रजोगुण ब्रह्मा, सत्वगुण विष्णु ये तीनों शिव की एक मूर्त्ति है। योग करके युक्त वह ब्रह्मशिवहै। इसलिये जितक्रोध औ जितेन्द्रिय, ब्राह्मण देवदेव उसईशान का आराधन करते हैं। सब लक्षणों करके युक्त अंगुष्ठ प्रमाण अति मनोहर वर्तुल शिवलिङ्ग लेवे वह लिङ्ग अष्टकोण होय षोड़श कोण होय चाहे वर्तुल ही

होय परन्तु मनोहर होय उससे द्विगुण वेदिका अर्थात् जलहरी सोने चांदी अथवा पाषाणका बनावे वहवेदी भी त्रिकोण चतुष्कोण षट्कोण अथवा वर्तुल बनावे। जल निकलनेके अर्थ उसके अग्रमें गौका मुख बनादेवे। इस भांति बहुत स्वच्छ निर्व्रण मनोहर वेदी निर्म्माणकरै। फिर उसमें शिवलिङ्गको विधिपूर्वक स्थापनकरै और उसके समीप एक कलश स्थापनकरै जिसमें सुवर्ण भी गेरै फिर पंचाक्षरमंत्र औ सद्योजातआदि पांचमंत्रोंसे उसको अभिमंत्रणकर उसकलशके जल करके महादेव जीको अभिषेककरै औ जो उपचार मिलै उनसे महादेव जीका भक्ति करके पूजन करै तो सब सिद्धिहोयँ इसलिये हे मुनीश्वरो इसी रीति से एकाग्र चित्तहो शिवजीकी पूजा तुमभी करो औ हाथ जोर भक्तिसे स्तुति करो तो उनका दर्शन पाओगे जो योगियों को भी दुर्लभ है औ जिससे सब अज्ञान औ अधर्म्म नष्ट होता है। यह ब्रह्माजी का वचन सुन उनको प्रदक्षिणाकर सब मुनि देवदारु वन को जातेभये। वहां जाय ब्रह्माजी की आज्ञानुसार श्रीमहादेवजी का आराधन करने लगे अनेक प्रकार के स्थण्डिलों में पर्व्वतों की गुहाओं में नदियों के पवित्र और एकान्त तटोंपर कोई शैवालपर निवासकर कोई जल में बैठ कोई कोई दर्भशय्या बिछाय कोई पादके एक अंगूठेपर ठहरके कोई वीरासन में स्थिर होय तप करनेलगे इस भांति तप करते२एक वर्ष पूराहुआ तब वसन्तऋतु में उनके अनुग्रहके लिये भक्तोंपर दया कर प्रसन्न हो हिमालय के उस देवदारु

वनमें शिवजी आये जो शरीरमें भस्मलपेटे विकृतरूप धारे उल्मुक अर्थात् जलताहुआ काष्ठ हाथ में लिये लाल जिनके नेत्र कभी गाते कभी हँसते कभी नाचते और कभी रोते और आश्रमों में भिक्षा मांगते फिरने लगे इस माया से शिवजी को वन में प्रवेश हुये देख सब मुनि उनको पहिंचान स्तुति करनेलगे और सुन्दर जल अनेक भांति की पुष्पमाला धूप गन्ध नैवेद्य आदि उपचारों से अपनी स्त्री पुत्रों सहित उनकी पूजा करते भये । और भक्तिसे हाथ जोर प्रार्थना करनेलगे कि हे परमेश्वर हमने अज्ञान से जो अपराध किया वह आप क्षमाकरें। आपके चरित विचित्र और गहन हैं जिनको ब्रह्मादिक भी नहीं जानसक्के हमारी तो क्या कथा है। आपकी गति और अगतिको हम नहीं जानसक्के। आप जो हो सोई हो आपको बार २ नमस्कार होय। हे देव हे देव महात्मा पुरुष आपकी स्तुति इस भांतिकरतेहैं॥

ॐनमोभवायभव्यायभावनायोद्भवायच्च। अनन्तबलवीर्य्यायभूतानांपतयेनमः १ संहर्त्रेचपिशङ्गायअव्ययायव्ययायच्च। गङ्गासलिलधारायआधारायगुणात्मने २ त्र्यम्बकायत्रिनेत्रायत्रिशूलवरधारिणे। कन्दर्पायहुताशायनमोऽस्तुपरमात्मने ३ शङ्करायवृषाङ्कायगणानांपतयेनमः। दण्डहस्तायकालायपाशहस्तायवैनमः ४ वेदमन्त्रप्रधानायशताजिह्वायवैनमः ४ भूतंभव्यंभविष्यञ्चस्थावरंजङ्गमंच्चयत्। त्वंवदेहात्समुत्पन्नंदेवसर्व्वमिदंजगत् ५ अज्ञानाद्यदिवाज्ञानाद्यत्किञ्चित्कुरुतेनरः। तत्सर्व्वंभगवानेवकुरुतेयोगमायया ६ इस

वह सदा मेरे समीप निवास करता है । यह पाशुपत
योग औ कापिल अर्थात् सांख्यशास्त्र ये हमने रचे इन
में पहिले पाशुपत योग रचा इससे वह उत्तम है । बाकी
सब शास्त्र ब्रह्माजीने रचे । औ लज्जा भय मोह आदि
करके युक्त यह सृष्टि हमनेही रची है । जगत् में देवता
मुनि मनुष्य आदि जो उत्पन्न होते हैं पहिले सब नग्न
ही उपजते हैं कपड़ा ओढ़े किसी का जन्म नहीं होता
जो पुरुष जितेंद्रिय न हो वह कपड़ा पहिने भी नगाही
है । जिसने इन्द्रिय जीतली वह नग्न भी वस्त्रोंसे ढकाही
है । इससे नग्नता [illegible]
अहिंसा, वैराग्य, मान [illegible]
वस्त्र है । श्वेत भस्म शरीर में लगावे औ शिव का स्मरण
करे वह सब पातकों को दग्ध कर देता है जिस भांति
वन को अग्नि दग्ध करे । जो पुरुष यत्न से तीन काल
भस्मस्नान करे वह हमारा गण होता है । जो पुरुष सब
यज्ञोंकोकर मनको एकाग्रकर परमेश्वरका ध्यान करते
हैं वे मोक्षपाते हैं । इसमार्ग को वाम अथवा उत्तर कहते
हैं । औ दक्षिणमार्ग अर्थात् काम्यकर्मोंके लिये जो परमे-
श्वरका आराधन करते हैं वे अणिमा, गरिमा आदि
सिद्धि पाते हैं औ अमर होजाते हैं । इन्द्रादिक देवता
काम्य व्रतसेही परमैश्वर्य को प्राप्त भये हैं । मद, मोह,
राग, रज, तम आदिको छोड़ संसारको दूर करनेहार
पाशुपत योगको जान इसका सदा सेवनकरे । जोइस
को जितेन्द्रियहो श्रद्धा से पढ़े वह सब पापों से मुक्त
हो रुद्रलोक में जाय । यह शिवजी का वचनसुन वशि-

छ आदि सब मुनि पाशुपत्त योग में प्रवृत्त भये औ भस्म धारण करने लगे औ कल्प के अंत में शिवलोक के बीच निवास करते भये। नंदी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी मलिन, विकृत, रूपवान् चाहै जिसभांति के होयँ परन्तु ब्राह्मणों की निंदा न करै बहुत प्रलापसे क्या प्रयोजन है यह बात मुख्य है कि शिवजीके तुल्य शिवभक्तों को जानना चाहिये। देखो दधीचि ने शिव भक्ति सेही देवदेव श्रीनारायण को जीता इसलिये जगत् में जो पुरुष जटाधारे अथवा मूड़ मुड़ायें भस्म लगाये दिगम्बर होयँ उनका मन वचन कर्मसे शिवजी के तुल्य पूजन करना उचित है॥

पैंतीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार जी पूछते हैं कि हे नन्दिकेश्वर जी दधीचिने अपने चरणसे क्षुप राजा को किसभांति मारा औ दधीचि के अस्थि वज्र के तुल्य क्योंकर भये औ तुमने मृत्यु किस प्रकार जीता यह सब आप कथन करें। यह सुन नन्दी कहने लगे कि हे सनत्कुमार जी ब्रह्माजी का पुत्र क्षुपनाम एक राजा दधीचि मुनि का परम मित्र था एक दिन उन दोनों का विवाद भया दधीचिने कहा कि ब्राह्मण श्रेष्ठ है राजाने कहा कि क्षत्रिय उत्तम होते हैं आठ लोकपालों का सामर्थ्य राजा में होता है इसलिये इन्द्र, अग्नि, यम, निरृति, वरुण, वायु, सोम, और कुबेर मैंही हूं औ ईश्वर हूं इसलिये हे च्यवन के पुत्र दधीचि कभी हमारी अवज्ञा मतकरो औ हमको

बड़ा भारी देवता जान सदा हमारी पूजाकरो यह राजा का वचन सुन दधीचि मुनि को बड़ा क्रोध आया औ बायें हाथ से एक मुक्का राजा के शिर में मारा,राजा ने दधीचि को वज्र से मारि गिराया वह राजा ब्रह्मा जी की छींक से उत्पन्न भयाथा और किसी कार्य के लिये इन्द्र ने उसको वज्र दिया था। उस वज्र के प्रभाव से राजाने दधीचिमुनि को भूमि पर गिरा दिया तब तो पड़े२ दधीचिमुनिने शुक्राचार्य को स्मरण किया शुक्राचार्य ने भी बहुत शीघ्र वहां आय अपनी अमृतसंजीवनी विद्या से दधीचिमुनि के सब अङ्ग यथार्थ कर दिये और कहा कि हे दधीचि श्री महादेवजी का आराधन करो कि जिस से अवध्य हो जाओ अर्थात् किसी से न मारेजाओ हमको भी अमृतसंजीविनी विद्या श्री शिवजी ने ही अनुग्रह कर उपदेश करी है शिव भक्तों को कभी मृत्यु का भय नहीं होता। अब शिव जी का बताया हुआ मृतसंजीवन मंत्र हम आप से कहते हैं त्र्यम्बक देवका यजन करे जो तीनलोक सोम सूर्य अग्नि रूप तीनि मण्डल तीनि गुण मन बुद्धि अहंकार रूप तीनि तत्त्व तीनि अग्नि तीनि देव, और भी जो जगत् में तीन २ प्रकार के पदार्थ हैं सबके पिता हैं। जिसभांति पुष्पों में गन्ध रहता है उसी प्रकार वह परमेश्वर सब जगत् में सुगन्धि रूपहै महत्तत्त्व आदि विशेष पर्यंत जितना माया विकल्प है उस सब की औ ब्रह्म, विष्णु, इन्द्र, मुनि आदि सब की पुष्टि वा प्रकृति है उसकी वृद्धि करनेहारा वह पर-

पद्म धारे मुकुट मस्तक पर औ भूषण सब अंगोंमें पहिने पीताम्बर से शोभायमान देव औ दैत्योंकरके पूजित भूमि औ लक्ष्मीकरके युक्त गरुडध्वज राजा नृपको दर्शन देतेभये राजाभी श्रीभगवान्‌जी का दर्शनपाय प्रणाम कर हाथजोरि गद्गद वाणी से स्तुति करनेलगे॥

स्तुति॥

त्वमादिस्त्वमनादिश्चप्रकृतिस्त्वंजनार्दनः। पुरुषस्त्वंजगन्नाथोविष्णुर्विश्वेश्वरोमहान् १ योऽयंब्रह्मासिपुरुषोविश्वमूर्त्तिःपितामहः। तत्त्वमाद्यंभवानेवपरंज्योतिर्जनार्दनः॥ परमात्मापरंधामश्रीपतेभूपतेप्रभो २ त्वत्क्रोधसम्भवोरुद्रस्तमसाचसमावृतः। त्वत्प्रसादाज्जगद्धातारजसाचपितामहः ३ त्वत्प्रसादात्स्वयंविष्णुःसत्त्वेनपुरुषोत्तमः। कालमूर्त्तेहरेविष्णोनारायणजगन्मय ४ महांस्तथाचभूतादिस्तन्मात्राणीन्द्रियाणिच। त्वयैवाधिष्ठितान्येवविश्वमूर्त्तेमहेश्वर ५ महादेवजगन्नाथपितामहजगद्गुरो। प्रसीददेवदेवेशप्रसीदपरमेश्वर ६ प्रसीदत्वंजगन्नाथशरण्यंशरणङ्गतः। वैकुण्ठशौरेसर्वज्ञवासुदेवमहाभुज ७ सङ्कर्षणमहाभागप्रद्युम्नपुरुषोत्तम। अनिरुद्धमहाविष्णोसदाविष्णोनमोस्तुते ८ विष्णोतवासनन्दिव्यमव्यक्तमध्यतोविभुः। सहस्रफणसंयुक्तस्तमोमूर्त्तिर्धराधरः ९ अधश्चधर्म्मोदेवेशज्ञानंवैराग्यमेवच। ऐश्वर्यमासनस्यास्यपादरूपेणसुव्रत १० सप्तपातालपादस्त्वंधराजघनमेवच। वासांसिसागराःसप्तदिशश्चैवमहाभुजाः ११ द्यौर्मूर्धातेविभोनाभिःखंवायुर्नासिकाङ्गतः। नेत्रेसोमश्चसूर्य्यश्चकेशावैपुष्करादयः १२

नक्षत्रताराकायोश्चग्रैवेयकविभूषणम्॥कथंस्तोष्यामिदेवेशःपूज्यश्चपुरुषोत्तमः१३श्रद्धयाचकृतंसर्व्वंयच्छ्रुतंयच्चकीर्त्तितम्॥यदिष्टंतत्क्षमस्वेशनारायणजनार्दन१४॥

इति॥

नन्दी कहते हैं कि यह विष्णुस्तोत्र क्षुप राजाका किया हुआ जो पठन करै अथवा सुने वा ब्राह्मणों को श्रवण करावे वह अवश्य विष्णुलोक पावे। इस भांति राजा ने विष्णुजी की स्तुति करी औ विधि से पूजन कर हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगा कि महाराज दधीचिनामक एक ब्राह्मण है वही मेरा मित्रथा और बड़ा धर्मात्मा था उसने ऐसा शिवजी का आराधन किया कि किसी से भी उसका वध न होसके उसने एक दिन सभा के बीच अपने बायें चरण से मेरे मस्तक में ताड़न किया औ यह भी कहा कि हम किसीसेभी नहीं डरते तू तो कौनहै सो हे भगवन् उस दधीचि को मैं जीतना चाहताहूं इसमें जो कुछ उचित होय वह आप करैं यह उस राजाका वचन सुन शिवजीके प्रभाव औ दधीचि के अवध्यपने को स्मरण कर विष्णुजी कहने लगे कि हे राजन् जो ब्राह्मण महादेवजी के शरण में रहते हैं उनको किसी का भय नहीं होता। शिवभक्त चाहे नीच भी हो वह निर्भय रहता है फिर दधीचि मुनि का तो क्या कहना है इसलिये तुम्हारा विजय न होगा अब हम दधीचि मुनिको क्रोध कराते हैं कि जिससे देवताओं के सहित हमको शाप देवें। दक्ष के यज्ञ में दधीचि के शाप से देवताओं का और

हमारा नाश होगा। औ फिरभी उत्थान होगा इसलिये हे राजन् सब प्रकार से तुम्हारा जय होने के अर्थ हम यत्न करते हैं। नन्दी कहते हैं कि यह विष्णुजी का वचन सुन राजा ने कहा कि जैसी आपकी इच्छा होय वैसा करें। तब विष्णुजी ब्राह्मणका रूपधार दधीचिके आश्रम में गये औ दधीचि से कहा कि हे ब्रह्मऋषि दधीचि तुम से एक वर हम मांगते हैं आप हमको दें यह सुन दधीचि मुनि ने कहा कि तुम्हारा अभिप्राय मैं जानताहूं मैं आप से भी नहीं डरता। आप विष्णु हैं औ ब्राह्मण का रूप धार कर आये हैं। शिवजी के अनुग्रह से भूत वर्त्तमान औ भविष्य सब मैं जानताहूं। अब आप यह ब्राह्मण का रूप छोड़ दें। राजा क्षुपने आपका आराधन किया है इसके अर्थ आप आये हैं क्योंकि आप भक्तवत्सलहैं। परन्तु यह आपही कहें कि शिवपूजा में तत्पर मुझ को आप से क्या भय होसक्ता है। हे भगवन् इस जगत् में देव दैत्य औ ब्राह्मण आदि से मुझे भय नहीं। नन्दी कहते हैं कि यह दधीचि का वचन सुन वह ब्राह्मण रूप तो त्याग दिया औ अपना रूपधार हँस कर दधीचि से कहने लगे कि हे दधीचि तुम परम शिवभक्त हो इस-लिये सर्वज्ञ हो और तुम को किसी का भय भी नहीं परन्तु हमारे कहने से राजा क्षुप को सभा के बीच इतना कहदो कि हम तुमसे डरते हैं। इसप्रकार विष्णु जी का कथन भी दधीचि मुनिने न माना औ कहा कि हम तो शिवजी की कृपा करके किसी से नहीं डरते यह मुनिका वचन सुन विष्णुभगवान्को बड़ा क्रोध

भया औ दधीचिको दग्धकरने के लिये चक्र उठाया परंतु चक्र कुंठित होगया उस समय राजाक्षुप भी वहां ही था। तब दधीचिने हँसकर कहा कि महाराज यह चक्र तो आपको शिवजीकेही अनुग्रह से मिला है इसलिये शिवभक्तों पर नहीं चल सक्का। अब आप ब्रह्मास्त्र आदि किसी दूसरे अस्त्र करके हमारे मारनेका यत्न कीजिये। नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी यह दधीचि का वचन सुन औ अपने चक्रका कुंठित हुआ देख सब अस्त्र विष्णुजीने दधीचि के ऊपर एकबारही चलाये औ सब देवताभी विष्णुजी की सहाय के लिये आये। इस भांति एक ब्राह्मण से सब देवता युद्धकरने में प्रवृत्त भये दधीचिने भी यह व्यवस्था देख शिवजी का स्मरणकर एक कुशाकीमुष्ठि सब देवताओं पर फेंकदी। वह कुशाकी मुष्ठिही बड़ा भयंकर कालाग्नि के तुल्य त्रिशूल होगया। औ दधीचिने भी यह मन में विचारा कि सब देवताओं को दग्ध करदेवें। इन्द्रविष्णु आदि देवताओं ने जो २ अस्त्र दधीचि मुनिके ऊपर छोड़े थे सब उस त्रिशूलको प्रणाम करने लगे औ देवता भी उस त्रिशूलको देख व्याकुल हो भागचले तब विष्णुजीने अपने शरीरसे करोड़ों गण अपने तुल्य उत्पन्नकिये परन्तु दधीचि ने सबको एकबारही भस्म करदिया तबतो दधीचिको विस्मय करने के अर्थ विष्णुजीने विश्वरूप धारा दधीचि ने उनके शरीर में करोड़ों देवता रुद्रगण औ ब्रह्मांड देखे तब दधीचिने विष्णुजी को जलसे अभ्युक्षण करके कहा कि आप इस

माया को छोड़देवें। मैं आपको दिव्य दृष्टि देताहूं मेरे शरीर में ही आप ब्रह्मा, विष्णु,रुद्र आदि करोड़ों देवता औ ब्रह्मांडदेख लीजिये इतना कह दधीचिने अपने शरीर में सम्पूर्ण विश्व दिखा दिया और कहा कि इन मायाओं से कुछफल नहीं आप इस माया को त्याग कर युद्धकीजिये। यह मुनिका प्रभाव देख विष्णुजीको ब्रह्माजीने आयकर युद्धसे हटाया औ विष्णुजीभी दधीचि मुनिको प्रणाम कर अपने लोक को जाते भये। राजाक्षुप भी बहुत दुःखी हो दधीचि की पूजाकर वार२ प्रणाम करता हुआ कहने लगा। कि हे दधीचि जो कुछ मैंने अज्ञानसे अपराध किया वह आप क्षमा करें। विष्णुजी अथवा और देवताभी आपका कुछनहीं करसकते। आप परम शिवभक्त हैं परन्तु वह भक्ति मुझ सरीखे अधम क्षत्रियों को क्योंकर मिलसक्ती है। इसलिये आप अनुग्रह करें और मेरा अपराध क्षमाकिया जावे। यह राजाका दीनवचन सुन दधीचि मुनिने उसके ऊपर अनुग्रह किया। औ सब देवताओं को शाप दिया कि दक्षप्रजापति के यज्ञ में विष्णु सहित सब देवता रुद्रके क्रोधरूप अग्नि में दग्ध होंगे। इस भांति सब देवताओं को शापदे राजासे कहा कि हे राजन् देवता औ राजाओं के पूज्य तथा सबसे बलवान् सदाब्राह्मण हुआ करते हैं इतना कह दधीचि मुनि तो अपनी कुटीमें प्रवेशकरते भये औ राजाभी उनको प्रणामकर अपनी राजधानीको सिधारा। जहां यह युद्ध भया उस स्थानका नाम स्थानेश्वर भया वहां जोशरीर त्यागकरे वहशिवलोकपावे। यह

हमने राजाक्षुप औ दधीचिमुनिका विवाद संक्षेपसे कहा है इसको जो पठन करै वह अपमृत्यु को जीतकर ब्रह्मलोक में निवास करै। औ जो पुरुष इसको पठन कर युद्ध करने जाय वह अवश्य जय पावे औ उसको मृत्युका भी भय न होय॥

सैंतीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी आप शिवजी के गण क्योंकर भये यह हम सुनना चाहतेहैं आप कृपा कर कहैं तब नन्दी कहनेलगे कि मेरापिता शिलादनाम एक अन्ध ब्राह्मणथा उसने सन्तति के लिये बहुत काल तप किया तब इन्द्र प्रसन्नहो वहां आये औ शिलाद से कहा कि वरमांग। तब शिलादने हाथ जोड़ प्रार्थना करी कि महाराज मेरे अयोनिज पुत्र हो औ उसकी मृत्युभी नहोय तबइन्द्रने कहा कि यहतो नहीं होसक्ता ऐसा पुत्र तो ब्रह्माजी भी नहीं दे सक्के। जो तुमको योनिज औ मृत्युयुक्त पुत्र चाहिये तो हम देते हैं। मृत्यु हीन तो ब्रह्माजीभी नहीं हैं वे भी दो पराईआयुर्ष भोग कर मृत्यु वश होते हैं औ अयोनिज भी नहीं हैं शिव औ भवानीके पुत्र हैं। अंड औ कमल से उपजे हैं। इसलिये यह आशा छोड़ अपने तुल्य पुत्र ग्रहण करो। यह सुन मेरे पिता शिलाद मुनि ने कहा कि हे भगवन्। यह मैंने भी नारदमुनि से सुना है कि ब्रह्माजी अण्डसे कमलसे औ शिवजीसे उत्पन्न भये परन्तु हमको बड़ा संदेह है कि ब्रह्माजीका पुत्रतो

दक्षप्रजापति औ दक्ष की पुत्री सती जो ब्रह्माजी की पौत्री ठहरी औ महादेवजी को विवाही गई फिर अपनी पौत्री में ब्रह्माजी क्योंकर उत्पन्न भये। यह सुन इन्द्र कहने लगे कि यह तुम्हारा सन्देह ठीक है परन्तु हम इसका कारण कहते हैं। शिवजी ने तत्पुरुषनाम कल्प में सब जगत् सिरजने की इच्छा कर ब्रह्माजी को उत्पन्न किया। औ मेघवाहन कल्प में दिव्य हजार वर्ष तक मेघका रूप धार विष्णुजी शिवजी के वाहन बने रहे इसीसे उस कल्प का नाम मेघवाहन भया। शिवजी ने अपने में विष्णुजी की परम भक्ति देख ब्रह्माजी सहित जगत् निर्माण करनेकी आज्ञादी। ब्रह्माजीने भी तपसे शिवजी को प्रसन्नकर कहा कि महाराज आपके वाम अंग से तो विष्णु औ दक्षिण अंगसे हम उत्पन्न भये औ हमने तथा विष्णुजीने सब जगत् रचा विष्णुजीने मेघ रूप धारण कर भक्ति से आपको धारण किया परन्तु विष्णुजीसे भी अधिक हम आपके भक्त हैं इसलिये आप हमारे ऊपर अनुग्रह करें औ सर्वात्मत्व हमको देवें। यहसुन शिवजी ने भी प्रसन्न हो उनको सर्वात्मत्व अर्थात् सर्वव्यापकता दी वे भी अपना मनोरथ पाय अतिशीघ्र समुद्रमें विष्णुजीके समीपगये औ देखा कि उस एकार्णवमें शेषशय्या के ऊपर शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म औ सब भूषण धारे लक्ष्मीजी जिनके चरण कमल से भी कोमल अपने हाथोंसे दबा रही हैं औ क्षीर समुद्रमें आनन्द से विष्णुजी सोते हैं ब्रह्माजी ने उनको देखकर कहा कि जिस भांति पहिले आपने

हमको ग्रस लिया था उसी प्रकार शिवजी के अनुग्रहसे अब हम आपको ग्रसते हैं। यहसुन विष्णुजी उठबैठे औ हँसकर ब्रह्माजीमें प्रवेश किया औ ब्रह्माजीनेभी उनको ग्रस लिया औ अपने भ्रूमध्य से फिर उत्पन्न किया। विष्णुजी ब्रह्माजी से उत्पन्न हो उनके समीप स्थित भये इसी अवसर में विकृत रूपधार शिवजी भी दोनों के ऊपर अनुग्रह करने के लिये वहां आये। ब्रह्माजी औ विष्णु जी भी उनको देख बार २ प्रणाम औ भक्ति से स्तुति करने लगे। शिव जी भी दोनों के ऊपर अनुग्रह कर वहांहीं अन्तर्द्धान भये॥

अरतीसवां अध्याय॥

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी इसप्रकार दोनों पर अनुग्रह कर शिवजी तो चले गये औ विष्णुजी ब्रह्माजी के प्रति कहने लगे कि हे ब्रह्माजी यह परमेश्वर शिव हमारा औ सब जगत् का प्रभु है इस महात्मा के वामाङ्ग से हम उत्पन्न भये हैं औ दक्षिणसे आप। इसी से हमारे को ऋषि लोग प्रधान प्रकृति औ व्यक्त कहते हैं। तुमको पुरुष अज औ अव्यक्त कहते हैं इस भांति हम दोनों के कारण शिवही हैं। यह विष्णुजी से सुन ब्रह्माजी शिवजी को बार २ प्रणाम औ स्तुति करने लगे। फिर जल से व्याप्त हुई भूमि को वराह रूप धार विष्णुजी पहिली रीतिसे स्थापन करते भये, नदी नद समुद्र आदि अपने २ स्थान में स्थापन किये औ भूमि की उँचाई निचाई बराबर कर पर्वत बनाये। भूआदि

चारलोक रचे औ सृष्टि रचने की इच्छा करी औ मुख्य तिर्यक् देव मनुष्य अनुग्रह औ कौमार ये सर्ग पहिली भांति रचे। पहिले सनन्दन सनक औ सनातन को उत्पन्न किया जो ज्ञान करके परब्रह्म स्वरूपको प्राप्त भये। मरीचि भृगु अङ्गिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु दक्ष औ वशिष्ठ को योगविद्या करके परमेश्वर ने सिरजा। फिर धर्म सङ्कल्प औ अधर्म को रचा ये बारह ब्रह्माजी के पुत्र भये। फिर ऋभु औ सनत्कुमार उत्पन्न भये जो ऊर्ध्वरेता ब्रह्मवादी औ ब्रह्माजी के तुल्य भये। इस प्रकार मुख्य सृष्टि रचकर सब युगके धर्म भगवान् कल्पना करते भये॥

उनतालीसवां अध्याय॥

॥ नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी इसभांति इन्द्रसे सुन मेरे पिता शिलादने फिर पूछा कि महाराज कौनसे युग धर्म कल्पना किये यह आप कृपाकर मुझे सुनावें तब इन्द्र कहने लगे कि हे शिलाद कृतयुग त्रेता द्वापर औ कलियुग ये चार युग हैं सत्ययुग तो सत्वगुण है त्रेता रजोगुण द्वापर रजोगुण औ तमोगुण कलियुग केवल तमोगुण है। सत्ययुग में ध्यान त्रेता में यज्ञ द्वापरमें भजन औ कलियुग में दानही मुख्य है। चार हज़ार दिव्यवर्ष सत्ययुगका प्रमाण है औ चारसौ दिव्यवर्ष उसकी संध्या औ चारसौही संध्यांश है औ मनुष्योंका चारहज़ार वर्षआयुष सत्ययुग में होता है। जब सत्ययुग औ उसकी सन्ध्या बीत चुकती है तब धर्म

का एक चरण घटकर त्रेतायुग प्रवृत्त होता है यह तीन हजार दिव्यवर्षका है औ इसकी सन्ध्या तीनसो वर्ष की है। सत्ययुग का आधा द्वापर औ द्वापर का आधा कलि है सत्ययुग में धर्म के चार चरण हैं त्रेता में तीन द्वापर में दो औ कलियुग में एक चरण धर्म रहता है सत्ययुग में सब प्रजा सदा तृप्त भोग करके युक्त अति रूपवान् सुखी औ दीर्घायु करके युक्त होते हैं औ परस्पर बड़ी प्रीति रखते हैं कभी विरोध नहीं करते पर्वत समुद्र आदि में निवास करते हैं घर नहीं बनाते शोक से रहित बड़े पराक्रमी सदा प्रसन्न औ पुण्य पाप से रहित होते हैं। औ उनके लिये रसोल्लास होता है अर्थात् उनकी इच्छा सेही अन्न औ रस उत्पन्न होजाते हैं। त्रेतायुग में रसोल्लास जाता रहता है औ मेघ जल वर्षते हैं जिनके वर्षने से पृथ्वी पर वृक्ष उत्पन्न होते हैं वही उस युगमें प्रजाके घर बन जाते हैं और वृक्षों के फलोंसेही उनका निर्वाह होता है इसी भांति कुछ काल व्यतीत होने पर प्रजा में अकस्मात् राग औ लोभ उत्पन्न होनेसे सब वृक्ष नष्ट होजावेंगे तब वे भ्रांत होकर सत्य से फिर उस सिद्धि का ध्यान करेंगे तब फिर वे वृक्ष उत्पन्न होंगे जिनमें वस्त्र भूषण औ भांति भांति के फल औ पत्ते २ में मधु अर्थात् शहत उत्पन्न होगा सबका निर्वाह उसी से होगा कि जिससे सब प्रजा हृष्ट पुष्ट रहेगी। फिर कुछ काल बीतने पर प्रजा में लोभ उत्पन्न होगा औ वृक्षों से बलकरके मधु आदि हरण करेंगे तब वे वृक्ष फिर नष्ट होजायँगे औ

हुई अर्थात् शीत उष्ण वर्षा आतप अर्थात् धूप होने से प्रजा बहुत पीड़ित होगी। तब वस्त्र और घर बनावेंगे औ वृत्ति का उपाय चिन्तन करेंगे। फिर विवाद से व्याकुल हो जब क्षुधा तृषासे पीड़ित हुये तब वृष्टि होती है औ नदी बहने लगतीहैं औ जो जल बिंदु भूमि पर गिरे उनसे औषधी उत्पन्न भई। औ बिना बोये ग्राम औ बनमें चौदह भांति के वृक्ष गुल्म उत्पन्न भये औ उनसे ही प्रजा का निर्वाह होने लगा फिर कुछ काल के अनन्तर प्रजा में राग औ लोभ उत्पन्न भया नदी तथा क्षेत्र को ग्रहण करने लगे [illegible] [illegible] से [illegible]। तब [illegible] तब ब्रह्माजीने पृथुराजाका रूप धार पृथ्वीका दोहन किया तबसे पृथ्वी में हलके बाहने से कृषि अर्थात् खेती होनेलगी औ सब प्रजा त्रेतायुग के अन्त में कृषि करके अपना निर्वाह करने लगे औ जहां इच्छा करते वहांहीं जल उत्पन्न होता भूमि खोदनेकी कुछ अपेक्षा नहीं। जब प्रजा आपस में पुत्र स्त्री धन आदिको बलसे हरनेलगे तब सबकी रक्षा के लिये ब्रह्माजी ने क्षत्रिय उत्पन्न किये औ वर्णाश्रमों का विभाग किया औ यज्ञ प्रवृत्त किये परंतु पशु यज्ञ कोई कोई नहीं करते थे औ अहिंसक अर्थात् हिंसा न करने वाले की प्रशंसा भी होती थी औ विष्णुजी ने भी यज्ञ किया। द्वापर युग में प्रजा को मन वचन कर्म करके बुद्धि में भेद उत्पन्न भया खेती सीप-

बातोंमें संदेह होने लगा। वेदके विभाग भये औ जुदी २ शाखा रची गईं। धर्मोका सङ्कर औ वर्णाश्रमों का नाश हुआ तब द्वापरयुग में राग लोभ औ मद उत्पन्न होताहै औ एक वेद के चार भाग होते हैं औ ऋषि पुत्र ऋक् यजु औ सामवेदकी संहिताको मंत्र ब्राह्मण आदि करके औ स्वर वर्ण आदिके भेदसे अनेकप्रकार करतेहैं कोई २ ब्राह्मण कल्पसूत्र आदि रचतेहैं। कालके भेदसे इतिहास पुराण आदिकोंमें भी भेद होताहै। ब्रह्मपुराण, पद्म, शिव, विष्णु, भागवत, भविष्य, नारदीय, मार्कंडेय, आग्नेय, ब्रह्मवैवर्त्त, लिङ्ग, वाराह, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड, स्कंद, औ ब्रह्मांडपुराण ये अठारह पुराणहैं। इनमें ग्यारहवां लिंग पुराणहै औ मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगिरा, यम, आपस्तंब, संवर्त्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शंखलिखितदक्ष, गौतम, शातातप, औ वशिष्ठ आदि मुनिपुराण औ वेद का विभाग करने हारे हैं॥ अवृष्टि मरण औ रोग प्रजा में उत्पन्न होता है तब मन वच औ कर्म से उपजे दुःखों करके निर्वेद उत्पन्न होता है औ दुःख दूर होने के उपायका विचार होता है। विचार से वैराग्य होताहै औ वैराग्य से सब वस्तुओं के दोष दीखते हैं तब ज्ञान होता है औ ज्ञान से मुक्ति मिलती है यह रज औ तम करके युक्त द्वापर की वृत्ति कही है। कृतयुग में धर्म होता है त्रेता में धर्म की प्रवृत्ति द्वापर में धर्म आकुल औ कलि में धर्म नष्ट होजाता है॥

चालीसवां अध्याय॥

इन्द्र कहते हैं कि हे शिलादमुनि कलियुग में माया असूया अर्थात् दूसरे के गुणों में भी दोष लगा देना तपस्वियों को मार देना यह सब बातें तमोगुण करके व्याकुल हुये मनुष्य करेंगे औ प्रमाद रोग क्षुधा का भय अनावृष्टि देशों का विपर्यय होगा वेदका प्रमाण न माना जायगा मनुष्य अधर्म का सेवन करेंगे अनाचार अतिक्रोधी औ अल्पचित्त होंगे। सदा असत्य भाषण करेंगे ब्राह्मणोंके दुष्टयज्ञ दुष्टपठन दुष्टआचार औ दुष्टशास्त्र से प्रजाको भय होगा वेद का अध्ययन औ यज्ञ कोई न करेगा शूद्रों को मन्त्रोपदेश औ उनके साथ शयन आसन भोजन आदिका सम्बन्ध ब्राह्मण करेंगे राजा भी प्रायः शूद्र होजायँगे औ ब्राह्मणों को दुःख देंगे प्रजा में गर्भहत्या औ वीरहत्या अर्थात् प्रधान पुरुषको मारदेना हुआ करेगा शूद्रोंका आचरण ब्राह्मण औ ब्राह्मणों का आचरण शूद्र किया करेंगे। चोर तो राजा औ राजा चोर के तुल्य होजायँगे। पतिव्रता कोई न रहेगी सब कुलटा होजायँगी। वर्ण आश्रम का सब व्यवहार जातारहेगा। पृथ्वी में भी कहीं बहुत फल औ कहीं फलोंका अभाव होगा। राजा प्रजाको लूटेंगे औ उनकी रक्षा न करेंगे। शूद्र ज्ञानी होंगे औ ब्राह्मण उनको प्रणाम करेंगे क्षत्रिय राजा न होंगे ब्राह्मण शूद्रों से अपनी जीविका करेंगे। शूद्र ब्राह्मण को देख आसन परसे न उठेंगे शूद्र ब्राह्मणको ताड़न

करेंगे औ ब्राह्मण हाथ जोड़ बड़ी नम्रतासे शूद्रके आगे प्रार्थना करेंगे। ब्राह्मणों के बीच ऊंचे आसन पर बैठे हुये शूद्रको देखकरभी राजा कुछ दण्ड न देंगे। सुन्दर सुगन्ध युक्त पुष्प माला आदि करके शूद्रों की पूजा करेंगे। वाहन के ऊपर चढ़ेहुये शूद्रों के पीछे ब्राह्मण सेवा के लिये दौड़ेंगे। औ शूद्रों की स्तुति करेंगे ब्राह्मण तप औ यज्ञ के फलको बेचेंगे। संन्यासी बहुत होंगे। स्त्री अधिक औ पुरुष थोड़े होंगे। ब्राह्मणही वेदविद्या औ श्रुतिस्मृति में कहेहुये कर्मों की निन्दा करेंगे। ऐसे घोर कलिमें भी धर्म की रक्षाके हेतु भिन्न भिन्न लिङ्ग रूपसे श्रीमहादेवजी प्रकट होयँगे जो ब्राह्मण जिस किसी रीति से भी उनका पूजन करेंगे वे कलियुग के दोषों को जीत परमपदको जायँगे गौओं का नाशहोगा औ व्याघ्रादि दुष्ट जीवबढ़ जायँगे साधु लोग कहीं न देखपड़ैंगे। थोड़ेही दानसे बहुत फल चाहेंगे राजा सब अपनी रक्षामें तत्पर रहेंगे प्रजा से केवल दंडलेंगे सब देश अन्नशूल अर्थात् अन्न बेचने वाले सब ब्राह्मण शिव शूल अर्थात् वेद विक्रेता औ सबस्त्रियां केशशूलिनी अर्थात् भग बेचनेवाली कलियुग में होंगी। मेघभी चित्रवर्षी अर्थात् कहीं वर्षेंगे औ कहीं न वर्षेंगे। सबवर्ण वणिक् वृत्ति करेंगे सब पाखंडी कुशील औ नीच होंगे। ब्राह्मण ग्राम याचक होजायँगे कोईभी मीठा बोलनेवाला सरल स्वभाव ईर्षा रहित औ प्रत्युपकारी न होगा निंदक औ पतित बहुत होंगे यही युगके अंतका लक्षण है। भूमि राजाओं करके शून्य हो

जायगी धनधान्य कहीं न रहेगा। देशशून्यहोंगे जल औ फलपृथ्वीमें बहुत न्यूनदेख पड़ेंगे। सब मनुष्य परस्त्री गमन परधन हरण औ दुष्टकर्मों में प्रवृत्तहोंगे। युग के अंत में सोलह वर्षका परम आयुषहोगा मनुष्य रोगी,कामी, निर्लज्ज औ बुद्धिहीन होंगे। शूद्र काषाय वस्त्र रुद्राक्ष मृगचर्म आदि धारे धर्मका आचरण करेंगे आपस में शस्य अर्थात् खेतीकी चोरी करेंगे चोर चोरों काही धन हरेंगे मूषक सर्प वृश्चिक आदि दुष्ट जीव प्रजाको पीड़ा देंगे। सुभिक्ष क्षेम आरोग्य सामर्थ्य ये सबबातें दुर्लभ होजायँगी क्षुधा से पीड़ित मनुष्य कौशिकी नदीके तट पर बसैंगे। वेद कहीं न देख पड़ेंगे यज्ञ सब नष्ट होजायँगे। सन्यासी मूर्खहोंगे कापालिक बहुत होजायंगे वेद बेचने वाले औ वर्ण आश्रमके शत्रु बहुत उत्पन्नहोंगे। शूद्रवेद पढ़ेंगे शूद्रराजा अश्वमेध करेंगे सब प्रजा स्त्री बालक औ गौका वध करेंगे औ आपस में अनेक उपद्रव करेंगे थोड़ा आयुष औ बहुत दुःख होगा ब्रह्महत्याकरेंगे थोड़ेही काल में सिद्धि होजायगी। ऐसे दुस्तर समय में जो ब्राह्मण धर्मका आचरण करेंगे वेही धन्यहोंगे त्रेता में जो सिद्धि एक वर्षमें होती है वही द्वापरमें एक महीने में औ कलियुग में एक दिन रात करके होगी यह कलियुग की व्यवस्था कही अब संध्यांश की कहते हैं युग युग में एक २ चरण धर्म न्यून होजाता है। संध्या में भी उस युगका धर्मही रहताहै कलियुग के दुष्टजीवों को शासन करनेके लिये स्वायंभुव मन्वंतर में सोमश-

र्म्मा ब्राह्मण के घर प्रमिति नामक पुत्र मनुपुत्रका अंश उत्पन्नहोगा। वह बड़ीभारी सेना हाथी घोड़े रथ आदि करके युक्त साथ लेकर औ शस्त्रधारण किये ब्राह्मणों को साथ लेकर बीसवर्षपर्यंत पृथ्वीपर म्लेच्छोंका संहार कर्त्ताहुआ विचरेगा। वही सब शूद्रराजा पाखंडी अधर्मी औ दुष्टोंका संहार करेगा। वह तो मनुपुत्र के अंश से औ मनुपुत्र विष्णु के अंशसे उत्पन्न होगा इससे यह विष्णुकाही अवतार होगा इसभांति बीसवर्ष पर्यंत सब पृथ्वीका उपद्रव शांत करके बीजमात्र मनुष्य अवशेष रखकर गंगा यमुनाके बीच अपनी स्थिति करेगा। उसके कलियुगके संध्यांशमें कहीं २ थोड़ी २ प्रजा शेष रहेगी वे भी अतिलोभसे परस्पर हिंसाकरेंगे। राजाकोई न रहेगा सब प्रजा आपसके भयसे पुत्र स्त्री धन आदि को छोड़ २ अपने प्राणोंकी रक्षा करेंगे श्रौतस्मार्त धर्म नष्ट होजाने पर सब मर्य्यादा त्यागदेंगे छोटे २ शरीर औ जिन की परम आयुष् पचीस वर्ष का होगा वृष्टि न होनेसे खेती न होगी इसलिये सब अपने२ देशोंको त्याग नदी, समुद्र, कूप, पर्वत आदि में आश्रम लेंगे मधु, मांस, कंद-मूल, फल, आदिसे किसी प्रकार अपना निर्वाहकरेंगे। औ वस्त्र न मिलने से वृक्षों की छाल औ पत्र ओढ़ेंगे। सब वर्ण आश्रम से भ्रष्ट अति कष्ट भोगते हुये थोड़े से शेष रह जायँगे वे भी रोग करके पीड़ित होंगे। इस भांति अति दुःख होने से निर्वेद उत्पन्न होगा निर्वेद से विचार करेंगे विचार करने से बोध औ बोध से धर्म में प्रवृत्ति होगी। इसरीति से एक दिन रात्रि मेंही

जायगी धनधान्य कहीं न रहेगा। देशशून्यहोंगे जल औ फलपृथ्वीमें बहुत न्यूनदेख पड़ेंगे। सब मनुष्य परस्त्री गमन परधन हरण औ दुष्टकर्मों में प्रवृत्तहोंगे। युग के अंत में सोलह वर्षका परम आयुषहोगा मनुष्य रोगी, कामी, निर्लज्ज औ बुद्धिहीन होंगे। शूद्र काषाय वस्त्र रुद्राक्ष मृगचर्म आदि धारे धर्मका आचरण करेंगे आपस में शस्य अर्थात् खेतीकी चोरी करेंगे चोर चोरों काही धन हरेंगे मूषक सर्प वृश्चिक आदि दुष्ट जीव प्रजाको पीड़ा देंगे। सुभिक्ष क्षेम आरोग्य सामर्थ्य ये सबबातें दुर्लभ होजायँगी क्षुधा से पीड़ित मनुष्य कौशिकी नदीके तट पर बसैंगे। वेद कहीं न देख पड़ेंगे यज्ञ सब नष्ट होजायँगे। संन्यासी मूर्खहोंगे कापालिक बहुत होजायँगे वेद बेचने वाले औ वर्ण आश्रमके शत्रु बहुत उत्पन्नहोंगे। शूद्रवेद पढ़ेंगे शूद्रराजा अश्वमेध करेंगे सब प्रजा स्त्री बालक औ गौका वध करेंगे औ आपस में अनेक उपद्रव करेंगे थोड़ा आयुष औ बहुत दुःख होगा ब्रह्महत्याकरेंगे थोड़ेही काल में सिद्धि होजायगी। ऐसे दुस्तर समय में जो ब्राह्मण धर्मका आचरण करेंगे वही धन्यहोंगे त्रेता में जो सिद्धि एक वर्षमें होती है वही द्वापरमें एक महीने में औ कलियुग में एक दिन रात करके होगी यह कलियुग की व्यवस्था कही अब संध्यांश की कहते हैं युग युग में एक २ चरण धर्म न्यून होजाता है। संध्या में भी उस युगका धर्मही रहताहै कलियुग के दुष्टजीवों को शासन करनेके लिये स्वायंभुव मन्वंतर में सोमश-

मनु आदि सब पहिले मन्वन्तर की भांति ही दूसरे में उत्पन्न होते हैं । यह युगों का स्वभाव युग २ के वर्ण आश्रमों का धर्म युगों का प्रमाण औ सिद्धि हमने प्रसङ्गसे कही अब हम ब्रह्माजी का देवीजी के पुत्ररूपसे उत्पन्न होना संक्षेप से कहते हैं ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

इन्द्र कहते हैं कि हे शिलादमुनि ब्रह्माजी अपनी रात्रि के अन्तमें फिर जगत् को सिरजतेहैं । जब उनका दोपरार्द्ध आयुष पूरा होजाता है तब भूमि जलमें लीन होजाती है जल अग्निमें अग्नि वायुमें वायु आकाश में आकाश इन्द्रियों में इन्द्रियां तन्मात्राओं में तन्मात्रा अहङ्कार में अहङ्कार महत्तत्त्व में महत्तत्त्व अव्यक्त में औ अपने सत्त्व आदि गुणों करके युक्त अव्यक्त शिव में लीन होताहै । फिर सृष्टिके आदि में शिव रूप पुरुष से ब्रह्माजी उत्पन्न होकर मानस पुत्र उत्पन्न किये परन्तु उनपुत्रों से प्रजाकी वृद्धि न भई तब तो अपने पुत्रों को साथले ब्रह्माजी तप करने लगे । तप करते २ शिवजी प्रसन्न भये औ ब्रह्माजीका ललाट भेद कर स्त्री पुरुष रूपसे उत्पन्न भये । औ ब्रह्माजी से कहा कि हम तुम्हारे पुत्र हैं । औ अर्द्धनारीश्वर रूप धरके जगत् के गुरु ब्रह्माजी को दग्ध करते भये । फिर प्रजाकी वृद्धि के लिये अपनी अर्द्धमात्रा उस परमेश्वरी से योगमार्ग करके शिवजी भोग करते भये तब विष्णुजी ब्रह्माजी औ पाशुपत अस्त्र उत्पन्न भये । इसभांति ब्रह्माजी देवी

के गर्भ से उत्पन्न भये औ अण्ड से तथा कमल से ब्रह्माजी की उत्पत्ति भई। यह पुरातन इतिहास हमने तुमको श्रवण कराया। एक परार्द्ध पर्यन्त ब्रह्माजी का ऐश्वर्य है औ तमोगुण से उत्पन्न ब्रह्माजी का वैराग्य आगे संक्षेप से वर्णनकरेंगे। विष्णुभगवान् भी अपने को स्त्री पुरुष रूप करके ब्रह्माजी औ सब सृष्टि को रचते हैं ब्रह्माजी रुद्र को उत्पन्न करते हैं किसी कल्प में रुद्रही ब्रह्मा विष्णु को सिरजते हैं। किसी कल्प में ब्रह्मा नारायण को औ नारायण रुद्र को उत्पन्न करते हैं। प्रलय के समय ब्रह्माजी विचार करते भये कि संसार परम दुःख है तब सृष्टि करने को त्याग प्राणवायुको रोक पाषाण की भांति निश्चल होय अपने आत्मा में आत्मा काही ध्यान करते हुये दशहजार वर्षतक समाधि करते भये। हृदय में जो अधोमुख कमल है वह पूरक करके विकासित भया औ कुम्भक करके उसका मुख ऊपर को भया। उस कमल की कर्णिका में ॐकार के अर्द्ध मात्रा स्वरूप उसपरमेश्वरको स्थापन किया जो मृणाल तन्तु के शतांश से भी सूक्ष्म है। इस भांति हृदय में परमेश्वर को स्थापनकर यम नियम आसन प्राणायाम आदि पुष्पों करके ब्रह्माजी पूजन करते भये। उसी परमेश्वर की आज्ञासे रुद्र ब्रह्माजी का ललाट भेदकर प्रकट भये। वे नीलवर्ण थे औ अग्निके संयोग से लोहितवर्ण भये इसीसे उनका नाम नीललोहित भया। ब्रह्माजी भी रुद्र को देख प्रसन्न हो स्तुति करने लगे।

पितामहउवाच ॥ नमस्तेभगवन्रुद्र भास्करामिततेज

से। नमोभवायदेवाय रसायाम्बुमयायते १ शर्वायक्षिति रूपाय सदासुरभिणेनमः। ईशायवायवेतुभ्यं संस्पर्शाय नमोनमः २ पशूनाम्पतयेचैव पावकायातितेजसे। भीमायव्योमरूपाय शब्दमात्रायतेनमः ३ महादेवायसोमायअमृताय नमोऽस्तुते। उग्राययजमानाय नमस्ते कर्मयोगिने ४ ॥

यह ब्रह्माजी की करीहुई स्तुति जो पुरुष भक्ति से पाठ करे श्रवण करे अथवा ब्राह्मणों को सुनावे वह शिवलोक को पावे। इसी भांति ब्रह्माजीने स्तुति करके महादेवजी को देखा तो उन्होंने आठ रूप धरलिये अर्थात् सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, भूमि, जल, आकाश औ पुरुष रूप से, आठभांति के होगये उसी दिन से श्रीमहादेवजी को अष्टमूर्त्ति कहते हैं उस अष्टमूर्त्ति की कृपा से ब्रह्माजीने सब जगत् उत्पन्न किया। फिर दूसरे कल्प में हजार युग पर्यन्त सब चराचर जगत् सोगया तब ब्रह्माजी प्रजा उत्पन्न करने के लिये उग्र तप करने लगे बहुत काल तप करने से भी कुछ फल न भया तब तो अति दुःख से ब्रह्माजीको क्रोध उत्पन्न भया औ आंखों से आंशू गिरे उनसे भूत प्रेत आदि उत्पन्न भये तबतो ब्रह्माजी को और भी अधिक दुःख भया और अपनी निन्दाकर शरीर त्यागदिया। तब ब्रह्माजी के प्राण रूप रुद्र उनके मुख से निकले औ अर्द्ध नारीश्वर होकर अपने ग्यारह रूप धारे औ अपने आधे अंश करके पार्वतीजी को रचा पार्वतीजी ने लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती, वामा, रौद्री, महामाया, वैष्णवी

कला, विकिरणी, काली, कमलवासिनी, बलविकिरणी बलप्रमथिनी, सर्वभूतदामिनी और मनोन्मनीको उत्पन्न किया। इसी रीतिसे और भी हजारों स्त्री पार्वतीजी ने रचीं। शिवजीने ब्रह्माजी को प्राण हीन देख दयाकरके फिर उनको प्राणदिये और कहा कि मत डरो हमने तुम को प्राण दिये हैं अब उठो। यह शिवजी का वचन सुन ब्रह्माजी ने नेत्र खोले औ प्रसन्न होकर कहा कि आप कौन हैं जो आठ रूप से औ ग्यारह रूप से विराजमान होरहे हैं तब शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी हम परमेश्वर हैं औ यह हमारी माया है औ ये रुद्र तुम्हारी रक्षा के लिये यहां आये हैं। यह सुन ब्रह्माजी अतिमुदित हो हाथ जोड़ गद्गदवाणी से कहने लगे कि हे परमात्मन् हे प्रभो मैं अत्यन्त दुःखी हूं आप कृपाकर इस संसार से मुझे मुक्त करें। यह ब्रह्माजी का वचन सुन हँसकर पार्वती औ रुद्रों सहित श्रीशिवजी वहांहीं अन्तर्द्धान होगये इन्द्र कहते हैं कि हे शिलादमुनि इस कारण से अयोनिज औ मृत्यु रहित पुत्र दुर्लभहै देखो ब्रह्माजी का भी मृत्यु भया। यदि सब देवताओंके स्वामी श्रीशिवजी प्रसन्न होयँ तो ऐसापुत्र मिलना कुछ कठिन नहीं परन्तु ब्रह्मा, विष्णु अथवा हम ऐसा पुत्र देने को समर्थ नहीं। इतना कहकर इन्द्र अपने ऐरावत हस्ती पर चढ़ सबदेवताओं को साथ ले स्वर्ग को जाते भये॥

बयालीसवां अध्याय॥

नन्दी कहते हैं कि इतना कह इन्द्र तो चलेगये औ

शिलादमुनि शिवजीकी प्रसन्नता के लिये उग्रतप करने लगा औ तप करते २ एक हजार दिव्य वर्ष बीतगये शरीरपर वल्मीक अर्थात् सांप की वांबी लगगई औ मांस रुधिर चर्म्म आदि को कीट खा गये अस्थिमात्र बाक़ी रहगये तब महादेवजी उसके तप से प्रसन्न हो वहां आये औ अपने हस्तकमल से शिलादमुनि को स्पर्श किया उनके हाथका स्पर्श होतेही मुनि का देह पहिलेसे भी उत्तम होगया औ शिवजी ने कहा कि हे शिलाद तेरे तप से हम बहुत प्रसन्न हैं वर मांग तब शिलाद ने कहा किहे महाराज अयोनिज औ मृत्यु हीन पुत्र मुझे मिले । यह सुन शिवजी ने कहा कि हे शिलाद हमको अवतार लेनेके अर्थ ब्रह्माजी ने तपसे बहुत आराधन किया है । औ देवताओंने भी प्रार्थना करी है । इसलिये नन्दीनामक अयोनिज पुत्र के रूपसे तुम्हारे घर में हम उत्पन्न होंगे । सब जगत् के पिता हम औ हमारे पिता तुम होंगे। इतना कह शिवजी वहांहीं अन्तर्द्धान भये । शिलादमुनि भी यज्ञ करने के लिये यज्ञस्थान में आये वहांहीं हम शिवजी की आज्ञा से प्रकट भये कि प्रलयकाल की अग्नि के तुल्य जिनका तेज जटामुकुट धारे तीन नेत्र चार भुजा त्रिशूल परशु गदा औ वज्र हाथों में धारण करे वज्र के तुल्य जिनका देह औ दन्तवज्र के कुण्डल पहिने औ मेघ के तुल्य शब्द ऐसा हमारा रूप देख इन्द्र ब्रह्मा आदि सब देवता स्तुति करनेलगे पुष्करावर्त्तक आदि मेघोंने वर्षा करी किन्नर, विद्याधर औ अप्सरा गाने नाचने लगीं

इन्द्र ने फूल वर्षाये ऋषिलोग ऋक्, यजु औ सामवेद के मन्त्रों से स्तुति करनेलगे। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र शिव, पार्व्वती, सूर्य्य, चन्द्र, बृहस्पति, पवन, अग्नि निर्ऋति, ईशान, कुबेर, यम, वरुण, विश्वेदेव, वसु, लक्ष्मी, शची, ज्येष्ठादेवी, सरस्वती, अदिति, दिति श्रद्धा, लज्जा, धृति, नन्दा, भद्रा, सुरभि, सुशीला, सुमन्त्र धर्म्म, धर्म्मपुत्र आदि सब देव औ देवी वहां आईं औ हमको आलिङ्गन कर स्तुति करते भये शिलादमुनि भी आलिङ्गन कर हमारी स्तुति करने लगा॥

शिलादउवाच॥ भगवन्देवदेवेशत्रियम्बकममाव्य। पुत्रोऽसिजगतांयस्मात्त्राताडुःखाद्धिकिंपुनः १ रक्षकोजगतांयस्मात्पितामेपुत्रसर्व्वगः। अयोनिजनमस्तुभ्यंजगद्योनिपितामह २ पितापुत्रमहेशानजगतांच जगद्गुरो। वत्सवत्समहाभागपाहिमांपरमेश्वर ३ त्वयाहंनन्दितोयस्मान्नन्दीनाम्नासुरेश्वरः। तस्मान्नन्दयमानन्दिन्नमामिजगदीश्वरम् ४ प्रसीदपितरौमेऽद्यरुद्रलोकङ्गतौविभो। पितामहाश्चभोनन्दिन्नवतीर्णेमहेश्वरे ५ ममैवसकलंलोकेजन्मवैजगतांप्रभो। अवतीर्णसुतेनन्दिन्रक्षार्थमुह्यमीश्वर ६ तुभ्यंनमःसुरेशानन्दीश्वरनमोऽस्तुते। पुत्रंपाहिमहाबाहोदेवदेवजगद्गुरो ७ पुत्रेणतवनन्दीशंमत्वायत्कीर्त्तितंमया। त्वयातत्क्षम्यतांभक्तवत्सलेनसुरार्च्चित ८॥

शिलादमुनि इस भांति स्तुतिकर कहते भये कि इस स्तुतिको जो पढ़े सुने अथवा सुनावे वह शिवलोक में निवास पावे। इतना कह अपने बालक पुत्रको प्रेम

से वार २ प्रणाम कर सब मुनियों के प्रति कहा कि हे मुनीश्वरो मेरा भाग्य देखो कैसा उत्तम है कि साक्षात् महादेव मेरे पुत्र भये मेरे तुल्य जगत् में देवता, दैत्य मनुष्य आदि कोई भी नहीं कि नन्दी मेरे पुत्र भये॥

तैंतालीसवां अध्याय॥

॥ नन्दी कहते कि हे सनत्कुमारजी जिस भांति निर्द्धन को धन मिले इसी भांति शिलाद मुनि मुझ को पाय प्रसन्न होताहुआ अपनी कुटीमें गया। जब मैंने शिलाद मुनिकी कुटीमें प्रवेश किया तब मेरा वह दिव्यरूप औ दिव्य स्मृति सब जाती रही औ मनुष्य होगया। मुझे मनुष्यभाव में प्राप्त हुये देख पिताको बहुत दुःख भया परन्तु अपने भाई बन्धुओं समेत मेरे जातकर्म नामकरण आदि सब संस्कार करे औ शालंकायन के पुत्र शिलाद मुनि मेरे पिताने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद की हजार शाखा आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र अश्वलक्षण, हस्तिलक्षण, मनुष्यलक्षण, वेद के अङ्ग औ सब शास्त्र सातवर्ष की अवस्था में मुझे पढ़ा दिये इसी अवसर में एक दिन मित्र औ वरुण दोनों मुनि श्रीमहादेव की आज्ञा से मुझे देखने के लिये मेरे पिता के आश्रम में आये। औ मेरेको वार २ देख मेरे पिता से कहा कि हे शिलाद यह बालक थोड़ीसीही अवस्था में सब शास्त्रोंका पारगामी होगया ऐसा आश्चर्य देखनेमें नहीं आयो परन्तु यह अल्पायुष है अब एक वर्ष इसका आयुष और बाकी है। यह वज्रपात के समान

वचन सुन मूर्च्छितहो शिलादमुनि भूमि पर गिरा औ औ मूर्च्छा जगने पर हाहा पुत्र करके ऊंचे स्वरसे विलाप करने लगा उसका रोदन सुन और भी आस पास के सब मुनि वहां आय जुड़े औ सब समाचार सुन बालक की रक्षा के लिये त्र्यम्बकपरमेश्वर की स्तुति करने लगे कोई त्र्यम्बक मन्त्र करके मधु और दूर्वा का अयुत अर्थात् दशहजार हवन करने लगे। औ पिता तो बेचेत पड़े २ विलाप ही कर रहेथे। इस अवसरमें मैं भी मृत्युके भय से मरे की भांति गिरे हुये पिताकी प्रदक्षिणा कर रुद्र के जप में प्रवृत्त भया। औ अपने हृदयकमल में देवदेव त्र्यम्बक त्रिनेत्र दशभुज पंच मुख शांतस्वरूप श्रीसदाशिव का ध्यान करने लगा इस भांति नदी के तटपर तप करते हुये मेरे ऊपर प्रसन्न हो श्रीमहादेवजी दर्शन देते भये औ कहने लगे कि हे पुत्र हम तेरे ऊपर प्रसन्न हैं तुझे मृत्यु का क्या भय है तू तो हमारे तुल्यहै। वे दोनों मुनि हमनेही भेजे थे। यह तेरा मनुष्य देह है। दिव्य देह जो तेरे पिताने औ देवता मुनि आदिकों ने तेरे जन्म के समय देखा था वह अब नहीं है संसार में सुख दुःख वारम्वारहुआ करते हैं। जो जन्म मरण से छूट जाते हैं वेही सुखी होते हैं इतना कह शिवजीने मुझे दोनों हाथों से स्पर्श किया औ सब गणों से तथा पार्वतीजी से कहा कि यह नन्दी अजर अमर हमारा अति प्रिय गण हमारे तुल्य पराक्रमी होगा औ सदा अपने पिता औ बन्धुओं के सहित हमारे पास निवास करेगा इतना कह अ-

पने कण्ठसे कमलोंकी माला उतार मेरे कण्ठमें पहिनाय दी। वह माला पहिनतेही मैं दिव्य देह त्रिनेत्र दशभुज मानों दूसरा शिवजीका रूपही होगया। इसभांति मुझे मालापहिनाय केकहा कि और जो कुछ वर चाहे मांग अभी हम देते हैं। इतना कह श्रीमहादेवजी ने जटा से जल लेकर कहा कि नदी होजा औ भूमि पर वह जल गेरा: उसी क्षण सुन्दर जल से पूर्ण कमलों से भरीहुई नदी बहने लगी। उस नदी से महादेवजीने कहा कि जटा के जल से तेरी उत्पत्ति भई इसलिये तेरा नाम जटोदका होगा औ जो पुरुष तेरे जल में स्नान करेंगे उनके सब पाप दूर होंगे। इतना कहकर महादेवजी ने मुझको पार्वतीजी के चरणों पर गेरकर कहा कि यह तुम्हारा पुत्र है तब पार्वतीजी ने भी मुझे आलिङ्गन किया औ मेरा मस्तक सूंघा औ पुत्रके प्रेम करके पार्वतीजी के स्तनों से दूध की धार चलपड़ी उन तीन धारों से तीन धारा की नदी प्रवृत्त भई उसकानाम त्रिस्रोता भया। त्रिस्रोता को देख अति प्रसन्नहो महादेवजीका वृष गर्जा उससे एक और नदी प्रकटभई उसका नाम श्रीमहादेवजी ने वृषध्वनि रक्खा। फिर महादेवजी ने विश्वकर्म्मा का बनायाहुआ रत्नजटित सुवर्ण का मुकुट मेरेमस्तक परधरा औ अपने हाथसे हीरा पन्ना आदि उत्तम रत्नों के कुण्डल मुझे पहिनाये। इस अवसरमें मेरा इतना सत्कार देख सूर्य भगवान्ने मेरे ऊपर तथा मेरे पिता के ऊपर दृष्टि करी उससे दो नदी उत्पन्न भई एक का नाम सुवर्ण से निकलने करके स्वर्णोदका

भया दूसरी का नाम जम्बूनदी अर्थात् सोने के मुकुट से प्रवृत्त होने करके जाम्बूनद भया इसभांति ये पांच नदी प्रकट भईं। इस पञ्चनद तीर्थमें जो मनुष्य स्नान कर जपेश्वर महादेव का पूजन करै वह अवश्य शिव सायुज्य पावे। फिर शिवजी ने कहा कि हे पार्वती नन्दी को हम अभिषेक करके सब गणों का स्वामी बनाया चाहतेहैं इसमें आपकी क्या संमतिहै। तब पार्वतीजीने कहाकि महाराज यह मेरा पुत्रहै केवल गणोंका स्वामी बनादेना क्या बड़ी बात है आप इसको सब लोकोंका स्वामी कीजिये। यह सुन महादेवजी अति प्रसन्न भये औ सब गण तथा देवता ऋषि आदिकों को नन्दीका अभिषेक करने के लिये स्मरण किया॥

चवालीसवां अध्याय॥

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी महादेवजी के स्मरण करतेही सब आय पहुँचे। भांति भांति के गण प्रसन्न होते हुये करोड़ों इकट्ठे भये उनमें कोई गाते नाचते दौड़ते मुखसे भांति २ के बाजे बजाते कोई रथ परचढ़े कोई हाथी घोड़े सिंह बानर औ उत्तम विमानों पर बैठे भेरी मृदङ्ग पणव आनक गोमुख पटह पुष्कर मुरज डिण्डिम मर्दल वेणु वीणा दर्दुर कच्छप आदि बाजोंको बजाते औ हाथोंसे तालदेते औ नाचते कूदते महादेवजी औ पार्वतीजी के ओर पास इकट्ठे भये और प्रणाम कर यह प्रार्थना करनेलगे कि महाराज हमको किस कार्य के लिये स्मरण किया समुद्रों

को सुखाय दें कि मृत्यु के सहित यम को अथवा ब्रह्मा को पीसडालें कि दैत्य दानवोंको बांधकर लेआवें। आज किसके ऊपर बड़ी भारी विपत्ति आई है। अथवा कुछ उत्सवहै यह आप आज्ञा करें यह उन अनगिनतगणों का वचन सुन श्री महादेवजी ने कहा कि जिसलिये तुमको बुलाया है वह सुनो औ करो कि यह नन्दीश्वर मेरा पुत्र है इसको हमारी आज्ञा से तुम अभिषेक कर अपना अधिपति बनाओ। इतनी शिवजी की आज्ञा पातेही सबके सब उठ धाये औ क्षण भरे में सब अभिषेक की सामग्री ले आये। मेरु पर्वतकी भांति अति ऊंचा सुवर्ण का सिंहासन अनेक जड़ाऊ सोनेके खम्भों का वितान अर्थात् सायवान जिस में मोतियों के गुच्छे लटकते हैं मण्डप जिसमें पन्ने के खम्भे औ किङ्किणी अनेक रत्नों की शोभित हैं औ चारों ओर ारही जिसमें द्वार हैं ले आये। पहिले वितान खड़ाकर उसमें अति मनोहर मण्डप औ मण्डपमें वह सिंहासन स्थापन किया औ सिंहासनके समीप पांवरखने के लिये इन्द्र नीलमणि का पादपीठ धरा औ दो कलश सुन्दर जल से भरे औ जिनके मुख कमल के पुष्पों से शोभित पादप्रतिष्ठा के लिये उस पादपीठके समीप रक्खे। औ हजारों सोना चांदी तांबा मृत्तिका आदि के कलश अनेक तीर्थ जल से पूर्ण वहां लाकर धरे उत्तम २ दिव्यवस्त्र भांति २ के सुगन्ध द्रव्य कपूर कुण्डल मुकुट हार शत शलाका अर्थात् सौताड़ीका छत्र चामर सूर्यमुखी पङ्खे सुवर्ण दण्ड यह सब सामग्री

ब्रह्माजीने दी अति उत्तम सुवर्णसे मढ़ाहुआ शङ्ख पड़े सोने की डण्डीके अति श्वेत चमर जिनकी शुभ्रताके आगे चन्द्रकिरणभी मैली देखि पड़ें। ऐरावत औ सुप्रतीक ये दोनों बड़े भारी हाथी सजाये हुये विश्वकर्म्मा का बनाया मुकुट जिस में उत्तम २ मणिजड़ी हुई। कुण्डल, कङ्कण सुवर्ण का यज्ञोपवीत औ केयूर आदि सब भूषण और भी भांति २ की सामग्री सब गणएक क्षण में लेआये औ इन्द्र विष्णु ब्रह्मा आदि सब देवता दैत्य मरीचि आदि बड़े २ मुनि औ सब लोक वहां आये। इस भांति सब को आये जान श्रीमहादेवजी ने ब्रह्माजी को अभिषेक का सब विधान करने के लिये आज्ञा दी। ब्रह्माजी ने भी साङ्गोपाङ्ग सब विधान कर अपने हाथ अभिषेक किया उनके अनन्तर विष्णुजी इन्द्रादि सब लोकपाल औ ऋषि मेरा अभिषेक करते भये। पीछे ब्रह्माजी तथा सब ऋषि हाथ जोड़ स्तुति करने लगे। विष्णु भगवान् भी मस्तक पर दोनों हाथोंसे अञ्जलि बांध जय २ शब्द करते हुये स्तुति करने लगे। औ सम्पूर्ण गण हाथजोड़ सन्मुख खड़े होय २ अति नम्रता से प्रणाम कर स्तुति करते भये। औ मरुतों की कन्या सुयशानामको सब भूषणों से भूषित कर उत्तम वस्त्र पहिनाय लक्ष्मीजी ने मुकुट आदि को करके अपने हाथ से शोभितकर हमारे वाम भाग में सुवर्ण के सिंहासन पर बैठाया औ हज़ारों उत्तम २ दासी छत्र चामर आदि लेकर उसकी सेवा में खड़ी भई इस भांति सुयशा को मण्डितकर शिवजी

की आज्ञानुसार हमको विवाह दियो विवाह के समय श्रीपार्वतीजी ने अपने कण्ठ से उतार मोतियोंका हार सुयशाको पहिनाया औ वृष श्वेत हस्ती सिंह सिंहकी ध्वजा छत्र औ सुवर्णका रथ श्रीमहादेवजीने मुझे दिया। हे सनत्कुमारजी श्रीसदाशिवके अनुग्रह से आजतक भी मेरे तुल्य ऐश्वर्यवान् कोई नहीं है। इस भांति मेरा अभिषेक औ विवाह कर वृष के ऊपर चढ़ पार्वतीजी को तथा सम्बन्धी बांधवों सहित मुझ को साथ ले श्रीमहादेवजी कैलास को जाते भये। गमन के समय सब देवता औ मुनियों ने आज्ञा मांगी तब शिवजीकी आज्ञानुसार मैंने सबको आज्ञा दी वे भी मेरे मुख से आज्ञा पाय सब अपने २ स्थान को जातेभये औ मेरा ऐश्वर्य देख श्रीमहादेवजी का सब आराधन करनेलगे। हे सनत्कुमारजी जो पुरुष अपना कल्याण चाहे वह शिवजीका आराधन करे नमस्कार बिना जो शिवनाम उच्चारण करते हैं उनको दशब्रह्महत्या का पाप लगता है इसलिये नमस्कार करके शिवनाम का उच्चारणकरे जिससे कल्याणरूप को प्राप्त होय॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

ऋषि कहते हैं कि हे सूतजी आपने शिवजीका प्रकट रूप तो वर्णन किया अब शिवजीका सर्वव्यापक स्वरूप वर्णन करिये। सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो भूः,भुवः, स्वः, महः,जनः, तपः, सत्य ये लोक औ पाताल,करोड़ों नरक, ताराग्रह, चन्द्र, सूर्य,औ देवता ये सब शिव

जी के प्रसाद से स्थित है। उसीने सब को रचाहै औ वही शिव समष्टि रूप से सब में व्याप्त है। उस सर्वव्यापक औ सबके प्रभु शिवको उसीकी मायासे मोहित अज्ञानी पुरुष नहीं जानते यह जगत् शिवका शरीरहै इसलिये शिवको प्रणाम कर अब हम जगत्का निर्णय कहते हैं। अण्ड की उत्पति तो हम पहिले कहही चुके हैं अब ब्रह्माण्ड के भीतर भुवनोंका विभाग वर्णन करतेहैं पृथ्वी अन्तरिक्ष, स्वः, महः, जनः, तपः, औ सत्य ये सात लोक हैं औ नीचे सात पाताल औ उनकेनीचे नरक हैं पहिले महातलहै जिसमें रत्नोंसे जटित सुवर्ण की भूमि है औ अनेक प्रासाद तथा शिवमंदिरों करके शोभाय मान है औ अनन्त मुचुकुन्द तथा राजाबलि करके जो पाताल औ स्वर्ग में रहता है युक्त है। उसके नीचे रसातल पाषाण का है। उसके नीचे सिकता का तलातल पीतवर्ण सुतल विद्रुमवर्ण अर्थात् रक्तवर्ण। नितल श्वेत वर्ण वितल औ कृष्ण वर्ण तल। उनके नीचे पृथ्वी का जितना विस्तार है उतनीही सबतलों की संख्या है। हज़ार योजन दशहज़ार योजन लक्ष औ सात हज़ार योजन महातल आदि चारिपातालों के आकाश का प्रमाण है बाक़ी तीन पातालों का आकाश तीसहज़ार योजन है रसातल में सुवर्णनाग औ वासुकि नाग रहते हैं। विरोचन हिरण्याक्षऔ नरकों करके युक्त तलातल है। सुतल में वैनायक आदि औ कालनेमि आदि दैत्य निवास करते हैं। तारक अग्नि आदि दानव वितलमें बसते हैं। महान्तक आदि नाग प्रह्लाद आदि दैत्य औ

कंवलअश्वतर आदि नागों करके नितल सेवित है। महाकुम्भ हयग्रीव शंकुकर्ण औ नमुचि आदि बड़े २ वीर दैत्य दानव तल में सुख से निवास कर रहे हैं। इन सब तलों में स्कन्द नन्दी पार्वती औ सब गणों करके युक्त श्रीमहादेवजी विहार करते हैं। हे मुनीश्वरो पातालों का वर्णन हमने किया अब भूमि का वर्णन करते हैं॥

छियालिसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो नदी पर्वत वन औ सात समुद्रों से यह पृथ्वी चारों ओर से व्याप्त होरही है औ इसमें जम्बू प्लक्ष शाल्मलि कुश क्रौंच शाक औ पुष्कर ये सात द्वीप हैं इन सातों द्वीपों में अनेक रूप धारे पार्वतीजी सहित श्रीसदाशिव विचरतेहैं। क्षारोद इक्षुरसोद सुरोद घृतोद दध्यर्णव क्षीरोद औ स्वादुजल ये सात समुद्र हैं इन सातों समुद्रों में जलरूप श्रीमहादेवजी तरङ्गरूप अपनी भुजाओं से क्रीड़ा करतेहैं। क्षीरार्णव में समाधि करके शिवजी का ध्यान करते हुये विष्णु भगवान् शयन करते हैं। जब वह भगवान् सोतेहैं तबसब जगत सोताहै औ जागते हैं तब चराचर जगत् जाग उठता है क्योंकि जगत् तन्मय है अर्थात् उनका रूप है। औ शिवजी के अनुग्रह से विष्णु भगवान् नेही इस जगत्को रचा पालन किया औ संहार किया है औ करते हैं। वहां सुषेण नामक मुनि उनका यजन करते हैं। शङ्ख चक्र गदा पद्म धारी उस अनि-

रुद्र नारायण को जो पुरुष अर्चन करते हैं वे सब सम्पत्तियों करके युक्त होतेहैं। सनन्दन सनक सनातन वालखिल्य सिद्ध मित्र वरुण आदि सब ऋषि वहां परमेश्वर का यजन करते हैं। सात द्वीपों में ऊंचे ऊंचे शृङ्गोंकरके शोभित औ समुद्र पर्यन्त दीर्घ बड़े बड़े पर्वत हैं। अब शिवजी के अनुग्रह से उन द्वीपों के स्वामी जो व्यतीत मन्वन्तरों में भये औ आगेहोंगे तथा स्वायम्भुव मन्वन्तरमें जोहैं उन सबका हम वर्णन करते हैं। स्वायम्भुवमनु के पौत्र औ प्रियव्रत के पुत्र अति पराक्रमी आग्नीध्र, आग्निवाहु, मेधा, मेधातिथि, वपुष्मान्, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान्, हव्य, सवन; औ ये दश होते भये इन में से आग्नीध्र को राजा प्रियव्रत ने जम्बूद्वीप का स्वामी किया। मेधातिथि को प्लक्ष द्वीप का शाल्मलिद्वीप का स्वामी वपुष्मान् भया ज्योतिष्मान् को कुशद्वीप का राजा किया द्युतिमान् को क्रौंच द्वीप दिया शाकद्वीप का प्रभु हव्य भया पुष्कर द्वीपका अधिपति सवन किया पुष्कर द्वीप के प्रभु सवन के महावीत औ धातकी ये दो पुत्र भये उन में महावीत को पुष्कर द्वीप का एक खण्ड दिया जिसका नाम महावीत वर्ष भया औ दूसरा खण्ड धातकी को दिया जो उसी के नाम से धातकी खण्ड कहाया। शाकद्वीपके स्वामी हव्य के जलद कुमार, सुकुमार, मणीचक, कुसुमोत्तर, मोदाकी औ महाद्रुम ये सात पुत्र भये। औ इन सातों के नाम से जलदवर्ष, कौमार, सुकुमार, माणीचक, कौसुमोत्तर, मौदक औ महाद्रुम ये सात वर्ष शाकद्वीप के भये। क्रौंच

द्वीप के प्रभु द्युतिमान् के कुशल, मनुग, उष्म, पीवर, अन्धकारक, मुनि औ दुदुभि ये सातपुत्र भये औ इन सातों के नाम से क्रौंचद्वीप के सातखण्ड भये कुशद्वीप के राजा ज्योतिष्मान् के उद्भिद, वेणुमान,द्वैरथ, लवण, धृत, प्रभाकर औ कपिल ये सात पुत्र भये औ इनसातों के नाम सें कुशद्वीपके सातखण्ड कहलाये । शाल्मलि द्वीप के अधिपति वपुष्मान् के श्वेत हरित, जीमूत, रोहित, वैद्युत, मानस, औ सुप्रभ ये सात पुत्र भये औ शाल्मलि द्वीपके सातभाग इनके नाम से प्रसिद्ध भये। प्लक्षद्वीपके स्वामी मेधातिथि के शान्तभय, शिशिर, सुखोदय, आनन्द, शिव, क्षेमक, औ ध्रुव ये सात पुत्र भये औ इन सातों के नाम से प्लक्ष द्वीपके सात खण्ड गिनेगये। ये सब विभाग स्वायम्भुव मन्वन्तर में किये गये मेधातिथि के पुत्रों ने प्लक्षद्वीप में वर्ण आश्रम युक्त प्रजा बसाई औ इसीभांति शाकद्वीप पर्य्यन्त पांच द्वीपों में वर्ण आश्रम का धर्म प्रवृत्त भया। इन पांच द्वीपों के निवासी सब श्रीसदाशिवके अर्चनमें तत्पर रहतेहैं इसी से सुख आयुष् बल बुद्धि औ धर्म उनको मिला है । औ पुष्कर द्वीप में भी सब शिवभक्त निवास करते हैं॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अपने बड़े पुत्र आग्नीध्र को प्रियव्रत ने अभिषेक कर जम्बूद्वीप का महाराज बनाया वह आग्नीध्र युवा बुद्धिमान् पराक्रमी दयालु औ अति शिवभक्त था । उसके नाभि किंपुरुष

हरि इलावृत रम्य हिरण्मान् कुरु भद्राश्व औ केतु माल ये नौ पुत्र परम माहेश्वर औ प्रतापी भये । इनमें से जंबूद्वीपका हेमनामक दक्षिणवर्ष आग्नीध्रने नाभि को दिया । हेमकूट वर्ष किंपुरुषको नैषधखण्ड हरिको जिस खंडके मध्यमें मेरुपर्वत है वह इलावृत को दिया नील पर्वत वाला खंड रम्यको श्वेतखंड हिरण्मान् को दिया शृङ्ग वर्ष उत्तर का कुरुको दिया माल्यवान् वर्ष भद्राश्वको औ गंधमादन वर्ष केतुमाल को दिया । इस भांति जंबूद्वीप के इन बड़े २ नौ खंडों में अपने नौ पुत्रों को अभिषेक कर आप तप करने लगा औ शिव जीका ध्यान करने में प्रवृत्त भया किंपुरुष आदि आठ वर्षों में अर्थात् जंबूद्वीपके आठखण्डों में स्वभाव से ही सब सिद्धि होजाती हैं औ उनवर्षों में न्यूनाधिक भाव जरा अर्थात् बुढ़ापा मृत्यु अधर्म औ युगोंके धर्म नहीं हैं । जो स्थावर जंगम जीव शिवक्षेत्रों में प्राण त्यागते हैं वे उन आठ खंडों में भोगके लिये जन्मलेते हैं । उन्हीं के हित के लियेही ये आठ खंड शिवजीने रचे हैं । औ उनखंडों के निवासी अपने हृदयकमल में श्री महादेवजीका ध्यान करते हुये सदा प्रसन्न रहतेहैं । हिमालय पर्वत युक्त इस खंडके राजा नाभिकी व्यवस्था हम वर्णन करते हैं । नाभि ने अपनी मेरुदेवी नामक रानी में ऋषभ नामक पुत्र उत्पन्न किया जो सब क्षत्रियों में उत्तम भया । ऋषभ के सौ पुत्र भये उनमें सब से बड़े अपने पुत्र भरत को राज्याभिषेककर ज्ञान औ वैराग्य करके अपनी इन्द्रियों को जीत अंतःकरण में

परमेश्वर को स्थापन कर निराहार नग्न निराशहो जटाधार सब संदेह औ अज्ञान दूरकर शिव के परमपद को प्राप्त होता भया। हिमालयके दक्षिण ओर का देश भरत को दिया इसलिये उसका नाम भारतवर्ष भया और भरतका पुत्र परम धर्मात्मा सुमति भया। भरत भी अपना राज्य पुत्रको दे तप करनेको वनमें चला गया॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस जंबूद्वीप के मध्य में मेरु पर्वत है। जिसके शृङ्ग अनेक प्रकार के रत्नोंसे जड़े हैं औ चौरासी योजन ऊंचाहै सोलहहज़ार योजन भूमि में गड़ा है सोलहहज़ार योजन नीचे से चौड़ा है औ बत्तीसहज़ार योजन ऊपर से उसका विस्तार है इसलिये धतूरे के पुष्प की भांति है औ छियानब्बे हज़ार योजन उसका घेर है शिवजी के अङ्ग स्पर्श से वह पर्वत सुवर्ण का होगया है। सब देवता इसी में निवास करते हैं अनेक चमत्कारों का मानो घर है। इस भांति उसपर्वत का आयाम एकलक्ष योजन है जिसमें सोलहहज़ार भूमि के नीचे औ चौरासीहज़ार योजन ऊपर है औ मूल से दूना विस्तार ऊपर है। वह पर्वत पूर्वकी ओर पद्मराग मणि अर्थात् लालके तुल्य है, दक्षिण में सुवर्ण के पश्चिम में नील मणि औ उत्तर में विद्रुम के अर्थात् मूंगे के तुल्य प्रकाशमान है। उसके पूर्वकी ओर अमरावतीपुरी है। जिसमें बड़े ऊंचे २ प्रासाद मानो आकाश गिरने के

भयसे खंभेही लगादिये होयँ खड़ेहैं सुवर्ण रत्नों करके शोभायमान जिसके द्वार हैं मणियों के जाली झरोखे जहां सब स्थानों में लग रहेहैं। सुवर्ण तोरण सबओर बने हैं अनेक देवता जिसमें विहार कररहेहैं। अति मीठे वचन बोलनेवाली सब आभरणों से भूषित स्तनों के भारसे झुकी हुई मद करके घूर्णित जिनके नेत्र ऐसी अति रूपवती युवती नारी औ अप्सरा जहां हज़ारों क्रीड़ा करती हैं औ देखनेवालों के मनको हरती हैं। औ जहां बावड़ी नदी तड़ाग आदि में सुवर्ण के जड़ाऊ घाट बँधे हैं औ सुवर्ण के ही कमल कुमुद आदि उनमें फूल रहे हैं जिनके मधुर सुगन्ध पर लोभित हुये भ्रमर गुंजार कररहे हैं औ भांति २ के पक्षी वृक्षों पर कलोलें कररहे हैं औ अपने अति मधुर शब्दों से सबका मन लुभाते हैं। इस प्रकार इंद्र की अमरावती नगरी है जिससे वह सारा पर्वत शोभित होरहा है। अग्नि कोणमें तेजस्विनी नगरी अग्निकी है वहभी अमरावती से कुछन्यून नहीं वहांभी सबभोग हैं। दक्षिण दिशामें संयमनी नाम यम की पुरी है जो सुवर्ण के भवनों से भरीहै। नैऋत्य कोणमें कृष्णवर्णा नाम नगरी है। पश्चिम में शुद्धवती वायव्यमें गन्धवती उत्तरमें महोदया औ ईशान कोणमें यशोवती नाम नगरी है इन आठ पुरियों करके वह पर्वत चारोंओर शोभायमान हो रहाहै ब्रह्मा विष्णु महेश आदि सब देवताओं का निवास स्थान है। उत्तम वृक्ष निर्झर औ नदियों से व्याप्त हो रहाहै। सिद्ध, यक्ष, गन्धर्व, विद्याधर, मुनि औ अनेक

प्रकार के जीव जिसमें आनन्द से निवास करतेहैं उस पर्वत के ऊपर बाईं ओर शुद्ध स्फटिक का बनाहुआ हज़ार खंडका एक विमान है उसके बीच मणियों के सिंहासन पर पार्वती औ स्कंद करके सहित श्री महादेवजी विराजमान हैं। उस विमान से आधे विस्तार वाला विष्णु जीका बिमान औ उससे भी आधा ब्रह्मा जीका विमान दहिनी ओर स्थित है। शिवजी के विमान के चारों ओर आठ दिक्पालों के विमान हैं। वे सब अपने २ बिमानों में क्रीड़ा करते हैं। ईशान कोण के बिमान में सनत्कुमार सनक सनंदन औ हजारों सिद्ध आदि श्रीशिवका यजन करते हैं वह विमान सूर्य के तुल्य प्रकाशमान है कहीं उसमें योगभूमि है औ कहीं भोगभूमि है। औ नन्दी,स्कंद, गणेश,पार्वती औ सुयशा तथा सुनेत्रा नाम पार्वती जीकी सखी मातृका औ कामदेव आदि सब देवताओं के जुदे २ विमान हैं। जंबूनामक नदी उस पर्वत के मूलको चारों ओरसे घेरकर स्थित है। उस पर्वत के दहिनीओर अतिऊंचा सदा फल देनेहारा औ बड़े विस्तार करके युक्त जंबू काटृक्षहै। मेरु पर्वतके चारोंओर इलावृत खंडहै जिसके निवासी कोई तो अमृत पान करते हैं औ कोई २ अमृतसे भी मधुर जंबूफल खाकर आनन्द से रहतेहैं। औ सबका वर्ण सुवर्णकासाहै औ भोगी हैं। यह सबखंडों में उत्तम इलावृत खंड मेरु पर्वतके आसपासहै इसभांति जम्बू द्वीपमें नौखंडहैं। औ इसकी लम्बाई तथा चौड़ाई अब हम वर्णन करते हैं आपसुनो॥

उनचासवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जम्बूद्वीपका विस्तार एक लक्ष योजन है औ उसके समीपका प्लक्षद्वीप इससेदूना है इसी भांति एकसे दूसरा द्वीपआगे द्विगुण २ है। औ समुद्रों करके युक्त सम्पूर्ण पृथ्वी का प्रमाण पचास करोड़ योजन है। सात द्वीपों करके युक्त पृथ्वी लोकालोक पर्वत से चारों ओर घिरी है। मेरु पर्वत के उत्तर नील पर्वत नीलके उत्तर श्वेत औ श्वेत के भी उत्तर शृंगी नाम पर्वत है। मेरुके दक्षिण निषध निषध के दक्षिण हेमकूट औ हेमकूटके दक्षिण हिमालय है। मेरुके पश्चिम माल्यवान् औ पूर्वमें गंधमादन ये दो पर्वत हैं औ दोनों उत्तर तक विस्तीर्ण हैं। इन आठों पर्वतों में सिद्ध विद्याधर गन्धर्व चारण आदि निवास करतेहैं। औ इन दो दो पर्वतोंके बीच की भूमि नौ नौ हजार योजन है यह हैमवतखण्ड भारत वर्ष कहलाता है। उससे आगे हेमकूट खण्ड है जिसको किंपुरुषवर्ष कहते हैं। हेमकूट से आगे नैषध अथवा हरिवर्ष है। उससे आगे मेरुपर्वत करके शोभित इलावृत खण्ड है। आगे नील पर्वत करके युक्त रम्यकवर्ष उससे अनन्तर श्वेत पर्वत करके युक्त हिरण्मय वर्ष औ शृङ्गीपर्वत करके शोभायमान कुरुवर्ष कहलाताहै दक्षिण उत्तर के दोवर्ष धनुषाकार हैं मेरुपर्वत के ओर पास के चारों वर्ष दीर्घाकार अर्थात् लम्बे हैं। और चारों के बीच इलावृत खण्ड है। मेरु के पश्चिम औ

पूर्व के दोनों वर्ष अति दीर्घ हैं। निषध पर्वत के दक्षिण उत्तर दो वेद्यर्द्ध हैं। तीन वर्ष दक्षिण वेद्यर्द्ध में और तीनहीं उत्तर वेद्यर्द्ध में हैं। और उन के मध्य में इलावृत है। नील पर्वत के दक्षिण और निषध के उत्तर माल्यवान् नाम पर्वत है वह ऊपर से दो हज़ार योजन चौड़ाहै और उसका सब आयाम चौंतीस हज़ार योजन है उस के पश्चिम में गन्धमादन है उस का विस्तार माल्यवान् के तुल्यही है ये छः पर्वत जम्बुद्वीप के मध्य में हैं और पूर्व पश्चिम समुद्रों तक पहुंचे हैं। इन में हिमालय पर्वत में हिम अर्थात् वर्फ़ बहुत है। हेमकूट सुवर्ण करके युक्त है। निषध पर्वत सुवर्ण काही है इसीलिये सदा मध्याह्नके सूर्यकी भांति प्रकाशमान रहता है। मेरु पर्वत के चार वर्ण हैं और चतुरस्र अर्थात् चौखूंटा है। नीलपर्वत वैडूर्य अर्थात् पन्ने का है। श्वेत पर्वत शुक्ल वर्ण है और बहुत सुवर्ण करके युक्त है। और शृङ्गी पर्वत का वर्ण मयूरपिच्छकी भांति विचित्र है और सुवर्ण भी उस में अधिक है। यह हमने संक्षेप से वर्णन किया है। और भी पर्वतों का वर्णन सुनो मन्दर और देवकूट दोपर्वत पूर्व दिशा में हैं। कैलास, गन्धमादन ये दक्षिण के पर्वत हैं और समुद्र पर्यंत पहुँचे हैं। निषध औ पारियात्र ये पश्चिमके पर्वत और त्रिशृङ्ग तथा जारुचि ये दोनों उत्तर के पर्वतहैं। ये आठों मर्यादा पर्वत कहातेहैं। सबसे ऊंचाजो मेरुपर्वत वर्णन किया उसके चार पादहैं जिनके सहारे से वह खड़ा है और जिनकी दबाई हुई पृथ्वी स्थिर

होरही है। उन चारों का आयाम दशहजार योजन है पूर्व दिशा का पाद मन्दर पर्वत है दक्षिण में गन्धमादन पश्चिम में विपुल और उत्तर में सुपार्श्व पर्वत है। इनचारों पर्वतों पर अति उन्नत एकएक वृक्ष है। मन्दर पर्वत के शृङ्ग पर बड़ी शाखाओं करके शोभित और बहुत ऊंचा कदम्ब वृक्ष है। गन्धमादन के ऊपर जम्बूवृक्ष है जिसमें अति उत्तम फल लगतेहैं विपुलके ऊपर बड़ाभारी पीपल का पेड़ है औ सुपार्श्व पर्वत के ऊंचे शृङ्ग पर कई योजन के घेरका वट वृक्ष है। ये चारों वृक्ष चैत्यपादप कहाते हैं इन चारों पर्वतों के ऊपर चार बन हैं जिन में छहों ऋतु सदा बने रहते हैं मनुष्यों की इन में गति नहीं देवताही विहार करते हैं पूर्व के बन का नाम चैत्ररथ है दक्षिण में धृति संज्ञक पश्चिम में वैभ्राज औ उत्तर में नन्दन नामक बनहै। इन चारों में चार शिव क्षेत्र हैं पूर्व में मित्रेश्वर दक्षिण में षष्ठेश्वर पश्चिम में वर्येश्वर औ उत्तर में आम्रकेश्वर क्षेत्र है औ चार सरोवर भी इन पर्वतों पर हैं जिन में सब देवता बड़े आनन्द से विहार करते हैं। पूर्व में अरुणोदक सर है दक्षिण में मानस पश्चिम में सितोदक औ उत्तर में महाभद्र नामक सरहै। इनमें स्कन्द के भी चार क्षेत्र हैं पूर्व में कुमार क्षेत्र है दक्षिण में शाखक्षेत्र पश्चिम में विशाखक्षेत्र औ उत्तर में नैगमेयक्षेत्र है। पूर्व दिशा के अरुणोदक सरोवर के पूर्व जो पर्वत हैं उनका वर्णन संक्षेप से करतेहैं सितांत, कुरण्ड, कुर्पर, विकर, मणिशैल, वृक्षवान्, महानील, रुचकसविन्दु,

दर्दुर,वेणुमान,मेघ, निषध औ देवपर्वत हैं इन सब में सिद्ध विद्याधर निवास करते हैं औ इन सब पर्वतों की गुहा वन औ शृङ्गों में अनेक शिवक्षेत्र औ विष्णुक्षेत्र हैं मानस सरोवरके दक्षिण शैल त्रिशिरा शिखर एकशृङ्ग महाशूल गजशैल पिशाचक पञ्चशैल कैलास औ हिमवान् ये पर्वत हैं ये सब पर्वत देवताओं के निवासहैं औ सब में रुद्रक्षेत्र हैं इसीभांति पश्चिमके पर्वतभी शिवक्षेत्रों करके शोभित हैं महाभद्र सरोवर के उत्तर में शंखकूट, महाशैल, वृषभ,हंस,नाग,कपिल,इन्द्र,नील, कंटकशृङ्ग, शतशृङ्ग, पुष्पकोश,प्रशैल, विरज, वराह,मयूर औ जारुधि ये पर्वत हैं इन सब पर्वतों में श्रीमहादेवजी के हजारों विमान हैं औ इनके मध्यकी भूमि अति रमणीय सरोवर औ उपवनों से भूषित है जिसमें मुनि, सिद्ध, गन्धर्व आदि अपनी पत्नियोंके सहित शिवजी के अनुग्रह से निवास करते हैं इन पर्वतों की द्रोणि अर्थात् दून में बिल्ववनके मध्य लक्ष्मी आदि देवी निवास करती हैं अर्जुन वृक्षोंके वनमें कश्यप आदि मुनि ताल वन में इन्द्र वामन औ सर्प रहते हैं उदुम्बर वन में कर्दम प्रजापति आदि महात्मा निवास करते हैं आम्रवन में सिद्ध निम्बवन में नाग औ सिद्ध किंशुक वनमें सूर्य भगवान् औ रुद्रके गण बीजपूर वनमें वृहस्पति कुमुद वन में विष्णु आदि देवता स्थल पद्मवनके मध्यगत वट वृक्ष में सब नाग रहते हैं औ शेषनाग पाताल में निवास करते हैं जो बलभद्र रूप विष्णुमूर्त्ति हैं औ श्रीमहादेवजी के कङ्कण तथा विष्णुजी की शय्या

है पनस वृक्षों के वन में शुक्राचार्यसहित सब दानव निवास करते हैं सुपारी, नालिकेर आदि के में किन्नर औ सर्प करोड़ वृक्षों करके युक्त मनोहर वन में सब गणों के सहित नन्दी रहते हैं औ प के वन में सरस्वती देवी का निवास है यह संक्षेप से मुख्य मुख्यों का वर्णन किया विस्तार कहां तक करें॥

पचासवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो शितांत शिखर पारिजात वन में इन्द्र निवास करते हैं उसके पूर्व कुमुद पर्वत का बड़ाभारी शृङ्ग है जिसमें दानवों की आठ पुरी हैं सुवर्णकोटरमें नीलक राक्षसों के अरस नगर हैं महानील पर्वतमें अश्वमुख किन्नरों के पन्द्र नगर हैं वेणुसोध पर्वत में विद्याधरों की तीन पुरी वैकुण्ठ पर्वत में गरुड़ करञ्ज पर्वत में रुद्र वसुधार पर्वत में वसु रत्नधार पर्वत में सप्तऋषि एकशृङ्ग पर्वत में प्रजापति गजशैल में दुर्गा आदि देवी सुमेधपर्वत में आदित्य रुद्र अश्विनीकुमार औ वसु निवास करते हैं हेमकक्ष पर्वत में अस्सीनगर देवताओंके हैं सुनील पर्वत में पांचकरोड़ राक्षसों का वास है पञ्चकूट पर्वत में राक्षसों के नगर हैं जिनमें पांचकरोड़ राक्षस निवास करते हैं शतशृङ्ग पर्वत में यक्षों के सौ नगर हैं ताम्र पर्वतमें नागोंका निवास है विशाख पर्वतमें स्कंद औ श्वेतोदरमें गरुड़ रहते हैं पिशाचक पर्वतमें कुबेर

का औ हरिकूट में हरिका निवास है कुमुद पर्वत में कि-न्नर अञ्जन पर्वतमें चारण कृष्ण पर्वतमें गन्धर्व वसते हैं पाण्डुर पर्वत में सब भोगों करके युक्त विद्याधरोंकी सातपुरी हैं सहस्रशिखर पर्वत में इन्द्र के शत्रु औ बड़े प्रतापी दैत्यों के सातहज़ार नगर बसते हैं मुकुट पर्वत में सर्पों का निवासहै पुष्पकेतु पर्वतमें यम, सोम, वायु, वासुकिआदि रहतेहैं तक्षकपर्वत में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्कन्द, कुबेर औ सोम आदि देवताओंके क्षेत्रहैं श्रीकण्ठ पर्वतमें पार्वतीसहित साक्षात् सदाशिवजी निवास करते हैं यह ब्रह्मांड शिवजीनेही उत्पन्न किया औ ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र आदि इस अंडकी रक्षा करनेहारे हैं इसीसे चक्रव-र्ती कहातेहैं अब मर्यादा पर्वतों में जो शिवजी के क्षेत्र हैं उनका हम वर्णन संक्षेपसे करते हैं विस्तार से तो होही नहीं सकता क्योंकि सब जगत् में शिवही व्याप्त हैं इसलिये जगतही शिवक्षेत्रहै ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो देवकूट गिरिका म-ध्यमशृङ्ग जो सुवर्ण, वैडूर्य, माणिक्य, नील, गोमेद आदि अनेक रत्नों करके खचित है जिसमें चंपक, अ-शोक, पुन्नाग, बकुल, असन, पारिजात आदि वृक्षोंपर भांति २ के पक्षी मीठे २ शब्द कररहेहैं जो अनेक गेरू, हरताल, मनसिल आदि धातुओंसे विचित्र वर्ण होरहा है औ पुष्पों से पूर्णहै सुन्दर शीतल स्वच्छ जलके झ-रने और नदियों से चारों ओर शोभायमानहै औ ह-

जारों सरोवर कमलों से भरेहुये जिस पर्वतको भूषि
कररहे हैं उस शिखर के ऊपर दशयोजन के विस्ता
में उत्तम २ वृक्षोंसे परिपूर्ण भूतवन नामकवनहै जिस
मध्यमें सुवर्ण के प्राकार अर्थात् कोट मणियों के तोर
अर्थात् बड़े २ द्वार औ स्फटिक के गोपुर औ रत्नों
सिंहासनों करके युक्त शिवजीका मन्दिरहै जिसमें स्फ
टिकके खंभोंकरके युक्त अतिसुंदर अनेक मंडपहैं ब्रह्मा
विष्णु आदि देवताओं करके पूजित अनेकगण जहां
रहते हैं जिनके मुख वराह, हाथी, ऋक्ष, सिंह, व्याघ्र,
उष्ट्र, गृद्ध, उलूक, मृग औ अज आदि अनेक जीवोंके
मुखके तुल्यहैं पर्वत के तुल्य जिनके शरीर औ अनेक
वर्णकी आकृति दीप्ति नेत्र औ करालमुख हैं सब अ-
णिमा आदि सिद्धियों करके युक्तहैं औ उस शिवमन्दिर
में पूजनके अर्थ अनेक देवता नित्य रहते हैं औ झर्झर,
पटह, शंख, भेरी, गोमुखआदि बाजे बजाकर शिवजी
की आरती करते औ नाचते गाते हैं विष्णु ब्रह्मा आदि
देवता, सिद्ध, गन्धर्व, ऋषि औ गण सब वहां श्रीसदा-
शिवका अर्चन भक्तिसे करते हैं औ मनमाना फलपाते
हैं इसी भांति बड़े ऊंचे शिखरों वाला अति मनोहर क-
रोड़ों यक्षोंके स्वामी कुबेरका निवास कैलास पर्वत है
वहांभी शिवजी का बहुत उत्तम स्थानहै जहां पार्वतीजी
सहित महादेवजी निवास करते हैं औ जिसके समीप
मन्दाकिनी नदी बहती है मंदाकिनी में रत्नोंसे जड़े सु-
वर्ण के घाट स्नानके लिये बने हैं औ सुवर्ण के कमल
नीलमणिके उत्पल औ स्फटिकके कुमुद जिसमें फूल

रहे हैं जिनका सुगन्ध कई योजनों से भ्रमरोंका आक- र्षण करता है औ देवता, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर जिस नदीका सेवन करतेहैं औ अप्सरा जिसके जलमें विहार करती हैं उस नदीके उत्तर की ओर शिव जीका मन्दिरहै जिसमें सदा सांबशिव निवास करते हैं॥

भागीरथी के दहिने तटपर हजारों तपस्वियों करके सेवित बड़ाभारी एकवनहै उसमें भी बहुत उत्तम स्था- नहै जहां गणों के सहित पार्वतीजी को संगलिये महा- देवजी क्रीड़ा करते हैं नंदाके पश्चिम तीरपर कुछ दक्षिण को झुका हुआ रुद्रपुरी नाम ऊंचे २ हजारों मन्दिरों से शोभायमान नगरहै जिसमें सैकड़ों रूपसे सांबशिव अपने गणोंको संगलिये विनोद करतेहैं इसी से उस स्थानको शिवालय भी कहते हैं इसभांति सब द्वीप, पर्वत, वन, नदी,नद, तड़ाग औ समुद्रों की संधि आदि स्थानों में हजारों शिवस्थान हैं जिनमें महादेव जीका निवास रहताहै॥

बावनवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इस जंबूद्वीप में सु- न्दरजल करके युक्त औ सदा बहने वाली असंख्यात नदी पर्वत औ सरोवरों से निकल कर बहती हैं उनमें कोई पूर्वमुख कोई दक्षिणमुख औ कोई २ अतिपवि- त्र उत्तरमुख औ बहुत सी पश्चिममुख भी बहती हैं आकाश का समुद्र यह चंद्रमा है जिससे निकाल २ सब काल देवता अमृत पान करते हैं उससे सातवें

वायुस्कंध में आकाशगंगा निकली है जिससे करोड़ों तारा औ आकाश मग्न हो रहाहै चौरासी हजार योजन ऊंचा मेरुपर्वत है उसके ऊपर शिवजी पार्वती औ गणों करके युक्त स्थित होकर आकाशगंगा में क्रीड़ा करतेहैं इससे उसकाजल अतिपवित्र है वह नदी मेरु की प्रदक्षिणा करतीहुई बहती है जब वह मेरुमें गिरी तब वायु के वेगकरके चार धार हो चारों ओरबही औ शिवजी की आज्ञा पाय और पास के पर्वतों को भेदन करती हुई समुद्र में पहुंची इस आकाशगंगा से हजारों नदी और निकलीं जो सब खंडों में बहने लगीं गौनाम पृथ्वी का है आकाश से गो अर्थात् पृथिवी पर गिरी इससे यह गंगा कहाई केतुमालकेवासी सब मनुष्य कृष्णवर्ण होते हैं औ सदा पनसके फल भोजन करते हैं औ दशहजार वर्ष जीते हैं उनकी स्त्रियां भी उत्पलवर्ण होती हैं भद्राश्व में पुरुष औ स्त्री गौरवर्ण हैं औ नीरोग निरुपद्रव दश हजार वर्ष जीते हैं औ आम्र के फलों का आहार करके शिवजी का ध्यान करते हैं रम्यकवर्ष में स्त्री पुरुष शुक्लवर्ण हैं औ वटवृक्ष के फल खाकर दश हजार औ पंद्रहसौ वर्षका आयुष् भोगते हैं औ सदाशिव का ध्यान करते हुये सुख से अपना समय बिताते हैं हिरण्मय वर्ष के निवासी पीपलके फल भोजन करके ग्यारहहजार औ पंद्रहसौ वर्ष जीते हैं औ भक्तिसे सदाशिव का आराधन करते हैं कुरुवर्ष के रहने वाले स्वर्ग से गिरेहैं औ मैथुन से उत्पन्न होते हैं उनका सुन्दर शुक्लवर्ण है क्षीरआदि

उत्तम २ पदार्थ भोजन करतेहैं स्त्री पुरुषोंमें चक्रवाकों सेभी अधिक प्रीति होती है औ दोनोंकी मृत्यु साथही होती है पुरुष अपनी स्त्री को छोड़ दूसरी स्त्री का सेवन नहीं करते इस भांति कुरुवर्ष के निवासी तेरह हज़ार पंद्रहसौ आयुष् परम आनंदसे बिताते हैं उनके आधि व्याधि नहीं होती है सदा तरुण बने रहते हैं औ अति रूपवान होतेहैं औ सुन्दर भूषण वस्त्रोंसे अलंकृत रहते हैं जंबूद्वीप के सब खंडों में कुरुवर्ष सबसे उत्तम है चंद्र मंडल के तुल्य प्रकाशमान वहां शिवजी का विमान है भारतवर्ष के मनुष्य अनेक वर्णके होते हैं, औ उनके शरीर छोटे होतेहैं कर्मके अनुसार आयुष् भोगतेहैं औ पुण्यात्मा होते हैं परंतु परम आयुष् सौ वर्षका है अनेक देवताओं का पूजन करते हैं अनेक भांति के ज्ञान औ विद्याकरके युक्त औ स्वल्पभोगी होते हैं कोई इंद्रद्वीपमें कोई कसेरु, ताम्रद्वीप, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्य, गंधर्व, वरुण औ कुमारिका खंड आदि देशोंमें बसते हैं म्लेच्छ, पुलिंद, किरात, शबर आदि अनेक जाति चारों ओर बसतीहैं उनके अनन्तर यवन रहते हैं मध्यमें ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य औ शूद्र इन चारों वर्णों का निवासहै यज्ञ युद्ध औ व्यापारसे उनका परस्पर व्यवहार प्रवृत्त है चारों वर्णोंका अपने २ कर्म में धर्म अर्थ औ काम सङ्कल्प औ अभिमान रहताहै इस भारतवर्ष के निवासी स्वर्ग औ मोक्ष के लिये सब कर्म करते हैं औ इसी भारतवर्ष में चारयुगों के धर्म हैं और खण्डों में सदा एक जैसा काल रहता है किंपुरुष खण्डमें पुरुष सुवर्णवर्ण

औ स्त्री अप्सराओं के तुल्य होती हैं औ छत्र के फल खाकर दशहजार वर्ष जीते हैं औ सदाशिवका आराधन कर सुखी रहते हैं हरिवर्ष के निवासी भी स्वर्ग सेही गिरे हैं उनकी वृद्धावस्था कभीनहीं होती सुन्दर इक्षुरस पानकरके दशहजार वर्ष जीते हैं मध्यमखण्ड जो हमने इलावृत नाम कहा वहां सूर्य अधिक नहीं तपता वहां के निवासी कभी वृद्ध नहीं होते चन्द्र,सूर्य, नक्षत्र आदिकवहां अधिक नहीं प्रकाशित होते वहां के निवासी सब पद्मवर्ण कमलनेत्र कमलमुख होते हैं औ उन के देह में सुगन्ध भी कमल कासाही होता है सब सदाशिवके परमभक्त हैं जम्बूफलोंका रस पान करके तेरहहजार वर्ष आयुष भोगते हैं देवलोक से वहां जन्म लेते हैं इसलिये वे मनुष्य अजर अमर औ नीरोग होते हैं वह जम्बूफलों का रस पान करने से क्षुधा, तृषा, श्रम, ग्लानि, बुढ़ापा औ मृत्यु उनको कभी बाधा नहीं करती वहां अति रक्तवर्ण जाम्बूनदनाम सुवर्ण देवताओं के भूषणों के लिये उत्पन्न होता है हे मुनीश्वरो यह हमने नवखण्डों के वर्ण आयुष औ भोजनका संक्षेपसे वर्णन कियाहै हेमकूट पर्वत में गन्धर्व औ अप्सरा निवास करती हैं शेष वासुकि औ तक्षक आदि नाग निषधपर्वतमें रहते हैं तेंतीस याज्ञिक देवता सिद्ध औ निर्मल ब्रह्मऋषि नीलपर्वतमें बसते हैं दैत्य, दानव श्वेतपर्वतमें, पितर शृंगवान्में, यक्ष औ कुवेर हिमालयमें निवास करते हैं औ सब पर्वत वनआदिकों में ब्रह्मा, विष्णु, नन्दी आदिगण औ पार्वतीजी सहित

शिवजी निवास करते हैं नील श्वेत औ शृङ्गवान् में देवता सिद्ध औ पितर आदिकों को सदा सदाशिवके दर्शन हुआ करते हैं नीलपर्वत पन्नेका, श्वेतपर्वत सुवर्णका औ शृङ्गवान् पर्वत मयूरके पंखकी भांति विचित्र वर्ण सुवर्णमय है ये तीनों पर्वतराज जम्बूद्वीप में हैं ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो प्लक्ष आदि सात द्वीपों में सात सातवर्ष पर्वत हैं गोमेदक, चांद्र, नारद, दुन्दुभि, सोमक, सुमना अथवा वैभव औ वैभ्राज ये सात पर्वत प्लक्षद्वीपमें हैं कुमुद, उत्तम, बलाहक, द्रोण, कंक, महिष औ ककुद्मान् ये सातशालमलिद्वीप में हैं विद्रुम, हेम, द्युतिमान्, पुष्पित, कुशेशय, हरि औ मन्दर येसातपर्वत कुशद्वीपमें हैं मंदराचलमें सदाशिवजी निवास करते हैं मंद नाम जलका है जलके धारणे से उस पर्वत का नाम मंदर भया मंदर ने अविमुक्तक्षेत्र अर्थात् काशी में बड़े उग्र तपसे शिवजीको प्रसन्नकिया औ यह प्रार्थना करी कि आप मेरे ऊपर निवास करैं शिवजी भी उसकी प्रार्थना स्वीकार कर नन्दी आदि गण औ पार्वतीजी को संगले वहांहीं निवास करने लगे औ उसका अब तकभी त्याग नहीं करते क्रौंच, वामन, अंधकारक, दिवावृत्, विविन्द, पुण्डरीक औ दुंदुभि ये सात पर्वत क्रौंचद्वीपमें हैं उदय, रैवत, श्यामक, राजत, आंविकेय, रम्य औ केसरी येसात शाकद्वीपके पर्वतहैं इनमें केसरी पर्वतसें वायु औ रम्य पर्वत

में सब ओषधी उत्पन्न होती हैं पुष्करद्वीप में बड़ी २ शिला औ मणियों से भरा एकही पर्वतहै जो पचास हज़ार योजन ऊंचाहै औ चौंतीस हज़ार योजन भूमि में गड़ाहै यह पर्वत द्वीपके पहिले भागमें है और दूसरे भागमें मानसोत्तर पर्वतहै जो समुद्रके तटपर है औ पचासहज़ार योजन ऊंचा औ इतनाही चौड़ा यह पर्वतभी है उस पुष्करद्वीपमें दो देशहैं मानस पर्वतके बाहर महावीतखंड औ भीतर धातकी खंड है स्वादुजल के समुद्र से पुष्करद्वीप चारों ओर से घिरा है इसीभांति सातोंद्वीप सात समुद्रों से वेष्टित हैं द्वीपसे द्वीप औ समुद्रसे समुद्र आगे २ बड़े होते गये हैं सबके बाहर स्वादूदक समुद्र है उसके पार चारोंओर सबसे द्विगुण सुवर्ण की भूमि है औ उस भूमि के चारों ओर लोकालोक पर्वत है यह पर्वत दशहज़ार योजन ऊंचाहै औ इतनाही उसका विस्तार है लोकालोक पर्वत के इधर सूर्य का प्रकाश रहता है औ उधर अंधकार इसीलिये यह पर्वत लोकालोक कहाता है सूर्यमण्डल पर्यंत भुवर्लोक औ ध्रुवमण्डल तक स्वर्लोक है औ आवह, प्रवह, अनुवह, संवह, विवह, परावह औ परिवह ये सात वायु के चक्र हैं औ इन सात वायुस्कन्धों में क्रम से मेघ, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र औ राशि, ग्रह, सप्तर्षि औ ध्रुव रहते हैं भूमिसे ध्रुवमण्डल पन्द्रह नियुत ऊंचा है एक नियुत योजन भूमि से सूर्यमण्डल ऊंचा है सोलह हज़ार योजन सूर्य का रथ है चौरासी हज़ार योजन ऊंचा मेरु पर्वत है ध्रुव से करोड़योजन ऊपर महर्लोक

है महर्लोक से दोकरोड़ योजन जनलोक जनलोक से चार करोड़ योजन तपोलोक और तपोलोक से भी छः करोड़योजन ऊपर सत्यलोक अथवा ब्रह्मलोक है ये सातों पुण्यलोक इस अण्ड में कहे हैं औ सातों पातालों के नीचे घोरसे आदि ले माया पर्य्यंत अट्ठाईस कोटि नरक हैं उनमें अपने २ कर्म के अनुसार पापी दुःख भोगते हैं रौरव से अवीचि पर्यंत पांच २ नरक इकट्ठे हैं यह ब्रह्माण्ड का वर्णन हमने किया औ बड़े विस्तार से हिरण्यगर्भ की सृष्टि भी वर्णी परन्तु ऐसे ऐसे ब्रह्माण्ड करोड़ों हैं औ प्रतिअण्ड चौदह भुवन हैं औ इन सबके कारण शिव हैं देह रहित उन शिवका यह सब प्रपञ्चही देह है शिवरूप गृहस्थी की प्रकृति स्त्री है, महत्तत्त्व आदिक पुत्र औ देहाभिमानी सब पशु उनके दास हैं ये आदि अन्त से रहित शिव छब्बीस तत्त्व रूप हैं उनकी आज्ञासे पृथ्वी, मेघ, पर्वत, समुद्र, नक्षत्र, तारा आदि इन्द्र आदि देवता स्थावर, जंगम सब अपनी अपनी मर्यादा से स्थिर हैं एक समय अपने चिह्नों से हीन यक्षरूप धारे महादेवजी को देख इन्द्र आदि सब देवता उनके समीप गये औ विचार करने लगे कि ये कौन हैं तब तो उनकी शक्ति जाती रही इस यक्ष के सम्मुख अग्नि एक तृण को भी दग्ध न कर सका वायु उस तृणको उड़ा न सका और भी सब देवता अपने २ प्रभाव से हीन होगये तब इन्द्र ने यक्ष से पूछा कि तू कौन है वह तो इतना सुनतेही अन्तर्द्धान भया औ दिव्य भूषण पहिने हिमालय की

पुत्री पार्वतीजी वहां प्रकट भईं तब सब देवताओं ने पार्वतीजी से पूछा कि हे मातः यह क्या माया है औ यह यक्ष कौन है तब पार्वतीजी ने कहा कि हे देवताओ इस पुरुष की मैं प्रकृति हूं औ लोहित शुक्ल कृष्ण मेरे वर्ण हैं औ इस यक्ष की आज्ञा के आधीन हूं औ इसी की आज्ञा से ब्रह्मा औ ब्रह्माजी से यह अण्ड उत्पन्न भया है औ अण्ड में नक्षत्र सूर्य चन्द्र सहित स्थावर जङ्गम रूप सब जगत् उत्पन्न भया इसलिये यहजगत् शिव स्वरूप है ॥

चौवनवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम नक्षत्र ग्रह आदिकों की गति का वर्णन करते हैं मेरु के पूर्व मानस पर्वत के ऊपर इन्द्र की पुरी है दक्षिण में यम की नगरी, पश्चिम में वरुण की औ उत्तर में सोम की नगरी है जिनमें दिग्पाल रहते हैं औ अमरावती, संयमिनी, सुखा औ विभा ये क्रमसे चारों पुरियोंके नाम हैं इन पुरियों के ऊपर सूर्य भ्रमण करते हैं दक्षिणायन में सूर्य अति शीघ्र गति से भ्रमण करते हैं अमरावती में जब मध्याह्न होताहै उस समय संयमिनी में सूर्योदय सुखावती में अर्द्धरात्रि औ विभामें सूर्यास्त होता है इसी भांति और भी नगरों में जानो अग्निकोण में जब सूर्योदय तब नैर्ऋत्य में मध्याह्न, वायव्यमें अर्द्धरात्रि औ ईशान में सायङ्काल होता है इकतीसलाख पचासहजार योजन सूर्य एक मुहूर्त्त अर्थात् दो घड़ी

में चलता है इसी गति से सूर्य दक्षिणायन औ उत्तरायण होता है उत्तरायण में आकाश के मध्य औ दक्षिणायन में मानसोत्तर पर्वत के ऊपर भ्रमण करता है एक २ अयनमें एकसौ अस्सी दिन सूर्य रहता है जिस भांति कुम्हार का चाक अति शीघ्रगतिसे फिरताहै इसी भांति सूर्यमण्डल भी दक्षिणायनमें भ्रमण करताहै इस लिये दक्षिणायन में साढ़े बारह मुहूर्त्त का दिन औ साढ़े सत्रह मुहूर्त्त की रात्रि होतीहै औ उत्तरायणमें सूर्य मन्द गति होताहै सूर्यके रथमें मुनि, आदित्य, गन्धर्व, अप्सरा, सर्प आदि भी बैठते हैं अपने चारोंओर सूर्य तपता है केवल ब्राह्मी सभा को नहीं तपाता सन्ध्याके समय ब्राह्मण जो अर्घ्य देते हैं उसीसे राक्षसों का नाशकर सूर्य भगवान् भ्रमतेहैं उत्तरायणमें साढ़े सत्रह मुहूर्त्तका दिन औ साढ़े बारह मुहूर्त्त की रात्रिहोती है दोनों अयनमें तीसमुहूर्त्त का रात्रि दिन होताहै सब ग्रहों सहित ध्रुव भी भ्रमण करता है जिस भांति कुलालचक्रके मध्यमें रक्खा हुआ मृत्तिका का पिंड भ्रमता है सप्तर्षि तथा और भी ग्रह नक्षत्र ध्रुवकी इच्छासे भ्रमण करते हैं सूर्य भगवान् अपनी किरणों करके सब जलको शुष्ककरते हुये भ्रमणकरते हैं विष्णुजी के अनुग्रहसे उत्तानपादके पुत्रको यह ध्रुवका पदमिला है सूर्यका आकर्षण किया हुआ जल चन्द्रमंडल में जाता है चन्द्रमंडल से मेघों में प्राप्तहोता है वायु करके ताड़ित मेघ भूमिपर वर्षते हैं इसभांति जलका कभी नाश नहीं होता सूर्य सबलोकको भासित करताहै इसलिये भास्कर कहाताहै सब

लोकों के प्राणजल हैं श्रौ जलके अधिपति शिवहैं वि-
ष्णुजी का नाम नारायणजल में निवासकरनेसेही पड़ा
है सब जगत् विष्णुजी में निवास करताहै श्रौ विष्णुजी
जलमें निवास करते हैं चराचर जगत् जिस कालमें
दग्ध होता है तब धूम उठताहै वही वायुकरके प्रेरित
आकाशमें जाय अग्निके सहित मेघबनजाते हैं इस
कारण धूम अग्नि श्रौ वायुके संयोगसे मेघ होतेहैं वेही
जल वर्षते हैं श्रौ उनके स्वामी इंद्र हैं यज्ञके धूमसे जो
मेघ उत्पन्नहोते हैं वेसदा ब्राह्मणों का हितकरते हैं दा-
वाग्निके धूमसे उपजेहुये मेघ वनका कल्याणकरते हैं
चिताके धूमसे उत्पन्नहुये मेघ जगत् में अशुभकरते हैं
अभिचार कर्मकी अग्निके धूमसे उपजे मेघ जीवों का
नाशकरते हैं इसभांति धूमकरके जगत्का हित अहित
होताहै इसलिये अभिचार के धूमको आच्छादन कर
लेना चाहिये जिसमें फैले नहीं जो ब्राह्मण उस धूमको
विना ढके अभिचार कर्मकरता है वह प्रजाका चयकरने
हारा होताहै मेघजल का निवास स्थानहैं वे पवनकरके
प्रेरित छःमहीने वर्षते हैं गर्जना मेघों में वायुका गुणहै
विजली अग्नि से उत्पन्नभई है इसभांति धूम आदि
तीनपदार्थों से मेघकी उत्पत्तिहै भ्रंश न होनेसे अभ्र श्रौ
पृथ्वीको मेहन अर्थात् सेचनकरनेसे मेघकहाते हैं वाह्न
वैरिंच्य श्रौ पात्त ये तीनभांतिके मेघहोते हैं घृत श्रौ
काष्ठके धूमसे उत्पन्नहुये मेघवाह्न कहाते हैं ब्रह्माजी के
श्वाससे वैरिञ्च्य मेघ उत्पन्न भये हैं श्रौ पात्त मेघ इंद्रके
छेदन किये हुये पर्वतों के पत्तोंसे उपजे हैं वाह्न मेघ श्रा-

वह वायुमें रहते हैं वैरिंच्य प्रवहमें औ पात्त जो पुष्कर आदि मेघहैं वे इनके भी ऊपर रहकर वृष्टि करतेहैं वाह्य मेघ वहुत कालतक थोड़ी २ वृष्टि करते हैं गर्जते नहीं औ पृथ्वी से एक कोशके भीतर रहते हैं शीतल पवन भी उनके साथ रहताहै औ प्रायः पर्वतों पर रहते हैं वैरिंच्य मेघ एक योजन के भीतर रहकर वहुत वृष्टि करते हैं औ गर्जते भी वहुत हैं पुष्कर आदि पात्त मेघ इतना वर्षते हैं कि सव जगत् जलमें डूवकर समुद्र होजाताहै उसी में रात्रिके समय परमेश्वर शयन करते हैं इन सव मेघोंका धूम प्रजाकी वृद्धि करनेहारा है पौंड्र वृष्टि अर्थात् पुंड्र देशमें जो वृष्टि होती है वह शीतकाल के शस्य अर्थात् खेती उत्पन्न करती है गंगा जलकी वृष्टि गांग कहाती है वह परावह वायुकरके प्रेरित मेघों से होती है परावह पवन मेघों को एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर लेजाता है मेघ हिमालय पर्वतके ऊपर वर्ष कर जो जल शेष रहताहै उसको भारतवर्ष में वर्षते हैं ये सूर्य भगवान् साक्षात् शिवस्वरूप हैं औ जगत् के सृष्टि करनेहारे, तेज, ओज, वल, नेत्र, कर्ण, मन, मृत्यु, आत्मा, क्रोध, विदिशा, दिशा, सत्य, ऋत, वायु, अम्वर, खचर, लोकपाल, व्रह्मा, विष्णु, रुद्र सव ये सूर्य्यही हैं ये सहस्र किरण सूर्य भगवान् आठहाथ औ तीन नेत्रों करके युक्त अर्द्धनारी स्वरूप सव देवताओं के स्वामी साक्षात् शिवही हैं इन्हीं के अनुग्रह से वृष्टिहोती है जितना जल पृथिवीका सूर्य भगवान् शोषणकरते हैं उससे हजार गुणावर्षते हैं जलका नाश

औ वृष्टि सब उनके आधीन है ध्रुवकरके प्रेरित वायु वृष्टिका संहार करता है सूर्य से निकल कर सब नक्षत्र मण्डल में वृष्टि होतीहै औ वृष्टिकालके अनन्तर ध्रुव करके प्रेरित वृष्टि सूर्य्यमण्डलमें ही प्रवेश करजातीहै॥

पचपनवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो सूर्य चन्द्र तथा और ग्रहों के रथों का हम वर्णन करते हैं जिस भांति सूर्य गमन करते हैं वह भी वर्णन करेंगे सूर्यका रथ ब्रह्माजी ने संवत्सर के अवयवों से निर्माण किया औ तीन नाभि तथा पांच आरों से युक्त चक्र उसमें लगाया वह सुवर्ण का रथ सब देवताओं का वास हुआ उस रथ का आयाम औ विस्तार नौ हजार योजन है वेद से निर्माण किये हुये सात अश्व उसमें चक्र के ऊपर लगे हैं औ उसरथ की धुरी ध्रुवपर रक्खीहै इसी लिये धुरी के भ्रमण से ध्रुव का भी भ्रमण होता है ध्रुव करके प्रेरित एक चक्र के साथ धुरी भ्रमण करती है वायु रश्मियों करके ध्रुव ही सब नक्षत्र ग्रह आदिकों का प्रेरक है रथ का युग अर्थात् जुआ औ धुरी रथ के दक्षिण की ओर ध्रुव ने ग्रहण कर रक्खे हैं औ अरुण अर्थात् सूर्यके रथका सारथी चक्र औ घोड़े भ्रमते हुये ध्रुव के पीछे भ्रमण करते हैं वात लहरी रूप इस रथ के युग औ धुरी का अग्रभाग कील में बँधी हुई रज्जु की भांति चारों ओर घूमताहै उत्तरायणमें भ्रमण करते हुये सूर्य के वायु रश्मिदीर्घ होते हैं औ दक्षिणायन में

रश्मि ध्रुव करके आकर्षण किये हुये छोटे होजाते हैं परन्तु दोनों अयनोंमें एकसौअस्सी २दिन सूर्य भ्रमण करते हैं सब देवता मुनि औ यक्ष आदि सदा सूर्य भगवान्‌की पूजा औ स्तुति करते हैं उस रथमें देवता, मुनि, आदित्य, गन्धर्व, अप्सरा, ग्रामणी, सर्प औ राक्षस ये क्रम से दो दो महीने बैठते हैं औ अपने तेज करके सूर्यका तेज अधिक करतेहैं अपनी रची हुई स्तुति से मुनि सूर्य भगवान् का आराधन करतेहैं गन्धर्व अप्सरा नृत्य गीत से उपासना करते हैं ग्रामणी यक्ष भूत आदि घोड़ों के रश्मि अर्थात् लगाम पकड़ते हैं सर्प सूर्य को धारण करते हैं राक्षस रथ के पीछे २ चलते हैं बालखिल्य नामक ऋषि उदयाचल से अस्ताचल तक सूर्य भगवान् को पहुंचादेते हैं ये सब दो दो महीने सूर्य भगवान् के साथ रहते हैं चैत्र आदि बारह महीने वर्ष में होते हैं बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ये छः ऋतु वर्ष में दोदो महीने के होते हैं धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, इन्द्र, विवस्वान्, पूषा, पर्जन्य, अंशुमान्, भग, त्वष्टा, विष्णु ये बारह सूर्य पुलस्त्य, पुलह, अत्रि, वशिष्ठ, अङ्गिरा, भृगु, भरद्वाज, गौतम, कश्यप, क्रतु, जमदग्नि, कौशिक,ये ऋषि वासुकि, कङ्कर्णाकर, तक्षक, नाग, एलापत्र,शङ्खपाल, ऐरावत, धनञ्जय, महापद्म, कर्कोटक, कम्बल, अश्वतर, ये नाग, तुम्बुरु, नारद, हाहा, हूहू, विश्वावसु, उग्रसेन, सुरुचि, परावसु, चित्रसेन, ऊर्णायु, धृतराष्ट्र, सूर्यवर्चा, ये गन्धर्व, कृतस्थला, पुञ्जिकस्थला, मेनका, सहजन्या,

प्रम्लोचा, अनुम्लोचा, घृताची, विश्वाची, उर्वशी, पूर्वचित्ति, तिलोत्तमा, रम्भा, येअप्सरा, रथकृत, रथौजा, सुवाहु, रथचित्र, रथस्वन, वरुण, सुषेण, सेनजित, तार्क्ष्य, अरिष्टनेमि, रथजित्, सत्यजित्, ये ग्रामणी, औ हेति, प्रहेति, पौरु, षेय, अवधसर्प, व्याघ्र, दिवाकर, ब्रह्मोपेत, यज्ञोपेत, येराक्षस ये सब बारह २ के सातगण सूर्य भगवान्के समीप रहते हैं औ स्थान के अभिमानी हैं धातासे विष्णु पर्यन्त वारह आदित्य सूर्य भगवान्का तेज अपने किरणोंकरके अधिक करतेहैं पुलस्त्यसे लेकर कौशिक पर्यन्त बारह मुनि सूर्यकीस्तुति करते हैं वासुकि आदि अश्वतर पर्यंत बारह नाग सूर्य भगवान्को धारण करते हैं तुम्बुरु आदि सूर्यवर्चा पर्यन्त बारह गंधर्व गीतों करके उपासना करते हैं कृतस्थलासे लेकर रम्भातक बारह अप्सरा भांति२ के नृत्य करके सूर्य भगवान्को प्रसन्न करती हैं रथकृत आदि सत्यजित् पर्यन्त बारह ग्रामणी घोड़ोंके रश्मि ग्रहण करते हैं हेतिसे लेकर यज्ञोपेत तक बारह राक्षस आयुधं हाथों में लेकर रथके साथ चलते हैं धाता, अर्यमा, पुलस्त्य, पुलह, वासुकि, कङ्कणीकर, तुम्बुरु, नारद, कृतस्थला, पुंजिकस्थला, रथकृत, रथौजा, हेति, प्रहेति, ये चैत्र औ वैशाखमें सूर्यभगवान् के साथ रहते हैं मित्रवरुण, अत्रि, वशिष्ठ, तक्षक, नाग, मेनका, सहजन्या, हाहा, हूहू सबाहु, रथचित्र, पौरुषेय, अवध, यहगण ज्येष्ठ और आषाढ़ में सूर्य भगवान् के समीप रहते हैं इन्द्र, विवस्वान्, अंगिरा, भृगु, एलापक्ष, शंखपाल, वि-

श्वावसु, उग्रसेन, प्रम्लोचा, अनुम्लोचा, रथस्वन, वरुण, सर्वव्याघ्र, यह गण श्रावण और भाद्रपदमें सूर्य भगवान्की सेवामें रहते हैं पूषा, पर्जन्य, भरद्वाज, गौतम, ऐरावत, धनंजय, सुरुचि परावसु, घृताची, विश्वाची, सुषेण, सेनजित्, आप,वात, ये आश्विन और कार्त्तिक में साथ रहते हैं अंशुमान, भग, कश्यप, क्रतु, महापद्म, कर्कोटक, चित्रसेन, ऊर्णायु,उर्वशी, पूर्वचित्ति, तार्क्ष्य, अरिष्टनेमि, विद्युत, दिवाकर, ये मार्ग और पौषमें सूर्य भगवान् की सेवा में रहते हैं त्वष्टा, विष्णु, जमदग्नि, कौशिक, कम्बल, अश्वतर,धृतराष्ट्र, सूर्यवर्चा, तिलोत्तमा, रम्भा, रथजित, सत्यजित, ब्रह्मोपेत, यज्ञोपेत यहगण माघ फाल्गुनमें सूर्यभगवान्के साथ सेवाके लिये रहते हैं इन देवताओं का जैसा तेज,योग, मंत्र, धर्म और बलहै उसीके अनुसार सूर्य भगवान् तपते हैं येही देवता वर्षते हैं और येही तपते प्रकाश करते उत्पन्न करते औ जगत्का सब अमंगल दूरकरते हैं और दुष्टोंके शुभको हरलेते हैं वायुके तुल्य गमनकरनेवाले विमान पर आरूढ़ हो आकाशमें गमनकरते हैं और सम्पूर्ण मन्वन्तर में जीवोंकी रक्षाकरते हैं इस भांति चौदह मन्वन्तरों में चौदह गण सूर्य भगवान्के साथ रहते हैं इसप्रकार ये देवता दो २ मास सूर्य भगवान् के साथ निवास करते हैं हरे वर्णके सातघोड़े अपने एक चक्र रथमें लगाय सातद्वीप और समुद्रों करके युक्त पृथ्वीका भ्रमण कर सूर्य भगवान् एक दिन रात्रिमें करते हैं हेमुनीश्वरो जिसभांति हमने सूर्य भ-

गवान् का प्रभाव श्रवण कियाथा वह आपको भली भांति सुना दियाहै॥

छप्पनवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो वीथीके नक्षत्र अर्थात् अश्विनी आदि नक्षत्रोंमें चन्द्रमा भ्रमण करताहै सो २ अंशों करके युक्तीन चक्र औ श्वेतवर्ण के दशघोड़े चन्द्रमाके रथके दोनों ओर लगे हैं इसप्रकार के रथपर आरूढ़ होकर पितरों सहित चन्द्रमा भ्रमण करता है शुक्लपक्षमें सूर्य से चन्द्र आगे रहता है औ पक्ष के अन्त में सूर्य किरणों करके पूर्ण होता है देवता चन्द्र को पान करते हैं इसीसे वह क्षीण होताहै औ सूर्यभगवान् अपने सुषुम्ण नामक किरण से शुक्लपक्ष में उनको पूर्ण करते हैं इस भांति कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा क्षीण होता जाता है औ शुक्लपक्षमें पूर्ण होता जाता है तैंतीस हज़ार तैंतीस सौ तैंतीस देवता चन्द्र के अमृत को पान करते हैं अमावस्या के दिन देवता तो चन्द्रमा को पान करके चले जाते हैं औ यत्किंचित् शेष रहे अमृत को पितर आइके दो घड़ी तक पान करते हैं उसी से महीने भर तृप्त रहते हैं वृद्धि औ क्षय का आरम्भ प्रतिपदासे होता है इस प्रकार यह वृद्धि सूर्य भगवान् के किरणों से होती है॥

सत्तावनवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो बुध के रथ में आठ

घोड़े पिशङ्गवर्ण लगे हैं औ रथ भी जल औ तेजोमय है अनेक वर्ण के दश घोड़े पृथ्वीमय शुक्र के रथ में लगे हैं मङ्गल औ वृहस्पति के रथ सुवर्ण से बने हैं औ बड़ेवेगवान् आठ घोड़ेलगे हैं शनिका रथ लोह काहै औ कृष्ण वर्णके आठ घोड़े लगे हैं औ सूर्य के शत्रु राहु के रथमें भी आठही घोड़े लगे हैं ये सब ग्रह वायु रश्मियों करके ध्रुव में बँधे हैं इसभांति जितने तारा हैं उतनीही वात रश्मिहैं औ सब तारा उन्हीं में बँधे हैं औ आप भ्रमण करते हैं तथा ध्रुव को भ्रमण कराते हैं वायुकरके प्रेरित सब तारा चक्राकार भ्रमण करते हैं औ उस वायु का नाम प्रवहहै सब तारा ग्रह आदि ध्रुवकी प्रदक्षिणा करतेहैं नौहजार योजन सूर्यकाव्यास है औ इससे त्रिगुण परिधिहै इससे द्विगुण चन्द्रमाका प्रमाण है इन दोनों के तुल्य होकर राहु नीचे से गमन करताहै औ मण्डलाकार पृथ्वी की छाया को ग्रहण करताहै अन्धकार मय तीसरा स्थान राहुका है चन्द्र के प्रमाण का सोलहवां भाग शुक्र का प्रमाणहै शुक्र के प्रमाण में उसकी चौथाई घटा देवें तो वृहस्पतिका प्रमाण होताहै औ वृहस्पति से पादहीन अर्थात् पौने मङ्गल औ शनि है औ इनसे पादहीन बुधका प्रमाण है औ अश्विनी आदि ताराओं का प्रमाण भी बुधके तुल्य है बाक़ी सैकड़ों छोटे२तारे चार तीनदो योजन प्रमाण केभी हैं औ सबके ऊपर हैं दो योजनसे कमती किसी का प्रमाण नहीं है परंतु शनि, वृहस्पति, औ मङ्गल ताराओं से ऊपर हैं औ बाकी चार ग्रह नीचेहैं

गवान् का प्रभाव श्रवण कियाथा वह आपको भली भांति सुना दियाहै ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं किहेमुनीश्वरो बीथीके नक्षत्र अर्थात् अश्विनी आदि नक्षत्रोंमें चन्द्रमा भ्रमण करताहै सो २ अंशों करके युक्ततीन चक्र औ श्वेतवर्ण के दशघोड़े चन्द्रमाके रथके दोनों ओर लगे हैं इसप्रकार के रथपर आरूढ़ होकर पितरों सहित चन्द्रमा भ्रमण करता है शुक्लपक्षमें सूर्य से चन्द्र आगे रहता है औ पक्ष के अन्त में सूर्य किरणों करके पूर्ण होता है देवता चन्द्र को पान करते हैं इसीसे वह क्षीण होताहै औ सूर्य भगवान् अपने सुषुम्ण नामक किरण से शुक्लपक्ष में उनको पूर्ण करते हैं इस भांति कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा क्षीण होता जाता है औ शुक्लपक्षमें पूर्ण होता जाता है तेंतीस हज़ार तेंतीस सौ तेंतीस देवता चन्द्र के अमृत को पान करते हैं अमावस्या के दिन देवता तो चन्द्रमा को पान करके चले जाते हैं औ यत्किंचित् शेष रहे अमृत को पितर आइके दो घड़ी तक पान करते हैं उसी से महीने भर तृप्त रहते हैं वृद्धि औ क्षय का आरम्भ प्रतिपदासे होता है इस प्रकार यह वृद्धि सूर्य भगवान् के किरणों से होती है॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो बुध के रथ में आठ

घोड़े पिशङ्गवर्ण लगे हैं औ रथ भी जल औ तेजोमय है अनेक वर्ण के दश घोड़े पृथ्वीमय शुक्र के रथ में लगे हैं मङ्गल औ बृहस्पति के रथ सुवर्ण से बने हैं औ बड़ेवेगवान् आठ घोड़ेलगे हैं शनिका रथ लोह काहै औ कृष्ण वर्णके आठ घोड़े लगे हैं औ सूर्य के शत्रु राहु के रथमें भी आठही घोड़े लगे हैं ये सब ग्रह वायु रश्मियों करके ध्रुव में बँधे हैं इसभांति जितने तारा हैं उतनीही वात रश्मिहैं औ सब तारा उन्हीं में बँधे हैं औ आप भ्रमण करते हैं तथा ध्रुव को भ्रमण कराते हैं वायुकरके प्रेरित सब तारा चक्राकार भ्रमण करते हैं औ उस वायु का नाम प्रवहहै सब तारा ग्रह आदि ध्रुवकी प्रदक्षिणा करतेहैं नौहजार योजन सूर्यकाव्यास है औ इससे त्रिगुण परिधिहै इससे द्विगुण चन्द्रमाका प्रमाण है इन दोनों के तुल्य होकर राहु नीचे से गमन करताहै औ मण्डलाकार पृथ्वी की छाया को ग्रहण करताहै अन्धकार मय तीसरा स्थान राहुका है चन्द्र के प्रमाण का सोलहवां भाग शुक्र का प्रमाणहै शुक्र के प्रमाण में उसकी चौथाई घटा देवें तो बृहस्पतिका प्रमाण होताहै औ बृहस्पति से पादहीन अर्थात् पौने मङ्गल औ शनि है औ इनसे पादहीन बुधका प्रमाण है औ अश्विनी आदि ताराओं का प्रमाण भी बुधके तुल्य है बाक़ी सैकड़ों छोटे२तारे चार तीनदो योजन प्रमाण केभी हैं औ सबके ऊपर हैं दो योजनसे कमती किसी का प्रमाण नहीं है परंतु शनि, बृहस्पति, औ मङ्गल ताराओं से ऊपर हैं औ बाकी चार ग्रह नीचेहैं

ऊपर के ग्रह मंद गति औ नीचेके शीघ्र गति हैं जितने कोटि नक्षत्र हैं उतनेही सूक्ष्म तारा हैं सूर्य के क्रम से नीचत्व औ उच्चत्व होता है चन्द्रमा जब उत्तरायण में होय तब पूर्णिमा के दिन उच्चहोने से शीघ्र देख पड़ता है तब सूर्य दक्षिणायन में होकर नीच मार्गमें होता है औ भूमिरेखा करके आवृत अमावस्या औ पूर्णिमाको अपने कालपर उदय होकर शीघ्र अस्त होता हैउत्तर मार्गमें स्थित चन्द्रमा अमावस्या को भी यत्किञ्चित् दीखता है दक्षिण मार्गमें स्थित अन्धकार करके युक्त होजाताहै इसलिये दृष्टिगोचर नहीं होता विषुवत् अर्थात् मेष, तुला, संक्रान्तिके दिन दिनरात्रि तुल्य होजाते हैं सब के नीचे सूर्य्य भगवान् भ्रमण करते हैं उनके ऊपर चन्द्र चन्द्र के ऊपर नक्षत्रमण्डल नक्षत्र मण्डल के ऊपर बुध बुधके ऊपर शुक्र शुक्रके ऊपर मंगल मंगलके ऊपर वृहस्पति वृहस्पतिके ऊपर शनि शनिके ऊपर सप्तऋषि औ सप्तऋषियों के भी ऊपर ध्रुवहै उस ध्रुवरूप विष्णुलोकको जो पुरुषजाने वह पापसे मुक्त होय दिव्य तेजसे युक्त सूर्य्य चन्द्र औ ग्रह नित्यही नक्षत्रों से योगकरते हैं और नीच उच्च समागम भेद आदि ग्रहों के परस्पर होते हैं छः ऋतुओं में ग्रहों का योग कई बेर होताहै परन्तु दूरसे मनुष्यों की दृष्टिमें योगहोता है वास्तवमें ग्रह परस्पर योग नहीं करते हे मुनीश्वरो जिसप्रकार ग्रहोंकी गति हमने सुनी और देखी वैसीही संक्षेपसे वर्णन करी जिस भांति शिवजी ने स्कन्द का अभिषेक किया वैसाही ब्रह्माजी ने सूर्य्य

भगवान् को अभिषेक कर सब ग्रहोंका स्वामी बनाया इसलिये ग्रह पीड़ा में सब ग्रहों की तथा विशेष करके सूर्य्य भगवान्की पूजा करनी और उनकी प्रीतिके लिये हवन करना चाहिये ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

ऋषिपूछते हैं कि हेसूतजी ब्रह्माजी ने किस भांति देवताओं का अभिषेक किया औ किसका स्वामी कौन बनाया सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो ग्रहोंका स्वामी सूर्य्य नक्षत्र औ औषधियों का स्वामी चन्द्र जलोंका वरुण धन का औ यक्षोंका कुवेर आदित्यों का विष्ण वसुओं का पावक प्रजापतियों का दक्ष मरुतों का इन्द्र दैत्य दानवों का प्रह्लाद पितरों का यम राक्षसों का निरऋति पशुओंका रुद्र भूत औ गणोंका नंदी वीर औ पिशाचों का वीरभद्र मातृकाओं की चामुण्डा रुद्रों का नीललोहित विघ्नोंका गणेश स्त्रियोंकी पार्व्वतीजी वचनों की सरस्वती मायावियों के विष्णु सब जगत्के ब्रह्मा पर्व्वतोंका हिमालय नदियोंकी गंगा सब समुद्रों का क्षीर समुद्र वृक्षोंके पीपल औ बट गन्धर्व विद्याधर औ किन्नरोंका चित्ररथ नागोंका वासुकि सर्पोंका तक्षक दिग्गजों का ऐरावत पक्षियों का गरुड़ अश्वों का उच्चैःश्रवा मृगोंका सिंह गौओं का वृषभ सिंहोंका शरभ सेनापतिओंका स्कन्ध श्रुति स्मृतियोंके लकुलीश स्वामी बनाये औ कर्दम प्रजापतिके पुत्र सुधर्मा, शंखपद, केतुमान औ हेमरोमा ये चारों दिशाके स्वामी किये गये

पृथ्वी का स्वामी पृथु सबके प्रभु महेश्वर, विश्व, प्राज्ञ तैजस औ तुरीयरूप चारमूर्त्तियों के स्वामी वृषध्वज श्रीशंकर भये इसप्रकार शिवजीके अनुग्रह जिसभांति शिवजी ने अभिषेक किया ब्रह्माजी ने सबके स्वामी बनाय उनका अभिषेक किया हेमुनीश्वरो वह हमने आप को विस्तार से श्रवण कराया ॥

उनसठवां अध्याय ॥

ऋषि कहते हैं कि हे सूतजी आपने यह जो वर्णन किया इसको सुनपरम आनन्द भया अब आप ज्योतियों का निर्णय कहैं यह सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो जो हमने व्यास जी आदि शान्तबुद्धियों से सुना है वह आपको सुनाते हैं प्रथम हम दिव्य भौतिक औ पार्थिव इन तीन प्रकार के अग्नियों की उत्पत्ति कहतेहैं ब्रह्मा जी की रात्रि समाप्त होने, पर ब्रह्माजी सृष्टि करने की इच्छा करते भये परन्तु चारों ओर अंधकार छारहाथा केवल ब्रह्माजी ही खद्योत की भांति चमकते थे तब ब्रह्माजीने प्रकाश होनेकेलिये अग्निको उत्पन्नकिया औ उसके तीन भाग किये पवनमें रहनेवाला अग्नि पार्थिव सूर्यमें रहनेवाला शुचिऔ विद्युत्में रहनेहारा अग्नि अब्ज कहलाया अब हम इनके जुदे२लक्षण कहतेहैं जठराग्नि,सौराग्नि औ वैद्युताग्नि ये तीनों जल करके युक्त रहते हैं सूर्य्यभगवान् अपने किरणों करके पृथ्वीका जल आकर्षण करतेहैं तो भी उनके किरण अधिक प्रकाशित होतेहैं वह सूर्य्याग्नि शान्त नहीं होता मनुष्यों के पेट

में रहनेवाला अग्नि भी जलके साथ मिला रहता है इसी भांति वैद्युत अग्निभी है सूर्य्य अस्त होने के अनन्तर सूर्य्य की प्रभा अग्नि में प्रवेश करतीहै इसी-से अग्नि रात्रि के समय दूरसे प्रकाशित देख पड़ता है औ प्रभात के समय वह प्रभा फिर सूर्य्य में प्रवेश करती है औ अग्निकी उष्णता भी सूर्य मे प्रवेश कर-तीहै परन्तु चतुर्थांश उष्णता सूर्य्य में जाती है बाक़ी तीन भाग अग्नि में रहते हैं इसी से बहुत तपता है प्रकाश सूर्य्यका औ उष्णता अग्नि का गुणहै औ सूर्य तथा अग्नि परस्पर आप्यायन किया करते हैं उत्तर ओर की आधी भूमि में जब सूर्य्य रहते हैं तब उनके तेज प्रवेश होनेसे जलका रक्तवर्ण होजाता है औ दक्षिण ओरकी आधी भूमि जहां उस काल में रात्रि होती है वहां का जल शुक्लवर्ण रहता है यह सूर्य्य भगवान् त-पतेहैं औ किरणों करके जलको पान करतेहैं यह पार्थि-व अग्नि है इसीको दिव्य औ शुचि कहतेहैं यह अग्नि सहस्र किरण औ कुम्भ के तुल्य गोलाकारहै अपनी हज़ार नाड़ियों करके नदी, समुद्र, कूप, मेघ आदि के जलको आकर्षण करताहै उनमें चारसौ नाड़ी दृष्टिक-रती हैं औ भजन, माल्य, केतन औ पतन ये उन अमृत रूप नाड़ियों के नाम हैं तीनसौ नाड़ी हिम अर्थात् बर्फ़ गेरनेहारी हैं इनके नाम रेशा, मेधा औ वात्स्या येहैं शुक्ला ककुभा औ शुक्रा ये तीनसौ प्रचण्ड धूपके करने हारीहैं इस प्रकार सूर्य्य रूप सदाशिव उन नाड़ियों करके सब जगत् को धारण करे हैं औ मनुष्यों को औ-

षधकरके पितरों को स्वधा करके औ सब देवताओंको अमृत करके वह तृप्तकरताहै बसन्त औ ग्रीष्म में वह तीन सौ किरणों करके तपताहै वर्षा औ शरद ऋतुमें चार सौ किरणों करके वर्षताहै हेमन्त औ शिशिर में तीनसौ किरणों करके हिम गेरता है इन्द्र, धाता, भग, पूषा, मित्र, वरुण, अर्यमा, अंशु, विवस्वान्, त्वष्टा, पर्जन्य औ विष्णु ये बारह आदित्य हैं माघमहीने में वरुण, फाल्गुनमें सूर्य्य, चैत्रमें अंशु, वैशाख में धाता, ज्येष्ठमें इन्द्र, आषाढ़ में अर्यमा, श्रावण में विवस्वान्, भाद्रमें भग, आश्विन में पर्जन्य, कार्त्तिकमें त्वष्टा, मार्गशीर्ष में मित्र, औ पौषमें विष्णु नामक सूर्य्य तपते हैं वरुण नामक सूर्य पांचहजार किरणों से तपता, छः हज़ारसे पूषा, सातहज़ारसे अंशु, आठ हज़ारसे धाता, नौ हज़ारसे इन्द्र, दशहज़ारसे विवस्वान्, ग्यारह हज़ार से भग, सातहज़ारसे मित्र, आठ हज़ारसे त्वष्टा, नौहज़ारसे पर्जन्य, दश हज़ारसे अर्यमा औ छःहज़ार किरणों करके विष्णु नामक आदित्य पृथ्वीपर तपते हैं वसन्तऋतुमें सूर्यका कपिल वर्ण होताहै ग्रीष्ममें सुवर्ण के तुल्य वर्षामें श्वेत शरद में पांडु वर्ण हेमन्त में ताम्र वर्ण और शिशिरऋतु में लोहित वर्ण सूर्य होते हैं औषधियों में बल देवताओं में अमृत औ पितरों में स्वधा करके तृप्ति वही सूर्य भगवान् करता है इस भांति सूर्य भगवान्के हज़ार किरण लोकका उपकार करते हैं यह सूर्य मंडल सब ग्रह नक्षत्र औ चन्द्रके तेजका कारण है नक्षत्रों का स्वामी चन्द्रमा शिवजी का वाम नेत्र

औ सूर्य भगवान् दक्षिण नेत्र हैं इसलिये जगत्के भी येही नेत्रहैं ॥

साठवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो सूर्य तो अग्निरूप हैं औ चन्द्र जल रूप हैं अब हम बाक़ी पांच ग्रहोंकी प्रकृति का वर्णन करते हैं आप श्रवण क॰ देवताओंका सेनापति अर्थात् स्कन्द मंगलहै साक्षात् नारायण बुध हैं साक्षात् यमराज शनिश्चरहै शुक्र औ बृहस्पति दोनों भृगु औ अंगिरा के पुत्रहैं सम्पूर्ण त्रैलोक्यका मूल सूर्य भगवान् हैं देवता असुर मनुष्य रुद्र इन्द्र चन्द्र अग्नि औ ब्राह्मण सब सूर्य भगवान्से उत्पन्न भये हैं तेजस्वियोंमें सब तेज सूर्य भगवान् काही है सब लोकका आत्मा औ स्वामी श्री महादेव स्वरूप परमदेवता सूर्य नारायणही हैं सब जगत् उनसेही उत्पन्न होताहै औ उन्हीं में लीनहोजाताहै वह सूर्यनारायणही काल का कारण है क्षण, मुहूर्त्त, दिन, रात्रि, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्ष और युग आदि कालका बोध सूर्य विना नहीं होसकता कालकेविना नियम, दीक्षा, आह्निक, ऋतु विभाग, पुष्प, फल, मूल, अन्न, तृण, औषधी आदि कुछभी नहीं होसकते स्वर्ग में और भूमिपर सब व्यवहार सूर्य भगवान् के विना नष्ट होजाताहै काल, अग्नि, प्रजापति, यहीहै उत्तम मार्ग में स्थित होकर दिनरात्रि में चराचर जगत् को ऊपर नीचे से सूर्य भगवान् तपाते हैं जिस भांति घरके अंधकारको दीपक दूर करताहै इसीप्रकार अपने

हज़ार किरणों करके सूर्यनारायण जगत् रूप घरका अंधकार दूर करते हैं हमने सूर्यके हजार किरण वर्णन किये उनमें सात मुख्य हैं औ उनके नाम यह सुषुम्ण, हरिकेश, विश्वकर्मा, विश्वव्यचा, सन्नद्ध, सर्वावसु औ स्वराट् इनमें सुषुम्ण चंद्रमाकी वृद्धिकरताहै हरिकेश नक्षत्रों का प्रकाशकहै विश्वव्यचा शुक्रको तेज देनाहै विश्वकर्मा बुधकी वृद्धि करताहै सन्नद्ध मंगलका प्रकाशकहै सर्वावसुसे वृहस्पतिका तेज अधिक होताहै औ स्वराट्नामक किरण शनिश्चरको प्रकाशित करताहै इस प्रकार सूर्य के प्रभावसे ही ग्रह नक्षत्र तारा औ यह सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित है जिनका क्षय नहीं होता वे नक्षत्र कहलाते हैं॥

इकसठवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो रात्रिकोज़ोनक्षत्र ग्रह आदि दृष्टिगोचर होते हैं सब सूर्यके किरणों करके प्रकाशित हैं इस भरतखण्ड में जो पुरुष सुकृत करते हैं उनके ये स्थान होते हैं तारण करने से औ शुक्लता से तारका कहाते हैं सब भांति के अंधकारका आदान अर्थात् ग्रहण औ प्रकाश का दान करने से आदित्य नाम सूर्य भगवान् का है षुधातु सवन अर्थात् उत्पत्ति औ स्पंदन अर्थात् टपकनेका वाचक है तेजके उत्पन्न करने से औ जलके वर्षने से सूर्य भगवान् सविता कहाये चदि धातु आह्लाद अर्थ में है जगत्को अ-ह्लादकरने से चंद्रनाम भया चंद्र सूर्यके मण्डल क्रम-

से जलमय औ तेजोमय हैं औ घटके तुल्य गोलाका-
रहैं सब देवता इन ग्रह नक्षत्ररूप स्थानों में निवास
करते हैं सब मन्वन्तरों में ये निवास स्थान होतेहैं इस-
लिये ये ग्रह क्या हैं घरहैं सूर्यमंडल में सूर्य नारायण
का निवास है सोममंडल में चंद्रका शुक्रमंडल में
शुक्रका निवास है इसी भांति अपने अपने मंडलों में
मंगल, बुध, वृहस्पति, शनि, निवास करतेहैं राहु अपने
स्थान में रहता है इसी प्रकार अपने २ मण्डलों में न-
क्षत्रभी रहतेहैं जितने ग्रह नक्षत्र आदि देखपड़तेहैं सब
पुण्यात्मा जीवोंके रहने के स्थान हैं औ कल्पके आदि
में ब्रह्माजीने रचे हैं प्रलय पर्यंत इनके निवासी आ-
नन्दसे इनमें रहेंगे सब मन्वंतर में इनके अभिमानी
देवता इनमें निवास करते हैं पीछे जो व्यतीत होगये
औ आगे जो देवता होंगे उनके लिये ये स्थान पृथ-
क् २ होतेहैं इस मन्वंतर में सब ग्रह वैमानिक अर्थात्
विमान पर बैठ आकाश गमन करनेहारेहैं वैवस्वतम-
न्वंतरमें अदिति के पुत्र विवस्वान् सूर्य हैं अत्रिऋषि
के पुत्र चंद्रमा हैं भृगुके पुत्र औ असुरों के आचार्य
शुक्र हैं अंगिरा ऋषिके पुत्र औ देवताओंके आचार्य
वृहस्पति हैं बुध भी ऋषि पुत्रही हैं सूर्य भगवान् से
संज्ञा में शनिश्चर उत्पन्न भये हैं रुद्र से विकेशी में
अग्निका अवतार भौम भयेहैं सब नक्षत्र दक्षकी क-
न्या हैं राहु असुर सिंहिका का पुत्र है चंद्र, सूर्य, ग्रह,
नक्षत्र आदि के निवासी ये देवता हैं सूर्य भगवान्का
स्थान अग्निमय है चन्द्रका स्थान शुक्लवर्ण औ जल-

मय है श्याम वर्ण औ जलमय स्थान बुधका है शुक्र का भी शुक्ल वर्ण औ जलमय औ सोलह रश्मियों करके युक्त स्थान है मंगल का स्थान रक्तवर्ण औ नौ रश्मियों करकेयुक्त है पीतवर्ण औ सोलह रश्मियों करके युक्त बृहस्पति का स्थान है कृष्ण वर्ण औ आठरश्मियों करके युक्त शनि का स्थानहै औ सब जीवोंको संताप देनेहारा तामसस्थान राहुका है शुक्ल वर्ण औ एक २ रश्मि करके युक्त सब तारा पुण्यात्मा ऋषियों के स्थान हैं औ कल्पके आदि में जलमय बनायेगये हैं परंतु सब के प्रकाश करनेहारे सूर्य नारायणही हैं सूर्यका व्यास नौहज़ार योजन है औ इससे त्रिगुणा अर्थात् सत्ताईस हज़ार योजन सूर्य मण्डल की परिधिहै सूर्य के विस्तार से दूना चंद्रमा का विस्तार है इसी प्रकार और ग्रहों का प्रमाण भी जिस रीतिसे हमने पहिले वर्णन किया है वैसाही जानो अदिति का पुत्र सूर्य विशाखानक्षत्र में उत्पन्न भया है चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में पुष्य नक्षत्र में शुक्र पूर्वाफाल्गुनी में बृहस्पति का जन्म है पूर्वाषाढ़ में मंगलकी उत्पत्ति है रेवती में शनिश्चर का जन्म भया है बुध धनिष्ठा में उत्पन्न भया औ आश्लेषामें राहुकी उत्पत्ति भई है औ अपने २ नाम के नक्षत्रों में नक्षत्रोंका जन्म भयाहै जिस नक्षत्रकी पीड़ाहोय उसके ग्रहकी पूजाआदि करने से वह शांतहोती है सब ग्रहों में मुख्य सूर्यहै ताराग्रहों में मुख्य शुक्रहै केतुओं में धूमकेतु प्रधान है आकाशके सब ताराओं में ध्रुव मुख्यहै नक्षत्रों में धनिष्ठा अयनों में उ-

त्तरायण, पांचप्रकारके वर्षों में प्रथम संवत्सर ऋतुओं में शिशिर, महीनों में माघ, पक्षों में शुक्लपक्ष, तिथियोंमें प्रतिपदा, दिनरात्रि में दिन, मुहूर्तों में पहिला मुहूर्त जिसका रुद्र देवता है औ निमेष आदि काल में क्षण मुख्यहै सम्पूर्ण कालका कारण सूर्य है औ चार प्रकारके जीवों की प्रवृत्ति निवृत्ति करनेहारा भी वही सूर्य भगवान् है और सूर्य भगवान् के प्रवर्तक रुद्र हैं इस प्रकार लोक व्यवहार के लिये श्रीमहादेव जी ने यह ज्योतिर्गण अर्थात् ग्रह नक्षत्र आदि स्थापन किये हैं इनका यथार्थ प्रमाण औ गति कोई मनुष्य वर्णननहीं करसक्ता जिनकी दिव्य दृष्टि है उनकोही इस ज्योतिर्गणका यथार्थ ज्ञान है मनुष्यों को इनका ज्ञान शास्त्र से अनुमानसे प्रत्यक्षसे औ उपपत्ति से होताहै चक्षु, शास्त्र जल लेख्य औ गणित ये पांच हेतु ज्योतिर्गण के मान का निर्णय करने के लिये हैं इन सब ग्रह नक्षत्र तारा आदि के निर्माण करनेहारे औ स्वामी वेही सदाशिव हैं ॥

बासठवां अध्याय ॥

ऋषिपूछते हैं कि हे सूतजी विष्णुजी के प्रसाद से ध्रुव क्योंकर सब नक्षत्र गणमें मुख्य भया औ मेढिट हरायागया यह आप वर्णन करें यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो मार्कण्डेय मुनि से यह कथा हमने सुनी है वह आपको सुनाते हैं बड़ा प्रतापी उत्तानपाद नाम चक्रवर्त्ती राजाभया उसकी

सुनीति औ सुरुचि दो रानी थीं बड़ीरानी सुनीति के ध्रुवनाम पुत्र उत्पन्नभया, वह बालक बड़ा बुद्धिमान् था औ सुरुचिके भी एक पुत्रभया एकदिन ध्रुव अपने पिता की गोदमें बैठाथा कि उसकी विमाता सुरुचिने ध्रुवका हाथ पकड़कर वहांसे उठादिया औ उसके स्थानपर अपने पुत्रको लाबैठाया ध्रुवभी रोता २ अपनी माताके समीपगया औ सब वृत्तांत कहा उसकी माताने कहा कि हे पुत्र रानी सुरुचि पतिकी अतिप्यारी है इसहेतु उसके पुत्रपर राजाका बहुत स्नेह है मैं मंदभागिनी हूं औ मेरे तू पुत्रभी मन्दभागी उत्पन्नभया अब तू रोदन मतकर तेरी यह दशा देख मुझको बहुत शोक होता है अपने स्थानको अपनी शक्ति सेहीपाय सक्ता है इतना माताका दीनवचन सुन तप करने के लिये वनको सिधारा मार्ग में विश्वामित्र मुनि मिले उनको देख अति विनय से ध्रुवने प्रणामकिया वेभी इसकी अवस्था औ नम्रता देख बहुत प्रसन्न भये तब तो ध्रुव कहने लगा कि महाराज पिताकी गोद से मुझे उठाकर मेरी विमाता सुरुचिने अपने पुत्रको वहां बैठाया और पिताने उसको कुछभी न कहा तब मैं दुःख से रोता हुआ अपनी माता के समीप गया माताने भी यह ही कहा कि पुत्र शोक मतकर अपनी शक्ति से ही उत्तम स्थान प्राप्त कर यह माताका वचन सुन आप के समीप आया अब आप ऐसा अनुग्रह करें कि जिससे बहुत उत्तम और सबसे ऊंचा स्थान मुझे मिले यह सुन विश्वामित्र मुनि हँसकर बोले कि हे राजपुत्र शिवजीके

धाम अङ्ग से उत्पन्न भये श्रीविष्णु जी का आराधन कर औ (ॐनमोभगवतेवासुदेवाय) इस मन्त्र का निरन्तर जपकर तो क्लेश औ पापों के दूर करने हारे श्रीविष्णुभगवान् कृपाकर अति उत्तम स्थान तुम को देंगे इतना सुन मुनि को प्रणाम कर एकान्त स्थान में जाय पूर्व की ओर मुखकर नियम से जप करने लगा और शाक मूल फल आदि से अपना निर्वाह कर उग्र तप करने में प्रवृत्त भया इस भांति तप करते औ मंत्र जपते एक वर्ष व्यतीत भया अनेक वेताल राक्षस औ सिंह आदि दुष्ट जीव उसके तपमें विघ्न करने को आये परन्तु उसने किसी को भी कुछ न समझा औ एकाग्र चित्तहो तप किये गया एक पिशाची इसकी माता सुनीति का रूपधार सन्मुख आय रोदन करनेलगी औ कहने लगी कि अरे मैं मन्दभागिनीहूं औ मेरा तू एक ही पुत्रथा वह भी मुझे छोड़ जङ्गल में आय बैठा अब मेरी क्यागतिहोगी इसभांति अनेक प्रकारके विलाप किये परन्तु ध्रुवने उसकी ओर देखा भी नहीं औ अपना जप किये गये तबतो सब विघ्न शान्तहोगये औ गरुड़ पर आरूढ़ सब देवताओं के सहित श्रीविष्णुजी वहां आये ध्रुव उनको देख विचार करने लगा कि ये महात्मा कौन हैं जिन के दर्शन से ही मेरा आत्मा आनन्द से मग्न होरहाहै यह विचारकर मन्त्र जपता हुआ ध्रुव हाथ जोड़कर उठा विष्णु भगवान् ने भी अपने शङ्ख के अग्रभाग से ध्रुव के मुखको स्पर्श किया शङ्ख का स्पर्श होतेही दिव्य ज्ञान ध्रुव को होगया औ हाथजोड़

सुनीति औ सुरुचि दो रानी थीं बड़ीरानी सुनीति के ध्रुवनाम पुत्र उत्पन्नभया, वह बालक बड़ा बुद्धिमान् था औ सुरुचिके भी एक पुत्रभया एकदिन ध्रुव अपने पिता की गोदमें बैठाथा कि उसकी विमाता सुरुचिने ध्रुवका हाथ पकड़कर वहांसे उठादिया औ उसके स्थानपर अपने पुत्रको लाबैठाया ध्रुवभी रोता २ अपनी माताके समीपगया औ सब वृत्तांत कहा उसकी माताने कहा कि हे पुत्र रानी सुरुचि पतिकी अतिप्यारी है इसहेतु उसके पुत्रपर राजाका बहुत स्नेह है मैं मंदभागिनी हूं औ मेरे तू पुत्रभी मन्दभागी उत्पन्न भया अब तू रोदन मतकर तेरी यह दशा देख मुझको बहुत शोक होता है अपने स्थानको अपनी शक्ति सेही पाय सक्ता है इतना माताका दीनवचन सुन तप करने के लिये वनको सिधारा मार्ग में विश्वामित्र मुनि मिले उनको देख अति विनय से ध्रुवने प्रणामकिया वेभी इसकी अवस्था औ नम्रता देख बहुत प्रसन्न भये तब तो ध्रुव कहने लगा कि महाराज पिताकी गोदसे मुझे उठाकर मेरी विमाता सुरुचिने अपने पुत्रको वहां बैठाया और पिताने उसको कुछभी न कहा तब मैं दुःख से रोता हुआ अपनी माता के समीप गया माताने भी यह ही कहा कि पुत्र शोक मतकर अपनी शक्ति से ही उत्तम स्थान प्राप्त कर यह माताका वचन सुन आप के समीप आया अब आप ऐसा अनुग्रह करें कि जिससे बहुत उत्तम और सबसे ऊंचा स्थान मुझे मिले यह सुन विश्वामित्र मुनि हँसकर बोले कि हे राजपुत्र शिवजीके

क स्त्री में मैथुन से हर्यश्वनामक पांचहजार पुत्र उत्पन्न किये औ वे पांचहजार प्रजाकी उत्पत्ति करने में प्रवृत्तभये इसी अवसर में नारद मुनि ने आयकर उनसे कहा कि भाई पहिले भूमि का प्रमाणतो जानलो पीछे प्रजा रचना यह नारद का वचन सुन सबके सब चारों दिशाओं को चले गये औ समुद्र में पहुँची नदी की भांति आज तक भी लौट कर नहीं आये तब दक्ष-प्रजापति ने उसी स्त्री में शवल नामक एकहज़ार पुत्र सृष्टि करने के अर्थ फिर उत्पन्न किये उनकोभी नारद ने वही उपदेश दिया औ कहा कि तुम्हारे भाई चले गये उनका निश्चय करो कि कहां गये औ ऊपर नीचे से पृथ्वी का प्रमाण देखो तब सृष्टि करना उचित है यह नारद का वचन मान वेभी नष्ट भये तब दक्षप्रजापति ने वारिणी नाम अपनी स्त्री में साठ कन्या उत्पन्न करीं औ उनमें से दश कन्या धर्मराजको व्याहीं, तेरह कश्यपको, सत्ताइस चंद्रमाको, चार अरिष्टनेमि को, दो भृगुके पुत्र को, दो कृशाश्वको, दो कन्या अंगिरा ऋषिको, व्याहदीं अब उन सब कन्याओंके नाम औ संतान सुनो मरुत्वती, वसु, यामि, लंबा, भानु, अरुंधती, संकल्पा, मुहूर्त्ता, साध्या औ विश्वा ये धर्मकी पत्नी हैं इनमें विश्वाके पुत्र विश्वेदेवा, साध्याके पुत्र साध्य नामक देवता, मरुत्वती के मरुत्वान्, वसुके पुत्र आठ वसु, भानुके बारह भानु, मुहूर्त्ता के मुहूर्त्त, लंबा के घोष नामक पुत्र यामिके नागवीथि, औ संकल्पाके संकल्पपुत्र भया आप, ध्रुव, सोमधर, अनिल, अनल, प्रत्यूष औ प्रभास ये बड़े प्रतापी औ

भगवान् की स्तुति करने लगा ॥ प्रसीददेवदेवेशशङ्ख चक्रगदाधर। लोकात्मन्वेदगुह्यात्मंस्त्वांप्रपन्नोऽस्मिकेशव १ नविदुस्त्वांमहात्मानंसनकाद्यामहर्षयः। तत्कथंत्वामहंविद्यांनमस्तेभुवनेश्वर ॥ २ ॥ यह सुन विष्णु भगवान् ने कहा कि हे पुत्र हम तुम से बहुत प्रसन्न हैं आव औ अपनी माता सहित सब नक्षत्र गण में प्रधान स्थान में निवास कर जो ध्रुव स्थान शिवजी के आराधन से हमनें पाया है वह हम तुझको देते हैं और भी जो पुरुष द्वादशाक्षर मन्त्र का जप करैंगे वे भी इसी स्थान में प्राप्त होंगे इतना भगवान् का वचन सुनतेही देवता गन्धर्व सिद्ध औ ऋषि वहां आय माता सहित ध्रुव को उस स्थानमें लेजाय निवास कराते भये इस प्रकार द्वादशाक्षर मन्त्र के जप से ध्रुव परमसिद्धि को प्राप्त भया जो पुरुष भक्ति से वासुदेव को प्रणाम करतेहैं वे इसी लोक में निवास करते हैं ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी अब आप देव, दानव, गन्धर्व, सर्प, राक्षस आदि की उत्पत्ति क्रम से वर्णन करैं यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो पहिले तो सङ्कल्प से दर्शन से औ स्पर्श करनेसेही सन्तति उत्पन्न हो जाती थी यह मैथुन से सृष्टि दक्षप्रजापति के अनन्तर प्रवृत्त भई जब देवता ऋषि नाग बहुतेरे उत्पन्नकिये परन्तु प्रजा की वृद्धि न भई तब दक्षप्रजापति ने अपनी सूतिनाम-

क स्त्री में मैथुन से हर्यश्वनामक पांचहजार पुत्र उत्पन्न किये औ वे पांचहजार प्रजाकी उत्पत्ति करने में प्रवृत्तभये इसी अवसर में नारद मुनि ने आयकर उनसे कहा कि भाई पहिले भूमि का प्रमाणतो जानलो पीछे प्रजा रचना यह नारद का वचन सुन सबके सब चारों दिशाओं को चले गये औ समुद्र में पहुँची नदी की भांति आज तक भी लौट कर नहीं आये तब दक्ष-प्रजापति ने उसी स्त्री में शवल नामक एकहजार पुत्र सृष्टि करने के अर्थ फिर उत्पन्न किये उनकोभी नारद ने वही उपदेश दिया औ कहा कि तुम्हारे भाई चले गये उनका निश्चय करो कि कहां गये औ ऊपर नीचे से पृथ्वी का प्रमाण देखो तव सृष्टि करना उचित है यह नारद का वचन मान वेभी नष्ट भये तब दक्षप्रजापति ने वारिणी नाम अपनी स्त्री में साठ कन्या उत्पन्न करीं औ उनमें से दश कन्या धर्मराजको व्याहीं, तेरह कश्यपको, सत्ताइस चंद्रमाको, चार अरिष्टनेमि को, दो भृगुके पुत्र को, दो कृशाश्वको, दो कन्या अंगिरा ऋषिको, व्याहदीं अब उन सब कन्याओंके नाम औ संतान सुनो मरुत्वती, वसू, यामि, लंबा, भानु, अरुंधती, संकल्पा, मुहूर्त्ता, साध्या औ विश्वा ये धर्मकी पत्नी हैं इनमें विश्वाके पुत्र विश्वेदेवा, साध्याके पुत्र साध्य नामक देवता, मरुत्वती के मरुत्वान्, वसुके पुत्र आठ वसु, भानुके वारह भानु, मुहूर्त्ता के मुहूर्त्त, लंबा के घोष नामक पुत्र यामिके नागवीथि, औ संकल्पाके संकल्पपुत्र भया आप, ध्रुव, सोमधर, अनिल, अनल, प्रत्यूष औ प्रभास ये वड़े प्रतापी औ

सब दिशाओं में व्याप्त सब जगत्के हितमें तत्पर आठ वसु अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष, भैरव, हर, बहुरूप, त्र्यम्बक, सावित्र, जयंत, पिनाकी औ अपराजित ये ग्यारह रुद्रहैं अदिति, दिति, अरिष्टा, सुरसा, मुनि, सुरभि, विनता, ताम्रा, इला, कद्रु, त्विषा औ क्रोधवशा ये तेरह कश्यप की भार्या हैं चक्षुषमन्वंतरमें जो देवता तुषित नामक थे वेही वैवस्वत मन्वंतर में बारह आदित्य भये इंद्र, धाता, भग, त्वष्टा, मित्र, वरुण, अर्यमा, विवस्वान्, सविता, पूषा, अंशुमान् औ विष्णु ये हजार २ किरणों करके युक्त बारह आदित्य हैं औ अदिति के पुत्र हैं हिरण्यकशिपु औ हिरण्याक्ष ये पुत्र कश्यपसे दिति में भये दनुके सौ पुत्र भये उन सब में विप्रचित्ति मुख्य था ताम्रा ने छः कन्या उत्पन्न करीं शुकी, श्येनी, भासी, सुग्रीवी, गृध्रिका औ शुचि ये उन कन्याओं के नामहैं शुकीकी संतान शुक औ उलूकभये श्येनि के श्वेनि औ भासी के कुरर पक्षी भये गृध्री के गृध्र कपोत पारावत आदि भये औ हंस, चक्रवाक, सारस आदि शुचिकी संतानभई घोड़े, गर्दभ, भेड़, बकरे औ उष्ट्र सुग्रीवी की प्रजा भई विनता के अरुण औ गरुड़ ये दो पुत्र भये औ सब लोकों को भय देने हारी सौदामिनी नाम कन्या भी विनता के भई सुरसा ने हजार सर्प उत्पन्न किये कद्रू के पुत्रहजार शिरकरके युक्त हजार नाग भये उनमें भी छब्बीस प्रधान हैं शेष, वासुकि, कर्कोटक, शंख, ऐरावत, कंबल, धनंजय, महानील, पद्म, अश्वतर, तक्षक, एलापत्र, महापद्म, धृतराष्ट्र,

वलाहक, शंखपाल, महाशंख, पुष्पदंष्ट्र, शुभानन, शंखलोमा, नहुष, वामन, फणित, कपिल, दुर्मुख औ पतंजलि हैं ये उन छब्बीस प्रधान नागों के नाम हैं क्रोधवशामें बड़े मायावी राक्षस उत्पन्न भये रुद्र औ गौ, भैंस सुरभि में उत्पन्न भये मुनिमें अप्सरा औ मुनियों का गण उत्पन्न भया किन्नर औ गंधर्व अरिष्टा के पुत्र भये तृण, वृक्ष, लता, गुल्म आदि इलासे उपजे औ करोड़ों यक्ष राक्षसों को खिषा ने उत्पन्न किया ये कश्यप की प्रजा हमने संक्षेप से वर्णनकरी औ इनके पुत्र पौत्रों से तो हज़ारों वंश चले इस भांति इस प्रजाकी वृद्धि कश्यप ने करी इनमें मुख्यों को अभिषेक करके सबके स्वामी बनाया औ मनुष्यों का अधिकार वैवस्वतमनु को दिया स्वायम्भुव मन्वन्तर में ब्रह्माजी ने जिनका अभिषेक कियाथा वेही सातद्वीपों करके युक्त इस पृथ्वी का पालन धर्मसे करते हैं और वेही मनुहोते हैं पिछले मन्वन्तरों में कई राजा हो चुके औ अगले मन्वन्तरों में कई होंगे इसप्रकार प्रजा उत्पन्नकर फिर भी प्रजाकी वृद्धि के लिये कश्यपमुनि तप करनेलगे कि गोत्रका करनेहारा पुत्र हमारे उत्पन्नहोय इसभांति ध्यान करते २ ब्रह्मवादी दो पुत्र वत्सर औ असित कश्यप के उत्पन्न भये वत्सर के नैध्रुव औ रैभ्य ये दो पुत्रभये रैभ्यके पुत्र रैभ्यही य हाये च्यवनकी कन्या नैध्रुवको व्याही उसमें सुमेधा नाम पुत्र भया असितकी एकपर्णा स्त्री में ब्रह्मिष्ट नामक पुत्र भया जो शांडिल्यों में मुख्यहुआ औ जिसका नाम देवलभी है शांडिल्य, नैध्रुव औ रैभ्य ये तीन पक्ष कश्यपके भये

अब पुलस्त्यकी सन्तान नौ राक्षसोंका वर्णन करते हैं चार युग बीते औ ग्यारहवें मन्वन्तर के त्रेता का जब आधा बीत चुका तब द्वापरके आदि में मनुका पुत्र नरिष्यन्त औ उसका पुत्र दम दमका पुत्र तृणविन्दु भया वह तीसरे त्रेतायुग के आदि में राजा भया उस राजा के इलविला नामक अति रूपवती कन्या भई औ पुलस्त्यको ब्याहीगई उसमें विश्रवाऋषि उत्पन्न भये विश्रवाऋषिकी चार भार्याभई एक तो बृहस्पतिकी कन्या देववर्णिनी औ दो कन्या माल्यवान्की एक पुष्पोत्कटा दूसरी बलाका औ चौथी भार्य्या मालीकी पुत्री कैकसी इन में देववर्णिनी का पुत्र कुबेर भया कैकसी से रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण औ शूर्पनखा ये उत्पन्नभये प्रहस्त, महापार्श्व, खर कुम्भी नसी कन्या ये पुष्पोत्कटाकी प्रजाभई त्रिशिरा, दूषण, विद्युज्जिह्वा औ मालिकानाम कन्या बलाके गर्भ से उत्पन्नभये ये नवराक्षस पुलस्त्य के वंशमें बड़े क्रूरकर्मा उत्पन्नभये इनमें विभीषण धर्मात्माथा मृग, सिंह, व्याघ्र आदि जीव भूत, पिशाच, सर्प, शूकर, हस्ती, वानर, किन्नर आदि सब पुलस्त्यसे ही उत्पन्नभये औ इस वैवस्वत मन्वंतर में क्रतुके कुछ सन्तान न भई अत्रि मुनि की अति सुन्दरी दश भार्याथीं भद्राश्व राजासे घृताचीनाम अप्सरा में दशकन्या उत्पन्नभई भद्रा, अभद्रा, जलदा, नन्दा, बला, अबला, बलाबला, गोपा, तामरसा औ वरक्रीड़ा ये दशों अत्रिको ब्याहीगई राहुने सूर्यको आच्छादनकरके सब जगत्में अन्धकार व्याप्त कर दिया तब अत्रिमुनि

ने सब जगत् में प्रभा अर्थात् प्रकाश किया इसीसे उनका नाम प्रभाकर भया औ आकाश से राहु करके गिराये हुये सूर्यको अत्रिमुनिने ही आशीर्वाद देकर फिर अपने स्थान में पहुँचाया अत्रिमुनि से भद्रामें चन्द्रमा उत्पन्नभया औ और भी सवत्रियोंमें अत्रिमुनिने पुत्र उत्पन्न किये वे सब वेदके पारगामी भये औ आत्रेयकहाये उनमें दो तो बड़े तेजस्वी औ ब्रह्मवेत्ताभये एकदत्तात्रेय दूसरे दुर्वासा औ इनदोनोंसे छोटी एक ब्रह्मवादिनी औ अति सुशीला कन्या भी भई उसके दोगोत्रों में श्याव, प्रत्वस, ववल्गु औ गह्वर ये चार प्रसिद्ध पुरुषभये औ इनचारों से आत्रेयों के चारपत्त भये कश्यप, नारद, पर्वत औ अनुद्रूत ये चार मानस पुत्रब्रह्माजीके हैं नारदजी ने वशिष्ठजीको अरुन्धती व्याही तारकासुरके युद्धमें सबलोक अनावृष्टि से पीड़ित भये तब वशिष्ठजी ने अन्न, जल, फल, मूल, ओषधी आदि से प्रजा की रत्ता करी वशिष्ठजी ने अरुन्धती में शक्ति आदि सौ पुत्र उत्पन्न किये औ अदृश्यन्ती नाम भार्या में शक्ति से पराशर नामक पुत्रउत्पन्न भये शक्ति को तो रुधिर नाम राक्षस ने भक्षण करलिया पराशर से सत्यवतीमें विष्णुजी के अवतार श्रीवेदव्यासजी उत्पन्नभये वेदव्यास जी से अरणी में शुकदेव औ उपमन्युभये शुकदेवजी से पीवरी में भूरिश्रवा, प्रभु, शम्भु, कृष्ण, गौर औ कीर्त्तिमती नाम कन्या उत्पन्नभई जो अणुहको व्याहीगई औ बड़ा प्रतापी जिसका पुत्र ब्रह्मदत्त भया श्वेत, कृष्ण, गौर, श्याम, धूम्र, अरुण, नील, औ बाद-

रिक ये आठ पराशरके पुत्र भये अब इन्द्र प्रमितिकी उत्पत्ति सुनो वशिष्ठजी से घृताचीनाम अप्सरा में कपिंजल उत्पन्न भया उसीको त्रिमूर्त्ति औ इन्द्र प्रमिति भी कहते हैं पृथुकी कन्यामें भद्र उत्पन्नभया भद्रके वसु औ वसुके पुत्र उपमन्युभये औ उपमन्युका वंश औपमन्यवकहाया वशिष्ठसे उत्पन्नहुये कौडिन्य औ एकार्षेय सब वशिष्ठ कहाये ये दश पुत्रवशिष्ठजीके भये ये ब्रह्माजी के दशमानस पुत्रों के वंशहमने वर्णनकिये इनकेही पुत्र पौत्रों से सब जगत् व्याप्त होरहा है॥

चौंसठवांअध्याय॥

ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी वशिष्ठजी के पुत्रों को राक्षस ने क्यों भक्षण किया यह आप वर्णन करें यह सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो विश्वामित्र मुनि के शाप से वशिष्ठजी के यजमान कल्माषपाद नामक राजा के शरीर में प्रवेश करके रुधिर नामक राक्षस विश्वामित्रजीकी ही प्रेरणासे शक्ति आदि वशिष्ठजी के सौ पुत्रों को भक्षण करगया वशिष्ठजी भी यह वृत्तान्त सुन अरुन्धती सहित हा पुत्र २ यह विलाप करते हुये मूर्च्छित हो भूमि पर गिर परे औ मूर्च्छा खुलने पर अति दुःखी होय वंश नष्ट भया जान प्राण त्याग करने के लिये पर्वत के शिखरपरचढ़ भूमिपर गिरे वशिष्ठजी को गिरते देख पृथ्वीने स्त्री का रूपधार उनको अपने कर कमलोंमेंही लिया भूमिपर न गिरने दिया इसी अवसर में शक्ति की स्त्री आय वशिष्ठजी

से कहनेलगी कि महाराज आप शरीर न त्यागें मेरे गर्भ में बालक है वह आपका पौत्र सब कार्य सिद्ध करनेहारा उत्पन्न होगा उसीपर आप सन्तोष करें औ इसशरीर को त्याग न करें इतनाकह अपने श्वशुरको उठाया औ जललेकर नेत्र धोये औ इसीभांति अरुन्धती का भी आश्वासन किया इस भांति स्नुषाका वाक्य सुन चैतन्य हो फिरभी अरुन्धती सहित विलाप करने लगे तब तो शक्तिकीपत्नी अदृश्यन्ती के गर्भ में जो बालक था उसने एक ऋचापढ़ी जिस भांति विष्णुजी के नाभिकमल में ब्रह्माजी पढ़ते हैं वह सुन वशिष्ठजी विचार करनेलगे कि यह वेदकी ऋचा किसनेपढ़ी इस अवसर में विष्णुभगवान् ने आकाश में स्थित होकर वशिष्ठजी से कहा कि हे पुत्र वशिष्ठ यह ऋचा तेरे पौत्र ने पढ़ी है हमारे तुल्य शक्तिमान् तुम्हारे पौत्र उत्पन्न होगा इसलिये शोक मत करो रुद्रका भक्त तुम्हारा पौत्र होगा औ रुद्र पूजा के प्रभावसे ही तुम्हारे कुलका उद्धार होगा इतना कह भगवान् वहां हीं अन्तर्द्धान भये वशिष्ठजी भी भगवान् को प्रणाम कर अपनी स्नुषा के उदर को स्पर्शकरते भये औ फिर अपने पुत्रों का स्मरणकर विलाप करनेलगे कि हेपौत्र तू शीघ्र आव तेरा मुख देख हम अरुन्धती सहित अपने पुत्र शक्तिके पास जायँ यह वशिष्ठजी का वचन सुन उनकी स्नुषा भी दुःख से अपना पेट पीटने लगी औ विलाप करती हुई भूमि पर गिर पड़ी तब तो वशिष्ठजी औ अरुन्धतीने उसको उठाया औ कह-

ने लगे कि हे मूढे तू इस भांति गर्भाशय ताड़न कर वशिष्ठ के कुलका संहारही किया चाहती है तेरे पुत्रका मुख देखने की आशासेही हमने यह शरीर धार रक्खा है इसलिये तू सब प्रकारसे इस बालककी रक्षाकर॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इसभांति अपनी स्नुषाको उपालम्भ दिया औ कहा कि हम दोनों का तथा इस गर्भ में स्थित बालक का जीवन तेरे आधीन है इसलिये हे पतिव्रते तू अपने शरीर की रक्षा भली भांति कर इतना सुन अदृश्यंती कहने लगी कि महाराज जो मेरे शरीर की रक्षासे ही आप कल्याण समझते हैं तो मैं इस दुःख भागी अमङ्गल शरीरकी यथा कथंचित् रक्षा करूंगी परन्तु पतिके वियोगसे मेरा हृदय दग्ध होगयाहै बड़ा आश्चर्य है कि साक्षात् ब्रह्माजीके पुत्र आप औ आपकी स्नुषाको इतना दुःख प्राप्तहोय अब आपही मेरी रक्षाकरें पिता, माता, पुत्र, पौत्र, श्वशुर आदि कोई भी पतिके तुल्य सुख देनेहारा नहीं होता पण्डित लोग कहते हैं कि पुरुष का आधादेह नारी होतीहै यहभी मुझे मिथ्याही देखपड़ता है क्योंकि आपके पुत्र शक्ति तो परलोक को गये औ मैं मंदभागिनी यहांहीं दुःख भोगरहीहूं मेरे प्राण बड़े कठिन हैं जो पति विना क्षणमात्रभी रहें इस भांति स्नुषाके विलापसुन वशिष्ठजीने अपने आश्रममें आने का विचार किया औ अरुंधती तथा अदृश्यंती को साथ ले किसी प्रकार अपने आश्रम में पहुँचे औ अदृश्यंती भी अपने वंशके उद्धारके लिये गर्भकी भली

भांति रक्षाकरने लगीं दशवें महीने में उसके पुत्र उत्पन्न भया जिस प्रकार अरुंधती के गर्भमें शक्ति अदिति से विष्णु और स्वाहा से स्कंद उत्पन्नभये इसी प्रकार यह बालक भी बड़ा तेजस्वी उत्पन्न भया पुत्र उत्पन्न होतेही शक्ति भी दुःख से छूट पितरों के तुल्य भया औ पितृलोक में अपने भाइयों सहित सुखसे निवास करने लगा सब पितर औ मुनि नृत्य करनेलगे स्वर्गसे देवताओंने पुष्पवृष्टिकरी जिस भांति अंडसे ब्रह्माजी उत्पन्न भये अथवा मेघोंमें से सूर्य भगवान् निकले इसी प्रकार वह बालक भी बड़ा चमत्कारी भया औ नाम उसका पराशर रक्खा उस बालक के देखने से औ शक्तिका स्मरण होने से अरुंधती औ अदृश्यंती को सुखदुःख साथही भये औ दोनों विलाप करने लगीं कि हे वशिष्ठ के पुत्र तू कहांगया इस अपने पुत्रका कमल तुल्य मुखदेख इसप्रकार के विलापसुन वशिष्ठजीने उन को समझाया औ अपनी स्नुषा से कहा कि शोकदूर कर इस बालकका पालन करो यह वशिष्ठजीकी आज्ञा पाय अदृश्यंतीभी सब दुःख भूल अपने पुत्रके पालन करने में सावधान भई एकदिन वह बालक भूषणों से विना अपनी माताको देख कहनेलगा कि हे माता ये तुम्हारे अंग भूषणों के विना शोभित नहींहोते तो क्या कारणहै कि विधवाकी भांति तुमने सब भूषण त्याग रक्खे हैं इसकाकारण मुझसे कहो यह पुत्रका वचन सुन अदृश्यंतीने शुभ अशुभ कुछभी न कहा तब फिर पराशर ने कहा कि हे माता मेरेपिता कहां हैं तू मुझे क्यों

नहीं बताती तबतो अदृश्यंती ने कहा कि हे पुत्र तेरे पिताको राक्षसने भक्षण करलिया इतना कह व्याकुल हो भूमिपर गिरी वशिष्ठ औ अरुंधती औ उस आश्रम में रहनेहारे सबमुनि उस बालकका वचन सुन विलाप करने लगे यह सुन पराशरने अपनी माता से कहा कि हे माता शोकमतकर देवताओं के प्रभु श्रीशिवजी का आराधनकर मैं अपने पिताका दर्शन तुमको कराऊंगा औ त्रैलोक्य को दग्ध करूंगा यह सुन प्रसन्नहो उस की माताने कहा कि हे पुत्र जो ऐसा होसक्ताहै तो तू अभी सदाशिवके आराधन का आरम्भकर तब वशिष्ठ जीने कहा कि हे पुत्र राक्षसों का नाश होनेके लिये तप कर त्रैलोक्यने तेरा क्या अपराध किया है यह अपने पितामहका वचन सुन पराशर अपनी माता औ वशिष्ठ तथा अरुंधती को प्रणामकर एकांत में जाय मृत्तिका का शिवलिंग बनाय शिवसूक्त, त्र्यम्बक, त्वरित, रुद्र, शिवसंकल्प, नीलरुद्र,रुद्र, वामीय, पवमान, होतालिंग सूक्त औ अथर्वशिर आदि वैदिक मंत्रों से यथाविधि श्रीमहादेवजी का पूजनकर अष्टांग अर्घ्य देकर श्री महादेवजीसे पराशर मुनि प्रार्थना करनेलगे कि हेनाथ रुधिर नामक दैत्यने मेरे पिताको उनके भाइयों सहित भक्षण करलिया अब मैं अपने पिता तथा उनके सौ भाइयों का दर्शनकिया चाहताहूं इतनी प्रार्थनाकर हा रुद्र हा रुद्र यह कहता हुआ भूमिपर व्याकुलहो गिर पड़ा औ अश्रुपात करता हुआ रोनेलगा उस बालक की यह दशा देख श्रीमहादेवजीने जगज्जननी श्रीपा-

र्वती से कहा कि देखो यह बालक अतिभक्ति से मेरा स्मरण औ आराधन कर रहाहै पार्वतीजी ने भी उस बालकको देखा कि अश्रुपातसे नेत्र व्याकुलहो रहेहैं औ हा रुद्र हा रुद्र यह कहरहाहै तब श्रीमहादेवजी से कहा कि महाराज आप इस बालकपर अनुग्रह करें औ जो यह मांगताहै इसको देवें श्रीसदाशिवजी ने कहा कि हे पार्वती यह बालक हमारा दर्शन करने के योग्य है इस-लिये इसको दर्शन देनाचाहिये इतना कह महादेव पा-र्वती उस बालकके समीप जाय दर्शन देतेभये वह भी महादेवजी का दर्शन पाय आनन्दमें मग्नहो उनके चरणों पर गिरा फिर पार्वतीजी औ नंदी के चरणों पर प्रणामकर प्रार्थना करनेलगा कि महाराज मेरे तुल्य देव दानव कोई भी नहीं आज मैं सबसे अधिकहूं कि मेरी रक्षाके लिये साक्षात् आपने अनुग्रह किया मेरा जन्म सफलहै इसी अवसरमें सूर्यमण्डल के तुल्य प्र-काशवान् विमानपर बैठेहुये उनके भाइयों करके सहित अपने पिताको देखा औ बार बार प्रणामकर पराशर अति मुदित भया महादेवजी ने शक्ति मुनि से कहा कि हे वशिष्ठ के पुत्र अपने माता, पिता, पुत्र औ स्त्री को देखो यह महादेवजी की आज्ञा पाय शक्तिमुनि वशिष्ठजी को तथा अपनी माता अरुन्धती को प्रणाम करतेभये औ पराशर को कहनेलगे कि हे पुत्र तू बड़ा महात्मा है तैंने मेरी रक्षाकरी आजतेरा मुख देख सब अणिमादि सिद्धि मानो मुझे मिलीं तैंने सब कुलका उ-द्धार किया अबतू हमारी आज्ञासे अपनी माता तथा

अरुन्धती औ वशिष्ठजी की सेवा में तत्परहो औ इन की सब भांति रक्षाकर श्रेष्ठपुरुषों ने कहा है कि पुत्रके जन्मसे उत्तमलोक मिलते हैं सो ठीकही है अब सब जगत् के स्वामी श्री महादेवजी से तू अपना अभीष्ट वरमांग औ हमभी परमेश्वरको प्रणामकर अपनेभाइयों समेत उत्तम लोकको जाते हैं इतना अपने पुत्रपराशरसे कह अपनी स्त्री को आश्वासन कर माता पिता औ श्रीमहादेव जी को प्रणाम कर शक्ति मुनि कैलास को पधारे औ पराशरने भी भक्ति से स्तुतिकर महादेव जी को प्रसन्न किया महादेव जी भी प्रसन्न हो उसको वरदे वहांहीं अंतर्द्धान भये महादेव जी के अंतर्द्धान होने के अनन्तर मंत्रके सामर्थ्य से पराशर राक्षसों के कुलको दग्ध करने लगा तब उसको वशिष्ठजी ने कहाकि हे पुत्र इस क्रोधको त्याग राक्षसोंका कुछ अपराध नहीं तेरे पिताका यही भावीथा हे पुत्र कौन किसको मार सक्ताहै सब अपनी २ प्रारब्ध के अनुसार सुख दुःख आदि पातेहैं मूढोंकोही अधिक क्रोध होताहै बुद्धिमान् कभी क्रोध वश नहीं होते बडे २ कष्टों से संचित किये हुये तप औ यश का क्रोधनाश करदेता है इसालिये राक्षसों के संहार करने हारे इस यज्ञ को समाप्तकरो राक्षस निरपराधी हैं औ साधु पुरुष क्षमावान् हुआ करते हैं इतना वशिष्ठजी से सुन पराशर मुनिने राक्षसों के संहार करने से अपने चित्तको हटाया औ वशिष्ठ जीभी उनपर बहुत प्रसन्न भये इसी अवसरमें वहां पुलस्त्य मुनि आये वशिष्ठ जीने उनका बहुत सत्कार किया औ

उत्तम आसनपर बैठाया थोड़ीदेर विश्रामकर पुलस्त्य जीने पराशर मुनि से कहाकि हे पुत्र इस वड़े भारी वैर में भी तैंने वशिष्ठजीके वचन से क्षमाकरी औ हमारेपुत्र राक्षसों का संहार न किया इस कारणसे हमवहुत प्रसन्न हैं अवहम तुमको वरदते हैं पुराण संहिता करनेकातुम को सामर्थ्य होगा औ देवताओं का परमार्थ तुम ठीक २ जानोगे औ कर्मकी प्रवृत्ति तथा निवृत्ति में तुम्हारी बुद्धि निर्मल औ निःसंदेह रहेगी यह सुनवशिष्ठ जीने भी पराशरसे कहा कि पुलस्त्यजी जैसा कहते हैं वैसाही होगा पराशर मुनिभी इसभांति वशिष्ठ औ पुलस्त्यजी का अनुग्रह पाय विष्णु पुराण रचते भये जो सब पुरुषार्थ देनेहारा वेदार्थ करके युक्त चौथापुराण गिना गया औ जिसके छः अंश औ छःहजारही श्लोक हैं हे मुनीश्वरो यह हमने वाशिष्ठोंकी उत्पत्ति संक्षेपसे वर्णनकरी औ शक्तिके पुत्र पराशरका प्रभावभी सुनाया अवआप क्या सुनना चाहते हैं सो कहें॥

पैंसठवां अध्याय॥

शौनकादि ऋषि कहते भये कि हेसूतजी अव आप सूर्य्य वंश औ चन्द्रवंशका वर्णन कीजिये॥

यह मुनियों का वचन सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो अदितिके पुत्र आदित्यभये औ आदित्यको संज्ञा राज्ञी प्रभा औ छाया ये चार स्त्री व्याहीगईं इन में त्वष्टा की कन्या संज्ञामें मनु उत्पन्नभये औ राज्ञीमें यम औ यमुना तथा रेवत प्रभाके प्रभात भया औ छा-

याके पुत्र सावर्णि, शनि औ तपती तथा विष्टि ये दो कन्या भईं छाया अपने पुत्रसेभी अधिक स्नेह मनुमें रखती थी परंतु यमको क्षमा न होतीथी औ मनु सब बातों में क्षमा किया करता था एकदिन छायाको मनु से स्नेह करते देख यमराज को बड़ाक्रोधभया औ एक लात छाया के मारी छायाने भी उसको शापदिया उससे यम-राजका एकचरण गलगया औ कृमि पड़गये तब यम-राजने अतिदुःखी होय गोकर्णक्षेत्र में जाय जलका फेन औ वायुही पानकरके कई हजार वर्षतक तप किया औ श्री शंकर को प्रसन्न करा महादेव जीने भी प्रसन्न हो विमाता के शाप से यमराज को मुक्तकर पितरोंका स्वामी औ लोकपाल बनाया त्वष्टाकी कन्या सूर्य भगवान् का तेज न सहसकी तब अपनी छायाकी एक दूसरी स्त्री रच कर सूर्य भगवान् के समीप रक्खी औ आप घोड़ी का रूपधार तप करने चलीगई कुछ दिन में सूर्य भगवान् भी यह माया जान अश्वका रूपधार संज्ञाके समीप गये औ उससे संगाकिया तब देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार दो उत्पन्न भये संज्ञा के पिता त्वष्टाने सूर्य भग-वान् को भ्रमियंत्र अर्थात् खराद पर चढ़ायकर उनका अधिक तेज छीन लिया औ उसीतेज करके सुदर्शन-चक्र रचा जो शिवजी के अनुग्रह से विष्णु भगवान् को मिला सूर्य भगवान् के प्रथम पुत्र मनु के नौ पुत्र भये इक्ष्वाकु, सुद्युम्न, धृष्णु, शर्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, अरिष्ट, करूष औ पृषध्र इलानाम कन्या व-शिष्ठजी के अनुग्रह से पुरुषभई औ उसकानाम सुद्युम्न

भया वह शरवणमें गया औ शिवजीकी आज्ञासे चंद्र वंशकी वृद्धिके लिये फिर स्त्री होगया इक्ष्वाकुके अश्वमेध करके इला किंपुरुषभया अर्थात् एकमहीने पुरुष बनारहता औ एकमहीना स्त्री होजाता चंद्रमाका पुत्र बुध उसको देख अति मोहित भया औ अपने घरमें इलाको रक्खा उसमें परम शिवभक्त पुरूरवानाम पुत्र उत्पन्न भया जिससे चंद्रवंश चला सुद्युम्नके तीन पुत्र भये उत्कल, गय औ विनताश्व उत्कल के नाम से उत्कल देश बसा विनताश्व ने पश्चिममें अपना राज्य जमाया औ पितरोंको मुक्ति देनेहारी गयापुरी गयने बसाई मनुका बड़ा पुत्र इक्ष्वाकु मध्यदेश का राजा भया सुद्युम्न को कन्या होजाने से राज्यका पूराभाग न मिला वशिष्ठजीकी आज्ञा से केवल प्रतिष्ठानपुर में थोड़ासा राज्यमिला वह उसने अपने पुत्र पुरूरवा को दे दिया इक्ष्वाकु के सौ पुत्र भये उनमें सबसे बड़ा विकुक्षिथा विकुक्षि के पन्द्रहपुत्र उनमें ज्येष्ठपुत्र ककुत्स्थ भया ककुत्स्थका पुत्र सुयोधन सुयोधन से पृथु पृथुसे विश्वक विश्वकसे आर्द्रक आर्द्रकका पुत्र युवनाश्व औ युवनाश्व का श्रावस्त भया जिसने गौड़ देश में अपने नाम से श्रावस्ती नाम नगरी बसाई श्रावस्त का पुत्र वंशक वंशक का बृहदश्व बृहदश्वका कुवलयाश्व भया जिसका दूसरा नाम धुन्धुदैत्य के मारने से धुन्धुमार भी भया धुन्धुमारके बड़े पराक्रमी तीनपुत्र भये दृढ़ाश्व, चण्डाश्व औ कपिलाश्व दृढ़ाश्व का पुत्र प्रमोद, प्रमोदकाहर्यश्व, हर्यश्व का निकुम्भ, निकुम्भ का संहताश्व भया,

संहताश्व के कृशाश्व औ रणाश्व ये दो पुत्रभये रणा-श्वका पुत्र युवनाश्व औ युवनाश्व का मान्धाता भया मान्धाता के पुरुकुत्स अंबरीष औ मुचुकुन्द ये तीन पुत्र भये अंबरीष का पुत्र दूसरा युवनाश्व भया औ युवनाश्व का पुत्र हरित भया पुरुकुत्स का पुत्र नर्मदा में त्रसदस्यु नाम उत्पन्न भया त्रसदस्यु का संभूति संभूति का पुत्र विष्णुवृद्धभया औ दूसरा पुत्र अनरण्यभया जो दिग्विजय के समय रावण ने मार दिया अनरण्य का पुत्र वृहदश्व औ वृहदश्व का पुत्र हर्यश्व औ हर्यश्व से दृषद्वती में वसुमना नामक राजा उत्पन्न भया वसुमना के त्रिधन्वा नामक पुत्रभया जो ब्रह्माजी के पुत्र तण्डिऋषिका शिष्य होय औ उनकी आज्ञा से हज़ार अश्वमेधका फलपाय शिव जी का गण भया त्रि-धन्वा को चिन्ताभई कि मुझे अश्वमेध कौन करावेतब उसको ब्रह्माजीके पुत्र तण्डिऋषि मिले जो ब्रह्माजीके कहे हुये सहस्रनाम करके शिवजीको प्रसन्न कर उनके गण होगये हैं वही सहस्रनाम उन्होंने राजा सुधन्वा को भी उपदेश किया राजा भी इसके जप से शिवजी का गण भया॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी जो सहस्र नाम तण्डिने राजा को उपदेश किया वह आप कृपाकर हम को भी सुनावें सूतजी बोले कि हेमुनीश्व-रो सम्पूर्ण जीवों के आत्मभूत श्रीसदाशिव का अष्टो-त्तर सहस्रनाम हम आप को श्रवण कराते हैं जिस के पाठ करनेहारा पुरुष अवश्यही शिवजी का गण होय॥

ॐस्थिरःस्थाणुःप्रभुर्भानुः प्रवरोवरदोवरः। सर्वात्मा सर्वविख्यातःशर्वःसर्वकरोभवः। जटीदण्डीशिखंडीच सर्वगःसर्वभावनः १ हरिश्चहरिणाक्षश्चसर्वभूतहर स्स्मृतः। प्रवृत्तिश्चनिवृत्तिश्च शांतात्माशाश्वतोध्रुवः२ श्मशानवासीभगवान्खचरोगोचरोऽर्दनः। अभिवाद्यो महाकर्मातपस्वीभूतधारणः ३ उन्मत्तवेशप्रच्छन्नःस र्वलोकःप्रजापतिः। महारूपोमहाकायःसर्वरूपोमहाय शाः४ महात्मासर्वभूतश्चविरूपोवामनोनरः। लोकपा लोऽन्तर्हितात्माप्रसादोभयदोविभुः ५ पवित्रश्चमहां श्चैवनियतोनियताश्रयः। स्वयम्भूःसर्वकर्माचआदि रादिकरोनिधिः ६ सहस्राक्षोविशालाक्षःसोमोनक्षत्रसा धकः। चन्द्रःसूर्यःशनिःकेतुर्ग्रहोग्रहपतिर्मतः ७ राजा राज्योदयाकर्त्तामृगबाणार्पणोघनः। महातपादीर्घतपा अदृश्योधनसाधकः ८ संवत्सरःकृतोमन्त्रःप्राणायामः परन्तपः। योगीयोगोमहाबीजोमहारेतामहाबलः ९ सुव र्णरेतास्सर्वज्ञःसुबीजोवृषवाहनः। दशबाहुस्त्वनिमिषो नीलकण्ठउमापतिः १० विश्वरूपःस्वयंश्रेष्ठोबलवीरोब लाग्रणीः। गणकर्त्तागणपतिर्दिग्वासाःकाम्यएवच ११ मंत्रवित्परमोमन्त्रःसर्वभावकरोहरः। कमण्डलुधरोधन्वी बाणहस्तःकपालवान् १२ शरीशतघ्नीखड्गीचपट्टिशी चायुधीमहान्। अजश्चमृगरूपश्च तेजस्तेजस्करोनि धिः १३ उष्णीषीचसुवक्त्रश्चउदग्रोविनतस्तथा। दी र्घश्चहरिकेशश्च सुतीर्थःकृष्णएवच १४ शृगालरूपः सर्वार्थो मुण्डःसर्वशुभङ्करः। सिंहशार्दूलरूपश्च गन्ध कारीकपर्द्यपि १५ ऊर्ध्वरेताश्चोर्ध्वलिंगी ऊर्ध्वशायीनभ

स्तलः। त्रिजटीचीरवासाश्च रुद्रःसेनापतिर्विभुः १६
अहोरात्रंचनक्तंच तिग्ममन्युःसुवर्चसः। गजहादैत्यहा
कालो लोकधातागुणाकरः १७ सिंहशार्दूलरूपाणा मा
र्द्रचर्माम्बरन्धरः। कालयोगीमहानादः सर्वावासश्चतुष्प
थः १८ निशाचरःप्रेतचारी सर्वदर्शीमहेश्वरः। बहु
भूतोबहुधनः सर्वसारोऽमृतेश्वरः १९ नृत्यप्रियोनित्य
नृत्यो नर्तनःसर्वसाधकः। सकार्मुकोमहाबाहुर्महाघोरो
महातपाः २० [illegible] नित्योगिरि[illegible]
सहस्रहस्तो[illegible] २१ अधर्ष
णोमर्षणात्मा यज्ञहाकामनाशनः। दक्षहापरिचारीचप्रह
सोमध्यमस्तथा २२ तेजोऽपहारीबलवान् विदितोऽभ्यु
दितोबहुः गम्भीरघोषोयोगात्मायज्ञहाकामनाशनः २३
गम्भीररोषोगम्भीरो गम्भीरबलवाहनः। न्यग्रोधरूपो
न्यग्रोधोविश्वकर्माचविश्वभुक् २४ तीक्ष्णोपायश्चहर्य
श्वः सहायःकर्मकालवित्। विष्णुःप्रसादितोयज्ञःसमुद्रो
वडवामुखः २५ हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्माहुता
शनः। उग्रतेजामहातेजा जयोविजयकालवित् २६
ज्योतिषामयनंसिद्धिः संधिविग्रहएवच। खड्गीशङ्खी
जटीज्वाली खचरोद्युचरोबली २७ वैणवीपणवीकालः
कालकण्ठःकटंकटः। नक्षत्रविग्रहोभावो निर्भावःसर्वतो
मुखः २८ विमोचनस्तुशरणो हिरण्यःकवचोद्भवः। मे
खलाकृतिरूपश्च जलाचारस्स्तुतस्तथा २९ वीणीचप
णवीतालीनालीकलिकटुस्तथा। सर्वतूर्यनिनादीच
सर्वव्याप्यपरिग्रहः ३० व्यालरूपीबिलवासी गुहावा
सीतरङ्गवित्। वृक्षःश्रीमालकर्माचसर्वसंधविमोचनः ३१

वन्धनस्तुसुरेन्द्राणां युधिशत्रुविनाशनः । सखाप्रवासो दुर्वापः सर्वसाधुनिषेवितः ३२ प्रस्कंदोऽप्यविभावश्च तुल्योयज्ञविभागवित् । सर्ववासःसर्वचारी दुर्वासावास वोमतः ३३ हैमोहेमकरोयज्ञः सर्वधारीधरोत्तमः । आकाशोनिर्विरूपश्च विवासाउरगःखगः ३४ भिक्षुश्चभिक्षुरूपीच रौद्ररूपःसुरूपवान् । वसुरेताःसुवर्चस्वीवसुवेगोमहाबलः ३५ मनोवेगोनिशाचारः सर्वलोकशुभप्रदः । सर्वावासीत्रयीवासीउपदेशकरोधरः ३६ मुनिरात्मामुनिर्लोकःसभाग्यश्चसहस्रभुक् । पक्षीचपक्षरूपश्च अतिदीप्तोनिशाकरः ३७ समीरोदमनाकारोह्यर्थोह्यर्थकरोवशः । वासुदेवश्चदेवश्चवामदेवश्चवामनः ३८ सिद्धियोगापहारीचसिद्धःसर्वार्थसाधकः । अक्षुण्णःक्षुण्णरूपश्चवृषणोमृदुरव्ययः ३९ महासेनोविशाखश्च षष्टिभागोगवांपतिः । चक्रहस्तस्तुविष्टम्भीमूलस्तम्भनएवच ४० ऋतुर्ऋतुकरस्तालोमधुर्मधुकरोवरः । वानस्पत्योवाजसनोनित्यमाश्रमपूजितः ४१ ब्रह्मचारीलोकचारी सर्वचारीसुचारवित् । ईशानईश्वरःकालोनिशाचारीह्यनेकदृक् ४२ निमित्तस्थोनिमित्तंच नन्दिर्नन्दिकरोहरः । नन्दीश्वरःसुनन्दीच नन्दनोविषमर्दनः ४३ भगहारीनियन्ताच कालोलोकपितामहः । चतुर्मुखोमहालिङ्गश्चारुलिङ्गस्तथैवच ४४ लिङ्गाध्यक्षःसुराध्यक्षः कालाध्यक्षोयुगावहः । वीजाध्यक्षोवीजकर्त्ता अध्यात्मानुगतोवलः ४५ इतिहासश्चकल्पश्च दमनोजगदीश्वरः । दम्भोदंभकरोदाता वंशोवंशकरःकलिः ४६ लोककर्त्तापशुपतिर्महाकर्त्ताह्यधोक्षजः । अक्षरंपरमंब्रह्म

स्तलः। त्रिजटीचीरवासाश्च रुद्रःसेनापतिर्विभुः १६
अहोरात्रंचनक्तंच तिग्ममन्युःसुवर्चसः। गजहादैत्यहा
कालो लोकधातागुणाकरः १७ सिंहशार्दूलरूपाणामा
र्द्रचर्माम्बरन्धरः। कालयोगीमहानादःसर्वावासश्चतुष्प
थः १८ निशाचरःप्रेतचारी सर्वदर्शीमहेश्वरः। बहु
भूतोबहुधनः सर्वसारोऽमृतेश्वरः १९ नृत्यप्रियोनित्य
नृत्यो नर्तनःसर्वसाधकः। सकार्मुकोमहाबाहुर्महाघोरो
महातपाः २० महाशरोमहापाशो नित्योगिरिचरोमतः।
सहस्रहस्तोविजयो व्यवसायोह्यनिन्दितः २१ अमर्ष
णोमर्षणात्मा यज्ञहाकामनाशनः। दक्षहापरिचारीचप्रह
सोमध्यमस्तथा २२ तेजोऽपहारीबलवान् विदितोऽभ्यु
दितोबहुः गम्भीरघोषोयोगात्मायज्ञहाकामनाशनः २३
गम्भीररोषोगम्भीरो गम्भीरबलवाहनः। न्यग्रोधरूपो
न्यग्रोधोविश्वकर्माचविश्वभुक् २४ तीक्ष्णोपायश्चहर्य
श्वः सहायःकर्मकालवित्। विष्णुःप्रसादितोयज्ञः समुद्रो
वडवामुखः २५ हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्माहुता
शनः। उग्रतेजामहातेजा जयोविजयकालवित् २६
ज्योतिषामयनंसिद्धिः संधिर्विग्रहएवच। खड्गीशङ्खी
जटीज्वाली खचरोद्युचरोबली २७ वैणवीपणवीकालः
कालकण्ठःकटंकटः। नक्षत्रविग्रहोभावो निभावःसर्वतो
मुखः २८ विमोचनस्तुशरणं हिरण्यःकवचोद्भवः। मे
खलाकृतिरूपश्च जलाचारस्तुतस्तथा २९ वीणीचप
णवीतालीनालीकलिकटुस्तथा। सर्वतूर्यनिनादीच
सर्वव्याप्यपरिग्रहः ३० व्यालरूपीबिलावासी गुहावा
सीतरङ्गवित्। वृक्षः श्रीमालकर्माचसर्वसंघविमोचनः ३१

बन्धनस्तुसुरेन्द्राणां युधिशत्रुविनाशनः । सखाप्रवासो
दुर्वापः सर्वसाधुनिषेवितः ३२ प्रस्कंदोऽप्यविभावश्च
तुल्योयज्ञविभागवित् । सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासावास
वोमतः ३३ हैमोहेमकरोयज्ञः सर्वधारीधरोत्तमः । आ
काशोनिर्विरूपश्च विवासाउरगः खगः ३४ भिक्षुश्चभि
क्षुरूपीच रौद्ररूपः सुरूपवान् । वसुरेताः सुवर्चस्वीवसु
वेगोमहाबलः ३५ मनोवेगोनिशाचारः सर्वलोकशुभप्र
दः । सर्वावासीत्रयीवासीउपदेशकरोधरः ३६ मुनिरात्मा
मुनिर्लोकः सभाग्यश्चसहस्रभुक् । पक्षीचपक्षरूपश्च
अतिदीप्तोनिशाकरः ३७ समीरोदमनाकारोह्यर्थोह्यर्थ
करोवशः । वासुदेवश्चदेवश्चवामदेवश्चवामनः ३८
सिद्धियोगापहारीचसिद्धः सर्वार्थसाधकः । अक्षुण्णःक्षु
ण्णरूपश्चवृषणोमृदुरव्ययः ३९ महासेनोविशाखश्च
षष्टिभागोगवांपतिः । चक्रहस्तस्तुविष्टम्भीमूलस्तम्भ
नएवच ४० ऋतुर्ऋतुकरस्तालोमधुर्मधुकरोवरः । वा
नस्पत्योवाजसनोनित्यमाश्रमपूजितः ४१ ब्रह्मचारी
लोकचारीसर्वचारीसुचारवित् । ईशानईश्वरःकालो
निशाचारीह्यनेकदृक् ४२ निमित्तस्थोनिमित्तंच नन्दि
र्नन्दिकरोहरः । नन्दीश्वरःसुनन्दीच नन्दनोविषमर्दनः
४३ भगहारीनियन्ताच कालोलोकपितामहः । चतुर्मुखो
महालिङ्गश्चारुलिङ्गस्तथैवच ४४ लिङ्गाध्यक्षःसुरा
ध्यक्षः कालाध्यक्षोयुगावहः । बीजाध्यक्षो बीजकर्त्ता अ
ध्यात्मानुगतोबलः ४५ इतिहासश्चकल्पश्च दमनोज
गदीश्वरः । दम्भोदंभकरोदाता वंशोवंशकरःकलिः ४६
लोककर्त्तापशुपतिर्महाकर्त्ताह्यधोक्षजः । अक्षरंपरमंब्रह्म

बलवाञ्छुक्रएवच४७नित्योह्यनीशः शुद्धात्माशुद्धोमानो
गतिर्हविः।प्रसादस्तुबलोदर्पोदर्पणोहव्यमिन्द्रजित् ४८
वेदकारःसूत्रकारो विद्वांश्चपरमर्दनः। महामेघनिवासी
च महाघोरोवशीकरः ४९ अग्निज्वालोमहाज्वालःपरि
धूम्रावृतोरविः। विषण्णःशंकरोनित्योवर्चस्वीधूम्रलोच
नः ५० नीलस्तथांगलुप्तश्चशोभनोनरविग्रहः।स्वस्ति
स्वस्तिस्वभावश्च भोगीभोगकरोलघुः ५१ उत्संगश्च
महांगश्चमहागर्भःप्रतापवान् । कृष्णवर्णःसुवर्णश्च इ
न्द्रियःसर्ववर्णिकः ५२ महापादोमहाहस्तो महाकायो
महायशाः। महामूर्द्धामहामात्रोमहामित्रोनगालयः ५३
महास्कंधोमहाकर्णो महोष्ठश्चमहाहनुः।महानासोमहा
कण्ठोमहाग्रीवःश्मशानवान् ५४ महाबलोमहातेजाह्य
न्तरात्मामृगालयः। लंबितोष्ठश्चनिष्ठश्चमहामायःपयो
निधिः५५महादन्तोमहादंष्ट्रोमहाजिह्वोमहामुखः।महा
नखोमहारोमामहाकेशोमहाजटः ५६ असपत्नःप्रसाद
श्चप्रत्ययोगीतसाधकः। प्रस्वेदनोऽस्वेदनश्चआदिक
श्चमहामुनिः५७ वृषकोवृषकेतुश्च अनलोवायुवाहनः।
मंडलीमेरुवासश्च देववाहनएवच ५८ अथर्वशीर्षःसामा
स्यःऋक्सहस्रोर्जितेक्षणः।यजुःपादोभुजेगुह्यःप्रकाशो
जास्तथैवच ५९ अमोघार्थप्रसादश्चअंतर्भाव्यःसुदर्श
नः। उपहारःप्रियःसर्वःकनकःकांचनास्थितः६०नाभिर्न
दिकरोहर्म्यःपुष्करःस्थपतिस्थितः । सर्वशास्त्रोधनश्चा
द्योयज्ञोयज्वासमाहितः ६१ नगोनीलःकपिःकालोम
करःकालपूजितः। सगणोगणकारश्चभूतभावनसारथिः
६२ भस्मशायीभस्मगोप्ताभस्मभूततनुर्गणः। आगम

श्चविलोपश्चमहात्मासर्वपूजितः ६३ शुक्लःस्त्रीरूपसं
पन्नःशुचिर्भूतनिषेवितः। आश्रमस्थःकपोतस्थोविश्व
कर्मापतिर्विराट् ६४ विशालशाखस्ताम्रोष्ठोह्यंबुजालः
सुनिश्चितः। कपिलःकलशःस्थूलआयुधश्चैवरोमशः
६५ गंधर्वोह्यदितिस्तार्क्ष्योह्यविज्ञेयःसुशारदः। परश्व
धायुधोदेवोह्यर्थकारीसुबांधवः ६६ तुंबवीणोमहाकोप
ऊर्ध्वरेताजलेशयः। उग्रोवंशकरोवंशोवंशवादीह्यनिन्दि
तः ६७ सर्वांगरूपीमायावीसुहृदोह्यनिलोबलः। बंधनो
बंधकर्त्ताचसुबंधनविमोचनः ६८ राक्षसघ्नोऽथकामारि
र्महादंष्ट्रोमहायुधः। लंबितोलंबितोष्ठश्चलंबहस्तोवरप्रदः
६९ बहुस्त्वानिंदितःसर्वशंकरोऽथाप्यकोपनः। अमरेशो
महाघोरोविश्वदेवःसुरारिहा ७० अहिर्बुध्न्योनिर्ऋति
श्चचेकितानोहलीतथा। अजैकपाच्चकापालीशंकुमारो
महागिरिः ७१ धन्वंतरिर्धूम्रकेतुःसूर्योवैश्रवणस्तथा।
धाताविष्णुश्चशक्रश्चमित्रस्त्वष्टाधरोध्रुवः ७२ प्रवासः
पर्वतोवायुरर्यमासवितारविः। धृतिश्चैवविधाताचमांधा
ताभूतभावनः ७३ नीरस्तीर्थश्चभीमश्चसर्वकर्मागुणो
द्वहः। पद्मगर्भोमहागर्भश्चंद्रवक्रोनभोऽनघः ७४ बल
वांश्चोपशांतश्चपुराणःपुण्यकृत्तमः। क्रूरकर्त्ताक्रूरवासी
तनुरात्मामहौषधः ७५ सर्वाशयःसर्वचारीप्राणेशःप्राणि
नांपतिः। देवदेवःसुखोत्सिक्तःसदसत्सर्वरत्नवित् ७६
कैलासस्थोगुहावासीहिमवद्गिरिसंश्रयः। कुलहारीकुलक
र्त्ताबहुवित्तोबहुप्रजः ७७ प्राणेशोबंधकीवृक्षोनकुलश्चा
द्रिकस्तथा। ह्रस्वग्रीवोमहाजानुरलोलश्चमहौषधिः
७८ सिद्धांतकारीसिद्धार्थश्छंदोव्याकरणोद्भवः। सिंह

नादःसिंहदंष्ट्रःसिंहास्यःसिंहवाहनः ७६ प्रभावात्माज
गत्कालःकालःकंपीतरुस्तनुः ॥ सारंगोभूतचक्रांकके
तुमालीसुवेधकः ८० भूतालयोभूतपतिरहोरात्रोमलो
ऽमलः। वसुभृत्सर्वभूतात्मानिश्चलःसुविदुर्बुधः ८१ अ
सुहृत्सर्वभूतानांनिश्चलश्चलविद्बुधः। अमोघःसंयमो
हृष्टोभोजनःप्राणधारणः ८२ धृतिमान्मतिमांस्त्र्यक्षः
सुकृतस्तुयुधांपतिः। गोपालोगोपतिर्ग्रामीगोचर्मवसनो
हरः ८३ हिरण्यबाहुश्चतथागुहावासःप्रवेशनः। महा
मनामहाकामोचित्तकामोजितेंद्रियः ८४ गांधारश्चसु
रापश्चतापकर्मरतोहितः। महाभूतोभूतवृत्तोह्यप्सरोग
णसेवितः ८५ महाकेतुर्धराधातानैकतानरतःस्वरः।
अवेदनीयआवेद्यःसर्वगश्चसुखावहः ८६ तारणश्चार
णोधाताविधातापरिपूजितः। संयोगीवर्द्धनोवृद्धोगणको
ऽथगणाधिपः ८७ नित्योधातासहायश्चदेवासुरपतिः
पतिः। युक्तश्चयुक्तबाहुश्चसुदेवोऽपिसुपर्वणः ८८
आषाढश्चसुषाढश्चस्कंधदोहरितोहरः। वपुरावर्त्त
मानोऽन्योवपुःश्रेष्ठोमहावपुः ८९ शिरोविमर्शनःसर्व
लक्ष्यलक्षणभूषितः। अक्षयोरथगीतश्चसर्वभोगीमहा
बलः ९० साम्नायोऽथमहाम्नायस्तीर्थदेवोमहायशाः।
निर्जीवोजीवनोमंत्रोसुभगोबहुकर्कशः ९१ रत्नभूतोऽथ
रत्नांगोमहार्णवनिपातवित्। मूलंविशालोह्यमृतंव्यक्ता
ऽव्यक्तस्तपोनिधिः ९२ आरोहणोऽधिरोहश्चशीलधारी
महातपाः। महाकंठोमहायोगीयुगोयुगकरोहरिः ९३
युगरूपोमहारूपोवहनोगहनोनगः। न्यायोनिर्वापणोऽ
पादःपंडितोह्यचलोपमः ९४ बहुमालोमहामालःशिपि

विष्टःसुलोचनः। विस्तारोलवणःकूपःकुसुमांगःफलोद
यः ९५ ऋषभोवृषभोभंगोमणिविंवजटाधरः। इंदुर्वि
सर्गःसुमुखःशूरःसर्वायुधःसहः ९६ निवेदनःसुधाजातः
स्वर्गद्वारोमहाधनुः। गिरिवासोविसर्गश्चसर्वलक्षणल
क्षवित् ९७ गंधमालीचभगवाननंतःसर्वलक्षणः। संता
नोवहुलोवाहुःसकलःसर्वपावनः ९८ करस्थालीकपाली
चऊर्ध्वसंहननोयुवा। यंत्रतंत्रसुविख्यातोलोकःसर्वाश्र
योमृदुः ९९ मुण्डोविरूपोविकृतोदंडीकुंडीविकुर्वणः।
वार्यक्षःककुभोवज्रीदीप्ततेजाःसहस्रपात १०० सहस्रमू
र्द्धादेवेंद्रःसर्वदेवमयोगुरुः। सहस्रवाहुःसर्वांगःशरण्यः
सर्वलोककृत् १०१ पवित्रंत्रिमधुर्मंत्रःकनिष्ठःकृष्णपिं
गलः। ब्रह्मदंडविनिर्माताशतघ्नःशतपाशधृक् १०२
कलाकाष्ठालवोमात्रामुहूर्त्तोऽहःक्षपाक्षणः। विश्वक्षेत्र
प्रदोबीजंलिंगमाद्यस्तुनिर्मुखः १०३ सदसद्व्यक्तम
व्यक्तंपितामातापितामहः। स्वर्गद्वारंमोक्षद्वारंप्रजाद्वा
रंत्रिविष्टपः १०४ निर्वाणंहृदयश्चैवब्रह्मलोकःपराग
तिः। देवासुरविनिर्मातादेवासुरपरायणः १०५ देवासु
रगुरुर्देवोदेवासुरनमस्कृतः। देवासुरमहामात्रोदेवासुर
गणाश्रयः १०६ देवासुरगणाध्यक्षोदेवासुरगणाग्रणीः।
देवाधिदेवोदेवर्षिर्देवासुरवरप्रदः १०७ देवासुरेश्वरोवि
ष्णुर्देवासुरमहेश्वरः। सर्वदेवमयोऽचिंत्यो देवतात्मास्व
यंभवः १०८ उद्गतस्त्रिक्रमोवैद्योवरदोवरजोऽम्बरः। इज्यो
हस्तीतथाव्याघ्रो देवसिंहोमहर्षभः १०९ विवुधाग्र्यः
सुरश्रेष्ठःस्वर्गदेवस्तथोत्तमः। संयुक्तःशोभनोवक्ताआशा
नांप्रभवोऽव्ययः ११० गुरुःकांतोनिजःसर्गःपवित्रःसर्व

वाहनः ॥ शृंगीशृंगप्रियोबभ्रूराजराजोनिरामयः ११
१ अभिरामःसुशरणोनिरामःसर्वसाधनः ॥ ललाटाक्षोविश्व
देहो हारिणोब्रह्मवर्चसः ११२ स्थावराणांपतिश्चैवनिय
तेन्द्रियवर्तनः ॥ सिद्धार्थःसर्वभूतार्थोऽचिन्त्यःसत्यशुचि
व्रतः । ११३ व्रताधिपःपरंब्रह्म मुक्तानांपरमागतिः ।
विमुक्तोमुक्तकेशश्च श्रीमाञ्छ्रीवर्द्धनोजगत् ॥ ११४ ॥

इतिनामसहस्रंसमाप्तम् ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो त्रिधन्वा राजाको इस प्रकार सहस्रनामका उपदेशकर तण्डिमुनि कहते भये कि हेराजन् वह यज्ञपति सदाशिवकी हमने भक्ति से यह स्तुतिकिरी औ यहस्तोत्र हमने ब्रह्माजीसे पाया इतनाकहराजाको मुनिने सहस्रनामका उपदेशकिया राजाभी सहस्रनामके मिलतेही जगत् में विख्यातभया औदशहज़ार अश्वमेधके फलकोप्राप्तहो मुनिकेप्रभाव से शिवजी का गण होताभया इस स्तोत्र को जोपढ़े सुने अथवा ब्राह्मणों को श्रवण करावे वह निश्चय सहस्र अश्वमेध का फल पावे ब्रह्महत्या करनेहारा मद्यप गुरु स्त्री गामी सुवर्ण का चोर शरण में आये का घात करनेहारा माता पिताका घातक औ गर्भ हत्या करनेवाले इसी प्रकार और भी घोर पापोंका करनेवाला पुरुष [illegible] सहस्र [illegible] छूट शिवलोक में वास करै ॥

छियासठवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो इस भांति तण्डिऋषि के अनुग्रहसे हजार अश्वमेध का फल प्राप्तकर राजा त्रिधन्वातो शिवजीका गण होगया औ त्रय्यारुणनाम उसका पुत्र राज्य करने लगा त्रय्यारुण का पुत्र सत्यव्रत भया वह एक समय विदर्भदेश के राजा को मार उसकी स्त्री को हरलाया राजकुमार से बना यह पाप देख राजा त्रय्यारुण ने उसका त्याग करदिया तबतो वह व्याकुल हुआ औ हाथ जोड़ अपने पितासे विनती करी कि महाराज पाप तो मुझ से बनपड़ा औ आपने मुझे दण्ड भी यथार्थही दिया कि मेरा त्याग किया परन्तु अब मैं कहां जाऊं यह आप आज्ञा देवें राजाने उसका यह वचन सुन कहा कि रे दुष्ट नगर के बाहर चाण्डालों में जाकर निवास कर वह भी पिताकी आज्ञा पाय नगर के बाहर जाय कुटी बनाय चाण्डालों में रहनेलगा और राजा भी विरक्त हो राज छोड़ तप करने के लिये बन को गया इसी अवसर में विश्वामित्र मुनि आये और राज सूनादेख उसी सत्यव्रत को अभिषेक कर राजा बनाया औ सब देवता तथा वशिष्ठजी के देखतेही उससे अश्वमेध यज्ञ कराया औ अपने प्रभाव से स्वर्गको पठाया उसी का दूसरा नाम त्रिशंकु है केकयदेशके राजाकी कन्या सत्यव्रता नाम त्रिशंकु की रानी थी उससे बड़ा प्रतापी हरिश्चन्द्र नाम राजा उत्पन्नभया हरिश्चन्द्रका पुत्र रोहित रोहित का

हरित हरित का धुन्धु भया धुन्धु के विजय औ सुतेजा ये दो पुत्र भये बड़े पुत्रने सब राजाओं को जीता इससे उसका नाम विजय भया विजयका पुत्र रुचक रुचकका वृक वृकका बाहु औ बाहुका पुत्र परम धर्मात्मा राजा सगर भया सगरकी प्रभा औ भानुमती ये दो रानी थीं इन्होंने पुत्रकी कामनासे और्व अग्निका आराधन किया तब अग्नि के तुल्य और्वऋषिने भी प्रसन्न हो उनको वरदिया उनके वरसे प्रभाके साठ हजार पुत्र भये औ भानुमतीके वंशका करनेहारा एकही पुत्र भया वे साठ हजार तो पृथ्वी खोदते हुये विष्णुके अवतार कपिल जीके हुंकार से दग्ध भये औ भानुमतीका पुत्र असमंजस नाम राजा भया असमंजस का पुत्र अंशुमान् अंशुमान्का पुत्र दिलीप औदिलीपका पुत्र भगीरथ भया जो बड़ा उग्रतप कर भारतवर्ष में गङ्गाको लाया भगीरथका पुत्र श्रुत श्रुत का पुत्र परम पवित्र शिवभक्त नाभाग नामक हुआ नाभाग का अम्वरीष अम्वरीष का सिंधुद्वीपपुत्र भया इनके राज्य में प्रजा बहुत सुखीरही सिन्धुद्वीप का पुत्र अयुतायु अयुतायुका ऋतुपर्णपुत्रभया जो राजा नलका परम मित्रथा पुराणोंमें दो नल प्रसिद्धहैं एकतो निषध देशके राजा वीरसेन का पुत्र दूसरा इक्ष्वाकुके वंशमें भया ऋतुपर्णका पुत्र प्रजेश्वर सार्वभौम भया उसका पुत्र इन्द्रके समान सुदास भया सुदासका पुत्र मित्रसह भया जिसका नाम कल्माषपादभी है कल्माषपादकी रानी में अश्मक नाम पुत्र वशिष्ठजी ने उत्पन्न किया अश्मकसे रानी उत्तरा में मूलक नाम

पुत्रभया जो परशुरामजी के भयसे सदा रानियोंमें ही रहा करताथा मूलकका पुत्र दशरथ दशरथका शतरथ शतरथका इलविल इलविलका वृद्धशर्मा वृद्धशर्मा का पुत्र विश्वसह विश्वसहका पुत्र दिलीपभया जिसका दूसरानाम खट्वांगहै औ जिसने मुहूर्त्त भर आयुष पाय स्वर्गसे आय तीन अग्नि औ तीनलोक बुद्धि तथा सत्यकरके जीते खट्वांग का पुत्र दीर्घबाहु दीर्घबाहुका रघु रघुका अज अजका दशरथ औ दशरथके पुत्र बड़े प्रतापी औ धर्मात्मा राम लक्ष्मण भरत औ शत्रुघ्न ये चारभये इनमें सबसे बड़े रामचन्द्र बड़े तेजस्वी औ पराक्रमी भये जो युद्धमें रावणको मार दशहजारवर्षतक धर्मराज्य करतेभये औ जिनने अश्वमेधादि अनेक यज्ञ किये रामचन्द्रके पुत्र कुश औ लव ये दो भये कुशका पुत्र अतिथि अतिथिका निषध निषधका नल नलका नभ नभ का पुंडरीक पुंडरीकका क्षेमधन्वा क्षेमधन्वाका देवानीक देवानीकका अहीनर अहीनर का सहस्राश्व सहस्राश्व का चंद्रावलोक चंद्रावलोक का तारापीड़ तारापीड़का चंद्रगिरि चंद्रगिरिका भानुचंद्र भानुचंद्रका श्रुतायु श्रुतायुका वृहद्बल पुत्र भया जो भारतके घोरसंग्राम में अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के हाथसे मारागया ये इक्ष्वाकु वंशके प्रधान २ राजा वर्णन किये हैं ये सब अनेक यज्ञकरि औ पाशुपत योगपाय स्वर्ग को गये अब इस वंशके और भी कई राजाओं का वर्णन करते हैं राजा नृग ब्राह्मणके शापसे कृकलास अर्थात् गिरगट होगया उसके तीन पुत्र भये धृष्टधृष्टकेतु औ रणधृष्ट राजा श-

र्यातिके पुत्र आनर्त औ सुकन्या नाम पुत्री भई आनर्तका पुत्र रोचमान रोचमानका रेव रेवका रैवत औ ककुद्मी ये दो पुत्र भये ककुद्मी की कन्या रेवती भई जो वलदेवजीको व्याहीगई नरिष्यंतका पुत्र महावली जितात्मा भया औ नाभागका पुत्र परम विष्णुभक्त अम्बरीष भया अम्वरीषका ऋत ऋतका कृत कृतका पृषत भया करूषकी संतति कारुष कहाई पृषतने अपने गुरुच्यवन की धेनुधोखे से मारदी इसलिये ऋषिके शाप से शूद्र होगया दिष्टका पुत्र नाभाग नाभागका भलंदन भलंदन का पुत्र अजवाहन भया ये हमने संक्षेपसे मनुके पुत्र पौत्र वर्णन किये येही इक्ष्वाकु के भी पुत्र पौत्रहैं अव चन्द्रवंशी पुरूरवा का वंश वर्णन करते हैं॥

इला का पुत्र पुरूरवा जिसका हम प्रथम वर्णन करे चुके हैं वह यमुनाके उत्तरकी ओर प्रयागके समीप अपनी राजधानी प्रतिष्ठानपुरमें रहकर निष्कंटक राज्य करता भया उसके सातपुत्रथे आयु,मायु,अमायु,विश्वायु,सत्यायु,श्रुतायु औ शतायु ये सातों गंधर्वलोकमें प्रसिद्ध परमशिवभक्त उर्वशी नाम अप्सरासे उत्पन्न भये थे आयुषसे स्वर्भानुकी कन्या प्रभामें नहुष आदि पांच पुत्र भये इनमें सबसे बड़ा नहुष बड़ा धर्मात्मा औ जगद्विख्यात भया नहुषके छः पुत्र भये जो पितरोंकी कन्या विरजासे भये याति, ययाति, संयाति, आयाति, वियाति औ अंधक ये भी वड़े वीर औ कीर्त्तिमान्थे इनमें से याति तो ज्ञान पाय मुक्तभया औ ययाति ने शुक्राचार्य की कन्या देवयानी औ वृषपर्वानाम दैत्यकी कन्या शा-

र्मिष्ठा ब्याहीं उनमें यदु औ तुर्वसु दो पुत्र देवयानी से भये ये दोनों बड़े धर्मनिष्ठ औ सब विद्याओं के पारगामी थे द्रुह्य अनु औ पुरु ये शर्मिष्ठासे उत्पन्न भये ययाति ने तप कर शक्रको प्रसन्न किया शक्रने भी प्रसन्नहो उत्तम अश्वों करके युक्त सुवर्ण का रथ औ दो तूणीर जिन में बाण रखते हैं ययातिको दिये उस रथके प्रभावसे छःमहीने में सब पृथ्वी को ययातिने जीता ययाति परम शिवभक्त जितक्रोध धर्मनिष्ठ औ सब जीवोंपर दयाकरनेहारा था वह शक्र का दिया रथ ययातिके वंश में राजा जनमेजयतक चलाआया औ जनमेजयके समय गर्गके शापसे वह रथजातारहा गर्गऋषिके बालक पुत्र अक्रूरको जनमेजयने मारदिया उसकी ब्रह्महत्या लगने से शरीर में रुधिरका गंध आनेलगा औ हत्या करके पीड़ित सब पृथ्वी पर भटका परन्तु कहीं चैन न मिला औ सब प्रजाने भी उसको त्यागदिया तब व्याकुलहो शौनकऋषि के शरण में गया जिस ऋषिका दूसरा नाम इन्द्रोति भी है इन्द्रोति ने हत्या दूरहोने के अर्थ राजासे अश्वमेधयज्ञ करवाया तब राजाके शरीर का दुर्गंध औ ब्रह्महत्या निवृत्त भये वह रथ भी इन्द्रने प्रसन्नहो चेदिदेश के राजा वसुको दिया उससे वृहद्रथ ने लिया वृहद्रथको दबाय जरासंध उस रथको हरलाया जरासंधसे भीमसेनने वह रथ पाया औ भीमसेनने प्रसन्नहोकर वह रथ श्रीकृष्णचंद्रको दिया ययाति ने अपने पुत्र पुरु का उपकार समझ उसी को राज्य देदिया राजा ययाति जब पुरु का अभिषेक करने लगा तब

ब्राह्मण आदि सब वर्णों ने राजासे कहा कि शुक्रके दौहित्र औ धर्मात्मा बड़े पुत्र यदुको छोड़कर छोटे पुत्र पुरुको आप राज्य क्योंकर देते हौ आप धर्म पर चलैं अन्याय न करैं ॥

सरसठवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह अपनी प्रजाका वचन सुन राजा ययाति बोले कि बड़ेपुत्रको हम राज्य न देंगे उसने हमारी आज्ञा न मानी जो मातापिताकी आज्ञा माने वही पुत्र उत्तम होता है यदु आदि चारों पुत्रोंने मेरी आज्ञा भंगकरी केवल सबसे छोटे पुरुने मेरा वचन माना हमने शुक्राचार्य से युवावस्था प्राप्त होनेके लिये प्रार्थना करी तब उनने यह कहा कि अपनी वृद्धता एक पुत्रको देदो औ उसकी तरुणता तुमलेलो औ जो पुत्र तुम्हारी वृद्धता को ग्रहण करेगा वही राज्यका अधिकारी होगा इसलिये शुक्राचार्यके वरसे औ मेरी इच्छा से पुरुही राजा होना उचितहै इसमें तुम सबभी सम्मत देदो यह राजाका वचन सुन प्रजाने कहा कि महाराज जो पिता माता की आज्ञा माने वही पुत्र सब कल्याण पाता है चाहे छोटा हो चाहे बड़ा इसलिये आपकी आज्ञा मानने से औ शुक्राचार्य के वरदान से आप पुरुकाही राज्याभिषेक कीजिये हम सब बहुत प्रसन्नहैं यह प्रजाका वचन सुन राजाने मुख्यराज्य तो पुरुको दिया दक्षिणदिशा का राजा यदुको बनाया औ अग्निकोणका अधिकार तुर्वसुको दिया औ पश्चिम तथा उ-

त्तर दिशाके स्वामी द्रुह्य औ अनु बनाये इसभांति सात द्वीपों करके युक्त सम्पूर्ण पृथ्वी राजा ययाति ने पुत्रोंको बांटदी अर्थात् राज्यके तीन भाग कर दिये मध्य का मुख्य राज्य पुरुको दिया दक्षिण पूर्वका राज्य देवयानी के पुत्रों को औ उत्तर पश्चिमका राज्य शर्मिष्ठाके पुत्रों को दिया इसभांति राजाने पुत्रोंको राज्यका भार देकर आप स्वस्थचित्त हो ये गाथा गाई ॥

श्लोक । नजातुकामःकामानामुपभोगेनशाम्यति । हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्द्धते १॥ अर्थ ॥ जो कदाचित् यह समझो कि विषयोंको भलीभांति भोगलेवें तब तृप्ति होजाने से आत्माविषयोंसे आपही निवृत्त होजायगी यह कभीनहीं होसक्ता जिसभांति घृतकी आहुति से अग्नि अधिक प्रज्ज्वलित होता है इसीभांति विषय भोग करने से उनमें अधिक २ इच्छा होती जाती है कभी तृप्ति नहींहोती इसलिये विचार करके पहिले से ही विषयों में आसक्त न होना चाहिये ॥

श्लो० । यत्पृथिव्यांव्रीहियवंहिरण्यंपशवःस्त्रियः । नालमेकस्यतत्सर्वमितिमत्वाशमंव्रजेत् २ ॥ अर्थ ॥ पृथ्वी में जो धन धान्य पशु स्त्री आदि पदार्थ हैं सब के सब जो एकही पुरुषको मिलजायँ तोभी वह तृप्त न होगा यही इच्छा बनीरहेगी कि कुछ औरभी मिले इसलिये ईश्वरकी कृपा से जितना मिलजाय उतने परही संतोष रखना उचित है ॥

श्लो० । यदानकुरुतेभावंसर्वभूतेषुपापकम् । कर्मणा मनसावाचाब्रह्मसंपद्यतेतदा ३॥ अर्थ ॥ जब पुरुष मन

वचन कर्म करके किसीका अनिष्टचिन्तन नहीं करता तब उसको ब्रह्मकी प्राप्ति होती है॥

श्लो०। यदापरान्नबिभेतिपरेचास्मान्नबिभ्यति। यदानिन्देन्नद्वेष्टिब्रह्मसंपद्यतेतदा ४॥ अर्थ॥ जब यह पुरुष किसी से न डरै औ न कोई जीव इससे डरै और किसीसे द्वेष औ किसी की निन्दा न करै तब उसको ब्रह्म संपत्ति होती है॥

श्लो०। यादुस्त्यजादुर्मतिभिर्यानजीर्य्यतिजीर्य्यतः। योऽसौप्राणांतकोरोगस्तांतृष्णांत्यजतःसुखम् ५॥ अर्थ॥ जिस तृष्णा को दुर्बुद्धि पुरुष कभी नहीं त्याग सकते औ जो मनुष्यका शरीर जीर्ण होजानेपर भी जीर्ण नहीं होती प्रत्युत अधिक बढ़ती है औ जो प्राणों के अन्त तक रहनेवाला रोग है उस तृष्णाकेही त्याग से सुख मिलताहै दूसरा सुखप्राप्ति का कोई उपाय नहीं॥

श्लो०।जीर्य्यंतिजीर्य्यतःकेशादन्ताजीर्य्यंतिजीर्य्यतः। चक्षुःश्रोत्रेचजीर्य्येतेतृष्णैकानिरुपद्रवा ६॥ अर्थ॥ वृद्धावस्था में पुरुष के केश, दंत, आंख, कान आदिसब जीर्ण होजाते हैं परन्तु तृष्णाके कोई उपद्रव नहीं होता वह तो प्रतिदिन तरुणही होती जाती है॥

श्लो०।यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखम्।तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतःषोडशींकलाम् ७॥ अर्थ॥ संसार में जोकाम सुखहै औ स्वर्ग आदिकों में जो बहुत उत्तम दिव्य सुख है ये दोनों सुखतृष्णाके क्षय होजानेसे मनुष्य को जोसुख मिलता है उसकी सोलहवीं कलाकी भी तुल्यता नहीं कर सक्के॥

श्लो०। जीर्य्यन्तिदेहिनःसर्वेस्वभावादेवनान्यथा। जीविताशाधनाशाच जीर्य्यतोऽपिनजीर्य्यति ८ ॥ अर्थ ॥ सब जीवोंके शरीर कुछ कालके अनन्तर स्वभावसे ही जीर्ण होजाते हैं परन्तु जीवने की औ धन की आशा जीर्ण नहीं होती मरणपर्य्यंत तरुण बनी रहती है ॥

इतनीकथा कहकर राजा ययाति अपनी रानी समेत वनकोगया औ वहां भृगुतुङ्ग पर्वत पर वहुतकाल तप कर अनशनव्रत से देहत्याग स्वर्गको जाताभया। राजा ययातिके पुत्रों से पांचवंश चले जिनसे यह सब पृथ्वी व्याप्त भई राजाययातिके चरित को जो पुरुष सुने वह धन धान्य सन्तान औ कीर्तिपावै औ सब पापों से छूट कर अन्त में शिवलोक को जावै ॥

अरसठवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो अब हम संक्षेप से औ क्रम करके यदुके वंशका वर्णन करतेहैं आप श्रवण करैं यदु के पांचपुत्र भये सहस्रजित्, क्रोष्टु, नील, अजक औ लघु, सहस्रजित् का पुत्र शतजित् औ शतजित् के हैहय हय औ वेणुहय ये तीन पुत्र भये हैहय का पुत्र धर्म धर्म का धर्मनेत्र धर्मनेत्र का कीर्ति कीर्ति का सञ्जय सञ्जय का महिष्मान् महिष्मान् का भद्रश्रेण्य भद्रश्रेण्यका दुर्दम दुर्दम का धनक धनक के कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतवर्मा औ कृतौजा ये चारपुत्रभये इन में कृतवीर्य का पुत्र हजार भुजाओं करके युक्त सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी औ बड़ा प्रतापी अर्जुननामक भया

जो विष्णु के अवतार श्रीपरशुरामजीके हाथ से मृत्यु पाय स्वर्ग में अक्षय वास करता भया उसके सौ पुत्र भये उनमें शूर,शूरसेन, धृष्ठ, कृष्ण औ जयध्वज ये पांच मुख्यथे औ बड़े प्रतापी धर्मात्मा औ वीर थे इन में जयध्वज अवन्तिदेश का राजा भया जयध्वजका पुत्र तालजङ्घ औतालजङ्घके सौपुत्र भये उनमें सबसे बड़ेका नाम वीतिहोत्र था औ वीतिहोत्र से छोटा वृष था उनमें वंश वृष काही चला वृष का पुत्र मधु भया मधु के वृष्णि आदि सौ पुत्र भये ये वंशयदुके नामसे यादव मधुके नाम से माधव वृष्णिके नामसे वृष्णि कहाये औ ये हैहयभी कहातेहैं हैहयके पांचगण अर्थात् समूह भये वीतिहोत्र, हर्यात, भोज,आवन्तिक औ शूरसेन औ तालजंघ भी इनमें ही गिनेगये शूर, शूरसेन, वृष,कृष्ण औ जयध्वज ये पांच हैहयों में मुख्यभये शूरसेन के नाम से शूरसेन देश कहाया वीतिहोत्र का पुत्र नर्त्त औ कृष्ण का पुत्र दुर्जय भया अब क्रोष्टुकावंश श्रवणकरो जिसमें साक्षात् विष्णु श्रीकृष्णचन्द्र उत्पन्नभये क्रोष्टुका एक व्रजिनीवान् नामक पुत्रभया व्रजिनीवान्का स्वाती औ स्वाती का पुत्र कुशंकु भया कुशंकुने सन्तानके अर्थ वहुत से यज्ञ करे तब उसके बड़ा प्रतापी चित्ररथ नामक पुत्र भया औ चित्ररथकापुत्र बड़ा पराक्रमी चक्रवर्त्ती औ बड़ा धर्मात्मा राजा शशविन्दु भया शशविन्दुके हजारों पुत्रभये परन्तु उनमें अनन्तक सबसे बड़ा औ मुख्यथा अनन्तक का पुत्र यज्ञ यज्ञकाधृति औ धृतिकापुत्र उशनाभया जिसने सौ अश्वमेध किये उशनाकापुत्र सितेपु

सितेषुका मरुत मरुतका कंबलवर्हि कंबलवर्हिका रुक्मकवच पुत्र भया जिसने बड़े २ योधाओं को मार सदा युद्ध में जयपाया औ अश्वमेध यज्ञमें ऋत्विजों को दक्षिणा में सब पृथ्वीदेदी उस रुक्मकवच का पुत्र परावृत् भया औ परावृत् के रुक्मेषु, पृथु, रुक्म, ज्यामघ, परिघ औ हरि ये पांचपुत्र भये इनमें परिघ औ हरि को पिता ने विदेहदेश के राजा बनाये औ रुक्मेषु तथा पृथु रुक्मभी मिलके राज्य करनेलगे औ अपने भाई ज्यामघको इनसबने मिलकर राज्यसे निकालदिया इसलिये वह अपनी रानी समेत वन में जाय आश्रम बनाय मुनि लोगों के साथ निवास करने लगा परन्तु उसको सब मुनियों ने प्रेरणाकरी तब अपना धनुषले रानी सहित रथमें बैठ वहांसे चला औ नर्मदा के तट पर ऋक्षवान् पर्वत में अपनी राजधानी बनाय उसके चारों ओर अपना राज्य जमाया कुछकालके अनन्तर वृद्धावस्था में उसकी रानी शैव्या के विदर्भ नाम पुत्र उत्पन्न भया विदर्भ से भोजकी कन्यामें क्रथ औ कौशिक ये दो पुत्र उत्पन्न भये औ तीसरा पुत्र रोमपाद नामक हुआ रोमपादका पुत्र बभ्रु बभ्रुका पुत्र सुधृति सुधृति का कौशिक भया जिससे चैद्यवंश चला औ विदर्भका पुत्र जो क्रथ था उसका पुत्र कुन्तिभया कुन्तिका वृत वृतका रणधृष्ट रणधृष्ट का निधृति निधृतिका दशार्ह दशार्हका व्यास व्यास का जीमूत जीमूतका विकृति विकृति का भीमरथ भीमरथका नवरथ नवरथका दृढ़रथ दृढ़रथका शकुनि शकुनिका करंभ करंभ का देवरात देवरात का

देवराति अथवा देवक्षत्र देवक्षत्र का मधु मधुका कुरुवंशक कुरुवंशक का अनु अनुका पुरुत्वान् पुरुत्वान्से विदर्भ देश के राजाकी पुत्री भद्रवती में अंशुनामक पुत्रभया अंशु ने इक्ष्वाकु वंशके राजाकी कन्या व्याही उससे सत्वनाम का पुत्र भया औ सत्वसे सात्वत भया यह हमने ज्यामघ के वंशका वर्णन किया इसको जो सुने अथवा पढ़े वह बहुत काल पर्यन्त राज्य सुखभोग कर अन्त में स्वर्ग में वास करे ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सात्वतके चारपुत्र भये भजन देवावृध अंधक औ वृष्णि भजन से शृञ्जयी नाम रानीमें अयुतायु शतायु औ हर्षकृत ये पुत्र उत्पन्नभये औ देवावृधने उत्तमपुत्रकी प्राप्तिकेलिये उग्रतप किया तब उसके सबगुणों करके युक्त बभ्रुनामक पुत्र भया अनुवंश पुराण जाननेहारे इनकी यों प्रशंसाकरतेहैं कि जैसा दूरसे सुनतेथे वैसाही इनको देखा सब मनुष्यों में बभ्रु श्रेष्ठहैं औ देवावृध तो देवताही है बभ्रु औ देवावृध के जन्मसे छः हजार पैंसठ औ आठ पुरुष उनके मुक्तिको प्राप्तभये बभ्रु यज्ञकरनेहारा दानी वीर ब्रह्मण्य दृढ़व्रत कीर्तिमान् औ बड़ातेजस्वी भया उसके वंशमें ही देवताओं के तुल्य भोज उत्पन्न भये वृष्णि की दो रानीथीं एक गान्धार देशके राजाकी कन्या दूसरी मद्रदेश के राजाकी पुत्री इन में गान्धारी से सुमित्र नामक पुत्र उत्पन्नभया औ माद्रीसे देवमीढुष, अनमित्र औ शिनि

ये तीन पुत्र भये अनमित्र का पुत्र निघ्न औ निघ्नके पुत्र प्रसेन औ सत्राजित ये दो भये इनमें सत्राजित सूर्य भगवान् का परमभक्त था इसलिये सूर्य भगवान् ने स्यमन्तक नाम मणि सत्राजित को प्रसन्न होकर दिया था जो मणि पृथ्वी के सब मणियों का राजाथा एकदिन अपने भाई प्रसेनके साथ सत्राजित आखेट अर्थात् शिकार खेलनेगया परन्तु उसको वहां हीं सिंह ने मारदिया वृष्णिकापुत्र शिनि औ शिनिके सत्यक नाम पुत्रभया औ सत्यकके युयुधान जिसको सात्यकि भी कहते हैं वह बड़ाप्रतापी भया युयुधानका पुत्र असङ्ग असङ्गका कुणि कुणिका पुत्र युगन्धर भया यह शिनिका वंशहै वृष्णिके बड़ेपुत्र देवमीढुष देवमीढुषका पुत्र युधाजित भया जिसको श्वफल्क भी कहते हैं उसको काशीके राजाकी गांदिनी नाम कन्या व्याही गई गांदिनी अपनी माता के गर्भसे तीनवर्ष तक न निकली तब उसके पिताने कहा तू कौनहै शीघ्र गर्भके बाहर आव तब वह कन्या गर्भसे ही बोली कि जो आप तीन वर्ष तक एक गौ नित्य ब्राह्मणको देवें तो मैं गर्भके बाहर निकलूं यह कन्याका वचन राजाने भी स्वीकार किया तब गांदिनी का जन्मभया उसका पुत्र अक्रूरभया औ शैवकी रत्नानाम कन्या अक्रूरको व्याही गई इससे उपमन्यु, मांगु, वृत, जनमेजय, गिरिरक्ष, उपेक्ष, शत्रुघ्न, धर्मभृत, धृष्टधर्मा, गोधन, वर, आवाह, प्रतिवाह इतने पुत्र औ सुधारा नाम एक कन्या अक्रूर से उत्पन्न भई औ अक्रूरकी दूसरी स्त्री उग्रसेनी में देववान् औ उपदेव

ये दो पुत्र उत्पन्न भये सुमित्रका पुत्र चित्रक औ चित्रक के विपृथु,पृथु,अश्वग्रीव,सुवाहु, सुधासुक, गवेक्षण, अरिष्टनेमि, अश्व, धर्म, धर्मभृत्‌सुभूमि, वहुभूमि ये पुत्र औ श्रविष्ठा तथा श्रवणा ये दो कन्या भई अन्धक से काश्यकी कन्यामें कुकुर, भजमान, शुचि औ कंबलवर्हिप ये चार पुत्र उत्पन्न भये इनमें कुकुरका पुत्र वृष्णि वृष्णिका पुत्र शूर शूरका कपोतरोमा कपोतरोमा का विलोमक विलोमकका पुत्र नलभया जो तुम्वरु गन्धर्व का परम मित्र था औ जिसका नाम चन्द्रनानक दुन्दुभि भी था उसका पुत्र अभिजित् अभिजित् का पुत्र पुनर्वसु भया पुनर्वसु ने पुत्र प्राप्ति के लिये अश्वमेध किया उसयज्ञ से एक पुत्र औ एक कन्या उत्पन्नभई जिनके नाम आहुक औ आहुकी थे काश्यकी पुत्री में आहुक से देवक औ उग्रसेन ये दो पुत्र भये देवक के देववान्, उपदेव, सुदेव, देवरक्षित ये चारपुत्र औ वृषदेवा उपदेवा, देवरक्षिता, श्रीदेवा, शांतिदेवा, सहदेवा औ देवकी ये सात कन्या भई इनमें देवकी सबसे उत्तमथीं ये सातों वसुदेव को व्याही गई उग्रसेनके नौ पुत्र भये उनमें कंस सबसे वड़ा औ प्रतापी था इनके पुत्र पौत्र हज़ारों भये देवककी कन्या देवकी जो वसुदेव को व्याही गई थी वड़ी पतिव्रता थी औ पुरुवंश में उत्पन्न राजा वाल्हिक की कन्या रोहिणी भी वसुदेव को व्याही थी इनमें रोहिणी के गर्भ से वलदेवजी उत्पन्न भये जो कंस के भय से देवकी का गर्भ छोड़ रोहिणी के गर्भ में आगये थे वलदेवजीका जन्महोनेके अनन्तर देवकी के

छःगर्भ तो कंस ने मारदिये औ सातवें गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म भया श्रीकृष्ण साक्षात् परमात्माहैं औ बलदेवजी श्वेतवर्ण अनन्त का अवतार हैं भृगुशापके छल से भगवान्‌ने मनुष्यदेह धारणकिया भगवान्‌की इच्छा सेही पार्वतीजीका अंश कौशिकीदेवी यशोदाकी कन्या भई वह साक्षात् प्रकृति औ श्रीकृष्ण पुरुष हैं वसुदेव उस कन्या कोतो देवकी के समीप लेआये औ शङ्ख,चक्र, गदा,पद्म, धारणकिये चतुर्भुज श्रीकृष्णचन्द्रको कंसके भयसे यशोदाको देआये औ नन्दगोप से यह भी कहआये कि इस बालक की रक्षा भलीभांति करना उनके दर्शन सेही सबको यह निश्चय भया कि शिवजी की इच्छासे भूमि का भार उतारनेको ये दोनों बालकआये हैं औ साक्षात् जगत् के गुरु परमेश्वरका अवतारहैं ये हमारे सब शत्रुओं का संहार करेंगे वसुदेवजी ने भी कंस से कहा कि देवकीके कन्या उत्पन्न भई है यह पहिले आकाशवाणी होचुकीथी कि हे कंस देवकी के आठवें गर्भ से तेरा मृत्यु है इसलिये बहुत शीघ्र उस कन्या को कंसने मारना चाहा परन्तु वह अष्टभुजी देवी कंसके हाथसेछुटकर आकाशमेंजाय गम्भीर शब्द से कहनेलगी कि रे मूर्ख तेरीमृत्यु आय पहुँची जो कुछ तुझसे रक्षा करीजाय कर तेरा अन्त करनेहारा उत्पन्न होगया है इतना कह वह तो अन्तर्द्धान भई औ कंस भी श्रीकृष्ण भगवान् के मारने को बहुतेरे यत्न करने लगा परन्तु सब वृथा भये अन्त में श्रीकृष्णके हाथ से ही मारागया इसभांति देवता औ ब्राह्मणों के शत्रु

महत्तत्त्व अव्यक्तकरके व्याप्तहै अण्डके कपालमें शिवहै जलमें भवहै अग्निमें रुद्र वायुमें उग्र पृथ्वीमें भीम अहंकारमें महेश्वर महत्तत्त्वमें ईश औ सर्वत्र परमेश्वर व्याप्त है इन सात प्राकृत आवरणों करके यह अण्ड चारोंओरसे घिराहै औ आठों प्रकृतिभी एक दूसरीका आवरण करके स्थितहैं औ परस्पर उत्पन्न भई हैं औ परस्पर धारण करती हैं औ प्रसर्ग अर्थात् प्रलयकाल में एक दूसरेको ग्रसलेती हैं महेश्वर अव्यक्तसे परे है औ यह ब्रह्माण्ड अव्यक्त से उत्पन्नहै अण्ड से वही परमेश्वर सूर्यके तुल्य प्रकाशमान प्रकटभया औ सृष्टि करने की सामर्थ्य उसमें इच्छासे ही सिद्धहै उसने सबसे पहिले शरीर धारण किया औ पुरुषकहाया उसके वामअङ्ग से लक्ष्मी सहित विष्णु औ दक्षिण अङ्गसे सरस्वती युक्त ब्रह्मा उत्पन्नभये इसी अण्ड में यह जगत् औ चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, वायु आदिक हैं जितना सृष्टिका कालहै वह परमेश्वर का दिनहै औ इतनीही रात्रिहै वही प्रलयकाल भी है वास्तवमें तो परमेश्वरके न दिनहैं न रात्रि परन्तु लोक व्यवहारके लिये यह कल्पनाहै इन्द्रिय इन्द्रियोंके अर्थ पंचभूत औ देवताओं के सहित बुद्धि ये सब परमेश्वरके दिनमें तो वर्त्तमान रहतेहैं औ रात्रिमें सबलीन होजातेहैं अव्यक्त जब सम्पूर्ण विश्वको अपनेमें स्थापित करलेताहै औ सबविकारोंका संहार होजाताहै तब प्रकृति औ पुरुष दोही रहजातेहैं ये दोनों सत्व रज औ तमोगुणकरके युक्त औ परस्पर ओतप्रोत अर्थात् मिलेहुये रहतेहैं गुणोंकी तुल्यतामें लय

होता है औ गुणोंके न्यून अधिक होनेसे सृष्टिहोती हैं जिसभांति तिलों में तेल औ दूध में घृत रहताहै इसी प्रकार यह जगत् तीनों गुणों में स्थितहै जब वहरात्रि व्यतीत भई तब परमेश्वर ने फिर प्रकृति को क्षोभ किया तब उससे तीन देवता उत्पन्नभये ये देवता शाश्वत शरीरी औ परमगुह्यहैं येही तीन देवता तीनगुण तीनलोक औ तीन अग्निहैं ये तीनों परस्परअर्थात् आपस में आश्रितहैं परस्पर धारण किये हैं परस्पर उपजीवन करते हैं औ परस्पर मिथुन हैं अर्थात् एकका स्त्री पुरुष रूप जोड़ा दूसरे से उत्पन्नभया है औ ये तीनों सदा इकट्ठे रहते हैं क्षणमात्रभी आपसमें वियोग नहीं करते ईश्वर परदेव है औ विष्णुभी महत् से परहैं सृष्टि के आदिमें रजोगुण करके ब्रह्मा प्रवृत्त होते हैं वह परपुरुष औ प्रकृति महेश्वर करके अधिष्ठित होकर चारोंओर उद्यममें प्रवृत्त होतेहैं औ महान् भी इनके पीछे अपने विषय में आश्रित होकर प्रवृत्त होताहै प्रधान में गुणों की विषमतासे सब की प्रवृत्ति होतीहै इस करके अधिष्ठित प्रधानसे सर्गकार्य करने में समर्थ रुद्र होतेहैं जिनके तुल्य तेजस्वी कोई नहीं वेही पहिले शरीरधारीहैं औ उनकोही पुरुषकहते हैं उनसे चतुर्मुख ब्रह्मा उत्पन्न होतेहैं वह एकही महादेव ब्रह्म, विष्णु, रुद्र रूप से स्थित हैं उत्तम ज्ञान, ऐश्वर्य औ वैराग्य करके ये युक्तहैं इनके मन की जो जो इच्छा होती है वही अव्यक्तसे उत्पन्न होताहै उस स्वयम्भूकी तीन अवस्थाहैं ब्रह्मा होकर जगत्को सिरजताहै काल

रूप से संहार करता है औ पुरुष होकर उदासीनरह-
ता है ब्रह्माजी का वर्ण कमल के गर्भके तुल्यहै रुद्र का-
लाग्नि सरीखे हैं औ परमात्मा का रूप पुरुष पुण्डरी-
काक्षहै एक प्रकार दोप्रकार तीनप्रकार औ बहुतप्रकारों
से अनेक भांतिकी आकृति क्रिया औ नामोंकरके युक्त
शरीर वह महेश्वर धारता है तीनशरीर धारने से लोक
में त्रिगुण कहाता है चार विभाग होनेसे चतुर्व्यूहकह-
ते हैं प्राप्तकर्त्ताहै ग्रहण करताहै विषयोंको भोग करताहै
औ जो इसका निरन्तर भावहै इसलिये इसको आत्मा
कहतेहैं सर्वगत होनेसे ऋषि शरीर का स्वामी होने से
प्रभु सबमें प्रवेश करने से विष्णु भगवद्भाव से भग-
वान् निर्मल होनेसे शिव उत्कृष्ट होने से परम अवन अ-
र्थात् रक्षण से ॐ० सर्वज्ञानसे सर्वज्ञ औ सर्वमयहोने
से वह परमेश्वर सर्वकहाताहै वहअपने तीनभाग कर-
के सृष्टि स्थिति औ संहार करताहै सबका आदिहै इस-
से आदिदेव न उत्पन्न होने से अज प्रजाका पालन
करने से प्रजापति सब देवताओं में बड़ा होने से म-
हादेव सर्वव्यापक होने से औ देवताओं के अवश्यत्व
से ईश्वर वृहत् होनेसे ब्रह्मा भूतत्वसे भूत क्षेत्रके जान-
ने से क्षेत्रज्ञ एकाकी होने से केवल पुरीमें शयन करने
से पुरुष आदि होनेसे स्वयम्भू यजन करने के योग्य
होने से यज्ञ व्यतीतके दर्शन से कवि क्रमण करने के
योग्य होनेसे क्रमण पालन करने से पालक कहाता है
आदित्य संज्ञक कपिल पहिला अग्निहै हिरण्यअर्थात्
सुवर्ण उसके गर्भ में है अथवा हिरण्य के गर्भ से

वह हुआ है इसलिये हिरण्यगर्भ कहाता है विश्वात्मा स्वयम्भू भगवान् का जितना काल व्यतीत होगया उसकी संख्या सैकड़ों वर्षमें भी नहीं करसकते वर्त्तमान् ब्रह्माका एक परार्द्ध अर्थात् आधा आयुष बीतचुका है औ आधा अवशिष्ट है वहभी व्यतीत होने पर प्रलय होगा करोड़ों कल्प अर्थात् ब्रह्माजी के दिन व्यतीत होगये औ करोड़ों व्यतीत होंगे इस वर्त्तमान कल्पका वाराहकल्प नाम है इसमें स्वायम्भुव आदि चौदहमनु हैं सातद्वीपों करके युक्त सब पृथ्वीका पालन हज़ार युग पर्यन्त वेही करेंगे अब हम उनका विस्तारसे वर्णनकरते हैं एक मन्वन्तरके वर्णनसे सब मन्वन्तरों का औ एककल्पके वर्णनकरने से सब कल्पोंका वर्णन होजाता है वर्त्तमान मन्वन्तर औ कल्पका वर्णन सुनकर अगले पिछले सब मन्वन्तर औ कल्पोंका ज्ञान होसकताहै प्रलयके समय पृथ्वी, सूर्य्य, चन्द्र, तारा आदि सब नष्ट होगये औ चारों ओर जलही व्याप्त होगया उसमें सहस्र नेत्र सहस्रशिर सहस्रपाद सुवर्ण वर्ण नारायण नामक ब्रह्मा शयन करतेभये कुछकालके अनन्तर सत्वगुणकी वृद्धिहोने से उनकी निद्रा खुली औ सम्पूर्ण लोकको उनने शून्यदेखा नार औ नर सूनु ये दो नाम जलके हैं जल करके अपने अयन अर्थात् स्थानको पूर्णकर उसमें शयन करते हैं इसीसे उनका नाम नारायण है हज़ार चतुर्युग के प्रमाणकी रात्रि व्यतीत होने पर सृष्टिकरने की इच्छा भई औ उस जलमें जिसभांति वर्षाऋतुकी अँधेरीरात में खद्योत उड़ता फिरे उसी

भांति इधर उधर विचरने लगे औ जाना कि पृथ्वी जल में मग्न होरही है तब उसके उद्धार करने की इच्छाकरी औ पृथ्वी का उद्धार करने के लिये जलक्रीड़ा के योग्य बराहरूप धारण किया औ रसातल में गये औ जलमें डूबीहुई भूमिको अपनी दंष्ट्रापर उठाया औ लाकर अपने स्थान में स्थापन किया पृथ्वी भी नावकी भांति जलके ऊपर भगवान्की सत्तासे तिरनेलगी तब भगवान् ने जगत्के स्थापन करने की इच्छासे पृथ्वी को बरोबर किया सब ऊँचा नीचा भाग समानकर पर्वतबनाये पहिले कल्पमें जो भूमिके ऊपर पर्वत थे वे प्रलय की अग्नि करके भस्म होकर प्रलयकी वायुसे ही उड़ गयेथे इसलिये सब पर्वत अस्तव्यस्त होगये थे इससे नये रचे न चलने से अचल पर्व करके पर्वत कहाये इसीप्रकार प्रतिकल्प में वह विश्वकर्म्मा परमेश्वर व्यवस्था करते हैं समुद्रों सहित औ सात द्वीपों करकेयुक्त यह पृथ्वी औ भूआदि चार लोक फिर भगवान्ने स्थापनकिये इसप्रकार लोकरचकर स्वयम्भू ब्रह्माजी अनेक प्रकारकी प्रजा जैसी पहिले कल्पों में थी वैसी ही रची पहिले ब्रह्माजी सृष्टिरचने की इच्छाकर विचार करने लगे तब उनकी बुद्धिमें तम मोह महामोह तामिस्र औ अंध यह पांच प्रकारकी अविद्या उत्पन्न भई औ उसीसे तमोमय सृष्टिभई जिनके बाहर भीतर प्रकाश का लेश नहीं था निस्संज्ञ औ जिनके इन्द्रिय तथा बुद्धि तमोगुण करके आवृत्तथी इसीसे वे नगकहाये ब्रह्माजी इस अपनी पहिलीही सृष्टि को किसी अर्थकी न देख

अप्रसन्न भये और फिर विचार करने लगे तब ध्यान करते २ उनके इन्द्रिय तिर्यक् प्रवृत्तभये उससे पशु पक्षी आदि उत्पन्नभये औ तिर्यक् कहाये फिरभी ब्रह्मा जीके ध्यानसे सात्विक औ ऊर्ध्व स्रोत अर्थात् जिनकी गतिऊपर कोहै सुख औ प्रीतिकरके युक्त बाहर भीतर प्रकाशमान औ प्रसन्नचित्त देवता उत्पन्न भये उनको देख ब्रह्माजीका चित्त बहुत प्रसन्नभया औ फिर ध्यान करने लगे तब मनुष्य उत्पन्न भये जोअर्वाक्स्रोतकहाये वे सब प्रकाश करके युक्तभये औ तमोगुणकरकेयुक्त रजोगुण उनमें अधिक रहने से बहुत दुःखों करकेयुक्त सब कार्य के साधन करनेहारे औ तारक आदि आठ लक्षणों करके युक्त सिद्धात्मा औ गन्धर्वोंके समान धर्म वाले भये यह चौथा अर्वाक्स्रोता तैजस सर्ग हमने वर्णन किया पांचवां अनुग्रह सर्ग चार प्रकारसे स्थित है विपर्यय, शक्ति सिद्धि औ तुष्टि करके स्थावरों में विपर्यय अर्थात् विस्तार आदि पशु पक्षी आदिकोंमें शक्ति अर्थात् सामर्थ्य मनुष्यों में सिद्धात्मा अर्थात् प्रारब्ध जनित सिद्धि औ ऋषि तथा देवताओं में तुष्टि रूपसे स्थित है यह अनुग्रह सर्ग प्राकृत कहाताहै औ सब से उत्तम है भूतादि अर्थात् मनु आदिकों का सर्ग छठाहै औ उत्पद्यमान अर्थात् उपजते हुये भूतों का सर्ग सातवां है वे सब भूतादिक निस्पृह यथोक्त दानकरनेहारे कर्म के फल का आस्वादान करने में तत्पर औ ज्ञान होने से कर्मफल का त्यागभी करने में समर्थ हैं भूतादिकों की स्थिति अज्ञान औ मायासे है ब्रह्माजी से

पहिला सर्ग महत्तत्त्वका दूसरा तन्मात्राओंका तीसरा इन्द्रियों का सर्ग हुआ ये तीनप्राकृत सर्ग अबुद्धि पूर्वक भये चौथा मुख्य सर्ग स्थावरों का पांचवां तिर्यक्स्रोत छठा ऊर्द्धस्रोत सातवां अर्वाक्स्रोत आठवां अनुग्रह सर्ग औ नवां कुमार सर्ग भया इनमें पहिले तीनसर्ग प्राकृत फिर पांच वैकृत औ नवां कुमारसर्ग प्राकृत वैकृत कहाया प्राकृत तीन सर्ग तो अबुद्धि पूर्वक प्रवृत्त होतेहैं औ बाक़ी छःसर्ग ब्रह्माजीके बुद्धिपूर्वक होतेहैं अनुग्रह सर्ग का विस्तारसे वर्णन करते हैं वह अनुग्रह सर्ग सर्व भूतोंमें चार प्रकार से स्थितहै ये नौ प्राकृत अथवा वैकृतसर्ग सर्व कारणों करके आपसमें मिश्रित हैं प्रथम बृह्माजीके नौ मानसपुत्र भये इनमें ऋभु औ सनत्कुमार ये दो सबसे पहिले उत्पन्न भये औ ऊर्द्धरेता भये वे आठवें कल्पके व्यतीत होने पर आत्माको आत्मा मेंही स्थापन कर प्रजाधर्म औ कामका त्यागकर मोक्षमार्ग में स्थितभये सबकाल एक जैसास्वरूपरहने से कुमार कहाये इससे उनकानाम सनत्कुमारभया फिर सनंद सनक औ सनातन ये बृह्माजीके पुत्र भये ये तीनों भेद बुद्धि में प्रवृत्त थे परन्तु योग करके मोक्षको प्राप्त भये औ प्रजा उत्पन्न न करी फिर ब्रह्माजीने स्थान के अभिमानी मानसपुत्र उत्पन्न किये जिनने प्रलय पर्यंत पृथ्वी को धारणकिया जल, अग्नि, भूमि, वायु, आकाश, समुद्र, नदी, पर्वत, वनस्पति, ओषधी, लता वृक्ष, वीरुध, लव, काष्ठा, कला, मुहूर्त्त, सन्ध्या, रात्रि, दिन पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्ष औ युग आदि बृह्माजीने

रचे ये सब स्थानाभिमानी हैं औ स्थानभी कहाते हैं मरीचि, भृगु, आङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, अत्रि, औ वशिष्ठ ये नौ मानस पुत्र ब्रह्माजीके भये पुराणों में ये नवों ब्रह्मा गिने गये इन सब ब्रह्मवादियों के लिये ब्रह्माजीनेस्थान कल्पना किये फिर ब्रह्माजीने संकल्प औ धर्म्मको उत्पन्न किया इनमें व्यवसाय से धर्मको उत्पन्नकिया औ संकल्पसे संकल्पको ब्रह्माजी के मनसे रुचिनाम पुत्र उत्पन्नभया प्राणसे दक्ष नेत्रों से मरीचि हृदयसे भृगु शिरसे अंगिरा कर्णसे अत्रि उदान वायुसे पुलस्त्य व्यान वायुसे पुलह समानसे वशिष्ठ औ अपान वायुसे क्रतु उत्पन्न भये ये ग्यारह पुत्र ब्रह्माजीके भये औ बारहवां रुचि भया ये सब ग्रह मेधी औ धर्म के प्रवर्तन करनेहारे भये इनके बारह वंश चले जिनमें बड़े २ ऋषि औ महात्मा उत्पन्न भये फिर ब्रह्माजी ने जलके उत्पत्तिकी इच्छाकरके देवता असुर पितर औ मनुष्योंको अपने आत्मा में युक्तकिया तब ध्यान करते हुये ब्रह्माजी के जघनसे तमोगुण करके युक्त असुर पहिलेही उत्पन्नभये असुनाम प्राणकाहै प्राणसे उत्पन्न भये इसलिये असुर कहाये ब्रह्माजी ने भी असुरों को उत्पन्न करनेवाले उस देहको त्यागदिया उसीसे रात्रि भई तमोगुण उसमें अधिकथा इसकारण रात्रिभी तमोयुक्त भई इसीसे सब जीव रात्रिको सोते हैं फिर ब्रह्माजीने देवताओं को उत्पन्न करने के लिये और शरीर ग्रहण किया जिसमें सत्त्वगुण अधिकथा क्रीड़ाकरते हुये ब्रह्माजीके मुखसे देवता उत्पन्नभये दिव धातु क्रीड़ा

अर्थ में है क्रीड़ा करने से देवकहाये देवताओं को रच-कर जो शरीर ब्रह्माजी ने त्यागा उससे दिनभया दिन में सत्त्वगुणहै इसलिये सब धर्मक्रिया दिनमें ही होती हैं फिर ब्रह्माजी पिताकी भांति ध्यान करनेलगे तब पितर उत्पन्नभये औ वह शरीर ब्रह्माजी ने त्यागदिया उससे संध्याभई दिन देवताओंका रात्रि असुरोंकी औ संध्या पितरों की भई इन में संध्या ही मुख्यहै इसीसे देवता मनुष्य असुर ऋषि सब संध्या का उपासन क-रते हैं फिर ब्रह्माजी ने रजोगुण करके युक्त और शरीर धारणकिया और रजोगुण प्रधान मनुष्य उत्पन्न किये औ उस शरीरको भी त्यागदिया उसीसे चंद्रिका अ-र्थात् चांदनी उत्पन्नभई इसीकारण चंद्रिका को देख मनुष्य प्रसन्न होतेहैं इसप्रकार ब्रह्माजीके चार शरीरों से रात्रि, दिन, सन्ध्या औ चन्द्रिका उत्पन्न भये इनमें रात्रि तो तमोगुण करके युक्तहै औ बाकी तीन सत्त्वगुण प्रधान हैं देवता ब्रह्माजी ने मुखसे दिन में उत्पन्नकिये इससे देवता दिनमें बली हैं औ असुरों को जघनसे रात्रिमें उत्पन्नकिया इससे असुर रात्रि के समय बली होते हैं इसीभांति सब मन्वंतरों में देवता असुर पितर औ मनुष्य उत्पन्न होते हैं औ चन्द्रिका, दिन, रात्रि औ संध्या ये चारों अंभस् कहाते हैं भा धातुदीप्ति के अर्थ में है ये चारों दीप्त रहते हैं इससे इनको अंभस् कहते हैं इसप्रकार इनचारों को औ देवता आदि को उत्पन्न कर उस शरीरको भी ब्रह्माजी ने त्यागदिया फिर भी रजोगुण औ तमोगुण करके युक्त शरीर धारण किया

उससे क्षुधाकरके पीड़ित अंधकार करके व्याप्त प्रजा उत्पन्न भई औ पहिली प्रजाको भक्षणकरने दौड़े तब ब्रह्माजी ने उनको रोका उनमें से जिनने कहा कि हम आपकी प्रजाका रक्षण करेंगे वे राक्षसभये औ जिनने कहा कि हमतो प्रजाका यक्षण अर्थात् भक्षणकरेंगे वे यक्ष कहाये औ गूढ़कर्म गुह्यक भी उनका नाम भया रक्षधातु पालनके अर्थ में है जिससे राक्षस यह शब्द सिद्धहोता है औ यक्षधातु भक्षण अर्थ में है जिसका रूप यक्ष है इनको देख दुःखसे ब्रह्मा जी के केश गिरे वे सब उठकर ब्रह्माजी को चारों ओर से घेरतेभये ब्रह्माजी के शिरके बालों से व्याल अर्थात् सर्प उत्पन्नभये हीनहोनेसे अहि कहाये पतनसे पन्नग अपसर्पण अर्थात् गमन से सर्प कहेगये ब्रह्माजी के क्रोधसे जो अग्नि उत्पन्नभया वही विषरूप करके सर्पों में प्रविष्टभया सर्पोंको देख क्रोधसे ब्रह्माजी ने कपिशवर्ण के भूत उत्पन्नकिये वे पिशित अर्थात् मांस भक्षण करने से पिशाच कहाये फिर ब्रह्माजी ने गायन करते २ प्रसन्नहो गन्धर्वों को उत्पन्न किया धेट् धातु पान के अर्थ में है जिससे गन्धर्व यहशब्द सिद्धहोता है ब्रह्माजी की अमृतरूप गायन वाणीको पानकरते हुये उत्पन्न भये इससे गन्धर्व कहाये ये आठ देवयोनि उत्पन्नकर और भी स्वच्छन्दता से पक्षी उत्पन्न किये पक्षी वय से उत्पन्न किये इसलिये वयस्कहाये स्वच्छन्दता से रचे इसलिये स्वच्छन्द भी कहेगये फिर ब्रह्माजीने पशु उत्पन्न किये मुख से अज अर्थात् बकरे छाती से मेढ़े उदर औ पार्श्व से

गो औ पादों से हाथी, घोड़े, गधे, गवय अर्थात् नील
गाय, मृग, उष्ट्र, अश्वतर आदि उत्पन्नभये औ फलमूलों
करके युक्तओषधी ब्रह्माजी के रोमों से उत्पन्नभई इनमें
पशु औ ओषधी ब्रह्माजी ने यज्ञके कामसें लगाये
बकरा, मनुष्य, मेष, अश्व, अश्वतर औ गर्दभ ये ग्रा
के पशुहैं श्वापद अर्थात् सिंह व्याघ्र आदि दो खुरवा
हरिण आदि हाथी वानर औ पक्षी जलके जीव औ स
आदि ये अरण्यके पशुहैं औ महिष, गवय, ऋक्ष,
वंग, शरभ, वृक औ सिंह येभी अरण्यकेही पशुहैं फि
गायत्री छन्द ऋग्वेद त्रिवृत् रथन्तरसाम औ अग्नि
ष्टोम यज्ञ ये ब्रह्माजी ने अपने प्रथम मुखसे उत्पन्नकि
यजुर्वेद त्रिष्टुप्छन्द पंचदशस्तोम का बृहत्साम औ
उक्थ अर्थात् एक प्रकार का साम दक्षिण मुखसे सा
जगती छन्द सप्तदशस्तोम वैरूप औ अतिरात्र पश्चि
ममुखसे इक्कीसवां अथर्व औ अनुष्टुप् तथा विराट्छन्द
ब्रह्माजी ने अपने उत्तरकीओर के मुखसे उत्पन्न किये
औ कल्पके आदि में विद्युत् अर्थात् बिजली बादल
इन्द्रधनुष औ भांति २ के तेज ब्रह्माजी ने सिरजे ना
नाप्रकारके जीव ब्रह्माजी के शरीरसे उत्पन्नभये प्रजा
सिरजने के समय ब्रह्माजी ने पहिले देव, असुर, मनुष्य,
पितर सिरजे फिर यक्ष, राक्षस, पिशाच, गन्धर्व, अ-
प्सरा, किन्नर, पशु, पक्षी, मृग, सर्प आदि उत्पन्नकिये
इस प्रकार स्थावर जंगमरूप जगत् ब्रह्माजी ने रचा
जगत्के सबजीव भी जो जो कर्म पहिले कल्पमें करते
थे उन २ में प्रवृत्तभये बार २ उत्पन्न होकर भी अपने

अपने कर्म को नहीं भूलते उत्पन्न होतेही उस में प्रवृत्त होजाते हैं हिंस, अहिंस, मृदु, क्रूर, धर्म, अधर्म, सत्य औ असत्य कर्म से भावित जो उत्पन्न होते हैं वे फिर भी उसी में प्रवृत्त होजाते हैं महाभूत इन्द्रिय इन्द्रियों के अर्थ औ शरीरों को उत्पन्न कर सबको ब्रह्माजीनेही अपने अपने काममें लगाया कोई पुरुषकार अर्थात् यत्न को मुख्य कहते हैं कोई कर्म को कोई २ दैवको औ कई पुरुष स्वभावको ही प्रधान कहते हैं औ यह कहते हैं कि पौरुष कर्म औ दैव स्वभावसे ही फलदेते हैं इसलिये ये एकही हैं औ नामके भेद से अलग अलग भी हैं सिरजेहुये जीवों के नाम औ रूप ब्रह्माजीने वेद शब्दों से ही किये औ अपनी रात्रि के अन्त में उत्पन्न हुये ऋषियों के नाम औ वृत्ति वही कल्पना करी जो पहिले थी इसभांति ब्रह्माजीकी मानसी सिद्धि से स्थावर जङ्गम रूप सृष्टि उत्पन्नभई जब ब्रह्माजी की प्रजा न बढ़ी जितने उत्पन्न किये थे उतनेहीरहे तब तमोगुण करके इनके अन्तःकरण में शोक उत्पन्न हुआ औ बहुत दुःखी भये तब ब्रह्माजीने विचार किया कि दुःख होने का क्या कारण है तो जाना कि शरीर में तमोगुण की वृद्धि होरही है औ रजोगुण सत्त्वगुण अलग होगये हैं तब विचारकर तमोगुणका त्याग किया औ रजोगुण सत्त्वगुण को ग्रहणकियाउस तमोगुण औ शोकसे मिथुन अर्थात् स्त्री पुरुषका जोड़ा उत्पन्न भया तमोगुण से अधर्म औ शोक से हिंसा उत्पन्न भई येदोनों बड़े दारुणभये फिर ब्रह्माजीने अपने

शरीर के दो भाग किये एकभागसे स्वायम्भुवमनु औ दूसरे भाग से शतरूपा स्त्री उत्पन्न भये शतरूपा ने कई लाख वर्ष तप किया औ बड़ा यशस्वी स्वायम्भुव मनु भर्त्ता पाया यह मनु सबसे पहिला पुरुष है इसके इकहत्तर चतुर्युग व्यतीत होने पर एक मन्वन्तरहोता है मनु भी परम सुन्दरी शतरूपा रानी को पाय रमण करने लगे कुछकाल के अनन्तर मनु से शतरूपा में प्रियव्रत औ उत्तानपाद नामक दोपुत्र उत्पन्नभये औ आकूति तथा देवहूति ये दो कन्या भी भईं जिन से इस प्रजा की उत्पत्ति है इनमें प्रसूति तो दक्षप्रजापति को व्याही औ आकूति रुचिको व्याहदी आकूति में रुचि प्रजापति से यज्ञ औ दक्षिणा साथही उत्पन्न भये फिर यज्ञसे दक्षिणा में बारह पुत्र उत्पन्न भये जो याम कहाये इन के दो गण ब्रह्माजी ने करे एक गण अजित औ दूसरा शुक्र कहाया येही यज्ञके पुत्र याम नामक स्वायम्भुव मन्वन्तर के देवता भये स्वायम्भुव मनुकी पुत्री प्रसूति में दक्षप्रजापति से चौबीस कन्या अति रूपवती ब्रह्मवादिनी औ सम्पूर्ण लोककी माता उत्पन्न भईं इनमें श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति,तुष्टि, पुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, सिद्धि औ कीर्त्ति ये तेरह धर्म को व्याही गईं इनसे छोटी सती शिव जी को ख्याति भृगुको सम्भूति मरीचि को स्मृति अंगिराको प्रीति पुलस्त्यको क्षमा पुलहको सन्नति क्रतुको अनसूया अत्रि को ऊर्ज्जा वशिष्ठ को स्वाहा अग्निको औ स्वधा पितरों को स्वायम्भुवमनु ने व्याह दी इन

सबकी सन्तान से ही प्रलयपर्यंत सबजगत् भरारहेगा श्रद्धा से काम उत्पन्न भया लक्ष्मी से दर्प धृति से नियम तुष्टिसे सन्तोष पुष्टिसे लोभ मेधासे श्रुत क्रियासे दण्ड औ समय बुद्धि से बोध औ प्रमाद लज्जा से विनय वसु से व्यवसाय शान्ति से क्षेम सिद्धि से सुख औ कीर्त्ति से यश नामक पुत्र उत्पन्न भया ये धर्म के पुत्र हैं काम से प्रीति में हर्ष उत्पन्न भया अधर्मसे हिंसा में निकृति कन्या औ अधर्म पुत्र ये दो उत्पन्न भये निकृति से भय औ नरक ये दो पुत्र भये इनकी स्त्री माया औ वेदना माया का पुत्र मृत्युभया जो सब लोक का संहार करता है औ वेदना का पुत्र रौरव दुःख भया मृत्यु के पुत्र व्याधि, जरा, शोक, क्रोध औ असूयानाम कन्या उत्पन्नभये सो सब दुःख प्रधान औ अधर्म लक्षण हैं ये सब स्त्री पुत्रोंसे भी हीनहैं यह तामसी सृष्टि हमने वर्णनकरी ब्रह्माजी ने रुद्रको आज्ञादी कि प्रजा उत्पन्न करो तब रुद्र भगवान्ने सती नामक अपनी भार्याको ध्यानकर अपने तुल्य हज़ारों लाखों पुत्र उत्पन्न किये वे सब पिंगलवर्ण चर्मओढ़े जटाधारे कपाल हाथोंमें लिये बड़े क्रूर स्वरूप देखने सेही प्राण हरलेनेहारे धनुष, बाण, ढाल, खड्ग, बर्छी आदि भांति २ के शस्त्र अस्त्र धारे कवचपहिने रथोंपरचढ़े कोईरूपवान् कोई अतिकुरूप सैकड़ों हजारों जिनके भुजा बड़े २ शिर दो २ जिह्वा तीननेत्र बड़ी २ दंष्ट्राओं करके युक्त अन्न मांस घृत सोम आदि भक्षण करनेहारे बड़े जिनके कपाल नीलकंठ ऊर्द्धरेता धर्मका श्रवण किये धर्मात्मा कोई म-

यूरके बहुधारे बैठे दौड़ते औ कोई खड़े प्रजाको भक्षण करने के लिये दौड़तेहुये ध्यान करतेहुये कोई ध्यानका त्यागकिये कोई जपकरते कोई योगके अभ्यास में प्रवृत्त कोई धूमवान् कोई प्रज्वलित गंगा मस्तक परधारे कोईवृद्ध बुद्धिमान् ब्रह्मिष्ठ शुभदर्शन कोई २ नीलकंठ औ हजारनेत्रों करके युक्त क्षमाके समुद्र सबजीवों को अदृश्य बड़ेयोगी औ तेजस्वी कोई २ बड़े क्रोधी औ कूदते दौड़ते उछलते बड़े भयंकर शिवजी ने उत्पन्न किये इस भांति अतिक्रूर शिवजीकी प्रजादेख ब्रह्माजी ने व्याकुल होकर कहा कि बस आप कृपारखिये ऐसी प्रजा अब न सिरजें जो आप प्रजा उत्पन्न करना चाहें तो मृत्यु करके युक्त औ सौम्य प्रजा उत्पन्न करें मृत्यु हीन प्रजा कर्ममें प्रवृत्त नहीं होते यह ब्रह्माजी का वचनसुन शिवजी ने हँसकर कहा कि व्याधि जरा मृत्यु आदिसे पीड़ित प्रजा हम उत्पन्न न करेंगे अबआपही प्रजा सिरजें हमकुछ न करेंगे ये जो हमने लाखों करोड़ों अपनी तुल्य उत्पन्न किये येही आकाश पृथ्वी औ दिशाओं को व्याप्त करेंगे औ यज्ञमें इनका भागहोना औ सबके सब रुद्र कहावेंगे मन्वंतरों में जे देवताहोंगे उनके साथ ये सब पूजे जायँगे औ कल्पके अन्त तक रहेंगे यह महादेवजी का वचन सुन ब्रह्माजी ने कहा कि जो आपने आज्ञाकरी सो सब होगी आपकृपाकरें यह प्रार्थना सुन महादेवजीने प्रजा उत्पन्न करना छोड़ दिया औ ऊर्ध्वरेता होके स्थित होगये स्थितहोने से स्थाणु कहाये फिर महादेवजी सूर्यके तुल्य प्रकाशमान

अपनी इच्छासे स्त्री पुरुष रूपधार अर्द्धनारीश्वर भये शिवजी के वामअंगमें जो स्त्रीथी वही जगत्की माता सती भई औ दक्षके आराधनसे प्रसन्नहो उसकी कन्या भई औ महादेवजीको ब्याहीगई शिवजीने कहा कि हे सतीअपने वामभागको कृष्ण औ दक्षिणको शुक्ल करके विभागकरौ तब वह शिवजीकी आज्ञासे शुक्ल औ कृष्ण वर्ण होगई औ उसके नाम ये भये स्वाहा, स्वधा, महाविद्या, मेधा, लक्ष्मी, सरस्वती, सती, दाक्षायणी, विद्या, इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति, अपर्णा, एकपर्णा, एकपाटला, उमा, हैमवती, कल्याणी, एकमातृका, ख्यातिप्रज्ञा, महाभागा, गौरी, गणाम्बिका, महादेवी, नंदिनी, जातवेदसी, सावित्री, वरदा, पुण्या, पावनी, लोकविश्रुता, आज्ञा, आवेशिनी, कृष्णा, तामसी, सात्विकी, शिवा, प्रकृति, विकृता, रौद्री, दुर्गा, भद्रा, प्रमाथिनी, कालरात्रि, महामाया, रेवती, भूतनायका ये नाम उस एकरूप भगवतीके अलग२ अवतारोंसे भये औ द्वापरके अंत विभाग करके ये सब नाम हैं औ गौतमी, कौशिकी, आर्या, चण्डी, कात्यायनी, सती, कुमारी, यादवी, देवी, कृष्णपिंगला, बर्हिर्ध्वजा, शूलधरा, परमा, ब्रह्मचारिणी, महेंद्रोपेंद्रभगिनी, दृषद्वती, एकशूलधृक्, अपराजिता, बहुभुजा, प्रगल्भा, सिंहवाहिनी, शुम्भादिदैत्यहन्त्री, महामहिषमर्दिनी, अमोघा, विंध्यनिलया विक्रांता, गणनायका ये सब नाम भद्रकाली देवी के हमने कहे हैं जो मनुष्य इनको पढ़े उसको पाप का भय नहींहोता औ सब उत्तम फल पाते हैं वनमें, पर्वतपर, जलमें, स्थ-

लमें, नगरमें औ घरमें इन नामों से रक्षाकरै व्याघ्र, मकर, चोर आदि भय में और भी आपदा के स्थानमें देवीके नामों को कीर्त्तन करै तो सब दुःखोंसे छूटै अर्थक्, ग्रह, भूत, पूतना औ मातृका आदि बालग्रहों से पीड़ित बालकों की रक्षा इन नामों से करै महादेवीकी मुख्य दो कलाहैं एकसरस्वती औ दूसरी लक्ष्मी इनसे हजारों शक्ति उत्पन्न भईं जिनसे यह जगत् व्याप्त होरहाहै उस महादेवी करके युक्त देवदेव श्रीमहादेवजी जगत् के कल्याणकेलिये स्थित होरहे हैं त्रिपुर को दग्ध करने के लिये रुद्रतो पशुपति भये औ उनके तेज से सब देवता पशुभये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस आदिसर्ग के क्रमोंको जो पढ़ै सुनै अथवा ब्राह्मणों को सुनावै वह ब्रह्मसायुज्य पावै ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी संक्षेपसे औ विस्तार से सर्ग का वर्णन तो आपने किया परंतु त्रिपुर के दाहके लिये शिवजी पशुपति क्योंकर भये औ देवता पशु क्यों कहाये यह आप हमको श्रवण कराइये हमने केवल इतनाही सुना है कि मयासुरने अपनी माया से सुवर्ण, चांदी औ लोह के तीन नगर रचे उनको श्रीमहादेवजी ने दग्ध किया परन्तु यह नहीं जानते कि एक बाण सेही शिवजी ने तीनों पुर क्योंकर दग्ध किये पुरों की उत्पत्ति औ वरकी प्राप्ति हमने सुनीहै औ यह भी सुनाहै कि विष्णुजीसे उत्पन्न

भये भूत उनको दग्ध न करसके सो अब आप विस्तार से त्रिपुरदाहका वर्णन कीजिये यह सुन सूतजी भी जैसा श्रीवेदव्यासजीसे सुनाथा वैसा मुनियों के प्रति कथन करनेलगे कि हे मुनीश्वरो तारकासुर ने इस त्रैलोक्य को बहुत सताया इसलिये तीनलोक के जीवों के शाप से शिवजी के पुत्र स्कंदजी के हाथसे वह मारा गया उसके तीन पुत्र बड़े पराक्रमी विद्युन्माली, तारकाक्ष औ कमलाक्ष बाकी रहे वे तीनों अपने पिता का मृत्यु देख दुःखी हो तप करनेलगे औ ऐसा उग्रतप किया कि शरीर में अस्थि औ प्राणही शेष रहगये इस भांति बहुत काल अति उग्रतप करनेसे ब्रह्माजी प्रसन्न हो उनके समीप आये औ कहा कि वरमांगो हम तुम्हारे तपसे बहुत प्रसन्न हैं तब दैत्योंने हाथजोड़ प्रार्थना करी कि महाराज जो आपप्रसन्न भये होतो हमको अमरकीजिये किसीसे भीहमारा मृत्यु न होय यह सुन ब्रह्माजीने कहा कि भाई अमर तो कोई नहीं होसक्ता जिसने जन्म लिया वह अवश्यही मृत्युवश होताहै इसलिये और कुछ वर मांगलो यह ब्रह्माजी का वचन सुन दैत्योंने आपस में सम्मतिकर प्रार्थना करी कि जो महाराज अमर आप न करैं तो यह वरमिलै कि तीन नगरों में हमरहैं औ वे तीनोंपुर हजार वर्षके अनन्तर आकाशमें विचरतेहुये एकवार मिलाकरैं उससमय मिलेहुये तीनों नगरोंको जो देव एक बाणसे भेदनकरै वह हमारा मृत्यु होय यहसुन ब्रह्माजीने कहा कि ऐसाही होगा इतना कह ब्रह्माजी तो अपने धामको गये औ बड़ा उग्रतप

कर मयासुरने बहुत उत्तम तीन नगर सौसौ योजन विस्तार के सब सम्पत्तिसे भरेहुये अपनी मायासे रचे उनमें सुवर्णका नगर तारकाक्षने लिया जो दिव अर्थात् स्वर्ग में रहता था चांदीका पुर कांचनाक्ष को मिला वह सदा अन्तरिक्ष में रहा करता तीसरापुर लोह का जो भूमि में स्थितथा उसका स्वामी विद्युन्माली भया इस भांति ये तीनपुर दैत्योंके बड़े दृढ़ औ आकाशगामी थे तीनपुर क्या उनको तो तीन लोक कहनाचाहिये जिन तीनों में अपने २ उत्तम प्रासाद बनाये तीनों दैत्य चैन उड़ानेलगे औ मयासुर तो सब पुरों में पूजनीयही था वे तीनों पुर कल्पद्रुमों के बाग भांति २ के रत्नोंसे जड़े प्रासाद सूर्यमंडल के तुल्य प्रकाशमान पद्मरागके विमान कैलास पर्वतके शिखरोंकी भांतिअतिऊंचे औ चन्द्रमंडलके तुल्य प्रकाशित स्फटिक के महल, बापी, कूप, तालाव,सर औ मणि कलशों करके भूषित ऊंचे २ सुवर्ण के शिवालय सभा प्रपा अर्थात् पानीयशाला वेदअध्यापन की शाला औ भांति २ के क्रीड़ा स्थानों से परिपूर्ण थे औ हाथी घोड़े रथ उत्तम २ स्त्री जिनको देखि इंद्रकी अप्सराभी लजायँ गन्धर्व सिद्ध चारण औ अग्निहोत्रियों से भरे थे औ श्रौत स्मार्त्त धर्ममें तत्पर बड़े २ महात्मा दैत्य औ पतिव्रतास्त्री उनमें निवास करतेथे औ सदा सदाशिवके पूजन करने से निष्पाप रहतेथे औ सबदैत्य बड़े पराक्रमी बलवान् अग्निके तुल्य जिनकेनेत्र मेघके तुल्य गंभीर जिनका शब्द पर्वतसे शरीर नीलवर्ण औ शान्तचित्त थे औ

मयासुरकी रक्षासे तथा श्री महादेवजीकी कृपासे सब देवताओं को तुच्छ समझते औ युद्धमें सदा जयपाते थे इसभांति बड़ाभारी दैत्योंका ऐश्वर्यदेख इन्द्र आदि देवता पुरत्रयकी अग्निसे दग्ध होनेलगे जिस भांति दावाग्नि से वृक्ष जलजायँ यह दशा दैत्यों के ऐश्वर्य से देवताओंकी होगई तब सब देवताओं ने व्याकुलहो विष्णु भगवान् के पासजाय अपनी दुर्दशा वर्णनकर सुनाई विष्णुभगवान्ने भी उनको अतिदुःखी देख मन में विचार किया औ उनका संकट कटनेके लिये यज्ञका स्मरण किया यज्ञभी उसी क्षण वहां आन पहुँचा औ भगवान्को प्रणाम किया विष्णुजीने यज्ञ को देख देवताओंसे कहा कि तीन पुरोंके संहारके लिये औ तीन लोककी रक्षाके लिये आप इस उपसद नाम यज्ञ से श्री महादेवजी का यजन करें तब आप का सब दुःख दूर होगा सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह विष्णु भगवान् का वचन सुन सब देवताओं ने प्रसन्नहो सिंहनाद किया औ भगवान् की स्तुति करनेलगे भगवान्ने देवताओं से कहा कि अनेक जीवों को मारकर दग्धकर औ अन्याय से भोगकरके भी जो पुरुष शिव जी का यजन करें वह निष्पाप होजाय इसमें कुछ संदेह नहीं पापी मरजाते हैं निष्पाप कभी नहीं मरते असुर यद्यपि बड़े पापी हैं परन्तु महादेवजीके प्रभाव से उनका मृत्यु होना कठिन है हम ब्रह्माजी का औ देवता मुनि आदि किसी का भी दुःख दूर महादेवजी की कृपा विना नहीं होसक्ता सब जगत् औ देवताओं

कर मयासुरने बहुत उत्तम तीन नगर सौसौ योजन विस्तार के सब सम्पत्तिसे भरेहुये अपनी मायासे रचे उनमें सुवर्णका नगर तारकाक्षने लिया जो दिव अर्थात् स्वर्ग में रहता था चांदीका पुर कांचनाक्ष को मिला वह सदा अन्तरिक्ष में रहा करता तीसरापुर लोह का जो भूमि में स्थितथा उसका स्वामी विद्युन्माली भया इस भांति ये तीनपुर दैत्योंके बड़े दृढ़ औ आकाशगामी थे तीनपुर क्या उनको तो तीन लोक कहना चाहिये जिन तीनों में अपने २ उत्तम प्रासाद बनाये तीनों दैत्य चैन उड़ानेलगे औ मयासुर तो सब पुरों में पूजनीयही था वे तीनों पुर कल्पद्रुमों के बाग भांति २ के रत्नोंसे जड़े प्रासाद सूर्यमंडल के तुल्य प्रकाशमान पद्मरागके विमान कैलास पर्वतके शिखरोंकी भांतिअतिऊंचे औ चन्द्रमंडलके तुल्य प्रकाशित स्फटिक के महल, वापी, कूप, तालाव,सर औ मणि कलशों करके भूषित ऊंचे २ सुवर्ण के शिवालय सभा प्रपा अर्थात् पानीयशाला वेदअध्यापन की शाला औ भांति २ के क्रीडा स्थानों से परिपूर्ण थे औ हाथी घोड़े रथ उत्तम २ स्त्री जिनको देखि इंद्रकी अप्सराभी लजायँ गन्धर्व सिद्ध चारण औ अग्निहोत्रियों से भरे थे औ श्रौत स्मार्त धर्ममें तत्पर बड़े २ महात्मा दैत्य औ पतिव्रतास्त्री उनमें निवास करतेथे औ सदा सदाशिवके पूजन करने से निष्पाप रहतेथे औ सबदैत्य बड़े पराक्रमी बलवान् अग्निके तुल्य जिनकेनेत्र मेघके तुल्य गंभीर जिनका शब्द पर्वतसे शरीर नीलवर्ण औ शान्तचित्त थे औ

मयासुरकी रक्षासे तथा श्री महादेवजीकी कृपासे सब देवताओं को तुच्छ समझते औ युद्धमें सदा जयपाते थे इसभांति बड़ाभारी दैत्योंका ऐश्वर्यदेख इन्द्र आदि देवता पुरत्रयकी अग्निसे दग्ध होनेलगे जिस भांति दावाग्नि से वृक्ष जलजायँ यह दशा दैत्यों के ऐश्वर्य से देवताओंकी होगई तब सब देवताओं ने व्याकुलहो विष्णु भगवान् के पासजाय अपनी दुर्दशा वर्णनकर सुनाई विष्णुभगवान्ने भी उनको अतिदुःखी देख मन में विचार किया औ उनका संकट कटनेके लिये यज्ञका स्मरण किया यज्ञभी उसी क्षण वहां आन पहुँचा औ भगवान्को प्रणाम किया विष्णुजीने यज्ञ को देख देवताओंसे कहा कि तीन पुरोंके संहारके लिये औ तीन लोककी रक्षाके लिये आप इस उपसद नाम यज्ञ से श्री महादेवजी का यजन करें तब आप का सब दुःख दूर होगा सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह विष्णु भगवान् का वचन सुन सब देवताओं ने प्रसन्नहो सिंहनाद किया औ भगवान् की स्तुति करनेलगे भगवान्ने देवताओं से कहा कि अनेक जीवों को मारकर दग्धकर औ अन्याय से भोगकरके भी जो पुरुष शिव जी का यजन करै वह निष्पाप होजाय इसमें कुछ संदेह नहीं पापी मारेजाते हैं निष्पाप कभी नहीं मरते असुर यद्यपि बड़े पापी हैं परन्तु महादेवजीके प्रभाव से उनका मृत्यु होना कठिन है हम ब्रह्माजी का औ देवता मुनि आदि किसी का भी दुःख दूर महादेवजी की कृपा विना नहीं होसक्ता सब जगत् औ देवताओं

के स्वामी उसीसदाशिवने अपनीलीला करके देव औ दैत्यों का विभाग किया है उसी के एक अंश की पूजा कर आप देवता भये हो औ ब्रह्माजी ब्रह्मा तथा हम सब जगत् का पालन करनेहारे विष्णु उसी महेश्वर के अनुग्रह से भये हैं विना शिवजी की पूजाकिये इस जगत् में किसी की सिद्धि नहीं होसक्की वे सब दैत्य श्रौत स्मार्त्त धर्म में तत्पर औ निरन्तर शिवलिङ्ग की पूजासे निष्पाप हैं इसकारण उनका मारना बहुत कष्ट-साध्यहै तौभी इस यज्ञकरके श्रीमहादेवजी का यजन करके अवश्य ही दैत्यों से जय पावेंगे विना शिवजी के और किसी की सामर्थ्य नहीं जो मयासुर करके र-क्षित औ बड़े पराक्रमी दैत्यों करके युक्त उन पुरों का संहार करै सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इतना दे-वताओं से कहकर विष्णुजी उपसद नाम यज्ञ शिव-जी की प्रसन्नता के लिये करनेलगे औ देखा कि ह-जारों भूतसमूह शूल, शक्ति, गदा, खड्ग, परशु आदि शस्त्र हाथों में लिये अनेक वेषों करके युक्त मानो सा-क्षात् शिवकेही गण होयँ हाथ जोड़े सम्मुख खड़ेहैं उन को देख विष्णुजीने कहा कि हे वीरो तुम शीघ्र जाओ औ तीनों पुरों को फूँक जलाय प्रलय में मिलाय दैत्यों को भी यमराज की राजधानीको पठाय दो वे भूतभी इसभांति भगवान् की आज्ञा पाय शिरनवाय प्रणाम कर त्रिपुर का संहार करनेको उठधाये औ क्षण भरमें ही वहां जाय पहुँचे परन्तु पुरों के भीतर प्रवेश करते ही सब के सब अग्निमें प्रविष्ट हुये पतंगों की भांति

भस्म होगये यह उनकी दशा देख औ सब वृत्तांत जान दैत्य अति मुदित भये औ भक्ति से शिवजी के आगे नाचने गाने औ स्तुति करने लगे देवताभी सब करेकराये परिश्रमको वृथा भये जान हारमान विष्णु भगवान् के समीप आ सब समाचार कहतेभये भगवान् भी सब देवताओं को अतिदीन मुखमलीन तन क्षीण औ सुख से हीन देख अपने मनमें विचारकरने लगे कि किसप्रकार उन दुष्ट दैत्यों को मार इनका दुःख दूरकरूं विचार करने सेभी कोईउनका पापनहीं दीख पड़ता निष्पाप होनेसे ही उपसद यज्ञसे उत्पन्न भूतों ने भी उनका संहार न किया प्रत्युत आपही जलकर भस्म होगये यह श्रुति बहुत ठीक है कि धर्म से पाप दूर होता है औ ऐश्वर्य मिलता है त्रिपुरनिवासी सब दैत्य धर्मनिष्ठ हैं इसीसे अवध्य हैं बड़े भारी पापों के पुंज शिवपूजा के प्रभाव से विलाय जाते हैं औ भोग सम्पत्ति मिलती है वे सब दैत्य निरन्तर भक्तिसे शिवपूजा में तत्पर हैं इसी से ऐश्वर्य युक्त औ भोगी हैं इसलिये अब हम अपनी माया से उन के धर्म में विघ्न करें जिससे उनका प्रताप न्यून होय औ देवताओं की विपत्ति दूर करनेके लिये हमाराजयहोय सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो विष्णु भगवान् इस बात को मन में ठान दैत्यों के धर्म की हानि करने के लिये एक मायारूप पुरुष अपने देह से उत्पन्न करते भये औ सब को मोह करनेहारा श्रौत स्मार्त्तधर्म से विरुद्ध वर्णाश्रमसे हीन षोड़शलक्ष श्लोक प्रणाम एक

अपूर्व शास्त्र उस अपने देहसे उत्पन्न भये पुरुषको उपदेश करतेभये कि जिस शास्त्रमें यह लिखा था कि यहांहीं स्वर्ग औ नरक हैं परलोक की बात सब मिथ्या है औ उसशास्त्रके सब विधि दृष्टप्रत्यय थे अर्थात् जिनके करने से उसीक्षण फल मिलताथा कभी लिखेहुये फलमें व्यभिचार न होनेपाताथा इसभांतिका विलक्षण शास्त्र उस मायामय मुनिको उपदेशकर भगवान्ने कहाकि तुम त्रिपुरमें जाय अपनाधर्म चलाओ औ श्रौतस्मार्त्त धर्मको धक्का लगावो यह भगवान् की आज्ञा पाय उस मायावीने त्रिपुरमें जाय ऐसा प्रपंच फैलाया कि सब दैत्य उसके शिष्य होनेलगे औ श्रौतस्मार्त्त धर्मको त्याग श्री शंकरसे विमुख होगये इसी अवसर में नारदजीभी भगवान् की आज्ञापाय त्रिपुरमें जाय दैत्यों का वञ्चन करनेकेलिये अपने शिष्यप्रशिष्यों सहित उसमायावीके शिष्य भये औ स्त्रियोंको भी व्यभिचार काउपदेश किया कि सब पतिव्रतास्त्री अपने२ पतिकी सेवा छोड़ जारों में आसक्त भईं अब तक भी उसी नारद के उपदेश के प्रभावसे कई अधमनारी अपने भर्त्ता को त्याग कुलटा होजाती हैं नारियोंका माता पिता बंधु सखा सब पतिही है बड़े २ पाप करनेहारी भी स्त्री पतिकी सेवा करनेसे स्वर्गमें निवास करतीहै औ पति से विमुख होकर नरक भोगती है पूर्वकालमें जो पतिव्रतास्त्री सब धर्मों को त्याग औ देवताओंका आराधन छोड़ पतिकी सेवामें तत्परभई उसने स्वर्ग में जायअपने पतिकेसाथ बहुतकाल आनन्द किया औ पति से

विरोध करनेहारी नारी नरक की आगसे वहुत काल तक दग्ध भई औ होतीहैं इत्यादि सब पतिव्रताओंके धर्मजानकरभी अपने पतियोंको त्याग भगवान् की मायासे मोहितहो व्यभिचार में आसक्त भई इसभांति जब उन नगरों में अधर्म की प्रवृत्ति भई औ धर्मकी जड़ उखड़गई तब अलक्ष्मीका प्रवेशभया औ लक्ष्मी ने उनका त्यागकिया इस प्रकार उसमायामुनि ने औ नारदजीने दैत्योंको भलीभांति व्यामोहित किया औ अपना कार्य सिद्ध हुआ देख दोनों वहुत प्रसन्नभये जब त्रिपुरमें श्रौत स्मार्त्त धर्म नष्टभया शिवभक्ति औशिव-लिंगकी पूजासे सब विमुख होगये पतिव्रता पातिव्रत छोड़ अधर्ममें लगीं तब विष्णु भगवान् देवताओं का कार्य सिद्धभयाजान इन्द्र आदि सब देवगण को साथले विमानपर वैठ कैलास को जातेभये वहां जाय पार्वती जी सहित श्री महादेवजीको भक्तिसे प्रणामकर बड़े विनयसे करजोर स्तुति करनेलगे ॥ विष्णुरुवाच ॥ महेश्वरायदेवायनमस्तेपरमात्मने । नारायणायशर्वायब्रह्मणेब्रह्मरूपिणे । शाश्वतायह्यनंतायअव्यक्तायचतेनमः । इति १ सूतजी कहते हैं कि विष्णु भगवान् ने इतनी स्तुतिकर भक्ति से दण्ड प्रणाम किया औ एकान्त में जाय जलमें स्थितहो शिवजीकी प्रसन्नता केलिये जप करने लगे औ इन्द्र, यम, रुद्र, साध्य, मरुत् आदि देवताभी श्री महादेवजीकीस्तुति करने लगे । देवाऊचुः । नमः सर्वात्मनेतुभ्यंशंकरायार्त्तिहारिणे । रुद्रायनीलरुद्रायकद्रुद्रायप्रचेतसे १ गतिर्नःसर्वदास्माभिर्वंद्योदे

ब्यारिमहेत: ॥ त्वमादिस्त्वमनंतश्च अनंतात्माऽव्यय
प्रभुः २ प्रकृतिःपुरुषःसाक्षात्स्रष्टाहर्त्ताजगद्गुरो॥
त्राताऽनेताजगत्यस्मिन्द्विजानांद्विजवत्सल ३ वरदोवा
ङ्मयोवाच्योवाच्यवाचकवर्जितः ॥ इज्योमुक्त्यर्थमी
शानोयोगिभिर्योगविभ्रमैः ४ हृत्पुण्डरीकसुषिरेयोगि
नांसंस्थितःसदा ॥ वदन्तिसूरयःसंतंपरब्रह्मस्वरूपि
णम् ५ भवंतंतत्त्वमित्यार्यास्तेजोराशिंपरात्परम् ॥
परमात्मानमित्याहुरस्मिञ्जगतितद्विभो ६ दृष्टंश्रुतं
स्थितंसर्वंजायमानंजगद्गुरो ॥ अणोरल्पतरंप्राहुर्म
हतोऽपिमहत्तरम् ७ सर्वतःपाणिपादंत्वांसर्वतोऽक्षिशि
रोमुखम् ॥ सर्वतःश्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठसि ८ म
हादेवमनिर्देश्यंसर्वज्ञंत्वामनामयम् ॥ विश्वरूपंविरूपा
क्षंसदाशिवमनामयम् ९ कोटिभास्करसंकाशंकोटिशी
तांशुसन्निभम् ॥ कोटिकालाग्निसंकाशंषड्विंशकमनी
श्वरम् १० प्रवर्त्तकंजगत्यस्मिन्प्रकृतेःप्रपितामहम् ॥व
दंतिवरदंदेवंसर्वावासंस्वयंभुवम् । श्रुतयःश्रुतिसारंत्वां
श्रुतिसारविदोजनाः ११ अदृष्टमस्माभिरनेकमूर्त्तेविना
कृतंयद्भवताथलोके॥ त्वमेवदैत्यासुरभूतसंघान्देवान्न
रान्स्थावरजंगमांश्च १२ पाहिनान्यागतिःशंभोविनि
हत्यासुरोत्तमान् ॥ माययामोहिताःसर्वेभवतःपरमेश्व
र १३ यथातरंगालहरीसमूहायुज्यन्तिचान्योन्यमपां
निधौच ॥ जलाश्रयादेवजडीकृताश्चसुरासुरास्तद्वदय
स्यसर्वम् १४ ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इस स्तोत्रको जो
पुरुष पवित्र होकर प्रातःकाल पठन करै अथवा श्रवण

२ वह अपने सब अभीष्ट फलपावै इसप्रकार देवताओंसे स्तुति सुनकर प्रसन्नहो गंभीर शब्दसे श्रीमहादेवजी कहने लगे कि हे देवताओ आप का कार्य हम को विदितहै औ विष्णुजी की तथा नारदजी की माया भी हमको विदितहै अब हम अधर्ममें प्रवृत्त उन दैत्यों के तीनों पुरोंका नाश शीघ्रही करैंगे तुम प्रसन्न रहो इतना शिवजीका वचन सुन देवता बहुत प्रसन्नभये औ बार२ परमेश्वरके चरणारविन्दमें प्रणामकरनेलगे इसी अवसर में श्रीपार्वतीजी प्रसन्न हो लीला कमलसे श्री महादेवजी को ताड़नकर कहनेलगीं कि महाराज सूर्य के तुल्य प्रकाशमान अपने पुत्र स्कन्दको क्रीड़ा करते भये देखिये कटक कुंडल नूपुर वलय छन्नवीर उदरबंधन किंकिणी अंगद सुवर्ण के अश्वत्थपत्र आदि अनेक भूषण मोती औ पद्मराग आदि मणियों के हारों करके भूषित औ कल्पद्रुमों के पुष्प अपनी अलकों में लगाये कुंकुम आदिके तिलक मस्तकमें दिये खेलरहा है इसके छहों मनोहर मुख कमलों का समूह सा देख पड़तेहैं औ इसकी माता गंगा कृत्तिका स्वाहा औ चामुण्डा आदि मातृकाओंने रक्षाके लिये इसके नेत्रों में लगायाहुआ अंजन कैसा मनको रंजन करताहै इतना पार्वतीजीसे सुन महादेवजी स्वामिकार्त्तिकेय को देखने लगे औ उसके मनोहर मुखको नेत्रोंसे पान करते २ तृप्त न भये औ समीप बुलाय आलिंगन कर प्रीति से कहा कि हेपुत्र हमारे आगे नृत्यकर स्कन्दभी महादेव जीकी आज्ञापाय नाचनेलगा महादेवजी उस बालक

को अति मनोहर लीलासे नृत्य करते देख अपने गण सहित आपभी नाचनेलगे महादेवजी को नृत्य कर देख इंद्र आदि देवता औ तीनों लोक नाच उठे सबग स्कन्दकी स्तुति करनेलगे पार्वती औ मातृका बालक नृत्य देख अति मुदित भई गंधर्व पुष्पवृष्टि करनेल औ किन्नर गान में प्रवृत्त भये इसभांति पार्वती औ सदाशिव कुछकाल तक स्कन्दका नृत्य देख नन्दी आदि गण औ स्कंद को साथ ले एक अति उत्तम प्रासाद में विहार करनेके लिये प्रवेश करगये औ देवताओं की सुधि भूलगये इंद्र आदि देवता भी उसमहल द्वारपर खड़े २ उद्विग्न हो आपस में कहने लगे कि हम बड़े मंदभागी हैं दैत्यों के भाग्य प्रबल हैं कि हम को अब महादेवजीके दर्शन भी दुर्लभ होगये औ कार्य सिद्धि की क्या आशा है इसभांति अनेक प्रकार की बातें बनाने लगे उनका कोलाहलसुन क्रोधकर कुम्भोदर नाम गण वहां आया औ सुवर्ण के दण्ड से सब देवताओंको ताड़नकिया औ कहाकि परमेश्वर भीतर विहार कर रहे हैं तुम यहां क्यों कोलाहल मचारहेहो चलेजाओ इसभांति उसको क्रुद्धहुये देख भयभीतहो हाहाकार करते हुये देवता भगे औ कश्यप आदि बूढ़े२ मुनि तो भूमिपर ही गिरपड़े औ परस्पर कहनेलगे कि दैत्यों के भाग्य से हमारा कार्य सिद्धहोकर बिगड़गया कोई २ मुनि अपने हृदय कमलमें शिवजीका ध्यानकर- तेहुये भयनिवृत्त होने के अर्थ नमःशिवाय इसमंत्रका स्मरण करने लगे इसी अवसर में वृषपर आरूढ़ म-

स्तक पर जटाजूट धारे कटक कुण्डल आदि भूषणोंसे मण्डित शूल गदा आदि शस्त्रधारे महादेवजी के परम प्रिय नन्दी वहांआये उनकोदेख कुंभोदरने उनको प्रणामकिया औ उनकेपीछे२ चला नन्दीभी श्वेतवर्णके वृषभके ऊपर अति शोभायमान होरहेथे जिस भांति मेघके ऊपर आरूढ़ महादेवजी सोहैं औ दशयोजन के विस्तारका श्वेतछत्र मानों दूसरा आकाशही हो- उनके ऊपर गणों ने धारण कर रक्खा था उस छत्रमें लटकती हुई मोतियों की माला ऐसी शोभायमान हो रहीथी जैसे शिवजीके मस्तकपर गंगाकी धारा इसभांति सबगणोंके स्वामी नन्दीकी सवारी देख इन्द्रकी आज्ञा पाय देवदुंदुभि बजने लगे आकाश से उत्तम सुगन्ध युक्त पुष्पों की वर्षा होनेलगी देवताभी शिवजीके द- र्शनकी भांति नन्दीका दर्शन पाय अत्यंत हर्षित भये औ इन्द्रकी प्रेरणासे सबमुनियोंने मिलकर ऊंचेस्वरसे जय शब्द किया औ इन्द्र आदि सब देवता हाथजोड़ नन्दी की स्तुति करनेलगे ॥

देवाऊचुः ॥ नमस्तेरुद्रभक्ताय रुद्रजाप्यरतायच ॥ रुद्रभक्तार्त्तिनाशाय रौद्रकर्म्मरतायच १ कूष्माण्डगणना थाय योगिनांपतयेनमः ॥ सर्वदायशरण्यायसर्व्वज्ञाया र्त्तिहारिणे २ वेदानांपतयेचैव वेदवेद्यायतेनमः ॥ वज्रि णेवज्रदंष्ट्रायवज्रिवज्रनिवारिणे ३ वज्रालंकृतदेहाय व- ज्रिणाराधितायते ॥ रक्तायरक्तनेत्राय रक्तांबरधरायते४ रक्तानांभुवपादाब्जे रुद्रलोकप्रदायिने ॥ नमःसेनाधिप तये रुद्राणांपतयेनमः ५ भूतानांभुवनेशानांपतयेपाप

हारिणे ॥ रुद्रायरुद्रपतयेरौद्रपापहरायते । नमःशिव यसौम्याय रुद्रभक्तायतेनमः ६ इति ॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार देवताओं को स्तुतिकरतेदेख प्रसन्नहो नन्दीनेकहा कि श्रीशिवजी केलिये रथसारथि औ धनुर्बाण तुम यत्नसे बनाओ तोतीनोंपुरोंका नाशहुआहीजानो देवताभी इतनावचन नन्दीसे सुन ब्रह्माजी औ विश्वकर्मा सहित बड़ेयत्नसे देवदेव श्रीमहादेवजी के लिये रथ रचते भये ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो सब देवताओं की सम्मतिसे विश्वकर्मा ने सर्वलोक सर्वदेव औ आकाश आदि पंच महाभूतों करके अति उत्तम रथ बनाया उस रथका दहिना चक्र सूर्य औ वाम चन्द्रमा बनाये दहिने चक्रमें द्वादश आदित्यरूप बारह अरेथे औ बांयेंमें सोलह कलारूप षोडश अर लगरहेथे और सम्पूर्ण नक्षत्र गण बांयें चक्रको भूषित कियेथे उन चक्रों के नेमि अर्थात् परिधि छः ऋतु थे आकाश पुष्कर अर्थात् अवकाश मन्दर पर्वत रथनीड़ जिसमें सारथि बैठताहै उदयाचल औ अस्ताचल रथके कूबरथे अधिष्ठान अर्थात् रथमें मुख्य बैठने का स्थान मेरु पर्वत भया औ मेरुके प्रत्यंत पर्वत अर्थात् समीपके छोटे २ पर्वत अधिष्ठानके केसर भये रथका वेगसंवत्सर कल्पना किया गया औरी के अग्रभाग दोनों अयन मुहूर्त्त बंधुर औ कला उस रथकी शम्पा कल्पना कीगई काष्ठा उसरथ

की घोणा औ क्षण अक्ष दण्ड अर्थात् धुरी बनायेगये निमेष अनुकर्ष अर्थात् रथके नीचे का काष्ठलव ईषा स्वर्ग वरूथ औ धर्म तथा वैराग्य ध्वजका दण्ड यज्ञ दण्ड का आश्रय यज्ञकी दक्षिणा रथकी संधि पचास अग्नि लोहेके कील धर्म औ काम युग अर्थात् जुआके अग्रभाग अव्यक्त ईषादण्ड बुद्धिनड्वल अर्थात् धुरी में लगानेके घृत आदि स्नेहद्रव्य रखनेको पात्र अहंकार रथके कोण पंचभूत रथका बल औ दशों इन्द्रिय उस रथके भूषणकल्पना कियेगये चारोंवेत चारघोड़े श्रद्धा उनकी गति वेद के पद अश्वों के भूषण षडंग उपभूषण पुराण न्याय मीमांसा औ धर्मशास्त्र अश्वों के ऊपर डालने के चित्र कम्बल, गायत्री आदि मंत्र वर्ण, पाद अर्थात् छन्दका चतुर्थांश औ ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम उनकम्बलों के प्रांतों में घण्टा कल्पनाकरे हजार फणोंकरके भूषित अनंतनाग अवच्छेद अर्थात् बांधनेकी रज्जु दिशा औ विदिशा इस रथके पाद पुष्करावर्त्त आदि मेघ सुवर्ण करके भूषित पताका चारों समुद्र रथढकने के लिये कम्बल बनाये गये सब भूषणों से अलंकृत पंखे चमर आदि हाथोंमें लिये गंगा आदि नदी शोभाकेलिये इधर उधर रथके स्थितभई आवह आदि सात वायुस्कंध रथमें चढ़ने के लिये सोपान अर्थात् सीढ़ी कल्पना किये उस रथके सारथी ब्रह्माजी औ रश्मि अर्थात् घोड़ों की लगाम पकड़नेवाले सब देवताभये औ प्रणव प्रतोद अर्थात् चाबुक सोपान सहित लोकालोक औ मानस पर्वत विषम अर्थात् पांव

रखने का स्थान औ बाकी सब पर्वत उस रथके चारों ओर नासा कल्पना कियेगये मेरु पर्वत छत्र मंदरपर्वत डिंडिम अर्थात् नगारा सुमेरुपर्वत धनुष वासुकि नाग धनुषकी ज्या औ कालरात्रि तथा इन्द्रभी धनुषकी ज्या कल्पना कियेगये धनुषका टंकार सरस्वती देवी बाण विष्णु औ बाणका फलचन्द्रमा प्रलयकी अग्नि उसफल की तीक्ष्णधार कालकूटविष, बाणकाबल, वायुबाणके ऊपर लगेहुये पत्त बनायेगये इसप्रकार सब देवताओं करके युक्त दिव्यरथ बनाय औ धनुर्बाण कल्पनाकर सारथि के स्थान में ब्रह्माजी को बैठाय युद्धकी सामग्री साथले तीनोंलोकों को कम्पित करते हुये उसरथ में शिवजी आरूढ़भये मुनि स्तुति करने लगे सूत मागध बन्दीआदि आगे कीर्त्ति प्रबन्ध पढ़नेलगे अप्सरा नृत्य करने में प्रवृत्तभई परन्तु शिवजीके रथमें चढ़तेही वेद रूप अश्वभूमि-परगिरे औ वृषेंद्रका रूपधार शेषनाग क्षणमात्र उस रथको धारण करतेभये परन्तु भार से उनकेभी जानु भूमिपर टिकगये तब शिवजीकी आज्ञा पाय लगाम खैंचकर ब्रह्माजीने घोड़ोंको उठाया औ रथको स्थापन किया औ आकाश में स्थित दैत्यों के पुरोंकी ओर बड़ेवेग से रथको प्रेरण किया शिवजीने सबदेवताओं से कहा कि तुमसब अपनेको पशुकल्पनाकरो औ हमको पशुपति बनाओ तबदैत्योंका संहार होसकेगा नहींतो बड़ाकठिन कामहै यह शिवजी का वचनसुन देवताओंके मनमें बड़ा विषाद भया कि हम पशु क्योंकर बनें महादेवने देवताओंको उदास देखकर

कहाकि पशुहोनेसे तुमकुछभयमतकरो सुनो जिसप्रकार पशुभावसे भी मोक्ष होताहै जो पुरुष दिव्य पाशुपतव्रत करेगा वह पशुभावसे मुक्तहोजायगा यह हमप्रतिज्ञा करचुके हैं इसलिये जे पुरुष नैष्ठिक पाशुपतव्रत बारह वर्ष छःवर्ष अथवा तीनवर्षही करेंगे वे अवश्य पशुभावसे मुक्तहोंगे इस कारण हे देवताओ तुमभी इस व्रतके करनेसे पशुपाश से मुक्तहोगे यह शिवजीका वचन सुन प्रसन्नहो शिवजीको नमस्कारकर पशुभावको प्राप्तभये औ पशुपाश के हरण करनेहारे श्रीसदाशिव पशुपति बने पाशुपतव्रत करने से पशुत्व दूरहोता है औ सबपाप कटजाते हैं यह शास्त्रका निश्चयहै इसी अवसर में देवताओं ने विनायककी पूजा न करी इसलिये विनायक कहने लगे कि भांति २ के भक्ष्य भोज्यों से हमारी पूजा विनाकिये कौन देवता अथवा दैत्य अपनेकार्यकी सिद्धि पासक्ता है तुमने इतने बड़े कार्य के आरंभ में हमारा पूजन न किया इसलिये हम इस तुम्हारे कार्यमें विघ्न करेंगे यहसुन इन्द्र आदि देवता भयभीत भये औ नानाप्रकार के लड्डूआदि भक्ष्य औ भांति २ के पुष्पोंसे गणेशजीका पूजन करने लगे औ शिवजीनेभी गणेशजीको अपने समीप बुलाय छातीसे लगाय बहुत प्यार किया औ अनेक प्रकार के भूषण वस्त्र सुगन्ध भक्ष्य भोज्य आदिकों से उनकी पूजाकर त्रिपुर को दग्ध करने के अर्थ प्रस्थान करते भये औ उनके पीछे देवता सिद्ध भूत औ नन्दी आदि गण अपने २ वाहनोंपर चढ़कर चले इनमें पर्वत की तुल्य

अपने विमान परबैठ नन्दी सबके आगे २ चले औ बाक़ी सबगणभी हाथी घोड़े वृष आदि अपने २ बाहनोंपर चढ़कर शिवजीके आगे पीछे चले विष्णुजी गरुड़पर चढ़ शिवजी के बाँई ओर औ सब देवता भी शिवजी को चारोंओर से घेर अनेक प्रकारके शस्त्र औ युद्धकी सामग्री साथले त्रिपुरकी ओर चले सब देवताओंके बीच गरुड़पर चढ़ेहुये विष्णु भगवान् ऐसे शोभितहोते थे जैसे मेरु पर्वतपर इन्द्र शोभित होयँ ऐरावत हस्ती के ऊपर आरूढ़हो शिवजी के दाहिनी ओर इन्द्र चले सब देवता स्वामिकार्त्तिकेय की भांति अपने सेनापति इन्द्रको प्रणाम करतेभये औ यम, वरुण, कुबेर, अग्नि, निर्ऋति, वायु औ ईशान भी अपने २ वाहनोंपर चढ़ शिवजी के साथ चले रोमजनाम गणोंकरके युक्त वीरभद्र वृष ऊपर चढ़ रथके नैर्ऋत्य कोणमें रक्षाकेलिये चले महाकाल अपने गण साथले शिवजी के रथकी वायव्यकोणमें भये कुमार स्वामी बड़े ऊंचे हाथीपर चढ़ अपनी सेना सङ्गले शिवजी के साथ भये देवताओं को अविघ्न औ दैत्योंको विघ्न करनेहारे श्रीगणेशजी महादेवजी के सङ्गचले औ उनके आगे २ बड़ा भयङ्कर त्रिशूल औ कपाल हाथमें लिये रुधिर औ मधु पानकरने से जिनके नेत्र घूर्णित भांति २ के गण औ पिशाच सबके सब मधुपान से मत्त अपने सङ्गलिये हाथी का चर्म ओढ़े औ हाथीपरही आरूढ़ श्रीकाली भगवती भी दैत्योंके हृदयोंको कम्पित करतीहुई चली औ भगवती के चारोंओर सिद्ध, गंधर्व, पिशाच, यक्ष, विद्याधर,

संग औ देवता जय २ शब्द करतेहुये चले औ सब मातृका अपने २ वाहनोंपर आरूढ़होकर अनेक शस्त्र हाथों में लिये ध्वजा धारे भगवती के साथचलीं सिंहपर आरूढ़ अपनी भुजाओं में अंकुश, शूल, पाश, परशु, चक्र, खड्ग, शंख धारणकिये प्रलयकालके अतिप्रचण्ड हज़ारों सूर्य्यों से भी अधिक देदीप्यमान अपने नेत्रों करके मानों त्रैलोक्यको दग्धही करती हैं बड़े पराक्रम करके युक्त श्रीदुर्गाजी भी महादेवजी के संगचलीं औ उनकेसंग हल, फाल, मूसल, भुशुण्डी, पर्वतों के शिखर औ त्रिशूलआदि आयुध हाथों में लिये हाथी, घोड़े, रथ, सिंह औ वृषआदि भांति २ के वाहनोंपर आरूढ़ पर्वतके तुल्य शरीर धारे अनेक गणभी चले औ ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रआदि देवता बड़े हर्षसे जय २ शब्द करते हुये मुनिभी प्रसन्नता से नाचते हुये औ सिद्ध चारण आदि पुष्पों की वर्षा करतेहुये श्रीमहादेवजी के साथ-चले औ बड़ायोगी भृङ्गीनाम गण विमानपर बैठ अनेक देवता औ गणोंको साथलिये शिवजी केसाथ त्रिपुरकी ओरचला औ केश, विगतवासा, महाकेश, महाज्वर, सोमवल्ली के तुल्यवर्ण सोमक, सेनक, सोमधृक्, सूर्यवाच, सूर्यपेषणक, सूर्याक्ष, सूरि, सुर, सुन्दर, प्रकुन्द, कंकुदन्त, कम्पन, प्रकम्पन, इन्द्र, इन्द्रजय, महाभीमक, शताक्ष, पंचाक्ष, सहस्राक्ष, महोदर, यमजिह्व, शताश्व, कंठन, कंठपूजन, द्विशिख, त्रिशिख, पंचशिख, मुण्ड, अर्द्धमुण्ड, दीर्घ, पिशाचास्य, पिनाकधृक, पिप्पलायतन, अंगारकाशन, शिथिल, शिथिलास्य, अक्षपाद,

अजकुज, अजवक्क, हयवक्क, गजवक्क, ऊर्ध्ववक्क इत्यादि लाखोंगण लक्षलक्ष से वर्जित भुण्डके झुण्डबांधे औ हज़ारोंरुद्र त्रिपुरका संहार करनेकेलिये महादेवजीके सङ्गभये औ तेंतीस किरोड़ देवता सबलोकोंकी गणों की औ भूतों की माता शिवजी के रथ के पीछे २ चले उनसबके बीच शिवजी ऐसे शोभायमानथे जैसे तारा गण में पूर्ण चन्द्र होय औ उनके वामभागमें जगन्माता श्रीपार्व्वतीजी अतिही शोभायमानहोकर विराजमान थीं औ शुभावती नाम भगवती की सखी चामर लिये भगवती के पीछे खड़ी थी श्वेतवर्ण की विभूति से भूषित श्रीपार्व्वतीजी युक्त महादेवजी ऐसे शोभित होते थे जैसे बिजली करके युक्त शुक्लवर्ण का मेघ होय औ सुमेरु पर्वत रूप धनुष पूर्ण चन्द्रमण्डल के समान प्रकाशमान छत्र औ शुक्लवर्ण अतिलम्बी पताका मानों गङ्गाकी धाराहीहो औ श्वेतचामरोंकरके श्रीशिवजी अति ही शोभितथे इसभांति ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं करके नमस्कृत पार्वतीजी सहित श्री महादेवजी त्रिपुर की ओर गमन करते भये यह शिव का आडम्बर देख ब्रह्मा विष्णु आदि सब देवता परस्पर विचार करने लगे कि शिवजी महाराज अपनी इच्छामात्र से त्रैलोक्य को दग्ध करसकते हैं दैत्यों के तीनपुर तो कितनी बड़ीबात है कि जिसको दग्ध करने के लिये सब गणों को साथ ले आप चढ़ आये रथ सारथी धनुर्व्वाण आदि सामग्री औ देवता तथा गणों से इनको क्या प्रयोजन था कि जिससे इतना बखेड़ा

इकट्ठा किया हमतो यही जानें कि लीलाकेलिये सब इनका कामहै औ कुछ इस आडम्बर से प्रयोजननहीं देख पड़ता इस भांति अनेक विकल्प मनमें करते हुये देवता औ गण भगवती गणेश आदि सहित सदा शिव त्रिपुर के समीप जाय पहुँचे औ सारे संसार की सामग्री से परिपूर्ण औ बड़े पराक्रमी दैत्यों से भरेहुये उन पुरों को देख शिवजीने अपने धनुषपर ज्या चढ़ाय पाशुपत अस्त्र करके युक्त बाण सन्धान कर त्रिपुरकी ओर देखा इसी अवसर में आकाश के बीच तीनोंपुर इकट्ठे भये तब देवताओं को अतिही हर्ष भया औ जय२ शब्द तथा शिवजीकी स्तुतिकरनेलगे शिवजीको बाण छोड़ने में विलम्ब करते देख हाथ जोड़ ब्रह्माजी ने प्रार्थना करी कि महाराज यह विलम्ब करना आप को उचितहीहै क्योंकि देवता औ दैत्य आपको तुल्य हैं परन्तु देवता धर्मनिष्ठ औ दैत्य पापी हैं इसलिये देवताओं की रक्षाकरना आपको योग्य है रथध्वज औ बाण रूप विष्णु तथा मुझसे भी पुरत्रय दग्ध करने में आपको कुछ उपयोग नहीं इतनी सामग्री इकट्ठा करना केवल आपकी लीला है अब आप विलम्ब न करैं औ जब तक ये पुर अलग २ न होयँ आप बाण छोड़देवें औ जय को देनेहारा पुष्य नक्षत्र भी इसकाल में वर्त्तमान है इसलिये इन तीनों पुरों का आप शीघ्र ही दग्ध करैं यह ब्रह्माजी का वचन सुन शिवजीने पुर त्रय दग्ध करने की इच्छा करी तब विष्णु वायु सोम औ कालाग्नि जो बाण में स्थित थे उननेकहा कि महा-

राज पुरत्रय तो आपकी दृष्टिसेही दग्धहोगये अब आप केवल हमारे हितके अर्थ बाण छोड़ दीजिये यह सुन श्रीमहादेवजी ने धनुष की ज्या को कान तकखैंचा औ हँसते २ बाण छोड़दिया वह बाण क्षणमात्र मेंही त्रिपुर को दग्धकर शिव के समीप आय प्रणाम करता भया करोड़ों दैत्यों करके युक्त वे तीनों पुर भस्म हुये ऐसे देख पड़े जैसे कल्पांत में रुद्र ने दग्ध करे तीनलोक होयँ त्रिपुर में जो दैत्य शिवभक्तथे वे सब शिवजी के गण होगये उससमय अति भयानक श्रीमहादेवजीका रूप देख सब देवता भयभीत होकर चुप होगये तब भक्तवत्सल श्रीमहादेवजी ने उनको त्रस्त देखकर कहा कि भय मतकरो तुम्हारे शत्रुओं का संहार होगया इ-तना शिवजी का वचन सुन सब देवता श्रीमहादेवजी पार्वतीजी गणेशजी औ नन्दीको बार बार प्रणाम करने-लगे औ सबदेवता तथा विष्णु भगवान् सहित ब्रह्माजी एकाग्र चित्त हो परम भक्तिसे त्रिपुरारि श्रीमहादेवजी की स्तुतिकरनेलगे ॥ पितामहउवाच ॥ प्रसीददेवदेवेश प्रसीदपरमेश्वर ॥ प्रसीदजगतांनाथ प्रसीदानंददाव्य य १ पंचास्यरुद्ररुद्रायपंचाशत्कोटिमूर्त्तये॥आत्मत्रयोप विष्टाय विद्यातत्त्वायतेनमः २ शिवायशिवतत्त्वाय अ घोरायनमोनमः ॥ अघोराष्टकतत्त्वाय द्वादशात्मस्वरू पिणे ३ विद्युत्कोटिप्रतीकाशमष्टकांशसुशोभनम् ॥ रू पमास्थायलोकेऽस्मिन्संस्थितायाशिवात्मने ४ अग्नि वर्णायरौद्राय अंबिकार्द्धशरीरिणे ॥ धवलश्यामरक्तानां मुक्तिदायामरात्मने ५ ज्येष्ठायरुद्ररूपाय सोमायवरदा

यच ॥ त्रिलोकायत्रिदेवाय वषट्कारायवैनमः ६ मध्ये
गगनरूपाय गगनस्थायतेनमः ॥ अष्टक्षेत्राष्टरूपाय
अष्टतत्त्वायतेनमः ७ चतुर्द्धाचचतुर्द्धाचचतुर्द्धासंस्थिता
यच ॥ पंचधापंचधाचैव पंचमन्त्रशरीरिणे ८ चतुःष
ष्टिप्रकाराय आकारायनमोनमः ॥ द्वात्रिंशत्तत्त्वरूपाय
उकारायनमोनमः ९ षोडशात्मस्वरूपायमकारायनमो
नमः ॥ अष्टधात्मस्वरूपाय अर्द्धमात्रात्मनेनमः १०
ॐकारायनमस्तुभ्यं चतुर्द्धासंस्थितायच ॥ गगनेशाय
देवाय स्वर्गेशायनमोनमः ११ सप्तलोकायपातालनर
केशायवैनमः ॥ अष्टनेत्रायरूपाय परात्परतरायच १२
सहस्रशिरसेतुभ्यं सहस्रायचतेनमः ॥ सहस्रपादयुक्ता
यशर्वायपरमेष्ठिने १३ नवात्मतत्त्वरूपाय नवाष्टात्मा
त्मशक्तये ॥ पुनरष्टप्रकाशाय तथाष्टाष्टकमूर्त्तये १४ च
तुष्षष्ट्यात्मतत्त्वाय पुनरष्टविधायते ॥ गुणाष्टकवृतायै
व गुणिनेनिर्गुणायते १५ मूलस्थायनमस्तुभ्यं शाश्वत
स्थानवासिने ॥ नाभिमंडलसंस्थाय हृदिनिस्वनकारि
णे १६ कंधरेचस्थितायैव तालुरंध्रस्थितायच ॥ भ्रूमध्ये
संस्थितायैव नादमध्येस्थितायच १७ चन्द्रबिंबस्थिता
यैव शिवायशिवरूपिणे ॥ वह्निसोमार्करूपाय षट्त्रिंश
च्छक्तिरूपिणे १८ त्रिधासंहृत्यलोकान्वै प्रसुप्तभुजगा
त्मने ॥ त्रिप्रकारंस्थितायैवत्रेताग्निमयरूपिणे १९ स
दाशिवायशांतायमहेशायपिनाकिने ॥ सर्वज्ञायशरण्या
य सद्योजातायवैनमः २० अघोरायनमस्तुभ्यं वामदेवा
यतेनमः ॥ तत्पुरुषायनमस्तुभ्यमीशानायनमोनमः २१
नमस्त्रिंशत्प्रकाशाय शांतातीतायवैनमः ॥ अनंते

शायसूक्ष्माय उत्तमायनमोऽस्तुते २२ एकाक्षायनमस्तु
भ्यमेकरुद्रायतेनमः॥ नमस्त्रिमूर्त्तयेतुभ्यं श्रीकंठायशि
खंडिने २३ अनंतासनसंस्थाय अनंतायांतकारिणे।
विमलायविशालाय विमलांगायतेनमः २४ विमलास
संस्थाय विमलार्थार्थरूपिणे॥ योगपीठांतरस्थाययोगि
नेयोगदायिने २५ योगिनांहृदिसंस्थाय सदानीवारशूक
वत्॥ प्रत्याहारायतेनित्यं प्रत्याहाररतायते २६ प्रत्या
हाररतानांचप्रतिस्थानस्थितायच॥ धारणायेनमस्तु
भ्यं धारणाभिरतायते २७ धारणाभ्यासयुक्तानां पुरस्ता
त्संस्थितायच॥ ध्यानायध्यानरूपाय ध्यानगम्यायतेन
मः २८ ध्येयायध्येयगम्यायध्येयध्यानायतेनमः॥ ध्येया
नामपिध्येयाय नमोध्येयतमायते २९ समाधानाभिग
म्यायसमाधानायतेनमः॥समाधानरतानांतुनिर्विकल्पा
र्थरूपिणे ३० दग्धोद्धृतंसर्वमिदंत्वयाद्यजगत्त्रयंरुद्रपुर
त्रयंहि॥ कःस्तोतुमिच्छेत्कथमीदृशंत्वांस्तोष्यामितुष्टा
यशिवायतुभ्यम् ३१ भक्त्याचतुष्ट्याद्भुतदर्शनाच्चमर्त्या
अमर्त्याअपिदेवदेव॥ एतेगणाःसिद्धगणैःप्रमाणंकुर्वंति
देवेशगणेशतुभ्यम् ३२ निरीक्षणादेवविभोऽसिदग्धुं पुर
त्रयंचैवजगत्त्रयञ्च॥ लीलालसेनांबिकयाक्षणेन दग्धं
किलेषुश्चतदाविमुक्तः ३३ कृतोरथश्चेषुवरश्चशुभ्रं श
रासनंतेत्रिपुरक्षयाय॥ अनेकयत्नैश्चमयाथतुभ्यंफलं
नदृष्टंसुरसिद्धसंघैः ३४ रथोरथीदेववरोहरिश्चरुद्रःस्व
यंशक्रपितामहौच॥ त्वमेवसर्वंभगवन्कथंतुस्तोष्येह्य
नीड्यंप्रणिपत्यमूर्ध्ना ३५ अनंतपादस्त्वमनंतबाहुर
नंतमूर्द्धान्तकरःशिवश्च॥ अनंतमूर्त्तिःकथमीदृशंत्वां

स्तोष्येह्यनीड्यंकथमीदृशंत्वाम् ३६ नमोनमःसर्वविदे
शिवायरुद्रायसर्वायभवायतुभ्यम् ॥ स्थूलायसूक्ष्माय
सुसूक्ष्मसूक्ष्मं सूक्ष्मायसूक्ष्मार्थविदेविधात्रे ३७ स्रष्ट्रेन
मः सर्वसुरासुराणांभर्त्रेचहर्त्रेजगतांविधात्रे ॥ नेत्रेसुरा
णामसुरेश्वराणांदात्रेप्रशास्त्रेममसर्वशास्त्रे ३८ वेदांत
वेद्यायसुनिर्मलायवेदार्थविद्भिःसततंस्तुताय ॥ वेदात्म
रूपायभवायतुभ्यमंतायमध्यायसुमध्यमाय ३९ आद्यं
-तशून्यायचसंस्थितायतथात्वशून्यायचलिंगिनेच ॥ अ
लिंगिनेलिंगमयायतुभ्यं लिंगायवेदादिमयायसाक्षात्
४० रुद्रायमूर्द्धाचनिकृन्तनाय ममादिदेवस्यचयज्ञ
मूर्त्ते ॥ विध्वांतभंगंममकर्त्तमीशदृष्टैवभूमौकरजाग्रको
ट्या ४१ अहोविचित्रंतवदेवदेवविचेष्टितंसर्वसुरासुरे
श॥ देहींवदेवैःसहदेवकार्यंकरिष्यसेनिर्गुणरूपतत्त्व४२
एकंस्थूलंसूक्ष्ममेकंसुसूक्ष्मं मूर्त्तामूर्त्तंमूर्त्तमेकंह्यमूर्त्तम् ।
एकंदृष्टंवाङ्मयंचैकमीशंध्येयंचैकंतत्त्वमत्राद्भुतंते ४३
स्वप्नेदृष्टंयत्पदार्थंह्यलक्ष्यंदृष्टंनूनंभातिचान्येनवापि॥ मू
र्त्तिर्वावेदवईशानदेवैर्लक्ष्यायत्नैरप्यलक्ष्यंकथंतु ४४
दिव्यःक्वदेवेशभवत्प्रभावो वयंक्वभक्तिःक्वचतेस्तुति
श्च ॥ तथापिभक्त्याविलपंतमीशपितामहंमांभगवन्
क्षमस्व ४५ ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसस्तोत्रको जोपुरुष ब्राह्मणके मुखसे श्रवणकरे अथवा शिवजी को प्रणाम कर आपही पढ़े वह त्रिपुरारि श्रीशंकर के अनुग्रह से पापबंधन को काट कैलासमें वासपावै इसभांति ब्रह्मा जीकेमुखसे स्तुति सुनकर प्रसन्नहो पार्व्वतीजीकी ओर

देख हँसकर श्री महादेव जी ब्रह्माजी प्रति कहने लगे कि तुम्हारे इस स्तोत्रसे हम बहुत प्रसन्न भये जो वर तुमको अथवा देवताओं को अभीष्टहो मांगो सूतजी कहते हैं कि यह शिवजी का वचन सुन हाथजोड़ ब्रह्माजी कहनेलगे कि महाराज जो आप प्रसन्न भयेहैं तो अपने चरणों में दृढ़भक्ति मुझे दीजिये औ मेरे सारथिपनेपर आप प्रसन्न होकर देवताओं पर सदा कृपा रक्खें इसी अवसरमें विष्णु भगवान् भी हाथजोड़ भक्तिसेनम्रहो यह प्रार्थना करते भये कि हेनाथ आप का वाहनहोना सदा चाहताहूं औ आपके चरणारविंद में दृढ़ भक्तिभी मांगताहूं आपके अनुग्रहसे मुझमें आपके धारण करने की सामर्थ्य होवे औ मैं सर्वज्ञ तथा सर्वगामीहोजाऊं॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो महादेवजी उनकी यह प्रार्थना सुन अभीष्टवर देकर पार्वती जी सहित कैलास कोगये औ त्रिपुरका संहार होजाने से प्रसन्न होतेभये देवता औ ऋषि श्री महादेवजी के गुण गाते अपने अपने स्थानों को जाते भये इस त्रिपुरके संहार की कथाको श्राद्धके समय अथवा देवकृत्य में पढ़े या भक्तिसे ब्राह्मणों को सुनावे वह ब्रह्मलोकमें निवासकरै मानस, वाचिक, कायिक, स्थूल, सूक्ष्म सब प्रकार के पातक और उपपातक इस कथाके श्रवण से नष्टहोते हैं और शत्रु तथा रोगभी नाशको प्राप्तहोतेहैं धन आयुष संतानकी वृद्धि होती है औ आपदा कभी समीप नहीं आती॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इसभांति त्रिपुरकोदग्ध कर शिवजी तो कैलासको गये और सबदेवताओं से ब्रह्माजी कहनेलगे कि देखो शिवजीका प्रताप कैसा है तारकके पुत्र तारकाक्ष कमलाक्ष विद्युन्माली आदिदैत्य अपने पुरों सहित शिवजी के प्रभावसे नष्टभये यह दूसरेकी सामर्थ्य नहीं कि एक बाण करके तीनों पुरोंको भस्म करदेवै इसलिये सदाशिव के लिङ्गका पूजन करना उचित है शिवपूजासेही तुम्हारा कल्याण है इस लिये सदा श्रद्धा से शिवलिङ्ग के अर्चन में तत्पर रहो यह लोक शिवलिंगमय है और सम्पूर्ण लोक लिंग में स्थित हैं इस कारण जो पुरुष अपनी सिद्धि चाहै वह सदाशिवलिंग का पूजनकरै देव, दैत्य,दानव, यक्ष, राक्षस, सिद्ध, विद्याधर, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच औ मुनि सब लिंगार्चन करने से ही सिद्धिको प्राप्त भये हैं हम सब उस परमेश्वर के पशु हैं पाशुपत व्रतसे पशुत्वको त्याग श्रीमहादेवजीकी पूजामें तत्पर होना उचितहै हेदेवताओ अब हम पाशुपत व्रतका विधान कहतेहैं प्रणव करकेपांचप्राणायामोंसे पंचभूतोंको शुद्धकरै और प्रणव करके चार तीन औ दो प्राणायाम क्रमसे करै फिरओंकारका उच्चारणकर प्राण और अपान वायुको रोंककर तीनगुण, मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त पंचमहाभूत औ उनकी तन्मात्रा, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, विश्व, तैजस, प्राज्ञशरीर को शुद्धकर चैतन्य रूप आत्मा को भावन

कर पवित्र भस्म लेकर अग्निरित भस्म औ त्रियायुषं इत्यादि मंत्रों करके अभिमंत्रितकर तीनकाल शरीर को उस भस्मसे उद्धूलन करै वह योगी सब तत्त्व जानैं यह पाशुपतव्रत पाशमोक्ष के लिये शिवजीने कहा है इसव्रतको करके हमने औ विष्णुजीने सृष्टिमें जोलिंग देखाथा उस लिंगाकार शिवका पूजनकरै तो वर्षभर में ही पशुपाशसे मुक्तहोय हम सब शिव पूजनसे ही बाह्य आभ्यंतर कार्यों में समर्थ भये हैं हमारी विष्णुजी की औ मुनियों की यही प्रतिज्ञाहै कि नित्य शिवपूजन करना वह बड़ी हानिहै बड़ा छिद्रहै महामोहहै औ मूकता है कि शिवस्मरण विना एकक्षण भी व्यतीत करना जे पुरुष शिवकेभक्तहैं औ निरन्तर शिवकास्मरण करतेहैं वे दुःखभागी नहीं होते उत्तम २ प्रासाद दिव्यभूषण तृप्तिपूर्वक धन औ मनको मोहनकरनेहारी नारी शिव की पूजा किये विना नहीं मिलते जे पुरुष उत्तम भोग अथवा स्वर्ग के तुल्य राज्यचाहतेहैं उनको सदाशिवाराधन करना योग्य है सब जीवों को मार औ सम्पूर्ण जगत्का संहार करके भी शिवलिङ्ग पूजा करने से मनुष्य निष्पाप होजातेहैं इतना देवताओं के प्रति उपदेश देकर ब्रह्माजी आप शिवलिङ्ग पूजन करने लगे औ उत्तम २ स्तोत्रों से शिवजी को सन्तुष्ट किया उस दिनसे इन्द्रआदि देवताभी भस्मकरके शरीरकोउद्धूलनकर शिवपूजा करने में तत्परभये॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ब्रह्माजीकी आज्ञा पाय विश्वकर्मा ने उत्तम २ शिवलिङ्ग बनाय सब देवताओं को दिये इन्द्रनील मणिका लिङ्ग विष्णुभगवान् पूजने लगे पद्मराग का इन्द्र, सुवर्ण का कुबेर, चांदीका विश्वेदेवा, रांगेका वसु, पीतलका वायु, मृत्तिकाका अश्विनीकुमार, स्फटिकका वरुण, ताम्रका आदित्य, मोती का चन्द्रमा, प्रवाल अर्थात् मूंगेका अनन्त आदि नागदैत्य औ राक्षस लोहा का, गुह्यक त्रिलोह का, गण सर्वधातु का, चामुण्डा औ मातृका सिकता अर्थात् बालूरेत का, निर्ऋति काष्ठका, यममरकत अर्थात् पन्नेका, नील आदि रुद्र भस्मका, लक्ष्मी बिल्ववृक्षका, स्कन्द गोमयका, मुनि कुशाग्रों का, उग्रापिष्ट अर्थात् आटेका, सब मन्त्र घृत का, वेद दधिका, वामा आदि शक्ति पुष्पोंका, मनोन्मनी सुगन्धद्रव्यका, सरस्वती रत्नका, दुर्गा हिम अर्थात् बर्फ का औ सब पिशाचसीसे का शिवलिंग बनाय पूजते हैं औ सब सिद्धि पाते हैं बहुत कहने से क्या है निश्चय जानो यह चराचर जगत् लिंगकी पूजाकरने सेही स्थिर द्रव्यों के भेदसे छः प्रकार का लिंग होता है औ उन छः प्रकारोंके भी चवालीस भेद हैं प्रथम लिंग शिला अर्थात् पाषाणकाहै उसके चारभेदहैं दूसरा रत्नका उसके सातभेद हैं तीसरा धातुका जो आठ भेदों करके युक्त है चौथा काष्ठलिंग सोलह प्रकारका है पांचवां मृत्तिकाका लिंग जिसके दो भेद हैं छठा

चणिका अर्थात् रंग आदि का बनाया जिसके सात भेद हैं रत्नका लिंग लक्ष्मीदेता है शिलाका सब सिद्धि देनेहारा है धातु का धन देताहै काष्ठका भोग सिद्धि-दायक है मृत्तिका का सर्वसिद्धिप्रद है पाषाण लिंग उत्तम औ धातु लिंग मध्यम होताहै लिंगमें बहुतभेद हैं परन्तु नव तो मुख्य हैं मूल मे ब्रह्मा मध्य में विष्णु अग्रभाग में रुद्र साक्षात् प्रणवरूप सदाशिव स्थितहै औ लिंग की वेदी अर्थात् जलहरी त्रिगुणा, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र रूप श्रीभगवती है वेदी युक्त शिवलिंग का पूजन करने से शिव पार्वती दोनों की पूजा होतीहै शि-लाका, रत्नका, धातुका,काष्ठका,मृत्तिकाका,अथवा चणि-कलिंग स्थापन करनेहारा पुरुष अपने तेजसे सब लोकों को प्रकाशित करता हुआ ब्रह्माण्डको भेदन कर ऊर्द्ध गतिको प्राप्त होताहै औ इन्द्र, ब्रह्मा, अग्नि,यम, वरुण, कुवेर आदि देवता उसकी स्तुति करते हैं औ दुन्दुभि बजाते हैं जो पुरुष चन्द्र आदि सब चिह्नों करके युक्त गोक्षीर अथवा कुन्दकेपुष्पकीभांति शुक्लवर्ण औ स्कन्द तथा पार्वती सहित शिवलिंग स्थापन करै वह मनुष्य रूप धारे साक्षात् सदाशिवही है उस पुरुषके दर्शन औ स्पर्श से भी मनुष्यों के पाप कटते हैं औ उसके पुण्य का वर्णन तो हे मुनीश्वरो सौ युग में भी नहीं होसक्ता इसलिये लिंग स्थापन अवश्य करना चाहिये क्योंकि शिवजी के सगुण रूप का सब ध्यान कर सक्ते हैं औ निर्गुण केवल योगिजनों के ध्यान करने योग्य है॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी वह निष्कल निर्मल नित्य परमेश्वर सकल अर्थात् सगुण क्योंकर भया यह आप वर्णन करें सूतजी इसप्रकार मुनियोंका प्रश्न सुन बोले कि हे मुनीश्वरो परमेश्वर को कोई प्रणवरूप कहते हैं कोई उपनिषद् में प्रतिपादित ज्ञान स्वरूप मानते हैं शब्द आदि विषयों के ज्ञानको ज्ञान कहतेहैं भ्रांति रहित वह ज्ञानही परमेश्वर है कोई ऐसा कहते हैं औ कोई इसकाभी निषेध करतेहैं परन्तु व्यास आदि मुनि निर्मल निर्विकल्प निराश्रय शुद्ध औ गुरूपदिष्ट को ज्ञान कहतेहैं ज्ञान से मुक्ति होती है औ प्रसाद ज्ञान प्राप्ति का उपाय है दोनों से योगी मुक्त होता है औ आनन्दमय होजाता है माया कल्पितरूप को अपनी इच्छासे हृदय में संहारकर निष्काम कर्मके साथ भी कोई कोई योगी ज्ञानकी संगति कहते हैं उस विराट्रूप सदाशिवका स्वर्ग मस्तक भूलोक नाभि सोमसूर्य औ अग्नि तीनों नेत्र दिशा कर्ण पाताल चरण समुद्र वस्त्र देवता भुजा नक्षत्र भूषण प्रकृत पत्नी औ पुरुष लिंगहै परमात्मा के मुख से ब्रह्माजी औ ब्राह्मण उत्पन्न भयेहैं इन्द्र उपेन्द्र अर्थात् विष्णु औ क्षत्रिय परमेश्वरके भुजों से वैश्य ऊरुसे शूद्र चरणों से पुष्करावर्त्त आदि मेघ केशोंसे वायु नासिका से औ श्रौतस्मार्त्त कर्म गति से उत्पन्न भये हैं सृष्टिके आरम्भमें इसीसे कर्मका प्रवर्त्तन करनेहारा पुरुष प्रकृतिका प्रेरण करता है वह पुरुष

मनुष्योंको ध्यानकरके जाननेयोग्यहै इन्द्रियोंसे उसका प्रत्यक्ष नहीं होता हजार कर्म यज्ञोंसे तपोयज्ञ अधिक है हजार तपोयज्ञोंसे जप यज्ञ हजार जप यज्ञोंसे ध्यानयज्ञ अधिकहै ध्यानयज्ञसे अधिक कोई यज्ञनहीं ध्यानहीज्ञान कासाधनहै समरसमें स्थितहोकर योगी पुरुष ध्यानसे परमेश्वर को देखतेहैं ध्यान यज्ञ में तत्पर योगीके सदा शिव समीपही रहते हैं ज्ञानी पुरुषको शौच प्रायश्चित्तआदि की कुछ आवश्यकता नहीं ज्ञानी पुरुषब्रह्म विद्यासेही शुद्ध होजाते हैं ध्यान करनेहारे पुरुषों को क्रिया सुख दुःख धर्मअधर्म जप होम आदिसे कुछ प्रयोजन नहीं उनके परमेश्वर सदा सन्निहित रहता है परम आनन्द स्वरूप निष्कल शिव अक्षर औ सर्वव्यापी परमेश्वर योगियोंके हृदय कमल में निवास करता है लिंग दो प्रकार का है एक वाह्य दूसरा आभ्यंतर वाह्यलिंग स्थूलहै औ आभ्यंतर सूक्ष्म अज्ञानी पुरुषोंकी भावनाके लिये स्थूल लिंग की कल्पना है कर्म यज्ञ में आसक्त पुरुष स्थूल लिंगका अर्चन करते हैं अध्यात्मिक लिंग जिनको प्रत्यक्ष नहींहोता वे मूढ़ बाहर स्थूल लिंग की कल्पना करतेहैं सूक्ष्म लिंग ज्ञानियोंको प्रत्यक्ष होताहै जिस भांति मृत्तिका काष्ठ आदि से कल्पित स्थूल लिंगको अज्ञानी भावना करतेहैं इसी भांति सूक्ष्मकोज्ञानी परन्तु वास्तवमेंकुछ भेदनहीं स्थूल सूक्ष्मदोनों शिवकेही रूपहैंजैसे सर्वव्यापक आकाशघट आदिकोंमें परिछिन्नदेखपड़ताहै अथवा आकाशमेंस्थित एकसूर्य विम्ब जलआदि में अनेक रूपसे दृष्टिआता है

इसी प्रकार परमेश्वर एक है औ अनेक रूपभी है स्वर्ग भू आदि लोकों में सब जीव पांच भौतिकहैं परंतु जाति औ व्यक्ति के भेदसे भिन्न २ देख पड़ते हैं ऐसेही परमेश्वरमें भी भेद प्रतीत होताहै स्वप्नमें उत्तम भोगको प्राप्त होकर मनुष्य सुखी होताहै औ दुःखके अनुभव से दुःखी होजाताहै परन्तु विचार करने से न सुखहै न दुःख इस भांति विचारसे परमेश्वर एकहै संसारी जीवों के हृदयमें सगुण परमेश्वर है योगियों के निर्गुण औ ज्ञानियों के जगन्मय अर्थात् सर्वव्यापक परमेश्वर है सकल निष्कल औ सर्वव्यापक ये तीन परमेश्वर के रूपहैं ज्ञानी पुरुष सदा सवस्थानमें सकल निष्कल परमेश्वरकी पूजाकरते हैं योगी सर्वज्ञ परमेश्वरको हृदय में पूजतेहैं औ अज्ञानीपुरुष सगुण परमेश्वरको अग्नि औ शिवलिंग में पूजते हैं गृहस्थी पुरुष अपने स्त्री पुत्रों सहित सगुण परमेश्वर का यजन करते हैं जैसे शिव वैसीही देवी हैं इसलिये अभेद बुद्धिसे दोनोंका आराधन करना उचितहै उत्तम पुरुष देहमें अथवा देहके बाहर परमेश्वर का यजन करते हैं चतुष्कोण, षडस्र दशार, द्वादशार, षोडशार औ त्र्यस्र इन मंडलों में भगवती के सहित साक्षात् सदा शिव निवास करते हैं निर्गुण औ निग्रह अनुग्रहमें समर्थ वह परमेश्वर अपनी इच्छारूप देवी करकेयुक्त लोकोंके उद्धारके लिये रूपधार कर स्थित होरहाहै उस परमेश्वरको एक अर्थात् अद्वितीय कहते हैं प्रकृति पुरुष रूपसे द्विगुण है औ ब्रह्मा विष्णु रुद्र रूपसे वह त्रिगुण है औ वेदको

जाननेहारे पुरुष परमेश्वरको संसारका जनक अर्थात् उत्पन्न करनेहारा कहते हैं धर्म करकेयुक्त उत्तम ब्राह्मण भक्तिसे औ शुभयोग से षडस्रके बीच उस सर्वव्यापी शिवका पूजनकरते हैं जो पुरुष त्रिकोण में त्रिगुण त्रिनेत्र भगवती सहित पुराणपुरुष सदा शिवका ध्यानकरते हैं वे उसस्थान में प्राप्तहोते हैं जो योगियों को भी दुर्लभहै॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम शिवजी के अनेक मूर्त्तियों की प्रतिष्ठा का फल कहते हैं पार्वती औ स्कंदके सहित उत्तम सिंहासन पर बैठेहुये श्रीमहादेवजी की स्थापना करने से सब अभीष्ट फल मिलते हैं स्कंद औ पार्वतीजी सहित सदाशिवके पूजनकरनेहारा पुरुष सूर्यके तुल्य प्रकाशमान विमानपर चढ़ अनेक गीत वाद्य में कुशल दिव्य कन्याओं करके सहित शिवजी के लोकमें क्रीड़ा करताहै वहां सब भोग भोग कर पार्वतीजी के लोक में, स्कंदलोकमें, ईशानलोक में, विष्णुलोकमें, ब्रह्मलोक में, प्राजापत्यलोक में, जनलोकमें औ महर्लोकमें क्रमसे उत्तम २ भोग करता हुआ इन्द्रलोकमें आय अयुतवर्ष पर्यंत इन्द्रहोताहै फिर भुवर्लोक में दिव्यभोग भोगकर भूलोक में मेरु पर्वत के समीप इलावृतखंडमें देवता होकर आनन्द करता है एक पाद, चतुर्भुज, त्रिनेत्र त्रिशूल हाथमें लिये विष्णुजीको उत्पन्न कर वामभाग में स्थापन करे औ ब्रह्माजीको दाहिनी

ओर बैठाये, अट्ठाईस करोड़ रुद्र चारोंओर जिनके विराजमान अपने हृदयसे पुरुष को वामभाग से प्रकृतिको, बुद्धिके स्थानसे बुद्धिको, अहंकारसे अहंकारको, तन्मात्राओं से तन्मात्रा, इंद्रियोंसे इंद्रिय, पादमूलसे पृथिवीको, गुह्य स्थान से जलको, नाभि से अग्निको; हृदय से सूर्य को, कण्ठ से चन्द्रको, भ्रूमध्य से आत्माको औ मस्तकसे स्वर्गको उत्पन्न करतेहुये सर्वव्यापी सदाशिवको विधिपूर्वक स्थापन करनेहारा पुरुष शिवसायुज्यपाताहै, तीन पाद, सात हाथ, चारशृंग औ दोशिर करके युक्त यज्ञ के स्वामी ईशान को स्थापन करनेहारा पुरुष विष्णुलोक पाताहै वहां कईकल्प दिव्यभोग भोगकर भूमिपर आय सब यज्ञकर मुक्त होताहै वृषके ऊपर आरूढ़ औ चन्द्रकला करके भूषित शिवमूर्त्ति को स्थापन करनेवाला पुरुष दशहजार अश्वमेध के फल को प्राप्त हो विमान में बैठ शिवलोक में प्राप्त होता है औ वहां बहुत काल दिव्यभोग भोगकर मुक्ति पाता है नंदी आदि सबगण औ पार्वतीजी सहित महादेवजी को स्थापनकर सूर्यमण्डलके तुल्य देदीप्यमान विमान में विराजमान होकर अप्सराओं का नृत्य देखताहुआ शिवलोकमें जाय गणों का अधिपति बनता है हजार भुजा अथवा चारभुजाओं करके युक्त पार्वतीजी सहित नृत्य करते हुये भृगु आदि मुनि तथा भूतों के समूह करके युक्त, वृषभध्वज, ब्रह्म, विष्णु, इन्द्र, चन्द्रआदि देवताओं करके वंदित मुनि औ मातृकाओं करके चारों ओर वेष्टित श्रीमहादेवजी का स्थापन करनेहारा

पुरुष सम्पूर्ण यज्ञ, तप, दान, तीर्थदेवपूजन आदि के फलसे कोटिगुण अधिक फल पाय शिवलोक में जाय दिव्यभोग भोग दूसरी सृष्टि में मनु होता है नग्न, चतुर्भुज, त्रिनेत्र, श्वेतवर्ण, सर्प की मेखला पहिने कपाल हाथ में लिये कृष्ण औ कुंचित केशोंकरके शोभायमान श्रीमहादेवजीको स्थापनकर शिवसायुज्य पाता है गजासुर को मारनेहारे पार्वतीजी सहित धूम्रवर्ण रक्तत्रिनेत्र चन्द्रभूषण मस्तकपर काकपक्ष धारे नाग परशु गदा औ कपाल हाथों में लिये सिंहचर्म का दुकूल अर्थात् दुपट्टा औ मृगचर्म का वस्त्र धारण किये तीक्ष्ण जिनकी दंष्ट्रा हुं फट्कार आदि महाशब्दों से सब दिशाओंको शब्दित करते हुये व्याघ्रचर्म पहिने हाथों में कमण्डलु लिये हँसते शब्द करते अपनेतेज करके अन्धकार समुद्र को मानों पान करते गणों के साथ नाचते औ भूषणों से अतिभूषित शिवजी को अपनी सामर्थ्य के अनुसार विधि पूर्वक स्थापन करै तो वहुत काल शिवलोक में दिव्य भोगों को भोग अन्त में रुद्र से ज्ञानपाय मुक्त होजावै अर्द्धनारीश्वर चतुर्भुज वर अभय त्रिशूल औ पद्म अपने हाथों में धारण किये स्त्री औ पुरुष के सब भूषणों से भूषित श्रीशंकर की मूर्त्तिको भक्ति से स्थापनकर शिवलोकमें प्राप्त होता है वहां अणिमाआदि सिद्धि पाय प्रलय पर्यंत दिव्य सुखभोग अन्त में मुक्तिभागी होता है शिष्य प्रशिष्यों करके युक्त व्याख्या करतेहुये औ सर्वज्ञ लकुलीश नामक शिवमूर्त्ति को स्थापनकर शिवलोक में

जाय सौ युग पर्यंत दिव्य भोगों को भोग मुक्त होता है ध्यान मुद्राकरके युक्त चिताभस्मलगाये त्रिपुण्ड्रधारे मुण्डमालापहिने ब्रह्माके केशोंका यज्ञोपवीत औ बायें हाथमें ब्रह्माका कपाल धारण किये विष्णुजूके अवतार नृसिंहजी का चर्म ओढ़े श्रीसाम्बशिव को स्थापन कर संसारसागर से मुक्त होता है अथवा ओं नमोनील कंठाय इस अति पवित्र अष्टाक्षर मंत्रको एकबार भी उच्चारण करने से सब पातक उपपातक दूर होते हैं औ इसी मंत्रसे भक्तिकरके शिवपूजन करनेहारा पुरुष शिवलोकमें आनंदसे निवास करताहै सुदर्शन चक्रसे जलंधर दैत्यके दो खंडकरतेहुये शिवजी को स्थापनकर निस्संदेह शिवसायुज्य पाता है विष्णुजी ने अपने नेत्र कमलकरके पूजित औ प्रसन्नहो विष्णुजीको सुदर्शनचक्र देतेहुये श्री शिवजी को स्थापनकर शिवलोकमें निवास करताहै निकुम्भ नाम गणके पीठपर दाहिना चरणरक्खे सिंहासनपर विराजमान वामभाग में पार्वतीजी को बैठाये सर्पोंके भूषण पहिने अंधकासुर जिनके आगे हाथजोड़े खड़ा ऐसे श्री महादेवजी को भक्तिसे स्थापनकर शिवसायुज्य पाताहै पार्वती सहित चंद्र मस्तकपरधारे रथमें आरूढ़ ब्रह्माजी जिनके सारथी त्रिपुरके संहारके लिये धनुषपर बाणचढ़ाये श्री सदाशिवको स्थापन करनेहारा पुरुष शिवलोक में जाय मानों दूसरा शिवही हो क्रीड़ा करताहै औ जब तक उसकी इच्छा होय तबतक दिव्यभोग भोगकर अंतमें ज्ञान पाय मुक्त होताहै सुखसे सिंहासन पर बैठे

मस्तकपर गंगा औ चंद्रकलाको धारण किये वामभाग में पार्वतीजी को बैठाये श्री शंकरको स्थापन करै औ उनके आसपास विनायक, स्कंद, दुर्गा, भास्कर, सोम, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, वीरभद्र औ विघ्नेश्वरकी मूर्त्ति स्थापनकरे वह शिवसायुज्य पावै महाज्वालाकी मालाओं करके चारोंओरसे वेष्टित लिंग उसके मध्यमें चन्द्रशेखर शिव लिंगके ऊपर हंसरूप ब्रह्मा औ लिंग के अधोभाग में वराहरूप विष्णु ब्रह्मा दाहिने ओर हाथजोड़े खड़े औ प्रलय समुद्रके मध्यमें विराजमान ऐसे शिवलिङ्ग को स्थापनकर शिवसायुज्य पाताहै क्षेत्रपाल औ पाशुपत देवको भी स्थापनकर शिवलोक में निवास करताहै॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी आपने लिङ्गप्रतिष्ठा का पुण्य लिङ्गों के भेद औ लिङ्ग स्थापन का जोवर्णनकिया वह आपके मुखसे हमने श्रवण किया अब आप मृत्तिकासे लेकर रत्नोंपर्यंत शिवालय बनानें से जो फल होताहै उसको वर्णन कीजिये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ज्ञानयुक्त शिवभक्त तो पुत्र स्त्री आदिके बंधन से भी नहीं बँधते उनको शिवालय आदि से क्या प्रयोजनहै तथापि शिवभक्त ईंट पत्थर आदि से शिवालय निर्माणकर दिव्य विमानमें बैठ ब्रह्म विष्णु आदि देवोंके पूज्य श्रीसदाशिवके लोकको जातेहैं बाल्या-वस्थासे लेकर कंकर पत्थर मृत्तिका आदि किसी पदार्थ

का शिवलिङ्ग बनाय जो पुरुष भक्तिसे नित्य पूजते हैं औ इसीभांति शिवालयभी बनाते हैं वे साक्षात् रुद्र होजाते हैं इसलिये धर्म काम अर्थ की सिद्धिके लिये यत्नसे भक्तिकरके शिवालय निर्माण करना चाहिये केसर नागर औ द्राविड़ आदि जो शिवालयोंके भेद शिल्प शास्त्रमें प्रसिद्धहैं उनमें से एकप्रकार का भी शिवालय बनाने वाला पुरुष शिवलोकमें निवास करताहै कैलास नामक प्रासाद जो परमेश्वर का निर्माण करावे वह कैलास के तुल्य विमान पर विराजमानहो कैलास को जाताहै जो पुरुष भक्ति से उत्तम मध्यम अधम यथाशक्ति मन्दर नाम प्रासाद शिवजीके लिये बनवावे वह मन्दर पर्वत के तुल्य प्रकाशमान अप्सराओंसे परिपूर्ण देवताओं को भी दुर्लभ विमानमें आरूढ़हो शिवलोक में जाय अभीष्ट भोगों का भोगकर ज्ञानपाय गणपति होताहै मेरुनामक शिव प्रासाद जो निर्माण करै वहसब यज्ञ तप दान वेदाध्ययनके फल सेभी बहुत अधिक फलपाय शिवजीकी भांति शिवलोक में विहार करता है निषधनाम शिव मन्दिर जो भक्तिसे बनवावे वहभी अवश्यही शिवलोक पावे हिमशैल नाम शिवमन्दिर जो पुरुष निर्माण करावे वह हिमालयके तुल्यऊंचे विमानों पर चढ़ शिवलोक जाय दिव्य ज्ञानकोपाय गणों का स्वामी होताहै नीलाद्रि शिखरनाम प्रासाद बनानेहारा भी रुद्रलोकमें प्राप्तहोय रुद्रोंके साथ क्रीड़ाकरता है महेन्द्र शैल नाम प्रासाद जो पुरुष भक्ति से निर्माण करै वहभी महेन्द्र पर्वत के तुल्य उत्तम विमानपर आ-

रूढ़हो शिवलोक में जाय दिव्यभोग भोगकर विषयों को विषकी भांति त्याग ज्ञान पाय शिवसायुज्य पाताहै सुवर्ण करके अथवा रत्नों करके द्राविड़ नागर केसरकूट मण्डप समदीर्घ आदिभेदों मेंसे कोई एक शिवप्रासाद बनानेहारे का पुण्य हम सौयुगमें भी नहीं वर्णन कर सक्ते जीर्ण गिराहुआ खंडित फूटा टूटा महादेव जी का मन्दिर जो पुरुष पूर्ववत् बनवादे वह पहिले बनवाने वालेसे भी अधिक पुण्य का भागी होताहै अपनी जीविका के लियेभी जो पुरुष शिवालय में सेवाकरै वहभी अपने बांधवों सहित स्वर्ग को जाय जो अपने भोग के लिये एक बारभी शिवालय में सेवाकरै वह भीदिव्य भोग पावै काष्ठ ईंट पाषाण आदि करके एक शिवालय भी भक्ति से बनाय पुरुष अवश्यही शिवलोक में वास पातेहैं धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्राप्तिकेलिये औ शिवजी के प्रसाद के अर्थ एकशिवालय तो यथा कथञ्चित् निर्माणकरानाही चाहिये जो शिवालय बनवाने को असमर्थहोय तो शिवालय में जायकर मार्जन आदि करै वह भी सब कामनापावै कोमल औ सूक्ष्ममार्जनी अर्थात् झाडूसे जो शिवालय में मार्जनकरै वह पुरुष एकमासमें हज़ार चान्द्रायणका फलपावै गोबरसे जो शिवालय में लेपनकरै वह वर्ष भरके चान्द्रायण का फल पावै शिवलिङ्गके चारो ओर आध २ कोश पर्यंत शिवक्षेत्र होता है उसमेंजो पुरुष प्राण त्यागकरै वह शिवसायुज्य पावै यह स्वायंभुव ज्योतिर्लिंगका प्रमाणहै औ केवल स्वयंभू लिङ्गका क्षेत्र प्रमाण इससे आधाहै अर्थात् लिङ्ग

के चारों ओर पाव २ कोश शिवक्षेत्र होताहै मुनिस्थापित लिंगके क्षेत्र का प्रमाण इससे आधाहै औ मनुष्य स्थापित लिंग तथा यति अर्थात् संन्यासियों के आवासका प्रमाण इससेभी आधा है औ शिवके श्वेत आदि अवतार क्षेत्र में नरावतार क्षेत्र में तथा इनके शिष्य प्रशिष्योंके स्थापित शिवलिंग क्षेत्र में भी वही आध कोसका क्षेत्र प्रमाण है इन क्षेत्रों में जो प्राण त्यागे वह शिवलोक पावे श्रीपर्वत में औ उसके प्रान्त में जो प्राण त्याग करे वह शिवसायुज्य पावे अविमुक्त क्षेत्र अर्थात् काशी, केदार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र, प्रभास, पुष्कर, अवन्ती अर्थात् उज्जयिनी, अमरनाथ आदि सब शिवक्षेत्र हैं इनमें प्राण त्याग करने से शिवलोक मिलताहै काशीमें प्राण त्यागकरनेहारा जीव कभी गर्भ में नहींपड़ता त्रिविष्टप, अविमुक्त, केदार, संगमेश्वर, शालङ्क, जम्बुकेश्वर, शुक्रेश्वर, गोकर्ण, भास्करेश्वर, गुहेश्वर, हिरण्यगर्भ, नन्दीश्वर आदि शिवक्षेत्रों में प्राण त्याग करने से मुक्ति मिलतीहै मानुषआर्ष अथवा दैव शिवक्षेत्रों में जो पुरुष नियमों करके शरीर शुष्क करे अथवा स्वयम्भू क्षेत्रमें तप आदिसे देह सुखाय प्राण त्यागे वह अवश्यही परम गतिको प्राप्त होय शिवक्षेत्र में अग्नि प्रज्वलित कर भक्ति से शिवजीकी पूजा करके उस प्रज्वलित अग्नि में अपने देह का हवन करदे वहभी परमगति पावे भोजनको त्याग अर्थात् अनशन व्रत करके शिवक्षेत्र में प्राण छोड़े वह मुक्ति पावे औ अपने दोनोंपांव काटकर शिवक्षेत्र में

जाय पड़े तो वह भी मुक्त होय शिवक्षेत्र के दर्शन से बड़ा पुण्य होताहै औ क्षेत्रमें प्रवेश करने से दर्शनसे सौगुणा पुण्य होताहै स्पर्श औ प्रदक्षिण करनेसे इस से भी शतगुण पुण्यहै शिवलिंग को जल से स्नान करावै तो इस से भी सौगुणा अधिक पुण्य होताहै दुग्ध के स्नान कराने से सौगुणा दधिके स्नानसे हज़ारगुणा मधु अर्थात् शहद के स्नान से शतगुण शर्करा के स्नान से भी शतगुण औ घृत के स्नानसे अनंत पुण्य होता है शिवक्षेत्रके समीप बहनेवाली नदीके तटपरबैठ अनशन व्रतसे जो देह त्यागकरै वह शिवलोक को जाय क्योंकि शिवक्षेत्र के समीप के बापी, कूप, तड़ाग, नदी आदि सब शिवतीर्थ होते हैं शिवतीर्थों में स्नान करने से मनुष्य के सबपाप कटजातेहैं प्रातःकालके समय शिवतीर्थमें स्नान करनेसे पुरुष अश्वमेध के फलको प्राप्त हो रुद्रलोकको जाता है मध्याह्नके स्नानसे गङ्गास्नान के तुल्य फलहोता हैं सायङ्कालको स्नान करनेहारा पुरुष पाप कंचुकको त्याग शिवपदको प्राप्त होताहै एक दिन भी शिवतीर्थमें तीनकाल स्नानकरनेहारा जीव अवश्य शिवलोक में निवास करताहै पूर्वकालमें श्वानके भयसे एक शूकर शिवतीर्थ में गिरकर मरगया वह शंकर का गणभया जो पुरुष भक्ति से शिवतीर्थों में स्नान करतेहैं उनके पुण्य की तो क्या गणना है प्रातःकालके समय शिवलिङ्गके दर्शन करनेहारा पुरुष सब से उत्तमगति को प्राप्त होताहै मध्याह्नमें दर्शन करनेहारा यज्ञ का फल पाता है औ सायङ्कालके समय शिवलिंग का दर्शन करने

से कायिक, वाचिक, मानसिक पाप औ पातक उपपातक आदिसे छूट अनेक यज्ञोंके फलको प्राप्त हो मुक्ति पाताहै संक्रांति के दिन शिवलिंग का दर्शन करने से मानसिक पाप निवृत्त होतेहैं दक्षिण उत्तर अयन अर्थात् कर्क मकर की संक्रांति और विषुव अर्थात् मेष तुलाकी संक्रांति के दिन शिवलिंग की पूजा करने से परमगति को प्राप्त होताहै सोमसूत्र की रीति से जो पुरुष शिवालय की धीरे २ तीन प्रदक्षिणाकरे वह एक २ पदमें अश्वमेध के फलको प्राप्त होताहै जो पुरुष ऊंचे शब्द करके शिवनाम उच्चारण करता है वहभी शिव स्थान को प्राप्त होता है सुन्दर हरे गोबर से भूमिको लीप उसमें मोती इन्द्रनील, पद्मराग, स्फटिक, मरकत, सुवर्ण, चांदी आदिके चूर्ण औ नील पीत आदि रंगों करके दशहाथके विस्तार में कर्णिका युक्त अति मनोहर कमल लिख उससे वामा आदि नौशक्तिके सहित महादेवजीका आवाहनकर पूजाकरै और बाहिर पांच, छः, आठ, आठ, दश, औ दश, आवरण देवताओंकी क्रम से पूजाकरै और नैवेद्य चढ़ाय परमेश्वरको वार २ प्रणाम करै तो भूमिदान केफलको प्राप्तहोय निर्द्धन पुरुष पहिली रीतिसे शालिपिष्ट अर्थात् चावल आदिके चूर्ण से कमल लिखकर पूजाकरै तो वहभी भूमि दान के फलको पावै रत्न चूर्णों करके वारह दलका कमल वनाय उसके मध्य में भास्करकी औदलों में वारह आदित्यों की पूजाकरै और भास्कर के ओर पास ग्रहों को पूजे तो सूर्यलोकको जाय इसीप्रकार छः दलका कमल वनाय मध्यमें ब्रह्म-

रूपिणी प्रकृति उसके दहिनी ओर सत्व गुण बाईंओर रजोगुण आगे तमोगुणको स्थापनकर पूजा करै और पांच महाभूत तथा पांचतन्मात्रा भगवती के दक्षिण भागमें पांचकर्मेंद्रिय तथा पांच ज्ञानेंद्रिय उत्तर भाग में औ छः दलोंमें आत्मा अंतरात्मा युगुलबुद्धि अहंकार और महत्तत्वकी पूजाकरै तो सब यज्ञोंके फलको प्राप्त होय यह प्रकृति मंडलका विधान हमने कहाहै अबहे मुनीश्वरो सर्वकाम सिद्ध करनेहारा औरभी मंडल पूजन कहते हैं गोचर्म मात्र भूमिको सुन्दर गोमयसे लीप चतुरस्र मंडल बनाय उत्तम सुगन्ध जलसे अभ्युक्षण कर उसके चारोंओर सुवर्ण आदि के चार स्तंभ खड़े कर उनके ऊपर वितान औ छत्रलगाय वितानको मोतियोंकी माला सुवर्णके अर्द्धचन्द्र अश्वत्थ पत्र फूले हुये श्वेत रक्त कमल और नीलोत्पल आदिसे भूषित कर श्वेतवर्णके ध्वज श्वेत वर्णकेपात्र सुलक्षणपूर्णकुंभ, फल, पत्र, पुष्प आदिकी माला, श्वेतवस्त्र पचास घृत के दीप, पांच प्रकार के धूप आदिसे मंडलको अलंकृत करै उसके मध्य में एक हाथ के विस्तार में भांति २ के रत्न चूर्ण अथवा रंगों से पचास दल करके युक्त अति मनोहर पद्मरचै उसकी कर्णिका में पार्वती सहित श्री महादेव जी और पूर्वादि दलसे लेकर रुद्रोंके नाम करके अकार आदि पचास वर्ण दलोंमें स्थापन करै उन वर्णोंके आदिमें प्रणव औ अन्त में नमः शब्दलगादेवै इस प्रकार पद्मरच सब उपचारोंसे उसके मध्यमें साम्ब सदा शिव का भक्ति करकेपूजन करै और अंतमें अति

शिव भक्तपचास ब्राह्मणोंको भांति २ के पदार्थों से विधि पूर्वक भोजन कराय जप माला, यज्ञोपवीत, दंड, कमंडल, कुंडल, छत्र, उपानह, आसन, पगड़ी, वस्त्र आदि उनको देवै औ शिवजी को महा चरु निवेदन करके कृष्णवर्ण का गोमिथुन अर्थात् एककालीगौ औएक वृष चढ़ावै और भी जो मण्डल की सामग्री होय वह सब महादेव जीके अर्पणकरै औ ओंकार आदि प्रतिवर्ण उच्चारणकरके मण्डल का विसर्जन करै इसप्रकार भक्ति से जो मण्डल पूजन करै वह विधिपूर्वक सांगवेद पढ़ने से जो फल होय ज्योतिष्ठोम से लेकर विश्वजित् पर्यंत यज्ञ करने से जो पुण्य होय आश्रम क्रमसे पुत्र उत्पन्नकर पत्नी औ अग्नि समेत वानप्रस्थ आश्रममें जाय चान्द्रायण आदि व्रतकर अन्त में सब कर्मोंका संन्यास कर ब्रह्मविद्याको पढ़ ज्ञान संपादन करने से जो फल योगी जनों को प्राप्त होय वह सब इस घर्ण मण्डल के दर्शन सेही मिलता है चाहे जिस प्रकार से शिवालय के किसी ओर गोमय से भूमि को लीप रंग से चतुष्कोण मण्डल बनावै औ उस में शिव पार्वतीका आवाहनकर गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि उपचारों करके भक्तिसे पूजन करै तो सब पापोंसे मुक्त हो जाय जो पुरुष शिवजीके गर्भगृह अर्थात् निज मन्दिरको चन्दन, कर्पूर आदि सुगन्ध द्रव्यों से लेपन करै औ उसको पुष्प आदि से शोभित कर चार भांति के धूपसे धूपितकरै औ पीछे भक्तिसे शिवजीकी स्तुतिकरै वह पुरुष शिवलोकमें जाय सौकोटि कल्पतक उत्तम २

भोगोंको भोग गन्धर्व लोक में आवै वहां भी बहुत काल आनन्द पूर्वक निवास कर भूमिपर आय चक्रवर्ती राजाहोय हे मुनीश्वरो आदि देव श्रीमहादेवजी प्रलय स्थिति औ उत्पत्ति करनेहारे हैं औ सर्वव्यापी तथा सबभुवनों के प्रभु हैं शिवरूप ब्रह्मसे मोक्षरूप अमृत सम्पादन करना उचित है औ व्यक्त अव्यक्त नित्य औ अचिंत्य शिवका नित्य अर्चनकरना योग्यहै॥

अठहत्तरवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो वस्त्रसे जलको छानकर शिवालयमें लेपन आदि सब काम करने चाहिये नहीं तो फल नहीं होता जल वस्त्रमें छानाहुआ फेन रहित विशेष करके नदीका शुद्ध होताहै सब देवकार्य औ पितृकार्य शुद्ध जलसे करना चाहिये अति सूक्ष्म जीव जलमें रहते हैं इसलिये बिन छाने जल करके क्रिया करने से वे सब मरजातेहैं औ कर्त्ताको वह सम्पूर्ण पाप होताहै मार्जनी, चुल्ली, चक्की, ऊखल औ जल का स्थान इनमें सदा गृहस्थों के हिंसा होतीहै परन्तु जहांतक हिंसा न होय वैसा उपाय करना चाहिये प्राणियों की हिंसा न करना यही परम धर्म है अभयदान सब दानों में उत्तमहै इसलिये सदा हिंसासे बचना योग्य है सब जीव मन, वचन, कर्म करके अहिंसक पुरुष की सदा रक्षा करतेहैं औ हिंसक के सब शत्रु हो जातेहैं वेदवेत्ता ब्राह्मण को संकल्पकर त्रैलोक्य देदेनेसे जो पुण्य होताहै वहही फल कोटि गुणा अहिंसक पु-

रुष को मिलता है मन,वचन, कर्मकरके लोक के हित में प्रवृत्त औ दयालु पुरुष रुद्र लोक को जाते हैं अनेक कुटुम्बों को अपने पुत्र पौत्रों की भांति जो पुरुष स्वामी के तुल्य रक्षण करते हैं वेभी रुद्रलोकमें निवास करते हैं इसलिये अहिंसा परम धर्म है इसीकारण वस्त्र पूत जलसे अभ्युक्षण स्नान आदि करने उचित हैं तीनलोकके जीवों को मारने से जितना पापहोताहै उससे भी अधिक पाप शिवालय में एक जीव मारनेसे हो जाताहै शिवजीके अर्थ पुष्प हिंसा करना उचितहै यज्ञमें पशु हिंसा औ क्षत्रियोंको दुष्टहिंसा विहितहै परंतु योगी औ ब्रह्मवादी पुरुषोंको हिंसाविहित नहींहै ब्रह्मवादी पुरुष को सर्वकर्मका त्याग करनेसे किसी जीवकी हिंसाकरना भी अनुचितहै नारी चाहै पापकर्ममें भी प्रवृत्तहो परउसकी सदा रक्षा करनीही योग्य है घात न करना चाहिये अत्रि के कुलमें उत्पन्न भई स्त्री सदा पवित्र है इसीसे अत्रि गोत्र की स्त्रीके वध करने से ब्रह्महत्या के तुल्य पाप होताहै कोईभी स्त्री वध्य नहींहै औ इसीसे नरमेध आदि यज्ञमें भी स्त्री का ग्रहण करना योग्यनहीं चारों वर्णोंमें मलिन सुरूपा कुरूपा दुष्टाचाहै जैसीस्त्रीहो परन्तु वह अवध्यहीहै औ उसको अग्नि के तुल्यजानना चाहिये वेद विरुद्ध व्रत औ आचार आदिमें प्रवृत्त श्रौतस्मार्त धर्म से विमुख पाखण्डी पुरुषों को कभी ब्राह्मणआदि उत्तम वर्ण स्पर्श न करै औ न उनसे संभाषण करै अधिक क्या कहैं ऐसे पुरुषों का दर्शन करके भी सूर्य भगवान् का दर्शन करने से मनुष्य शुद्ध होता

है परन्तु ऐसे दुष्ट पुरुषों को भी मारना अनुचित है अर्थात् उनकी रक्षाहीकरना योग्यहै वे भी वध्य नहीं हैं प्रसङ्गसे सत्पुरुषों का समागम पाय जो पुरुष भक्तिसे एक वारभी शिव पूजनकरै वह शिवलोक में निवासकरै जो पुरुष दयासे हीन औ शिवजी से विमुख होते हैं वे सदा दुःख भोगते हैं औ जो शिव भक्त हैं जीवों पर करुणा करते हैं वे भाग्यवान् इसी लोकमें सब उत्तम २ भोग भोग कर अंत में मुक्त होते हैं पुत्र स्त्री आदि में जैसा मनुष्यों का चित्त आसक्त होता है वैसा सत्संग पाय कदाचित् परमेश्वर में आसक्त होय तो स्वर्ग समीपही समझो ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषिपूछते हैं कि हे सूतजी कलियुग के अल्पायुष् अल्पबल अल्पसत्व मंदबुद्धि औ मंद भाग्य मनुष्य क्योंकर शिवजी का आराधन करसकते हैं क्योंकि हजारों वर्ष देवता लोग तप करते हैं तोभी शिवका दर्शन नहीं पाते इन मनुष्य कीटों की तो क्या गणनाहै यह मुनियों का वचन सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह तो आप ठीकही कहते हैं तो भी श्रद्धासे शिवजी महाराज का दर्शन औ उनसे सम्भाषण हो सकता है जो भक्तिसे हीनभी पुरुष प्रसङ्गसे शिवपूजा करते हैं उनको भी परमेश्वर भावनाके अनुकूल फल देताहै जो पुरुष उच्छिष्ट होकर शिवपूजनकरै वह पिशाचलोक में प्राप्तहोता है क्रुद्ध होकर पूजा करनेहारा

राक्षसलोकको अभक्ष्य पदार्थ का भक्षणकर पूजाकरने वाला यक्षलोकको गान में आसक्तहोकर शिवपूजन करनेवाला गंधर्व लोकको स्त्री में आसक्त औ मद्यपानसे मत्तहोकर पूजा करनेहारा पुरुष सोमलोक को जाता है गायत्री मंत्र करके शिवजी का पूजनकरने से प्राजापत्य लोक मिलताहै प्रणवकरके पूजनसे ब्रह्मलोक औ आदर पूर्वक पूजन करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है जो पुरुष एकबार भी श्रद्धाकरके शिवपूजनकरै वह शिवलोक में जाय रुद्रों के साथ विहारकरै शिवलिंग को पवित्र जलसे शुद्धकरके धर्म ज्ञान वैराग्य औ ऐश्वर्य रूप पीठके ऊपर ओंकार पद्म औ पद्मके ऊपर सोम सूर्य औ अग्निके मंडल कल्पना कर उनके ऊपर लिंग स्थापनकरै फिर पाद्य अर्घ्य आचमन समर्पणकरि सुन्दर गंगाजल आदि अति निर्मल जलसे स्नानकराय दुग्ध दधि घृत शहत औ शर्करा से स्नान करावै पीछे शुद्ध जल से लिंग को स्नान कराय श्वेत वस्त्र से पोंछ अपने सम्मुख पीठपर विराजमान कर चंदन, कस्तूरी, गोरोचन आदि द्रव्यों से लिंग को लेपन करै भांति भांति के उत्तम सुगंध युक्त पुष्प अखंडित विल्वपत्र रक्तकमल नीलोत्पलपुण्डरीक अर्थात् श्वेतकमल नंद्यावर्त अर्थात् तगर पुष्प, मल्लिका, चंपा, चमेली, बकुल, करवीर, शमीपुष्प, धतूरेके पुष्प, अगस्त्यपुष्प, अपामार्ग, कदम्बपुष्प औ नाना प्रकार के भूषण परमेश्वर को चढ़ाय पांच प्रकारकी धूपसे धूपितकर पायस अर्थात् खीर, दही, भात औ घृतसे परिप्लुत मूंग चावल

अथवा भांति २ के रस जो मिलसकैं औ अनेक प्रकार के फल शिवजीको निवेदन करै अथवाअति शुक्ल चार सेर पकेचावलों काभात घृत शर्करायुक्त महादेवजी को नैवेद्य लगावै नैवेद्य के अनंतर आचमनदेकर तांबूल चढ़ावै औ प्रदक्षिणाकर वार २ प्रणाम करै औ स्तुति करके ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव औ सद्योजात मंत्रोंसे शिवजीका पूजन करै इस प्रकार पूजन करनेसे श्रीमहादेव जी प्रसन्न होते हैं जिनके पुष्पपत्र आदि शिवजीको चढ़ावै वे वृक्ष औ जिनका दुग्ध दधि आदि शिवजी के निमित्तलगै वे गौपरमगतिको प्राप्त होते हैं जो एकवार भी शिवजीका पूजनकरै वह शिवलोक में प्राप्तहोय औ उसकी पुनरावृत्ति न होय पूजित शिव लिंगके एकवार भी दर्शन करनेसे सवपापों से मुक्त हो जाताहै पूजन करते को जो देखै औ पूजनका अनुमोदन करै वहभी शिवलोक में जाय जो पुरुष शिवलिंगके आगे घृतका दीपक एकवार भी चढ़ावै वह मुनियों को भी दुर्लभ जो गतिहै उसको पावै पाषाणका धातुका अथवा काष्ठका दीप वृक्ष शिवजीके आगे निवेदन करै तो अपने सौकुलोंका उद्धार करै लोह, ताम्र, चांदी अथवा सुवर्णका दीप जो भक्ति से महादेवजीको अर्पण करै वह अयुत सूर्यों के समान प्रकाशमान विमान में विराजमान होकर शिवलोक को जाय कार्त्तिक के महीने में जो शिवजी को घृत दीप निवेदन करै औ पूजित शिवलिंग का श्रद्धा से दर्शन करै वह ब्रह्मलोकमें निवासकरै आवाहन सान्निध्य स्थापन औ पूजन

रुद्रगायत्री से करै आसन प्रणव करके औ स्नान पंचब्रह्ममंत्र तथा रुद्र करके शिवलिंगको करावै उनके दक्षिणभागमें प्रणव करके ब्रह्माजीका औ वामभाग में गायत्री करके विष्णुजीका पूजनकरै पीछे पंचब्रह्ममंत्र औ प्रणव करके संस्कृत अग्नि में हवन करै इस भांति नित्य शिवपूजन करनेहारा पुरुष ब्रह्म सायुज्यको प्राप्त होताहै शिवजीके मुखसे श्रवण करके जो लिंगार्चन विधि वेदव्यासजी ने वर्णनकरी वह हमने संक्षेप से आप से कही है ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते भये कि हे सूतजी पशुपति के दर्शन से पशुपाश विमोक्षण कैसे होताहै औ देवताओं ने पशुत्व क्योंकर त्यागकिया यह सब आप हमको श्रवण करावैं मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हेमुनीश्वरो एक समय कैलास शिखर के ऊपर भोग्य नाम अपने नगरमें पार्वतीजी सहित शिवजी विराजमान थे इस अवसर में सब देवता एकत्रहो उनके दर्शन को आये औ हंसपर चढ़कर ब्रह्माजी तथा गरुड़ पर आरूढ़ विष्णुजी उनके साथ आये कैलासमें पहुँच इन्द्र, यम, सिद्ध, साध्य आदि देवगण शिवजीको प्रणाम करतेहुये औ पीछे विष्णुजी भी गरुड़से उतर अतिमनोहर कैलास पर्वत पर चढ़नेलगे औ देखतेभये कि धव, खदिर, पलाश, आम्र, चंदन आदि उत्तम वृक्षोंसे पर्वत परिपूर्ण है चारोंओर झरने गिररहे हैं वृक्षों पर कोकिल

आदि पक्षी अपनी २ मधुरवाणी से मनको लुभाते हैं सरोवरों में हंस क्रीड़ा कर रहे हैं कुररपक्षी अतिमुदित हो जलमें कलोलें करते हैं किसी ओर से किन्नरियों के गानका मधुर शब्द सुनपड़ताहै कहीं फूलेहुये, बकुल, अशोक, तिलक, कुरबक, कदंब, तमाल आदि वृक्षोंपर भ्रमर गुंजार कररहे हैं फूले कमलों के सुगन्ध औ शीतल जलकणों को लिये बहताहुआ मंद २ पवन परिश्रमको हरता है इसभांति चारोंओर पर्वतकी शोभा देखतेहुये सब देवताओं सहित श्रीविष्णुजी शिखरके ऊपर पहुँचे औ वहां शिवजी के विहारके लिये विश्वकर्मा का बनाया अतिउत्तम नगर देखा औ दूरसे प्रणाम किया स्त्री, पुरुष, हाथी, घोड़े, रथ औ गणों से परिपूर्ण मणियों से जड़े सुवर्ण के अति ऊंचे प्रासादों से शोभित उस नगरमें सब देवताओं सहित ब्रह्माजी औ विष्णुजी प्रसन्नहो शिवजी को प्रणामकर प्रवेश करते भये भीतर जाय दूसरा पुर देखा जिसमें बड़े २ ऊंचे मणियों के महल औ भांति २ के उपवन शोभित हैं उसमें प्रवेशकर तीसरा नगर देखतेभये जहां हीरा, पन्ना, मोती आदिकी जाली झरोखे प्रासादों में लगी हैं घंटाओं करके युक्त दोला अर्थात हिंदोले लटकते हैं उनपर अतिसुन्दरीगणोंकी स्त्री झूलरही हैं किसी ओर मृदंग वीणा मुरजआदि वाद्य बजते हैं औ अप्सराओं का नृत्य होरहा है प्रासाद ऐसे मनोहर हैं कि जिनके आगे इन्द्रभवनभी लजाय उन प्रासादों के ऊपर अति रूपवती युवती जिनके नेत्र मदसे घूर्णित होरहे हैं हाथों

में पुष्प, फल, अक्षत लिये खड़ी हैं वे सब भगवान्को देख उनके ऊपर पुष्पवृष्टि करनेलगीं औ अतिप्रसन्न हो नाचने औ गाने लगीं कोई भगवान्को देख जिनके वस्त्र औ कांची शिथिल होगये हँसकर हावभाव करने लगीं इस प्रकार चारोंओर उन चतुर नारियोंका चमत्कार निहारते हुये विष्णु भगवान् क्रमसे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें, नवें औ दशवें पुरको अतिक्रमण कर अतिशोभित ग्यारहवां शिवजीका मुख्य नगर देखते भये जो सूर्यमंडल के तुल्य विमान स्फटिक सुवर्ण रत्न आदि के मंडप औ ऊंचे २ नगर द्वारों से चारोंओर शोभितथा औ जिसमें गुह्यक विद्याधर गंधर्वों के घर ऐसे उत्तम बनेथे कि उनमें रहनेके लिये देवताओं काभी मन चलता था वह नगर बड़े दृढ़ अट्ठाईस प्राकारोंकरके वेष्टितथा औ जिसके भीतर पद्मराग आदि उत्तम मणियों से बने अनेक प्रासाद गणेश औ स्कंद के थे चंदन आदि उत्तम २ वृक्षोंके उपवन औ क्रीड़ा के लिये जिनके मध्य में बापी औ तड़ाग बनरहे जिनमें सुवर्णकी सीढ़ी लगीं औ हंस, कारंडव, चक्रवाकआदि पक्षी जलमें औ मयूर कोकिल आदि तटपर लताओं के कुंजों में विहार करते थे औ उन बापियों के जलमें अति मधुर बोलनेहारी सब भूषणोंसे भूषित स्तन भार से झुकीहुई मदकरके आघूर्णित हजारों गणोंकी कन्या औ अप्सरा जलक्रीड़ा करती थीं औ श्रुतिग्रास आदि गीत लक्षणों से युक्त गानकरती थीं यह शिवजी की विभूति देख देवता अति विस्मित भये औ दूसरी

ओर देखा तो हजारों गण उपवनों में विहारकर रहेहैं श्रो सुवर्ण के सोपानों करके युक्त हीरा, पन्ना, स्फटिक आदिके विमान अर्थात् सातखण्डके महल मनको हरते हैं श्रो जिनके ऊपर कमलके तुल्य नेत्र पद्मगर्भ के समान वर्ण श्री चन्द्रके समान जिनकेवदन हार नूपुर आदि अनेक उत्तम भूषणों से भूषित उत्तम २ अनेक वर्णके अति सूक्ष्म श्रो मृदु वस्त्र ओढ़े रति में अतिकुशलवि- द्याधरी किन्नरी यक्षिणी गंधर्व श्रो नागोंकी स्त्रियां खड़ी हैं इसप्रकार देवांगना श्रो गणों के ऐश्वर्य को देखते हुये सब देवता नगर के मध्य में हजारों सूर्य्यके समान प्रकाशित शिवजीके प्रासादके द्वारपर पहुँचे वहां सुवर्ण- दंड हाथमें लिये नंदीश्वर को देख सबने प्रणाम किया श्रो ऊंचेस्वरसे जय शब्द भी किया उनको देख अति प्रसन्न हो नंदी कहते भये हे देवताओ आपसब लोकों के स्वामी हैं जिसकार्यके निमित्त आपका आगमन हुआ होय हमको कहैं हम अभी श्रीमहादेवजी के समीप आपका वृत्तांत निवेदन करेंगे यह सुन देवता कहते भये कि पुरत्रय दग्ध करनेके समय शिवजीने हमसबको पशु होने की आज्ञा दी तब हम बहुत शंकितभये हमको शंकित देख महादेवजीने पाशुपत व्रतका उपदेश किया और कहा कि इसव्रत को बारहवर्ष बारहमास अथवा बारहदिनही करने से पशुत्व निवृत्त होताहै सो हम सब अब पशुपाशकी निवृत्तिके लिये आयेहैं आप शीघ्र श्री महादेवजी का दर्शन करावें यह देवताओं की विनतीसुन नंदी विष्णु आदि देवगण को श्रीमहादेव जी का दर्शन

करातेभये देवता भी श्रीशंकर का दर्शन पाय प्रीति से बारंबार प्रणामकर हाथ जोड़ पशुपाश मोक्ष के लिये प्रार्थना करतेभये महादेव जी उन की प्रार्थना सुन पशुत्व निवृत्त करने के अर्थ सब मुनि औ देवताओं को पाशुपत व्रत का उपदेश भली भांति फिरभी करते भये उस दिन से देवता पाशुपत औ उनके उपास्य देव श्रीशंकर पशुपति कहाये देवता भी शिवजीसे उपदेश पाय बारह वर्ष पर्यंत पाशुपत व्रत औ तप करके मुक्तपाश भये औ शिवजी को प्रणामकर सब अपने अपने लोक को गये ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह सब कथा ब्रह्मा जी ने सनत्कुमारजी से कही औ सनत्कुमार जी ने श्री वेदव्यास जी को सुनाई वेदव्यास जी से मैंने पाई औ आप को श्रवण कराई इसकथा को जो सुनै अथवा ब्राह्मणों को सुनावे वह पशुपाश से मुक्तहोय ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

ऋषि कहते हैं कि हे सूतजी यह पाशुपत व्रत तो आपने वर्णन किया परन्तु पूर्वकाल में देवताओं ने जो लिंगव्रत किया उसका वर्णन हम श्रवण किया चाहते हैं यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो यही बात सनत्कुमार जी नंदी के प्रति पूछते भये औ नंदीश्वर ने जो उनको कथन किया वह हम आपको सुनाते हैं ॥

नंदी कहते हैं देवता,दैत्य,सिद्ध,गंधर्व,चारण औमनि

सबने अतिउत्तम औ पशुपाश को निवृत्त करनेहारा द्वादश लिंग नाम व्रत पूर्वकाल में किया है जो व्रत योग, भोग, मोक्ष औ मनोभीष्ट देनेहारा है भक्तों का भय निवृत्त करता है अंगों सहित वेदों का मथन करके शिवजी ने उत्पन्न किया है सब दानों से औ दश हज़ार अश्वमेध से भी अधिक पुण्य देनेहारा है सब मंगल देता है ज्वर शत्रु औ व्याधियों का हरनेहारा है संसारसमुद्र में मग्न जीवोंका उद्धार जिस व्रतके किये से होताहै औ ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने जिस व्रतसे अपने अभीष्ट फल पायेहैं उस व्रतका विधान हम आप से कथन करते हैं हे सनत्कुमार जी आप श्रवण करें चैत्र मास से व्रतका आरंभ करे कर्णिका औ केशरों करके युक्त सुन्दर सुवर्ण का कमल बनाय उसकी कर्णिका में स्फटिक का स्थूल शिव लिंग जलहरी समेत स्थापन करे औ चंदन आदिके सुगन्ध जलसे लिंगको स्नान कराय गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि चढ़ाय रुद्रगायत्री से बिल्वपत्र पुण्डरीक नीलोत्पल रक्त कमल अर्कपुष्प कर्णिकार करवीर बकपुष्प आदि जो पुष्पमिलें सब चढ़ावे फिर नैवेद्य लगाय आरती कर अघोरमंत्र करके दक्षिण ओर अगुरु औ सद्योजात से पश्चिमकी ओर मनः शिला वामदेव मंत्र करके उत्तर की ओर चंदन औ तत्पुरुष मंत्रकरके पूर्वकी ओर हरिताल चढ़ावे औ श्वेत कृष्ण अगुरु औ गुग्गुलका अति सुगंध युक्त धूप धूपित करे औ सितार नामक धूप भी भक्तिसे देवे पीछे महाचरु अथवा चारसेर अन्नकानैवेद्य

महादेवजी को लगाय स्तोत्र पाठकर विसर्जन करै यह तो सबमहीनोंमें सामान्य शिवलिंगव्रतका विधानहै औ विशेष यहहै कि वैशाखमें हीरेका लिंग ज्येष्ठ में मरकत अर्थात् पन्नेका आषाढ़में मौक्तिकका श्रावणमें नीलमणिका भाद्रमें पद्मरागका आश्विनमें गोमेदका कार्त्तिकमें प्रवालका मार्गशीर्ष में वैडूर्यका पौषमें पुष्परागका मांघ में सूर्यकांतका औ फाल्गुनमें स्फटिकका लिंग पूजना चाहिये सब महीनों में सुवर्णके कमल अथवा चांदीके औ जो चांदी का भी न मिले तो कमलपुष्प से ही पूजा करै लिंग भी रत्न का उत्तम होताहै जो रत्न न मिलै तो सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पाषाण, काष्ठ, मृत्तिका आदि किसी पदार्थ का लिंगवनाय पूजन करै औ सबके अभाव में सर्व गन्धमय चाणिक लिंग ही कल्पना करके पूजे हेमन्त ऋतुमें विल्वपत्रसे शिव पूजन करै सुवर्ण का अथवा चांदी का कमल चढ़ावै औ हजार पुष्प कमल के भी चढ़ावै जो हजार फूल न मिलैं तो पांच सौ अढ़ाई सौ अथवा अष्टोत्तरशत ही कमल पुष्प समर्पण करै विल्वपत्रमें लक्ष्मी नीलोत्पलमें अंबिका उत्पल में स्कंद औ कमल में साक्षात् शिवजीका निवास है परंतु विल्वपत्र का शिवपूजा में कभी त्याग न करना चाहिये नीलोत्पल, उत्पल औ कमल भी यथा लाभ परमेश्वर को समर्पण करने योग्य हैं कमल से सर्ववश्य होता है मनशिलासे सव कामना सिद्ध होती हैं अगुरु, गुग्गुल आदि के धूपसे पाप दूर होते हैं औ दीप निवेदन से रोग दूर होते हैं चंदन से सब सिद्धि मिलती हैं सौग-

न्धिक धूप श्वेत कृष्ण अगुरुका धूप औ सितारि धूप साक्षात् निर्वाण सिद्धि देनेहारा है श्वेतार्कके पुष्प में ब्रह्मा कर्णिकारमें सरस्वती करवीर में गणेश बकपुष्प में साक्षात् नारायण औ सम्पूर्ण सुगन्धित पुष्पों में श्रीभगवती का निवासहै इस कारण इन पुष्पों से औ धूप दीप आदिकों से यथालाभ परमेश्वर का पूजन करे। फिर भक्तिसे घृत और व्यञ्जन सहित पायस तथा महाचरु निवेदन करे चारसेर अथ वा दोसेर भात अथवा मूंग भातका नैवेद्य लगावे नैवेद्य के अनन्तर आचमन देकर छत्र, चामर, व्यजनआदि उपचार श्रीशिवजीके अर्पण करे अनेक प्रकारके उपहार जलसे प्रोक्षित औ पवित्र श्रीशङ्कर को निवेदन करे क्षीरसे सब देवताओं के लिये विष्णुजीने अमृत निकाला है अन्नसे सब जगत्का निर्वाह है औ जीवों को अन्न देने से परमेश्वर संतुष्ट होते हैं इसलिये क्षीर औ अन्नसे परमेश्वरका पूजन करना उचित है उपहार में तुष्टि होती है गंधयुत जल में वरुण का निवास है पीठ अर्थात् जलहरी में महत्तत्त्व आदि युक्त प्रकृतिका निवास है प्रतिमासपूर्णिमा औ अमावास्या को परमेश्वर की प्रीतिके लिये यह व्रत करना योग्य है। सत्य, शौच, दया, शांति, संतोष औ दान से व्रत सफल होता है इस प्रकार एकवर्ष पर्यंत व्रत पूरा करके व्रतका उद्यापन करे, गोदान औ वृषोत्सर्ग करके वेदवेत्ता ब्राह्मणों को भोजन करावे औ सब सामग्री सहित पूजित लिंग शिवक्षेत्र में स्थापन करे अथवा ब्राह्मणको देदेवे

इस व्रत को भक्ति से जो पुरुष सब महीनों में करै वह ही तपस्वियों में श्रेष्ठ है औ कोटिसूर्य के तुल्य देदीप्यमान विमान पर बैठ शिवलोक में जाता है औ सदा वहांही निवास करता है एक महीने भी जो इस व्रत को करे वह भी शिव सायुज्य पावै इसमें कुछ सन्देह नहीं यह सब फल निष्काम व्रत करने से होता है औ जो पुरुष कामना से व्रत करै वह भी निश्चयही एकवर्ष में अपनी इच्छाफल करै देवता, पितर, इन्द्रगण आदिका उत्तमपद इस व्रतके प्रभावसे मिलै विद्यार्थी विद्यापावै भोगकी इच्छावाला भोग औ आयु की इच्छावाला पूर्ण आयुष पावै धनकी कामनासे यह व्रतकरै तो निधिपावै और भी जो जो कामना करै सब मासव्रत के करने सेही उस पुरुष को मिलैं देवता, असुर, सिद्ध, विद्याधर आदिकों के हितके लिये अति पवित्र औ रहस्य यहव्रत शिवजीनेही रचा है इसव्रत को कर प्रीति से शिवपूजन करै औ पूजाके अन्तमें पुत्र पौत्रों सहित प्रदक्षिणा कर भक्तिसे बार २ प्रणाम करै औ हाथजोड़ व्यपोहन नामस्तोत्र शिवजीके आगेपढ़ै वह व्यपोहन स्तोत्र जगत् हितके लिये सब देवताओं सहित ब्रह्माजीने कियाहै अति दुर्लभ है ॥

बयासीवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो नन्दीश्वरके मुख से सनत्कुमार ने सनत्कुमार से श्रीवेदव्यासजी ने औ वेद व्यासजीसे हमने सब सिद्धियों के देनेहारा औ परम

पवित्र जो व्यपोहनस्तव सुना है वह आपको श्रवण कराते हैं भक्तिसे सुनो ॥

स्तोत्रम् ॥ नमःशिवायशुद्धाय निर्मलाययशस्विने॥ दुष्टांतकायशर्वायभवायपरमात्मने१ पंचवक्त्रोदशभुजो यक्षपंचदशैर्युतः ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः सर्वाभरण भूषितः २ सर्वज्ञः सर्वगः शांतः सर्वोपरिसुसंस्थितः ॥ पद्मासनस्थः सोमेशः पापमाशुव्यपोहतु ३ ईशानः पुरुषश्चैव अघोरःसद्यएवच ॥ वामदेवश्चभगवान् पापमाशुव्यपोहतु ४ अनंतःसर्वविद्येशःसर्वज्ञःसर्वदः प्रभुः ॥ शिवध्यानैकसम्पन्नःसमेपापंव्यपोहतु ५ सूक्ष्मःसुरासुरेशानो विश्वेशोगणपूजितः ॥ शिवध्यानैकसम्पन्नःसमेपापंव्यपोहतु ६ शिवोत्तमोमहापूज्यःशिव ध्यानपरायणः ॥ सर्वगःसर्वदःशांतः समेपापंव्यपोहतु७ एकाक्षोभगवानीशः शिवार्चनपरायणः ॥ शिवध्यानैक सम्पन्नःसमेपापंव्यपोहतु ८ त्रिमूर्त्तिर्भगवानीशः शिव भक्तिप्रबोधकः ॥ शिवध्यानैकसम्पन्नस्समेपापंव्यपोहतु ९ श्रीकंठःश्रीपतिः श्रीमाँछिवध्यानरतःसदा ॥ शिवार्चनरतःसाक्षात् समेपापंव्यपोहतु १० शिखण्डी भगवाञ्छान्तःशवभस्मानुलेपनः ॥ शिवार्चनरतःश्री मान्समेपापंव्यपोहतु ११ त्रैलोक्यनमितादेवी सो ल्काकारापुरातनी ॥ दाक्षायणीमहादेवी गौरीहैमवती शुभा १२ एकपर्णाग्रजासौम्या तथाचैवैकपाटला ॥ अपर्णावरदादेवी वरदानैकतत्परा १३ उमासुरहरा साक्षात् कौशिकीवाकपर्दिनी ॥ खट्वाङ्गधारिणीदिव्या कराग्रतरुपल्लवा १४ नैगमेयादिभिर्दिव्यैश्चतुर्भिःपुत्र

कैर्वृता ॥ मेनायानंदिनीदेवी वारिजावारिजेक्षणा १५
अंबायावीतशोकस्यनंदिनश्चमहात्मनः ॥ शुभावत्याः
सखीशांतापंचचूडावरप्रदा १६ सृष्ट्यर्थंसर्वभूतानांप्र
कृतित्वंगताऽव्यया ॥ त्रयोविंशतिभिस्तत्त्वैर्महदाद्यैर्विजृ
म्भिता १७ लक्ष्म्यादिशक्तिभिर्नित्यं नमितानंदनंदि
नी ॥ मनोन्मनीमहादेवी मायावीमंडनप्रिया १८ माय
यायाजगत्सर्वं ब्रह्माद्यंसचराचरम् ॥ क्षोभिणीमोहिनी
नित्यं योगिनांहृदिसंस्थिता १९एकानेकस्थितालोकेइंदी
वरनिभेक्षणा॥ भक्त्यापरमयानित्यं सर्वदेवैरभिष्टुता२०
गणेंद्रांभोजगर्भेन्द्र यमवित्तेशपूर्वकैः ॥संस्तुताजननी
तेषांसर्वोपद्रवनाशिनी २१ भक्तानामार्त्तिहाभव्या भव
भावविनाशिनी ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदादिव्या भक्तानामप्रय
त्नतः२२सामेसाक्षान्महादेवी पापमाशुव्यपोहतु॥ चंडः
सर्वगणेशानो मुखाच्छंभोर्विनिर्गतः ॥ शिवार्चनरतः
श्रीमान्समेपापंव्यपोहतु २३ शालंकायनपुत्रस्तु हल
मार्गोत्थितःप्रभुः ॥ जामातामहतांदेवःसर्वभूतमहेश्वरः
२४ सर्वगःसर्वदृक्शर्वःसर्वेशसदृशःप्रभुः॥ सनारायण
कैर्देवैस्सेंद्रचन्द्रदिवाकरैः २५ सिद्धैश्चयक्षगन्धर्वैर्भूतै
र्भूतविधायकैः ॥ उरगैर्ऋषिभिश्चैव ब्रह्मणाचमहात्म
ना २६ स्तुतस्त्रैलोक्यनाथस्तु मुनिरंतःपुरस्थितः ॥
सर्वदापूजितःसर्वैर्नंदीपापंव्यपोहतु २७ मेरुमन्दरकै
लासतटकूटप्रभेदनः॥ ऐरावतादिभिर्दिव्यैर्दिग्गजैश्च
सुपूजितः २८ सप्तपातालपादश्च सप्तद्वीपोरुजंघकः ॥
सप्तार्णवांकुशश्चैव सर्वतीर्थोदरःशिवः २९ आकाश
देहोदिग्वासाः सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ हतासुरमहावृ

श्रो ब्रह्मविद्यामहोत्कटः ३० ब्रह्माद्याधोरणैर्दिव्यैर्योग
पाशसमन्वितैः॥ बद्धोहत्पुण्डरीकाख्ये स्तंभेवृत्तिनिरु
ध्यच ३१ नागेंद्रवक्त्रोयःसाक्षाद् गणकोटिशतैर्वृतः॥
शिवध्यानैकसम्पन्नः समेपापंव्यपोहतु ३२ भृंगीशःपि
ङ्गलाक्षोऽसौभसिताशस्तुदेहयुक्॥ शिवार्चनरतःश्रीमा
न् समेपापंव्यपोहतु ३३ चतुर्भिस्तनुभिर्नित्यं सर्वासुर
निबर्हणः॥ स्कन्दःशक्तिधरःशांतःसेनानीःशिखिवाहनः
३४ देवसेनापतिःश्रीमान् समेपापंव्यपोहतु ॥ भवःस
र्वस्तथेशानोरुद्रःपशुपतिस्तथा ३५ उग्रोभीमोमहादेव
श्शिवार्चनरतःसदा ॥ एताःपापंव्यपोहंतुमूर्त्तयःपरमे
ष्ठिनः ३६ महादेवःशिवोरुद्रः शङ्करोनीललोहितः॥
ईशानोविजयोभीमो देवदेवोभवोद्भवः ३७ कपाली
शश्चविज्ञेयो रुद्रारुद्रांशसंभवाः ॥ शिवप्रणामस
म्पन्ना व्यपोहंतुमलंमम ३८ विकर्तनोविवस्वांश्चमा
र्तंडोभास्करोरविः ॥ लोकप्रकाशकश्चैव लोकसाक्षी
त्रिविक्रमः ३९ आदित्यश्चतथासूर्यश्चांशुमांश्चदि
वाकरः ॥ एतेवद्वादशादित्या व्यपोहंतुमलंमम ४०
गगनंस्पर्शनस्तेजो रसश्चपृथिवीतथा ॥ चन्द्रःसूर्य
स्तथात्माच तनवःशिवभाषिताः ४१ पापंव्यपोहं
तुममभयंनिर्णाशयंतुमे ॥ वासवःपावकश्चैव यमो
निर्ऋतिरेवच ४२ वरुणोवायुसोमौच ईशानोभगवान्
हरिः ॥ पितामहश्चभगवाञ्छिवध्यानपरायणः ४३
एतेपापंव्यपोहंतु मनसाकर्मणाकृतम् ॥ नभस्वान्स्प
र्शनोवायुरनिलोमारुतस्तथा ४४ प्राणःप्राणेशजीवेशौ
मारुताश्शिवभाषिताः॥ शिवार्चनरतास्सर्वेव्यपोहंतुम

लंमम ४५ खेचरीवसुचारीच ब्रह्मेशोब्रह्मब्रह्मधीः॥
सुषेणःशाश्वतःपुष्टः सुपुष्टश्चमहाबलः ४६ एतेवैचार
णाःशंभोःपूजयातीवभाविताः॥ व्यपोहंतुमलंसर्वंपापंचै
वमयाकृतम् ४७ मंत्रज्ञोमंत्रवित्प्राज्ञोमंत्रराट्सिद्धपू
जितः॥ सिद्धवत्परमःसिद्धः सर्वसिद्धिप्रदायिनः ४८
व्यपोहंतुमलंसर्वं सिद्धाःशिवपदार्चकाः॥ यज्ञोयज्ञेशव
नदोजृंभकोमणिभद्रकः ४९ पूर्णभद्रेश्वरोमालीशिति
कुण्डलएवच॥नरेंद्रश्चैवयक्षेशाव्यपोहन्तुमलंमम५०
अनन्तःकुलिकश्चैववासुकिस्तक्षकस्तथा॥ कर्कोटकोम
हापद्मःशंखपालोमहाबलः ५१ शिवप्रणामसम्पन्ना
शिवदेह विभूषणाः॥ मलंपापंव्यपोहंतुविषंस्थावरजं
गमम् ५२ वीणाज्ञःकिन्नरश्चैवसुरसेनःप्रमर्दनः॥ अ
तीशयःसप्रयोगी गीतज्ञश्चैवकिन्नराः ५३ शिवप्रणा
मसम्पन्नाव्यपोहंतुमलंमम॥ विद्याधरश्चविबुधोविद्या
राशिर्विदांवरः ५४ विबुद्धोविबुधःश्रीमान्कृतज्ञश्चमहा
यशाः॥ एतेविद्याधरास्सर्वे शिवध्यानपरायणाः ५५
व्यपोहंतुमलंघोरं महादेवप्रसादतः॥ वामदेवोमहाजं
भःकालनेमिर्महाबलः ५६ सुग्रीवोमर्दकश्चैव पिङ्गलो
देवमर्दनः॥ प्रह्लादश्चाप्यनुह्लादः संह्लादःकलिवाष्क
लौ ५७ जंभःकुम्भश्चमायावी कार्त्तवीर्यःकृतंजयः॥
एतेसुरामहात्मानोमहादेवपरायणाः ५८ व्यपोहन्तुभ
यंघोरमासुरंभावमेवच॥ गरुत्मान्खगतिश्चैवपक्षिरा
एनागमर्दनः ५९ नागशत्रुर्हिरण्यांगो वैनतेयःप्रभंज
नः॥नागाशी विषनाशश्च विष्णुवाहनएवच ६० ए
तेहिरण्यवर्णाभागरुडाविष्णुवाहनाः॥ नानाभरणस

म्पन्नाव्यपोहंतुमलंमम ६१ अगस्त्यश्चवशिष्ठश्चअं
गिराभृगुरेवच॥ कश्यपोनारदश्चैव दधीचिश्च्यवनस्त
था ६२ उपमन्युस्तथान्येचऋषयःशिवभाविताः॥
शिवार्चनरतास्सर्वे व्यपोहंतुमलंमम ६३ पितरःपिता
महाश्चैवतथैवप्रपितामहाः॥ अग्निष्वात्ताबर्हिषदस्त
थामातामहादयः ६४ व्यपोहंतुभयंपापंशिवध्यानपरा
यणाः॥ लक्ष्मीश्चधरणीचैव गायत्रीचसरस्वती ६५
दुर्गाउमाशचीज्येष्ठा मातरःसुरपूजिताः॥ देवानांमातर
श्चैवगणानांमातरस्तथा ६६ भूतानांमातरस्सर्वायत्र
यागणमातरः॥ प्रसादाद्देवदेवस्यव्यपोहंतुमलंमम ६७
उर्वशीमेनकाचैवरंभारतितिलोत्तमाः॥ सुमुखीदुर्मुखीचै
वकामुकीकामवर्द्धिनी ६८ तथान्यासर्वलोकेषुदिव्या
श्चाप्सरसस्तथा॥ शिवायतांडवंनित्यंकुर्वंत्योऽतीवभा
विताः ६९ देव्यःशिवार्चनरताव्यपोहंतुमलंमम॥
अर्कःसोमोऽगारकश्चबुधश्चैवबृहस्पतिः ७० शुक्रः
शनैश्चरश्चैवराहुःकेतुस्तथैवच॥ व्यपोहंतुभयंघोरं
ग्रहपीडांशिवार्चकाः ७१ मेषोवृषोऽथमिथुनस्तथाक
र्कटकःशुभः॥ सिंहश्चकन्याविपुलातुलावैवृश्चिकस्त
था ७२ धनुश्चमकरश्चैवकुंभोमीनस्तथैवच॥ राश
योद्वादशह्येतेशिवपूजापरायणाः ७३ व्यपोहंतुभयंपा
पंप्रसादात्परमेष्ठिनः॥ अश्विनीभरणीचैवकृत्तिकारो
हिणीतथा ७४ श्रीमन्मृगशिराश्चार्द्रापुनर्वसुपुष्यसार्प
काः॥ मघावैपूर्वफाल्गुन्यउत्तराफाल्गुनीतथा ७५ हस्त
श्चित्रातथास्वातीविशाखाचानुराधिका॥ ज्येष्ठामूलंम
हाभागापूर्वाषाढातथैवच७६उत्तराषाढिकाचैवश्रवणंच

श्रविष्ठिका ॥ शतभिषक्पूर्वभद्राचतथाप्रोष्ठपदातथा
७७ पौष्णंचदेव्यःसततंव्यपोहंतुमलंमम॥ ज्वरःकुम्भो
दरश्चैवशंकुकर्णोमहाबलः ७८ महाकर्णःप्रभातश्च
महाभूतप्रमर्दनः॥ श्येनजिच्छिवदूतश्च प्रमथाःप्रीति
वर्द्धनाः ७९ कोटिकोटिशतैश्चैवभूतानांमातरस्सदा॥
व्यपोहंतुभयंपापंमहादेवप्रसादतः ८० शिवध्यानैक
सम्पन्नोहिमराडम्बुसन्निभः॥ कुन्देंदुसदृशाकारः कुम्भ
कुंदेन्दुभूषणः ८१ वडवानलशत्रुर्योवडवामुखभेदनः॥
चतुष्पादसमायुक्तःक्षीरोदइवपाण्डुरः ८२ रुद्रलोके
स्थितोनित्यं रुद्रैस्साद्धंगणेश्वरैः॥ वृषेन्द्रोविश्वधृग्देवो
विश्वस्यजगतःपिता८३ वृतोनन्दादिभिर्नित्यंमातृभिर्म
खमर्दनः॥शिवार्चनरतोनित्यंसमेपापंव्यपोहतु ८४गङ्गा
माताजगन्मातारुद्रलोकेव्यवस्थिता ॥ शिवभक्तातुया
नंदा सामेपापंव्यपोहतु ८५ भद्राभद्रपदादेवीशिवलो
केव्यवस्थिता॥ मातागवांमहाभागासामेपापंव्यपोहतु
८६ सुरभिस्सर्वतोभद्रा सर्वपापप्रणाशिनी॥ रुद्रपूजा
रतानित्यंसामेपापंव्यपोहतु ८७ सुशीलाशीलसम्पन्ना
श्रीप्रदाशिवभाविता॥ शिवलोकेस्थितानित्यंसामेपापं
व्यपोहतु ८८ वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञःसर्वकार्याभिचिंतकः॥
समस्तगुणसंपन्नःसर्वदेवेश्वरात्मजः ८९ ज्येष्ठःसर्वे
श्वरः सौम्योमहाविष्णुतनुःस्वयम् ॥ आर्यःसेनापतिः
साक्षाद्गहनोमखमर्दनः ९० ऐरावतगजारूढःकृष्णा
कुंचितमूर्द्धजः॥ कृष्णाङ्गोरक्तनयनःशशिपन्नगभूषणः
९१ भूतैःप्रेतैःपिशाचैश्चकूष्माण्डैश्चसमावृतः॥ शि
वार्चनरतःसाक्षात् समेपापंव्यपोहतु ९२ ब्रह्माणीचैव

माहेशी कौमारीवैष्णवीतथा ॥ वाराहीचैवमाहेन्द्रीचा
मुण्डाग्नेयिकातथा ९३ एतावैमातरःसर्वाःसर्वलोक
प्रपूजिताः ॥ योगिनीभिर्महापापं व्यपोहंतुसमाहिताः
९४ वीरभद्रोमहातेजा हिमकुन्देन्दुसन्निभः ॥ रुद्रस्य
तनयोरौद्रः शूलासक्तमहाकरः ९५ सहस्रबाहुःसर्वज्ञः
सर्वायुधधरःस्वयम् ॥ त्रेताग्निनयनोदेवस्त्रैलोक्याभय
दःप्रभुः ९६ मातॄणांरक्तकोनित्यंमहावृषभवाहनः ॥
त्रैलोक्यनमितःश्रीमाञ्छिवपादार्चनेरतः ९७ यज्ञस्य
चशिरश्छेत्ता पूष्णोदन्तविनाशनः ॥ वह्नेर्हस्तहरःसा
क्षाद्भगनेत्रनिपातनः ९८ पादांगुष्ठेनसोमाङ्गपेषकःप्र
भुसंज्ञकः ॥ उपेन्द्रेन्द्रार्यमादीनांदेवानामंगरक्षकः ९९
सरस्वत्यामहादेव्यानासिकोष्ठावकर्त्तनः ॥ गणेश्वरोयः
सेनानी समेपापंव्यपोहतु १०० ज्येष्ठावरिष्ठावरदा
वराभरणभूषिताः ॥ महालक्ष्मीजगन्माता सामेपापंव्य
पोहतु १०१ महामोहामहाभागा महाभूतगणैर्वृता ॥
शिवार्चनरतानित्यं सामेपापंव्यपोहतु १०२ लक्ष्मीःसर्व
गुणोपेतासर्वलक्षणसंयुता॥सर्वगासर्वदादेवी सामेपापं
व्यपोहतु १०३ सिंहारूढामहादेवीपार्वत्यास्तनयाव्यया॥
विष्णोर्निद्रामहामाया वैष्णवीसुरपूजिता १०४ त्रिनेत्रा
वरदादेवीमहिषासुरमर्दिनी ॥ शिवार्चनरतादुर्गासामे
पापंव्यपोहतु १०५ ब्रह्माण्डधारकारुद्राःसर्वलोकप्रपूजि
ताः ॥ सत्याश्चमानसाःसर्वे व्यपोहन्तुभयंमम १०६
भूताःप्रेताःपिशाचाश्चकूष्माण्डगणनायकाः ॥ कूष्मां
डकाश्चतेपापंव्यपोहंतुसमाहिताः १०७ इति ॥
सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो प्रति मास शिवपूजा

करके अन्त में इस स्तोत्रको पढ़े औ दण्डवत् प्रणाम करके पूजा समाप्त करै इस स्तोत्रको जो पढ़े अथवा सुनै वह सब पापों से छूट रुद्रलोक में निवास करै इस स्तोत्रके पाठ से धन, भोग, विद्या, विजय, पुत्र, स्त्री आदि सब अभीष्ट पदार्थ मिलते हैं और भी जो २ कामना होय सब बहुत शीघ्र सिद्ध होती हैं औ देवताओं की प्रीति होती है जिस रोगी के निमित्त इस स्तोत्रको पढ़े उसका रोग निवृत्त होय अकाल मृत्यु न होय सर्पादि दंश न करैं तीर्थ, दान,यज्ञ, व्रत आदि के पुण्यसे कोटिगुण पुण्य इस स्तोत्रके पाठसे मिलता है गोहत्या, ब्रह्महत्या, वीरहत्या, मातृहत्या, पितृहत्या, शरणागतघात, विश्वासघात औ कृतघ्नता आदि और भी बड़े २ पाप इस स्तोत्रके पाठमात्रसे निवृत्त होते हैं औ अन्त में शिवलोक मिलता है ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

शौनकादिक ऋषि कहते हैं कि हे सूतजी लिङ्गदान के प्रसंग में आप के मुख से सब पाप हरनेहारा व्यपोहनस्तव सुना अब आप व्रतोंका वर्णन कीजिये यह मुनि वचन सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो अति मङ्गलदायक व्रत जो नन्दी ने सनत्कुमार को कथन किये वेही हमने व्यासजी से श्रवण किये औ हम अब आपको सुनाते हैं दोनों पक्षकी अष्टमी औ चतुर्दशी को दिनमें उपवास करै औ सायंकाल शिवपूजन कर रात्रि को भोजनकरै एकवर्ष इसप्रकार व्रत करने

से सब यज्ञफलों को प्राप्तहोय शिवलोक को जाता है पर्वदिनों में उपवास कर शिवपूजन करै औ रात्रिको पृथ्वीपर अन्न आदि रखकर भोजन करै पात्रमें भोजन न करै तो एक दिनके व्रतसे तीन व्रतका फल पावै महीने की दोनों पञ्चमी औ दोनों प्रतिपदा को उपवास करै औ शिवपूजनकर रात्रिको केवल दुग्धपान करै तो अश्वमेध का फलपावै कृष्णाष्टमी से कृष्ण चतुर्दशी पर्यन्त नित्य रात्रिको भोजनकरै तो सब भोगों को भोग ब्रह्मलोक को जाय जो पुरुष एक वर्ष पर्यन्त प्रतिपर्व में अर्थात् अमावास्या औ पूर्णिमा को नक्त व्रतकरै औ ब्रह्मचारी जितक्रोध औ शिवजी के ध्यान में तत्पर रहै वर्ष के अन्त में ब्राह्मण भोजन कराय व्रत समाप्त करै वह अवश्य शिवलोक को जाय उपवास से अधिक पुण्य भिक्षा में औ भिक्षा से अधिक अयाचित अर्थात् विनामांगे जो मिलजाय उससे निर्वाह करने में औ अयाचितसे भी अधिक पुण्य नक्तव्रत अर्थात् व्रतकरके रात्रिको भोजनकरै तो होता है इसकारण नक्तव्रत सबसे उत्तम है पूर्वाह्नमें देवता भोजन करते हैं मध्याह्नमें ऋषि मध्याह्नके अनन्तर पितर औ सायंकाल के समय गुह्यक आदि भोजनकरते हैं इसलिये सबके भोजन समयको विताय नक्त भोजनकरना उत्तमहै हविष्य लघु अर्थात् हलका भोजन रात्रिको करै औ सत्य,शौच,दया, ब्रह्मचर्य,भूमिशयन औ अग्निहोत्र करै तब व्रतका पूर्ण फल प्राप्त होता है हे मुनीश्वरो अब हम प्रतिमास का व्रत कहते हैं जिसके करनेसे धर्म, अर्थ, काम औ मोक्ष

की प्राप्ति होय तथा सब पापभी निवृत्त होयँ जो पुरुष पौष मासमें सत्यवादी जितक्रोध होकर नित्य चावल गोधूम आदि हविष्य अन्न रात्रिके समय भोजन करै औ दोनों अष्टमियोंको उपवास करै औ भूमिपर सोवै पूर्णिमा के दिन घृत आदिसे शिवजी को स्नान कराय क्षीर, घृत, चावल आदि नैवेद्य लगावै औ शिष्टब्राह्मणों को उत्तम २ पदार्थ भोजनकरावै शांति पाठपढ़ै कपिल वर्णका गोमिथुन शिवजी को चढ़ावै वह अग्निलोकमें जाय दिव्यभोग भोगकर मुक्तिपावै जो पुरुष माघमास में जितेन्द्रिय होकर रहै औ रात्रिके समय घी खिचड़ी खाय दोनों चतुर्दशी को उपवास करै औ पूर्णिमाके दिन शिवजी को घृत कम्बल चढ़ावै औ कृष्ण गोमिथुन महादेवजी के अर्पण कर ब्राह्मण भोजन करावै वह यमलोक में जाय आनन्द से निवास करै फाल्गुन में श्यामाक घृत क्षीर आदि पदार्थ रात्रि के समय भोजनकरै चतुर्दशी औ अष्टमी को उपवासकर पूर्णिमा को भक्ति से शिवपूजनकर लालरंग का गोमिथुन चढ़ावै औ ब्राह्मण भोजन करावै वह चंद्रलोक पावै चैत्रमास में रात्रि के समय घृत दुग्ध औ भात खावै गोशाला में भूमि पर सोवै पौर्णमासी को शिवपूजनकर श्वेतवर्ण का गोमिथुन चढ़ावै औ ब्राह्मण भोजन करावै वह निर्ऋति लोकमें जावै इसीभांति वैशाख मासमें नक्तव्रतकरै औ पूर्णिमाको पंचगव्य पंचामृत आदि से शिवजीको स्नान करावै औ भक्ति से सब पूजाकर श्वेतवर्ण का गोमिथुन अर्पण करै औ ब्राह्मणों को प्रीति से भोजन

करावै वह अश्वमेध का फलपावे ज्येष्ठ मासमें घृत सहत औ लाल चावल रात्रिके समय भोजन कर आधीरात्रि पर्य्यंत गौ की सेवाकरै औ पूर्णमासी को शिवपूजाकर चरु निवेदन करै औ धूम्रवर्ण का गोमिथुन चढ़ाय ब्राह्मण भोजन करावै वह वायुलोक में निवास करै इसी भांति आषाढ़ मासमें भी नक्तव्रत करै औ रात्रिकोघृत शर्करा युक्त सत्तु औ दही दूध भोजनकरै पूर्णिमाके दिन घृत आदि से शिवलिंग को स्नानकराय विधि पूर्वक पूजाकरै औ गौरवर्ण का गोमिथुन चढ़ाय वेदवेत्ता ब्राह्मणों को श्रद्धासे भोजन करावै तो वरुणलोक पावै श्रावणमें नक्तव्रत करके दूध औ साठी चावलों का भात रात्रिके समय भोजन करै औ पूर्णमासी को घृत आदिसे शिवलिंगको स्नानकराय पूजाकरै औ चित्रवर्ण तथा श्वेत पादों करके युक्त गोमिथुन निवेदन कर ब्राह्मण भोजन करावै वह वायुलोक में जाय औ वायुकी भांति सर्वगामी होजाय भाद्रपद में नक्तव्रत कर हवन शेषरात्रि के समय भोजन करै औ दिनमें वृक्षके नीचे रहै पूर्णिमा को शिवपूजनकर नीलस्कन्ध वृष औ गो चढ़ाय ब्राह्मणों को भोजन कराय यक्षलोक पावै औ यक्षों का राजाहोय आश्विनमें नक्तव्रत कर घृत सहित भोजन करै औ पूर्णिमाको शिवपूजनकर नीलवर्णकी छातीवाला ऊंचा वृषभ औ गौ महादेव जी को चढ़ाय ब्राह्मणोंको भोजन करावै तो ईशानलोक पावै कार्त्तिक में नक्तव्रत कर रात्रिको दूधभात औ घृत भोजन करै पूर्णिमा को शिवपूजनकर चरु निवेदनकर कपिल वर्ण

गोमिथुन चढ़ावै औ भक्ति से ब्राह्मणों को भोजन करावै तो सूर्य्यलोक में निवास करै मार्गशीर्ष में नक्त व्रत कर रात्रि के समय घृत दुग्ध सहित यवान्न अर्थात् जौ खाय औ पूर्णिमा को शिवपूजनकर पाण्डुरवर्ण का गोमिथुन चढ़ाय वेदवेत्ता औ दरिद्र ब्राह्मणोंको भोजन करावै तो निस्सन्देह सोमलोक में निवास करै अहिंसा, सत्य, स्तेय अर्थात् चोरी न करना, ब्रह्मचर्य्य, दया, क्षमा, तीनकालस्नान, अग्निहोत्र, भूशय्या, नक्तभोजन, दोनों पक्षों की चतुर्दशी औ अष्टमी को उपवास यह प्रतिमास साधारण शिवव्रत की विधि है चाहे तो इस विधि से एकवर्ष व्रतकरै अथवा प्रतिमासकी जो भिन्न भिन्न विधि कही है उस रीति से व्रत करै वह ज्ञानयुक्त योग को प्राप्त होय शिवसायुज्य पावै ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो स्त्री पुरुषों के कल्याण के लिये शिवजीका कहा उमा महेश्वर व्रत हम वर्णन करते हैं आप श्रवणकीजिये एकवर्ष पर्यंत पूर्णिमा, अमावास्या, चतुर्दशी औ अष्टमीको नक्तव्रतकर रात्रि को हविष्य भोजन करै औ शिवपूजा करै इस प्रकार एकवर्ष व्रतकर सुवर्णकी अथवा चांदी की उमा महेश्वरकी प्रतिमा बनवाय विधिपूर्वक प्रतिष्ठा करै औ यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराय दक्षिणा देवै औ मूर्त्तिको रथ में बैठाय छत्र चामर आदि लगाय शिवालय में लेजावे औ वहां मूर्त्ति स्थापन कर वर्ष भरका

व्रत निवेदनकरै वह पुरुष शिवसायुज्य पावै और स्त्री भगवती के समीप जावै कन्या अथवा विधवा स्त्री ब्रह्मचर्य से अष्टमी औ चतुर्दशी को एकवर्ष उपवास करै औ वर्ष के अंत में पूर्वरीति से, प्रतिमा बनाय शिवालय में स्थापन कर ब्राह्मणों को भोजन करावै औ व्रत निवेदन करै वह स्त्री पार्वती जी के समीप निवासकरै जो स्त्री केवल चतुर्दशी को वर्षभर व्रतकरै और पूर्व रीति से चाहे जिस पदार्थ की मूर्त्ति बनाय पूजाकरै औ ब्राह्मण भोजनकराय व्रत निवेदनकरै वह भी देवी लोक में जाय जो नारी अमावास्या के दिन वर्ष पर्य्यन्त निराहार व्रतकरै औ वर्षके अन्तमें शिवलिंगको स्नान कराय भक्तिसे श्वेतवर्ण के हज़ार कमल चढ़ावै औ एक चांदी का कमल जिसकी कर्णिका सुवर्णकी हो महादेव जी को निवेदनकरै औ एक त्रिशूल भी चढ़ावै वह सब ज्ञात अज्ञात भ्रूणहत्या आदि पापों को उसी शूल से भेदन करै औ पार्वतीजी के सायुज्यको प्राप्त होय औ पुरुष इस व्रतको करै तो रुद्रलोक पावै एकवर्ष पर्यंत अमावास्या औ पूर्णिमाको जो स्त्री अथवा पुरुष उपवास करै औ वर्षके अन्त में सब गन्धोंकरके युक्त प्रतिमा निवेदनकरै वह निश्चय भवानीका सायुज्य पावै परन्तु स्त्री व्रत, उपवास, जप, तप, दान आदि सबकर्म पतिकी आज्ञा से करै क्योंकि स्त्रीको कभी स्वातंत्र्य नहीं है कार्त्तिक की पूर्णिमाको क्षमा अहिंसा ब्रह्मचर्य आदि गुणोंसे युक्त होकर एक भक्त व्रतकरै अर्थात् एक वार भोजन करै औ एक भार काले तिल दानकर ज्ञा-

ह्मण को देवै घृत, गुड़, सहित भात शिवजी को नैवेद्य लगावै और भी यथाशक्ति ब्राह्मण को दान देवै वह नारी पार्वती जी के समीप निवास करै क्षमा,सत्य,दया, दान, शौच, इन्द्रिय निग्रह औ शिवपूजन ये सब व्रतों में आवश्यक हैं अब नन्दी का कथन किया हुआ मार्ग-शीर्ष से कार्त्तिक पर्यंत प्रतिमास का विधान कहते हैं मार्गशीर्ष की पूर्णिमासी को एक बहुत उत्तम ऊंचा श्वेतवर्ण का बैल अलंकृत कर शिव जी को जो स्त्री चढ़ावै वह पार्वतीजी के समीप जावै पौषमासमें पूर्वोक्त सब विधि करके त्रिशूल अर्पण करै माघमें सब लक्षणों करके युक्त रथ परमेश्वर की पूजाकरके अर्पणकरै औ ब्राह्मण भोजन करावै फाल्गुन में सुवर्ण चांदी अथवा ताम्रकी मूर्त्ति बनाय विधिपूर्वक शिवालय में स्थापन करै औ ब्राह्मण भोजनकरावै चैत्रमें शिव पार्वती औ स्कंद की मूर्त्ति बनवाय विधि से स्थापन करै वैशाख में चांदी का कैलासपर्वत बनाय उसमें रत्नजटित शिवा-लय निर्माणकर शिव, पार्वती, गणेश, स्कंद औ गणों को विधि से स्थापनकर ब्राह्मण भोजन करावै औ उस कैलासको शिवालय में रक्खै ज्येष्ठमें लिंगमूर्त्ति शिव ताम्र आदि के बनावै औ दोनों ओर हाथजोड़े खड़े ब्रह्मा विष्णु बनावै अथवा लिंगके ऊपर नीचे हंस औ वराहका रूप बनाय विधिसे प्रतिष्ठाकरै औ ब्राह्मण भो-जन करावै और उस मूर्त्तिको शिवालयमें स्थापनकरै आषाढ़मासमें सुन्दर एक पक्का गृह बनाय उसमें सब भांतिके अन्न,सर्वरस ऊखल,मूसल आदि सब गृहस्थके

उपकरण दासी, दास, वस्त्र, भूषण, शय्या, पात्रआदि रख-
कर उसघरको चारोंओरसे उत्तम वस्त्र करके वेष्टित करै
औ शिवलिंग को घृत आदि से स्नान कराय सब उ-
पचारों से पूजाकर एक सहस्र ब्राह्मणों को भोजनक-
रावै औ वेदवेत्ता औ विद्या विनय करके सम्पन्न कु-
लीन एक ब्रह्मचारी ब्राह्मण को बुलाय भक्ति से उसकी
पूजाकर एक कुलीना सुशीला औ रूपवती कन्या से
उसका विवाह कराय वह घर उसको देवै औ क्षेत्र बाग
तथा गोमिथुन भी उस घरके साथ ब्राह्मण को अर्पण
करै वह गोलोक में जाय भवानी के समीप निवासकरै
औ भवानी के समान उस नारी का प्रभाव होय इस
भांति वहां एक कल्प पर्यंत आनंद कर भवानीमेंही
लीन होजाय श्रावण मासमें सब धातुओं करके युक्त
वितान, चित्रवर्ण की ध्वजाओं से भूषित तिलपर्वत
शिवजी के अर्पण करै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन
करावै वह भी पूर्वोक्त सबफल पावै इसीभांति भाद्रपद
में शालिपर्वत परमेश्वरको चढ़ावै औ ब्राह्मण भोजन
करावै, आश्विन में धान्यपर्वतबनाय सुवर्ण औ वस्त्र
सहित शिवजी को निवेदनकरै औ ब्राह्मण भोजन करावै
तो कैलास में जाय वह स्त्री पार्वतीजी के सन्निहित रहै
कार्त्तिक की पूर्णमासी को सम्पूर्ण धान्य सबबीज, सब
रस, धातु, रत्नआदिसे युक्त, चारशृंगोंकरके शोभित,
वितान, छत्र, ध्वजाआदि से भूषित, अनेक प्रकार के
शंख, वीणाआदि वाद्य, नृत्यगीत, वेदघोष औ भांति२
के मंगलध्वनिकरके मंडित अति उत्तम मेरुपर्वत बनावै

उसके ऊपर मध्य में धातुके शिव स्थापन करे, दक्षिण में चतुर्मुख ब्रह्मा, उत्तरमें नारायण औ आठोंदिशाओं में इंद्रादि लोकपाल स्थापन कर उनकी विधि से पूजन करे शिवजी की पूजाकर उनके दक्षिण हस्त में त्रिशूल औ वाम हस्त में पाश, पार्वतीजी के हस्तमें सुवर्णका कमल विष्णुजी के चारों करों में शंख, चक्र, गदा औ पद्म ब्रह्माजीकेहाथोंमें माला औ कमंडलु, इन्द्रकोवज्र, अग्नि को बर्छी, यमको दंड, निर्ऋति को खड्ग, वरुण को नागपाश, वायुको यष्टि अर्थात् लाठी, कुबेर को गदा औ ईशानदेव के हाथ में परशु देवे इसभांति शिवजीकी तथा और देवताओं की विस्तार से पूजाकर ब्राह्मण भोजन करावे औ शिवजीको महाचरु निवेदन कर वह पर्वत शिवजी के अर्पण करे इस महामेरु व्रत को जो स्त्री भक्ति से विधि पूर्वक करे वह मेरुपर्वत में जाय भगवती का सायुज्यपावे औ कार्त्तिकी पूर्णिमासीकोही सब भूषणोंसे भूषित सुवर्ण आदिकी पार्वती देवी बनावे औ सब लक्षणों करके युक्त शिवजी की मूर्त्ति बनावै औ उनके आगे स्रुवा हाथ में लिये हवन करते हुये ब्रह्माजी सब भूषणों से भूषित कन्यादान करनेहारे नारायण लोकपाल औ सिद्ध विद्याधर आदि विधिसे बनाय स्थापन कर शिवालय में अपना व्रत उनके अर्पण करें वह स्त्री भगवती की देह में लीन होकर शिव जीके साथ आनंद से विहारकरे हे मुनीश्वरो मार्गशीर्ष से लेकर कार्त्तिक पर्यंत शिवजी का कहा यह व्रत स्त्री पुरुषों के कल्याण के अर्थ हमने कहा है इस व्रत को

प्रतिमास करै अथवा एकभक्त व्रतही करै वह नारी देवीलोक में औ पुरुष शिवलोक में निवासकरै यह शिवजी की आज्ञा है इस में कुछ संदेह नहीं ॥

पचासीवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो सब व्रतों में शिवपूजन कर विधिसे पंचाक्षरी विद्याका जपकरै तबहीं व्रत सफल होताहै यह सूतजी का वचन सुन ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी पंचाक्षरी विद्या कौनहै उसमें क्या प्रभावहै औ जप का क्या विधानहै यह हमारी श्रवण करने की इच्छा है आप वर्णनकरैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो पार्वतीजी के प्रति शिवजीने जैसा कथन कियाहै वह हम आपको सुनाते हैं एकसमय कैलासपर्वत में श्रीपार्वतीजी महादेवजी के प्रति कहती भईं कि हे देवदेव हे महेश्वर मैं पंचाक्षर मंत्रका माहात्म्य सुना चाहतीहूं आप कृपाकर मुझे सुनावैं यह पार्वतीजी की विनती सुन श्रीमहादेव जी कहने लगे कि हे पार्वति पंचाक्षर का पूरामाहात्म्य तो कई सौ करोड़ वर्षों में भी नहीं कथन करसक्ते हैं परंतु संक्षेप से हम सुनाते हैं प्रलयकाल में स्थावर, जंगम, देवता, असुर, नाग, राक्षस आदि सब नष्ट होजाते हैं औ प्रकृतिरूप तुमभी लीन होजातीहो तब हम एकाकी रहते हैं कोई दूसरा अवशिष्ट नहीं रहता उससमय वेद औ शास्त्र हमारी शक्ति करके पालन करेहुये पंचाक्षर मंत्र में निवासकरते हैं फिर जब हम दोरूप करते हैं तब हमारी प्रकृतिही

मायामय शरीर धार नारायण रूप से समुद्र में शयन करतीहैं उनके नाभि कमलसे पंचमुख ब्रह्मा उत्पन्न भये औ अपनेको सृष्टिकरनेमें असमर्थदेख बड़े तेजस्वी मानस दशपुत्र उत्पन्नकिये औ हमसे ब्रह्माजीने प्रार्थना करी कि महाराज इन मेरे पुत्रों को आप सृष्टि करने की सामर्थ्य देवें यह ब्रह्माजी से सुन उनके हितके लिये हमने अपने पांच मुखों से पांच अक्षर उच्चारण किये उन वर्णोंको ब्रह्माजी ने भी अपने पांच मुखों से ग्रहण किया औ वाच्य वाचक भावकरके परमेश्वर को जाना अर्थात् इन पांच अक्षरोंकरके त्रैलोक्यपूजित शिववाच्यहै औ यह पंचाक्षरमंत्र शिवका वाचकहै इसप्रकार उस मन्त्रको तथा उसकी विधि को जान बहुत काल जप कर सिद्धि पाय जगत्के हितके अर्थ अपने पुत्रों कोभी ब्रह्माजी उस पञ्चाक्षर मन्त्रका उपदेश करते भये वे सबभी ब्रह्माजीसे उस उत्तम मन्त्रको पाय हमारे आराधन में प्रवृत्त भये तप करते करते बहुतकाल में हम प्रसन्न भये औ दिव्य ज्ञान तथा अणिमा आदि आठ सिद्धि और भांति २ के वर उनको दिये हे पार्वती ब्रह्माजीके मानस पुत्र मेरुपर्वत के मुंजवान् नाम शिखर में जो हमको अतिप्रिय है तप करते भये दिव्य हजारवर्ष पर्यंत सृष्टि रचनेकी इच्छासे केवल वायु भक्षण करके बहुत उग्रतप उनने किया तब उनकी दृढ़भक्ति देख हम प्रत्यक्ष भये और लोक हितके लिये पञ्चाक्षर मन्त्रका ऋषि, छन्द, देवता, शक्ति, बीज, षडंगन्यास, दिग्बन्ध और विनियोग उनको उपदेश किया वे ऋषिभी मन्त्र

उत्तम साधनहै अब हम, इस मन्त्रके ऋषि, छंद, देवता, वीज, शक्ति, स्वर, वर्ण औ प्रत्येक अक्षरका स्थान कहते हैं वामदेव ऋषिहैं पंक्ति छंदहै औ साक्षात् हम इस मंत्र के देवता हैं पञ्चभूतात्मक नकारआदि पांचवर्ण वीजहैं सर्वव्यापी औ अव्यय प्रणवभी वीजहै औ तुम इस मंत्र की शक्तिहो आपके प्रणव औ हमारे प्रणव में कुछभेद है तुम्हारा प्रणव सबमंत्रों का शक्तिभूतहै अकार उकार औ मकार हमारे प्रणवमें स्थित हैं उकार मकार औ अकार क्रमकरके हैं तुम्हारा प्रणव त्रिमात्र प्लुत औ उत्तम है ओंकार का उदात्तस्वर ब्रह्माऋषि, श्वेतशरीर, देवी गायत्री छन्द, परमात्मा देवताहै पहिला, दूसरा, चौथा वर्ण उदात्त पांचवां स्वरित औ तीसरा निषधहै नकारका पीतवर्ण पूर्वमुख स्थान इन्द्र देवता गायत्री छंद गौतम ऋषि है मकारका कृष्णवर्ण दक्षिणमुख स्थान अनुष्टुप्छंद अत्रिऋषि औ रुद्रदेवता है शिकार का धूम्रवर्ण पश्चिम मुख स्थान विश्वामित्रऋषि त्रिष्टुप्छंद विष्णुदेवता हैं वाकारका सुवर्णवर्ण उत्तरमुख स्थान बृहती छंद अंगिराऋषि ब्रह्मा देवता हैं यकार का रक्तवर्ण ऊर्द्धमुख स्थान विराट्छंद भरद्वाजऋषि औ स्कंद देवता है अब सब पाप हरनेहारा औ सिद्धिदायक इस मंत्रका न्यास कहते हैं न्यास तीनप्रकारकाहै उत्पत्ति स्थिति औ संहार उत्पत्तिन्यास ब्रह्मचारियोंको करना योग्यहै स्थिति गृहस्थोंको, औ संहार न्यास के अधिकारी संन्यासी हैं औ अंगन्यास करन्यास तथा देहन्यास के भेदसे भी न्यास तीनप्रकार

का है प्रथम करन्यास पीछे देहन्यास औ उसके अनं-तर अंगन्यास करै शिर से पादपर्यंत उत्पत्ति न्यास पादसे शिरपर्यंत संहारन्यास औ हृदय मुख औ कंठ में न्यास स्थिति न्यास कहाता है ये तीनों न्यास क्रम से ब्रह्मचारी यती औ गृहस्थोंको कर्त्तव्यहैं शिर सहित देहको मूलमंत्र पढ़कर स्पर्श करै यह देहन्यास है देह न्यास सबकेलिये तुल्यहीहै दहिने अंगुष्ठसे वाम अंगुष्ठ पर्यंत सृष्टिन्यास है इससे विपरीत संहारन्यास है अं-गुष्ठ से कनिष्ठा पर्यंत न्यास दोनों हाथों में करना स्थितिन्यास है गृहस्थों को यह भोग मोक्ष देनेहाराहै करन्यास करके देहन्यास करै औ पीछे अंगन्यासकरै यह साधारणविधि है मंत्रको ओंकार से पुटित करके सब अंगोंमें औ दोनों हाथोंकी दशअंगुलियोंमें न्यास करै हाथ पांव धोय आचमन कर पूर्वमुख अथवा उ-त्तर मुख बैठ एकाग्र चित्तहो न्यास करै पीछे ऋषि, छंद, देवता, बीज, शक्ति, परमात्मा औ गुरुका स्मरण करै मंत्रकरके दोनों हाथ संमार्जन कर हाथों के तल में प्रणवका न्यास करै अंगुलियों के आदि अंत औ मध्यम पर्वोंमें सबिंदुबीजोंका न्यास करै उत्पत्ति आदि तीनि क्रमसे आश्रमके अनुसार न्यासकरै फिर प्रणव संपुटित मंत्र पढ़कर दोनों हाथों से पादतल से लेकर शिरपर्यंत देहको स्पर्शकरै मस्तक, मुख, कंठ, हृदय, गुह्य औ पादोंमें मंत्र वर्णोंका न्यासकरै यह सृष्टिन्यास है पाद, गुह्य, हृदय, कण्ठ, मुख औ मस्तक में न्यास करै यह संहार न्यासहै हृदय, गुह्य, पाद, मस्तक, मुख

औ कण्ठ में न्यासकरे यह स्थिति न्यास है इसभांति न्यास करके नकारादि पांच वर्णोंकरके अपने पांचमुख कल्पना करे चारोंदिशा में चार औ एकमुख ऊपर कल्पना करे फिर षडंग न्यासकरे हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र औ अस्त्र इन स्थानों में मंत्रके छवर्णों का न्यासकरे औ वर्णोंके अंतमें क्रमसे नमः, स्वाहा, वषट्, हुं बौषट् औफट् ये शब्द लगायलेवे इसप्रकार न्यासकर दिग्बंधन करे गणेश मातृका दुर्गा औ क्षेत्रपाल चारों दिशा औ कोणों के स्वामी हैं अंगुष्ठ औ तर्जनी से चुटकी बजाय रक्षध्वम् यह कहकर उनको प्रणाम करे कण्ठ,मध्य अंगुष्ठ औ तर्जनी आदि अंगुलियों में अंगुष्ठ करके न्यास करे यह न्यास सब पाप हरनेहारा सिद्धि-दायक औ सर्व रक्षाकर हमने कहा है इस न्यासके कर-ने से शिवजीके तुल्य वह मनुष्य होजाता है औ जन्म जन्मांतर के सब पाप कट जाते हैं इसप्रकार न्यास करने से शुद्ध देह होकर गुरु से प्राप्त पंचाक्षर मंत्रको जपे अब मंत्र का सफल निष्फल होना कहते हैं गुरू-पदेश से विना क्रियाहीन श्रद्धाहीन मन लगे विना दू-सरे की आज्ञा से दक्षिणाहीन औ सदा जप कियाहुआ निष्फल होता है गुरूपदिष्ट क्रियायुक्त श्रद्धायुक्त मन लगायके दक्षिणायुक्त औ नियत कालमें किया जप स-फल है मंत्रके तत्त्वार्थ को जाननेहारे ज्ञानी गुणी ध्यान योग में तत्पर औ ब्राह्मण गुरुके समीपजाय शुद्ध भा-वना से मन वचन कर्मकरके औ धन से शिष्य गुरु को प्रसन्न करे औ जो सामर्थ्य होय तो हाथी, घोड़े,

रथ, रत्न, क्षेत्र, घर, भूषण, वस्त्र, अन्न औ भांति २ की सामग्री गुरुके अर्पण करे जो सिद्धि चाहे तो वित्तशाठ्य अर्थात् कृपणता न करै औ पीछे आत्मा को भी गुरुके अर्पण करदे इसप्रकार निष्कपट हो गुरु को प्रसन्न कर उससे मंत्र ग्रहण करे गुरु भी अहंकार रहित शुश्रूषा करनेहारा आचारनिष्ठ उपवास करने में तत्पर औ कुलीन शिष्य को पाय वर्षभर उसकी परीक्षा कर उसको स्नान कराय ब्राह्मणों की पूजाकर उत्तम मुहूर्त में समुद्र, नदी आदिके तटपर गोष्ठ देवालय, घर अथवा और किसी पवित्र स्थान में शिष्य के ऊपर अनुग्रह कर मंत्रका उच्चारण करे औ शिष्य से भी उच्चारण करावे इस भांति मंत्रोपदेश कर शिवमस्तु, शुभमस्तु, शोभनोस्तु, प्रियोस्तु इनका उच्चारण करे शिष्य भी इसप्रकार मंत्र औ शिवज्ञान पाय संकल्प पूर्वक पुरश्चरण करे औ पुरश्चरणके अनन्तर जबतक जीवै नित्य अष्टोत्तर सहस्र जप करके भोजन करे वह अवश्य सद्गति पावे पुरश्चरण के समय मंत्रके वर्णों से चौगुना लक्ष जपकरै रात्रिके समय भोजन करे औ सब प्रकारके नियमसे रहे जो पुरुष सिद्धि चाहे वह पुरश्चरण करे अथवा नित्य जपका नियम करलेवै परंतु जो पुरुष पुरश्चरण कर नित्य जपका नियम करे वह सब से उत्तम है औ सबप्रकार की सिद्धि पाता है अच्छा आसन बांध पूर्वमुख अथवा उत्तर मुख बैठ एकाग्र चित्तहो मौन से जपकरै जपके आदि अंत में प्राणायाम करे औ अन्त में अष्टोत्तरशत बीज का जपकरै

श्वास रोककर चालीस बार पंचाक्षर मंत्रका उच्चारण करै यह प्राणायाम कहाता है प्राणायाम से सब पाप क्षय होते हैं इंद्रियों का निग्रह होता है इसलिये प्राणायाम अवश्य कर्त्तव्य है घर में जप का फल उतनाही होता है जितना जपकरै गोष्ठ में सौगुणा फल नदी के तटपर लाखगुणा समुद्र के तीरपर देवहृद अर्थात् सरोवर जो मनुष्योंका खोदा न हो उसके तीरपर पर्वत के ऊपर औ देवालय में जपका फल कोटिगुण होता है औ शिवजी के समीप बैठ जप करने से अनंत फल है शिव सूर्य गुरु गौ जल अथवा दीपके समीप बैठकर जप करना बहुत उत्तम है अंगुलीकरके जप संख्या करने से एकगुण रेखा से आठगुण जीयापोता की माला से दशगुण शंखमालासे शतगुण मूंगे की माला से सहस्रगुण स्फटिक माला करके दशसहस्रगुण मोती की माला करके लक्षगुण कमलबीज की माला से दश लक्षगुण सुवर्ण की माला से कोटिगुण औ कुशग्रंथि तथा रुद्राक्षकी माला से जपका फल अनंत होता है मोक्षके लिये पचीस दाने की माला पुष्टिके लिये सत्ताईस की धनकेलिये तीसकी अभिचार के अर्थ पचास की औ सब कार्यों के लिये अष्टोत्तरशत दानों की माला उत्तम होती है वशीकरण के लिये पूर्वाभिमुख अभिचार के लिये दक्षिण मुख धनके अर्थ पश्चिम मुख औ शांति के लिये उत्तराभिमुख बैठकर जप करनाचाहिये अंगुष्ठ मोक्ष देनेहारा है तर्जनी शत्रु नाशकरती है मध्यमा धन देती है अनामिका शांतिदायक है औ क-

निष्ठा अंगुली जप कर्म में रक्षणीय है अंगुष्ठको सबके साथ लगावे क्योंकि अंगुष्ठ लगाये विना जप निष्फल होताहै सब यज्ञोंमें जप यज्ञ उत्तमहै क्योंकि और सब यज्ञों में हिंसा होती है औ जप यज्ञ हिंसा रहितहै इसी से और सब यज्ञ दान तप आदि जप यज्ञ के षोड़शांश की भी तुल्यता नहीं करसकते यह सब माहात्म्य वाचिक जपका कहाहै उपांशु जपका फल इससे सौगुणा औ मानस जपका फल सहस्रगुणा है जो स्पष्टपद औ अक्षरों करके उदात्त अनुदात्त औ स्वरित अर्थात् उच्च नीच औ मध्यम स्वर करके मंत्र को उच्चारण करता हुआ जपकरै वह वाचिक जप कहाता है धीरे २ मंत्र को उच्चारण करे जिसमें थोड़े २ ओष्ठ हिलैं औ दूसरे के कर्ण गोचर भी यत्किंचित् होय वह उपांशु जप होता है मनमें ही मंत्रके वर्णों का उच्चारणकरै औ बुद्धि करके मंत्रार्थ का चिंतन करता जाय वह मानसजप है वाचिक जपसे उपांशु औ उपांशुसे मानस जप उत्तम है जप करके स्तुति करने से देवता प्रसन्न होते हैं औ भोग मोक्षदेते हैं यक्ष,राक्षस, पिशाच, ग्रह आदि भयभीत होकर जप करनेहारे से दूर रहते हैं समीप नहीं आते अनेक जन्मों में किये हुये पाप जपकरके दूर होते हैं जपसे भोग मोक्ष मिलते हैं जप से पुरुष मृत्यु को जीतते हैं इसप्रकार जपका प्रभाव जान सदाचार में तत्पर हो निरंतर जपकरै तो अवश्य कल्याण पावै अब हम सदाचार कहते हैं क्योंकि आचारहीन पुरुष के सब साधन निष्फल होते हैं परमधर्म परमतप परा-

विद्या औ परमगति आचारही है आचारयुक्त पुरुषों को कहीं भय नहीं होता औ आचारहीन को सर्वत्र भय है सदाचार के सेवन से पुरुष ऋषि औ देवता बन-जाते हैं औ आचार का त्याग करनेहारे कुयोनि में प-ड़ते हैं आचारहीन पुरुषकी लोकमें निन्दा होती है इसकारण अपना कल्याण चाहनेवाले पुरुष को अ-वश्य आचारनिष्ठ होना चाहिये दुराचार बहुत अ-पवित्र अतिपापी औ ज्ञानदूषक पुरुष भी कदाचित् वर्ण आश्रमों के धर्म में प्रवृत्त होय औ आचार में रहै हे पार्वती वह भी हमकोप्रिय है फिर उत्तम पुरुष आ-चारनिष्ठ होय वह तो हमारा अति प्रेम पात्र होगा जो पुरुष अपने विहित कर्म को करै वह हमको प्रिय है संध्या न करने से ब्राह्मण का ब्राह्मणपना जाता रै-हता है असत्य कभी न बोले औ सत्य का त्याग न करै सत्य ब्रह्म है औ असत्य ब्रह्मदूषण है असत्य, कठोर वाक्य, शठता औ पैशून्य अर्थात् चुगली इन से सदा बचै औ परस्त्री, परायाधन, तथा हिंसा इनको मन, वचन, कर्म से त्यागदेवै शूद्रका अन्न, बासीअन्न, देव-ताके नैवेद्य का अन्न, श्राद्धका अन्न, गणान्न अर्थात् जिस अन्न के स्वामी बहुत होयँ, समुदायान्न अर्थात् जो अन्न बहुतों के लिये बनाया होय औ राजाका अन्न कभी न खाय अन्नशुद्धिसेही अंतःकरण की शुद्धिहोती है जल औ मृत्तिका से अंतःकरण शुद्ध नहीं होता अंतःकरण शुद्धि से सिद्धि होती है इसलिये अन्नशुद्धि अवश्य चाहिये जिसभांति भुनेहुये बीज अंकुर उत्पन्न करने

में समर्थ नहीं होते इसीप्रकार प्रतिग्रह से दग्ध ब्रह्म-वादी ब्राह्मण भी सब कर्मों में असमर्थ होजातेहैं राज-प्रतिग्रह विषके तुल्यहै इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य राज-प्रतिग्रह से बचतारहै औ श्वानमांसके तुल्य राजप्रति-ग्रहको अमेध्य समझै स्नान विनाकिये जप औ अग्नि-पूजा विना किये भोजन न करै पत्तेके ऊपर धरकर औ रात्रिके समय दीप विना भोजन न करै फूटे पात्र में रथ्या अर्थात् गली में पतितमनुष्यों के समीप शूद्रशेष औ बालकों के साथ भोजन न करै शुद्ध स्निग्ध अर्थात् घृत से परिप्लुत संस्कृत औ मंत्रसे अभिमंत्रित भोजन एकाग्रचित्त होकर मौनसेकरै औ यह ध्यान करै कि शिवजीही भोजन करते हैं केवल मुखसे पशुकी भांति जल न पीवै खड़ा होकर न पीवै अंजलिसे बायेंहाथसे औ दूसरे मनुष्य के हाथ से भी जल न पीवै औ शय्या के ऊपर बैठकर भी न पीवै बहेड़ा, आक, करंज, थूहर, स्तंभ, दीपक, मनुष्य औ और भी जीवोंकी छाया में न जाय अकेला मार्ग में न चलै भुजाओं से नदी में न तैरै कूप में न उतरै औ कूपको कूदै भी नहीं ऊंचे वृक्ष पर न चढ़े सूर्य, अग्नि, जल, देवता, गुरुके सम्मुख सम्पूर्ण शुभकर्म औ जपकरै उनके परोक्ष में न करै अग्निमें पैर न तपावै अग्निसे ऊंचेपर न बैठै औ अ-ग्निमें कुछ मल न गेरै हाथसे पैरको स्पर्श न करै पैरों से जलको ताड़न न करै जलमें शरीरका मल न त्याग करै जल के किनारे बैठ शरीरका सबमल उतार स्नान करै नख, केश स्नान का औ वस्त्रप्रक्षालन का जल

कभी स्पर्श न करै औ और भी अशुद्ध पदार्थ का स्पर्श न करै अज अर्थात् वकरा, श्वान, गधा, ऊंट, मार्जार अर्थात् बिल्ली मार्जनी औ मार्जनी की धूलिका स्पर्श करने से विष्णु भी लक्ष्मीहीन होजायँ और की तो क्या कथाहै इसलिये इनका स्पर्श न करै मार्जारको जो घर में रक्खै वह चाण्डालके तुल्य होताहै मार्जार के समीप जो ब्राह्मण भोजन करावै वह भी अपवित्रहोता है शूर्प अर्थात् छाजकापवन मुखकापवन औस्फिग्वात अर्थात् कटि का पवन स्पर्श होने से सुकृतका नाशहोता है पगड़ी बांधे कंचुक अर्थात् अंगा पहिने केशखोले नग्न होकर मल करके आवृत अपवित्र शरीर औ प्रलाप अर्थात् बातचीत करताहुआ जप न करै क्रोध, मद, क्षुधा, आलस्य, जृंभा अर्थात् उवासी लेना निष्ठीवन श्वान औ नीचका दर्शन निद्रा औ प्रलाप ये सब जप के शत्रु हैं जो जपके समय इनमें से कोई बातहोजाय तो सूर्यका दर्शन करले औ प्राणायाम तथा आचमन करके जपकरै सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र औ तारा ये ज्योति हैं इनके दर्शनसे पाप निवृत्त होते हैं पांवपसारकर कुक्कुटासन से बैठकर आसन विना सोयेहुये रथ्या में शूद्रके समीप और खाटपर बैठकर जप न करै कुशका आसन व्याघ्रचर्म, काष्ठका पट्टा, तालकापत्र, वस्त्र अथवा रुई से भरा अति कोमल आसन बिछाय उसके ऊपर बैठ मंत्रार्थको चिंतन करता हुआ जपकरै औ तीनकाल गुरुकी पूजाकरै जो गुरु वह शिव जो शिव वही गुरुहै जैसे शिव वैसी विद्याजो विद्यावही गुरुहै इसलिये शिव विद्या

औ गुरु का तुल्यही फलहै सर्व देवमय सर्व शक्तिमय सगुण निर्गुण सब गुरुही है इसकारण कल्याण की इच्छावाला पुरुष गुरुकी आज्ञाको शिर पर धारण करै मन, वचन, कर्म से कभी आज्ञाका उल्लंघन न करै गुरुकी आज्ञाका पालन करनेहारा ज्ञान सम्पत्ति पाता है चलते,बैठते,सोते,खाते,पीते जो कर्म करै सब गुरुकी आज्ञासे करै औ उत्तम कर्म गुरुके सम्मुख करै देवता औ गुरुके आगे यथेष्ट आसन से न बैठे अर्थात् नम्रता से आसन विना बैठजाय गुरु साक्षात् देव औ गुरुका घर देवमन्दिर है पापियोंके संसर्ग से जिसभांति मनुष्यों को पाप लगता है इसीप्रकार आचार्यके संसर्ग से धर्म की प्राप्तिहोती है जैसे अग्निके संसर्ग से सुवर्णका मल दूर होता है ऐसेही गुरुके संगसे शिष्य का पाप निवृत्त होता है जिसभांति अग्निके समीप घृत गल जाता है इसीभांति गुरु के समीप पाप नष्ट होजाता है अग्नि जैसे काष्ठ को दग्ध करदेता है ऐसेही प्रसन्न होकर गुरु भी पातक को दग्ध करदेता है गुरु प्रसन्न होने से ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवता मुनि, सब अनुग्रह करते हैं मन वचन कर्म करके कभी गुरु को क्रुद्ध न करै गुरुके क्रोधसे आयुष, लक्ष्मी, ज्ञान औ सब सत्कर्म दग्ध होजातेहैं औ जप,तप,यज्ञ,दान आदि सब निष्फल होतेहैं गुरुसे विरुद्ध वचन कभी न बोले जो प्रमाद से बोल उठै तो रौरव नरकको जाय चित्त वित्त अर्थात् धन, तन, मन औ वचन करके कभी गुरुके वचन को अन्यथा न करै गुरुका एकदोष कथन करै तो वह हज़ार

दोषोंका पात्र होता है औ गुरुके गुणकीर्त्तनसे शिष्य भी गुणोंकी खानि होजाताहै कहे विनाकहे आगे पीछे सदा मन वचन कर्म करके गुरुका हितकरै औ अहित करनेहारा अधोगतिको प्राप्तहोताहै इसकारण सर्वदा गुरु उपास्य औ वन्दनीयहै इसप्रकारगुरुके हितमें तत्पर आचारवान् शिष्य मंत्रके विनियोग का अधिकारी है विनियोग न जानने से मंत्र दुर्वल होजाताहै अभीष्ट कार्य में मंत्रको लगा देना विनियोग कहाता है विनियोगसे इसलोक औ परलोकके फल प्राप्तहोतेहैं आयुष, आरोग्य, राज्य, ऐश्वर्य, विज्ञान, स्वर्ग औ मोक्ष सब विनियोग से मिलते हैं प्रोक्षण, अभिषेक, अघमर्षण आदि स्नान औ संध्या के समय ग्यारह बार मंत्र पढ़कर करै पर्वतके शिखरपर एकलक्ष औ वड़ी नदी के तटपर बैठ पवित्रहो दोलक्ष जपकरै दूर्वाके अंकुर तिल औ गुडूची अर्थात् गिलोय का दश हजार हवन करने से दीर्घ आयुष पावै अश्वत्थ वृक्ष को स्पर्शकर दोलक्ष जपै शनिवार के दिन हाथसे अश्वत्थ वृक्षको स्पर्शकर अष्टोत्तरशत मंत्र का जप करै तो अपमृत्यु निवारण होय सूर्य की ओर मुखकरके एकाग्रचित्त हो लक्ष जप करै औ नित्य आककी समिधों से अष्टोत्तरशत हवन करै तो रोग से छूटै सब व्याधि निवृत्ति करने के अर्थ पलाश समिधा का दशहजार हवन करै नित्य सूर्य के सम्मुख पवित्र जलको अष्टोत्तरशत बार अभिमंत्रणकर पानकरै तो एक मास में सब उदररोग दूर होयँ अन्न अथवा और भी खाने के पदार्थ ग्यारह बार

अभिमंत्रण कर भोजन करै पंचाक्षर मंत्रसे ग्यारहवार अभिमंत्रण करने से विष भी अमृतहोजाय पूर्वाह्न में एक लक्ष जप करै औ नित्य अष्टोत्तरशत हवन तथा सूर्य के सम्मुख उपस्थान करे तो आरोग्य होवै, नदी के जलसे घट भर उसको स्पर्शकर दशहज़ार जप करै औ पीछे उस जलसे स्नान करै तो सब रोग दूर होयँ पलाशकी अट्ठाईस समिध का नित्य हवनकरै औ अट्ठाईसवार अन्नको अभिमंत्रण कर भोजन करै तौ भी सदा आरोग्यरहे चंद्र सूर्यके ग्रहणमें समुद्रगामिनी नदी के तटपर बैठकर ग्रहण के स्पर्श से मोक्ष पर्यंत जपकरै इसप्रकार पुरश्चरण कर ब्राह्मी के रसको अष्टोत्तरसहस्र वार अभिमंत्रण कर पीवे तो सब शास्त्रको धारण करनेहारी बुद्धि पावै औ सरस्वती उस के जिह्वाग्र पर निवास करै ग्रह औ नक्षत्रों की पीड़ामें दशहज़ार जपकरै औ अष्टोत्तरसहस्र हवन करै तो ग्रह नक्षत्र पीड़ा दूर होय औ दुःस्वप्न देखकर दशहज़ार जप करै औ घृतसे अष्टोत्तरशत हवनकरै तो शांति होय ग्रहण के समय लिंगकी पूजाकर दशहज़ारजप एकाग्र चित्तहो पवित्रतासेकरैऔ जो अपनीकामनाहोय वहमांगे तो अवश्य उसका मनोरथ सिद्धहोय हाथी, घोड़े, गौ आदिके व्याधि होजाने पर एकमहीने पर्यंत दशहज़ार समिधा की आहुति देवे तो उनके रोगकी शांतिहोय औ पशुओं की वृद्धि भी होय उत्पात औ शत्रु पीड़ा, पलाश समिधा के दशहज़ार हवन करने से शांतहोते हैं अभिचार की बाधा में भी यही करे तो वह अभिचार करने

हारे को पीड़ा करै विभीतक की समिधाको अष्टोत्तरशत हवनकरै तो विद्वेषण होय रुधिर अथवा विषयुक्त रुधिर करके मंत्र के वर्णों को विपरीत उच्चारणकर हवनकरै तो अवश्य विद्वेषणहोजाय अब सबपाप दूरहोने के लिये प्रायश्चित्त कहते हैं पापशुद्धिहुये बिना सब क्रिया निष्फल होती है औ ज्ञानकी प्राप्ति भी नहींहोती इसकारण पापशोधन अवश्य करना चाहिये विद्या औ लक्ष्मी की शुद्धताके लिये हाथजोड़ हमाराध्यान करै औ ग्यारहबार अभिमंत्रित जलसे चारोंओर मार्जन करै अष्टोत्तरशत अभिमंत्रित जलसे पाप निवृत्ति के लिये स्नानकरै तो सब पाप दूर होयँ औ तीर्थ स्नान का फल पावै संध्यावंदन के विच्छेद होनेपर अष्टोत्तरशत मंत्रजपै ग्रामशूकर, चाण्डाल, दुर्जन, कुक्कुट, श्वान आदिका स्पर्श कियाहुआ अन्न भक्षण करके अष्टोत्तरशत जपकरै तो शुद्धहोय ब्रह्महत्या निवृत्त होनेकेलिये अयुत लक्ष जपकरै पातक निवृत्तिकेलिये इससे आधा औ उपपातक दूरहोने के अर्थ उससे भी आधाजपकरै और सब स्वल्पपाप दूरहोने के लिये पांच हज़ार जप करै परम गुप्त शिव बोधके प्रकाश करनेहारे आत्मबोध की प्राप्तिके लिये पांचलक्षजपकरै तो पांचों प्राण अपान आदि पवनों को जीतै फिर पांचलक्ष जपकरै तो पांच इन्द्रियों से जयपावै तीसरीवार एकाग्र चित्त हो पांचलक्ष जपकरैतो पांच विषयोंको जीतै चौथी वार पांचलक्ष जपने से पंच महाभूतों में विजयी होय चार लक्ष जपनेसे करण अर्थात् मन बुद्धि अहंकार और

चित्तको जीतै पचीस लक्ष जपकरै तो पचीस तत्त्वों से जयपावै आधीरातके समय निर्वात स्थानमें दशहजार जपकरै तो ब्रह्म सिद्धिपावै औ इसीभांति वायु औ ध्वनि से रहित स्थान में बैठ आधीरात्रि के समय लक्ष जप करै तो साक्षात् शिव पार्वती का दर्शनपावै औ वह अपने देहके प्रकाश से दीपकी भांति अंधकार निवृत्त करै औ उसके भीतर बाहिर प्रकाश होजाय अर्थात् अज्ञान निवृत्तहोय सब सम्पत्तिकी प्राप्तिके लिये नित्य दश सहस्र जपकरै बीज संपुटित मंत्रका एक कोटि जप करनेसे हमारा सायुज्यमिलताहै जिससे बढ़कर कोई भी फलनहीं हे पार्वति यहसब पञ्चाक्षरमंत्रका विधान हमने कहा इसको जो पढ़ै सुनै सुनावै अथवा देव औ पितृ कर्म में पढ़ै वह अपने पितरों समेत शिवलोक में वासकरै॥

छियासीवां अध्याय॥

इसप्रकार पञ्चाक्षर मंत्रका प्रभाव सुन अति मुदित हो शौनक आदि ऋषि पूछते भये कि हे सूतजी विरक्त पुरुषों के लिये जपसे भी ध्यानयज्ञ श्रेष्ठ है ऐसा दग्ध किल्विष अर्थात् निष्पाप ब्राह्मण कहते हैं इसकारण अब आप ध्यानयज्ञ कहैं यह सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो एक समय कालकूट विषको पानकर श्री पार्वतीजी सहित श्री शिवजी मेरुपर्वत की गुफामें स्थित थे उस समय सनंदन आदि सब मुनि महादेवजी के दर्शनको गये औ दर्शनकर स्तुति करनेलगे कि महाराज यह बड़ा भयंकर कालकूट विष आपने पानकर

इस संसार की रक्षाकरी औ आप नीलकण्ठ भये जो आप इस विषको न पान करते तो यह संसार इसकी अग्निसे भस्म होजाता यह मुनियों का वचन सुन हँसकर श्री महादेवजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो यह विष तो बहुत क्रूर नहीं है परन्तु संसार रूप विष बड़ा दारुण है उसका जो संहार करै वह प्रशंसाके योग्य है कालकूट तो नाममात्र का विषहै बड़ा भारी विष तो संसारहै इसलिये उसके संहारका उपाय करनाचाहिये अपने अधिकारके अनुसार संसार तामस औ राजस भेदकरके दो प्रकारका है संमूढ़चित्त पुरुषों के लिये भांति २ की इच्छा औ रागद्वेष करके युक्त यह अति दारुण संसार है औ उन पुरुषों के धर्म अधर्म भी राग द्वेषके आधीन हैं इसलिये अज्ञान करके युक्त औ असंक्षीण अर्थात् कभी क्षय नहीं होनेहारा तामस संसार मूढ़ पुरुषों के लिये है बुद्धिमान् पुरुषभी शास्त्रसे अप्रत्यक्ष स्वर्गादि को जान उनकी प्राप्तिके लिये धर्मके अनुष्ठानमें प्रवृत्त होते हैं यही राजसंसारहै परन्तु तामस औ राजस दोनोंही दुष्टहैं जो सब यत्नोंसे इनका त्याग करै वह विरक्त कहाताहै वेदका शिरोभाग औ ऋषियों को निष्कामकर्म का फल देनेहारा अध्यात्म शास्त्रही शास्त्रहै अज्ञानी पुरुष कहते हैं कि कर्म्मकी प्रवृत्ति भी श्रुति से होती है परन्तु वह श्रुति निष्काम कर्म को प्रतिपादन करती है अर्थात् श्रुति का कहा कर्म करै औ फल की इच्छा न करै सब जीवों के लिये संसार अज्ञान से है निष्कामकर्म करने से जीव की कला

अर्थात् अविद्या शुष्कहोती है औ अविद्या करके युक्त ज्ञान हीन जीव तीन प्रकार के हैं पाप करके नरक में वास करनेहारे पुण्य करके स्वर्ग में रहनेवाले औ तीसरे पुण्य औ पाप भी करनेहारे संसारीजीव हैं संसारीजीव उद्भिज, स्वेदज, अंडज औ जरायुज इन भेदों से चार प्रकार के हैं न संतान से न कर्म से औ न धन से मुक्तिहोय केवल त्याग से मुक्तिहोती है औ त्याग विना यह जीव अनेक योनियों में भटकता फिरता है अज्ञान के दोष से औ कर्मों के फल के अनुसार पट्कौशिक अर्थात् स्नायु, अस्थि, मज्जा, त्वचा, रुधिर औ मांस से वने हुये देह में प्राप्त होता है गर्भ में योनि के मार्ग से जन्म लेकर भूमिपर वाल्य अवस्था में यौवन में वुढ़ापे में औ मरण के समय अनेक प्रकार के दुःख यह जीव भोगता है विचार करने से स्त्री संसर्ग आदि सुख महादुःख का मूल है दुःखी पुरुषका एक दुःख दूसरा दुःख उत्पन्न होने से शांत होजाता है विषय वासना विषयोंका भोग करने से शांत नहीं होती घृत की आहुति देने से अग्नि की भांति अधिक दीप्तहोती है इसलिये विचार करके देखो तो धनके अर्जन से उपार्जित धनकी रक्षा से औ उसका व्यय करने से दुःख होता है सुख नहीं होता औ पिशाचलोक, राक्षसलोक, यक्षलोक, गन्धर्वलोक, चन्द्रलोक, प्राजापत्यलोक औ ब्रह्मलोक आदि में कहीं भी सुख नहीं क्योंकि एक तो इनका क्षय होता है दूसरा इनलोकों में न्यूनाधिक भाव होने से ईर्षा बहुत उत्पन्न होती है औ सबदुःखोंका मूल

ईर्षा है इसलिये धन आदि की तथा इनलोकों की इ-च्छाका त्यागही करना उचित है अष्टगुण पृथिवी का ऐश्वर्य, षोड़शगुण जलका, चौबीसगुणा तेजका, बत्तीस गुणा वायुका, चालीसगुणा आकाशका, अड़तालीस गुणा मानस, छप्पनगुणा अभिमानिक औ चौंसठ गुणा प्राकृत अर्थात् बुद्धिका ऐश्वर्य भी ब्रह्मवेत्ता योगियों को दुःख दायकही है विचार करने से गण औ गणों के स्वामी भी दुःखी हैं आदि, मध्य, अन्त में औ भूत, भविष्यत, वर्त्तमान में सब लोकों को दुःखही है दुष्ट देशों में भांति भांति के दुःख हैं परंतु अज्ञानी पुरुष व्यतीतहुये दुःखको स्मरण नहीं करते भूलजाते हैं क्षुधा रूप व्याधि के दूर करने से अन्न भी सुख का कारण नहीं जिस प्रकार और रोगों के औषध हैं इसभांति अन्नभी क्षुधा रोगका औषध है कुछ सुखका साधन नहीं शीत, उष्ण, वायु, वर्षा आदिकों से जीवोंको सदा दुःख ही होताहै परंतु मूर्ख इस बात को नहीं समझते पुण्य क्षय होजाने से स्वर्ग भी दुःखदायक है राग द्वेष आदि रोगों करके पीड़ित पुरुष पुण्य का क्षयहोने से छिन्नमूल वृक्ष की भांति स्वर्ग से भूमिपर गिरते हैं औ देवता होकर स्वर्ग से फिर भूमिपर गिरना बड़ाही कष्ट है नरक में सदा दुःख है वेदविहित कर्म के न करने से ब्रह्मचारियोंको भी दुःखहै जिसप्रकार मृत्युसे भयभीत मृगको कहीं चैन नहीं पड़ता इसीभांति ध्याननिष्ठ म-हात्मा यती संसार से भीत निद्रा को नहीं प्राप्त होता है कीट, पक्षी, पशु, मृग, हाथी, घोड़े आदि सबजीव दुःखी

हैं एक त्यागी सुखी हैं विमानों में चढ़नेवाले देवता स्थानके अभिमानी मनु आदिकभी दुःखीहैं राजा राक्षस आदि कोई सुखी नहीं देवता औ दैत्य परस्पर जीतने की इच्छा से सदा व्याकुल रहते हैं वर्ण औ आश्रम भी केवल परिश्रम देनेहारेही हैं आश्रम, वेद, यज्ञ, व्रत, सांख्य, बड़े उग्रतप औ भांति भांति के दानों करके भी आत्मा का बोध नहीं होता केवल ज्ञान से आत्मबोध होता है इसलिये सब रत्नों से पाशुपतव्रत में तत्पर होकर भस्म में शयन करे औ पंचार्थ ज्ञान में सम्पन्न शिवतत्त्व में समाहित रहे तो दैव औ कर्म के बंध को छेदन करनेहारे औ कैवल्य मुक्तिदायक ज्ञान को पुरुष प्राप्त हो सब दुःख के अंत को पहुँचता है पराविद्या अर्थात् अध्यात्म विद्या करके वेद्य को जानसक्ता है अ पराविद्या करके नहीं जानसक्ता दो विद्या हैं एक पर दूसरी अपरा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववे शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छंद औ ज्योतिष यह सब अपरा विद्या हैं औ अक्षर, अदृश्य, अग्राह्य, अगोत्र अवर्ण, अचक्षु, अश्रोत्र, अपाणिपाद, अजात, अभूत अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अरस, अगंध, अव्यय अप्रतिष्ठ, अज, अप्राण, अमनस्क, अस्निग्ध, अलो हित, अप्रमेय, अस्थूल, अदीर्घ, अह्रस्व, अपार, अनु ल्वण, अच्युत, अनपावृत्त, अद्वैत अनन्त अगोचर असंवृत्त नित्य सर्वव्यापी विभु महान् औ आनन्दमय आत्मा पराविद्या है इसके विना और किसी प्रकार से पराविद्या का वर्णन नहीं करसक्ते परमार्थ में परा अपरा

भी नहीं हैं सब अविद्या की कल्पना है सब जगत् में मैं हूं औ सब जगत् मुझ में है मेरे से उत्पन्न होता है मेरे में स्थित है औ मेरे विषे ही यह जगत् लीन होजाता है मेरे विना जगत् में कोई दूसरा पदार्थ नहीं है सत् असत् को एकाग्रचित्त होकर आत्मा में देखै तो बाहिर कोई पदार्थ देखने के योग्य नहीं रहता अधोमुख करके नाभि से एक वितस्ति ऊपर हृदयकमल है वही इस विश्व का बड़ा भारी स्थान है उस हृदयकमल का कन्द अर्थात् मूल धर्म्म है ज्ञान अतिसुन्दर नाल है अणिमादि आठ ऐश्वर्य्य दल वैराग्य कर्णिका औ दिशा उस के छिद्र हैं जिनमें प्राण आदि वायु स्थित हैं प्राण आदि वायु करके संयुक्त जीव बहुतप्रकारसे देखता है प्रत्येक शरीर में प्राण को धारण करनेहारी दशनाड़ी हैं औ संपूर्ण शरीर में छोटी बड़ी सब नाड़ी बहत्तर हज़ार हैं जब जीव इंद्रियों में स्थित होय तब जाग्रत अवस्थामें है कंठ में जीव होय तो स्वप्नावस्था हृदय में सुषुप्ति औ मस्तक में जीव के रहने से तुरीया अवस्था होती है इन चारोंअवस्थाओं के स्वामी क्रमसे ब्रह्मा विष्णु ईश्वर औ महेश्वर हैं कोई ऐसा भी कहते हैं कि सब इंद्रियों करके वर्तमान पुरुष जाग्रत कहाता है मन बुद्धि अहंकार औ चित्त इनचारों में जीवके स्थित होने से स्वप्न सब इंद्रियों के आत्मा में लीनहोजाने से सुषुप्ति औ सब कारण अर्थात् इन्द्रियों से भिन्न होजाने करके तुरीया अवस्था कहाती है औ परमकारण शिव तुरीयातीत है जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया आधिभौतिक आ-

ध्यात्मिक औ आधिदैविक सब मैंहीं हूं यही जानने की इच्छा वाले पुरुषको जानना चाहिये पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय मन बुद्धि अहंकार औ चित्त यह चौदह प्रकार का अध्यात्म है श्रोतव्य, स्पर्शितव्य, द्रष्टव्य, रसितव्य, घ्रातव्य, वक्तव्य, आदातव्य, गंतव्य, विसर्गायित, आनंदितव्य, मंतव्य, बोद्धव्य, अहंकर्तव्य, चेतयितव्य ये सब अध्यात्म के विषय अधिभूत कहाते हैं आदित्य, पृथ्वी, वरुण, वायु, चन्द्र, ब्रह्मा, रुद्र, क्षेत्रज्ञ, अग्नि, इन्द्र, विष्णु, मित्र, प्रजापति औ दिशा ये चौदह आधिदैविक हैं राज्ञी, सुदर्शना, विजिता, सौम्या, मोघा, रुद्रा, अमृता, सत्या, मध्यमा, राशि, शुका, असुरा, कृत्तिका औ भास्वती ये चौदह नाड़ी हैं उनके मध्य में स्थित औ इनके ग्राहक अर्थात् धारण करनेहारे प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, वैरंभ, मुख्य, अंतर्याम, प्रभंजन, कूर्मक, श्वेत, श्येन, कृष्ण औ नाग ये चौदह वायु हैं नेत्रों में द्रष्टव्य में आदित्य में नाड़ी में प्राण में विज्ञान में आनंद में हृदय में आकाश में जो आत्मा एकाकी इन सब में निवास करता है वह मैंहींहूं इस कारण अजर, अमर, अनंत, अशोक, अमृत, ध्रुव औ प्रभु उस आत्माकी अर्थात् मेरी उपासना करनी योग्य है चौदह भेदों में वही निवास करता है औ वे सब उसी में लीन होते हैं कोई पदार्थ उससे भिन्न नहीं है जो एक परमात्मा सर्वज्ञ सर्वव्यापी सबका प्रभु अन्तर्यामी सनातन सब करके उपास्यमान औ वेद तथा भांति २ के शास्त्रों करके प्रतिपा-

दितहै वह मैंहींहूं यह सब जगत् उसका अन्न अर्थात् भक्ष्य है औ वह किसीका अन्न नहीं आपही इस जगत् की रक्षाकर भक्षण करता है सब प्राणियों में प्राणापान ग्रंथिरूप वही है सर्व नियंता ज्ञान साधन औ अन्न मयादि पंचकोश रूप वह परमात्मा अर्थात् मैंहूं भूतात्मा अन्नमय है इंद्रियात्मा प्राणमय संकल्पात्मा मनोमय कालात्मा विज्ञानमय औ परमेश्वर आनंदमय मैंहीं हूं सम्पूर्ण जगत् मेरे में स्थित है विचारसे सब जगत् परतंत्र औ मैं स्वतंत्रहूं विचारकरने से एकत्व भी स्थिर नहीं रहता द्वैतकी तो क्या कथा है अंतःप्रज्ञ अर्थात् स्वप्नावस्थाका साथी बहिःप्रज्ञ जाग्रतका साक्षी उभयगत अर्थात् दोनों का साक्षी प्राज्ञ सुषुप्ति साक्षी औ विज्ञानघन अर्थात् तुरीया का साक्षी ज्ञानपूर्वक विचार से कोई नहीं है परमार्थ से विदित वेद्य औ निर्वाण भी नहीं है निर्वाण कैवल्य निःश्रेयस अनामय अमृत अक्षर ब्रह्म परमात्मा परापर निर्विकल्प निराभास औ ज्ञान ये शब्द परस्पर पर्याय हैं अर्थात् सबका एकही अर्थहै अंतःकरण जब प्रसन्न होकर एकरसमें वर्त्तमान होजाय वही ज्ञानहै औ सब अज्ञानहै इसमें कुछ संदेह नहीं गुरुकी कृपासे निर्मलज्ञान होता है जिसमें राग, द्वेष, काम, क्रोध, तृष्णा, असत्य आदिका लेश नहीं वही ज्ञान मुक्तिका कारण है अज्ञानरूप मलके योगसे पुरुष मलिनहै उस अज्ञानके क्षयसेही मुक्तिहोतीहै औ किसी प्रकार से कोटि जन्ममें भी मुक्ति होना कठिनहै ज्ञानके बिना पुण्य औ पापका क्षय नहीं होता इसलिये

मुक्तिके अर्थ ज्ञानकाही अभ्यास करना उचितहै ज्ञान के अभ्याससे बुद्धि निर्मल होजाती है ज्ञान से तृप्त औ त्यक्तसङ्ग अर्थात् सबसे अलग रहनेहारे योगीको इस लोकमें तथा परलोकमें कुछ कर्तव्य नहीं है क्योंकि वह वृह्मवेत्ता कर्मके अभ्यासको छोड़ ज्ञानको प्राप्तहोने से जीवन्मुक्त होजाताहै औ जो वर्ण आश्रमका अभिमानी ज्ञानको छोड़ और कार्यों में आसक्त होय वह अज्ञानी है संसार का कारण अज्ञानहै औ शरीर धारण करना संसार है मोक्ष कारण ज्ञानहै औ मुक्त पुरुष आत्मा में स्थित होता है अज्ञानी पुरुष को क्रोध, हर्ष, लोभ, मोह, दम्भ, धर्म, अधर्म आदि सदा घेरेरहते हैं इसीसे देह धारण करनापड़ता है औ देहधारने से भांति २ के दुःख भोगने होते हैं इसकारण सबदुःखों का मूल अज्ञान है योगी पुरुष ज्ञान से अज्ञानको दूरकरै तो क्रोधआदि न होय औ क्रोध, धर्म, अधर्म आदि के न होने से सब दुःखोंका घर शरीर भी धारण न करनापड़े आध्यात्मिक, आधिभौतिक औ आधिदैविक इनतीनों दुःखों से छूट मुक्तहोजाय इसभांति के ज्ञान विना ध्यान भी नहीं होसक्ता वचन मात्र से ज्ञान नहीं होता केवल गुरुकी कृपा से ज्ञानहोता है गुरुकी कृपापाय चतुर्व्यूह अर्थात् विश्व, तैजस, प्राज्ञ औ तुरीय रूपको जान ध्यान का अभ्यास करे सहज अर्थात् स्वाभाविक आगंतुक अर्थात् बाहर से लगे हुये मन वचन औ शरीर से किये हुये सबभांति के पापों को ज्ञानरूप अग्नि दग्धकर देता है जैसे सूखे इंधन को आग ज्ञानसे बढ़कर पाप

निवृत्त करने का कोई उपाय नहीं है इसलिये सब संग छोड़ सदा ज्ञानका अभ्यास करै ज्ञानी को सब पाप पचजाते हैं अर्थात् अनेक भांतिके पापकरके भी ज्ञानी निष्पापही रहता है जैसा ज्ञान वैसाही ध्यान इसकारण ध्यानका अभ्यासभी भलीभांति करै निर्विषय औ सविषय दो प्रकारका ध्यानहै छः प्रकार चार प्रकार दश प्रकार बारह प्रकार औ सोलह प्रकार से ध्यान का अभ्यासकरै सविषय अर्थात् सालंबध्यान में शुद्ध सुवर्ण के तुल्यवर्ण निर्धूम अंगार के समान कोटि विद्युत् के तुल्य के प्रकाशमान पीत,रक्त, स्वेतवर्ण, सदाशिव स्वरूपका ध्यान करै औ निर्विषय ध्यान में ब्रह्मरन्ध्र के बीच चित्त को स्थिर करै औ स्वेत पीत आदि कुछभी न ध्यावै अहिंसक,सत्यवादी,ब्रह्मचारी, दृढ़व्रत,संतुष्ट, शौच युक्त औ हमाराभक्त पुरुष गुरुकीकृपा से ध्यानको पाय अभ्यासकरै जब योगी पुरुष ध्यान के समय न देखै न सुनै न सूंघै औ न स्पर्श को जानै केवल आत्मामेंही लीन होजाय उसध्यानका नाम समरस है पृथ्वीतत्त्व में ब्रह्मा,जलतत्त्व में विष्णु, अग्नितत्त्व में कालरुद्र, वायु तत्त्वमें महेश्वर औ आकाश तत्त्व में साक्षात् सदाशिव का ध्यानकरै पृथ्वी में शर्व,जलमें भव,अग्निमें रुद्र,वायु में उग्र, आकाशमें भीम, सूर्य्यमण्डल में ईशान, चन्द्र विम्बमें महादेव औ सब पुरुषों में पशुपति इनआठ रूपों से हम सर्वत्रव्याप्त हैं शरीर में कठिनता पृथ्वीका अंश द्रव जलका अंश तेज अग्नि का संचार अर्थात् हिलना चलना वायुका औ छिद्र अर्थात् अवकाश

आकाश का अंश है शब्द का ज्ञान आकाश से उत्पन्न भयाहै स्पर्शका वायु से रूप का अग्निसे रसका जलसे औ गन्धका ज्ञान पृथ्वीसे उत्पन्नभया है दहिने नेत्रमें सूर्य्य वाम में चन्द्र औ हृदय में विभु अर्थात् परमात्मा का चिन्तन करे जानुपर्यन्त पृथ्वी तत्त्व है नाभिपर्यन्त जलतत्त्व कण्ठतक अग्नितत्त्व ललाटपर्यन्त वायुतत्त्व औ ललाट से शिखा के अग्रतक आकाश तत्त्व है औ उसके ऊपर हंसनामक ब्रह्महै आकाशरूप औ आकाश में स्थित शिव है इस भांति साधक पुरुष ध्यान करै वास्तव विचार करने से जीव, प्रकृति, सत्व, रज, तम, महत्तत्त्व, अहंकार, तन्मात्रा, इन्द्रिय पंचमहाभूत एक भी नहीं हैं सब माया का प्रपंच है मैंही सब जगत् में व्याप्त होकर स्थितहूं इसीसे स्थाणु कहाता हूं मेरे भय से सूर्य उदय होता है पवन चलता है चन्द्रमा प्रकाशित होता है अग्नि जलता है जल बहता है भूमि सबको धारण करे है आकाश अवकाश देता है औ मेरी आज्ञा से सब जगत् अपनी मर्यादा में स्थित है हे मुनीश्वरो यही चिन्तन करना चाहिये कि वह सर्वरूप सदाशिवही सब जगत् में व्याप्त है संसाररूप विपसे संतप्त पुरुषों के कल्याण के अर्थ ज्ञानयुक्त ध्यानही अमृत है अर्थात् ज्ञान औ ध्यान से ही संसार की बाधा निरस्त होती है दूसरा कोई उपाय नहीं धर्म से ज्ञान ज्ञान से वैराग्य औ वैराग्य से परमअर्थ को प्रकाश करनेहारा ध्यान युक्त परम ज्ञान उत्पन्न होता है सत्वगुणयुक्त पुरुष को ज्ञान औ वैराग्य से योग सिद्धि होती है औ योगसिद्धि

से मुक्ति मिलती है वह शिवस्वरूप अव्ययपद अज्ञान रूप अंधकारने ढकरक्खा है इस कारण सत्वकी शक्ति में स्थित हो अज्ञान दूरकर शिवस्वरूप को देखै औ अर्चन करै जो सत्वनिष्ठ मेराभक्त मेरे पूजन में तत्पर अपने धर्म में दृढ़ सदा उत्साह युक्त एकाग्रचित्त सब शीत उष्ण आदि दुःख संहारने हारा और धीर सब भूतों के हितमें रत सरलस्वभाव देवऋषि और पितरों के ऋण से मुक्त, स्वस्थचित्त, अभिमान रहित, कोमल औ शांत स्वभाव, बुद्धिमान्, धर्मज्ञ औ स्पर्धा से रहित हो वह मुमुक्षु अर्थात् मोक्ष का अधिकारी है वह अपने पूर्वजन्म के पुण्य से ब्राह्मणके घरमें जन्म पाय वृद्धावस्थातक धर्मका सेवन कर उत्तम गुरु की कृपा से ज्ञान को प्राप्त होता है जो पुरुष इन लक्षणों करके युक्त न हो वह भी निष्कपट हो गुरु की शुश्रूषा करै तो स्वर्ग में जाय उत्तम २ भोगों को भोग भारत वर्ष में जन्मले योगीके संसर्ग से ज्ञान को प्राप्तहोता है ये दोनों क्रम अज्ञानी पुरुषों की मुक्तिकेलिये कहे हैं जो पुरुष सब संगछोड़ दृढ़व्रत हो इस मार्गपर चलै वह संसाररूप कालकूट विष से मुक्तहोय हे मुनीश्वरो यह ज्ञान औ ध्यान का माहात्म्य हमने संक्षेप से वर्णन किया है यह पाशुपत योग हमारा कहाहुआ गोप्य रखना चाहिये जिस किसी को नहीं देना भस्मनिष्ठ योगी को इसका उपदेश करना चाहिये इस संसार के परम औषध पाशुपत योग को जो पढ़ै अथवा सुनै वह ब्रह्म सायुज्य पावै इसमें कुछ संदेह नहीं ॥

सदाशिव अपनी आज्ञारूप शक्ति से कृपा कर देखते हैं तब वे खेचर सिद्ध परमेश्वरके सायुज्य को प्राप्तहोते हैं॥

अठासीवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी साधु पुरुषों को कौन से योग करके मुक्ति मिलती है औ योगियोंको अणिमाआदि सिद्धि किसप्रकार होती है यह आपविस्तार से वर्णन करें॥

यह प्रश्नसुन सूतजी बोले कि हेमुनीश्वरो अब हम अति दुर्लभ योग कहते हैं आप सावधान होकर श्रवणकरें पहिले अपने चित्तमें सदाशिवको स्थापन कर सद्योजात आदि पांचरूपों से ध्यानकरै फिर सोम, सूर्य, अग्नि करके युक्त छव्वीस तत्त्वरूप शक्तियों से शोभित पहिले आठदलों करके युक्त उसके ऊपर षोड़श दल औ तिसके भी ऊपर द्वादश दलों करके शोभायमान पद्मासन का ध्यानकर उसके मध्य में अणिमादि आठ सिद्धियों करके भूषित वामा आदि आठ शक्ति वामदेव आदि आठ रुद्र तथा चौंसठ रुद्रों करके युक्त औ पार्वतीजी सहित अष्टमूर्त्ति सदाशिवका ध्यानकरै उत्तम ज्ञान पाय इस भांति परमेश्वर के स्वरूप को ध्यावै यह पाशुपत योग मोक्ष सिद्धि औ अणिमाआदि आठ सिद्धि देनेहारा है इस के विना चाहै कोटि उपायकरो परन्तु सिद्धि नहीं होती अणिमा आदि सिद्धियों में योगियोंके लिये आठगुण ऐश्वर्य है उसको हम क्रम से वर्णन करते हैं आप सुनिये अणिमा, लघिमा, महिमा,

प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व औ कामावसायित्व यह अणिमा आदि ऐश्वर्य तीनप्रकारका है सावद्य, निरवद्य औ सूक्ष्म पंचभूतात्मक होना सावद्यहै इन्द्रियमन औ अहंकार रूप होजाना निरवद्य है औ भूत तन्मात्रा रूपहोजाना सूक्ष्म है ये तीनोंभेद सूक्ष्म अणिमा आदि ऐश्वर्यों में प्रवृत्तहोते हैं अब सूक्ष्मरूपसे स्थित अणिमा आदि ऐश्वर्यों का रूप कहते हैं जैसा परमेश्वरने कहा है जो ऐश्वर्य त्रैलोक्य में स्थितहै अव्यक्त अर्थात् मायिक है औ सब भूतों में जिसका नियमहै तीनलोक में जो बल सब भूतों को दुर्लभहै वह योगी को मिलता है यह अणिमा नाम ऐश्वर्य है आकाश का लंघन समुद्र आदिका तरण अपनी इच्छाका रूपधारण औ सब भूतों से अधिक शीघ्रता ये सब लघिमा नाम ऐश्वर्य में होते हैं त्रैलोक्य के सब जीव योगी की स्तुति औ पूजाकरें यह महिमा नाम ऐश्वर्य है त्रैलोक्य के सब भूतों में अपनी इच्छासे गमन करना प्राप्ति नामक ऐश्वर्य है अपने अभीष्ट विषयों का अप्रतिहत अर्थात् प्रतिबंध बिना भोग करना प्राकाम्यनाम ऐश्वर्य है तीनलोक के सब जीवों को सुख औ दुःख की प्रवृत्ति करने में समर्थ होजाय औ सब भांतिके देहधारसके यह ईशित्व नामक ऐश्वर्य है त्रैलोक्य के सब भूत वशहोजायँ यह वशित्व नाम ऐश्वर्य है औ त्रैलोक्य में योगी की इच्छा से चर अचर रूप उत्पन्न होयँ औ उसकी इच्छा न होने से न होवँ यह कामावसायित्व नाम ऐश्वर्य हैं ये आठ ऐश्वर्य हैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध औ मन योगी की

इच्छा से प्रवृत्त होते हैं औ इच्छा न होने से नहीं होते योगी न उत्पन्न होय न मृत्यु वश होय न छिन्न होय न भिन्न होय न दग्ध होय न मोह को प्राप्त होय न लीन होय न लिप्त होय न चीण होय न खिन्न होय न विकार को प्राप्त होय गंध, रस, रूप, शब्द, स्पर्श, वर्ण औ स्वरसे रहित होकर विषयों का भोग करै तथा विषयों में लिप्त न होय अणुभाव से जीव अति सूक्ष्म है सूक्ष्म होने से अपवर्गिक अर्थात् त्यागी होता है औ सबका त्याग करने से व्यापक होता है औ व्यापकता से वह जीव पुरुषहै पुरनाम देहकाहै सब देहों में रहने से पुरुष कहाताहै सूक्ष्म भावसेही जीव परम ऐश्वर्यको प्राप्तहोता है इसकारण सूक्ष्म ऐश्वर्य अर्थात् अणिमा नाम ऐश्वर्य सब से उत्तम है पाशुपत योगके सेवन से योगी सब ऐश्वर्यों को पाय मुक्तिको प्राप्त होताहै हे मुनीश्वरो इस भांति पाशुपत योग भुक्तिमुक्ति औ शिव सायुज्य देनेहारा है जो योगी आत्मचिन्तनको छोड़ विषयों की इच्छासे कर्ममें प्रवृत्तहोय वह भी राजस, तामस भोगोंको भोग कर अंतमें मुक्त होता है सत्कर्म करने से स्वर्ग में उत्तम फल का भोग करता है वहांसे भूमिपर आय मनुष्य जन्म पाता है इसकारण शाश्वतपद औ परम सौख्य ब्रह्मही है ब्रह्म की निरंतर सेवाकरै यज्ञ करने में एक तो अति परिश्रम होय औ फलभी स्थिर नहीं अर्थात् स्वर्ग भोगकर भूमिपर आय फिर जन्ममरणका कष्ट भोगना पड़ता है इसलिये मोक्षही परमसुख है ब्रह्मतत्त्व में परायण ध्यान करके युक्त योगी सैकड़ों मन्वंतरों में भी

नीचे नहीं गिरता शाश्वत पद में ही स्थिर रहता है दिव्य बिश्वनामक, विश्वतोमुख, बिश्वपाद, शिरोग्रीव अर्थात् जिसके चारों ओर मुख पांव शिर औ ग्रीवा हैं विश्वरूपी विश्वका स्वामी, बिश्वगन्ध, विश्वमाल, बिश्वाम्बर धारनेहारा वह पुरुष सूर्य की किरणों करके पृथ्वी को तपाता है वही उत्पन्न करता है औ संहार करता है औ कवि-पुराण अनुशासिता अर्थात् अनुशासनकरनेहारा सूक्ष्म से सूक्ष्म औ स्थूलसे स्थूलहै उस सुवर्ण वर्ण तेज करके देदीप्यमान निर्गुण नित्य सर्वव्यापी सर्वसार परमात्मा को योग युक्तिसे देख सकते हैं इन्द्रियों से उस पुरुष का ज्ञान किसीभांति नहीं होसकता वह परमात्मा हाथ पांव उदर पार्श्व जिह्वाआदि अवयवोंसे रहित है विना नेत्रों के सब जगत् को देखता है विना कानों सुनता है विना बुद्धि सब जानता है सब विश्वको वह जानता है परंतु उसको सब विश्व नहींजानता इसलिये वह पुरुष सब से श्रेष्ठ औ बड़ाहै अचेतना अर्थात् जड़ सर्वगत सूक्ष्म औ सब भूतों के उत्पन्न करनेहारी प्रकृति को भी योगी देखते हैं उस ब्रह्म के चारों ओर हाथ पांव नेत्र शिर कान औ मुखहैं तथा सब जगत् में व्याप्तहोकर स्थितहै सनातन सब भूतोंके परमपुरुष उसशिवको जो विद्वान् योग में युक्त होकर जाने वह कभी मोहको नहीं प्राप्त होय भूतात्मा, महात्मा, परमात्मा, सर्वात्मा औ अव्यय उस ब्रह्मका ध्यान करनेहारा कभी मोह के वश नहीं होता जिसभांति सब मूर्त्तियों में विचरते हुये पवन का ग्रहण नहीं होसकता इसी भांति सब शरीरों में वह

पुरुषभी दुर्ग्राह्यहै पुर अर्थात् शरीरों में शयन करने से पुरुष कहाताहै स्वर्ग में निवास करनेहारा जीव भी पुण्यका क्षयहोने पर थोड़े से कर्म शेष रहने से ब्राह्मणकी योनिमें जन्म लेता है पहिले स्त्री पुरुषके संगके समय शुक्रशोणित करके युक्त गर्भ में वह जीव प्रवेशकरताहै गर्भ के समय शुक्रशोणित का कललहोता है पीछे बुद्बुदबनता है जैसे चाकपर रखकर घुमायाहुआ मृत्तिका का पिण्डघटआदि आकारको प्राप्त होताहै इसीप्रकार वह जीव करके युक्त शुक्रशोणित का बुद्बुद अर्थात् बुलबुला पंचभूतों करके युक्त औ वायु करके प्रेरित मनुष्य आदि आकारको प्राप्तहोताहै गर्भ से बाहर निकले हुये उस जीवको जबतक वायु न लगे तबतक सब काल यही चिंतन करता रहता है कि जो इस गर्भवास के दुःखसे किसी भांति मुक्तहूंगा तो सदाशिवके आश्रय में रहूंगा औ निरंतर श्रीमहादेवजी के अर्चन में तत्पर रहूंगा इस प्रकार के अनेक विचार करताहै परंतु जन्म लेनेके अनंतर सब भूलजाताहै आकाश से वायु उत्पन्न होता है वायु से जल जलसे प्राण औ प्राण से वीर्य उत्पन्न होता है रक्तके भाग तेंतीस औ वीर्य के भाग चौदह मिलकर दो भागोंसे गर्भका निषेक होता है वह गर्भ पांच प्रकार के वायु करके आवृत्त पिताके शरीर के अनुसार रूपको प्राप्त होताहै माता जो भोजन करती है वही आहार नाभि की द्वारा गर्भ में प्राप्तहोय उसका पोषण करताहै इसप्रकार नौ महीने अतिक्लेश से गर्भ में व्यतीत करता है उसके सब अंग जरायु

अर्थात् जेर से लिपटे रहते हैं जब वह वृद्धि को प्राप्त होताहै तब गर्भाशयमें नहीं समाता औ नीचेकी ओर मुख किये योनिछिद्र से बाहर निकलता है यह दशा तो जीवोंकी उत्पत्तिके समयहै औ मरण के अनन्तर अपने दुष्कर्मोंके अनुसार आसिपत्र वन शाल्मलि छेदन पूयभक्षण आदि बड़े २ दारुण नरकों में पड़े यमयातना भोगतेहैं इसप्रकार जीव अपनेकिये पापोंकरके अति संतापको प्राप्तहोते हैं औ अपने कर्मों के अनुसार सुख दुःख भोगते हैं सबको छोड़ जीव अकेलाही परलोक को जाताहै औ कर्मका फलभी अकेले को ही भोगना पड़ताहै कोई भाई, बन्धु, पुत्र, स्त्री आदि काम नहीं आते इसलिये सुकृत करना चाहिये जिससे सुख मिले परलोक जानेके समय जीवके साथ कर्म जाताहै और सब यहांकेही साथीहैं पापी मनुष्य अनेक प्रकार की यमयातनाओं करके पीड़ित नरकमें पड़े २ पुकारते हैं परन्तु कोई उनकीरक्षा नहीं करता मन, वचन, कर्म करके जिसका निरंतर सेवन करै उसके अनुसार फल पाताहै इसलिये भलाकाम करनाही उचित है बुरेकाम का परिणाम अति दारुण होता है कर्मोंके साथ जीवों का अनादि सम्बन्ध है उसीके अनुसार छःप्रकार के तामस संसारको सबजीव प्राप्त होते हैं मनुष्यसे पशु, पशुसे मृग, मृगसे पक्षी, पक्षीसे सरीसृप अर्थात् सर्प आदि सरीसृप से स्थावर अर्थात् वृक्ष पाषाण आदि जन्म को प्राप्त होताहै फिर स्थावर से मनुष्य जन्म तक पहुँचताहै इसप्रकार कुलाल चक्रकी भांति मनुष्य

से स्थावर पर्यंत तामस संसार में भ्रमता रहताहै सात्त्विक संसार ब्रह्मासे लेकर पिशाचपर्यंत स्वर्गनिवासी जीवों के लिये है ब्राह्म संसार में केवल सत्त्वगुण औ स्थावर में केवल तमोगुणहै औ बीचके चौदह भुवनों में रजोगुण प्रधान है मर्म स्थानों के छेदनसे अतिपीड़ित जीव परमेश्वर का स्मरण करता है उस पूर्वधर्म की भावनासे मनुष्यभाव को प्राप्त होता है मनुष्य होकर भी निरन्तर परमेश्वरका ध्यान करना योग्य है जिससे फिरभी वह दारुण दुःख न देखना पड़े चौदह भुवन रूप संसार मण्डलके सुख दुःखों को विचार संसारसे भय मान धर्मका सेवनकरै जिससे अति भयंकर भवसागर का पार पावै संसार चक्रसे मुक्तहोनेके लिये योगका आरम्भ करै जिससे आत्मा को देखै यह पर ज्योति शिव स्वरूप आत्मा इस संसारसागरका सेतुहै इसकारण सबभूतोंके हृदयमें स्थित सर्वतोमुख अग्नि स्वरूप संसारसागरके सेतु महेश्वरका उपासनकरै यह महेश्वर अपनी शक्ति करके सहित पृथ्वी आदि अष्ट मूर्त्ति औ उनके अभिमानी भव आदि आठस्वरूप वामा आदि आठ शक्ति औ वामदेव आदि अपने आठ रूपों करके युक्त है उसका अपने हृदयमें ध्यान करै औ सृष्टि के निर्वाहके लिये अपने को संकुचितकर हृदयमें स्थित जो अग्नि उसमें पांच आहुति देवै प्रथम शुद्ध जलसे आचमनकर मौनी हो उत्तम पीठपर बैठ हृदय में अग्नि का ध्यानकर प्राणायस्वाहा, अपानायस्वाहा, व्यानायस्वाहा, उदानायस्वाहा, समानायस्वाहा इन पांच मंत्रों

से पांच आहुति देवै अर्थात् भोजन के आरंभ में घृतप्लुत पांचग्रास पहिले इन मंत्रोंसे भक्षणकर पीछे अपनी इच्छानुसार भोजन करै भोजनकर फिर आचमन करै औ हृदयको स्पर्शकर इसभांति रुद्र की प्रार्थनाकरै कि हे रुद्र सबजीवों के प्राण अपान ग्रंथि रूप तुम आत्मा हो औ अहंकार के अधिष्ठातृ देवता तथा दुःख के अंत करनेहारे हो इस कारण मेरे हृदय में प्रवेशकरो इसप्रकार रुद्रकी प्रार्थना से अपने आत्मा को आप्यायित अर्थात् तृप्त करै क्योंकि प्राण को भी जीवन देनेहारा रुद्रहै रुद्र प्राणमें स्थितहै इसलिये आप भी प्राणमय है प्राणायस्वाहा, रुद्रायस्वाहा, ईशाय स्वाहा,शिवायस्वाहा, ब्रह्मात्मनेस्वाहा इन पांच मंत्रोंसे श्राद्ध में आहुति देवै औ यह प्रार्थनाकरै कि हे शिव मेरे हृदयमें आप प्रवेश करो सब के हृदयाकाश में अंगुष्ठ प्रमाण जगत् के कारण आप विराजमान हो आप सब जगत् के प्रभु शाश्वत सब देवताओं में ज्येष्ठ औ सर्वव्यापी हो इसकारण मेरे ऊपर भी प्रसन्न हो औ हमारे अर्थ आप मृदु अर्थात् कोमल होयँ औ यह अन्न आपके विषेहवन होय इसभांति परमेश्वरकी प्रार्थना करै सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह ब्रह्माजी का कहाहुआ योगाचार अणिमा आदि गुणोंके वर्णन सहित हमने आपको श्रवण कराया है भस्मसे स्नानकरै औ भस्म से लिप्तरहै औ इस पाशुपत ज्ञानको भलीभांति जानै इस उत्तम ज्ञानको देव औ पितृकर्म में जो पुरुष भक्तिसे श्रवणकरै अथवा ब्राह्मणों को सुनावै वह अवश्य उत्तम गति पावै ॥

नवासीवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम शौच औ आचार का लक्षण वर्णन करते हैं जिसके अनुष्ठान से मनुष्य शुद्धात्मा होय परलोक में सद्गति पावै सः वेदों का सार औ ब्रह्मवादियों का सर्वस्व सब लोकों के हितके लिये संक्षेप से ब्रह्माजीने शौचका लक्षण कहा है जिसके अनुष्ठान करने से मुनिलोग भी दुःखको नहीं प्राप्तहोते हैं मुमुक्षु पुरुष के लिये मान औ अपमान ये दोनों विष औ अमृत हैं अर्थात् मान तो विष औ अपमान अमृत है गुरुके हितमें तत्पर होकर एकवर्ष गुरु के समीप निवास करै औ यम नियमों में कभी प्रमाद न करै इसप्रकार एकवर्ष गुरुके समीप निवासकर उत्तम ज्ञानपाय गुरुकी आज्ञाले धर्म के अविरोधसे इस भारतवर्ष में विचरै अर्थात् जिससे धर्ममें कुछ हानि न होवै ऐसा भ्रमणकरै चक्षुः पूतमार्ग में चले अर्थात् सर्प, वृश्चिक, कांटा आदि देख पांवधरै वस्त्रपूत अर्थात् छना हुआ जलपीवै सत्यपूत वचनकहै औ मनःपूत अर्थात् जिसकाम के लिये अपना मन साक्षी होय वह काम करै मत्स्य पकड़ कर बेचनेहारे पुरुषको छः महीने में जितनापाप होता है उतना पाप विन छाना जलपीने हारे को एकदिनमें होताहै इसकारण जलको यत्नसे छानकर पीवै विनछाना जल पीकर पांच सौ जप अघोरमंत्रका करै अथवा शिवजीको घृतसे स्नान कराय पूजनकर तीन प्रदक्षिणाकरै तबशुद्ध होय योगी पुरुष आतिथ्य अर्थात्

प्रीतिके निमंत्रण में श्राद्ध में औ यज्ञ में कभी भोजन करने न जाय इसप्रकारके आचरणसे योगी अहिंसक होताहै गृहस्थों के घरमें जब अग्नि का धूम शांत हो जाय औ उस घरके सब मनुष्य भोजन करचुकें तब योगी भिक्षाकेलिये जाय औ नित्य उन्हीं घरोंमें न जाय नहीं तो अनादर होता है ऐसी भिक्षा ग्रहणकरै जिस से धर्म में कोई दूषण न लगै वानप्रस्थ औ यायावरोंके अर्थात् वैखानसों के घरमें भिक्षा ग्रहण करै तो बहुत उत्तम है नहीं तो जितेन्द्रिय वेदपाठी श्रद्धा युक्त शीतलस्वभाव महात्मा गृहस्थ ब्राह्मणों के घर में भिक्षा ग्रहणकरै अथवा और भी जो अपने धर्म में स्थित सत्पुरुष होयँ उनके घरमें भिक्षालेवै सब वर्णों में भिक्षा ग्रहण करना अधम वृत्ति है यवागू अर्थात् पतलाभात,छाछ,दूध,जौकी रोटीआदि पकाहुआ फल, मूल, सूक्ष्मअन्न, कण, तिलोंकी खल औ सत्तू ये उत्तम भिक्षाहैं इनके आहार करने से योगी को शीघ्र सिद्धि होती है जो पुरुष सदा उपवास करै औ महीना पूरा होने पर कुशाके अग्रभाग से उठाय एक जलबिंदु मुख में छोड़ले और कुछ आहार न करै उसको जितनापुण्य होताहै उससेभी अधिक न्यायसे ग्रहण करीहुई भिक्षाके भोजनकरनेहारे पुरुषको पुण्यहोताहै जरामरण, गर्भवास औ नरक से भयभीत योगीके लिये सबसे उत्तम भिक्षाहै अर्थात् भिक्षाका अन्न भोजन करने से किसी प्रकारका भी पाप नहीं होता दही दुग्ध आदि भोजन करके तप करनेहारे औ शरीर को क्षीण करने हारे

बड़े २ तपस्वी भिक्षा भोजन करनेवाले पुरुष के एक कला अर्थात् सोलहवें भागकीभी तुल्यता नहीं करसकते जो परमपद को चाहै तो भस्मस्नायी औ जितेन्द्रियहोय भिक्षा भोजन कर पाशुपत व्रतकरै योगियों के लिये चान्द्रायण व्रत श्रेष्ठ है एक, दो,तीन चान्द्रायण अपनी शक्तिके अनुसारकरै अस्तेय अर्थात् चोरी न करना ब्रह्मचर्य, अलोभ त्याग औ अहिंसा ये पांच भिक्षुओं के व्रतहैं इनमें मुख्य अहिंसाहै अक्रोध, गुरु की सेवा,शौच,लघु भोजन औ नित्य स्वाध्याय अर्थात् वेदका पठन ये नियम हैं माता, पिता, अपना स्वभाव, धन आदि पदार्थ औ संचित तथा क्रियमाण कर्म ये सब देवताओं के रचे योगियों के लिये बंधन हैं जिस भांति वनमें हाथी पकड़नेके लिये मनुष्य बन्धनरचते हैं इसीप्रकार ये बन्धन योगियों के लिये हैं सब यज्ञ स्वर्ग देनेहारे हैं यज्ञों से जप उत्तम है जपसे ज्ञान औ ज्ञानसे भी उत्तम राग, द्वेष औ संग से रहित ध्यानहै जिसके करनेसे मनुष्यों को शाश्वत पदकी प्राप्ति होती है दम, शम, सत्य, निष्पापता, मौन,सब भूतों के साथ सरलता औ आत्मज्ञान इन सबको निर्मल बुद्धिवाले महात्मा शिवकहते हैं शांतचित्त ब्रह्मके चिन्तनमेंतत्पर आलस्यसे रहित शुचिजितेन्द्रिय, महात्मा औ एकान्त में रहनेवाला पुरुष इस पाशुपत योग को प्राप्त होता है यह बड़े २ ऋषि कहते हैं जिसप्रकार अंकुश से रोकाहुआ हस्ती अपने अभीष्ट देशमें पहुँचाता है इसी भांति निष्पाप औ कर्म से रहित योगी इस शुद्धमार्ग

करके मोक्षको प्राप्तहोता है शांतस्वभाव सदाचार में रत औ अपने धर्म का परिपालन करनेहारे मनुष्य सब लोकों को उल्लंघनकर ब्रह्मलोक में प्राप्तहोते हैं हे मुनीश्वरो सबलोकों के उपकारके लिये ब्रह्माजी ने जो साक्षात् सनातन धर्मका उपदेश किया है वह आप सुनैं हम वर्णन करते हैं गुरुके उपदेश करके युक्त औ मार्यादा पर चलनेवाले वृद्धपुरुषों को देख उठकर प्रणाम करना चाहिये गुरु औ पिताको तीनवार अष्टांग दंडवत् प्रणाम कर तीन प्रदक्षिणाकरै और भी जो अपने से वड़े होयँ उनको प्रणाम करै उनकी आज्ञा भंग न करै धातुवाद नास्तिकवाद विलप्रवेश निधिक्षत्रका ढूंढ़ना भूत प्रेत आदि साधनके क्षुद्र मंत्रों से उपजीवन मंत्रसे सर्प आदि जीवोंका ग्रहण औ दूसरे का विडंवन अर्थात् नक़लकरना इसभांतिके और भी जो तुच्छकर्म होयँ उनको बुद्धिमान् पुरुष कभी न करै कपट कृपणता पिशुनता आदि दुष्टकर्मका सदात्यागकरै अत्यन्त हास्य बुरे कामका आरंभ लीला करके अपनी इच्छाके आचारमें प्रवृत्ति इन कर्मोंको त्यागकरै औ गुरुके समीप तो अवश्यही त्यागे गुरुके वचन से प्रतिकूल न कहै गुरुके अनुचित वचन को भी बुरा न जानै मन करके भी गुरुका अनिष्ट चिन्तन न करै अर्थात् बुरा न चाहै यतियोंका आसन,वस्त्र, पादुका औ दंड आदि माल्य शयनका स्थान पात्रछाया औ यज्ञके उपकरणों को कभी पैरसे स्पर्श न करै देवता औ गुरुका द्रोह कभी न करै जो भूलसे होजाय तो प्रणवका दशहज़ार जपकरै औ

को तीनरात्रि अशौच होताहै सातपीढ़ी बीतने के अनंतर सपिण्डता नहीं रहतीहै दशदिन व्यतीतहोनेपर जो किसी बंधुका मृत्युसुने तो तीनदिन अशौच होता है छःमहीने पहिले सुने तो पक्षिणी अर्थात् एकदिन एक रात्रि औ दूसरा दिन अशौच होताहै वर्षसे प्रथम सुने तो एकदिन अशौच औ वर्षके अनंतर मृत्युकावृत्तांत सुने तो स्नानमात्रसे शुद्धहोय शवके स्पर्श करनेसे तीन रात्रि अशौच रहता है परंतु बांधव न होय तो उसके स्पर्श करनेहारे अर्थात् लेजाने औ दग्ध करनेवाले स्नानमात्र से शुद्ध होते हैं शवके साथ जानेवाले भी स्नानकर घृतका प्राशन अर्थात् थोड़ासा घी खाने से शुद्ध होते हैं आचार्य औ श्रोत्रियके मरणसे तीनदिन का अशौच होताहै मातुल अर्थात् मामा औ अपने ऊपर उपकार करनेहारे पुरुषको मृत होनेपर एकपक्षिणी अशौच होता है राजा राजमंत्री औ देशांतर में रहनेहारे स्नानमात्रसे शुद्धहोते हैं क्षत्रियको बारहदिन अशौच होताहै अभिषिक्त क्षत्रिय अर्थात् जिसका राज्याभिषेकहुआ हो उसको अशौच नहींहोता रणमें औप्रमाद विषे मृतहुये पुरुषका भी अशौच नहींहोता वैश्य पन्द्रहदिनमें औ शूद्र एकमासमें शुद्धहोताहै हे मुनीश्वरो यह द्रव्योंकी शुद्धि औ अशौचका निर्णय हमने संक्षेपसे कहाहै यतियोंको अर्थात् संन्यासियोंको अशौच नहींहोता त्रेतायुगसेलेकर प्रतिमास स्त्रियोंको ऋतुधर्म होनेलगाहै सत्ययुगमें सब स्त्रियोंके साथ उत्पन्नहोते थे औसाथही रहतेथे जिसभांति उत्तर कुरुकेनिवासीरहते

हैं वर्ण आश्रम की व्यवस्था इसी भारतवर्षमेंहै औजम्बू द्वीपके आठखण्डोंमें तथा महावीत सुवीत आदि वर्षों में नहीं है परन्तु शाकद्वीप आदि पांच द्वीपोंमें भारत-वर्षके तुल्यही व्यवस्था है सत्ययुग में रसोल्लास से वृत्तिथी त्रेतामें गृहवृक्षोंसे वृत्तिभई परन्तु नारियोंके ऋतु दोषसे मनुष्यों के राग द्वेष आदि दोषों से काम मैथुन आदिके होनेसे कठोरवचन बोलनेसे वह वृत्ति जातीरही औ जौ आदि चौदह प्रकारके अन्न ग्राममें औ वनमें उत्पन्न होनेलगे परन्तु स्त्रियों के रजोदोष से वे भी नष्ट होगये थे फिर ब्रह्माजीने उत्पन्न कियेहैं इसकारण रज-स्वलास्त्री अतिअपवित्र होती है उसके साथ सम्भाष-णमात्रभी न करना चाहिये पहिले दिन रजस्वला स्त्री चाण्डाली के तुल्य होतीहै दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी के तीसरेदिन आधी ब्रह्महत्याउसमें निवास करतीहै चौथे दिन शुद्धहोतीहै फिर पन्द्रहदिन शुद्धरहतीहै पांचवेंदिन से देव पितृ कर्म के योग्य होतीहै ऋतुतो सोलह रात्रि रहताहै परन्तु उसमें मूत्रत्याग के तुल्य शौच करना चाहिये परन्तु जो रुधिरका दर्शन होतारहै तो पांचदिन तकभी स्पर्श न करना चाहिये बीसवेंदिनसे फिर रज-स्वलाही होजातीहै परन्तु प्रकट एक मास व्यतीतहोने पर होतीहै स्नान, शौच, गान, रोदन,हास्य, वाहन पर चढ़ना तेललगाना जूआखेलना शरीरमें चन्दन आदि अनुलेपन लगाना दिनमें सोना दन्तधावनकरना मैथुन मन वचनसे देवता की पूजा औ नमस्कार इसभांतिके औरभी काम रजस्वला न करै एकरजस्वला दूसरीरज-

स्वलाको स्पर्श औ उसके साथ सम्भाषणकर वस्त्रोंके त्यागको वर्जितकरै रजस्वलास्त्री स्नानकरके दूसरेपुरुष को न देखै सूर्य्य भगवान् का दर्शनकरै ब्रह्मकूर्च पञ्च गव्य अथवा गौकादूध अपनीशुद्धिकेलिये पानकरै रज-स्वलास्त्रीसे चौथीरात्रिको सङ्गकरै तो अल्पायुष विद्या हीन व्रतभ्रष्ट पतित परस्त्रीगामी औ अतिदरिद्री पुत्र उत्पन्नहोता है कन्याकी इच्छाहोय तो पांचवीं रात्रिको विधिपूर्वक गमनकरै गर्भमें रक्त अधिकहोनेसे कन्या औ शुक्र अधिक होनेसे पुत्र उत्पन्नहोताहै औ दोनों तुल्य होयँ तो नपुंसक होता है पांचवींरात्रिमें गमन करै तो कन्या होय छठीमें सत्पुत्रहोय अर्थात् पुंनामक नरकसे पिताकी रक्षा करनेहारा बालक उत्पन्नहोताहै औ इसीसे पुत्र कहाताहै सातवीं रात्रिमें बंध्याकन्या आठवीं रात्रि में गमनकरनेसे सर्वगुण सम्पन्न पुत्रउत्पन्न होताहै नवीं में कन्या दशवींमें पण्डितपुत्र ग्यारहवींमें कन्या बार-हवीं रात्रि में गमन करनेसे अति धर्मज्ञ औ श्रौतस्मा-र्त्त आचार का प्रवर्तन करनेहारा पुत्र उत्पन्न होता है तेरहवीं रात्रिमें गमन करने से अति दुष्टाकन्या उत्पन्न होतीहै इस कारण उसरात्रिमें गमन न करना चाहिये चौदहवीं रात्रि में पुत्र पन्द्रहवींरात्रि में पतिव्रता कन्या औ सोलहवींरात्रि में गमन करने से ज्ञानी पुत्र उत्पन्न होताहै स्त्रियों के मैथुन समयमें जो वायु अर्थात् स्वर वामचलता होय तो कन्या औ दहिनास्वर चलताहोय तो पुत्र उत्पन्नहोताहै पापग्रहोंसे रहित लग्नमें पवित्रहो प्रसन्नतासे शुद्धस्त्री के साथ सङ्ग करै तो उत्तम संतान

उत्पन्नहोय हेमुनीश्वरो यतियोंके धर्मसंग्रहमें सबभूतोंके लिये यह सदाचार हमने वर्णनकिया जो पुरुष पवित्र हो इसको श्रवणकरै अथवा निष्पाप ब्राह्मणों को सुनावै वह ब्रह्मलोक में जाय ब्रह्माजीके समीप निवास करै ॥

नब्बे अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो अब यह शिवजीका कहा हुआ औ पाप निवृत्तकरनेहारा यतियों के लिये प्रायश्चित्त कथन करते हैं दिन रात्रि में मन वचन औ शरीर से तीन प्रकारका पाप होता है जिससे सब जगत् व्याप्त होरहा है यति कर्म के विना स्थित हैं इस कारण अति चंचल आयुषको क्षणभर भी योगमें लगावै योग परम बलहै मनुष्योंके लिये योगसे बढ़कर कोई शुभ-दायक कर्म नहीं परन्तु प्रमादी मनुष्यों को योग दुर्लभ है विद्वान् पुरुष योग की प्रशंसा करते हैं योगी पुरुष विद्यासे अविद्याको जीत उत्तम ऐश्वर्य को पाय ब्रह्म औ मायाके विलासको विचार तुरीय पदको प्राप्त होते हैं भिक्षु अर्थात् संन्यासियोंके लिये जो व्रत औ उपव्रत हैं उनके अतिक्रमण होने से प्रायश्चित्त करना चाहिये कामसे स्त्री संगकरके प्राणायाम सहित शांतपन व्रत कर कृच्छ्रव्रत करै फिर अपने आश्रम में आयकर रहै तब भिक्षुशुद्ध होता है धर्म करके युक्त असत्य का बहुत पाप नहीं है परन्तु जहांतक होसके असत्य भाषण से बचै जो कदाचित् असत्य भाषण होजाय तो एक दिन रात्रि उपवास औ सौ प्राणायाम करै तब शुद्ध होय

असत्वाद औ चोरी यती कभी न करै चाहे परम आपदामें भी मग्न होय चोरीसे बढ़कर कोई अधर्म नहीं है चोरीभी एक प्रकार की हिंसा है क्योंकि मनुष्यों के बाहरले प्राण धन है इस कारण धन हरनेवाला उसके प्राणही हरता है परन्तु जो दुष्ट संन्यासी ऐसा कर्मकरै वह पश्चात्ताप करता हुआ एक वर्ष पर्यन्त चान्द्रायण व्रतकरै औ एकवर्ष के अनन्तर भी पश्चात्ताप करता हुआ पृथ्वी पर विचरै तब उसपापसे छूटताहै मन वचन कर्म करके यति किसी जीवकी हिंसा न करै जो भूलसे किसी पशु औ कृमिकी हिंसाहोजाय तो कृच्छ्रातिकृच्छ्र अथवा चांद्रायण व्रत करनेसे शुद्ध होताहै स्त्रीको देखि जो यतिका वीर्यस्खलित होजाय तो सोलह प्राणायाम करने से शुद्धहोय दिनमें जो ब्राह्मणका वीर्यस्खलित होजाय तो तीन रात्रिउपवास औ सौ प्राणायाम करै रात्रिमें होय तो बारह प्राणायाम करनेसे शुद्धहोय एक घरका अन्न मद्य मांस केवल लवण औ कच्चाअन्न यतियोंके लिये अभक्ष्य है इनका भक्षण करनेहारा प्राजापत्य औ कृच्छ्र व्रतके करनेसे शुद्ध होताहै और भी जो मन वचन शरीरसे पाप बनपड़े उसका प्रायश्चित्त सत् पुरुषोंसे पूछकर करै तो शुद्धहोय संन्यासी शुद्धहोकर विचरै औ सुवर्ण तथा लोष्ठ अर्थात् मट्टी के ढेले को तुल्य समझै लोभग्रस्त न होय औ सब भूतोंमें परमात्माको समझै वह शाश्वतपदको प्राप्त होता है कभी जन्म नहीं लेता ॥

इक्यानबे अध्याय॥

सूतजीकहतेहैं कि हेमुनीश्वरो अबहम अरिष्टोंकावर्णन करतेहैं जिनके जाननेसे योगियोंको मृत्युकाज्ञान होताहै अरुंधती ध्रुवआकाश गंगा औ छायापुरुष जिसको न देखपड़े वह एकवर्षसे अधिक नहीं जीता सूर्य तो किरणोंसे हीन औ अग्नि किरणों करकेयुक्त जिसको दृष्टि आवै वह ग्यारहमाससे आगे नहींजीवै जो मूत्र विष्ठा सोना औ चांदी प्रत्यक्ष अथवा स्वप्नमें वमनकरै वह दश मास जीवै सुवर्णके वृक्ष,गन्धर्व,नगर,भूत,प्रेत आदि के देखनेहारा नौ महीने जीताहै स्थूल मनुष्य अकस्मात् दुर्बल होजाय अथवा दुर्बल स्थूल होजाय औ जिसका स्वभाव बदलजाय वह आठमहीने जीताहै धूलि में अथवा पंक अर्थात् कीचड़में जिसकेपैर का चिह्न खंडित लगै वह सातमासजीवै काक,कपोत, गीध अथवा और कोई मांसभक्षण करनेहारा पक्षी जिसके मस्तकपर बैठे वह छः महीनेजीताहै जिसके ऊपर काकों की पंक्ति गिरै औ धूलिकीवृष्टिहोय वह पांच चार महीनेजीवै जो बिना बादल दक्षिण दिशामें बिजली देखै औ जलमें इंद्रधनुष देखै वह तीन औ दो मास जीवै जलमें औ दर्पण में जो अपना प्रतिविम्ब न देखै अथवा शिरसे हीन प्रतिविम्ब देखै वह एक मास जीता है जिसके शरीर में शवका अथवा वसाकागंध आनेलगजाय वहएक पक्ष से अधिक नहीं जीतास्नानकरतेही जिसकाहृदय शुष्क होजाय अथवा मस्तकसेधूम निकलै वह दशदिनजीवैवायु

सम्भिन्नहोकर जिसकेमर्मस्थानोंको कृंतन नकरै औ जल के छीटे लगनेसे जिसके रोमांच न होय उसकीमृत्युसमीप जानिये जो स्वप्न में रीछ औ वानरों करके युक्त रथपर चढ़ नाचता गाता दक्षिण दिशाकोजाय वह शीघ्रहीमरै काले वस्त्र पहिने कृणवर्ण स्त्री गाती हुई स्वप्न में जिस को दक्षिण दिशाकी ओर लेजाय उसका मृत्यु समीप जानै स्वप्नमें अपने कण्ठ के बीच छिद्र देखै औ नग्न श्रमण अर्थात् जैन संन्यासीकोदेखै तो मृत्यु आयाजानै स्वप्न में जो कीचड़ के समुद्र में डूबजाय वह शीघ्र मृत्युवश होय भस्म, अंगार, केश, नखी, नदी औ सर्पोंको जो स्वप्न में देखै वह दश दिन भी न जीवै कृष्णवर्ण अति भयंकर पुरुष शस्त्रउठाये जिस पुरुषको पाषाणों से ताड़न करै वह न जीवै सूर्योदय के समय नित्य सम्मुख आय जिसपुरुषके शिवा बोले उसका भी आयुष समाप्तभया जानिये स्नान करतेही जिसके हृदयमें पीड़ा होय औ दांत काँपने लगैं वह शीघ्रही मरै दिन में औ रात्रि में जो वार वार त्रास को प्राप्त होय औ जिसको दीपकका गन्ध न आवे उसको भी गतायुषजानै जो दिनमें तारामण्डल औ रात्रिको इंद्रधनुष देखै औ दूसरे के नेत्रोंमें अपना प्रतिविम्ब न देखै वह न जीवै जिसके एक नेत्र में जल टपकनेलगजाय, कान अपने स्थानसे लटकपड़ैं नासिका वक्रहोजाय वह भी शीघ्रही मृत्युवशहोय जिसकी जिह्वा कृष्ण वर्ण औ कठोर होजाय मुख का वर्ण पीला पड़जाय गण्ड अर्थात् गाल पर पिटिका अर्थात् फुनसी होजाय वहभी शीघ्रही मरै

केश खोलकर हँसता गाता औ नाचता हुआ स्वप्न में दक्षिण दिशा को जाय वह भी गतायुष् होताहै जिसकी मूर्त्ति श्वेतमेघ अथवा श्वेतसरसों के तुल्य श्वेत वर्ण की होजाय उसका मृत्यु समीप आया जानिये जो ऊंट अथवा गधों के रथपर चढ़ स्वप्न में दक्षिण दिशा को जाय वह भी शीघ्रमरै ये दो परम अरिष्ट हैं एक तो कर्णों में शब्द न सुनिपड़ै दूसरा नेत्रों में ज्योति न देखै उन दोनों में से एक भी होय तो अवश्यही मृत्यु आया जानिये जो पुरुष स्वप्नमें गढ़े के बीच गिरै औ गढ़ेका मुख बन्द होजाय औ वह गढ़ेसे न निकले तो शीघ्रही मृत्युवश होय जिसकी दृष्टि लालहोय ऊपरको होजाय औ चंचलहोय मुखसूखै नाभिमें छिद्र होजाय मूत्र बहुत उष्ण उतरै वहभी न जीवै दिनमें अथवा रात्रि में जो पुरुष प्रत्यक्ष माराजाय औ मारनेवालेको न देखै वह भी गतायुष्होताहै जो पुरुष अग्निमें प्रवेशकरै औ स्वप्नके अन्तमें स्मृतिको न प्राप्तहोय वह शीघ्रही मरै जो ओढ़ेहुये श्वेत वस्त्रको स्वप्नमें काले अथवा लाल वर्णका देखै वहभी अपने मृत्युको समीप आया जानै इन अरिष्टों में कोई अरिष्ट उत्पन्नहुआ देख उसकाल को समीपआया जान खेद औ विषादको त्याग बुद्धि-मान पुरुष संसार से विरक्तहो घरसे पूर्वदिशा अथवा उत्तर दिशाकी ओर जाय एकांत स्थान में जहां किसी की बाधा न होय औ अन्तरिक्ष अर्थात् घरकी छत आदि न होय वहां पूर्वाभिमुख अथवा उत्तरमुख आसन पर बैठ आचमनकर स्वस्तिकासन बांध शिवजीको प्रणाम

कर योगमें युक्तहोय ग्रीवा शिर औ सम्पूर्ण देहको सीधा कर सब ओर से दृष्टिरोक निर्वातस्थान में स्थित दीपक की भांति निश्चल होजाय काम, वितर्क, प्रीति, सुख, दुःख आदि को मनसे निग्रह कर सात्विक ध्यान करै कालके कर्मोंको लिंग शरीरोंमें जान घ्राण, रसन, दृष्टि, स्पर्श, श्रवण, मन, बुद्धि औ हृदयमें धारणाकरै इसयोग धारणाको द्वादशाध्यात्म कहतेहैं सो अथवा पचास धारणा मस्तकमें करै इसभांति धारणा योगसे खिन्नभये योगीका वायु ऊपर को प्रवृत्त होताहै ओंकारका उच्चारण करताहुआ उस पवनसे देहको पूरितकरै तो योगी ओंकार मयहोय ब्रह्मसायुज्य को प्राप्त होताहै अब ओंकर प्राप्तिका लक्षण कहतेहैं इस प्रणवमें तीनमात्रा हैं व्यंजन अर्थात् मकार ईश्वर है पहिली मात्रा राजस, दूसरी तामस, तीसरी सात्विक औ अनुस्वार रूप आधीमात्रा निर्गुण है अर्थात् तीनोंगुणों से रहित है तीसरीमात्रा गांधारस्वर से उत्पन्न है इसीसे गांधारी कहाती है पिपीलिका अर्थात् चींटी की गतिके स्पर्शकी भांति उसकी सूक्ष्मगति मूर्द्धा अर्थात् मस्तक में लक्षित होती है जब प्रयुक्त ओंकारकी ध्वनि मस्तक से निकलै तबयोगी ओंकारमय होकर अक्षरब्रह्म में लीन होताहै प्रणवधनुष आत्मावाण औ ब्रह्मलक्ष्य अर्थात् निशानाहै सावधानहोय ऐसावेधनकरै कि आत्मारूप वाणब्रह्ममें मग्नहोजाय अर्थात् आत्मा ब्रह्ममयहोजाय ओंकाररूप एकाक्षरपद गुहा अर्थात् बुद्धिमें स्थित है ओंकारही तीनलोक तीनवेद तीन अग्नि औ विष्णु के

तीनक्रम अर्थात् पादन्यास हैं साढ़ेतीनमात्रा ओंकारमें हैं ओंकारकरके प्रयुक्त अर्थात् प्रेरित योगी ब्रह्म सायुज्य को प्राप्तहोताहै प्रणवमें आकार अक्षरहै उकार संधिको प्राप्तभया है अनुस्वारसहित मकार करकेयुक्त ओंकार त्रिमात्रहै ओंकारमें अकारभूलोंकहै उकारभुवर्लोक औ व्यंजनमकार स्वर्लोकहै तीनलोक ओंकारहै उसका शिर स्वर्ग पदब्राह्म मात्रापाद रुद्रलोक है परंतु शिवपद अ-मात्र अर्थात् मात्रातीतहै इसभांति के ज्ञानसे वह तुरीय पद उपासनका विषयहोताहै अक्षय सुखकी इच्छावाला पुरुष उस अमात्र औ अक्षरपदकी उपासना यत्नसे करै पहिली मात्रा ह्रस्व दूसरी दीर्घ तीसरी प्लुत ये तीनमात्रा क्रमसे जाननी चाहिये जितनी शक्तिहोय उतनी धारणा बुद्धिमान् पुरुष करते हैं इन्द्रियमन औ बुद्धिको अर्द्ध मात्रा रूपसे जो आत्मा विषे ध्यानकरै वह प्रतिमास सौ वर्षतक अश्वमेध करने से जो पुण्य होताहै उसकोप्राप्त होय न वह फल उग्रतप करके मिले औ न बड़ी २ द-क्षिणा करके युक्त यज्ञों से प्राप्तहोय जो मात्रासे प्राप्तहो-ताहै प्रणवमें जो प्लुतमात्राहै उसीकागृहस्थ औ योगियों को ध्यान करना उचित है अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्तिके लिये भी उसी का ध्यान करै इस भांति जो पुरुष जितेन्द्रिय औ शुचि होकर आत्माको जानै वह सब पदार्थोंको जानताहै इसकारण पाशुपत योगकरके आत्माका चिंतनकरै आत्मज्ञानी सदा पवित्र होतेहैं ऋक्, यजुः, साम औ उपनिषद् इनसबको अध्या-त्मचिंतनकरनेहारा ब्राह्मण योग के ज्ञानसे जानता

है लिंग देहसे रहित होकर देवमय होजाताहै औ जन्म मरण से छूट शाश्वतपदको प्राप्तहोताहै जिसभांतिपका फल पवनसे वृत्तको छोड़ दूर गिरताहै इसीभांति रुद्र के प्रणामसे पाप मनुष्यको त्याग देता है रुद्रका नमस्कार जैसा सब फलोंका देनेहाराहै ऐसा और देवता का नमस्कार नहीं है इससे मन वचन औ देह की नम्रतापूर्वक दश इन्द्रियोंका विस्तार करनेहारे ब्रह्म श्री महेश्वर की उपासनाकरे इसभांति ध्यानकरताहुआ जो देहको त्याग वह अपने तीन कुलों सहित शिवसायुज्य को प्राप्तहोय अथवा अरिष्टदेख मृत्युको समीपजान अविमुक्त क्षेत्र अर्थात् काशी में जाय किसी प्रकार से देह त्याग करे अथवा श्रीपर्वतमें शरीर छोड़े वहपुरुष निस्सन्देह शिव सायुज्यको प्राप्तहोय जीवों को मुक्ति देनेहारा अविमुक्तक्षेत्रहै इसकारणउसको सदा सेवै औ मरणसमय तो अवश्यही अविमुक्त क्षेत्रमेंजाय पहुँचै ॥

बानवे अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी जो काशी ऐसा पुण्य क्षेत्रहै तो आप उसका प्रभाव हमसे कथन करें अविमुक्त क्षेत्र का माहात्म्य विस्तारसे सुनने की हमारी इच्छाहै यह मुनिके वचनसुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो जैसा शिवजीने कथनकियाहै वैसा हम संक्षेप से वर्णन करते हैं विस्तार से तो करोड़ों वर्ष में ब्रह्माजी भी वर्णन नहीं करसकेहैं हमारी तो क्या सामर्थ्य है हे मुनीश्वरो पूर्वकाल में शिवजी विवाहकर हिमालय

की पुत्री श्रीपार्वतीजी तथा नन्दी आदि गणों को साथ ले हिमालय के शिखरसे चले औ अविमुक्त क्षेत्रमें आय अविमुक्तेश्वर लिंग को देख वहांहीं निवास करते भये वाराणसी,कुरुक्षेत्र, श्रीपर्वत, महालय,तुंगेश्वर और केदारमें जो पुरुष संन्यास ग्रहणकर निवासकरै वह दूसरे जन्ममें पाशुपत योग को प्राप्त होता है इस कारण अविमुक्त क्षेत्रमें निवासकर पाशुपत योगका सेवनकरै शिवजी अपनी इच्छासे एकउत्तम विमानबनाय उसमें पार्वती औ नंदीसहितबैठकर सब देवोद्यान अर्थात् आनंद वन पार्वतीजीको दिखातेभये और प्रसन्न होकर अविमुक्तक्षेत्रका माहात्म्य औ प्रशंसा पार्वतीजीके प्रति श्रीशिवजी आपहीकथनकरनेलगे कि हेपार्वतीजी देखो यह हमारा आनन्द वन अर्थात् अविमुक्तक्षेत्र फूलेहुये गुल्म औ भांति २ की लताओंसे चारों ओर शोभित होरहा है प्रियंगु तमाल कांटों करके युक्त केतकीके वृक्ष अति सुगन्ध फूलों वाले बकुल अशोक पुन्नाग आदि हजारों वृक्ष फूलोंसे लदरहेहैं जिनमें भ्रमरों की पंक्ति आनन्द से मधुपान करती हुई गुंजार कररहीहैं कहीं सरोवरों में कमल फूल रहेहैं अति मधुर वाणीवाले हंस सारस चक्रवाक औ दात्यूह आदि पक्षी क्रीड़ा कररहेहैं कहीं मयूर बोलरहेहैं कहींफूलेहुये आम वृक्षोंपर लता लिपट रही हैं विद्याधर सिद्ध चारण आदि वृक्षोंके नीचे बैठे हुये आनन्द से गान कररहे हैं अप्सरा नृत्य करती हैं भांति २ के पक्षी अपनी मीठी वाणीसे मन हरते हैं किसी ओर हारीत नामक पक्षी बोलरहेहैं कहीं हरी २

दूर्वाको कस्तूरीमृग चरतेहैं औ सिंहकी गर्जनासुनकर भी नहीं डरते हैं यह वन फूलेकमल उत्पल कुमुद आदिकों से भरेहुये सरोवरों से लताओं करके आलिङ्गित ऊंचे २ पुष्पित वृक्षों करके मयूर पारावत हंस कोकिल आदि पक्षियोंके मीठे शब्दों करके औ मधुपान करके मत्त भ्रमरों के गुञ्जार करके चित्तको अत्यंत आनंद देताहै कहीं वापियों के तटपर किन्नरोंकी नारी विहार कररहीहैं किसी ओर विद्याधरांगणा वृक्षों में लटकती हुई दोला अर्थात् हिंडोलों पर बैठकर झूलती हैं औ मधुर २ शब्द से गातीहैं वृक्षोंकी घनी औ ठंढीछाया में कोमल २ दूर्वाके अंकुर चरकर शीतल जलपानकर अलसाये हुये हरिण बैठेहैं हंसोंके पक्ष पवनसे उड़ेहुये कमलों के पराग से भूमि पीतवर्ण होरहीहै कदली वृक्षोंके नीचे मयूर नाचरहेहैं औ गिरेहुये उनके पक्षोंसे भूमि विचित्र होरहीहै कहीं वृक्षोंके नीचे मनोहर शिलाओं पर बैठी किन्नरी वीणा बजाती औ मीठे स्वरसे गातीहैं मुनियोंके आश्रमोंके समीप हरे गोबरसे लिपी हुई भूमिपर भांति २ के पुष्प बिखररहेहैं औ मुनियोंके आश्रम वृक्षोंसे भरे अतिशोभा देरहेहैं कहीं मूलसे लेकर ऊपरतक पनसवृक्ष फल रहेहैं कहीं अति मुक्तक लताकी कुंजोंमें अपने प्रियों के साथ विहार करतीहुई सिद्धांगणाओंके नूपुरोंका शब्द सुनपड़ताहै प्रियंगुकी औ आम्रकी मंजरियोंपर भ्रमरियोंका कोलाहल होरहा है चंद्रकिरणोंके तुल्य शुक्लवर्ण तिलकपुष्प सिंदूर कुंकुम अथवा कुसुमके समान भासमान अशोकके फूलसुवर्ण

वर्ण कर्णिकार कुसुम इसभांति औरभी विद्रुमके तुल्य रक्तवर्ण पुष्प अंजन के समान कृष्णपुष्प औ हरित पीत आदि भांति २ के पुष्प भूमिपर वृक्षोंसे गिरतेहैं इसवनमें पुन्नाग वृक्षोंपर सैकड़ों पक्षियों का बोलना अपने फूलों के गुच्छोंके भारसे अशोक वृक्षोंका झुक जाना फूले कमलों में भ्रमरों का क्रीड़ा करना औ अति मनोहर एकांत औ श्रमको हरनेहारे सघन लता कुंजोंकाहोना मनको अतिही मोहित करताहै इसभांति तीनलोकके नाथ श्रीमहादेवजी अति मनोहर वनकी शोभा पार्वतीजी औ गणों को दिखाते हुये वन विहार करनेलगे भांति २ के पुष्पलेकर पार्वतीजीके प्रति अंगोंको भूषित करते भये पार्वतीजी भी अपने हाथोंसे अति उत्तम पुष्प तोड़कर शिवजी को अलंकृत करती भई इसभांति औरभी सबगण परस्पर पुष्पक्रीड़ा करने लगे पार्वती भक्तिसे पुष्पों करके शिवजी की पूजाकर अति रमणीय उद्यानकी शोभा देख नंदी आदि गणों सहित हाथजोर नम्रहो शिवजीकेप्रति कथन करनेलगीं कि हेमहाराज इस दिव्य वनकी शोभा देखि अतिही मन मुदित भया अब इस अविमुक्त क्षेत्रका माहात्म्य सुनना चाहतीहूं आप कृपाकर इस क्षेत्रके गुण वर्णन कीजिये सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह पार्वतीजी की प्रार्थना सुन प्रेमसे आलिंगन कर उनके मुखकमलकी सुगन्ध आघ्राण कर हँसतेहुये शिवजी कथन करनेलगे कि हे प्रिये यह वाराणसी नामक हमारा गुप्त क्षेत्रहै औ सबजीवों को मोक्ष देनेहारा है अनेक चिह्नोंको धारण

करनेहारे सिद्ध हमारे लोककी प्राप्तिकी इच्छासे पाशु-
पत व्रतमें स्थितहो सब इंद्रियों को जीतकर इसी क्षेत्र
में योगका अभ्यास करते हैं अनेक वृक्षों से परिपूर्ण
भांति २ के पक्षियों करके शब्दायमान कमल उत्पल
कुमुद आदिसे युक्त सरोवरों करके शोभित औ अप्सरा
गंधर्व विद्याधरों करके सेवित इसी क्षेत्रमें हमको भी
वास करना बहुत रुचताहै जिसभांति हमारे भक्त सब
कर्मोंको हमारे विषे अर्पणकर इसक्षेत्र में मुक्ति पाते हैं
इसभांति और क्षेत्रमें मुक्ति नहीं होती यहां प्राणत्याग
करने से सबको मुक्ति मिलती है यह हमारा पुर गुप्तसे
गुप्तहै इसके प्रभावको ब्रह्मादिक देवता अथवा मोक्षकी
इच्छावाले सिद्ध जानते हैं यह परमक्षेत्रहै परागति है
हमने कभी इस क्षेत्रका त्याग नहीं किया औ न करेंगे
इसीसे इसका नाम अविमुक्त क्षेत्रहै नैमिष कुरुक्षेत्र पु-
ष्कर गंगाद्वार आदि क्षेत्रों के स्नान अथवा सेवनसे
मोक्ष नहीं मिलता औ यहां मोक्षकी प्राप्तिहोतीहै इसी
कारण और क्षेत्रोंसे यह उत्तमहै प्रयाग में मोक्षहोताहै
अथवा यहां मोक्षहोताहै परंतु प्रयागसे भी यह क्षेत्र
बढ़करहै धर्मकी उपनिषद् सत्य औ मोक्षकी उपनि-
षद् शमहै यह सब जानते हैं परंतु तीर्थ क्षेत्रकी उप-
निषद् को ऋषिभी नहीं जानते इसक्षेत्र में खाते पीते
सोते क्रीड़ाकरते और भी भले बुरे काम करते किसी
समय जीव शरीरको त्यागे परंतु मोक्षही पाताहै हजारों
पापकर पिशाच होकर काशी में रहना अच्छाहै स्वर्ग
में इन्द्र होकर निवास करना इसकेआगे कुछभी नहीं

इसलिये मुक्तिके अर्थ अविमुक्त क्षेत्रही सेवनीय है हमारा भक्त बड़ा तपस्वी जैगीषव्य मुनि इसी क्षेत्रके माहात्म्यसे परमसिद्धिको प्राप्तभया जैगीषव्यकी गुहा योगियोंके लिये उत्तम स्थानहै उस गुफामें बैठ हमारा ध्यान करने से योग का अग्नि अत्यंत दीप्त होता है औ देवताओं को भी दुर्लभ कैवल्य पदको योगी प्राप्त होताहै सब सिद्धांत जाननेहारे औ अव्यक्त लिंग मुनि इसी क्षेत्रमें मोक्ष पाते हैं जो और स्थानोंमें अतिदुर्लभहै जे यहां निवासकरें उनको हम योगका उपदेशकरते हैं औ अपनासायुज्य देते हैं कुवेर इसीक्षेत्रमें हमारा आराधनकर सिद्धिको प्राप्तभयाहै संवर्तमुनि औ पराशरके पुत्र हमारे परमभक्त वेदव्यास इसक्षेत्रमेंही हमारा सेवनकर सिद्धिपावेंगे औ व्यासजी इसीक्षेत्रमें रमणकरेंगे सब देवऋषियों सहित ब्रह्माजी विष्णुजी सूर्य औ इंद्र आदि सब देवता यहांही हमारी उपासना करतेहैं और भी दिव्य योगी गुप्तरूपसे यहां रहकर एकाग्र चित्तहो भक्तिसे हमारा आराधन करतेहैं विषयोंमें आसक्तचित्त अधर्मी मनुष्य भी यहां प्राणत्यागकरें तो जन्म मरण के धन्धे से छूट जायँ फिर निर्मल जितेन्द्रियव्रती हमारे भक्त सब संगछोड़ जे यहां निवासकरें औ प्राण त्यागें उनको तो मोक्ष क्या दुर्लभहै हज़ार जन्म में भी योगी को वह फल नहीं प्राप्त होता जो यहां प्राणत्याग करनेहारे साधारण जीव को मिलताहै यहां ब्रह्माजीने दिव्य कैलास भवन नामक हमाराप्रासाद स्थापन कियाहै इस स्थान का नाम गोप्रेक्षक है इस स्थानमें आय जो पुरुष

हमारा दर्शन करै वह सब पापों से मुक्त होय सद्गति पावै यहांहीं गौओं के पवित्र दुग्ध से ब्रह्माजीने कपिलाह्रद नाम तीर्थ रचाहै औ वृषभध्वज रूपसे हमारा स्थापन कियाहै जो कपिलाह्रदमें स्नानकर वृषभध्वज का दर्शनकरै वह पुण्यभागी होय भद्रतोय नामकतीर्थ ब्रह्माजीने बनाया वहांहीं सबदेवताओंने आराधन कर हमको प्रसन्न किया औ यह प्रार्थना करी कि हे ईश आप उपशमको प्राप्तहोयँ इसकारण उपशमनामकलिंग ब्रह्माजी स्थापन करने लगे बीच में वही लिंग लेकर विष्णुजीने स्थापन करदिया तब ब्रह्माजी मनमें क्रोध कर बोले कि हमारे लायेहुये लिंगको आपने क्यों स्थापन किया यहसुन विष्णुजीने कहा कि हे ब्रह्माजी हमारी शिवजी में अति भक्ति है इसकारण यह लिंगस्थापन हमनेकरदिया परन्तु आप मनमें क्षोभ न करें यह लिंग आपके नाम से ही प्रसिद्धहोगा हे पार्वति तब से यह लिंग हिरण्यगर्भ कहाया जो इसका दर्शनकरै वह हमारे लोक को जाय दूसरा लिंग स्वर्लीनेश्वर नामक ब्रह्माजी ने स्थापन किया इसके समीप जो प्राण त्याग करै वह जन्म मरणसे छूटै औ योगियोंकी गतिको प्राप्तहोय इस स्थानमें देवकंटक बड़ा दुष्टदैत्य हमने व्याघ्र का रूप धारण कर मारा इस कारण इसस्थान में हम व्याघ्रेश्वर नामसे स्थितभये व्याघ्रेश्वरका दर्शन करनेहारा कभी दुर्गतिको नहीं प्राप्त होता हे पार्वति उत्पल औ विदल नाम दो दैत्य बड़े प्रबलथे उनकामृत्यु ब्रह्माजी ने स्त्री के हाथसे होना कल्पना किया था इस

कारण दोनों तुमने अपने कंदुकसे मारे वह कन्दुकलिंग रूपसे स्थितहुआ हमनेभी उसमेंआयकर निवासकिया इसकारण अतिपुण्यदायक यहस्थान ज्येष्ठस्थान कहा-या इसकेचारोंओर देवताओंनेभी अनेकलिंग स्थापन किये यहांजो दर्शनकरै वह दूसरेजन्ममें हमारागणहोय तुम्हारे पिता हिमालयने यहक्षेत्र हमारा प्रियजान शैले-श्वर नाम लिंग यहां स्थापन किया उसके दर्शन करने-हारा दुर्गतिको नहींप्राप्तहोता यह सब पापोंके दूरकरने-हारी वरुणानदी इसक्षेत्रको भूषित करतीहुई गङ्गाजीके साथ संगम करती है दोनों नदियों के संगमपर ब्रह्मा-जीने संगमेश्वर नामकलिंग स्थापन कियाहै संगम में स्नान कर पवित्रहो जो पुरुष संगमेश्वरका दर्शन करै उसको जन्मकाभय नहीं होता यहक्षेत्रके मध्यमें मोक्षकी इच्छावाले योगी औ सिद्धोंका स्थानहै यहां मध्यमेश्वर नामक लिंग आपही प्रकटभयाहै मध्यमेश्वरका दर्शन करके जन्म सफल होताहै यह लिंग भृगुके पुत्र शुक्रा-चार्य ने अपने नाम से स्थापन कियाहै इस शुक्रेश्वर नाम लिंगका जो दर्शनकरै वह सब पापों से मुक्त होय औ जन्म मरणसे छूटै पूर्वकालमें एक दैत्य ब्रह्माजी से वर पाय जम्बुक अर्थात् शृगाल का रूपधार सबको पीड़ा देनेलगा उसको हमने इस स्थानमें मारा तबसे यहां जम्बुकेश्वर नामक लिंग हमारा देवताओं ने स्था-पनकिया जम्बुकेश्वर का दर्शन करने से सब मनोरथ सिद्धहोते हैं ये सब लिंग शुक्र आदि ग्रहों ने स्थापन किये हैं इनके दर्शनसे भी सबकामना सिद्धहोती हैं इस

भांति हे पार्वति इस क्षेत्रमें हमारे निवासस्थान कहेहैं परंतु मुख्य२ आपसे कहे हैं और भी यह गुप्त बातसुनो कि यहचारों ओर चारकोसकाक्षेत्रहै इसके भीतर मृत्युहोय तो अवश्य मुक्तिहोतीहै महालय पर्वत में औ केदारमें हमारा दर्शन करके गणहोताहै औ यहां मुक्तही होजाताहै पृथ्वीपर केदार, मध्यमेश्वर औ महालय ये तीन हमारे पुण्यक्षेत्रहैं परंतु यह क्षेत्र तीनों से उत्तमहै क्योंकि यहां बैठकर सबलोक रचे हैं कभी इसक्षेत्रका हमनेत्याग नहीं किया इससे अविमुक्त कहाया अविमुक्तेश्वर लिंग अर्थात् विश्वनाथ का जो दर्शनकरै वह सबपापों से औ पशुपाश से मुक्तहोय शैलेश्वर, संगमेश्वर,स्वर्लीनेश्वर, मध्यमेश्वर, गोप्रेक्ष, ईशान, वृषभध्वज, हिरण्यगर्भ, उपशांत, शुक्रेश्वर, व्याघ्रेश्वर, जम्बुकेश्वर औ ज्येष्ठ स्थान निवासी शिवका दर्शन करनेहारा पुरुष दुःखके सागर इस संसार में कभी नहीं आता सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इतना कह महादेवजी ने चारोंओर देखा उनकी दृष्टि पड़तेही वह सब देश देदीप्यमान होगया औ भस्मधारण किये बड़े तपस्वी महा माहेश्वर सैकड़ों पाशुपत सिद्ध आय २ श्रीमहादेवजी के चरण कमलपर प्रणाम कर आत्मामें शिवका ध्यान करतेहुये मानो शिवमें लीनही होगये हों ध्यानमें स्थित होगये इसी अवसरमें शिवजी ने विराट्रूप धारण किया मानो इसरूपसे अभी सब जगत्का प्रलयकरेंगे उसरूपकी ओर पार्व्वती जी भी न देखसकीं औ विचार किया कि यह रूप तो हमने कभी नहीं देखा यह इनका वास्तव

रूपहै यह मनमें विचार आपभी प्रकृति रूपमें स्थित हो श्री महादेवजी को देखती भई वे योगी भी शिवका ध्यान करते हुये लिंग शरीर को दग्धकर सबपापों के हरनेहारे पंचाक्षर मंत्रके बीजको स्मरण करते २ पुरुष रूप परमेश्वर के हृदय में लीनहोगये औ शिवजी भी अपना पहिला सौम्यरूपही धारणकरते भये यह देख शिवजी के चरणोंपर प्रणामकर पार्वती जी पूछती भई कि महाराज ये आपके शरीरमें कौन लीनहोगये आप कृपाकर मुझसे कथनकरैं यह सुन महादेवजी बोले कि हे पार्वति जो मेरे भक्त व्रतमें स्थित होकर इसक्षेत्रमें योग का अभ्यास करते हैं उनके लिये इसमूर्त्तिको हम धारते हैं औ क्षेत्रके प्रभाव से औ हमारी दृढ़भक्ति से एकही जन्ममें उनके ऊपर हम अनुग्रहकरते हैं इसीलिये ब्रह्मादिक देवता, सिद्ध, तपस्वी, वेदवेत्ता ब्राह्मण इसक्षेत्र का सेवन करतेहैं प्रति महीने की अष्टमी, चतुर्दशी, चंद्रसूर्य के ग्रहण विषुव औ अयन संक्रांति औ कार्त्तिकी पूर्णिमा आदि सब पर्वोंमें विशेष करके इसक्षेत्रका सब सेवन करतेहैं वाराणसी में उत्तरवाहिनी सब पाप हरने हारी हमारे जटा जूट से निकली औ तुम्हारे पिता हिमालयकी कन्या श्री गंगा जी में पर्व के दिन जो आते हैं उनको सुनो सैकड़ों तीर्थों सहित कुरुक्षेत्र, पुष्कर, नैमिष, प्रयाग, पृथूदक, द्रुमक्षेत्र आदि अनेक तीर्थ, देवता, ऋषि, संध्या-ऋतु, सब नदी, सब सरोवर, सातों समुद्र औरभी सब देवतीर्थ प्रति पर्व में भागीरथी के बीच आयकर निवास करते हैं अविमुक्तेश्वर को देख त्रिविष्टपको देख

औ कालभैरव के समीप प्राप्तहोय सब पापों से मुक्त होजाते हैं पृथिवी के सब पुण्यस्थान पर्व दिनों में अवश्य ही अविमुक्त क्षेत्र में प्रवेश करते हैं केदारेश्वर, महालयेश्वर, मध्यमेश्वर, पाशुपतेश्वर, शंकुकर्णेश्वर, दोनों गोकर्णेश्वर, द्रुमचंडेश्वर, भद्रेश्वर, स्थानेश्वर, कालेश्वर, अजेश्वर, भैरवेश्वर, ओंकारेश्वर, अमरेश्वर, महाकाल, ज्योतिषेश्वर, भस्मगात्रेश्वर आदि अरसठ क्षेत्र भूमिपर हमारे मुख्यहैं ये सब पर्व दिनों में वाराणसी के बीच प्रवेश करते हैं इसीसे इस क्षेत्रमें मृतहुआ जीव मुक्तिपाताहै गंगास्नानकर विश्वनाथ का दर्शनकरै तो उसीक्षण हजारों यज्ञों के फलको प्राप्तहोताहै जितने हमारे क्षेत्र आकाशमें भूमि पर पर्वतोंपर हैं सबमें यह मुख्यहै वेदमें अवि पापको कहतेहैं उससे मुक्त अर्थात् रहित होने करके भी यह क्षेत्र अविमुक्त कहाताहै सूतजीकहते हैं किहे मुनीश्वरो इतना पार्वतीजीके प्रतिकथनकर महादेवजी कहते भये कि हे प्रिये इस हमारे घर अविमुक्त क्षेत्र को भली भांति देख चलो इतना कह पार्वती जी को सब अविमुक्त क्षेत्र दिखाय श्री महादेवजी पार्वती औ सबगणों सहित श्री पर्वतको जातेभये सर्वव्यापी औ सर्वात्मा श्री महादेवजी पार्वतीजी सहित अविमुक्त क्षेत्रमें भी निवास करते भये श्री पर्वतमें जाय पार्वती जीके प्रति कहने लगे किहे पार्व्वति कुंडीप्रभ, वैश्रवणेश्वर, आशालिंग, अचलेश्वर, विष्णु भगवान् के स्थापन किये रामेश्वर, क्षेत्र के दक्षिण द्वार में स्थित कुण्डलेश्वर, पूर्वद्वार में त्रिपुरांतक पर्वत के साथही वृद्धिको

प्राप्त औ सबदेवों करके पूजित मध्यमेश्वर, देवताओं के स्थापित औ तीनलोकमें प्रसिद्ध अमरेश्वर, गोचर्मेश्वर, इन्द्रेश्वर किसी कार्यके लिये ब्रह्माजीके स्थापित कर्मेश्वर हमारा निवास स्थान सिद्धवट ब्रह्माजीकाबनायाहुआ अजबिल बिलेश्वरमें हमारी दिव्य पादुका, शृङ्गाटकके आकार अर्थात् त्रिकोण शृङ्गाटक नाम पर्वत में शृङ्गाटकेश्वर श्रीदेवी के स्थापित मल्लिकार्ज्जुन युग के आदि में स्थापित किये रजेश्वर, गजेश्वर, बैशाखेश्वर,कपोतेश्वर रुद्र के करोड़ों गणों करके सेवित औ सब से अधिक कोटीश्वर तीर्थ, दक्षिण में ब्रह्माजी का स्थापन किया द्विवेदकुल संज्ञक उत्तर में बिष्णुजी का स्थापन किया शैलज हमारा स्थापन कियाहुआ बड़ा भारी लिंग पश्चिम पर्वत में ब्रह्मेश्वर ब्रह्माजी सहित सब मुनियों करके शोभित स्थानको हमने अलंकृत किया इसलिये अलंगृह स्थान कहाया उस अलंगृहको औ उसके समीप तीर्थको हमारे व्योमलिंगको स्कंदके स्थापन किये कदम्बेश्वर नन्द आदिकों के स्थापित गोमंडलेश्वर औ देवहृदके ओर पास इन्द्र आदि देवताओं के स्थापित और भी उत्तम२ शिवलिंगों का तुम दर्शनकरो औ हे पार्वति हारपुर के समीप तुम्हारा हार गिरने से उत्पन्न भये हारकुण्ड नामक तीर्थ को शिवरुद्र पुरमें तुम्हारे पिताके स्थापित अचलेश्वरको आपकी पुत्री चण्डिका के स्थापन किये चण्डिकेश्वरको औ उसके समीप अम्बिकातीर्थ रुचिकेश्वर औ कपिलधारा आदि तीर्थोंको आप देखो हे पार्वति इन तीर्थों में जो हमारा

औ कालभैरव के समीप प्राप्तहोय सब पापों से मुक्त हो-जाते हैं पृथिवी के सब पुण्यस्थान पर्व दिनों में अवश्य ही अविमुक्त क्षेत्र में प्रवेश करते हैं केदारेश्वर, महा-लयेश्वर, मध्यमेश्वर, पाशुपतेश्वर, शंकुकर्णेश्वर, दोनों गोकर्णेश्वर, द्रुमचंडेश्वर, भद्रेश्वर, स्थानेश्वर, काले-श्वर, अजेश्वर, भैरवेश्वर, ओंकारेश्वर, अमरेश्वर, म-हाकाल, ज्योतिषेश्वर, भस्मगात्रेश्वर आदि अरसठ क्षेत्र भूमिपर हमारे मुख्यहैं येसब पर्व दिनों में वाराण-सी के बीच प्रवेश करते हैं इसीसे इस क्षेत्रमें मृतहुआ जीव मुक्तिपाताहै गंगास्नानकर विश्वनाथ का दर्शनकरै तो उसीक्षण हजारों यज्ञों के फलको प्राप्तहोताहै जितने हमारे क्षेत्र आकाशमें भूमि पर पर्वतोंपर हैं सबमें यह मु-ख्यहै वेदमें अवि पापको कहतेहैं उससे मुक्त अर्थात् रहित होने करके भी यह क्षेत्र अविमुक्त कहाताहै सूतजीकहते हैं किहे मुनीश्वरो इतना पार्वतीजीके प्रतिकथनकर महा देवजी कहते भये कि हे प्रिये इस हमारे घर अविमुक्त क्षेत्र को भली भांति देख चलो इतना कह पार्वती जी को सब अविमुक्त क्षेत्र दिखाय श्री महादेवजी पार्वती औ सबगणों सहित श्री पर्वतको जातेभये सर्वव्यापी औ सर्वात्मा श्री महादेवजी पार्वतीजी सहित अविमुक्त क्षेत्रमें भी निवास करते भये श्री पर्वतमें जाय पार्वती जीके प्रति कहने लगे किहे पार्व्वति कुंडीप्रभ, वैश्रवणे-श्वर, आशालिंग, अचलेश्वर, विष्णु भगवान् के स्थापन किये रामेश्वर, क्षेत्र के दक्षिण द्वार में स्थित कुण्डले-श्वर, पूर्व्वद्वार में त्रिपुरांतक पर्वत के साथही वृद्धिको

प्राप्त औ सबदेवों करके पूजित मध्यमेश्वर, देवताओं के स्थापित औ तीनलोकमें प्रसिद्ध अमरेश्वर, गोचर्मेश्वर, इन्द्रेश्वर किसी कार्यके लिये ब्रह्माजीके स्थापित कर्मेश्वर हमारा निवास स्थान सिद्धवट ब्रह्माजीकाबनायाहुआ अजबिल बिलेश्वरमें हमारी दिव्य पादुका, शृङ्गाटकके आकार अर्थात् त्रिकोण शृङ्गाटक नाम पर्वत में शृङ्गाटकेश्वर श्रीदेवी के स्थापित मल्लिकार्ज्जुन युग के आदि में स्थापित किये रजेश्वर, गजेश्वर, वैशाखेश्वर,कपोतेश्वर रुद्र के करोड़ों गणों करके सेवित औ सब से अधिक कोटीश्वर तीर्थ, दक्षिण में ब्रह्माजी का स्थापन किया द्विवेदकुल संज्ञक उत्तर में विष्णुजी का स्थापन किया शैलज हमारा स्थापन कियाहुआ बड़ा भारी लिंग पश्चिम पर्वत में ब्रह्मेश्वर ब्रह्माजी सहित सब मुनियों करके शोभित स्थानको हमने अलंकृत किया इसलिये अलंगृह स्थान कहाया उस अलंगृहको औ उसके समीप तीर्थको हमारे व्योमालिंगको स्कंदके स्थापन किये कदम्बेश्वर नन्द आदिकों के स्थापित गोमंडलेश्वर औ देवहृदके ओर पास इन्द्रआदि देवताओं के स्थापित और भी उत्तम२ शिवलिंगों का तुम दर्शनकरो औ हे पार्वति हारपुर के समीप तुम्हारा हार गिरने से उत्पन्न भये हारकुण्ड नामक तीर्थ को शिवरुद्र पुरमें तुम्हारे पिताके स्थापित अचलेश्वरको आपकी पुत्री चण्डिका के स्थापन किये चण्डिकेश्वरको औ उसके समीप अम्बिकातीर्थ रुचिकेश्वर औ कपिलधारा आदि तीर्थोंको आप देखो हे पार्वति इन तीर्थों में जो हमारा

पूजनकरै वह हमारे लोकमें निवासकरै श्रीशैलमें जो ब्राह्मण प्राण त्यागकरै वह मुक्ति पावे जैसे काशी में मुक्ति होतीहै वैसेही यहांभी होती है इन स्थानों में जो पुरुष हमको विधि पूर्वक घृतसे महास्नान करावै वह हमारे सायुज्यको प्राप्तहोताहै सौ पल घृत से स्नान पच्चीस पलसे अभ्यंग अपने त्रिशूल के अग्रसे दग्ध करावे दोहजार पल गौके घृतसे महास्नान करावैं और शर्करा आदि द्रव्यों से लिंगको शुद्धकर पवित्र जलसे स्नान करावे शर्करा आदिकों से लिंगका मार्जन करके सौ यज्ञों के फलको प्राप्तहोताहै स्नान कराने से दशहजार यज्ञका फल पूजासे लक्ष यज्ञ का फल औ शिव लिङ्गके आगे गीत नृत्य आदिसे अनन्तयज्ञका फल मिलताहै महास्नानके बदले आठगुणे केवल शुद्धजलसे अथवा गन्ध जलसे भक्ति करके स्नान करावै औ पचीस पल शर्करादि द्रव्यों करके सब अनुलेपनादि करावे तो भी महास्नान के फलको प्राप्तहोय बिल्वपत्र शमीपुष्प औ कमल आदि और भी भांति २ के पुष्प चढ़ावे परंतु बिल्वपत्रका कभी त्याग न करै अर्थात् नया बिल्वपत्र नमिलै तो पूर्वदिनका चढ़ाहुआ बिल्वपत्रही जलसे धोकर लिंगपर चढ़ादेवै चारद्रोण अथवा आठ द्रोण अन्नतचढ़ावे औ इतनाही नैवेद्य अर्पण करै परंतु दरिद्री ब्राह्मणको एक आढ़क अर्थात् द्रोणकी चौथाई नैवेद्य चढ़ाने से भी सौ द्रोण नैवेद्य का फल मिलताहै भेरी, मृदंग, पटह, मुरज, वीणाआदि भांति २ के बाजे बजावे औ जागरणकरै पीछे अपने पुत्र स्त्री बन्धुओं को

साथले प्रदक्षिणाकर हाथजोड़ ॥ द्रव्यहीनंक्रियाहीनं श्रद्धाहीनंसुरेश्वर ॥ कृतंवाकृतंवापिक्षंतुमर्हसिशंकर) इसमंत्रको पढ़ प्रार्थना करै औ रुद्राध्याय त्वरित औ शांति आदि पढ़ पंचाक्षर का जपकरै इसप्रकार जो पुरुष महा स्नान औ पूजाकरै वह सब यज्ञ औ सब तीर्थों के फलको प्राप्तहोय हमारे सायुज्यको पावै हमारी प्रीति के लिये हमारे भक्तों को यह महा स्नान विधिपूर्वक अवश्य करनाचाहिये जो न करैं वे हमारे भक्त भी नहीं यह शिवजी का वचन सुन श्रीपार्वतीजी काशीमें जाय अविमुक्तेश्वर लिंगको दूध और घृत से स्नान कराय भक्तिसे पूजन करती भई मंदर पर्वतने काशी में बहुत तपकिया इसलिये उसके ऊपर अनुग्रहकर शिवजी नें अपना निवास क्षेत्र मन्दराचलमें भी बनाया औ मंदराचलमें ही शिवजी ने हिरण्याक्षके पुत्र अंधकासुर को अनुग्रह कर अपना गण ठहराया सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह सब कथा का सर्वस्व हमने आदर से आपको श्रवणकराया इस क्षेत्रके माहात्म्यको जो पढ़ै अथवा सुनै वह सब क्षेत्रों के पुण्यको पावै और जो पुरुष जितेन्द्रिय ब्राह्मण को सुनावै वह भी यज्ञों के फल को प्राप्तहोय ॥

तिरानबे अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी अंधकासुर क्योंकर शिवजीका गणभया यह आप वर्णनकरैं यह सुन सुतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो अंधकासुर

जिसभांति शिवजी का गणभया औ जो २ वर उसने पाये सबहम संक्षेपसे वर्णन करतेहैं हिरण्याक्षदैत्यका पुत्र कि बड़ा पराक्रमी अन्धकनामभया उसने बड़ेभारी तप से ब्रह्माजीको प्रसन्न कर बड़ापराक्रम पाया और अवध्यभया सब लोकोंको जीत स्वर्गको जाय जीता औ इंद्रको बड़ात्रास दिया औ सब देवताओं को मारपीट बांध गिराय स्वर्ग से बाहर किया देवताभी व्याकुलहो विष्णुजीको साथले अंधकके भयसे मन्दराचल पर्वत में गये और शिवजीके आगे सब दुःख जाय रोया कि महाराज अंधकासुरने हमारी बड़ी दुर्दशाकरी अब आप के बिना कोई हमारा रक्षक नहीं इसी अवसरमें देवताओं के पीछे लगाहुआ अंधकासुरभी मन्दराचल में जायपहुँचा अंधकको आयेजान अपने गणोंको साथ ले शिवजीभी उसके सम्मुख जातेभये औ ब्रह्मा, विष्णु इन्द्र आदि देवता और सब ऋषि जय २ शब्द करने लगे महादेवजीने पहिले तो अंधकासुरके करोड़ों दैत्यों को दग्ध किया पीछे अंधकको भी त्रिशूल से वेधलिया तबतो सब देवता आनंद से गर्जने लगे मुनि नाचने लगे औ शिवजी के ऊपर पुष्पवृष्टि होने लगी त्रिशूलमें प्रोत हुआ अंधकासुरभी विचार करनेलगा कि मैंने जन्मांतरमें शिवजीका बहुत आराधन कियाहै उसीपुण्य से शिवजीने अपने हाथ से मुझे त्रिशूल करके वेधा जो पुरुष मरण के समय एकबार भी शिवस्मरण करै वह शिवसायुज्य पावै फिर बारम्बार शिवस्मरण करनेहारे की तो क्या बातहै ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि

सब देवता इनकीही शरण में परेहैं इससे इनकी शरण में ही रहना उत्तम बातहै यह मनमें विचार अंधकासुर शिवजीकी स्तुति करने लगा शिवजीभी त्रिशूलमें बिंधे हुये अंधकके मुखसेस्तुति सुनकर प्रसन्न भये और दया से कहनेलगे कि हेदैत्येन्द्र हम तुझसे प्रसन्नहैं वरमांग वह भी शिवजीका दयायुक्त वचन सुन गद्गद्वाणी से कहने लगा कि महाराज मैं तो केवल आपके चरणोंमें दृढ़ भक्ति चाहताहूं शिवजीभी उसका दृढ़ निश्चयदेख त्रिशूल से उतार अपनी भक्ति देकर गणोंमें मुख्य करते भये इन्द्रादि देवता भी अंधक को शिवजीका गण भया देख सब उसको प्रणाम करते भये॥

चौरानबे अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि अंधकासुरकी कथासुन पूछते हैं कि हेसूतजी अंधककेपिता हिरण्याक्षको विष्णुभगवान् ने वाराहरूपधर क्योंकर मारा औ विष्णुजीके वराह अवतार की दाढ़ शिवजीका भूषण क्योंकर भई यह आप हमको विस्तारसे श्रवण करावें यह मुनीयोंका प्रश्नसुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो हिरण्यकशिपुका भ्राता और अंधक का पिताहिरण्याक्ष बड़ा प्रतापी भया वह सब देवताओं को जीत इस भूमिको रसातलमें उठालेगया और वहांजाय अपने कारागृहमें भूमिको रखदिया देवताभी हिरण्याक्ष से मार खाय भूमिगँवाय दुःखपाय अतिदीन हो विष्णुभगवान् की शरण में गये और भूमिका बन्धन में पड़ना तथा अपना पराजय पाना भग-

वान्‌को कह सुनाया भगवान्‌भी उनका वचन सुन भूमि
का दुःखहरने के लिये लिंगकी उत्पत्ति के समय ब्रह्माजी
के संग जो रूप धराथा वही यज्ञवाराहका रूप धरते भये
औ अपनी तीक्ष्ण दंष्ट्रासे हिरण्याक्षको मार रसातलसे
भूमिको उठालाये और अपने स्थानमें स्थापन किया
जिस भांति सब कल्पों में किया करते हैं तबतो सब दे
वता बहुत प्रसन्न भये औ इन्द्रादि देवताओं सहित
ब्रह्माजी हाथजोड़ स्तुति करने लगे॥

ब्रह्मोवाच॥ शाश्वतायवराहायदंष्ट्रिणेदण्डिनेनमः।
नारायणायशर्वायब्रह्मणेपरमात्मने १ कर्त्रेधर्त्रेधरायास्तु
हर्त्रेदेवारिणांस्वयम्।कर्त्रेनेत्रेसुरेंद्राणांशास्त्रेचसकलस्य
च २ त्वमष्टमूर्त्तिस्त्वमनन्तमूर्त्तिस्त्वमादिदेवस्त्वमनन्त
वेदितः॥ त्वयाकृतंसर्वमिदंप्रसीदसुरेशलोकेशवराहवि
ष्णो ३ तथैकदंष्ट्राग्रमुखाग्रकोटिभागैकभागार्द्धतमेनवि
ष्णो॥हताःक्षणात्कामददैत्यमुख्याःस्वदंष्ट्रकोट्यासहपुत्र
भृत्यैः ४ त्वयोद्धृतादेवधराधरेशधराधराकारधृताग्रदंष्ट्रा॥
धराधरैःसर्वजनैःसमुद्रैःसुरासुरैःसेवितचन्द्रचक्र ५ त्वये
वदेवेशविभोकृतश्चजयःसुराणामसुरेश्वराणाम्॥ अ
होप्रदत्तस्तुवरःप्रसीदवाग्देवतावारिजसंभवाय ६ तव
रोम्णिदेवसकलामरेश्वरानयनद्वयेशशिरवीपदद्वये॥
निहितारसातलगतावसुन्धरातवपृष्ठतः सकलतारकाद
यः ७ जगतांहितायभवतावसुन्धराभगवन्रसातलपु
टंगतातदा। अचलोद्धृताचभगवंस्त्वयैवतत्सकलंत्वयं
वहिधृतंजगद्गुरो ८॥

१ आर्षो ह्रस्वः

इस प्रकार ब्रह्माजी भगवान्की स्तुति करते भये भगवान् भी प्रसन्नहो ब्रह्माजी सहित सब देवोंको अनेक उत्तम २ वरदेते सब मुनिभी भूमिको अपने स्थानपर प्राप्तभया देख अति प्रसन्न है विष्णुभगवान् के समीपही स्थित भूमि की प्रार्थना करते भये अनेनैववराहेण चोद्धृतासिवरप्रदे ॥ कृष्णेनाक्लिष्टकार्येणशतहस्तेनविष्णुना १ धरणित्वम्महाभोगेभूमिस्त्वंधेनुरव्यये ॥ लोकानांधारणीत्वंहिमृत्तिकेहरपातकम् २ मनसाकर्मणा वाचावरदेवारिजेक्षणे । त्वयाहतेनपापेनजीवामस्त्वत्प्रसादतः ३ भूमिभी ऋषियों से यह अपनी स्तुति सुन प्रसन्नता से कहनेलगी कि वराहकी दंष्ट्रासे भेदितमेरी मृत्तिकाको इसमंत्रसे जो पुरुष मस्तकपर धारणकरेगा वह सब पापों से मुक्तहोगा औ पुत्र, पौत्र, बल, आयुष्, धनआदि सब उत्तम वस्तु पावेगा और शरीरके अन्त में देवताओं के साथ विहार करेगा इसभांति सब देवता औ मुनि भूमि से वरपाय अपने २ स्थानको गये औ भगवान् भी वराह रूप त्याग अपनी दंष्ट्राको भूमिपर गेर क्षीरसागर को जातेभये परन्तु भूमि उस दंष्ट्रा का भार न सहसकी और व्याकुलहो कांपनेलगी तब तो महादेवजी आये और भूमिका दुःख दूरकरने के लिये उस वराहदंष्ट्राको उठाय अपना कण्ठभूषण बनाते भये इसभांति विष्णु भगवान्ने वराह रूपधार हिरण्याक्ष को मार भूमिकाउद्धार किया और वराहदंष्ट्रा को श्री महादेवजी ने धारण किया महाप्रलय के समय विष्णु ब्रह्मा इन्द्र आदि सब देवताओं के देहों करके भक्त-

वत्सल श्रीमहादेव जी अपने लिये भूषणवनाते हैं अ- र्थात् अपने भक्तों की देहोंको आप धारते हैं इसीकारण वराहदंष्ट्रा भी धारण करी औ श्रीमहादेवजीही ब्राह्म- णोंको मुक्ति देनेहारे हैं ॥

पञ्चानबेअध्याय ॥

ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी हिरण्याक्ष के बड़ेभाई हिरण्यकशिपु को विष्णुभगवान्ने नृसिंहअवतारधार किस प्रकार मारा यह सारा वृत्तान्त आप कथन करें ऋषियोंका प्रश्नसुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो हिरण्यकशिपुका पुत्र प्रह्लादहुआ वह बड़ा तपस्वी सत्यवादी धर्मज्ञ औ महात्माथा औ बाल्यावस्था से ही पुराणपुरुष श्रीविष्णु भगवान् की पूजा में तत्पर रहा करता औ निरन्तर गोविन्द नारायण आदि शब्दोंका उच्चारण किया करताथा उसकी यह चेष्टा देख अति क्रोध कर एक दिन हिरण्यकशिपु कहनेलगा कि रे कु- पात्र प्रह्लाद मेरे प्रतापके आगे कौन नारायणहै औ इ- न्द्र, चन्द्र, वरुण, कुबेर, वायु, सोम, ईशान, अग्नि, यम औ ब्रह्मादि देवता सब मुझसे डरते हैं मेरे समान इन में से एकभी नहीं जो तू जीने की इच्छा रखता है तो मेरीही पूजा कियाकर औ सब धंधे [illegible] नहीं तो तेरा कल्याण न होगा इस [illegible] चन सुनकर भी प्रह्लादने विष्णुपू [illegible] ने [illegible] रायणाय [illegible] वाक्य [illegible] त्यों के [illegible]

तबतो हिरण्यकशिपु दैत्योंसे कहनेलगा कि देखो इन्द्र आदि देवताभी मेरी आज्ञा भंग नहीं करसक्के औ इस दुष्पुत्र ने मेरे सम्मुखहीं आज्ञा न मानी इसलिये इस दुष्ट पुत्रको लेजाय किसी प्रकारसे मारदो यह हिरण्य कशिपु की आज्ञा पाय बड़े क्रूर वे दैत्य भांति २ के शस्त्र प्रहार प्रह्लाद के ऊपर करने लगे परन्तु भगवान्के प्र-भाव से सबके वार खाली गये औ इसी अवसरमें हि-रण्यकशिपु का संहार करनेके लिये विष्णु भगवान् भी नृसिंह रूपधार प्रकट भये औ अपने तीक्ष्ण नखोंकरके परम निज भक्त प्रह्लादके विरोधी उस दुष्टदैत्य हिरण्य-कशिपुका उदर विदारण करदिया औ भूमिपरगेर उस दैत्य को भली भांति पीसा इस प्रकार क्षणमात्रमें दैत्य का संहार कर नृसिंहभगवान् गर्जने लगे उनके घोर शब्द से ब्रह्मलोक पर्यंत सब लोक कांप उठे औ सब सिद्ध, साध्य, ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताभी अपने २ प्राण बचानेके लिये नृसिंहजी को छोड़ भयभीत हो भगे औ सहस्रमुख सहस्रपाद सहस्रबाहु सूर्य सोम अग्निरूप सहस्रनेत्र श्रीनृसिंहजी सब जगत् व्याप्तकर स्थितथे औ गर्जते थे देवताभी पड़ते गिरते नृसिंह के भयसे भागते २ लोकालोक पर्वतकेसमीप पहुंचे औ पर्वत ऊ-पर चढ़ साध्य, सिद्ध, यम, कुबेर, इन्द्र औ ब्रह्मा आदि सब नृसिंहजी की स्तुति करने लगे देवाऊचुः॥ परात्पर तरंब्रह्मतत्त्वात्तत्त्वतमंभवान्। ज्योतिषांतुपरंज्योतिःपर मात्माजगन्मयः १ स्थूलंसूक्ष्मंसुसूक्ष्मंचशब्दब्रह्ममय श्शुभः॥ वागतीतोनिरालंबोनिर्द्वन्द्वोनिरुपप्लवः २ यज्ञ

अनन्तर भी विष्णु भगवान् अपने अतिक्रूर नृसिंह रूपसे सब जगत् को त्रास देरहे हैं अब इसमें जो कुछ उचित होय वह आपकरैं सदा दुष्टों को शासना करके आप हमारा कल्याण करते हैं कालकूट विषसे आपने ही हमारी रक्षा करी हे भगवन् आपका चरित्र शुद्धहै हम सब आपकी क्रीड़ाके लिये हैं अर्थात्आपके खिलौने हैं औ हमारी उत्पत्ति औ प्रलय आपकी आंख के उन्मेष औ निमेष होते हैं हे शिव आपका कभी नाश नहींहोता आप अव्यय हैं हेनाथ इस समय विष्णु भगवान्नेहम को अति सताया है सब लोकोंके हित के अर्थ आप उनका संहार करैं॥

सूत जी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसभांतिदेवताओं के अति दीन वचन सुन शिवजीने उनको अभयदिया औ हँसकर कहा कि तुम प्रसन्न रहो नृसिंह का संहार हम करैंगे यह सुन प्रसन्न हो शिवजी को प्रणामकरसब देवों सहित इंद्र औ ब्रह्माजी अपने २ लोककोगये औ शिवजी भी शरभ पक्षीका रूपधर अति गर्वको प्राप्त नृसिंहजीकेसमीप जायउन के प्राण हरतेभये विष्णुभगवान् भी उस नृसिंह देह को छोड़ शिव जी को प्रणाम कर मनुष्य रूपधर अपने लोक को सिधारे औ सब देवताओंकरके पूजित शरभरूप शिव अपनेधामको गये इस शिवस्तुति को जो पढ़ै अथवा सुने वह शिवलोक में जाय शिवजीके समीप निवास करै॥

छियानबेका अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी महाघोर शरभ का रूप शिवजी ने क्योंकर धरा औ क्या क्या पराक्रम किया यह सब आप विस्तार से वर्णन करें यह सुन सूतजी कहते भये कि हे मुनीश्वरो देवताओंसे स्तुति सुन नृसिंहरूप तेजका संहार करने के लिये श्रीमहादेवजीने भैरव रूप महाप्रलय करनेहारे अपनेअंश वीरभद्र रुद्रका स्मरणकिया उसी क्षण वीरभद्रभी अट्टहास करतेहुये औ नृसिंहरूप करोड़ गण नाचते कूदते उछलते कंदुककी भांति ब्रह्मा आदि देवताओं से क्रीड़ा करतेहुये साथलिये आप महादेवजी के सम्मुख खड़ेभये जिनके तीन नेत्र प्रलयकी अग्नि के भांति प्रज्वलित जटाजूट में चन्द्रकला धारे हाथोंमें सब शस्त्र लिये महाप्रचण्ड हुंकार शब्द से दशों दिशाओं को बधिर करतेहुये चन्द्रकलाकी भांति टेढ़ी औ शुक्ल अति तीक्ष्ण जिनके दो दंष्ट्रा इन्द्रधनुष के समान जिनके भ्रू नीलमेघ अथवा अञ्जन पर्वतके समान कृष्ण वर्ण औ अति भयंकर लम्बीदाढ़ी से शोभित औ हाथों से त्रिशूल घुमाते थे महादेवजीसे कहतेभये कि महाराज किसलिये मेरा स्मरण किया शीघ्र आज्ञा दीजिये यह वीरभद्र का वचन सुन श्री महादेवजी ने कहा कि हे वीरभद्र इस समय देवताओं को बड़ाभय होरहाहै इस कारण उस नृसिंहरूप अग्निको शीघ्रहीजाय शांतकरो पहिले तो मीठे वचनोंसे उनको समझाओ जो न शांत

होयँ तो भैरवरूप दिखाओ सूक्ष्म को सूक्ष्म औ स्थूल को स्थूल तेजसे संहार कर हमारी आज्ञासे नृसिंहका मुण्ड औ चर्म हमारेलिये लावो यह शिवजी की आज्ञा पाय शांतरूप से वीरभद्रजी नृसिंहजी के समीप गये औ उनको अपने औरस पुत्रकी भांति समझाने लगे कि हे नृसिंहजी आपने जगत् के सुखके लिये अवतार लियाहै औ परमेश्वरनेभी जगत्की रक्षाकाही अधिकार आपको देरक्खा है मत्स्यरूपधरि आपने इस जगत्की रक्षाकरी कूर्म औ वाराह रूपसे पृथ्वीको धारण किया इस नृसिंहरूपसे हिरण्यकशिपु का संहार किया वामन रूप धरि राजाबलिको बाँधा इसभांति जब जब लोकों को कुछदुःख उत्पन्न होताहै तब २ तुम अवतार लेकर सब दुःख दूर करते हो तुम सबजीवोंके उत्पन्न करनेहारे औ प्रभुहौ तुम से अधिक कोई शिवभक्त नहीं तुमनेही सब धर्म औ वेद अपने २ मार्ग में स्थापन कररक्खे हैं औ जिसलिये तुम्हारा यह अवतार हुआ वहभी मारा गया अब तुम हमारे कहनेसे अति घोर इसरूप का संहार करो जगत्को बहुत त्रास होरहा है सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो इस भांति वीरभद्रजीने बहुत शांत वचनों से नृसिंहजी को समझाया परंतु वे न माने औ इन के वचन सुन बड़ा क्रोधकर बोले कि वीरभद्र जहां से तू आयाहै वहांहीं चला जा इस चराचर जगत् का अभी मैं संहार करताहूं संहार करनेहारे का संहार नहीं होसक्ता सबका संहार करनेहारा औ शासन करनेहारा एक मैं हूं मेरा संहार औ शासन करनेहारा कोई नहीं

मेरे प्रसादसे सब जगत् अपनी मर्यादामें स्थितहै सब शक्तियोंका प्रवर्त्तन औ निवर्त्तन करनेहारा मैंहूं जो सब जगत्में विभूतिमान् श्रीमान् पराक्रमी जीवहै वह मेराही अंशहै देवतालोग मेरी सामर्थ्यको जानतेहैं सब शक्तियों करकेयुक्त इन्द्र ब्रह्मा आदि देवता मेरे अंशहैं चतुर्मुख ब्रह्मा मेरे नाभिकमलसे उत्पन्न हुआ औ ब्रह्माके ललाटसे शिवकी उत्पत्ति भईहै रजोगुण करकेयुक्त ब्रह्मा औ तमोगुण करके युक्त रुद्र है सबका नियंतामैंहूं मेरे से अधिक कोई देवता नहीं विश्व से अधिक स्वतंत्र कर्त्ताहर्त्ता सबका स्वामी मैंहूं इस मेरेतेजको कौनसंहार सक्ता है इसलिये मेरी शरण में प्राप्तहुआ तू प्रसन्नता से अपने स्थानको जा इसजगत् का नाशकरनेके अर्थ मुझे साक्षात् कालही जान मृत्यु का भी मृत्यु मैं हूं हे वीरभद्र सब देवता मेरी कृपासे जीते हैं परन्तु अब जगत्का संहार करूंगा सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह नृसिंहजी का अभिमान युक्त वचनसुन कुछ कोप कर हँसके कहनेलगे कि हे नृसिंह जगत्के संहारकरनेहारे श्री शिवजीको क्या तुमनहीं जानते यह तुम्हारा अस्तव्यस्त बोलना केवलतुम्हारेनाशका हेतुहै पहिले जो २ अवतार तुमने लिये वे अब कहां हैं इसलिये तुम भी कथा शेष होजाओगे अर्थात् न रहोगे, इस क्रूरता के कारण बहुत शीघ्र तुम्हारा संहार किया जावेगा तुम प्रकृति हो औ शिवजी पुरुष हैं उन्होंने तुम में वीर्य का निषेक किया तब तुम्हारे नाभि कमलसे पंचमुख ब्रह्मा उत्पन्न भये औ सृष्टिके अर्थ ब्रह्माजी अपने ललाट में

रुद्रका ध्यान करते हुये तप करनेलगे तब रुद्रभगवान् प्रसन्न होकर सृष्टिकरने के अर्थ उनके ललाटसे उत्पन्न भये इसमें क्या दूषण है महाभैरव देवदेव श्रीसदाशिव का मैं अंशहूं औ विनयसे अथवा बलसे तुम्हारा संहार करने की मुझे शिवजी ने आज्ञा दी है एक तुच्छ दैत्य का उदर विदारण करने से तुम को इतना अहंकार होगया है कि गर्ज २ कर सब जगत् को त्रास देते हो असाधु पुरुष जो उपकार करै वह भी अपकार के तुल्य ही होता है हे नृसिंह जो शिव को तुम अपना पौत्र समझते हो तो न तुम संहार करनेहारे न पालन करनेहारे हो केवल अज्ञानसे अपने स्वरूपको भूलरहे हो कुम्हारके चाककी भांति शिवजी की शक्तिसे घूमते फिरते हो अपनेको स्वतंत्र मत समझो हे मूढ़ तेरे कूर्म अवतार का कपाल अब तक शिवजी ने हार में पिरो रक्खाहै औ वराह अवतारकी दाढ़ रुद्रने उखाड़ी औ तुझे अति पीड़ादी तेरे विष्वक्सेनरूपको शिवजी ने अपने त्रिशूलके अग्रसे दग्ध किया दक्षके यज्ञ में तेरे यज्ञरूप का शिर मैंने काटा तेरे पुत्र ब्रह्माका पांचवां मस्तक अब तक कटाही पड़ाहै तूही विचारले कि यह रुद्रका बल ब्रह्माका दियाहै कि स्वाभाविकहै शिवभक्त दधीचिने तेरा पराजय किया परन्तु ये सब बातें भूल गया औ फिर तेरे शिरमें खुजली चली यह सुदर्शन चक्र जिसके बलसे तू बड़ा पराक्रमी होरहाहै कहां से पाया औ किसने बनाया यह भी भूलगया प्रलयके समय सब लोकोंका संहार मैंने किया तूतो निद्रावश होय

समुद्रमें जायसोया इसीसे जानले कि जैसा तू सात्विक है तेरे से लेकर तृण पर्यंत सब जगत् शिवकी शक्तिसे उत्पन्नहै तू औ अग्निभी शिवके दिये शक्तिलेशसे शक्तिमान् बनरहे हो परंतु तुम दोनों शिवके तेजके माहात्म्यको देखभी न सके विष्णुके परमपदको स्थूलदृष्टि अर्थात् द्वैतवादी भी देखते हैं अदितिसे बामन रूप करके इन्द्रसे जयन्तरूप करके अग्निसे स्कंदरूप करके यमसे नारायणरूप करके बरुण से भृगुरूप करके औ कलंकी चन्द्रमा से बुधरूप करके तू उत्पन्नहुआ तौ भी परमेश्वरही बनारहाहै तू कालहै औ शिव कालकाल हैं शिवजी के अंशसेही तू मृत्यु का मृत्यु भयाहै मेरु पर्वत का धनुष धारनेहारे महावीर सुवर्ण वर्ण शरभरूप श्री शिवजी सब जगत् के शास्ता अर्थात् शासन करनेहारे हैं न तू शास्ताहै औ न ब्रह्मा यह सब बातें मनमें विचार इस क्रूररूप का संहार कर नहीं तो महा भैरवरूप शिवके क्रोधका वज्र अब तेरे मस्तकपर गिरैगा सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इतना सुनतेही नृसिंहजी क्रोधकी अग्निसे जलउठे औ बड़ाघोर शब्द करके वीरभद्रजी को पकड़ना चाहा इसी अवसर में महाघोर शत्रुओं को भयदेनेहारा शिव तेज से उत्पन्न अति दुर्द्धर्ष आकाश तक व्याप्त बड़ा भयंकर रूप वीरभद्र का होगया उसरूपका तेज सुवर्ण चन्द्र अग्नि बिजली सूर्यआदि सबके तेजोंसे विलक्षण था जिसकेलिये कोई उपमा नहीं है सब तेज उसमें लीनहोगये औ नृसिंहका तथा रुद्रका ये दोरूप प्रकटरहे अति भयंकर प्रलय करनेहारा रूप

परमेश्वरको धारेदेख देवता जय शब्द करने लगे वह रुद्रका रूप सहस्र भुजा धारे औ मस्तक पर चन्द्रसे शोभित था जिसरूपका आधा शरीर मृगका औ आधा पक्षी का बड़े २ पंख तीखीचोंच वज्रके तुल्य नख बड़ी बड़ी औ अति तीक्ष्ण दाढ़ नीलकण्ठ चार पाद प्रलयाग्नि के समान देदीप्यमान देह अति कुपित औ बड़े क्रूर तीन नेत्र औ प्रलय के मेघों के समान जिस का गम्भीर शब्द था उस अति दारुण हुंकार शब्दको करते हुये रुद्ररूप को देखतेही नृसिंहजी का सब बल पराक्रम नष्ट होगया औ जैसे सूर्य के आगे खद्योत होजाय ऐसे निस्तेज होगये शरभरूप शिवभी अपने पुच्छसे नृसिंहके पांव लपेट हाथोंसे हाथ पकड़ छातीमें चोंच के प्रहार देतेहुये जैसे सर्पको गरुड़ लेउड़े ऐसेही भयभीत नृसिंहजीको अपने पक्षोंके घातसे मोहितकर आकाशको लेउड़े औ आकाशमें जाय फिर नृसिंहजी को भूमिपर गिराया औ फिरउठाया इसभांति बहुतबार उठाय २ पटका औ जब नृसिंहजी बहुत व्याकुल हो गये तब लेकर उड़पड़े सबदेवता स्तुति करते हुये उनके पीछेचले नृसिंहजीभी परवश औ दीनमुख हुये २ आकाश में अपने को उठाये लेजाते शिवजी को देख हाथ जोरि स्तुति करने लगे॥

नृसिंहउवाच॥

नमोरुद्रायशर्वायमहाग्रासायविष्णवे। नमउग्राय भीमायनमःक्रोधायमन्यवे १ नमोभवायशर्वायशङ्कराय शिवायते। कालकालायकालायमहाकालायमृत्यवे २

वीरायवीरभद्रायचयद्वीरायशूलिने ॥ महादेवायमहते पशूनांपतयेनमः ३ एकायनीलकण्ठायश्रीकण्ठायपि नाकिने ॥ नमोऽनन्तायसूक्ष्माय नमस्तेमृत्युमन्यवे ४ परायपरमेशाय परात्परतरायते ॥ परात्परायविश्वायन मस्तेविश्वमूर्त्तये ५ नमोविष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्रायभा नवे ।कैवर्त्तायकिराताय महाव्याधायशाश्वते ६ भैरवा यशरण्याय महाभैरवरूपिणे ॥ नमोनृसिंहसंहर्त्रेकाम कालपुरारये ७ महापाशौघसंहर्त्रेविष्णुमायांतकारिणे॥ त्र्यम्बकायत्र्यक्षरायशिपिविष्टायमीढुषे ८ मृत्युंजया यशर्वायसर्वज्ञायमखारये । मखेशायवरेण्यायनमस्ते वह्निरूपिणे ९ महाप्राणायजिह्वायप्राणापानप्रवर्त्तिने। नमश्चन्द्राग्निसूर्यायमुक्तिवैचित्र्यहेतवे १० वरदाया वताराय सर्वकारणहेतवे ॥ कपालिनेकरालायपतयेप ण्यकीर्त्तये ११ अमोघायाग्निनेत्रायलकुलीशायशंभवे॥ भिषक्तमायमुण्डायदण्डिनेयोगरूपिणे १२ मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतयेनमः॥ अव्यक्तायविशोकायस्थिराय स्थिरधन्विने १३ स्थाणवेकृत्तिवासायनमःपंचार्थहेतवे॥ वरदायैकपादायनमश्चन्द्रार्द्धमौलिने १४ नमस्तेऽध्वर राजाय वयसांपतयेनमः॥ योगीश्वरायनित्यायसत्याय परमेष्ठिने १५ सर्वात्मनेनमस्तुभ्यंनमःसर्वेश्वरायते॥ ए कद्वित्रिचतुष्पंचकृत्वस्तेस्तुनमोनमः १६ दशकृत्वस्तुसा हस्रकृत्वस्तेचनमोनमः॥नमोऽपरिमितंकृत्वानंतकृत्वोन मोनमः॥नमोनमोनमोभूयःपुनर्भूयोनमोनमः १७ इति॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इन एकसौ साठि अमृतमय नामों करके परमेश्वरकी स्तुति कर नृसिंह

जी शुद्ध अन्तःकरणसे प्रार्थनाकरनेलगे कि महाराज जब जब मुझे अहंकार से अज्ञान होय तब तब आप शासना करें यहही मैं चाहताहूं वीरभद्र भगवान् भी उनकी प्रार्थना सुन प्रसन्नभये औ कहा कि हे विष्णो अबतू अशक्तभया औ तेरा प्राणांतक पराजयभया इतना कह नृसिंहजी का चर्म वीरभद्रजी ने उतारलिया औ शरीर के शुक्लवर्ण अस्थि निकल आये औ शिर भी काटलिया यह सब चरित देख ब्रह्मा आदि देवता हाथजोर प्रार्थना करने लगे कि हे वीरभद्र जैसा मेघ सूखे वृक्षों को हरा करे ऐसे ही आपने हम को जीव दान दिया तुम्हारे भय से अग्नि दाह करता है, वायु बहता है, सूर्य्य उदय होता है, मृत्यु दौड़ता है वह अव्यक्त, चिदाकाश, कलातीत, सदाशिव तुमहीं हो यह सब ब्रह्मवादी कहते हैं हम जगत्का धारण करनेहारे कौनहैं सब आपकाही दिया सामर्थ्यहै आपके गुण औ रूप हम क्योंकर वर्णन करसक्ते हैं हे शिव सब उपद्रवोंमें आप हमारीरक्षा करतेहो इसभांति के अनेक अवतार हमारे कल्याणकेअर्थ आपकेदेखकर कभी हम को तमोगुणसे संदेह उत्पन्न नहीं होता औ आपका निरंतर चिंतनभी विस्मृत नहींहोता अर्थात् सदा आपका स्मरण करतेही रहते हैं गुंजाके तुल्य औ पर्वतके समान आपके अनेक रूपहैं वेदवेत्ता ब्राह्मण आपके दोशरीर कहते हैं एक शांतस्वरूप दूसरा महाघोर आपसदा हमारी रक्षाकरें आपनेही सब जगत् अपने तेज से व्याप्त कर रक्खा है ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, चंद्रआदि सब देवता

औ असुर आपसे उत्पन्न भयेहैं इनसबका औ नृसिंह का आपही निग्रह भी करनेहारे हैं आठ मूर्त्ति धारकर सब जगत्को आपही धारे हैं हे भगवन् हमारी रक्षा करैं औ इष्टवरभी आप हमको देवैं यह ऋषि औ देवताओं की प्रार्थना सुन वीरभद्र कहने लगे कि हे देवताओ जिसभांति जलमें जल दूधमें दूध औ घृत में घृत गेरने से एक रूप होजाताहै ऐसेही शिव में विष्णु लीन होजाते हैं शिव विष्णु में कुछ भेद नहींयह महाबली औ अहंकार युक्त नृसिंहावतार विष्णु जगत् के संहार में प्रवृत्त भये इनको नमस्कारहो औ जो पुरुष मेरे भक्त होयँ अवश्य इनका यजनकरैं इतना कह सब देवताओं के देखते देखतेही वीरभद्र भगवान् अंतर्द्धानभये उसी दिनसे नृसिंहका चर्म शिवजीने ओढ़ा औ उनका मुण्ड अपनी मुण्डमाला का मध्य मणि वनाया सब देवताभी निरुपद्रवहोइसकथाको कीर्त्तन करतेहुये औ शिवजीका शरभरूप स्मरणकर २ चकितहोतेहुये अपने२ धामको गये सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो अति पवित्र धन्य औ यश आयुष आरोग्य औ पुष्टि देनेहारा सब विघ्न व्याधि औ अपमृत्युका निवारण करनेहारा महाशांतिकर पुत्रपौत्रों की वृद्धि करनेहारा शत्रुसमूहको पराजय देनेहारा सम्पूर्ण आधि व्याधि दुःस्वप्न विष ग्रह भूत आदिका शमन करनेहारा योग सिद्धि औ शिव ज्ञान का प्रकाशक शिवलोकके लिये मानों सोपान विष्णु मायाका निवृत्त करनेहारा देवताओं को परम अर्थ देनेहारा वांछा सिद्धि देनेवाला औ ऋद्धि तथा प्रज्ञाका

प्रकाशक यह आख्यानहै इसकारण सदा इसका पाठ करना चाहिये यह शिवजी का शरभ रूप स्थिर बुद्धि उत्सुक औ भक्त पुरुषोंको प्रकट करना चाहिये औ वैसेही पुरुषों को पढ़ना औ सुनना भी चाहिये सब शिवजीके उत्सवों के दिन औ चतुर्दशी अष्टमी आदि पर्व दिनोंमें इसका पाठकरनेसे शिव सायुज्यमिलताहै चोर, व्याघ्र, सर्प,सिंह आदिकेभयमें भूकंप, पांशुवृष्टि,उल्कापात, महावायु, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, राजभय औ दावाग्नि आदि उत्पात होयँ तौभी इसआख्यान को दृढ़व्रत शिवभक्त पुरुष पठन करै जिससे सब उत्पात दूर होते हैं नृसिंह जीके किये स्तोत्रको जोपढ़े अथवा सुने वह शिवलोक में जाय शिवजीका गणहोय॥

सत्तानवेका अध्याय॥

शौनकआदि ऋषिपूछते हैं कि हे सूतजी पूर्वकाल में श्री शिवजी ने महापराक्रमी जलंधर दैत्यको किस भांतिमारा यह आप हमको श्रवण करावें यह मुनियों का वचन सुन सूतजी कहनेलगे कि हेमुनीश्वरो समुद्र से उत्पन्न औ बड़ा प्रतापी जलन्धर दैत्य पूर्वकाल में होता भया उसने बहुतकाल उग्रतप करके बड़ापराक्रम पाया औ सब देवता,गंधर्व, यक्ष, राक्षस, नाग आदिको जीत उसने ब्रह्माजी को भी जीतलिया औ युद्धकेलिये विष्णुजी के समीपगया विष्णुजीने भी कई दिन उसके साथ घोर संग्राम किया पर अंतमें हारमानी इसप्रकार विष्णुजी को भी जीत बड़ा अभिमानी जलंधर अपने

दैत्यों से कहनेलगा कि हे दैत्यो सब देवता हमने जीत-लिये केवल एक शिव बाक़ीरहगये हैं नंदीआदि गणों सहित शिवजी को जीत तुम सबकोही ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, कुवेर आदि देवताओं का अधिकार देना चाहताहूं यह जलंधरका वचन सुन सब दैत्य प्रसन्नता से गर्जनेलगे जलंधर भी दैत्यों की चतुरंगिणी सेना संगले शिवजी के जीतने को जाताभया शिवजी भी जलंधरको देख औ उसके प्रति ब्रह्माजी का दिया वर अर्थात् शिवजी के विना और किसी के हाथसे तेरा मृत्यु न होगा इसको स्मरणकर कहनेलगे कि हे दैत्य-राज युद्धसे तुझे क्याफलहै मेरे बाणों से भेदितहोकर तू मृत्युवश होजायगा इसकारण जहांसे आयाहै वहां हीं चलाजा यह अतिकठोर शिवजी का वचनसुन बड़े क्रोधसे शिवजीके प्रति कहनेलगा कि हे शिव इनबातों से पीछा न छूटेगा तुमको अवश्यही हमारे साथ युद्ध करनाहोगा यह सुन शिवजी ने अपने पांदके अंगुष्ठसे समुद्रके बीच एक बड़ा दारुण चक्र उत्पन्न किया औ मनमें विचार किया कि यह हमारा उत्पन्न कियाहुआ सुदर्शनचक्र तीनलोक का संहार करने को भी समर्थ है एक जलंधर तो इसकेआगे कौन कीटहै यह मनमें विचार हँसकर शिवजी ने जलंधर से कहा कि हे दैत्य जो तू बलका बड़ा अभिमान रखताहै तो हमने अपने पादांगुष्ठ से जो यह सुदर्शनचक्र समुद्र के बीच निर्माण कियाहै इसको बाहर निकाल कंधे पर रख इससे तेरे बलकी परीक्षा होजायगी तब हमयुद्ध करेंगे यह शिवजी

का वचन सुन क्रोधसे रक्तहुये नेत्रोंकरके मानों त्रैलो
क्यको अभी दग्ध करदेवै जलंधर कहने लगा कि
शिव तुझे औ नंदी आदि तेरे सवगणों को सवदेवत
सहित इन्द्रको तथा इस संपूर्ण चराचर जगत्को अ
पनी गदासे संहारकरने को समर्थहूं जिसभांति डुंडुभ
अर्थात् निर्विषसर्पोंको गरुड़ संहारकरै हेशिव मेरेवाण
के आगे कौन ठहरसक्ताहै मैंने अपनी वाल्यावस्थामें
तपकेवलसेही विष्णुको जीतलिया औ यौवनअवस्था
में सवदेवता औ मुनियोंसहित ब्रह्माजी को जीता औ
अपने उग्रतपसे त्रैलोक्यको दग्धकिया हे रुद्र तैंने कभी
विष्णुको भी जीताहै कि विष्णु जीतनेहारे मुझसेही यु
द्धकर प्राण दियाचाहता है इन्द्र,अग्नि,यम,वरुण,वायु
आदिदेवता मेरेगंधको भी नहीं सहसक्ते जैसे गरुड़के
गंधसे सर्प भागजाय इसभांति सवदेवता पलायनकर
जातेहैं स्वर्गमें औ भूमिपर जव कोई युद्ध करनेहारा मुझे
न मिला तवमैंने अपनी भुजाओंसे पर्वतोंको घर्षणकिया
मंदराचल, नीलपर्वतऽसुमेरु आदि पर्वत भुजाओं की
खुजली मिटानेको कईवार घर्षण करनेसे गिर २ पड़ेहैं
हिमालय पर्वतमें गङ्गाके प्रवाह को अपनी भुजाओंसे
कईवार रोक दियाहै मेरी नारियों के सेवकोंनेही इन्द्र
के वज्र को वांधदिया समुद्रका जल शोषणकरनेहारा
वड़वाग्निका मुख मैंने तोड़डाला तव सव जगत् जल
मय होगया ऐरावत आदि दिग्गज उठा २ समुद्र में
फेंकदिये रथसहितइन्द्रको घुमाकर ऐसा फेंका कि सौ
योजनपर गिरा विष्णु सहित गरुड़ को नागपाश से

बांधलिया उर्वशी आदि देवांगना मैंनेअपने कारागार अर्थात् बन्दीखाने में रक्खीं किसी प्रकार इन्द्रको बहुत दीन वचन बोलते देख एक शची को छोड़दिया इस भांति अपने पराक्रमको कहांतक सुनाऊं परन्तु हे शिव तैंने अभी मेरा पराक्रम नहीं देखा जिससे बातें बनारहाहै सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो यह जलन्धरका वचन सुन शिवजीने क्रोधकर अपने नेत्रकोण से उसकी सब सेना औ रथको भस्म करदिया परन्तु जलन्धरके चित्तमें यत्किंचित्भी क्षोभ न भया वह कहनेलगा कि हेशिव सेनासे मुझे कुछप्रयोजन नहीं यहतो केवल शोभाके लियेथी मैं अकेलाही तुम सबका संहार करनेमें समर्थहूं देवता औ तेरे सबगण तथा यह वानरमुख नन्दी मेरेसाथ युद्धमें समर्थनहीं जो तेरीसामर्थ्य होय तो उठ औ युद्धकरनेको मेरेसम्मुख खड़ाहो इतनी कह शिवजीके सम्मुखखड़ाहोगया औ अपने भस्महुये बांधव तथा सेनाका कुछभी स्मरण न किया औ मन में विचारकिया कि इसकेबनाये सुदर्शनचक्र सेही इसका संहारकरूं यह मनमें ठान बड़ाघोर बाहुशब्दकर दोनों हाथोंसे अतिबलकरके उसचक्रको उठाय अपनेकांधेपर धराकांधेपर रखतेही वहचक्र अपनी बड़ीतीक्ष्णधार औ अतिभार से जलंधरके शरीरमें पारहोगया औ दोखंडहो दैत्य वज्रके प्रहारसे अंजनके पर्वतकी भांति भूमिपर गिरा औ उसके रुधिर से सबभूमि व्याप्तभई तब शिवजी ने वह सबरक्त औ उसकामांस रौरवनरकमें भेजा जिससे वहां रक्तकुण्डबना इसभांति जलंधरका संहारदेख सब

देवता बहुत प्रसन्नभये औ शिवजीकी स्तुति औ जय शब्दकरनेलगे हेमुनीश्वरो इसजलंधरके संहारकी कथाको जो पढ़ैसुनै अथवा भक्तिसे ब्राह्मणोंको श्रवणकरावै वह शिवलोकमें वासपावे औ शिवजीका गणहोय॥

अट्ठानवेका अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी वह सुदर्शन चक्र देवदेव श्रीमहादेवजी से विष्णुभगवान् ने क्योंकर पाया यह आप वर्णनकरैं॥ सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकाल में देवता औ दैत्यों का बड़ा घोर संग्रामहुआ उसमें दैत्योंने शक्ति,मुशल, बाण,कुंत, खड्गआदि अनेकशस्त्रोंसे देवताओंको पीड़ितकर पराजितकिया देवताभी युद्धसे विमुख हो अति दीनता से विष्णुभगवान् की शरणमें गये उनको देख भगवान्ने कहा कि हे पुत्रो तुम ऐसे मलिनमुख औ वस्त्र भूषणों से हीन शोकग्रस्त क्यों होरहेहो औ सब इकट्ठे होकर हमारे समीप क्यों आये इसका शीघ्र कारण कहो यह भगवान्का वचन सुन देवता बोले कि महाराज हम सबको दैत्यों ने बहुत सताया है इसलिये भयभीतहो आपके शरण में आये हैं अब आपही मातापिता औ रक्षकहैं दानवोंको संहार कर इस दुःख से हमारा उद्धार करें वैष्णव, रौद्र, ब्राह्म, याम्य, कौवेर, सौम्य, नैऋत्य, वारुण, वायव्य, आग्नेय, ऐशान, वार्षिक, सौर, ऐन्द्र, कंपन, जृम्भण आदि अस्त्रोंकरके सब दैत्य वरदानों के प्रभाव से अवध्य हैं इस कारण हम उन का कुछ भी

नहीं करसकते औ सूर्यके तेजसे विश्वकर्म्माने चक्रवनाय आपको दियाथा जिसके वलसे आप सवयुद्धों में जयपाते थे वहभी दधीचि ने कुंठित करदिया औ जो शार्ङ्ग दंड आदि आपके शस्त्रहैं वैसे दैत्योंने भी ब्रह्माजीके वर से संपादन करलियेहैं अव कोई शस्त्र अस्त्र आपके पास अथवा हमारे समीप ऐसा नहीं है जिस से दैत्योंकासंहार होय शिवजी ने जलंधर दैत्य के वध के लिये सुदर्शन नाम अति दारुण चक्र रचा था जो वह आपको मिलै तो दैत्योंका वधहोय और कोई दूसरा उपाय नहीं यह सुन देवताओं के प्रति विष्णुभगवान् कहनेलगे कि हे देवताओ शिवजी का आराधनकर शीघ्रही तुम्हारादुःख हमदूरकरैंगे शिवजीने जलंधरके वधकेअर्थजो चक्ररचाथा उसको शिवजीके अनुग्रहसे पाय धुन्धु आदि अड़सठसौ मुख्य दैत्योंको मारतुम्हारा उद्धारकरैंगे चिंता मतकरो हे मुनीश्वरो भगवान्इतना देवताओंकेप्रति कथनकर हिमालय पर्वतमेंजाय मेरुपर्वतकेसमान अतिमनोहरविश्वकर्मा कावनाहुआशिवलिंगस्थापनकर त्वरितसूक्त औररुद्राध्यायसेगंगाजल करके स्नानकराय गन्ध पुष्प नैवेद्य आदि उपचारोंसे भली भांति पूजाकर भक्तिसे हवनकर हाथजोर स्तुति करते भये औ भव आदि सहस्रनामोंके आदि में प्रणव औ अन्तमेंनमः लगायकर प्रतिनामसे एकएक कमल कापुष्प शिवलिंग के ऊपर चढ़ाने औ इसीभांति नित्य हवनकर इसीसहस्रनाम से स्तुति करनेलगे हेमुनीश्वरो वह सहस्रनामहम आपके प्रति कथन करते हैं ॥

सहस्रनाम ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ भवःशिवोहरोरुद्रः
पुरुषःपद्मलोचनः । अर्थितव्यःसदाचारः सर्वशंभुर्महे
श्वरः । ईश्वरःस्थाणुरीशानःसहस्राक्षःसहस्रपात् १
वरीयान्वरदोवंद्यःशंकरःपरमेश्वरः । गंगाधरःशूलध
रः परार्थैकप्रयोजनः २ सर्वज्ञःसर्वदेवादिर्गिरिःधन्वाज
टाधरः। चंद्रापीडश्चंद्रमौलिर्विद्वान्विश्वामरेश्वरः ३ वे
दांतसारसंदोहः कपालीनीललोहितः । ध्यानाधारोऽप
रिच्छेद्योगौरीभर्त्तागणेश्वरः ४ अष्टमूर्त्तिर्विश्वमूर्त्तिस्त्रि
वर्गःस्वर्गसाधनः । ज्ञानगम्योदृढप्रज्ञोदेवदेवस्त्रिलोच
नः ५ वामदेवोमहादेवः पांडुःपरिदृढोदृढः । विश्वरूपो
विरूपाक्षोवागीशःशुचिरंतरः ६ सर्वप्रणयसंवादी वृषां
कोवृषवाहनः । ईशःपिनाकीखट्वांगी चित्रवेशश्चिरंत
नः ७ तमोहरोमहायोगी गोप्ताब्रह्मांगहृज्जटी । कालका
लःकृत्तिवासाःसुभगःप्रणवात्मकः ८ उन्मत्तवेषश्चक्षुष्यो
दुर्वासाःस्मरशासनः । दृढायुधःस्कंदगुरुः परमेष्ठीपरा
यणः ९ अनादिमध्यनिधनोगिरीशोगिरिबांधवः । कुबे
रबंधुःश्रीकण्ठोलोकवर्णोत्तमोत्तमः १० सामान्यदेवः
कोदण्डीनीलकण्ठःपरश्वधी । विशालाक्षोमृगव्याधःसु
रेशःसूर्यतापनः ११ धर्मकर्माक्षमःक्षेत्रंभगवान्भगनेत्र
भित् । उग्रःपशुपतिस्तार्क्ष्यप्रियभक्तःप्रियंवदः १२ दां
तोदयाकरोदक्षःकपर्दीकामशासनः । श्मशाननिलयःसू
क्ष्मःश्मशानस्थोमहेश्वरः १३ लोककर्त्ताभूतपतिर्महा
कर्त्तामहौषधी । उत्तरोगोपतिर्गोप्ताज्ञानगम्यःपुरातनः
१४ नीतिःसुनीतिःशुद्धात्मासोमसोमरतःसुखी । सोम
पोऽमृतपस्सोमोमहानीतिर्महामतिः १५ अजातशत्रुरा

लोकःसंभाव्योहव्यवाहनः। लोककारोवेदकारः सूत्रका
रःसनातनः १६ महर्षिःकपिलाचार्योविश्वदीप्तिस्त्रिलोच
नः। पिनाकपाणिर्भूदेवःस्वस्तिदःस्वस्तिकृत्सदा १७
त्रिधामासौभगःशर्वःसर्वज्ञःसर्वगोचरः। ब्रह्मधृग्विश्व
सृक्स्वर्गःकर्णिकारःप्रियःकविः १८ शाखोविशाखोगो
शाखः शिवोनैकःक्रतुःसमः। गङ्गाप्लवोदकोभावःसकलः
स्थपतिःस्थिरः १९ विजितात्माविधेयात्माभूतवाहनसा
रथिः। सगणोगणकार्यश्चसुकीर्त्तिश्छिन्नसंशयः २० का
मदेवःकामपालोभस्मोद्धूलितविग्रहः। भस्मप्रियोभस्म
शायीकामीकांतःकृतागमः २१ समायुक्तोनिवृत्तात्माध
र्मयुक्तःसदाशिवः। चतुर्मुखश्चतुर्बाहुर्दुरावासोदुरासदः
२२ दुर्गमोदुर्लभोदुर्गःसर्वायुधविशारदः। अध्यात्मयो
गनिलयःसुतंतुस्तंतुवर्द्धनः २३ शुभांगोलोकसारङ्गोज
गदीशोऽमृताशनः। भस्मशुद्धिकरोमेरुरोजस्वीशुद्धवि
ग्रहः २४ हिरण्यरेतास्तरणिर्मरीचिर्महिमालयः। महा
ह्रदोमहागर्भःसिद्धवृंदारवंदितः २५ व्याघ्रचर्मधरोव्या
लीमहाभूतोमहानिधिः। अमृतांगोऽमृतवपुःपंचयज्ञः
प्रभंजनः २६ पंचविंशतितत्त्वज्ञःपारिजातःपरावरः।
सुलभःसुव्रतःशूरोवाङ्मयैकनिधिर्निधिः २७ वर्णाश्रम
गुरुर्वर्णीशत्रुजिच्छत्रुतापनः। आश्रमःक्षपणःक्षामोज्ञा
नवानचलाचलः २८ प्रमाणभूतोदुर्ज्ञेयःसुपर्णोवायुवा
हनः। धनुर्धरोधनुर्वेदोगुणराशिर्गुणाकरः २९ अनन्त
दृष्टिरानंदोदण्डोदमयितादमः। अभिवाद्योमहाचार्यो
विश्वकर्माविशारदः ३० वीतरागोविनीतात्मातपस्वी
भूतभावनः। उन्मत्तवेषःप्रच्छन्नोजितकामोजितप्रियः

३१ कल्याणप्रकृतिःकल्पःसर्वलोकप्रजापतिः। तपस्वी
तारकोधीमान्प्रधानप्रभुरव्ययः ३२ लोकपालोऽन्तर्हि
तात्माकल्पादिःकमलेक्षणः। [illegible]
नियमाश्रयः ३३ चंद्रःसूर्यःशनिःकेतुर्विरामोविद्रुमच्छ
विः। भक्तिगम्यःपरंब्रह्ममृगबाणार्पणोऽनघः ३४ अद्रि
राजालयःकांतःपरमात्माजगद्गुरुः। सर्वकर्माचलस्त्व
ष्टामांगल्योमंगलावृतः ३५ महातपादीर्घतपाःस्थवि
ष्ठःस्थविरोध्रुवः। अहःसंवत्सरोव्याप्तिःप्रमाणंपरमंतपः
३६ संवत्सरकरोमंत्रःप्रत्ययःसर्वदर्शनः। अजःसर्वेश्व
रःस्निग्धोमहारेतामहाबलः ३७ योगीयोग्योमहारेताः
सिद्धःसर्वादिरग्निदः। वसुर्वसुमनाःसत्यःसर्वपापहरो
हरः ३८ अमृतःशाश्वतःशांतोबाणहस्तःप्रतापवान्।
कमण्डलुधरोधन्वीवेदांगोवेदविन्मुनिः ३९ भ्राजिष्णु
र्भोजनंभोक्तालोकनेतादुराधरः। अतींद्रियोमहामायः
सर्वावासश्चतुष्पथः ४० कालयोगीमहानादोमहोत्सा
होमहाबलः। महाबुद्धिर्महावीर्योभूतचारीपुरंदरः ४१
निशाचरःप्रेतचारीमहाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यव
पुःश्रीमान्सर्वहार्यमितोगतिः ४२ बहुश्रुतोबहुमयोनि
यतात्माभवोद्भवः। ओजस्तेजोद्युतिकरोनर्त्तकःसर्व
कामुकः ४३ नृत्यप्रियोनृत्यनृत्यःप्रकाशात्माप्रतापनः।
बुद्धःस्पष्टाक्षरोमंत्रःसम्मानःसारसम्प्लवः ४४ युगादिकृ
द्युगावर्तोगंभीरोवृषवाहनः। इष्टोविशिष्टःशिष्टेष्टःशरभः
शरभोधनुः ४५ अपांनिधिरधिष्ठानंविजयोजयकालवि
त्। प्रतिष्ठितःप्रमाणज्ञोहिरण्यकवचोहरिः ४६ विरोचनः
सुरगणोविद्येशोविबुधाश्रयः। बालरूपोबलोन्माथीवि

वतोगहनोगुरुः ४७ करणंकारणंकर्त्तासर्वबंधविमोचनः।
विद्वत्तमोवीतभयोविश्वभर्त्तानिशाकरः ४८ व्यवसायो
व्यवस्थानःस्थानदोजगदादिजः।दुंदुभोललितोविश्वोभ
वात्मात्मनिसंस्थितः ४९ वीरेश्वरोवीरभद्रोवीरहावीरभृ
द्विराट्वीरचूड़ामणिर्वेत्तातीव्रनादोनदीधरः ५० आज्ञा
धारस्त्रिशूलीचशिपिविष्टःशिवालयः।वालखिल्योमहाचा
पस्तिग्मांशुर्निधिरव्ययः ५१ अभिरामःसुशरणःसुब्रह्म
ण्यःसुधापतिः। मघवान्कौशिकोगोमान्विश्रामस्सर्व
शासनः ५२ ललाटाक्षोविश्वदेहःसारःसंसारचक्रभृत्।
अमोघदण्डोमध्यस्थोहिरण्योब्रह्मवर्चसी ५३ परमार्थः
परमयःशंवरोव्याघ्रकोऽनलः।रुचिर्वररुचिर्वंद्योवाचस्प
तिरहर्पतिः ५४ रविर्विरोचनःस्कंन्दःशास्तावैवस्वतोज
नः।युक्तिरुन्नतकीर्त्तिश्चशांतरागःपराजयः ५५ कैलास
पतिकामारिःसवितारविलोचनः। विद्वत्तमोवीतभयोवि
श्वहर्त्तानिवारितः ५६ नित्योनियतकल्याणःपुण्यश्रव
णकीर्त्तनः। दूरश्रवाविश्वसहोध्येयोदुःस्वप्ननाशनः ५७
उत्तारकोदुष्कृतिहादुर्धर्षोदुःसहोऽभयः। अनादिर्भूर्भुवो
लक्ष्मीःकिरीटीत्रिदशाधिपः ५८ विश्वगोप्ताविश्वभर्त्ता
सुधीरोरुचिरांगदः। जननोजनजन्मादिःप्रीतिमान्नीति
मान्नयः ५९ विशिष्टःकाश्यपोभानुर्भीमोभीमपराक्रमः।
प्रणवःसप्तधाचारोमहाकायोमहाधनुः ६० जन्माधिपो
महादेवः सकलागमपारगः। तत्त्वातत्त्वविवेकात्माविभू
ष्णुर्भूतिभूषणः ६१ ऋषिर्ब्राह्मणविज्जिष्णुर्जन्ममृत्युज
रातिगः। यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वायज्ञांतोऽमोघविक्रमः ६२
महेंद्रोदुर्भरःसेनीयज्ञांगोयज्ञवाहनः। पंचब्रह्मसमुत्पत्ति

निरखेशोविमलोदयः ६३ आत्मयोनिरनाद्यंतोषड्विंश
त्सप्तलोकधृक्। गायत्रीवल्लभःप्रांशुर्विश्वावासःप्रभा
करः ६४ शिशुर्गिरिरतःसम्राट्सुषेणःसुरशत्रुहा। अमो
घोऽरिष्टमथनोमुकुंदोविगतज्वरः ६५ स्वयंज्योतिरन
ज्योतिरात्मज्योतिरचंचलः। पिंगलःकपिलश्मश्रुः शा
स्त्रनेत्रस्त्रयीतनुः ६६ ज्ञानस्कंधोमहाज्ञानीनिरुत्पत्तिरुप
प्लवः। भगोविवस्वानादित्योयोगाचार्योबृहस्पतिः ६७
उदारकीर्त्तिरुद्योगीसद्योगीसदसन्मयः। नक्षत्रमालीरा
केशःस्वाधिष्ठानःषडाश्रयः ६८ पवित्रपाणिःपापारिम
णिपूरोमनोगतिः। हृत्पुण्डरीकमासीनःशुक्लःशांतोवृषा
कपिः ६९ विष्णुर्ग्रहपतिःकृष्णस्समर्थोऽनर्थनाशनः।
अधर्मशत्रुरक्षय्यःपुरुहूतःपुरुष्टुतः ७० ब्रह्मगर्भोबृहद्
गर्भोधर्मधेनुर्धनागमः। जगद्धितैषीसुगतः कुमारःकुश
लागमः ७१ हिरण्यवर्णोज्योतिष्मान्नानाभूतधरोध्व
निः। अरोगोनियमाध्यक्षोविश्वामित्रोद्विजोत्तमः ७२ बृ
हज्ज्योतिःसुधामाचमहाज्योतिरनुत्तमः। मातामहोमात
रिश्वानभस्वान्नागहारधृक् ७३ पुलस्त्यःपुलहोऽगस्त्यो
जातूकर्ण्यःपराशरः। निरावरणधर्मज्ञोविरिंचिर्विष्टरश्र
वाः ७४ आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्त्तिर्महायशाः। लो
कचूडामणिर्वीरश्चण्डसत्यपराक्रमः ७५ व्यालकल्पो
महाकल्पो महावृक्षःकलाधरः। अलंकरिष्णुस्त्वचलो
रोचिष्णुर्विक्रमोत्तमः ७६ आशुशब्दपतिर्वेगी प्लवनः
शिखिसारथिः। असंसृष्टोऽतिथिःशक्रः प्रमाथीपापना
शनः ७७ वसुश्रवाःकव्यवाहः प्रततोविश्वभोजनः।
जर्योजराधिशमनो लोहितश्चतनूनपात् ७८ एषदृश्वो

नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा। निदाघस्तपनोमेघः
पक्षःपरपुरंजयः ७९ मुखानिलःसुनिष्पन्नः सुरभिःशि
शिरात्मकः। वसन्तोमाधवोग्रीष्मो नभस्योबीजवाहनः
८० अङ्गिरामुनिरात्रेयो विमलोविश्ववाहनः। पावनःपु
रुजिच्छक्रस्त्रिविद्योनरवाहनः ८१ मनोबुद्धिरहंकारः
क्षेत्रज्ञःक्षेत्रपालकः। तेजोनिधिर्ज्ञाननिधिर्विपाकोविघ्न
कारकः ८२ अधरोऽनुत्तरोज्ञेयो ज्येष्ठोनिश्श्रेयसालयः।
शैलोनगस्तनुर्दोहो दानवारिररिंदमः ८३ चारुधीर्जन
कश्चारुविशल्योलोकशल्यकृत्। चतुर्वेदश्चतुर्भावश्च
तुरश्चतुरप्रियः ८४ आम्नायोऽथसमाम्नायस्तीर्थदे
वशिवालयः। बहुरूपोमहारूपः सर्वरूपश्चराचरः ८५
न्यायनिर्वाहकोन्यायो न्यायगम्योनिरंजनः। सहस्रमूर्धा
देवेंद्रः सर्वशस्त्रप्रभंजनः ८६ मुण्डोविरूपोविकृतो द
ण्डीदांतोगुणोत्तमः। पिङ्गलाक्षोऽथहर्य्यक्षो नीलग्रीवो
निरामयः ८७ सहस्रबाहुःसर्वेशः शरण्यःसर्वलोकभृत्।
पद्मासनःपरंज्योतिः परावरपरंफलम् ८८ पद्मगर्भोमहा
गर्भो विश्वगर्भोविचक्षणः। परावरज्ञोबीजेशः सुमुखः
सुमहास्वनः ८९ देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः।
देवासुरमहामात्रो देवासुरमहाश्रयः ९० देवादिदेवोदे
वर्षिर्देवासुरवरप्रदः। देवासुरेश्वरोदिव्यो देवासुरमहे
श्वरः ९१ सर्वदेवमयोऽचिंत्यो देवतात्मात्मसंभवः। ई
ड्योऽनीशःसुरव्याघ्रो देवसिंहोदिवाकरः ९२ विबुधाग्र
वरःश्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः। शिवज्ञानरतःश्रीमान् शि
खिश्रीपर्वतप्रियः ९३ जयस्तंभोविशिष्टंभो नरसिंहनि
पातनः। ब्रह्मचारीलोकचारी धर्मचारीधनाधिपः ९४

नंदीनंदीश्वरोनग्नो नग्नव्रतधरःशुचिः। लिंगाध्यक्षःसु
राध्यक्षो युगाध्यक्षोयुगावहः ९५ स्ववशःसवशःस्वर्गः
स्वरःस्वरमयस्वनः। बीजाध्यक्षोबीजकर्त्ता धनकृद्धर्मव
र्धनः ९६ दंभोऽदंभोमहादंभस्सर्वभूतमहेश्वरः। श्म
शाननिलयस्तिष्यः सेतुरप्रतिमाकृतिः ९७ लोकोत्तरः
स्फुटालोकस्त्र्यम्बकोनागभूषणः। अंधकारिर्मखद्वेषी
विष्णुकंधरपातनः ९८ वीतदोषाऽक्षयगुणो दक्षारिःपू
षदंतहृत्। धूर्जटिःखण्डपरशुः सकलोनिष्कलोऽनघः
९९ आधारःसकलाधारः पाण्डुराभोमृडोनटः। पूर्णः
पूरयितापुण्यः सुकुमारःसुलोचनः १०० सामगेयःप्रिय
करः पुण्यकीर्त्तिरनामयः। मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो
जीवितेश्वरः १०१ जीवितांतकरोनित्यो वसुरेतावसुप्रि
यः। सद्गतिःसत्कृतिःसक्तः कालकण्ठःकलाधरः १०२
मानीमान्योमहाकालः सद्भूतिःसत्परायणः। चंद्रसम्भूष
णःशास्ता लोकगूढोऽमराधिपः १०३ लोकबंधुर्लोकना
थः कृतज्ञःकृतिभूषणः। अनपाय्यक्षरःकांतः सर्वशास्त्र
भृतांवरः १०४ तेजोमयोद्युतिधरो लोकमायाऽग्रणीर
णुः। शुचिस्मितःप्रसन्नात्मा दुर्जयोदुरतिक्रमः १०५ ज्यो
तिर्मयोनिराकारो जगन्नाथोजलेश्वरः। तुम्बवीणिमहा
कायो विशोकःशोकनाशनः १०६ त्रिलोकात्मात्रिलो
केशः शुद्धःशुद्धिरथाक्षजः। अव्यक्तलक्षणोऽव्यक्तो व्य
क्ताव्यक्तोविशांपतिः १०७ वरशीलोवरतुलो मानोमान
धनोमयः। ब्रह्माविष्णुःप्रजापालो हंसोहंसगतिर्यमः।
१०८ वेधाधातातविधाताच अत्ताहर्त्ताचतुर्मुखः॥ कैला
सशिखरावासीसर्वावासीसतांगतिः १०९ हिरण्यगर्भो

हरिणःपुरुषःपूर्वजःपिता । भूतालयोभूतपतिर्भूतिदोभु
वनेश्वरः ११० संयोगीयोगविद्ब्रह्माब्रह्मण्योब्राह्मणप्रि
यः । देवप्रियोदेवनाथोदेवज्ञोदेवचिंतकः १११ विष
माक्षःकलाध्यक्षोवृषांकोवृषवर्द्धनः । निर्मदोनिरहंकारो
निर्मोहोनिरुपद्रवः ११२ दर्पहादर्पितोदृप्तःसर्वर्त्तुपरि
वर्तकः । सप्तजिह्वःसहस्रार्चिःस्निग्धःप्रकृतिदक्षिणः
११३ भूतभव्यभवन्नाथःप्रभवोभ्रांतिनाशनः । अर्थोऽ
नर्थोमहाकोशःपरकार्यैकपण्डितः ११४ निष्कंटकःकृ
तानन्दोनिर्व्याजोव्याजमर्दनः । सत्त्ववान्सात्त्विकःसत्य
कीर्त्तिस्तंभकृतागमः ११५ अकंपितोगुणग्राहीनैकात्मा
नैककर्मकृत् । सुप्रीतःसुमुखःसूक्ष्मःसुकरोदक्षिणोऽन
लः ११६ स्कंधःस्कंधधरोधुर्यःप्रकटःप्रीतिवर्द्धनः । अ
पराजितःसर्वसहोविदग्धःसर्ववाहनः ११७ अधृतःस्व
धृतःसाध्यःपूर्त्तमूर्त्तिर्यशोधरः । वराहशृङ्गधृग्वायुर्बल
वानेकनायकः ११८ श्रुतिप्रकाशःश्रुतिमानेकबन्धुरने
कधृक् । श्रीवल्लभःशिवारंभःशांतभद्रःसमंजसः ११९
भूशयोभूतिकृद्भूतिभूषणोभूतिवाहनः । अकायोभक्त
कायस्थःकालज्ञानीकलावपुः १२० सत्यव्रतमहात्यागी
निष्ठाशांतिपरायणः । परार्थवृत्तिर्वरदोविविक्तःश्रुतिसा
गरः १२१ अनिर्विण्णोगुणग्राहीकलंकांकःकलंकहा ।
स्वभावरुद्रोमध्यस्थःशत्रुघ्नोमध्यनाशकः १२२ शिख
ण्डीकवचीशूली चण्डीमुण्डीचकुण्डली । मेखलीकव
चीखड्गी मायीसंसारसारथिः १२३ अमृत्युःसर्वदृक्
सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः । असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वी
र्यवान्कार्यकोविदः १२४ वेद्योवेदार्थविद्गोप्तासर्वाचारो

मुनीश्वरः। अनुत्तमोदुराधर्षोमधुरःप्रियदर्शनः १२५ सुरेशःशरणंसर्वःशब्दब्रह्मसतांगतिः। कालभक्तःकलकारिःकंकणीकृतवासुकिः १२६ महेष्वासोमहीभर्त्तानिष्कलंकोविशृंखलः। द्युमणिस्तरणिर्धन्यःसिद्धिदःसिद्धिसाधनः १२७ निवृत्तःसंवृतःशिल्पोव्यूढोरस्कोमहाभुजः। एकज्योतिर्निरातंकोनरोनारायणप्रियः १२८ निर्लेपोनिष्प्रपंचात्मानिर्व्यग्रोव्यग्रनाशनः। स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोताव्यासमूर्त्तिरनाकुलः १२९ निरवद्यपदोपायोविद्याराशिरविक्रमः। प्रशांतबुद्धिरक्षुद्रःक्षुद्रहानित्यसुन्दरः १३० धैर्याग्र्यधुर्य्योधात्रीशःशाकल्यःशर्वरीपतिः। परमार्थगुरुर्दृष्टिर्गुरुराश्रितवत्सलः। रसोरसज्ञःसर्वज्ञःसर्वसत्त्वावलंबनः १३१ इतिसहस्रनामस्तोत्रम्॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इन हजारनामों से विष्णु भगवान् ने शिवजी की स्तुतिकरी और भक्तिसे पूजाकर प्रतिनामकरके कमलपुष्प चढ़ानेलगे इसीअवसरमें शिवजीने उनकी भक्ति परीक्षाके लिये गिनेहुये सहस्र कमलोंमें से एक कमल गुप्त करदिया विष्णुजीने भी सबकमल चढ़ायकर देखा तो एक कमल घटगया तब भगवान्ने कमलपुष्प न मिलने से अपनानेत्र कमल उत्पाटनकर शिवजी के अर्पण किया इस भांति विष्णु भगवान्का दृढ़भाव देख कोटि सूर्यके समान दे-दीप्यमान जटा औ मुकुटसे मण्डित ज्वाला मालाकरके चारोंओर व्याप्त तीक्ष्णदंष्ट्र अतिभयंकर हाथों में त्रिशूल, परशु, गदा, चक्र, कुंत, पाश, वर औ अभय धारण किये व्याघ्रचर्म ओढ़े सब शरीरमें भस्मलगाये अग्नि-

कुण्डसे श्री शिवजी प्रकटभये यह अति भयानक रूप शिवजी का देख सब देवता भयभीत हो भगे और सब ब्रह्माण्ड काँप उठा और चारों ओर सौ २ योजन तक शिवजी के अति उग्रतेजसे सब देश दग्ध होगया औ ऊपर नीचे हाहाकार मचगया विष्णु भगवान् भक्तिसे प्रणामकर हाथ जोड़ आगे खड़ेभये शिवजी भी भगवान्को हाथजोड़े खड़ेदेख हँसकर कहनेलगे कि हेविष्णुजी देवताओं का कार्य हम जानते हैं और आपने भी हमारा बहुत आराधन किया इसलिये हम आपको सुदर्शनचक्र देते हैं और हमने अति भयंकर रूप इसकारण आप को दिखाया कि सुदर्शनचक्र भी ऐसा ही शत्रुओं को भयदेनेहारा होगा जो हम सौम्यरूपसे आप को सुदर्शनचक्र देते तो वहभी सौम्य हो जाता और देवताओंका कुछकार्य सिद्ध नहींकरता शांतपुरुषको तपस्वीके साथ युद्ध करनेके समय शांतही आयुध है परंतु शत्रुके साथ युद्ध करनेके अवसर शांति करने से अपने बल की हानि और उसके बलकी वृद्धि होती है इसकारण युद्ध में शांत न होना चाहिये हमारे इस रूप का ध्यान करतेहुये युद्ध करो तो बिना आयुध भी जय पाओ इतना कह हजारों सूर्यों के तुल्य प्रकाशमान सुदर्शनचक्र शिवजी ने विष्णु भगवान्को दिया और कमलके समान अतिसुन्दर नेत्र भी दिया उसी दिनसे भगवान् का नाम पुण्डरीकाक्ष भया और भगवान् के ऊपर प्रेम से हाथ फेरकर शिवजी ने कहा कि तुमने अपनी दृढ़ भक्तिसे हमको वश कर लिया और

निन्नानबे अध्याय ॥

शौनकादि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी देवी के संभव का आपने सूचनमात्र किया अब हम यह सुनना चाहते हैं कि सती भगवती ने क्योंकर शरीरत्याग किया मेना के गर्भमें जन्म किसप्रकार लिया औ विष्णुजीने पार्वतीजीको शिवजीके प्रति किसभांति समर्पण किया औ दक्षके यज्ञका विध्वंस क्योंकर भया यह सब आप विस्तारसे वर्णनकरें यह मुनियोंका वचन सुन सब पौराणिकों में उत्तम सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह सब कथा ब्रह्माजी ने सनत्कुमारजी से कही सनत्कुमारजी ने श्री वेदव्यासजी को सुनाई औ श्री वेदव्यासजी से हमने पाई वह कथा हम आपको विस्तार से श्रवण कराते हैं भगरूप वह देवी लिंगमूर्त्ति सदा शिवकी प्रकृतिहै लिंग भी सदा भययुक्तहै इन दोनों से जगत्की उत्पत्तिहै लिंगमूर्त्ति स्वयंप्रकाश सदाशिव तमोगुणसे परे स्थितहै जलहरी के संयोगसे शिवलिंग अर्द्धनारीश्वर होतेहैं प्रथम अर्द्धनारीश्वर भगवान्ने ब्रह्माजी को उत्पन्नकिया औ उनको ज्ञानका उपदेशदिया ब्रह्माजी भी अर्द्धनारीश्वर प्रभुको देख औ उनसेही अपने को उत्पन्न भया जान स्तुति करतेभये औ वारंवार प्रणाम कर यह प्रार्थनाकरी कि महाराज आप अपने स्त्री पुरुष रूपका विभाग करैं यह ब्रह्माजी की प्रार्थना सुन परमेश्वरने अपने वामभागसे श्रद्धानामक पत्नी उत्पन्न करी वह शिवजी की प्रथम भार्या भई औ शिवजी की

आज्ञा सेही सती नामक दक्ष की पुत्री भई औ शिवजी को व्याही गई कुछकालके अनन्तर अपने पिता दक्षकी निन्दा कर शरीरत्याग हिमालयकी स्त्री मेनाके गर्भ से उत्पन्न भई नारद के शाप से अभिमानी दक्षप्रजापति यज्ञमें शिवजीकी निन्दा करनेलगा सती भगवती अपने पिताके मुखसे शिवनिन्दा सुन योगमार्गसे अपना शरीर दग्धकर हिमालय के तपसे प्रसन्नहो उसीके घर में उत्पन्न भई शिवजी भी सतीको दग्ध भई जान औ दधीचिका शाप मान दक्ष यज्ञको नष्ट करतेभये च्यवनके पुत्र दधीचिने शिवजी के अनुग्रह से विष्णुजी को जीत उनको औ सव देवताओंको शापदिया कि तुम सव शिवजी की क्रोधाग्निमें दग्ध होगे॥

सौवां अध्याय॥

शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी दधीचि के शापसे दक्षके यज्ञमें शिवजी ने क्योंकर विष्णुसहित देवताओं को दग्धकिया यह आप वर्णन कीजिये यह मुनियों का वचनसुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो दक्षके यज्ञमें जो देवता औ मुनिथे सवको शिवजी ने दग्ध किया सतीके वियोगसे खिन्नहोय दक्षकायज्ञ नाश करने की आज्ञा शिवजीने वीरभद्रको दी वीरभद्र भी शिवजीकी आज्ञापाय अपने रोमोंसे करोड़ोंगण उत्पन्न कर सवको साथले रथपर बैठ ब्रह्माजीको सारथि वनाय दक्षके यज्ञको जातभये औ सवगण भांति २ के शस्त्र हाथोंमें ले विमानों पर चढ़ भूमिको कँपाते हुये उनके

आगे पीछे चले हिमालयपर्वतमें हरिद्वारके समीप कन-खलनाम तीर्थमें दक्षका यज्ञ होरहाथा वीरभद्रकी यात्रा के समय अतिप्रचण्ड पवनचला जिससे वृक्ष उड़नेलगे भूमि कांपनेलगी पर्वतों के शिखर टूट २ गिरनेलगे समुद्रका जल अतिक्षोभको प्राप्तभया सूर्य औ ग्रह नक्षत्र सब निस्तेज होगये अग्नि प्रज्वलित न होतेभये इस-भांति अनेकदारुण उत्पातभये वीरभद्रने भी दक्षकेयज्ञ वाटमें जाय दक्षसे कहा कि सब देवता औ मुनियों म-हित तेरा नाशकरने को मुझे शिवजीने भेजाहै इतना कह यज्ञशालामें आग लगवादी औ सब गण क्रोध-कर यूप अर्थात् यज्ञस्तम्भोंको उखाड़ २ अग्निमें पट-कनेलगे औ होता, प्रस्तोता, अध्वर्यु, ऋत्विज आदिकों को गणोंने उठाय २ गङ्गाके प्रवाहमें फेंकदिया इन्द्रने वज्र उठाया तब वीरभद्रने इन्द्रकी भुजा स्तंभनकरदी भगनाम आदित्यके अपने नखों से नेत्र उखाड़लिये मूक्कामार पूषाके दांत गिरादिये पादांगुष्ठसे चंद्रमा को मारगिराया वीरभद्रजीने फिर क्रोधकर इन्द्रका शिरही काटलिया अग्निके दोनोंहाथ छेदनकर जिह्वाभी खैंच-ली यमकादण्ड छीन माथे में लातमारी ईशाननाम दि-क्पालको त्रिशूलसे भेदन करदिया इसभांति देवताओं का संहारकर मुनियोंको सम्हाला उस अवसरमें जो दे-वता अथवा मुनि सम्मुखआया उसी के खड्गसे दो खंड करदिये तब विष्णु भगवान् युद्धकरनेको उठे वीरभद्र का औ भगवान्का अतिदारुण युद्धहोनेलगा जिसमें तीन लोककांपउठे औ विष्णु भगवान्ने अपनी मायासे

शंख चक्र गदा पद्म धारे हजारों नारायण उत्पन्न किये वे सब वीरभद्रके साथ युद्ध करनेलगे वीरभद्रने भी उन सब नारायणों को शस्त्रोंसे हटाय एकगदा का प्रहार विष्णुभगवान् की छातीमें ऐसाकिया कि मूर्च्छित हो भूमिपरगिरे औ थोड़ेहीकालमें सम्हलकरउठे औ अति क्रोधकर वीरभद्रके मारनेके अर्थ सुदर्शनचक्र उठाया परन्तु वीरभद्रने चक्र सहित उनकी भुजाको स्तंभन करदिया औ तीन बाणोंसे शार्ङ्गनामक विष्णुका धनुष काटदिया औ अति तीच्ण एकबाणसे विष्णुभगवान् का मस्तक छेदनकरदिया औ उसमस्तकको अपने मुखपवनसे उड़ायकर आहवनीय नाम अग्निके कुंड में गेरा इसभांति चणमात्रमें सब यज्ञशाला दग्ध करदी कलश फोड़दिये यूप उखाड़डाले औ यज्ञ के सब सभासद मारदिये तब यज्ञभी भयभीतहो मृगका रूप धारकर आकाशकी ओर भगा परन्तु वीरभद्रने एक बाणसे उसका भी शिर उड़ादिया औ धर्म प्रजापति कश्यप बहुतपुत्रों करके युक्त अरिष्टनेमि अङ्गिरा मुनि कृशाश्व औ जो जो इधरउधर भागतेहुये देखपड़े सब को मस्तकों में पादसे ताड़नकर गिराया सरस्वती औ देवमाताकी नासिका अपने तीच्ण नखोंसे उखाड़ली औ दच्च प्रजापतिका शिर काटकर अग्निमें दग्ध करदिया इस प्रकार चणभरमें उसदक्षके यज्ञवाटको श्मशानके तुल्यकरदिया औ अति क्रोधसे गर्जनेलगे तब हाथ जोड़ ब्रह्माजी प्रार्थना करनेलगे कि हे वीरभद्रजी आपने सब यज्ञ का नाशकिया देवता औ मुनि मार-

दिये अबआप क्रोध को शांतकरैं अपने गणों को भी रोकैं यह ब्रह्माजी का वचनसुन वीरभद्र शान्तभये औ अपने सब गणों को भी चारों ओर से बुलालिया इस अवसर में नंदी आदि गणोंको साथले श्रीमहादेव जी भी वहांआये उनकोदेख ब्रह्माजी ने बहुतसीस्तुतिकरी औ शिवजी को प्रसन्नभयेजान यज्ञ में मारेगये देवता औ मुनियोंको फिरभी जीवदान मिलनेके लिये प्रार्थना करी श्रीब्रह्माजी की प्रार्थनासुन श्रीमहादेव जी ने जो जो यज्ञमें मारेगये औ जिनके अंग भंग होगये थे सब को पहिले की भांति करदिया औ जीवदान दिया सरस्वती औ देवमाता की नासिका ठीककरदी इन्द्र,विष्णु औ दक्षकाशिर लगादिया परन्तु दक्षकापूर्व शिरअग्नि में दग्धहोगया था इसकारण यज्ञ के पशुका मस्तक काट दक्षके लगाया दक्षभीफिर जीवदानपाय हाथ जोड़ शिवजी की स्तुति करनेलगा उसकी स्तुति से प्रसन्नहो शिवजीने दक्षको अपनागण बनाया औ भांतिभांतिके वरदिये नारायण,ब्रह्मा,इन्द्र आदि सबदेवता औ मुनि परमेश्वरकी स्तुति करनेलगे शिवजी भी प्रसन्नहो उन सबको अभीष्टवर देकर अंतर्द्धान भये औ देवता भी अपने अपने धामोंको गये ॥

एकसौ एकका अध्याय ॥

ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी सती भगवती हिमालयकीपुत्री किसभांति भई औ शिवजीको क्योंकर ब्याहीगई यह आप कहैं यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी

कहतेभये कि हे मुनीश्वरो हिमालय ने बहुततप किया तब प्रसन्न हो भगवतीने उसके घर जन्म लिया हिमालयने भी प्रसन्नता से सब जातकर्म आदि संस्कार अपनी पुत्रीके किये भगवती भी अपनी दो छोटी भगिनियों समेत बारह वर्ष की अवस्था में तप करने लगीं भगवती का उग्रतप देख बड़े २ ऋषिभी स्तुतिकरते थे इनतीनों बहिनों में बड़ीका नाम पार्वती अथवा अपर्णा था दूसरी का एकपर्णा औ तीसरी का नाम एकपाटलाथा पार्वतीजीने ऐसातप कियाकि शिवजी उनके वशभये इसी अवसरमें तार नामक दैत्य बड़ा प्रतापी भया जिसका पुत्र तारक औ पौत्र तारकाक्ष,विद्युन्माली औ कमलाक्ष ये तीनथे तारकने बड़ेघोर तपसे ब्रह्माजीको प्रसन्नकर बहुत पराक्रम पाया औ त्रैलोक्य को जीत विष्णु भगवान् को जीतनेगया विष्णुभगवान्के साथदिव्य हज़ार वर्षतक दिन रात तारकने युद्धकिया अंतमें झुँझलाय रथसहित विष्णु भगवान् को उठाय सौ योजनपर फेंकदिया विष्णुभगवान्भी हारमान अन्तर्द्धानभये औ तारकभी इन्द्र आदि सब देवताओं को ज़ीत ब्रह्माजीके अनुग्रहसे तीनलोकका स्वामी बनगया देवतासब स्थान से भ्रष्ट होगये तब इन्द्रने बृहस्पति से कहा कि महाराज तारके पुत्र तारकने हम सब को युद्धमें जीतलिया औ स्थान छीनलिये सब देवतास्थान च्युत होनेसे घबराय रहेहैं हमारे सबशस्त्र उसदुष्ट दैत्य के प्रभावसे कुंठितहोगये उसने हज़ारों वर्ष विष्णु भगवान्से युद्ध किया परंतु जयही पाया उसके आगे हम

सरीखे तो खड़ेभी नहीं होसक्ते युद्धकी तो कथाही दूरहै वृहस्पति यह दीनवचन इंद्रका सुन सबदेवता औ इंद्रको साथले ब्रह्माजीके समीप गये औ अपना सब कष्ट ब्रह्माजीको सुनाया ब्रह्माजीने उनकी प्रार्थना सुन कहा कि हे देवताओ तुम्हारा सब दुःख हमको विदित है इसकी निवृत्तिका उपाय हम कहते हैं दक्षकी अवज्ञा से सती भगवतीने अपने शरीरका त्यागकिया औ हिमालयके घरमें जन्म लियाहै अब ऐसा उपाय करो कि जिससे हिमालय की पुत्री श्री पार्वतीजी के रूपसे शिवजी के चित्तका आकर्षण होय उनके संयोगसे जो पुत्र उत्पन्न होगा वह सब देवसेना का स्वामी औ तारकासुर का संहार करनेहारा होगा इतना ब्रह्माजी का वचन सुन सब देवताओं सहित इन्द्र ब्रह्माजीको प्रणाम कर मेरु पर्वतको जाते भये वहां जाय कामदेवका स्मरण किया स्मरण करतेही अपनी पत्नी रतिको साथलिये कामदेव आयपहुंचे औ इन्द्र को तथा वृहस्पति को प्रणामकर कहा कि किस निमित्त हमारा स्मरण किया शीघ्र आज्ञादीजिये यह कामदेवका वचन सुन वृहस्पति बोले कि हे कामदेव ऐसा उपाय करो कि जिसमें शिवजी से पार्वतीका समागम होजाय तब हमारा कार्य सिद्धहोय औ शिवजी भी बहुत दिनके वियोगमें पार्वतीको पाय प्रसन्न होंगे औ तुमको उत्तम वर देंगे यह कामदेव वृहस्पति का वचन सुन उनको तथा इन्द्रको प्रणामकर रति सहित शिवजीके आश्रमको जाताभया वहां जाय वसंतको सहाय पाय शिवजीसे पार्वतीजीके समागम

होनेका विचार करने लगा इस अवसर में शिवजी ने उसका अभिप्राय जान क्रोधकर अपने तृतीय नेत्रसे उसको देखा देखतेही कामदेवभस्मकी ढेरीभया औ रति विलाप करने लगी रतिका अतिकरुणा विलाप सुन शिवजीके हृदयमें दया आई औ कहा कि हे रति यह तेरा पति शरीर विनाही सबके देहमें निवास करैगा औ जब भृगुके शापसे विष्णुजी वसुदेवके पुत्रहोंगे तब उनका पुत्र प्रद्युम्न नाम तेरा पति कामदेव होगा औ तबही तुझसे उसका समागम होगा इतना शिवजीका वचन सुन कुछ चित्तमें धैर्य कर अपने पतिके मित्र वसंतको साथले रति निजधामको गई॥

एकसौ दो अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो पार्वतीजी के उग्रतपसे प्रसन्नहो ब्रह्माजीका वचनमान आश्रमोंके हितके अर्थ शिवजीने पार्वतीजीसे विवाह किया मरीचि आदि ऋषियों को साथले ब्रह्माजी पार्वतीजी के तपोवन में गये औ वहां जाय पार्वती जी की प्रदक्षिणा कर शिर नवाय हाथजोर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे पार्वति इस उग्रतपसे लोकको क्यों संताप देतीहो यह जगत् आपनेही उत्पन्न कियाहै इस कारण इसकी रक्षा करनाही आपको उचितहै औ हे मातः जिनके हम सब किंकरहैं वे शंकर आपही आय तुमको वरैंगे तुम्हारे विना शिव नहीं रहसक्के इतनाकह पार्वतीजी को प्रणामकर ब्रह्माजी तो अपने लोकको गये औ ब्राह्मणका रूपधार श्री

महादेवजी अनुग्रह करने के अर्थ पार्वतीजी के आश्रम में आये पार्वतीजी ने भी अपने तपोबल से औ अनुमानसे जाना कि ब्राह्मणका रूप धारे ये शिवजी महाराजही हैं यह मनमें निश्चयकर विधिपूर्वक उनकी पूजाकरी औ हाथजोर भक्तिसे स्तुति भी करी शिवजी भी प्रसन्नहो हँसकर कहनेलगे कि हे पार्वति तेरे तप से हम बहुत प्रसन्न हैं हिमालयके घर आय शीघ्र तुम से विवाह करैंगे क्योंकि मर्यादा का भंग न करना चाहिये इतना कह अन्तर्द्धानभये औ पार्वती भी अपना अभीष्ट वरपाय पिताकेघरको आईं मेना औ हिमाचल भी पार्वती को देख बहुत प्रसन्नभये औ उनके तपकी प्रशंसा करनेलगे हिमालयको यह विदित न था कि पार्वतीजीके ऊपर शिवजीका अनुग्रह होगयाहै इसलिये कुछ दिनके अनन्तर पार्वतीजीका स्वयंवर ठहराया औ सब देवताओंको निमन्त्रण भेज बुलवाया हिमालयके निमन्त्रणसे ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि, भास्कर, भग, त्वष्टा, अर्यमा, विवस्वान, यम, वरुण, वायु, सोम, ईशान, ग्यारहरुद्र, सब मुनि, अश्विनीकुमार, आदित्य, गन्धर्व, गरुड़, यक्ष, सिद्ध, साध्य, दैत्य, किंपुरुष, नाग, समुद्र, नद, वेद, मन्त्र, स्तोत्र, क्षण, सर्प, पर्वत, यज्ञ, सूर्य आदि ग्रह औ तेंतीसहजार तेंतीससौ तेंतीस देवता पार्वती के स्वयंवर में इकट्ठे भये इस अवसर में रत्नजटित सुवर्ण के विमानपर पार्वतीजी भी आरूढ़ भईं मालिनी नाम सखीने उनके ऊपर पूर्णचन्द्रके तुल्य छत्रधारण किया विजयाने सूर्यमुखी पंखा लिया दो सखी दोनोंओर चा-

मर हाथों में लेकर खड़ी भई औ अप्सरा नृत्य करने लगीं गन्धर्व सिद्ध चारण वंदी आदि स्तुतिपढ़नेलगे जयानाम भगवतीकीसखी कल्पवृक्षके पुष्पोंसे बनीहुई स्वयंवरमाला को लिये स्थितथी इस अवसर में शिव जी वालकका रूपधार पार्वतीजीके अंक अर्थात् गोदमें आय बैठे उनको देखसवदेवता बड़े कुपितभये कि यह कौन मूढ़ बालकहै जो इस समय पार्वतीजी की गोदमें आय बैठा क्रोध कर इन्द्रने वज्र उठाया परन्तु वालक रूप शिवजीने अपनी दृष्टिसे ही उसकी भुजा स्तम्भन करदी तव अग्निने शक्ति यमने दण्ड निऋतिने खड्ग वरुण ने नागपाश वायु ने ध्वजा ईशान ने त्रिशूल औ कुवेरने गदा शिवजी पर चलाना चाहे परन्तु इन्द्रकी भांति सवजड़ होगये तव रुद्रोंने शूल आदित्योंने मूसल अष्टवसुओं ने शिवजी के ऊपर मुद्गरउठाये इन सवको भी दृष्टिमात्र से शिवजी ने कुंठित किया तव शिरहिलाते हुये चक्र लेकर विष्णुभगवान् उठे उनका मस्तक औ चक्र सहितभुजा उठतेही ऐसे जड़भये कि किसी भांति न हिलें पूषाने क्रोधसे दांतकटकटाय उस वालक की ओर देखा इससे उसके दांत गिरगये इस भांति सव देवता वल औ तेजके नष्टहोने से भीतरही भीतर क्रोधकी अग्निकरके दग्धहोनेलगे तव ब्रह्माजी ने देवताओं की यह दशादेख उद्विग्नहो देवताओं के पराभवकाकारण जानने के अर्थ ध्यानकिया तो जाना कि ये साक्षात् सदाशिवही वालकरूपधार पार्वती के उत्संग में आय वैठे हैं इनके आगे देवताओं का परा-

क्रम क्योंकर चल सकै यह मनमें विचार अति शीघ्रतासे उठ बालक रूप शिवजी के चरणों पर ब्रह्माजी ने प्रणाम किया औ भक्तिसे हाथजोर स्तुतिकरने लगे॥

ब्रह्मोवाच॥ स्रष्टात्वंसर्वलोकानाम्प्रकृतेश्चप्रवर्त्तकः॥ बुद्धिस्त्वंसर्वलोकानामहंकारस्त्वमीश्वरः १ भूतानामिन्द्रियाणाञ्चत्वमेवेशप्रवर्त्तकः॥ तवाहंदक्षिणाद्धस्तात्सृष्टःपूर्वम्पुरातनः २ वामहस्तान्महाबाहोदेवोनारायणःप्रभुः॥ इयंचप्रकृतिर्देवी सदातेसृष्टिकारणा ३ पत्नीरूपंसमास्थाय जगत्कारणमागता॥नमस्तुभ्यम्महादेव महादेव्यैनमोनमः ४ प्रसादात्तवदेवेशनियोगाच्चमयाप्रजाः॥ देवाद्यास्तुइमाःसृष्टामूढास्त्वद्योगमोहिताः ५ कुरुप्रसादमेतेषांयथापूर्वंभवन्त्विमे ६॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार शिवजी की स्तुतिकर ब्रह्माजीने देवताओंसे कहा कि हे मूढो तुम नहीं जानते कि बालकका रूपधारे ये साक्षात् सदाशिवहीहैं अब इनकीही शरणमें जाओ जिससे तुम्हारा कल्याण होय यह सुन सब देवता शिवजीको बार २ प्रणाम करनेलगे तब शिवजीने प्रसन्नहो ब्रह्माजीके कथनसे उनका अपराध क्षमाकिया औ पहिले की भांति सबके अंग करदिये औ आपभी अपना तीननेत्रों करकेयुक्त निजरूप धारण किया उनके तेजसे ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, चंद्र, सूर्य्य, सिद्ध, साध्य, यम, रुद्र आदिसब देवताओं की दृष्टि हत होगई इसकारण सबने शिवजीसे यहीप्रार्थना करी कि महाराज हमको आप दिव्यदृष्टि दीजिये जिससे आपके स्वरूपका हमको यथार्थ ज्ञानहोय यह

देवताओंकी विनती सुन शिवजीने सब देवताओं को औ हिमालयको दिव्य दृष्टिदी तबसब ब्रह्माआदि देवता हिमालय औ पार्वतीजी भक्तिसे शिवजीको प्रणाम करते भये औ स्तुति करने लगे सिद्ध चारण आदिकों ने पुष्पवृष्टि करी इस अवसरमें सब देवताओंके सम्मुख पार्वतीजीने स्वयंवर माला लेकर शिवजी के चरण कमलोंमें रखदी यह देख सब देवता बहुत प्रसन्न भये औ पार्वतीजी की प्रशंसा करने लगे औ ब्रह्मा आदि सब देवता पार्वती सहित शिवजीके चरणोंमें शिर नवाय स्तुति करते भये॥

एकसौतीन अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो ब्रह्माजीने हाथजोर श्री महादेवजीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज अब आप विवाह कीजिये यहसुन शिवजीने ब्रह्माजीसे कहा कि बहुत अच्छा आपसब विवाह की सामग्री इकट्ठी करें हम विवाह करेंगे यह शिवजी की आज्ञापाय एक रत्नमय बहुत उत्तम पुरबनाया औ दिति, अदिति, दनु, कद्रु, कालिका, पुलोमा, सुरसा, सिंहिका, विनता, सिद्धि, माया, क्रिया, दुर्गा, सुधा, स्वाहा, सावित्री, गायत्री, रजनी, दक्षिणा, द्युति, बुद्धि, ऋद्धि, वृद्धि, सरस्वती, राका, कुहू, सिनीवाली, अनुमती, धरणी, धारणी, इला, शची, नारायणी आदि सब देवमाता औ देवांगणा शिवजी के विवाहका उत्सवसुन अतिहर्षसे वहां आईं

नाग, यक्ष, गंधर्व, गरुड़, किन्नर, गण, समुद्र, पर्वत, संवत्सर,मास,ऋतु,वेद, मन्त्र, यज्ञ,धर्म, प्रणव औ अनेक द्वारपाल शिवजीके विवाह में आये एककरोड़ अप्सरा औ कई करोड़ उनकी दासी तथा सब द्वीपों में जितनी नदियांथीं वे नारी रूप धार २ बड़ी प्रसन्नतासे वहांआईं शुक्लवर्ण करोड़ोंगण शिवजीके विवाहोत्सव में आये दशकरोड़ गण साथ ले करके कराक्ष नाम मुख्य गण आया आठकरोड़के साथ विद्युत् चौंसठ करके विशाख नव करके पारियात्र छःकरोड़ोंकेसाथ सर्वान्तक औ विकृतानन बारहकरोड़ करके ज्वालाकेश सातकरके समद आठ करके दुंदुभि पांचकरके कपाली छः करके संदारक कोटिकोटिकरके कण्डक औ कुंभक आठकरके विष्टभ हज़ारकोटि करकेयुक्त पिप्पलऔ सन्नादआठकरके आवेष्टन सात करके चन्द्रतापन हज़ारकोटि करके युक्त महाकेश बारहकोटि करके कुण्डी औ पर्वतक सौ सौ कोटि करके काल कालक महाकाल औ अग्निक एक २ कोटि करके अग्निमुख आदित्य मूर्द्धा औ धनावह कोटि कोटि करके सन्नाम कुमुद अमोघ औ कोकिल साठकोटि करके काकपाद औ सन्तानक नव कोटि करकेमहाबल मधुपिंग औ पिंगल नव्वेकोटि करके नील औ पूर्णभद्र सत्तरकोटि करके चतुर्वक्त्र औ कई करोड़ गणों करके युक्त रुद्र शिवजीके विवाहमेंआये सहस्र कोटिभूत औ चौंसठि कोटि रोमज गणोंकरके युक्त श्रीवीरभद्र आये तीसकोटि करके करण नव्वेकोटि करके पंचाक्षशतमन्यु औ काष्ठकूर चौंसठकोटि करके सुकेश वृषभ

औ विरूपाक्ष औ चौंसठ २ करोड़ गणों करके सहित तालकेतु षडास्य, पंचास्य, सनातन, संवर्तक, चैत्र, लकुलीश, दीप्तास्य, लोकांतक, दैत्यांतक, मृत्यु, हृत, जय, कालहा, काल, विषाद, विषद, विद्युत्, कांतक, असनि, भासक औ शिवजीके अति प्रिय भृङ्गीरिटि आये इसभांति औरभी असंख्यातगण स्वर्ग पाताल आदि सबलोकों के निवासीबड़े पराक्रमी सब हज़ार २ भुजाओं करके युक्तजटा, मुकुट, हार, कुण्डल, केयूर आदि भूषणों से भूषित मस्तक पर चन्द्रकला धारे सब नीलकण्ठ औ त्रिलोचन कोटि सूर्यों के समान प्रकाशमान अणिमा आदि सिद्धियों करके युक्त ब्रह्मा, विष्णु औ इंद्रके तुल्य जिनका प्रताप सब शिवजी के विवाह में इकट्ठे भये तुम्बुरु, नारद, हाहा, हूहू आदि गंधर्व अनेक भांति के बाजे लेलेकर वहां आये औ बड़े २ ऋषिभी शिवजी के विवाह में आय वेदमंत्र पढ़नेलगे इसप्रकार बड़ा भारी समुदाय शिवजीके विवाहमें एकत्र भया औ चारोंओर नृत्य गीत होनेलगा इस अवसर में विष्णु जी सब भूषणों से भूषितकर पार्वतीजी को ब्रह्माजीके रचे नवीन नगरमें लाये वहां ब्रह्माजी ने विष्णु भगवान्से कहा कि हे विष्णुजी आप औ भगवतीजी शिवजीके वाम अंगसे उत्पन्न भये औ उनके दक्षिण अंगसे हमारी उत्पत्तिहै यह हिमालय हमारा अंशहै औ यज्ञकेलिये उत्पन्न कियाहै फिर शिवजीकी मायासेही भगवती हिमालयकी कन्याभई औ श्रौत, स्मार्त्त धर्मकी प्रवृत्तिके अर्थ शिवजी विवाह करने आयेहैं सब जगत्की आपकी

औ हमारी यह पार्वती माताहै औ शिवजी पिताहैं इस शिवजीकी मूर्त्तियोंसेही जगत् उत्पन्न भया है क्योंकि भूमि, जल, अग्नि, आकाश, पवन, सूर्य, चन्द्र ये सब शिवजीकी मूर्त्ति हैं यह पार्वती शुक्ल, कृष्ण,लोहितवर्णों से युक्त अजा अर्थात् मायाहै औ तुमभी प्रकृतिरूपहौ अब हमारे औ हिमालय के वचनसे शिवजी के प्रति पार्वतीजी को देना उचितहै यह हिमालयके औ आप के साथ शिवजीका बहुत उत्तम संबंधहोगा पद्मकल्प में आपकी नाभिकमलसे हम उत्पन्नभयेहैं औ हिमालय हमारा अंशहै इसकारण हमारे औ हिमालयकेभी आपगुरुहैं सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह ब्रह्माजीका वचन शिवजीने विष्णु भगवान्ने औ सबदेवताओंने स्वीकार किया औ विष्णु भगवान्ने उठकर शिवजी को प्रणामकिया औ उनके चरणधोय उस चरणोदक को अपने ब्रह्माजी के औ हिमालयके मस्तक पर छिड़का औ शिवजीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज यह पार्वती मेरी छोटी भगिनी है इसको आप ग्रहणकरैं यह कह हाथमें जल लेकर पार्वतीजी को संकल्पकर शिवजी के अर्पण किया औ भक्ति से अपने आत्माको भी शिवजीको निवेदन करदिया सब वेदार्थ के पारगामी मुनि कहनेलगे कि दान करनेहारा दान द्रव्य दान ग्रहण करनेवाला औ दानका फल सब शिवही है इसकी मायासे सब जगत् व्याप्त है इतनाकह प्रीति से रोमांचित हो शिवहीको वार २ प्रणाम करतेभये आकाश में दुंदुभि बजनेलगे सिद्ध औ चारणोंने पुष्पवर्षा करी अप्सरा नाचनेलगीं

मूर्त्तिमान् चारोंवेद शिव जीकी स्तुतिमें प्रवृत्तभये लज्जा- युक्त पार्वतीजी को देख शिवजी औ शिवजीको प्रेमसे देख २ पार्वतीजी मनहीं मनमें प्रसन्न होते थे इस अव- सरमें शिवजीने विष्णु भगवान्से कहा कि हम बहुत प्र- सन्नहैं वर मांगो तब विष्णुजीने कहा कि महाराज आपके चरणों में दृढ़भक्ति बनीरहे यह वर चाहते हैं शिवजीने भी उनको अपनी दृढ़भक्तिदी औ उनका दूसरानाम ब्र- ह्माभीरक्खा इसीसमय ब्रह्माजीने शिवजीसे प्रार्थनाकरी कि हवन आदि सब विवाहकी विधि करनी चाहिये आपकी आज्ञाहोय तो हम हवन आदि कर्मकरें क्योंकि हम आपके विवाहमें आचार्य हैं यह ब्रह्माजीकी प्रार्थ- सुन शिवजीने कहा कि हे ब्रह्माजी जो कुछ इससमय उ- चितहोय वह आपकीजिये हम तो सब आपकाही कह करेंगे यह शिवजी की आज्ञापाय ब्रह्माजी ने शिवज औ पार्वतीजी का हाथ मिलाया औ श्रौत,स्मार्त्त मंत्र करके मूर्तिमान् अग्निमें लाजा होमकराय वर औ वधूक अग्निकी तीन प्रदक्षिणा कराय दोनों के हाथ अलग क्रिये औ विष्णुजी के लायेहुये ब्राह्मणों की विधिपूर्वव पूजाकरी इसप्रकार विवाह कराय ब्रह्माजी ने शिवजी को प्रणाम किया [illegible] [illegible] देवताओं सहित हाथ जोर स्तुति करनेलगे भृगुआदि ऋषि औ सूर्यआदि ग्रह अक्षत तिल तण्डुलों से शिव- जीका पूजन करते भये विवाह होनेके अनंतर अग्निका विसर्जन किया हे मुनीश्वरो लोकहितके अर्थ इसभा-

ति शिवजीसे पार्वतीजीका विवाहभया इस शिवविवाह की कथा को जो भक्तिसे सुनै पढ़े अथवा वेद वेदांग जाननेहारे शुद्ध ब्राह्मणोंको श्रवण करावै वह शिवजी का गण होय सदा शिवजीके समीप निवासकरै जहां इसको पठनकरै वहां अवश्य शिवजी आतेहैं इसकारण हेमुनीश्वरो उत्तम स्थानमेंही पठन करना चाहिये इसप्रकार शिवजी विवाहकर पार्वतीजी औ नंदीआदिगणोंको साथले काशी में आय आनन्द से निवास करतेभये वहां पार्वतीजीने अविमुक्तक्षेत्रका माहात्म्य पूछा तब शिवजी कहनेलगे कि हे प्रिये इस क्षेत्र का माहात्म्य कहांतक वर्णनकरैं जहां बड़े २ पापी मरने सेही मुक्ति पाते हैं परंतु और स्थानोंमें कियेपाप काशी में निवृत्त होतेहैं औ काशी में पाप करनेसे मनुष्य नरक वासकर पिशाच होताहै पर काशीमें पिशाचहोकर रहनाभी स्वर्गमें इंद्रवनके रहने से उत्तम है जिसक्षेत्र में त्रिविष्टपेश्वर,विश्वेश्वर,ओंकारेश्वर, कृत्तिवासेश्वर आदि शिवलिङ्ग हैं वहां मुक्ति क्यों न होय इसभांति संक्षेप से क्षेत्र माहात्म्य कह सबगणोंको छोड़ पार्वतीजीको साथले आनंदवन में विहार करनेलगे वहांही दैत्यों को विघ्न औ देवताओं को अविघ्न देनेहारे श्री गणेशजी उत्पन्न भये हे मुनीश्वरो यह शिवविवाहकी कथा जैसीहमने वेदव्यासजीसे सुनीथी वैसेही आपको श्रवण करादी अब आप क्या सुनना चाहतेहैं सो कहें॥

एकसौचार अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी गणेशक जन्म किसप्रकार हुआ औ गणेशजीका क्या प्रभाव है यह आप वर्णनकरैं यहसुन सूतजी कहनेलगे कि हेमु नीश्वरो शिव पार्वती तो विहार करने में प्रवृत्त भये औ देवताओंने परस्पर विचार किया कि दैत्य सब यज्ञ तप आदि करके शिवजीको तथा ब्रह्माजी को प्रसन्न कर मनमाना वर ले लेते हैं औ सदा हमारा पराजय करतेहैं इस कारण शिवजीसे प्रार्थना करैं कि दैत्योंके कर्मोंमें विघ्न औ हमारे कर्मोंमें अविघ्न करने के अर्थ तथा नारियोंको पुत्र देनेके अर्थ औ मनुष्यों के सबकाम सिद्धहोनेके लिये गणपतिको उत्पन्न करैं यह मनमें ठान सब देवता शिवजी के समीप जाय स्तुति करने लगे॥

देवाऊचुः॥ नमःसर्वात्मनेतुभ्यं सर्वज्ञायपिनाकिने। अनघायविरिंचाय देव्याःकार्यार्थदायिने १ अकायायार्थकायाय हरेःकायापहारिणे। कायांतःस्थामृताधारमण्डलावस्थितायते २ कृतादिभेदकालाय कालवेगायते नमः। कालाग्निरुद्ररूपाय धर्माद्यष्टपदायच ३ कालीविशुद्धदेहाय कालिकाकारणायते। कालकण्ठायमुख्याय वाहनायवरायते ४ अंबिकापतयेतुभ्यं हिरण्यपतये नमः। हिरण्यरेतसेचैव नमःशर्वायशूलिने ५ कपालदण्डपाशासिचर्मांकुशधरायच। पतयेहैमवत्याश्च हेमशुक्लायतेनमः ६ पीतशुक्लायरक्षार्थं सुराणांकृष्णवर्त्मने। पंचमायमहापंचयज्ञिनांफलदायच ७ पंचास्यफणिहा

राय पंचाक्षरमयायते। पंचधापंचकैवल्यदेवैरर्चितमूर्त्त ये ८ पंचाक्षरदृशेतुभ्यं परात्परतरायते। षोडशस्वरव ज्राङ्गवक्त्रायात्रयरूपिणे ९ कादिपंचकहस्ताय चादिह स्तायतेनमः। टादिपादायरुद्राय तादिपादायतेनमः १० पादिमेढ्राययाद्यंगधातुसप्तकधारिणे। सांतात्मरूपिणे साक्षात्त्वदंतक्रोधिनेनमः ११ लवरेफहलांगाय निरंगा यचतेनमः। सर्वेषामेवभूतानां हृदिनिस्वनकारिणे १२ भ्रुवोरंतेसदासद्भिर्दृष्टायात्यंतभानवे। भानुसोमाग्निने त्रायपरमात्मस्वरूपिणे १३ गुणत्रयोपरिस्थाय तीर्थपा दायतेनमः। तीर्थतत्त्वायसाराय तस्मादपिपरायते १४ ऋग्यजुःसामवेदायओंकारायनमोनमः। ओंकारेत्रिविधं रूपमास्थायोपरिवासिने १५ पीतायकृष्णवर्णाय रक्ता यात्यंततेजसे। स्थानपंचकसंस्थाय पंचधाएडब्रहिःक्र मात् १६ ब्रह्मणेविष्णवेतुभ्यं कुमारायनमोनमः। अंबा याःपरमेशाय सर्वोपरिचरायते १७ मूलसूक्ष्मस्वरूपा य स्थूलसूक्ष्मायतेनमः। सर्वसंकल्पशून्याय सर्वस्माद्र क्षितायते १८ आदिमध्यांतशून्याय चित्संस्थायनमो नमः। यमाग्निवायुरुद्राम्बुसोमशक्रनिशाचरैः १९ दि ङ्मुखेदिङ्मुखेनित्यं सगणैःपूजितायते। सर्वेषुसर्वदास र्वमार्गैःसंपूजितायते २० रुद्रायरुद्रनीलायकद्रुद्रायप्रचे तसे। महेश्वरायधीरायनमःसाक्षाच्छिवायते २१॥इति॥

हे मुनीश्वरो इसभांति स्तुतिकरके सब देवता कहने लगे कि हेनाथ इस स्तुतिके व्याज अर्थात् बहानेसे आ-पके चरित्रका वर्णन किया यह आप क्षमाकरें इसस्तोत्र को जो पुरुषपढ़ै सुनै अथवा सुनावे वह परमधाम पावै॥

एकसौपांचवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो शिवजी भी इस प्रकार स्तुति सुनकर देवताओं को दर्शन देतेभये सब देवता शिवजी का दर्शन पाय अति प्रसन्न भये और वार २ प्रणाम करनेलगे शिवजी ने कहा कि जो अभीष्ट वर होय वह मांगो हम प्रसन्नहैं तब सब देवताओं की ओरसे बृहस्पति कहनेलगे कि महाराज सब देवताओं के शत्रु दैत्य निर्विघ्न आपका आराधन करते हैं औ आपभी उनपर शीघ्रही प्रसन्न होजाते हैं अब सबदेवताओं की यही प्रार्थनाहै कि उनके कर्मों में विघ्नहुआ करै यह वर मिले देवताओं की इसप्रकार प्रार्थना सुन शिवजी ने पार्वतीजी के गर्भसे पुत्र उत्पन्न किया जिन का मुख हस्तीकासा था औ हाथोंमें त्रिशूल पाश धारण कररक्खे थे उनका जन्म होतेही पुष्पवृष्टि भई सबदेवता औ गण गणेशजी के चरणों में प्रणाम करनेलगे गजानन भी अपने माता पिताके आगे आनंदसे नृत्य करनेलगे पार्वतीजी ने अतिसुन्दर भूषण वस्त्रोंसे गजाननको भूषित किया औ शिवजीने जातकर्म आदि सब संस्कार किये औ गजाननको अपनी गोदमें ले आलिंगन कर प्रेमसे मस्तक सूंघ शिवजी कहने लगे कि हे पुत्र दैत्योंके नाशके लिये औ देवता ऋषि औ ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणों के उपकारके अर्थ तुम्हारा अवतार भयाहै भूमि पर जो दक्षिणाहीन यज्ञकरे उसके धर्ममें तुम विघ्नकरो जो पुरुष अन्याय से अध्ययन अध्यापन व्याख्यान

आदि कर्म करै उसके प्राण हरो पतित पुरुष स्त्री औ और भी जो अपने धर्मसे च्युत होयँ उनके कर्मोंमें विघ्नकरो हे विनायक जो स्त्री पुरुष सदा भक्तिसे तुम्हारा पूजन करतेरहैं उनको अपने समान करो तुम्हारे भक्त बालक युवा वृद्ध कैसेही होयँ उनकी रक्षाकरो सब जगत् में विघ्नोंके स्वामी तुम पूज्य औ वंदनीय होगे जो पुरुष हमारा विष्णुजीका औ ब्रह्माजीका यज्ञों से यजन करैंगे वे प्रथम तुम्हारा पूजनकरलेंगे तुम्हारा पूजन किये विना श्रौत, स्मार्त मैं गलकृत्य जो पुरुष करैगा उसको वह अमंगलही होगा चारोंवर्ण सब सिद्धियों के अर्थ भक्ष्य भोज्यआदि करके तुम्हारी पूजाकरेंगे गन्ध पुष्पआदि करके तुम्हारी पूजा विनाकिये देवताओं के भी कार्य्य सिद्ध न होंगे जो तुम्हारी पूजा करैंगे वे देवताओं के भी पूज्य होंगे हम विष्णु इंद्रभी जो कार्य्य के आरंभमें तुम्हारा पूजन न करैं तो विघ्नकरो इसभांति शिवजी ने गणेशजी को उत्पन्नकर सब विघ्नोंके स्वामी किया औ भांति २ के वर दिये गणेश जी भी शिवजी को प्रणामकर भक्ति से हाथ जोड़ उनके संमुख खड़े भये हे मुनीश्वरो स्कन्द के ज्येष्ठभ्राता गणपतिकी यह उत्पत्ति हमने वर्णनकरी जो पुरुष इसको भक्ति से पढ़े सुनै अथवा ब्राह्मणोंको श्रवणकरावे वह सुखीहोय ॥

एकसौछठा अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी गजानन की उत्पत्ति हमनेसुनी अबआप यह वर्णनकरैं कि शिव-

जीने नृत्य किस प्रकार किया औ किस अर्थ किया यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो पूर्वकालमें बड़ा पराक्रमी दारुकनाम एक दैत्यभया उसने देवता औ ऋषियोंको अति पीड़ादी उसदैत्यका मृत्यु स्त्री के हाथसे था इसकारण स्त्रीरूपधार सब देवता उसके साथ युद्ध करनेलगे तौ भी न जीते तबसब व्याकुलहो शिवजीके शरणमें गये औ शिवजीको बारंबार प्रणाम कर दारुकदैत्य का उपद्रव सुनाया औ कहा कि महाराज वह स्त्रीवध्य है इसकारण हमारा बल पौरुष उसके आगे नहीं चल सकता यह ब्रह्माआदि देवताओं की प्रार्थना सुन शिवजी ने हँसकर पार्वतीजी से कहा कि हे प्रिये तुम देवताओं का कष्ट दूरकरो यह शिवजी का वचन सुन पार्वतीजी अपने एक अंशसे शिवजी के शरीर में प्रवेश करती भई औ दूसरे अंशसे शिवजी के समीप स्थित रहीं शिवजी के समीप पार्वतीजी को पूर्ववत् बैठी देख यह बात ब्रह्मादिक देवताओंने भी न जानी कि पार्वतीजी ने शिवजी में प्रवेश कियाहै पार्वतीजी का जो अंश शिवजी के देहमें प्राविष्टभया वह उनके कंठमें स्थित विषके प्रभाव से कृष्णवर्ण होगया शिवजी नें भी यह बात जान उस अंशको काली भगवती के रूप करके अपने तृतीय नेत्रसे उत्पन्न किया अति भयंकर रूप कृष्णवर्ण कंठ में विष धारण किये हाथमें त्रिशूल लिये मस्तक पर चंद्रकला धारे तीननेत्रों से शोभित भांति २ के सर्पों के भूषण पहिने श्रीकाली भगवती को देखसब देवता भयभीत हो भगे औ काली

भगवती के साथ अनेक देवी, सिद्ध, पिशाच आदि शिवजी के तृतीय नेत्रसे उत्पन्न भये औ काली भगवती ने शिवजी की आज्ञा पाय अति शीघ्रतासे दारुण दैत्यका संहार किया परन्तु काली भगवती के क्रोधरूप अग्नि से सबजगत् भस्महोनेलगा तब शिवजी भगवती का क्रोध पान करनेके अर्थ बालक रूपधार श्मशानअर्थात् काशीमें रोदनकरनेलगे भगवतीनेभी शिवकी माया से मोहित हो उस बालकरूप शिवको गोदमेंले अपना स्तन उसके मुखमेंदिया उस बालकनेभी स्तनकेदुग्ध के साथ भगवती का सब क्रोध पान करलिया उसी क्रोधके पानसे वह बालकरूप शिव क्षेत्रपालभये क्षेत्रपालकी भी आठ मूर्त्ति हैं इसभांति शिवजीने बालक रूपधार भगवती का क्रोधहरा औ भगवतीकी प्रीतिके लियेही शिवजी ने सन्ध्यासमय भूत प्रेतों को साथले तांडवकिया शिवजी का उत्तम नृत्यदेख अपनी योगिनियों सहित भगवती भी नृत्य करती भई औ ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवता काली भगवती पार्वती औ शिवजी को वारंवार प्रणाम करते भये औ हाथ जोड़ सब देवताओं ने भक्तिसे स्तुति भी करी हे मुनीश्वरो यह शिवजी के तांडवका वर्णन हमने संक्षेप से किया है परन्तु सनक आदि मुनि यह भी कहतेहैं कि शिवजीका तांडव केवल आनन्दकेअर्थ है और कुछ कारण नहीं है हे मुनीश्वरो अब आप क्या श्रवण किया चाहते हैं सो कथन करें ॥

एकसौसातवां अध्याय ॥

ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी उपमन्युको शिवजी ने क्षीरसमुद्र किसभांति दिया औ अपना गण कैसे बनाया यह आप हमको श्रवणकरावैं सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो इसप्रकार काली भगवतीके अवतार होनेके अनन्तर उपमन्यु ने शिवजीका आराधनकिया औ अपना अभीष्टफलपाया हे मुनीश्वरो उपमन्युनाम एक ब्राह्मणका बालकथा उसने एकबार अपने मातुल के घरमें दूध पिया इससे दूधके स्वादको जानगयाथा फिर वह अपने मातुलपुत्र को एक दिन दूध पीतेदेख रोताहुआ अपनीमाताके समीपआया औ कहने लगा कि हे माता मुझे भी गरम २ गौका बहुतसा दुग्धलादे मेरी बहुत इच्छा है यह पुत्रका वचन सुन वह अपने दारिद्र्य को स्मरण कर रोनेलगी औ उपमन्यु भी दूध ही दूध पुकारता था पुत्र को दूध के लिये अतिरोदन करते देख उसकी माताने एकएक कण बीनकर कुछ अन्न इकट्ठाकर रक्खा था उसमें से थोड़ा सा पीसकर जलमें घोल उपमन्यु को दिया औ कहा कि हे पुत्र तू यह दूध पीले यह माता का वचन सुन उपमन्यु बोला कि यह कृत्रिम दूध मैं नहीं पीता मैं दूधका स्वाद जानताहूं इतना कह रोनेलगा तब उसकी माता व्याकुल हो उपमन्युको गोदमें ले उसके आंशू पोंछ कहनेलगी कि हे पुत्र स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी आदि सब स्थानों में रत्नोंके प्रवाह बहते हैं परन्तु भाग्यहीन पुरुषोंको नहीं

मिलसकते राज्य,स्वर्ग,मोक्ष, क्षीर आदि उत्तम भोजन औ भांति २ के पदार्थ शिवजी के अनुग्रह विना नहीं मिलसकते औ देवोंका आराधन करनेहारे पुरुष अनेक दुःख भोगते हैं केवल शिवाराधनसे ही सब दुःखों का नाश होताहै हे पुत्र हमने शिवका आराधन नहींकिया इसलिये हमको दुग्धदुर्लभहै पूर्वजन्म में शिवजी के निमित्त अथवा विष्णुभगवान् के निमित्त जो पदार्थ दिया होय वही दूसरे जन्म में मिलताहै यह माता का वचन सुन उपमन्यु कहने लगा कि हे माता शोक मतकर मैं उग्रतप करके शिवजी का आराधन कर क्षीरसमुद्र को अपने अधीन करूंगा इतनाकह माता को प्रणाम कर तप करने के लिये प्रवृत्त भया उसकी माता ने भी कहा कि हे पुत्र उत्तमक्षेत्र में जाय भली भांति शिवजी का आराधन कर जिससे तेरेसब मनोरथ सिद्धहोयँ यह माताकी आज्ञापाय हिमालय पर्वत में जाय अन्न जल को त्याग केवल वायु भक्षणकरताहुआ शिवजी की प्रसन्नताके लिये तप करनेलगा थोड़ेही कालमें उसके अति उग्रतप से सबजगत् सन्तप्तभया तब देवता विष्णुजी से कहने लगे कि महाराज सब जगत् व्याकुलहोरहाहै इसका कारण नहीं जानते यह देवताओंका वचन सुन भगवान्ने विचार किया तो जाना कि उपमन्युके उग्रतपका यह प्रभावहै यह जान सब देवताओं को साथले विष्णुभगवान् मंदराचलमें गये वहां जाय शिवजीको प्रणाम कर हाथ जोड़ कहनेलगे कि महाराज एक ब्राह्मणकाबालक क्षीरसमुद्र के अर्थ तप कररहाहै उसके

दारुण तपसे सब जगत् व्याकुलहै इसलिये आप उस बालक को तपसे निवृत्तकरें यह विष्णु भगवान्का वचनसुन शिवजी इन्द्रका रूपधार ऐरावतहस्ती पर चढ़ सब देवताओं को साथले उपमन्यु के आश्रमको जाते भये औ सूर्य भगवान्ने उनके ऊपर छत्र धारण किया उपमन्यु भी इन्द्रको देख प्रणामकर हाथ जोड़ कहने लगा कि हे देवराज आपने मेरेऊपर बड़ाअनुग्रह किया आपके आगमनसे यहमेरा आश्रम पवित्रभया यह उपमन्युका वचन सुन इन्द्ररूप शिवजीने कहा कि हेमुनिबालक तेरे तपसे हम प्रसन्न हैं जो तेरी इच्छा होय वह वर मांग यह सुन उपमन्युने कहा कि महाराज शिवजी में दृढ़ भक्तिहोय यही वरचाहताहूं यहसुन हँसकर इन्द्र रूप शिवजी ने कहा कि हे उपमन्यु सब देवताओं का राजा औ त्रैलोक्यका स्वामी मैंहूं मेरेको तू नहीं जानता अब तू मेराभक्तहोजा औ निरंतर मेराही यजनकर जिससे सब कल्याण होयँ निर्गुण शिवसे क्यालेगा यह अतिकठोर वचनसुन उपमन्यु बोला कि अरे इन्द्रकारूप धारे तू कोई दुष्ट दैत्यहै औ मेरे तपमें विघ्नकरनेआया है तू शिवकी निन्दाकरताहै इसीसे मैं जानताहूं कि कोई असुरहै इतना तौ तैंने ठीककहा कि शिव निर्गुणहैं तेरे से शिवनिन्दा सुन मुझे भी बहुत पापलगा इसलिये तुझे मारकर मैं भी अपना शरीर त्यागकरूंगा जो पुरुष शिवनिन्दक को मार आपभी मररहै वह शिवलोक को जाता है औ शिवनिन्दा करनेहारेकी जो जिह्वा उखाड़ले तो इक्कीस कुलसहित मुक्ति पावै हे दुष्टदैत्य अब

में क्षीरसमुद्र की इच्छा छोड़ पहिले शिवास्त्र करके तुझे संहारकर अपना शरीर त्यागताहूं इतना कह भस्मकी मुष्टि अथर्वास्त्र से अभिमंत्रण कर इन्द्ररूप शिवजी के ऊपर छोड़ी औ अपना शरीर दग्धकरने के अर्थ आग्नेयीधारणा का ध्यान करनेलगा इस अवसरमें भक्तवत्सल श्री महादेवजी ने सौम्य धारणाकरके आग्नेयी धारणा निवृत्तकर उपमन्यु के शरीर की रक्षाकरी औ नंदीकी प्रेरणासे चन्द्रकनाम गणने शिवजी के शरीरसे अथर्वास्त्र को हरा औ शिवजी ने अपना चन्द्रशेखररूप उपमन्यु के आगे प्रकट किया उसी समय क्षीरसमुद्र दधिसमुद्र घृतसमुद्र औ भांति २ के भक्ष्य भोज्य अपूप लड्डू आदि पदार्थों के पर्वत उपमन्युके चारों ओर होगये औ हँसके अतिदयालु श्रीशंकर ने उपमन्यु से कहा कि हे पुत्र अपने बांधवों सहित सब पदार्थों का यथेच्छ भोगकर हे उपमन्यु यह पार्वती तेरी माताहै औ हमने तुझको अपना पुत्र बनाया औ दूध, दही, घृत, शर्करा आदि पदार्थों के समुद्र तथा सब भांतिके भक्ष्य भोज्यों के पर्वत तेरेको हमने दिये औ तुझे अमरकर अपना गण बनाया अब औरभी जो वर तेरेको अभीष्ट हो मांग इतनाकह शिवजी ने उपमन्युको अपनी भुजाओंसे उठाय आलिंगनकर उसका मस्तकसूंघ श्रीपर्वती की गोदमें दिया पार्वतीजी ने भी प्रसन्न हो ब्रह्मविद्या औ योगैश्वर्य उसकोदिया उपमन्यु भी शिवजी का पुत्र बन भांति २ के वरपाय प्रेम औ हर्ष से गद्गद वाणी हो शिवजी की स्तुति करता भया औ स्तुति के अन्त

में श्रीमहादेव जी से यह वर मांगताभया कि हे देवदेव आपके चरणकमल में दृढ़ श्रद्धा होय औ सदा आपका सान्निध्य बनारहै यह उपमन्युका वचनसुन उसके सब मनोरथ पूरेकर पार्वती सहित श्री सदाशिव अन्तर्द्धान भये हे मुनीश्वरो इस कथाको जो पढ़ै अथवा सुनै वह उपमन्युकी भांति शिवजीका कृपापात्र होय औ शिवगणहोकर शिवलोक में बास करै॥

एकसौआठवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी हमने सुना है कि श्रीकृष्ण भगवान् ने धौम्य मुनिके ज्येष्ठ भ्राता उपमन्यु सेही पाशुपत व्रतकीदीक्षा ग्रहणकरी औ दिव्य ज्ञान पाया यह आप हमको श्रवण करावैं कि श्रीकृष्ण किसभांति उपमन्यु के शिष्य भये यह मुनियोंका प्रश्नसुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो अपनी इच्छासेही विष्णु भगवान् ने वसुदेवके घर जन्म लिया तौभी मनुष्य देहकी शुद्धिके अर्थ औ पुत्रप्राप्ति के लिये श्रीकृष्ण भगवान् उपमन्युके आश्रम में तप करनेगये वहां जाय तीन प्रदक्षिणा कर उपमन्यु के चरणों पर भगवान् ने प्रणाम किया उपमन्यु के दर्शन सेही श्रीकृष्ण भगवान् के कायज औ कर्मज सबमल नष्टहोगये उपमन्युने भी अग्निरितिभस्म इत्यादि मन्त्रों से भस्म को अभिमन्त्रण कर अपने सबदेहमें लगाया औ श्रीकृष्ण भगवान् को भी भस्मोद्धूलन कराय दिव्य पाशुपत ज्ञानका उपदेश किया भगवान् भी पाशुपत योग पाय उ॰

ग्रतप करने लगे औ एकवर्ष के अन्तमें महादेवजी ने प्रसन्न हो उनको बरदिया जिससे भगवान्ने बड़ापराक्रमी सांबनामक पुत्र पाया उसीदिनसे पाशुपत दिव्य ज्ञान को जाननेहारे बड़े २ ऋषि औ योगी श्री कृष्ण भगवान्के समीप रहनेलगे हे मुनीश्वरो जो आपने पूछा सो हमने कथनकिया अब औरभी एकमुक्ति उपाय कहतेहैं कि जो पुरुष सुवर्णकी मेखला अर्थात् जलहरी, जलहरी रखनेका आधार, दण्ड, सुवर्ण का लिङ्ग, छत्र, पङ्खा, लेखनीक्षुर अर्थात् चक्कू, मषीभाजन अर्थात् दावात, कैंची औ जलपात्र येसब उपकरण सोने चांदी अथवाताँबेकेही बनवाय अपने वित्तके अनुसार पाशुपतयोगी को देवै वह सब पापों से मुक्तहो अपने कुलसहित शिवलोकमें निवास करता है इसमें कुछ संदेह नहीं इसदान से गृहस्थी संसार बन्धन से मुक्तहोता है योगियों को देनेसे शिवजी बहुत प्रसन्न होतेहैं इसकारण राज्य,पुत्र, धन, घोड़े,हाथी आदि वाहन अथवा सर्वस्वही दानकरै जो मोक्षकी इच्छा रखता होय तो इस अनित्य शरीर करके नित्य औ संसारसागर के पार करनेहारा दिव्य पाशुपतज्ञान अवश्य साधन करना चाहिये हे मुनीश्वरो यह सब शिवकथा हमने संक्षेपसे वर्णनकरी इसको जो पढ़े अथवा सुनै वह विष्णुलोकमें निवासकरै ॥

॥ पूर्वार्द्ध समाप्त भया ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

लिङ्गपुराण का उत्तरार्द्ध

पहिला अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी श्रीकृष्ण भगवान् किसकर्म करके प्रसन्न होतेहैं यह आप हमको कथन करें क्योंकि आप सब बातों में चतुरहो यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यही प्रश्न राजा अम्बरीषने मार्कण्डेय मुनिसे कियाथा तब मार्कण्डेयने अम्बरीषको जो उत्तर दिया वह हम आपको श्रवण कराते हैं राजा अम्बरीष पूछते हैं कि हे मार्कण्डेयजी आप सब धर्मोंके पारगामी और पुराणों के रहस्यको जाननेहारे हो इसलिये कृपाकर यह कथन करो कि नारायणके रचे दिव्य धर्मोंमें परमेश्वर के भक्तों के लिये कौन धर्म उत्तमहै सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह राजा का प्रश्न सुन हाथ जोड़ नारायण को प्रणाम कर मार्कण्डेय मुनि कहने लगे कि हे राजन् नारायण का स्मरण पूजन भक्तिसे प्रणाम ये सब कर्म एक २ अश्वमेध का फल देतेहैं क्योंकि वह नारायण एक परमात्मा और पुरुषोत्तमहै उससे ब्रह्मा उत्पन्नभये और ब्रह्माजीसे सब जगत् इसकारण जगत्कर्त्ता नारायणहीहैं अब एक नारायण का अतिप्रिय धर्म कहते हैं जो हमने जाना और प्रत्यक्ष भी देखाहै त्रेतायुग में नारायण का भक्त एक कौशिक नाम ब्राह्मण था वह

सदा भगवान् के आगे सामवेद को गान किया करता और सोने,बैठने,खाने पीने आदि किसी समयभी नारायणको नहीं भूलता एकसमय वह ब्राह्मण किसी विष्णु-क्षेत्रमें जाय ताल,स्वर,मूर्च्छना,लय,श्रुति आदि गानके अंगों सहित भक्तिसे भगवान्के उदार चरित्रोंको नित्य गानेलगा औ भिक्षासे अपने कुटुंबका औ अपना निर्वाह किया करता किसी दिन पद्माक्ष नामक एक ब्राह्मणने सत्पात्र जान इसको उत्तम भोजन दिया उसदिन कौशिक बहुत प्रसन्न भया औ नारायणके गुण गाया किया इसभांति वह पद्माक्ष नामक ब्राह्मण नित्यही कौशिकको निर्वाहके योग्य अन्न दे देता औ इसका गान भी कभी २ सुनता कुछ दिनके अनन्तर ब्राह्मण, क्षत्रिय औ वैश्य जातिके सात कौशिकके शिष्य गानविद्या में अति निपुण औ नारायणके भक्त वहां आये उन अपने शिष्योंको देख कौशिक बहुत प्रसन्न भया वे भी सब नारायणका कीर्त्तन करने लगे औ पद्माक्ष सबको नित्य भोजनभी दे देता उसी क्षेत्रमें मालव नाम एक वैश्य मालवीनाम अपनी भार्य्या सहितरहा करता वह वैश्य नित्य नारायण के मंदिरमें दीपमाला करता औ उसकी स्त्री गोबर से भगवान्के मंदिरको लीपती औ दोनों स्त्री पुरुष कौशिक का गानभी सुनते इसी भांति कुशस्थलसे औरभी पचास ब्राह्मण नारायण के भक्त औ संगीत विद्या में कुशल वहां आये औ कौशिक का गान सुनने लगे तबतो कौशिकके गानकी बहुत प्रसिद्धि भई औ उस देशका राजा कलिंगभी वहां आया औ

कौशिक से कहा कि तेरे गान की ख्याति सुनकर मैं आया हूं जिस भांति तू विष्णुके गुण कीर्त्तन करताहै इसी भांति मेरा यश गाय मुझे रिझाय तो मन माना फल पावेगा यह राजा का वचन सुन कौशिक औ उसके शिष्य कहने लगे कि हेराजन् हमारी जिह्वा विष्णु के विना दूसरे का यश कभी कथन न करेंगी औ कौशिक का गान सुनने हारे पुरुषोंने भी यही कहा कि हमारे कान विष्णु के विना दूसरे का चरित्र नहीं सुनना चाहते इस कारण न तो कौशिक तुम्हारा यशगावें औ न हम सुनें यह सुन राजाने वहुत क्रोधकिया औ अपने गवैयों से कहा कि तुम मेरा यश गावो देखें ये ब्राह्मण क्योंकर नहीं सुनते यह राजा की आज्ञा पाय अनेक गायक गाने लगे औ राजा ने चारों ओर से उनको रोंकदिया जिससे जाने न पावें औ अपना यश उनको श्रवण करवाने लगा तब ब्राह्मणों ने काष्ठ शंकुओं करके अपने कानबंद करलिये औ कौशिक तथा उसके शिष्यों ने भी जाना कि हमसे बलात्कार करके यह राजा अपना यश गवावेगा यह मन में शोच सब ने अपनी २ जिह्वा कटवाडाली तब तो राजाने बड़ा ही कोपकिया औ सब का धनहर अपने देश से निकलवा दिया वे सब ब्राह्मण भी उत्तर दिशामें जाय नारायण का आराधन कर कुछ कालमें शरीर त्याग यमलोक में जाते भये उन सबको आये देख यमराज विचार करनेलगे कि इनको कौन गति देनी चाहिये इसी अवसर में ब्रह्माजी ने इन्द्र आदि देवताओं को कहा

कि इन कौशिक आदि ब्राह्मणों को यहां लाकर उत्तम उत्तम स्थानों में सुखपूर्वक रक्खो हे देवताओ इस भांति और भी जो पुरुष गान योग करके नित्य विष्णु भगवान् का आराधनकरें उनको यहां वास दिया करो इसी में तुम्हारा कल्याण है इतना वचन ब्रह्माजी से सुनतेही सब देवता कौशिक, पद्माक्ष, मालव आदिकों के नाम लेले पुकारनेलगे औ सबको विमानमें विठाय क्षणमात्र में ही ब्रह्मलोक को ले गये उन सबको देख ब्रह्माजीने उठकर सब का आगत स्वागत किया औ बड़े आदर से उनकी पूजा करी औ सब ब्रह्मलोक में उत्सव हुआ फिर ब्रह्माजी उन सबको साथले विष्णु-लोक को गये औ विष्णु भगवान्‌का दर्शन किया श्वे-तद्वीप के निवासी विष्णुभक्त औ सब चारों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारे बड़े तेजस्वी अट्ठासी हज़ार पार्षद भगवान्‌को चारों ओर से सेवन करतेथे नारद और सनकादि मुनि औ अनेक दिव्य स्त्री औ गन्धर्व भगवान् की सेवा में तत्पर थे एक हज़ार यो-जन लम्बे चौड़े औ हज़ार ही द्वारों करके युक्त मणि-यों के अति देदीप्यमान विमान में स्थित रत्न जटित सिंहासन पर श्रीभगवान् विराजमान थे ब्रह्माजी भी भगवान् को प्रणाम कर स्तुति करने लगे भगवान् ने कौशिक आदि अपने भक्तों को बड़े आदर से अपने स-मीप बैठाया सब विष्णुलोक में जय २ शब्द होनेलगा औ विष्णु भगवान् ने कहा कि हे ब्रह्माजी ये कुशस्थल निवासी ब्राह्मण हमारे अनन्य भक्त कौशिक का हित

करने में तत्पर थे औ नित्य हमारी कीर्त्ति श्रवण किया करते इस कारण ये साध्य नामक देवता होवें औ सब लोकों में अपनी इच्छा से विचरें इतना ब्रह्माजी से कहकर कौशिक से भगवान् ने कहा कि हे कौशिक अपने शिष्यों सहित सदा तू हमारे समीप निवास कर औ मालव वैश्यसे कहा कि तूभी अपनी स्त्री सहितह- मारे लोकमें निवास कर औ आनन्द से दिव्यगान सु- ना कर औ पद्माचसे कहा कि तैंने हमारे भक्तोंको अन्न दिया औ हमारा यश सुना इस कारण तू चक्रवर्त्ती रा- जाहो औ सुखपूर्वक यहां आय हमाराभी दर्शन किया कर इतना कह ब्रह्माजी से भगवान् ने कहा कि इस कौशिक का मधुर गान सुनने से मेरी योग निद्रा खुल गई अपने शिष्यों सहित यह विष्णुक्षेत्र में हमारे गुण गाया करता औ अतिक्रूर कलिंग राजाके कथनसे गान न किया अपनी जिह्वा काटडाली औ हमारे विना दू- सरे की स्तुति न करी इस कारण सालोक्य मुक्ति इस को हमने दी और भी इनसब ब्राह्मणोंने राजा का यश न सुना औ काष्ठके शंकुओं से अपने कान फोड़ लिये इससे इनको साध्य नाम देवता बनाय हमने अपने स- मीप रक्खा यह मालव नाम वैश्य औ इसकी स्त्री नित्य हमारे क्षेत्र में मार्जन औ दीपमाला कर भक्तिसे हमारा यश सुनते थे इस कारण इनको हमने अपने सनातन लोकमें निवास दिया पद्माक्ष कौशिकको भोजन दिया करता इसलिये असंख्य धन का स्वामी भया औ ह- मारा दर्शन भी नित्य पाया यह भगवान् का वचन सुन

ब्रह्मा आदि सब देवता स्तुति करने लगे इसी अवसर में वीणा बजाती हुई औ मधुर शब्दसे गान करतीहुई लाखों स्त्रियों करके सेवित उत्तम २ वस्त्र भूषणों से शोभायमान मन्द २ हास करतीभई लक्ष्मी भगवती वहां आई तब भुशुण्डी परिघ आदि शस्त्र हाथों में धारे पर्वत के तुल्य शरीर विष्णु पार्षदोंने सब देवता औ ऋषियों को बाहर किया केवल एक तुम्बुरु गंधर्व को भगवान्की आज्ञासे वहां रहने दिया लक्ष्मीजी भगवान् के वाम भागमें सिंहासनके ऊपर बैठीं औ वीणा लेकर अति मधुर स्वरसे ताल सहित तुम्बुरु गान करने लगा कुछ काल तुम्बुरु का गानसुन प्रसन्नहो लक्ष्मी सहित भगवान् ने दिव्य वस्त्र भूषण माला आदि देकर सत्कार से तुम्बुरु को विदा किया तुम्बुरु प्रसन्न होता हुआ बाहर आया वहां सब ऋषियों ने उसकी बहुत प्रशंसा करी औ नारदमुनि तुम्बुरुका सत्कार देख मनमें अति दुःखी भये औ चिन्ता करने लगे कि देखो तुम्बुरु भगवान् के एकांत समय में भी रहा औ गाय बजाय भगवान्को रिझाय सिरोपाव पाय प्रसन्न होता हुआ यहां आया औ हम बाहर निकालेगये हमारे जन्मको धिक्कार है ऐसा कौन उपाय होय कि तुम्बुरु की भांति हमभी भगवान् के अंतरंग होयँ औ समीप पहुँचें अब हम जीते कहां जायँ औ सब के आगे क्या कहैं औ क्योंकर मुख दिखावैं इसभांति अनेक विचार करते हुये औ तुम्बुरु के सत्कार का स्मरण कर २ रोदन करते हुये नारद मुनि भगवान् के आराधन के लिये तप करने

बैठगये औ भगवान् का ध्यान करनेलगे इसभांति एक हजार दिव्य वर्ष पर्यंत नारद मुनिने उग्रतप किया औ जब तुम्बुरु का स्मरण होजाता तभी अपने को धिक्कार देते हे राजा अम्बरीष हजार वर्षके अनन्तर जो भगवान्ने किया वह सुनो॥

दूसरा अध्याय॥

मार्कण्डेयमुनि कहते हैं कि हे राजा अंबरीष हजार वर्ष के अनन्तर प्रसन्न हो भगवान्ने तुम्बुरुके समान नारद को किया इस कारण हे राजा गान से भगवान् बहुत प्रसन्न होते हैं औ कौशिककी भांति ज्ञान तेज कीर्त्ति तुष्टि औ उत्तमलोक देतेहैं पश्चात् आदिकों को भी भगवान् ने सिद्धिदी इस कारण हे राजा अंबरीष विष्णुभक्तों को विष्णुक्षेत्रों में अवश्य गीत नृत्य वाद्य आदि का उत्सव करना चाहिये औ भक्तिसे श्रवणभी करना चाहिये जो पुरुष विष्णुक्षेत्र में गीत नृत्य औ विष्णुकीर्त्तन आदिकरै वह विष्णुसायुज्यपावै इसकारण हे महाराज आपको भी यही करना उचित है जो कुछ आपने पूछा हमने सब वर्णनकिया अब और जो आपकी इच्छा होय सो कहैं हम आपको श्रवण करावैं॥

तीसरा अध्याय॥

राजाअंबरीष पूछते हैं कि हे मार्कण्डेयजी नारदमुनि को कौन से योग से गान विद्या प्राप्तभई औ तुम्बुरु के तुल्य किसकालमें भये यह आप कृपा कर मुझे श्रवण

करावें यह राजाका प्रश्न सुन मार्कण्डेयमुनि कहनेलगे कि हे राजा यह सबकथा नारदजी से हमने सुनी है वही तुमको भी सुनाते हैं दिव्यहजार वर्षपर्यंत बड़ा उग्रतप नारदजीने किया तब आकाशवाणी भई कि हे नारद ऐसाउग्रतप क्यों करताहै मानसोत्तर पर्वतमें जाकर गानबन्धु नाम उलूक को देख तो तुझको भी गान विद्या प्राप्तहोगी यह आकाशवाणी सुन नारदमुनि प्रसन्नहोतेहुये मानसोत्तर पर्वत में गये वहां जाके देखा कि चारोंओर गंधर्व किन्नर यक्ष अप्सरा औ सिद्ध बैठे हैं औ बीच में गानबंधुनाम उलूक बैठाहुआ सबको संगीत विद्या सिखारहा है औ वे सब मधुरस्वर से गाने का अभ्यास कररहे हैं गानबंधुने नारदजी को देख प्रणाम किया औ प्रीति से आसनपर बैठाय प्रार्थनाकरी कि महाराज आपने मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रहकिया अब आज्ञा कीजिये कि मैं आपकी क्या सेवाकरूं यह सुन नारदमुनि बोले कि हे उलूकेन्द्र पूर्वकाल में लक्ष्मी सहित भगवान् ने हमारा अनादरकर तुम्बुरुकागान श्रवण किया ब्रह्मा आदि देवता भी भगवान् की आज्ञासे बाहर निकालेगये केवल गानविद्या में निपुण कौशिक आदि भगवान् के भक्त वहां रहे जो गानविद्या से विष्णुका आराधनकर उनके गण बनगये थे तुम्बुरु का अति सत्कार देख हमको बड़ा खेदहुआ औ मनमें विचारकिया कि जपतप सब वृथा है जिसप्रकार गान से विष्णु भगवान् प्रसन्न होते हैं ऐसादूसरे किसीकर्मसे नहीं होते यह मनमें विचार गानविद्याकी प्राप्तिके लिये दि-

व्यहजारवर्ष पर्यंत हमने घोर तपकिया तब आकाशवाणीभई कि हे नारद गानबंधु के समीप जा वहां तेरासंकल्प सिद्धहोगा यहसुन हे पक्षिराज हम आपके समीपआये अबआप हमको अपनाशिष्यबनाय संगीत विद्याका उपदेशकरें यह सुन उलूक बोला कि हे नारद मुनि पहिले मेरा वृत्तान्त सुनलीजिये पूर्वकाल में भुवनेशनाम एक बड़ा धर्मात्मा राजा भया जिसने हजार अश्वमेध हजारों वाजपेययज्ञ किये औ करोड़ों गौ, हाथी घोड़े, वस्त्र, सुवर्ण ब्राह्मणों को दिये परंतु सब राज्य में यह आज्ञा दे रक्खीथी कि जो कोई गान करैगा वह वध्यहोगा वेदविहित कर्मोंसे भगवान् का आराधन करो गानका कुछ प्रयोजन नहीं केवल सूत, मागध, वन्दी औ स्त्री गान किया करैं इनके विना जो गावेगा वह अवश्य दंड पावैगा यह आज्ञा सब राज्य में देदी थी उसके राज्य में हरिमित्र नाम एक विष्णुभक्त ब्राह्मण था वह एक दिन नदी के तटपर जाय भगवान् की मूर्ति पधराय भक्ति से धूप दीप भांति २ के मिष्टान्न पायस आदि नैवेद्य चढ़ाय प्रणाम कर वीणाले एकाग्र चित्त हो भगवान् के गुण मीठे स्वरसे ताल सहित गानेलगा उसका गानसुन राजाके दूत वहां पहुँचे औ ब्राह्मणकी पूजा-सामग्री नदीमें फेंक ब्राह्मण को बांध विष्णु प्रतिमा सहित राजाके समीप लेगये राजाने भी उसका सब वृत्तांत सुन बड़ा तिरस्कार किया औ अति कोपकर सब धन हर ब्राह्मण को राज्य से बाहर निकलवा दिया औ विष्णु मूर्त्तिकोभी राजाके म्लेच्छ सेवक उठा लेगये कुछ

कालके अनन्तर राजा मृत्युवश भया औ स्वर्ग में गया परंतु क्षुधासे बहुत व्याकुल था तबतो यमराजके समीप जाय कहने लगा कि हे यमराज ऐसा मैंने क्या पापकिया कि स्वर्ग में भी यह पापिनी क्षुधा मुझे संताती है इसका कुछ आप उपाय बतावें यह सुन यमराज बोले कि हे राजा तैंने बड़ाभारी पाप कियाहै कि अति विष्णुभक्त हरिमित्र ब्राह्मण को इतना दण्ड दिया उस पाप से तेरे सब यज्ञादिकों का फल नष्ट होगया तेरे सेवकों ने सबपूजा सामग्रीका नाश किया औ ब्राह्मण का सब धन तैंने हरकर उसको राज्यसे निकाल दिया इसपाप का यह फल है कि पर्वत के कोटर अर्थात् गुफामें जाकर निवास कर औ तेरा पूर्व शरीर वहां रक्खा है उस को नित्य भोजन किया कर इस भांति एक मन्वंतर नरक दुःख भोगकर पृथ्वी में मनुष्य जन्म पाय ज्ञानको प्राप्तहो मुक्त होगा इतना कह यमराज अन्तर्द्धान भये इस अवसर में हरिमित्र भी कालवश हुआ औ भगवान् की आज्ञा से उसको अपने भाई बन्धुओं समेत दिव्य विमानपर बैठाय भगवान् के गण बड़े आदरसे विष्णुलोक को ले जाते भये औ राजाभी यमराज की आज्ञासे इसी पर्वतके कोटर में आयकर रहा औ नित्य अपने पूर्व शरीर को खाने लगा जो यमदूतों ने लाकर वहां रखछोड़ा था इतनी कथा कह उलूकराज बोला कि हे नारदजी उसी समय में उस राजाके समीपगया तब राजा ने मुझे अपना सब वृत्तान्त सुनाया मैं भी राजा का समाचार सुन हरिमित्रको देखनेके लिये गया

उसको परमसुखी देख गानविद्या में मेरीभी रुचि भई औ इन्द्रद्युम्नके प्रसादसे दीर्घ आयुष् तो मुझे पहिले ही प्राप्त हुआ था तब मैंने किन्नरों से साठ हजार वर्ष पर्यंत संगीत विद्या में अभ्यास किया औ गाते गाते मेरी जिह्वा औ स्वर अति स्पष्ट होगये दशमन्वंतरों तक गान करते करते इसविद्या का मैं आचार्य होगया औ गन्धर्व किन्नर आदि सब मेरे समीप संगीतविद्या सीखनेके लिये आने लगे हे नारद तप करके गान विद्या नहीं प्राप्त होती वह तो केवल अभ्यास से मिलती है इस लिये आप भी मुझसे सीखें औ अभ्यास करें मार्कण्डेय मुनि कहते हैं कि हे राजा अम्बरीष यह उलूक का वचन सुन नारद मुनि उसके शिष्य भये औ भगवान् का ध्यान कर गानेमें अभ्यास करने लगे तब उलूक ने कहा कि हे नारद मुनि अब तुम लज्जाछोड़ गाने का अभ्यास करो क्योंकि स्त्रीसंग, गीत, द्यूत, कथा, व्यवहार, भोजन, धनका अर्जन, आय, व्यय आदि कर्मों में लज्जा त्यागे विना काम नहीं चलता औ संकुचित होकर बहुत से वस्त्र ओढ़कर हाथ हिलाते हुये ऊपरको हाथ औ दृष्टि करके औ मुंहबाय कर न गाना चाहिये गानके समय हास्य, क्रोध, कांपना अपने अथवा दूसरे के अंगोंको देखना उठना और कार्य का स्मरण करना आदि काम अच्छे नहीं होते क्षुधा तृषा भय आदि से व्याकुल होकर तथा अंधकार में भी न गाना चाहिये हे राजा इस भांति नारद जी को उपदेश कर दिव्य हजार वर्ष पर्यंत उलूकराजने संगीतविद्या सि·

खाई एक हजार वर्षमें सब गीतों के प्रस्तार वीणा की गति औ तीन लाख निन्नानवे हजार छःसौ भेद स्वरों के नारद जीने भलीभांति सीख लिये औ सब गन्धर्व किन्नर आदि भी संगीतविद्या में नारद जीकी प्रशंसा करने लगे नारद जीने गानबंधु से कहा कि हे पक्षिराज तुम्हारी कृपासे हमने संगीतविद्या का पार पाया अब आपकी हम क्या सेवा करैं सोकहो यह सुन उलूकराज ने कहा कि ब्रह्माजी के दिनमें चौदह मनु बीतते हैं पीछे प्रलय होता है हे नारदजी तब तक मेरा आयुष है आप मेरे शरीर का कल्याण मनाया करैं औ मुझे किसी बात की इच्छा नहीं यह सुनि नारद मुनि बोले कि हे गानबंधु तुम सदा प्रसन्न रहो औ इस शरीरके अनंतर तुम गरुड़ होगे अब हम को जाने की आज्ञा दीजिये हे राजा अंबरीष इतना कह उलूकराजकी आज्ञा पाय नारद मुनि श्वेत द्वीपको जाते भये वहां जाय भगवान् के आगे बहुत भक्तिसे गान किया परन्तु उनका गानसुन भगवान् बोले कि हे नारद अब तक भी आप तुम्बुरु के तुल्य नहीं भये इसलिये अट्ठाईसवें द्वापर के अन्त में यदुवंश के भूषण वसुदेव के पुत्र कृष्ण नाम से हम उत्पन्न होंगे उस समय आप हम को स्मरण करादेना तब हम आपको संगीतविद्या सिखावेंगे जिससे आप तुम्बुरु के तुल्य होजाओगे तबतक आपने गानबंधु से जितना गाना सीखा है उस से ही कालक्षेप करैं औ देवता गन्धर्व आदिको संगीत विद्या सिखाया करैं यह भगवान् की आज्ञा पाय नारद मुनि

प्रणाम कर भगवान् को स्मरण करतेहुये वहां से चले औ वरुण, यम, अग्नि, इन्द्र, कुबेर, वायु, ईशान आदि के लोकों में विचरते वीणा बजाते औ भगवान् के चरित्र भक्ति से गाते अपना समय बिताने लगे किसी समय ब्रह्मलोक में जाय हाहाहूहू नाम गन्धर्वों का गान सुना औ आप भी ब्रह्मा जीके आगे गान किया ब्रह्माजी ने भी गान सुनकर नारद मुनिका बहुत सत्कार किया वहां से सत्कार पाय नारद मुनि तुम्बुरु के घरगये औ वीणा बजाय गानेलगे परंतु वहां देखा कि सातो स्वर देह धारे तुम्बुरु के घरमें क्रीड़ा कररहे हैं तबतो नारद मुनि वहांसे चले आये फिर तीन लोकमें विचरने लगे परन्तु सात स्वरों की अंगना नारदमुनि की वीणा के तारों में स्थित नहीं होतीथीं इसकारण नारदमुनि बहुत व्याकुल थे इतने में कृष्णावतार होगया जान नारदमुनि भूमि पर आये औ द्वारका के समीप रैवतक पर्वत में विहार करते हुये श्रीकृष्ण भगवान् के समीपगये औ भक्ति से प्रणामकर श्वेतद्वीपका सब वृत्तांत स्मरण कराया तब श्रीकृष्णचन्द्र ने अपनी रानी जाम्बवती से कहा कि हे प्रिये तुम नारदजी को गाना औ वीणा बजाना सिखाओ जाम्बवती भी भगवान् की आज्ञा पाय हँसती हुई नारदजी को सिखाने लगी इस भांति एकवर्ष तक गाना सीख नारदमुनि भगवान् के समीप आये तब भगवान्नेकहा कि अब एकवर्ष सत्यभामासे आप संगीत सीखें भगवान्की आज्ञानुसार एकवर्ष सत्यभामा सेभी नारदमुनिने गीतवाद्य में अभ्यासकिया औ भगवा-

न्के समीप आये परंतु भगवान्ने फिर भी उनका गाना सुनकर कहा कि अभी आप रुक्मिणीसे और भी सीखें यह श्रीभगवान् का वचन सुन नारदमुनि रुक्मिणी के महल में जाय गाने लगे तब रुक्मिणी की दासियों ने कहा कि हे मुनि तुम को इतने दिन गाते हुये तौ भी स्वरतालकी कुछ खबर नहीं यह दासियोंका वचनसुन नारदमुनि लज्जित भये औ रुक्मिणीसे गाना सीखने लगे औ तीन वर्ष पर्यंत सीखा तब स्वरों की नारी उन की वीणा के तारों में प्राप्त भई औ नारदजीको वीणा बजाना भली भांति आया भगवान् ने नारद मुनि को तीनवर्ष के अनन्तर बुलाय आप संगीतविद्या सिखाई औ सब स्वरतालोंके भेद बताये औ कहा कि हे नारद मुनि अब आप तुम्बुरु से भी अधिक संगीतविद्या में निपुण होगये हो इस कारण तुम्बुरु के साथ आप भी हमारे सम्मुख गाया करें यह भगवान् का वचन सुन प्रसन्नतासे नारदमुनि उठकर नाचनेलगे औ श्रीकृष्ण भगवान् जब शिवपूजन करनेलगे उस समय भगवा-न् की आज्ञासे रुक्मिणी जाम्बवती को साथले नारद मुनि ने शिवजी की स्तुति गाई भगवान् भी नारद का गाना सुन बहुत प्रसन्न भये औ कहा कि हे नारदजी अब आप गानविद्या में अति निपुण होगये यह भग-वान् से सुन भक्तिसे प्रणाम कर अति मुदित होतेहुये नारद मुनि तीनिलोक में विचरते भये इतनी कथा सु-नाय सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह नारदमुनि को गानविद्या प्राप्त होने का क्रम हमने वर्णन किया जो

ब्राह्मण भगवान् के गुण गावै वह सालोक्यमुक्ति पावै औ जो पुरुष भक्ति से शिवजी के गुणों का कीर्त्तन करै वह तो भगवान् के देह में लीन होजाय परन्तु भगवान् के गुण कीर्त्तन को छोड़ और कुछ गावै तो नरक ही पावै इस कारण सदा भक्तिसे भगवान् के गुणही गावै औ सुनै गानविद्या से विना परिश्रम मुक्ति मिलती है इससे यह विद्या सबसे उत्तम है॥

चौथा अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी भगवान् के परमभक्त वैष्णवों के क्या चिह्न हैं औ भगवान् उनको कौन गति देते हैं यह सब आप वर्णन करें यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यह प्रश्न राजा अम्बरीष ने भी मार्कण्डेयमुनि से कियाथा उनने जो उत्तर दिया वह हम आपको श्रवण कराते हैं राजा अंबरीष का प्रश्न सुन मार्कण्डेयमुनि बोले कि हे राजा जहां विष्णुभक्त रहें वहां साक्षात् नारायण का निवास होताहै जो पुरुष सर्वत्र विष्णु भगवान् को व्यास जानै औ भगवान् का नाम श्रवण करतेही जिन पुरुषों के देहमें कंप रोमांच औ नेत्रों से अश्रुपात होय औ जो पुरुष श्रौतस्मार्त धर्म में प्रवृत्त विष्णुभक्तोंको देख अति हर्षित होय वे वैष्णव कहाते हैं विष्णुभक्त को सम्मुख आते देख जो पुरुष भक्ति से प्रणाम आदि करें औ विष्णुभक्तों को विष्णु भगवान् के तुल्य समझें वे वैष्णव होते हैं औ तीनों लोकों में जय पाते हैं

विष्णुभक्तों के खोटे वचन भी सुनकर जो पुरुष क्रोध न करै औ भक्ति से उनके आगे हाथ ही जोड़ता रहै वह वैष्णव होता है जो पुरुष गन्ध पुष्प आदि उत्तम पदार्थों को आप धारण न करै औ यही जानै कि ये सब पदार्थ भगवान्के अर्पण होने चाहिये वह वैष्णव है विष्णुक्षेत्रों में जो पुरुष भक्ति से शुभकर्म ही करै औ एकाग्रचित्त हो भगवान् की मूर्ति का पूजन करै वह विष्णुभक्त कहाता है मन वचन कर्म करके नारायण में तत्पर रहै औ न्यायसे भोजनादि करै वह महाभागवत है नारायणका भक्त प्रसन्न हो जिसका अन्न भोजन करै उसके साक्षात् नारायण ही भोजन करते हैं अपने पूजन से भी अधिक अपने भक्तों का पूजन देख भगवान् प्रसन्न होतेहैं निष्पाप भगवान्के भक्त से देवताभी भयभीत होतेहैं औ उसको प्रणाम करते हैं पूर्वकाल में परमवैष्णव च्यवन ऋषि को देख यमराज भी आसन छोड़ उठ खड़े भये औ भक्ति से प्रणाम किया इस कारण विष्णुभक्तों का सदा पूजन करना उचित है जो वैष्णवों का सत्कार करै वह विष्णु भगवान् के समीप निवास करै और देवताओं के हजारों भक्तों से विष्णुभक्त अधिक होताहै औ हजारों विष्णुभक्तों से एक शिवभक्त उत्तम है शिवभक्त से उत्तम इस लोक में कोई नहीं यह निश्चय है धर्म, अर्थ, काम औ मोक्ष की प्राप्तिके लिये सदा शिवभक्त अथवा विष्णुभक्तों का पूजन करना चाहिये ॥

पांचवां अध्याय॥

इस भांति वैष्णवों का माहात्म्य सुन शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी हमने सुना है कि राजा अंबरीष परम विष्णुभक्त था औ विष्णु भगवान् का सुदर्शन चक्र अंबरीष के शत्रु रोग औ भय आदिको निवृत्त करता था अब हम उस अंबरीष राजा का चरित्र माहात्म्य औ भक्ति श्रवण किया चाहते हैं आप विस्तार से वर्णन करें यह मुनि वचन सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो सब पाप हरने हारा अंबरीषका चरित्र हम वर्णन करते हैं आप प्रीति से श्रवण करें राजा त्रिशंकु की रानी पद्मावती नाम बड़ी पतिव्रता औ विष्णु भगवान् की भक्ता थी भगवान् के पूजनके लिये चंदन, पुष्प, माला, धूप, दीप, नैवेद्य आदि सब सामग्री अपने हाथों से संपादन करती औ भगवान्के मंदिर को अपने हाथों से मार्जन करती औ भक्ति से भगवान् की पूजा कर सब दिन नारायण के नाम उच्चारण करती हुई बिताती औ वैष्णवों का भी भक्ति से पूजन करती इस प्रकार भगवान् की सेवा करते २ दश हजार वर्ष व्यतीत भये एक दिन एकादशी का व्रत औ जागरणकर द्वादशी के दिन रानी औ राजा दोनों ने विष्णु भगवान्के मंदिर में शयन किया रानी को स्वप्न में नारायण ने कहा कि हे पतिव्रते तू क्या चाहती है हमसे मांग यह भगवान्की आज्ञा पाय रानी ने प्रार्थना करी कि महाराज मैं ऐसा पुत्र चाहतीहूं

कि आपका परमभक्त हो औ संपूर्ण पृथ्वी का राजा होय यह सुन भगवान्ने एक फल रानी को दिया औ आप अंतर्द्धान भये रानी भी प्रभात उठी औ फलको देख अति हर्षितहो अपने पतिसे सब वृत्तांत कहा औ पतिकी आज्ञा पाय उस फलको रानी ने भक्षण किया थोड़े कालके अनंतर रानी गर्भवती भई औ समय पूरा होने पर उत्तम लक्षणोंसे युक्त पुत्र उत्पन्न भया पुत्रको देख राजा रानी बहुत प्रसन्न भये औ सब संस्कारकर उसका नाम अंबरीष रक्खा वह राजकुमार जन्मसे ही विष्णुभक्त औ बड़ा धर्मात्मा भया कुछ कालके अनंतर अपना राज्य अम्बरीषको दे राजा त्रिशंकु परलोकको सिधारा राजा अंबरीष भी राज्य भार मंत्रियों पर रख तप करने गया एक हजार वर्ष पर्यंत सूर्यमंडलमें स्थित शंख, चक्र, गदा, पद्म धारे सुवर्ण वर्ण सब भूषणों से भूषित पीतांबर पहिने ब्रह्म विष्णु शिव स्वरूपसे स्थित नारायणका ध्यान अपने हृदय कमलमें करता हुआ औ नारायण के नाम उच्चारण करता हुआ बड़ा उग्र तप करता भया एकहजार वर्षके अनंतर नारायण इन्द्रका रूप धार औ ऐरावत हस्तीका रूप धारे गरुड़पर चढ़ अंबरीषके समीप आये औ कहा कि हे राजन् मैं इन्द्रहूं जो वर तू चाहे वह मांग मैं तेरा मनोरथ सिद्ध करूंगा यह सुन राजा बोला कि हे इन्द्र तेरी प्रसन्नता के लिये मैंने तप नहीं किया औ न तुझ से कुछ वर चाहूं मेरे स्वामी तो नारायणहैं जब वे अनुग्रह करेंगे तब वरमागूं गा हे इंद्र मेरी बुद्धि में भेद मत उत्पन्नकर जहां से तू

आयाहै वहांही चला जा यह राजाका वचन सुन हँस कर भगवान्ने अपना रूप प्रकट किया चक्र, गदा, औ शार्ङ्ग नामक धनुष भुजाओं में धारे गरुड़पर चढ़े सब देवता जिनके चारोंओर स्तुति कररहेहैं ऐसा भगवान् का रूपदेख राजा अंवरीष भक्ति से वारंवार प्रणामकर स्तुति करनेलगा॥ प्रसीदलोकनाथेशममनाथ जनार्दन॥ कृष्णविष्णोजगन्नाथसर्वलोकनमस्कृत १ त्वमादिस्त्वमनादिस्त्वमनंतःपुरुषःप्रभुः॥ अप्रमेय विभुर्विष्णुर्गोविंदःकमलेक्षणः २ महेश्वरांगजोमध्ये पुष्करःखगमःखगः॥ कव्यवाहःकपालीत्वंहव्यवाहः प्रभंजनः ३ आदिदेवःक्रियानंदःपरमात्मात्मनिस्थितः त्वांप्रपन्नोऽस्मिगोविंदजयदेवकिनंदन ४ जयदेवजगन्नाथपाहिमांपुष्करेक्षण॥ नान्यागतिस्त्वदन्यामेत्वमेवशरणंमम ५ ॥इति॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो राजासे इस भांति स्तुति सुन प्रसन्नहो भगवान्ने कहा कि हे सज्जन जो तेरे इच्छा होय मांग वही मिलैगा हमारे भक्त हमको अति प्रियहैं तूभी हमारा भक्तहै इस कारण तेरा मनोरथ पूर्ण करने को हम यहां आये हैं यह भगवान्का वचन सुन राजा अंवरीषने प्रार्थनाकरी कि महाराज मैं यह चाहताहूं कि जिसभांति मन वचन कर्मसे आप शिवभक्तहैं ऐसा ही मैं आपका भक्त रहूं औ सब जगत्को वैष्णव बनाय राज्यकरूं यज्ञहोम आदिसे देवताओंको प्रसन्नकरूं औ सब शत्रुओं को मार वैष्णवों का पालनकरूं यहराजाकी प्रार्थना सुन भगवान् ने कहा कि ऐसाही होगा औ यह

सुदर्शन चक्र जो हमको शिवजीके अनुग्रह से मिला है तेरे राज्यमें सब रोग, शत्रु ऋषिशाप औ भांति भांति की विपत्तियों का नाश किया करेगा इतना कह भगवान् अंतर्द्धान भये औ राजा अंबरीषभी भगवान् को प्रणाम करि प्रसन्न होताहुआ अपनी राजधानी अयोध्या में आय धर्मराज्य करने लगा ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंको अपने २ धर्ममें प्रवृत्त किया घर २ में भगवान् की पूजा औ वेदध्वनि होने लगी चारोंओर यज्ञों की धूम धाम मची सौ अश्वमेध औ सौ वाजपेय राजाने किये इस भांति राजा अंबरीष का धर्मराज्य प्रवृत्त होने पर दुर्भिक्ष रोगआदि सब उपद्रव प्रजासे दूर भये औ सब जीव हृष्ट पुष्ट नारायण के स्मरणमें तत्पर आनन्द से अपना कालक्षेप करने लगे इस प्रकार राज्यकरते २ कुछ काल के अनन्तर राजा अंबरीषके अति रूपवती औ सब शुभ लक्षणोंसे युक्त एक कन्या उत्पन्न भई उसके जन्म में राजाने बड़ा उत्सव किया औ उस कन्या का नाम श्रीमती रक्खा वह कन्या चन्द्रकलाकी भांति लोक लोचनोंको आनन्द देतीहुई प्रतिदिन बढ़ने लगी औ वरयोग्य भई राजा उस कन्याके विवाह की चिंताहीमें था कि नारद औ पर्वत दोनोंमुनि वहां आये राजाने उन दोनोंका बड़ा सत्कार किया औ आसनपर बैठाया उनने भी श्रीमतीको देख औ उसके रूपपर मोहित हो पूछा कि हे राजन् कह कन्या कौन है यह सुन राजा ने हाथ जोड़ प्रार्थना करी कि महाराज यह मेरी पुत्री है अब वर योग्य भई इसकी मुझे दिन रात्रि चिन्ता

रहती है कि कोई उत्तम पति इसको प्राप्तहोय यह राजा का वचन सुन नारदजी की इच्छाभई कि यह कन्या हमको मिलजाय तो बहुत अच्छी बातहै औ यही संकल्प पर्वत मुनिके हृदय में भी उपजा कि हमसेही इस कन्याका विवाह होय तो ठीकहै पहिले नारदजीने राजको एकांत में लेजाय कहा कि इस अपनी कन्या से हमारा विवाह करदो औ इसीभांति पर्वत ने भी एकांत में राजासे कहा दोनोंका वचन सुन राजा व्याकुल भये औ हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगा कि महाराज यह एक कन्या है औ आप दोनों इसकी इच्छा करते हो अब आपही आज्ञा करें कि मैं कौन २ से इसको विवाह करूं हे मुनीश्वरो अब मेरी यही इच्छाहै कि यह कन्या अपनी प्रसन्नतासे तुम दोनों में से जिसको बरै वही इसका भर्त्ताहोय यह राजाका वचनसुन नारद औ पर्वत प्रसन्नहो कहने लगे कि बहुत ठीक है ऐसाही होना चाहिये परन्तु कल हमदोनों आवैंगे उस समय जिस पर इच्छा हो उसको तुम्हारी कन्या बरै राजा ने भी उनका वचन स्वीकार किया दोनों मुनि अपने २ मन में प्रसन्न होते हुये चले परन्तु थोड़ी दूर जाकर नारदजी ने पर्वत का साथ छोड़ दिया औ विष्णुलोकमें गये वहां जाय प्रणाम कर भगवान् से प्रार्थना करी कि महाराज हमकोकुछ एकांतमें प्रार्थनाकरनी है भक्तवत्सल भगवान् ने भी सबको वहांसे अलग किया औ नारद मुनि से कहा कि अब आप कहैं नारद मुनि भी चारों ओर देखे एकांत जान भगवान् से कहने लगे कि आप

का भक्त राजा अम्बरीष है उसके अति रूपवती श्रीमती कन्याहै उसको हमने औ पर्वत ने राजा से मांगा परन्तु दोनोंकी याचना से राजाने व्याकुल हो कहा कि महाराज एक कन्या है मैं कौन से को दूं औ कौन से को न दूं यह कन्या आपही जौनसे को बरै वहही इसका पति होय यह राजाका वचन सुन हमने कहा कि कल प्रभात हम दोनों आवैंगे तब स्वयम्बर करना इतना राजा से कह हम आपके समीप आये हैं अब हमयह चाहते हैं कि पर्वत का मुख जिस भांति बन्दर का सा देखपड़े ऐसा आप अनुग्रह करें हम आपके भक्त हैं इसलिये आपको हमारी प्रार्थना स्वीकार करनी चाहिये यह सुन हँसकर भगवान् ने कहा कि हे नारदजी आप प्रसन्नतासे जाइये जैसा आपने कहा वैसाही होगा यह भगवान् का वचन सुन प्रसन्न होते हुये नारद मुनि भगवान् को प्रणाम कर अयोध्या को गये इसी अवसर में पर्वत मुनिभी पहुंचे औ नारदजीकी भांति एकांत में भगवान् से प्रार्थना करी कि महाराज नारद जी का मुख गोलांगूल अर्थात् लंगूर कासा देखपड़ें आप ऐसी कृपाकरैं हम आपके भक्त हैं इसलिये हमारी प्रार्थना आपको अङ्गीकार करनी चाहिये भगवान् ने पर्वत मुनि की प्रार्थना सुन कहा कि ऐसाही होगा तुम अयोध्या को जाओ परन्तु यह समाचार नारदजी से न कहना इतना कह भगवान् ने पर्वत मुनिको विसर्जन किया पर्वत मुनि भी मनही मन में प्रसन्न होते अयोध्या में पहुंचे राजाने दोनों मुनियों को प्राप्त भये

देख सब अयोध्याको ध्वजा तोरण पुष्प माला औ भांति भांति के मण्डपों से भूषित कराया सब रास्तों में सुगंध जलसे छिड़काव कराय पुष्प बिखरवाये चारोंओर दिव्य धूपों का सुगन्ध फैला इसप्रकार सबनगरी शोभित करीगई औ भांति भांति के सिंहासन बिछाये गये इस अवसर में राजकन्या सब शृङ्गार कर अनेक रूपवती युवती संग लिये स्वयम्बर सभामें आई औ नारद तथा पर्वत भी इस सभामें आय पहुंचे राजाने दोनों मुनियोंको बड़ा सत्कार कर आसनपर बैठाया औ अपनी श्रीमती नाम पुत्री से कहा कि हे पुत्री इन दोनों मुनियों में जिससे तेरा चित्तप्रसन्नहो उसको स्वयम्बर माला पहिनायदे यह पिताकी आज्ञा पाय सुवर्ण माला हाथ में ले श्रीमती मुनियों के समीप गई औ दोनोंको जो देखा तो एक का मुख बन्दरका औ दूसरे का लंगूर का देखपड़ा तब तो भयभीत भई औ कांपने लगी तब राजाने कहा हे पुत्री क्या विचार करतीहै एकको माला पहिनायदे यह पिता का वचनसुन श्रीमती ने कहा कि हे पिता इन दोनों के मुख बन्दर औ लंगूर कैसे हैं औ शरीर मनुष्यकाहै ये दोनों और कोई हैं नारद औ पर्वत नहीं देख पड़ते परन्तु एक और पुरुष सोलहवर्ष की अवस्थाका सब भूषण पहिने श्यामवर्ण दीर्घ भुजा ऊंची छाती धनुषके समान टेढ़ी भ्रू उदर में तीन वली कमल के तुल्य नेत्र चन्द्र के समान मुख सुन्दर ऊंची नासिका कुंदकी कलीसे दन्त औ कमलके समान कोमल औ रक्तवर्ण चरणों करके युक्त अति सुन्दर औ पीत

वस्त्र पहिने देखपड़ता है औ मेरी ओर देख देख दक्षिण भुजा पसार कर हँसता है यह कन्या का वचन सुन नारद जी के मन में सन्देह भया औ श्रीमती से पूछा कि हे कन्ये उस पुरुष की भुजा कितनी हैं श्रीमती ने कहा कि दो भुजा हैं इसी भांति पर्वत ने भी पूछा कि उस पुरुष ने कण्ठ में क्या पहिन रक्खा है औ हाथों में क्या २ शस्त्र धारे हैं श्रीमती ने उत्तर दिया कि गले में पांच रंग के पुष्पों की उत्तम माला औ हाथों में धनुर्बाण धारण कर रक्खे हैं यह सुन दोनों मुनि परस्पर विचार करने लगे कि यह कौन मायावीहै हमारी जान में तो वह बड़ा तस्कर विष्णुही इस उत्तम कन्या को हरने आया है जो उसके मनमें यह कपट न होता तो हम दोनोंके मुख बन्दर औ लंगूरके क्यों बनादेता इस भांति दोनों मुनि व्याकुल हो अनेक चिन्ता की बातें करने लगे राजा ने हाथ जोड़ दोनों से कहा कि महाराज आपने यह क्या किया कि आप का मुखदेख कन्या भयभीत होती है यह सुन क्रोध कर दोनों मुनि बोले कि हे राजन् यह तेराही कुछ प्रपंचहै अपनीकन्या से कहदे कि एक को वर लेवे राजा ने भी भयसे कन्या को कहा कि हे पुत्री एक को वर ले तब वह फिर माला लेकर उठी परन्तु वही मनोहर मूर्त्ति पुरुष देख पड़ा औ ये दोनों मुनि वैसेही देखे श्रीमती ने भी निर्भयहो माला उस पुरुष के गलेमें डालदी माला डालतेही वह दिव्य पुरुष राजकन्याको अपने संगले अन्तर्द्धान भया तब तो सब सभाके लोग ऊंचे २ स्वरों से कहने लगे

कि श्रीमती ने भगवान् का बहुत आराधन कियाथा इसीसे विष्णु भगवान् उसके पतिभये औ अपने लोक को लेगये धन्य है श्रीमती औ राजा अंबरीषभी धन्य हैं कि जिसके घर ऐसी कन्या उत्पन्न भई नारद औ पर्वत भी इसभांति अपना तिरस्कार देख अति दुःखी भये औ दोनों उठकर विष्णुलोक को गये भगवान् ने भी दोनों मुनियों को दूरसे आते देख श्रीमती से कहा कि हे प्रिये नारद औ पर्वत आते हैं इसलिये तुम गुप्त होजाओ यह भगवान् की आज्ञा पाय वह तो गुप्तभई औ दोनों मुनि भगवान्के समीप आपहुंचे औ प्रणाम किया भगवान्ने भी उनको आदर से बैठाया तब नारदजी बोले कि हमसे आपने कपट किया औ उस कन्या को आप हरलाये यह सुन भगवान् ने कानों पर हाथ धरे औ कहा हे मुनीश्वरो मुझे इस वृत्तांत की ठीक भी नहीं कि आप दोनों क्या करते फिरते हो यह सुन नारदजी ने भगवान् के कान में कहा कि हमारे कहने से पर्वत का मुख तो आपने चन्दरका बनादिया सो ठीकही किया परन्तु हमारा मुख लंगूर का क्यों बनादिया तब भगवान्ने नारदजीके भी कानहीमें कहा कि आपके अनन्तर पर्वत मुनिभी हमारे समीप आये औ आपकी भांति हमसे प्रार्थना करी तब हमने आप का मुख लंगूर का करदिया इतना कह भगवान् बोले कि हे मुनीश्वरो हमको आप दोनों तुल्य हो इसलिये दोनों का वचन मानना पड़ा इसमें हमारा कौन अपराध है यह सुन नारदजी ने कहा कि जो आप ऐसा

कहते हैं तो वह दोनों भुजाओं में धनुष बाण धारे पुरुष कौन था जो हम दोनों के बीच श्रीमती को देखपड़ा औ उसको उड़ा लाया तब भगवान् ने कहा कि महाराज अनेक मायावी पुरुष जगत में फिरते हैं क्या जाने श्रीमती को कौन हरलाया हम तो शपथ खाकर कहते हैं कि आप दोनों की आज्ञा से आपके मुख बनाये औ हमारी चार भुजा हैं औ शंख, चक्र, गदा, पद्म धारते हैं यह भी आप जानते हो कि हमारी कुछ इच्छा उस कन्या के लिये नहीं थी इस भांति भगवान के वचन सुन दोनों मुनि बोले कि ठीक है इसमें आप का कुछ दोष नहीं यह सब उस दुष्ट राजा की ही माया है इतना कह भगवान् को प्रणाम कर दोनों वहां से चले औ राजा अम्बरीष के समीप आये औ क्रोध से कहने लगे कि राजा तू बड़ा दुष्ट है तैंने हम दोनों को बुलाया औ कन्या और किसी तीसरे पुरुष को दे दी इसलिये तमोगुण तेरी बुद्धि को ढांकलेगा जिससे तू अपनी आत्मा को न जानैगा इतना कहतेही एक अन्धकार का पुंज वहां से उत्पन्न भया औ राजा की ओर चला तब सुदर्शनचक्र ने प्रकट हो उस अन्धकार को हटाया वह अन्धकार नारद औ पर्व्वत की ओर चला औ सुदर्शनचक्र भी दोनों मुनियों के पीछे लगा औ मुनि भयभीत हो वहां से भगे औ लोकालोक पर्वत पर्यन्त भागते फिरे परन्तु सुदर्शनचक्र औ उस अन्धकार ने उनका पीछा न छोड़ा तब तो अति व्याकुल हो भगवान की शरण में गये औ कहा कि हे प्रभु हमारी रक्षा करो राजकन्या के निमित्त हमारी यह दुर्दशा भई तब

भगवान्‌ने विचार किया कि ये दोनों हमारे भक्त हैं औ अम्बरीष भी हमाराही भक्त है इसलिये हमको तीनों की रक्षा करना उचित है यह विचार सुदर्शनचक्र औ अन्धकार को निवारण किया औ अंधकारसे कहा कि सुदर्शनचक्र हमारी आज्ञा से राजा की रक्षा करता है इसलिये यह निष्फल नहीं होसक्ता औ ऋषि शापभी वृथा न होना चाहिये इसकारण अम्बरीष के वंश में बड़ा धर्मात्मा राजा दशरथ होगा उसके ज्येष्ठपुत्र हम होंगे हमारा नाम राम होगा औ हमारी दक्षिण भुजा भरत वाम भुजा शत्रुघ्न औ शेष का अवतार लक्ष्मण ये तीन हमारे भ्राता होंगे तब हमारी भार्या सीता को रावण हरैगा उस समय तू हमारे समीप आजाना हम तुझको ग्रहण करेंगे अब मुनियों का पीछा छोड़दे इतना भगवान् का वचन सुन अन्धकार नाश को प्राप्त भया औ सुदर्शनचक्र अपने स्थान को गया दोनों मुनि भी बड़े भयसे छूट भगवान् को प्रणामकर वहां से चले औ परस्पर कहनेलगे कि अब हम जन्म पर्यन्त किसी कन्यासे विवाहकी इच्छा न करेंगे राजा अंबरीष बहुत काल पर्यंत निःकंटक राज्य कर अन्त में विष्णु लोक को गया दोनों मुनियों के शाप को सत्य करनेके लिये विष्णु भगवान् दशरथके पुत्र रामचन्द्र भये औ तमोगुणसे अपने स्वरूपको भूलगये भृगु आदि मुनि भी भगवान् को देख यह कहते भये कि माया न करनी चाहिये माया करने से आप को मुनि शाप भोगना पड़ा कुछ कालके अनन्तर नारद औ पर्वत भी विष्णु

भगवान् की सब माया जानगये औ भगवान् से बिमुख हो शिवभक्त होगये यह हमने अंबरीष का माहात्म्य औ विष्णु भगवान् का मायावीपना आपको श्रवण कराया इसको जो पढ़ै सुनै अथवा ब्राह्मणों को श्रवण करावै वह मायाको जीत इंद्रलोकमें निवासकरै॥

छठा अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी विष्णु भगवान् का मायावीपना हमने श्रवण किया अब आप यह वर्णन करैं कि ज्येष्ठा देवी अर्थात् अलक्ष्मी की उत्पत्ति क्योंकर भई हमने सुना है कि ज्येष्ठादेवी विष्णु भगवान् से ही उत्पन्न भई है यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो विष्णु भगवान् ने जगत् दो प्रकार से उत्पन्न कियाहै धर्म ब्राह्मण वेद औ लक्ष्मी ये सब एकभाग में औ अधर्म वेद के विरोधी मनुष्य औ अलक्ष्मी दूसरेभागमें उत्पन्न किये पहिले अलक्ष्मी उत्पन्नभई पीछे लक्ष्मी इसकारण अलक्ष्मी ज्येष्ठा कहाई समुद्र मथन के समय विष के अनन्तर अलक्ष्मी औ पीछे लक्ष्मीकी उत्पत्ति भई है दुःसह नाम ऋषिने अलक्ष्मीसे विवाहकिया औ अलक्ष्मी को साथ ले दुःसहऋषि तीनलोकमें विचरने लगे परंतु जहां वेदध्वनि होतीहोय शिव विष्णु के नाम कोई उच्चारण करताहोय विभूति धारेहोय अथवा यज्ञकाधूम उठता होय इन स्थानों में भय से वह अलक्ष्मी कभी नहीं जाती थी यह देख दुःसहमुनि के मनमें बड़ा सं-

देह भया इसी अवसरमें मार्कण्डेय मुनि वहां आये उनको दुःसहमुनि ने प्रणाम किया औ प्रार्थना करी कि महाराज यह मेरी भार्या किसी उत्तम स्थान में प्रवेश नहीं करती औ इस के संग से मैं भी कहीं नहीं जासक्ता यह भार्या क्या मेरे लिये वाधा ठहरी मैं कहां कहां जाऊं औ कहां कहां न जाऊं इस भार्यासे मैं अति दुःखी हूं यह सुन मार्कण्डेय मुनि बोले कि हे दुःसह यह तेरी भार्या अलक्ष्मी है औ इसका नाम ज्येष्ठा अशुभा अकीर्त्ति आदि अनेकहैं शिवभक्त विष्णुभक्त वेदमार्ग पर चलनेहारे औ भस्म से भूषित महात्मा जहां निवासकरैं वहां इसको लेकर कभी प्रवेश मत करना नारायण, हृषीकेश, पुण्डरीकाक्ष, माधव, अच्युत, अनंत, गोविंद, वासुदेव, जनार्दन आदि विष्णु नाम औ रुद्र, ईश्वर, शंकर, शिव, शिवतर, महादेव, उमापति, हिरण्यपति, हिरण्यबाहु, विषांक, वामदेव आदि शिव के नाम जो पुरुष उच्चारण करते होयँ उनके धन, घर, बाग, गोष्ठ आदि में कभी प्रवेश मतकर क्योंकि ज्वाला माला से व्याप्त अति भयङ्कर विष्णु का सुदर्शनचक्र उनके अशुभको नाश करताहै जिस घरमें स्वाहाकार वषट्कार आदि शब्दों का उच्चारण हो जहां वेदध्वनि होती होय नित्य नैमित्तिक कर्मोंमें तत्पर ब्राह्मण रहते होयँ उनके समीप मत जाओ जिनके घरमें अग्निहोत्र शिवलिङ्ग विष्णुमूर्त्ति चण्डिकामूर्त्ति औ शिवमूर्त्ति स्थित हो उनके घर को दूरसे त्यागकरो जो नित्य नैमित्तिक यज्ञोंसे महेश्वर का यजन करते हैं औ वेदपाठी ब्राह्मण, गौ,

गुरु, अतिथि औ शिवभक्तों का जहां पूजन होताहोय हे दुःसह वहां इसको लेकर कभी प्रवेश मत करना यह सुनि दुःसहमुनि बोला कि महाराज इन स्थानों में तो आपने मुझे जाने का निषेध किया अब आप मुझे यह भी आज्ञा करें कि कौन कौन स्थानों में इस को लेकर मैं प्रवेश करूं यह दुःसह का वचन सुन मार्कंडेयमुनि कहनेलगे कि हे दुःसह जहां भार्या औ भर्त्ता का परस्पर कलहहोय वहां तू अपनी भार्या अलक्ष्मी सहित प्रवेश कर जहां शिवकी निन्दा होतीहोय वहां निर्भय होकर प्रवेशकर जहां शिव औ विष्णुकी भक्ति न होय वहां निवास कर जप होम ब्राह्मण भोजन आदि जिनके घरमें न होते होयँ विभूति जिनके घर में न होय नित्य अथवा चतुर्दशी कृष्णाष्टमी आदि पर्वोंमें जहां शिवपूजा न होय वहां सदा निवास कर संध्या समय जो पुरुष भस्म धारण न करे औ नमःशिवाय, नमः कृष्णाय, नमोब्रह्मणे इत्यादि मंत्रों का उच्चारण न करे उनकेघरमें अपनी भार्यासहित सुखसे निवासकर जहां वेदध्वनि शिवपूजा औ पितृकर्म अर्थात् श्राद्ध तर्पण आदि न होते होयँ वहां आनन्दसे बसो जिसघरमें रात्रिके समय नित्य कलह होय वहां निर्भयहो प्रवेश करो जिस घरमें श्रोत्रिय अर्थात् वेदके जाननेहारे ब्राह्मण अतिथि, गुरु, गौ, शैव, वैष्णव न होयँ वहां प्रवेश करो जिस घरमें पुरुष बालकों को विना दिये उत्तम भक्ष्य पदार्थ आपही खाजायँ औ बालक उनकी ओर देखते रहैं वहां निवासकरो जहां अग्निहोत्र शिवपूजन अ-

थवा विष्णुपूजन न होय औ मूर्ख निर्दय औ दाम्भिक आदि दुष्टपुरुष निवास करते होयँ वहां तुमभी अपनी भार्या सहित प्रवेश करो जिस घरमें कुटुम्बिनी अर्थात् घरवाली का आदर न होय वहां प्रसन्न होकर भार्या सहित निवास करो जिनके घर में कांटों के वृक्ष आक आदि दूधवाले वृक्ष पलाश अगस्त्य निष्पाप वल्ली अर्थात् मटरकी वेल, वंधुजीव अर्थात् गुलदुपहरिया, करवीर, तगर, मल्लिका, कन्या अर्थात् घीकुवार, अजमोद, निम्ब, केला, ताल, तमाल, भिलावा, इमली, वड़, पीपल, आम, गूलर, कटहर आदि वृक्ष होयँ औ घरमें अथवा बागमें निंब वृक्ष होय औ उसमें काकका घरहोय वहां निर्भयहो प्रवेश करो जिस घरमें स्त्री दण्डिनी अर्थात् दण्ड धारणकरै औ मुण्डिनी अर्थात् मूड़मुड़ाये होय वहां निवासकरो जिनके घरमें एकदासी अथवा तीन गौ पांच महिषी छःघोड़े औ सात हाथीहोयँ वहां अलक्ष्मी सहित वासकरो जिस के घर में चामुण्डादेवी होय औ प्रेतरूपा डाकिनी तथा क्षेत्रपाल आदि कीपूजा होय वहां प्रवेशकरो संन्यासी की मूर्त्ति क्षपणक अर्थात् नंगा रहनेहारा बौद्ध भिक्षु औ बुद्धि की प्रतिमा जहां होय वहां सदा निवासकरो जो पुरुष सोते, बैठते, खाते, पीते, चलते, फिरते, परमेश्वरके नाम स्मरण न करैं उनके घरमें सुखसे बसो जहां पाखंडी श्रौतस्मार्त धर्म के विरोधी महादेवजी के निन्दक विष्णुभक्ति से हीन नास्तिक औ शठ पुरुष निवास करते होयँ वहां तुम भी अपनी भार्या सहित आनन्द से निवास करो

जो पुरुष शिवजी को सब देवताओं से अधिक न सम‌झैं सब देवताओं के तुल्यही जानैं यह न समझैं कि ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि देवता शिवजीकी कृपासे अपने अपने अधिकार पर स्थित हैं औ यह कहैं कि ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र सब तुल्यही हैं उन मूढ़ों के घरमें जो सूर्य औ खद्योतको समान समझैं अर्थात् शिवजीको और देवताओं के बराबर जानैं तुम सुख से निवासकरो जो मनुष्य भोजन बनाय अकेले भोजन करलें औ स्नानै आदि मंगलकर्मों से हीन होयँ उन के घर में तुम निवास करो जो स्त्री शौच आचार से हीन होय देह का शृंगार न करे औ सर्व भक्षिणी होय उसके समीप निवास करो जो पुरुष मलिन वस्त्र पहिने दन्तधावन न करैं पैरों का मल न उतारैं संध्या समय शयन अथवा भोजन करैं बहुत भोजन करैं बहुत पानकरैं सदा जूआ खेलते रहैं ब्राह्मणों का धन हरैं अपूज्यों की पूजा करैं शूद्रका अन्न भोजन करैं मद्य पानकरैं मांस खायँ परस्त्रीगमन करैं पर्व दिनमें भी परमेश्वरका पूजन न करैं दिन में अथवा सन्ध्या समय मैथुन करैं पिछली ओर से मैथुन में प्रवृत्त होयँ श्वान अथवा मृग की भांति मैथुन करैं जलमें मैथुन करैं गोशाला में मैथुन करैं रजस्वला चण्डाली अथवा कन्या के साथ संग करैं उन सब के घर में आनन्द से प्रवेश करो जो पुरुष स्त्री को द्रावण होने के अर्थ अनेक भांतिकी औषध लिंग में लेपकर गमन करैं उनके समीप निवास करो हेदुःसह अधिक कहने से क्या प्रयोजन है जहां शिव औ

विष्णुकी भक्तिसे हीन मनुष्य रहते होयँ वहां तुम भी अपनी भार्या सहित निवास करो सूत जी कहते हैं हे मुनीश्वरो इतना उपदेश दुःसह ऋषिके प्रति कहकर जलसे अपने नेत्र धोय मार्कण्डेय मुनि अंतर्द्धान भये औ दुःसह भी अपनी भार्या समेत मार्कण्डेय जी के बताये स्थानों में निवास करनेलगा विशेष करके जहां शिव औ विष्णु के निन्दक रहते थे वहां रहताथा एक दिन दुःसह ने ज्येष्ठा से कहा कि हे प्राणप्यारी इस तड़ाग के तटपर आश्रम के बीच यह पीपल का पेड़ है तुम इस में ठहरो तवतक हम रसातल में हो आते हैं अपने औ तुम्हारे निवास के लिये अच्छा स्थान देखकर तुम्हारे समीप आवैंगे यह पति का वचन सुन अलक्ष्मी बोली कि हे प्रिय आप के आने तक मैं क्या भोजन करूं औ मुझे कौन वलिदेगा दुःसह ने कहा कि जो स्त्री धूप दीप वलि आदि तुम को देवे उस से अपना निर्वाह करना औ उन के घर में कभी प्रवेश भी मत करना इतनाकह दुःसह मुनि तलाव में गोता मारगये औ ज्येष्ठा वहां बैठी २ उनकी राह देखने लगी परन्तु दुःसह तो आज तक भी नहीं आये एक दिन लक्ष्मीजीको संगलिये विष्णु भगवान् वहां आये उन को देख प्रणामकर अलक्ष्मी ने कहा कि महाराज मेरा पति मुझे छोड़ पाताल को चलागया औ मैं अनाथ जीविका विना अति दुःखीहूं आप कुछ मेरे निर्वाह का उपाय करदेवैं सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ज्येष्ठा का यह दीन वचन सुन भगवान् ने हँसकर कहा कि

जो मेरे भक्त सब जगत् के प्रभु श्रीमहादेवजी की औ जगन्माता श्रीपार्वतीजी की निन्दा करें उनके धन को तू आनन्दसे भोग महादेवजीकी इच्छासे ब्रह्माजी औ हम उत्पन्न हुये हैं इसलिये जो महादेव जी की निन्दा कर हमारा पूजन करैं वे हमारे भक्त नहीं शत्रु हैं उनके धन, घर, क्षेत्र, बाग, तालाव यज्ञादिकोंमें तुम सुख से अपना कालक्षेप करो इतना कह अलक्ष्मीको विदा कर उसके दर्शन से उत्पन्न भये अमंगल की शांति के लिये विष्णु भगवान् रुद्राध्याय का पाठ करते भये हे मुनीश्वरो अलक्ष्मी को सदा बलि देना चाहिये विशेष करके वैष्णवों को सब यत्न से अलक्ष्मी का गन्ध पुष्प बलि आदि करके पूजन करना चाहिये औ नारियोंको भी भांति भांति के बलि ज्येष्ठाके प्रति देने चाहिये इस अलक्ष्मी की कथाको जो पढ़ै सुनै अथवा ब्राह्मणों को सुनावै वह लक्ष्मीवान् होय औ सद्गति पावै ॥

सातवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी कौनसे मंत्रके जपसे जीव संसारके भय से मुक्त हो सब पापों को दूरकर सद्गतिपाताहै औ अलक्ष्मीको त्याग लक्ष्मीवान् होता है यह आप हमसे कथन करैं यह मुनि का वचन सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो यहबात ब्रह्मा जीने वशिष्ठजी को उपदेश करी थी वह हम आप को श्रवण कराते हैं आप भी भगवान् को प्रणाम कर इस मोक्षके उपायको प्रीति से श्रवण करैं जो पुरुष मन व-

चन कर्मसे पुण्यकर्म करतारहे औ चलते, फिरते, सोते, बैठते, खाते, पीते, जागते, श्वास लेते औ नेत्रों के निमिष उन्मेष समयमें भी ॐनमोनारायणाय इस मन्त्र का उच्चारण करता रहे औ अन्न जल आदि को इसी मंत्र से अभिमन्त्रणकर ग्रहण करै वह सब पातकों से मुक्तहो सद्गति पाता है औ नारायण का नाम सुनतेही अलक्ष्मी भग जातीहै औ लक्ष्मी समीप आती है सब शास्त्रों को मथन कर औ बारबार विचार यह निश्चय कियाहै कि नारायण का सदा ध्यान करना चाहिये जो ॐनमोनारायणाय इस मंत्र का जप करतारहै उस को और मंत्र अथवा व्रतों से कुछ प्रयोजन नहीं यह मंत्र सब अर्थों का साधन करनेहाराहै इसको जो सदा जपता रहै वह अपने कुटुम्बसहित विष्णुलोक को जाय हे मुनीश्वरो दूसरा मंत्र देवदेव विष्णु भगवान् का द्वादशाक्षर है जो हमने जपा है उस का हम संक्षेप से माहात्म्य वर्णन करते हैं पूर्वकालमें एक बड़ा तपस्वी ब्राह्मण था बहुत तपकरते २ एकपुत्र उस ब्राह्मणके घर उत्पन्न भया ब्राह्मणने भी उसके सब संस्कार कर यज्ञोपवीत किया औ ऐतरेय नामक उस बालकको विद्या अभ्यास कराने लगा परन्तु उसकी जिह्वा ऐसी जड़ थी कि वह एक शब्द का उच्चारण भी नहीं कर सक्ता था केवल ॐनमोभगवतेवासुदेवाय इस मंत्रको किसी भांति कहता रहता यह पुत्रकी दशा देख ब्राह्मण अति दुःखी भया औ दूसरा विवाह किया ईश्वरकी इच्छा से उस दूसरी स्त्री में कई पुत्र उत्पन्न भये औ सबके सब

वेदशास्त्र पढ़ थोड़ेही काल में बड़े विद्वान् होगये उन को देख ब्राह्मण अति प्रसन्न होता था परंतु ऐतरेय की माता अपने पुत्रकी मूर्खता देख बहुत दुःखी थी एक दिन अपने पुत्रसे कहनेलगी कि हे ऐतरेय ये तेरे भाई वेद वेदांगों में पारगामी लोकमें विद्या के बल से प्रतिष्ठा सम्पादनकर अपनी माता को अति आनन्द देते हैं औ मेरे मंदभागिनीके तू एकही पुत्र उत्पन्नभया वहभी कुलक्षण औ जड़ भया इसकारण हे पुत्र इस जीवनसे जो मुझे मृत्यु प्राप्तहोय तो बहुत अच्छा होय यह माताका वचनसुन ऐतरेय वहांसे उठकर यज्ञवाटमें गया जहां ब्राह्मण यज्ञ कर रहे थे ऐतरेय को देखतेही सब की जिह्वा ऐसी कुंठितभई कि एकभी वेदमंत्र किसी के मुखसे नहीं निकलता था तब तो सब ब्राह्मण मोहित भये ऐतरेयने भी द्वादशाक्षरमंत्रका उच्चारण किया मंत्र का उच्चारण करतेही ऐतरेय के मुख से अनर्गल वाणी निकली यह देख सब ब्राह्मण ऐतरेयको प्रणामकर उसकी पूजाकरनेलगे वह यज्ञ ऐतरेयने पूर्ण कराया औ सभा के बीच अंगों सहित चारों वेद औ छहों शास्त्रों में परीक्षा दी तब सब ब्राह्मण ऐतरेय की प्रशंसाकरने लगे औ उसके ऊपर सिद्ध चारण आदिकों ने पुष्पवृष्टि करी इस भांति यज्ञ को समाप्त करवाय दक्षिणा में बहुत सा धन पाय अपनी माता को आय आनन्द दिया यह हमने द्वादशाक्षर मन्त्र का प्रभाव संक्षेप से वर्णन किया जिसके पढ़ने औ सुनने से महापातक भी कटजाते हैं जो पुरुष नित्य द्वादशाक्षर मंत्र को जपता

रहै वह निश्चयही विष्णु भगवान्के दिव्यलोकमें निवास करता है पापी मनुष्य भी द्वादशाक्षर मंत्रको जपतारहै तो निस्संदेह उत्तमगति पावै फिर अपने धर्ममें स्थित सदाचार औ महात्मा पुरुष इस मंत्रके जपसे क्योंकर सद्गति न पावै॥

आठवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो ॐनमोनारायणाय यह अष्टाक्षरमंत्र औ ॐनमोभगवतेवासुदेवाय यह द्वादशाक्षर मंत्र है ये दोनों मन्त्र भगवान्के सब मंत्रों में उत्तमहैं परन्तु ॐनमःशिवाय यह शिवजी का षडक्षर मंत्र सब वेद के अर्थ का सारहै औ सब कार्योंका साधन करनेहाराहै इसीभांति शिवतराय यह पंचाक्षर मन्त्र सब मनोरथ सिद्ध करता है मयस्कराय यह भी दिव्य पञ्चाक्षर मंत्र कल्याणदायकहै औ नमस्ते शंकराय यह सप्ताक्षर मन्त्र प्रकृति पुरुषरूप रुद्र का है इन मन्त्रों करके ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि देवता मुनि औ उत्तम ब्राह्मण शिवजीका यजन करते हैं नमः शिवाय नमस्तेशंकराय मयस्कराय रुद्राय शिवतराय ये पांचों शिवजीके महा मंत्र हैं इन के उच्चारण करने से ब्रह्महत्या आदि पांचों महापातक उसीक्षण निवृत्त हो जाते हैं हे मुनीश्वरो पूर्वकाल में बड़ा सामर्थ्यवान् एक धुन्धुमूक नाम ब्राह्मणथा प्रभु नाम मनुके तीसरे आवर्त्त के त्रेतायुग में औ मेघवाहन कल्पमें धुंधुमूक के घर पुत्र उत्पन्न भया भगवान् ने मेघ का रूपधार

शिवजी को अपने ऊपर चढ़ाया परंतु उनका भार न संस्हारसके इसलिये शिव जी की प्रार्थना कर विष्णु भगवान् ने बहुत तपकिया औ बड़ा ऐश्वर्य तथा बल शिवजी के अनुग्रह से पाया इस कारण उस कल्पका नाम मेघवाहन भया मेघवाहन कल्पमें ऋषि के शाप से धुन्धुमूक ब्राह्मण के घर बड़ा दुष्ट पुत्र उत्पन्नभया धुंधुमूक ने अमावास्या के दिन रुद्र मुहूर्त्त में दिनके समय विना इच्छा अपने विशल्पा नाम स्त्री से संग किया औ वह गर्भवती भई समय पूरा होने पर रुद्र मुहूर्त्त में औ शनिदृष्ट लग्न में माता पिता को अरिष्ट देनेहारा पुत्र बड़े कष्टसे उसके उत्पन्न भया उससमय मित्र औ वरुण ने कहा कि हे धुन्धुमूक यह बड़ा दुष्ट पुत्र तेरे घर उत्पन्न भया है परन्तु वशिष्ठजी बोले कि दुष्ट तो ठीकहै परन्तु बृहस्पति के अनुग्रह से यह सब पातकों से मुक्त होजायगा धुन्धुमूक ऐसे पुत्र को देख अति दुःखी भया परन्तु जातकर्म आदि सब संस्कार उसके करे औ विद्या पढ़ाय उसका विवाह किया परन्तु वह अपनी स्त्री को छोड़ एक शूद्रीमें आसक्त भया औ उसके साथ मद्यपान कर दिन रात रमण किया करता भोजन भी उसी के साथ करता कुछ काल के अनन्तर किसी निमित्त से उस शूद्रीके साथ धुन्धुमूक के पुत्रका विरोध होगया एक दिन अवसर पाय उसशूद्रीको उस ब्राह्मण ने मारडाला तब तो उस शूद्रीके भाई बंधुओंने इकट्ठे हो इसके पिता धुन्धुमूकके प्राण लिये औ और भी जो घरमें धुन्धुमूक की स्त्री आदि जीव थे सब का

संहार किया परन्तु वह धुन्धुमूक का पुत्र भगगया था इस कारण बचा राजाने उन सबशूद्रों को प्राणान्त दंड दिया इस भांति धुंधुमूकका औ उस शूद्री का सबकुटुंब नष्ट भया धुंधुमूक का पुत्र भी भयसे भगता २ प्रारब्ध वश बृहस्पति के आश्रममें जाय पहुँचा बृहस्पतिने भी इसे ब्राह्मण जान पाशुपतव्रत पंचाक्षर औ षडक्षर मंत्र का उपदेश किया उसनेभी मंत्र पाय एक२ लक्षजप दोनों मन्त्रों का किया औ एकवर्ष पर्यंत पाशुपत व्रत में रहा पीछे आयुष समाप्त होनेपर मृत्युवश हो यमलोक में गया यमराज ने इसका बड़ा आदर किया औ इसके माता पिता स्त्री जो शूद्रोंके हाथ मारे जानेसे नरकों में पड़ेथे सबको छोड़ दिया वह सब अपने कुटुंबसमेत दिव्य विमान में बैठ शिवजी की आज्ञा से कैलास को गया वहां जाय श्रीमहादेवजीका उत्तमगण होकर आनंद से निवास करताभया इसकारण अष्टाक्षर औ द्वादशाक्षरसे भी पंचाक्षर मंत्रका फल कोटिगुणा अधिक है षडक्षर मन्त्रको जपै अथवा आदि में मायाबीज लगाकर जपै वह परमगति को प्राप्त होय हे मुनीश्वरो यह कथाका सर्वस्व मंत्रोंका फल हमने आपको श्रवण कराया इसको जो पुरुष पठन करै श्रवणकरै अथवा उत्तम ब्राह्मणोंको सुनावै वह ब्रह्मलोक में निवास पावै॥

नवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी पूर्वकाल में देवताओंने साक्षात् ब्रह्माजीने तथा विष्णु भगवान्

ने पाशुपत व्रतकिया औ आपने वर्णन किया कि अति दुराचार धुन्धुमूक के पुत्र ने पाशुपत व्रत से सद्गति पाई अब आप यह कथनकरें कि शिवजी पशुपति क्यों कर हैं औ पाशुपत व्रत से सिद्धि क्योंकर होती है यह सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ब्रह्माजीके पुत्र सनत्कुमारजी रुद्रशाप से उष्ट्र की देहधार मरुस्थलमें रहे औ फिर शिवजीके अनुग्रहसे औ ब्रह्माजीकी आज्ञा से उस देह को त्यागकर मेरु पर्वत के ऊपर शिलादके पुत्र नन्दी के समीप आये औ उनको प्रणाम कर सनत्कुमारजी प्रश्न करतेभये कि हे नन्दीश्वरजी शिवजी पशुपति क्योंकर हैं यह सुन नन्दीने सनत्कुमारजी को जो उत्तर दिया वह सनत्कुमारजी ने वेदव्यासजी से कहा औ व्यासजीने हमको उपदेश किया वही हम आपको श्रवण कराते हैं आप सब शिवजी को नमस्कार कर भक्ति से श्रवण करें यह कह सूत जी बोले कि हे मुनीश्वरो सनत्कुमारजीने पूछा कि हे नन्दीश्वर जी पशु कौन है औ शिवजी पशुपति क्योंकर हैं कौन से पाश से पशु बँधे हैं औ उनकी मुक्ति क्योंकर होती है यह आप कथनकरें यह सनत्कुमार जीका प्रश्न सुन नंदी कहने लगे कि हे सनत्कुमारजी आप शान्तचित्त औ परमशिवभक्त हैं इस कारण हम आप से यह सब रहस्य कथन करते हैं ब्रह्मा से लेकर स्थावरपर्यंत सब पशु हैं औ शिवजी उन सब के स्वामी हैं इस कारण पशुपति कहाते हैं वेही मायापाश से पशुकी भांति सब को बाँधते हैं औ ज्ञानयोगसे शिवही मुक्त करते हैं शिव

जीके विना अविद्यापाशमें बँधेहुये जीवों को कोई नहीं छुटासक्ता चौबीस तत्त्व परमेश्वर के पाश हैं उन पाशों से जीवों को बाँधता है औ अपने भक्तों को पाशों से छुटाता है दश इन्द्रिय मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त, भूत तन्मात्रा ये सब पाशहैं इन से बँधेहुये अपने भक्तों को परमदयालु वह शिवही मुक्त करता है परमेश्वर के सेवक भक्त कहाते हैं क्योंकि भजधातु सेवा अर्थ में है उसीसे भक्त यह शब्द सिद्धहोताहै ब्रह्मासे लेकर स्तंब-पर्य्यंत सब जीवों को त्रिगुण पाशों से बाँध परमेश्वर कार्य्य करवाता है औ दृढ़ भक्ति से जो पशु परमेश्वर का आराधन करते हैं उनको उस पाशसे मुक्तकर देता है सब पाशों को काटने हारी परमेश्वर की भक्तिहै मन वचन औ कर्म से भक्ति तीन प्रकार की है शिव सत्य है औ सर्वव्यापकहै यह जानना औ ध्यान करना यह मानस भक्तिहै प्रणव आदि मन्त्रों का जप वाचिक भक्ति है औ प्राणायाम आदि कायिक भक्ति है धर्म्म अधर्म रूप पाशों से बँधेहुये जीवों को मुक्ति देनेहारा एक शिवही है चौबीस तत्त्व औ शब्द आदि विषय माया के पाश हैं तथा अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष औ अभिनिवेश ये पांच क्लेश भी पाशही हैं इन सबमें बँधे जीवों को शिवही मुक्ति देताहै तम, मोह, महामोह, तामिस्र औ अंधतामिस्र ये पांच भेद अविद्याके हैं अविद्या को तम अस्मिता को मोह रागको महामोह द्वेपको तामिस्र औ अभिनिवेश को अन्धतामिस्र कहते हैं तम आठ प्रकार का है मोह आठ प्रकार का महामोह दश प्रकार

का तामिस्र अठारह प्रकार का अन्धतामिस्र अठारह प्रकार का है सर्वान्तर्यामी शिवसे अविद्या का कुछभी सम्बन्ध नहीं हुआ न है औ आगे भी न होगा इसी भांति द्वेषसे भी तीनों कालों में परमेश्वर का सम्बन्ध नहीं अभिनिवेश से भी कुछ सम्बन्ध नहीं शुभ अशुभ कर्म औ उनके फलोंसे भी तीनकाल में शिवका सम्बन्ध नहीं सुख दुःख आशय कर्म संस्कार औ भोग संस्कारों से परमेश्वर का कुछ सम्बन्ध नहीं जड़ औ चैतन्य इस प्रपंच से शिव परे है लोकमें सबसे अधिक ज्ञानैश्वर्य है वह शिवमें है इसकारण शिव सब से पर है प्रत्येक सृष्टिके आरंभ में जो ब्रह्मादिक उत्पन्न होते हैं उनको सब शास्त्रों का उपदेश शिवही करते हैं इस कारण शिव गुरुओंके भी गुरुहैं ब्रह्मादिक कालके वश हैं औ शिव कालातीतहै शिव औ जीव का सेव्य सेवक सम्बन्ध अनादिहै यद्यपि शुद्ध चैतन्य शिवको अपना कुछ प्रयोजन नहीं तो भी सब का कारण वही है उस शिवका वाचक प्रणवहै शिव रुद्र आदि शब्दोंमें प्रणव श्रेष्ठहै शिवके वाचक प्रणवके जपसे औ भावन से जो सिद्धि प्राप्त होतीहै वह और मंत्रोंके जपसे नहीं मिलसकती पाशुपत योग शिवजीने सूर्यरूपसे याज्ञवल्क्य के तपसे प्रसन्नहो उसको उपदेश किया याज्ञवल्क्य मुनिने कहा कि हे गार्गि अयोगी पुरुष परमेश्वरको स्थूल विराट् रूपसे वर्णन करते हैं औ योगी उसको निषेध मुखसे प्रतिपादन करतेहैं अर्थात् वह परमेश्वर अदीर्घ, अलोहित, अमस्तक, अनस्तमित अर्थात् कभी अ-

स्त नहीं होता इसी से नित्यानंद रस स्वरूप असंग, अगंध, अरस, अचक्षुष्क, अकर्ण, अवाङ्मन सगोचर, अतेजस्क, अप्रमाण, असुख, अनामगोत्र, अमर, अजर, अनामय, अमृत, ॐकार प्रतिपाद्य, असंवृत, अपूर्व, अपर, अबाह्य अभोक्ता औ सर्वभोक्ता है इसभांति पाशुपतयोग से जो परमेश्वर को जाने वह अन्तकाल में परमेश्वरमें ही लीन होता है हे पुरुष ॐकार रूप दीपक को प्रज्वलित कर औ पवन से भी अधिक वेगवाले तथा सब इन्द्रियों के स्वामी मनको रोककर अंतर्यामी औ सूक्ष्मरूप परमेश्वर को ढूंढ़ वागजालों करके क्यों वृथा विवाद करता है और किसीका तुझको भय नहीं अपने देहमें विराजमान शिवको देख औ शास्त्ररूप गहरे अंधेरे में मत फिर यह मुनियों के प्रति शिवजी का किया उपदेश मुमुक्षु पुरुष पंडितों के साथ विचार कर भलीभांति जाने तो आनन्दरूप अपने आत्मा को पंचकोशों से बचाय मोक्षको प्राप्त करता है ॥

दशवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी, आप शिवजी की महिमा फिर भी वर्णन करें आपके मुखसे शिवजी का गुण सुनते सुनते हमारा आत्मा तृप्त नहीं होता यह सुन नन्दी कहने लगे कि हे सनत्कुमार हम संक्षेप से शिवजीकी महिमा आपको कथन करते हैं शिव को प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, मन, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ औ भूत

तन्मात्रा इन का कुछ भी बंधन नहीं वह शिव स्वभाव सेही नित्य शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूप है औ उस को मुनि लोग नित्य मुक्त कहते हैं उस अनादि मध्य पुरुष रूप शिवकी आज्ञा से प्रकृति बुद्धि को उत्पन्न करती है बुद्धिसे अहंकार, अहंकारसे दशइन्द्रिय मन औ तन्मात्रा उस अंतर्यामी शिवको आज्ञा करके उत्पन्नहोतेहैं तन्मात्राओं से आकाशआदि पंच महाभूत उत्पन्न होते हैं ब्रह्मा से लेकर तृणपर्यंत सबजीवों के देहोंको शिवजी की आज्ञा से पंचमहाभूत उत्पन्न करतेहैं शिवजी की आज्ञा से बुद्धि सब अर्थोंका निश्चय करतीहै अंतर्यामी उसशिवका ऐश्वर्य औ विभूति स्वभाव से हीहैं शिवकी आज्ञासे अहंकार सब अर्थोंका अवमान करता है चित्तस्मरण करताहै मन संकल्प करताहै कर्ण आदि अपने २ विषयों को ग्रहण करते हैं यह शिवकाही किया नियमहै वाणी वचन कहती है कि किसी पदार्थका लेनदेन नहीं करसक्ती हस्त ग्रहण करते हैं गमन आदि नहीं करसक्ते पादगमन करते हैं उत्सर्ग अर्थात् मलका त्याग नहीं करसक्ते पायु उत्सर्ग करता है बोल नहींसकता परमेश्वरकी आज्ञासे सबजीवों को उपस्थ आनंद देताहै उसी शिवके शासनसे आकाश सबजीवों को अवकाश देता है प्राण अपानआदि अपने भेदों करके सबजीवोंके शरीरको वायु धारण करता है औ शिवकी आज्ञा सेही सातस्कंधों में आवहआदि भेदोंसे स्थित होकर लोक यात्राको करता है औ नागआदि भेदों से शरीरों में स्थितहै देवताओं का हव्य, पितरों का कव्य,

अग्नि धारण करता है औ सब जीवोंके उदरमें स्थित होकर आहार का परिपाक करताहै परमेश्वर की आज्ञासे जल सबको जिलाताहै औ पृथ्वी चराचरजीवों को धारण करती है शिवकी आज्ञा को कोई भङ्ग नहीं करसक्ता शिवकी आज्ञासेही इंद्र सब जीवों को दृष्टिसे धारण करता है यमराज जीवते हुये जीवों को व्याधि औ मृतहुओं को यातना देताहै औ शिवकीही अलंघनीय आज्ञा से विष्णु भगवान् देवताओं की रक्षा औ दैत्योंका तथा अधर्मियों का संहार करते हैं वरुणजल से लोकों का संभावन करता है औ दैत्य तथा दुष्टजीवोंको अपने पाशों से बांध जलमें डुबो देताहै शिवकी आज्ञा से कुबेर प्रारब्धानुसार सब जीवोंको धन देता है उसी शिव के शासन से सूर्य्यनारायण उदय अस्त रूप कालको धारण करते हैं चन्द्रमा सब ओषधियोंका औ जीवोंका अपने अमृतमय किरणोंसे आनन्द देता है आदित्य, वसु, रुद्र, मरुत, अश्विनीकुमार, गन्धर्व्व, सिद्ध, साध्य, चारण, यक्ष, राक्षस, पिशाच, ग्रह, नक्षत्र, तारा, यज्ञ, वेद, तप औ ऋषियोंके समूह सब शिवकी आज्ञामें स्थित हैं पितरों के समूह, सात समुद्र, पर्वत, नदी, सरोवर, वन सब शिवके नियोगमें हैं कला, काष्ठा, मुहूर्त्त, दिन, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, युग औ मन्वंतर सब शिवकी आज्ञासे स्थितहैं पर परार्द्ध आदि संख्या देवताओंकी आठ जाति तिर्यक् अर्थात् पशु पक्षी आदिकों की पांच जाति औ मनुष्य ये चौदह योनियों में स्थित संपूर्ण भूत सबलोकोंके निवासी शिवकी आज्ञा

के अधीन हैं पाताल आदि चौदह भुवन सब पदार्थों करके युक्त औ आवरणों सहित ब्रह्मांड शिवकी आज्ञा में स्थित हैं पीछे जितने ब्रह्मांड होचुके औ आगे जो होंगे सब शिवकी आज्ञा में हैं इस प्रकार कोई भी ऐसा जड़ अथवा चैतन्य पदार्थ नहीं है जो शिव की आज्ञा से बाहर हो॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहतेहैं कि हे परम शिवभक्त नन्दिकेश्वर जी आप शिव विभूतियों का वर्णन विस्तारसे करें यह सुन नन्दिकेश्वर कहने लगे कि हे ब्रह्मपुत्र सनत्कुमार योगीन्द्र शिव पार्वती की विभूतियों को हम वर्णन करते हैं आप भक्तिसे श्रवण करें परमात्मा को शिव अर्थात् कल्याणरूप कहते हैं औ उसकी पत्नी शिवा अर्थात् कल्याणरूपा है शिव ईश्वर है पार्व्वती माया है शिव पुरुष पार्वती प्रकृति शिव अर्थ स्वरूप पार्वती वाणी अर्थात् शब्दरूपा शिव दिन पार्वती रात्रि शिवयज्ञ पार्वती दक्षिणा शिव आकाश पार्वती पृथ्वी शिव समुद्र पार्वती वेला शिव वृक्ष पार्वती लता शिव ब्रह्मा पार्वती सावित्री शिव विष्णु पार्वती लक्ष्मी शिव इन्द्र पार्वती शची शिव अग्नि पार्वती स्वाहा शिव यमराज पार्वती यमपत्नी शिव वरुण पार्वती वरुण की भार्या शिव वायु पार्वती वायुकी स्त्री शिव कुवेर पार्वती ऋद्धिनाम कुवेरभार्या शिव चन्द्रमा पार्व्वती रोहिणी शिव सूर्य पार्वती सुवर्चला शिव स्कंद पार्वती देवसेना

शिव दक्षप्रजापति पार्वती प्रसूति शिव मनु पार्वती शतरूपा शिव रुचिनाम प्रजापति पार्वती आकूति शिव भृगु पार्वती ख्याति शिवमरीचि पार्वती संभूति शिव शुक्र पार्वती रुचिरा शिव अंगिरा पार्वती स्मृति शिव पुलस्त्य पार्वती प्रीति शिव पुलह पार्वती दया शिव क्रतु पार्वती सन्नति शिव अत्रि पार्वती अनसूया शिव वशिष्ठ पार्वती ऊर्ज्जा है इसभांति जगत्में सब पुरुष शिव औ स्त्री पार्वती हैं पुल्लिंग वाचक सब पदार्थ शिव की विभूति हैं औ स्त्री लिंग वाचक पार्वती की विभूति हैं सब पदार्थों की शक्ति पार्वती रूप हैं आठ प्रकृति औ विकृति पार्वतीकी विभूति हैं जिस भांति अग्निमें विस्फुलिंग हैं इस प्रकार शिव में सब जीवहैं सब शरीर गौरी रूपहैं औ शरीरी अर्थात् जीव शिवरूपहैं श्राव्य अर्थात् सुननेके योग्य जो पदार्थ सो पार्वती औ श्रोता शिव हैं सब विषय पार्वती औ विषयी शिव हैं स्रष्टव्य अर्थात् सिरजने योग्य सब पदार्थ पार्व्वती औ स्रष्टा अर्थात् सिरजनेहारा शिव है दृश्य पार्व्वती द्रष्टा शिव रस पार्वती रसका आस्वादन करनेहारा शिव घ्रेय अर्थात् सूंघने के सब पदार्थ पार्वती औ घ्राता अर्थात् सूंघनेहारा महेश्वर मंतव्य अर्थात् माननेके योग्य पदार्थ पार्वती मंता अर्थात् मनन करनेहारा शिव बोद्धव्य पार्वतीबोद्धा शिवजलहरी पार्वती औ लिंग शिव है इसीकारण सब सुर असुर जलहरीमें शिवलिङ्ग स्थापन कर पूजते हैं जो पदार्थ जगत् में लिंग युक्त हैं सब शिव की विभूति औ भगयुक्त पार्व्वती की विभूति हैं

संपूर्ण ब्रह्मांडमें ज्ञेय अर्थात् जानने योग्य पदार्थ पार्वती औ ज्ञाता अर्थात् जाननेहारा शिवहै क्षेत्र पार्वती औ क्षेत्रज्ञ परमेश्वरहै जिस राजा के राज्य में शिवको छोड़ मनुष्य और देवता का यजन करते हैं वह राजा अपने राज्य सहित रौरव नरक को जाता है शिव को छोड़ और देवता में भक्ति करना ऐसा है जैसा अपने पति को त्यागकर नारीका जार में आसक्त होना ब्रह्मा आदि देवता बड़े २ राजा मुनि आदि सब शिवलिंग की पूजा करतेहैं विष्णुके अवतार रामचन्द्रजीने ब्रह्मा के पुत्र रावणको मारनेकेलिये तथा तदुत्पन्न ब्रह्महत्या रूप पाप निवृत्ति के लिये समुद्र के तटपर शिवलिंग स्थापन किया हज़ारों पाप करके औ सैकड़ों ब्राह्मण मारकर जो शुद्ध भाव से शिवजी के शरणमें जाय वह निस्सन्देह मुक्ति ही पावै सब लोक लिंग मय हैं और लिंगमें स्थितहैं इस कारण शाश्वतपदकी इच्छावाला पुरुष सदा शिवलिंग की पूजा करै सर्व रूप से स्थित शिव पार्वतीका सदा पूजन वन्दन औ चिंतन कल्याण के लिये करना उचित है ॥

बारहवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी शिवजीकी आठ मूर्त्तियोंका ऐश्वर्य आप हमको श्रवण करावैं नन्दिकेश्वर ने कहा कि हे ब्रह्मपुत्र हम आप को अष्टमूर्त्तियों की महिमा श्रवण कराते हैं प्रीतिसे सुनो भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र औ यज-

मान ये शिव की आठ मूर्त्ति हैं आकाश, आत्मा, चन्द्र, अग्नि, सूर्य, मेघ, पवन ये भी शिवकी मूर्त्तिहैं सूर्यरूप परमात्मा में अग्निहोत्रके अर्पण करने से सब देवता तृप्त होते हैं जिसभांति वृक्षका मूल सींचने से शाखा पत्र आदि का पोषण होता है इसीभांति एक शिव के यजन से सब का संतोष है वह सूर्य्य रूप सदाशिव बारहरूपों से संसार का पालन करता है अमृता नाम किरण उस सूर्य का सब भूतों को जीवन देताहै चन्द्र नाम किरण ओषधियों की वृद्धि के लिये हिमकी वृष्टि करता है शुक्लनाम किरण गर्म्मी करता है जिससे सब शस्य अर्थात् खेती पकती है हरिकेश नाम रश्मि नक्षत्रोंको तेज देताहै विश्वकर्म नाम किरण बुधको पोषक है विश्वव्यच किरण शुक्रको तेज देता है संयद्वसु नाम किरण मंगलको पोषण करता है अर्वावसु किरण बृहस्पतिको तेजदेता है स्वराट् नाम किरण शनैश्चर को पोषकहै औ उस शिवस्वरूप सूर्य का सुषुम्णाख्य किरण चन्द्रमाको पुष्ट करता है उस जगत् गुरु सदाशिव की चन्द्ररूप मूर्त्ति सौम्य पदार्थोंकी प्रकृति है वही चन्द्ररूप सबजीवों के देहों में वीर्य रूप से स्थित है औ सब जीवों का मन वही चन्द्ररूप शिवहै षोडश कलात्मक चन्द्ररूप महेश्वर सबके देहोंमें स्थितहै वही देवता औ पितरों को अमृत करके पुष्ट करता है वही जीवों के कल्याणके अर्थ सब ओषधियों को पोषण करता है शिवकी चन्द्ररूप मूर्त्तिको पार्वती ही जानो यज्ञ जीव तप जल ओषधीआदि सब पदार्थोंका स्वामी वही

चन्द्ररूप शिवहै सब इंद्रिय औ उनके अधिष्ठातादेव-
ताओं करके भी वह निराकृत अमृतमय शिवअग्राह्य
है अर्थात् इंद्रियआदि करके उसका ज्ञान नहीं होसक्ता
जब वह शिव जीवरूपसे अपने आत्मामें स्थितहोजा-
ताहै तबमृग्य की भांति भेद करनेहारी माया लीन हो-
जातीहै शिवकी यजमानमूर्त्ति हव्य करके देवताओंको
औ कव्यकरके पितरोंका पोषणकरती है वहीमूर्त्ति अ-
ग्निमें आहुतिदेकर वृष्टिकरती है जिससे सब चराचर
जगत्का निर्वाह होताहै ब्रह्मांडके भीतर बाहर व्याप्त
औ सब शरीरोंमें स्थित जल उस शिवकी मूर्त्तिहै नदी
नद समुद्रआदिमें वही शिवकी जलमूर्त्ति स्थितहै औ
सबका जीवन करती है औ चंद्ररूप पार्वतीके हृदयमें
भी वही शिवकी जलमूर्त्ति स्थितहै ब्रह्माण्डों के भीतर
बाहर यज्ञों में औ प्रत्येकजीवों के शरीरमें वह अग्नि
मूर्त्ति शिव स्थित है देवताओं के लिये हव्य औ पित-
रोंके लिये कव्य वही शिवकी अग्निमूर्त्ति पहुंचाती है
इसकारण सब मूर्त्तियों में अग्निमूर्त्ति उत्तम है सब ब्र-
ह्माण्डोंके भीतर बाहर स्थित उनचास भेदोंसे स्थित
सब जीवोंकी प्राणरूप उस शिवकी वायुमूर्त्ति है प्राण
आदि नाग कूर्मआदि औ आवह आदि भेद सब उस
वायुमूर्त्ति शिवके हैं ब्रह्माण्डों के भीतर बाहर औ सब
शरीरों में शिवकी आकाशमूर्त्ति स्थित है सब ब्राह्म-
णोंकी मुख्य देवता औ चराचर जगत्को धारणकरने
हारी शिवकी भूमिमूर्त्तिहै सब स्थावर जंगम जीवों के
शरीर पंचमहाभूत अर्थात् शिवकी पांचमूर्त्तियोंसे बने

हैं पंचभूत चन्द्र सूर्य औ आत्मा ये शिवकी आठमूर्ति हैं आत्मा जिसको यजमान भी कहते हैं वह शिव की आठवींमूर्त्तिहै औ सब शरीरों में स्थितहै दीक्षित ब्राह्मणको भी यजमान अथवा आत्मा कहते हैं कल्याण की इच्छावाले पुरुषों को ये शिव की आठ मूर्त्ति सदा वंदनीय औ पूज्य हैं॥

तेरहवां अध्याय॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी फिर भी आप अष्टमूर्त्ति शिवकी महिमा वर्णनकरैं निरन्तर हमारा आत्मा शिवजीके गुणानुवादको श्रवण करना चाहताहै यह सुनि नन्दी कहने लगे कि हे सनत्कुमारजी अष्टमूर्त्तियों से सब जगत् में व्याप्त श्रीमहेश्वर की महिमा हम वर्णन करते हैं आप श्रवण करैं चराचर जीवों के धारण करनेहारे पृथ्वी रूप शिवको वेद औ शास्त्रों के जाननेहारे मुनि लोग शर्व कहते हैं शर्व की भार्या विकेशी औ पुत्र अंगारकहै जलमूर्त्ति शिव को भव कहते हैं उनकी पत्नी उमा औ पुत्र शुक्रहै अग्निमूर्त्ति शिवकानाम पशुपतिहै उनकी भार्याका नाम स्वाहा औ पुत्र का नाम षण्मुख अर्थात् कार्त्तिकेय है पवनात्मा शिवका नाम ईशानहै उनकी पत्नी शिवा औ पुत्र मनोजव नामक है आकाश रूप शिवको भीम कहते हैं उनकी भार्या दशदिशा औ पुत्रसर्ग है सूर्यमूर्त्ति सदाशिव को देवता लोग रुद्र कहते हैं उनकी भार्या सुवर्चला औ पुत्र शनैश्चर है सोममूर्त्ति महेश्वरको म-

हादेव कहते हैं उनकी पत्नी रोहिणी औ पुत्र बुध है य-
जमान रूप महादेवजीको उग्र कहतेहैं औ कोई ईशान
भी कहतेहैं उन के मत में पवनमूर्त्ति शिव की उग्र सं-
ज्ञाहै यजमानमूर्त्ति उग्र नाम सदाशिव की पत्नी दीक्षा
औ पुत्र सन्तान नामक है सब जीवों के शरीरों में जो
कठिनसा पार्थिव भाग है वह शर्व का अंश है द्रवरूप
जल भाग भव का अंश है तेजोरूप सब के शरीर में
अग्नि का भागहै वह पशुपति का अंशहै प्राण आदि
वायुभाग ईशान का अंशहै सब देहों में सुषिर अर्थात्
छिद्र रूप आकाश का भाग भीम का अंश है सब के
नेत्र आदिकों में जो तेज सूर्य का भाग है वह रुद्र का
अंश है सब का चंद्ररूप मन महादेव का अंश है सब
का आत्मा यजमान रूप उग्र नामक मूर्त्ति का अंश है
चौदह योनियों में जीव कहीं उत्पन्न होय परंतु उस के
शरीरमें शिवकी अष्टमूर्त्ति अवश्य रहेंगी शरीरमें सात
मूर्त्ति हैं औ आठवीं यजमान नाममूर्त्ति सबका आत्मा
है हे सनत्कुमारजी जो अपना कल्याण चाहते हो तो
सर्व्व लोकात्मक अष्टमूर्त्ति परमेश्वर को सब प्रकार से
भजो किसी जीवपर भी तुम दया करोगे तो वही शिव
का आराधन होगा किसी जीव को क्लेश दोगे तो वह
क्लेश सर्वव्यापी शिव को होगा किसी जीव की अवज्ञा
करोगे वह शिवही की अवज्ञा अर्थात् अनादर होगा
किसी जीवको अभयदोगे वह शिव का आराधनहोगा
सब को अभय देना औ सब के ऊपर उपकार करना
यह सब पूजनों में उत्तम शिव पूजन है इस कारण हे

सनत्कुमार जी तुमभी शिव जी की प्रसन्नता के अर्थ सब जीवों को अभय दान करो औ सब के ऊपर उपकार क्रिया करो इस से उत्तम परमेश्वर के प्रसन्न करने का कोई उपाय नहीं है॥

चौदहवां अध्याय॥

सनत्कुमार जी कहते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी आप हमको परमपवित्र औ कल्याणदायक पंचब्रह्मोंका वर्णन विस्तारसे श्रवण करावें यह सनत्कुमारजी का वचन सुन नन्दी कहने लगे कि हे सनत्कुमार पंचब्रह्म शिव काही स्वरूप हैं अब हम आपको उनका तत्त्व बताते हैं सब लोकोंका सिरजनेहारा पालन करनेहारा औ संहार करनेवाला वह पंचब्रह्मरूप शिव है सब जगत् का उपादान कारण औ निमित्त कारण वह शिवहै उसकी पंचब्रह्म नामक पांच मूर्त्ति हैं शिवकी पहिली मूर्त्ति क्षेत्रज्ञहै जिसको ईशान कहते हैं जो सब प्रकृति वर्गका भोग करताहै दूसरी मूर्त्ति प्रकृति है जिसका नाम तत्पुरुषहै वह परमात्मा की गुहाहै तीसरी मूर्त्ति बुद्धि है जिसके धर्म आदि आठ अंगहैं उसको अघोर कहते हैं चौथी मूर्त्ति अहंकारहै जो सब जगत् में व्याप्त है उस का नाम वामदेवहै पांचवीं शिव की मूर्त्ति मनस्तत्त्व है जो सब शरीरों में स्थित है उसका नाम सद्योजात है श्रोत्र इन्द्रियरूपसे ईशान सबके देहों में स्थितहै त्वक् इंद्रियरूप तत्पुरुषहै चक्षु इंद्रियरूप अघोर हैं रसना इंद्रियरूप वामदेव हैं औ घ्राण इन्द्रियरूप से सब जी-

वोंके शरीर में सद्योजात विराजमान हैं इसीभांति सब प्राणियों के देहों में वाक् इन्द्रिय ईशान पाणि इन्द्रिय तत्पुरुष पादइन्द्रिय अघोर पायुइन्द्रिय वामदेव औ उपस्थइंद्रिय रूपसे सबके देहों में सद्योजात स्थित हैं औ वेद शास्त्र जाननेहारे विद्वान् यह भी कहते हैं कि शब्द तन्मात्रा रूप ईशानहैं जिनसे आकाश उत्पन्न हुआहै स्पर्श तन्मात्रा रूप तत्पुरुषहैं जो पवन के उत्पन्न करनेहारेहैं रूपतन्मात्रा स्वरूप अघोरहैं जिनसे अग्नि उत्पन्न हुआहै रस तन्मात्रा रूप वामदेव जलके सिरजनेहारे हैं गंध तन्मात्रारूप सद्योजातहैं जिनने पृथ्वीको रचाहै आकाश रूप बड़े विस्तारसे उत्पन्नभये शिवको ईशान कहते हैं सब जगत् में व्याप्त पवनरूप परमेश्वर को तत्पुरुष कहते हैं वेद वेत्ताओं के पूज्य अग्नि रूप शिवको अघोर कहते हैं सब जगत् के जीवन जल रूप महेश्वरको वामदेव कहते हैं चराचर संसारको धारण करनेहारे भूमिरूप शिवका नाम सद्योजात है सब स्थावर जंगमरूप जगत् पंचब्रह्म स्वरूप है तत्त्ववेत्ता मुनि कहते हैं कि यह शिवका विलास है जगत् में जो पच्चीस तत्त्वोंका प्रपंच देखपड़ता है यह सब पंचब्रह्म रूप शिवहै इसकारण कल्याणकी इच्छावाले पुरुषोंको सदा वह शिवही पूजनीय औ चिन्तनीय है ॥

पंद्रहवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी आप सर्वज्ञ हैं इसकारण और भी शिवजीका प्रभाव आप

वर्णन करें सनत्कुमारजीका वचन सुन नन्दी कहते
कि हे सनतकुमार अनेक मुनियों ने अनेक प्रकारों
शिव माहात्म्य वर्णन कियाहै वह हम आपको सुना
हैं एकाग्रचित्त होकर श्रवणकरो कोई सत् कोई अस
औ कोई मुनि उस शिवको सत् असत्का पति कहते
भूतों के भाव आदि विकारसे वह शिव व्यक्त औ स
कहाता है औ भूतभाव विकारके बिना उसीको अव्य
क्त औ असत् कहते हैं परंतु सत् औ असत् शिवकेह
रूप हैं उससे भिन्न नहीं औ इनदोनों का पतिभी शि
वही है इसकारण वह सदा सदसत्पति भी कहाता है
कोई मुनि शिवको क्षर अक्षर औ क्षर अक्षरसे पर क
हते हैं अव्यक्त को अक्षर औ व्यक्तको क्षर कहते हैं ये
दोनों रूपभी शिवके हैं औ इनसे पर होने करके उस
महेश्वरको तत्त्व वेत्ता मुनि क्षर अक्षर से पर कहते हैं
इसकारण सब जीवों में व्याप्त जो शिवको स्मरण क
रताहै वह मुक्त होताहै कोई आचार्य परमकारण शिव
को समष्टिव्यष्टि रूप औ समष्टिव्यष्टि का कारण भी
कहते हैं योगशास्त्र के ज्ञाता मुनि अव्यक्त को समष्टि
औ व्यक्तको व्यष्टि कहते हैं औ इनदोनोंका कारण भी
शिवही है इसकारण समष्टि आदिभी शिवकेही रूपहैं
कोई महात्मा क्षेत्र औ क्षेत्रज्ञ रूप से शिवको कहते हैं
चौबीस तत्त्वोंको क्षेत्र कहते हैं औ उनका भोग करने
हारा पुरुष क्षेत्रज्ञहै शिवसे भिन्न कोई पदार्थ जगत् में
नहीं है अपरब्रह्म अर्थात् शब्दब्रह्म औ परब्रह्म वही
अनाद्यंत महादेव है, भूत, इन्द्रिय, अन्तःकरण आदि

का शब्द आदि विषयात्मक अपरब्रह्म है औ सच्चिदानंद स्वरूप परब्रह्म है वे दोनों ब्रह्म शिव केही रूप हैं कोई शिवको विद्या अविद्या रूप कहते हैं लोकों का धाता औ विधाता वही आदिदेव महेश्वर है उसको विद्या कहते हैं औ संपूर्ण प्रपंच अविद्या है भ्रांति विद्या औ पर ये भी शिव के रूप कोई आगमके जाननेहारे योगी कहते हैं बहुत प्रकारके अर्थों में विज्ञानका नाम भ्रान्ति है सब को आत्मरूप से जानना विद्या है औ विकल्प रहित तत्त्व को पर कहते हैं वह पर तत्त्व रूप शिव सर्वत्र व्याप्त है और कुछनहीं व्यक्त अव्यक्त औ ज्ञ ये तीन नाम कोई शिव के कहते हैं तेईस तत्त्वों का नाम व्यक्त है प्रकृति को अव्यक्त कहते हैं औ ज्ञ शब्द पुरुष का वाचक है जो सब गुणों का भोग करता है ये तीनों शिव के रूपहैं इसकारण जगत्में शिव से भिन्न कोई पदार्थ नहीं ॥

सोलहवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहतेहैं कि हे नन्दिकेश्वरजी आप और भी वर्णन करैं कि मुनि लोग शिव के क्या क्या नाम धरते हैं आप की अमृत रूप वाणी को पान करते २ मेरा मन नहीं भरता यह सुन नंदीने कहा कि हे ब्रह्मपुत्र फिरभी हम वर्णन करते हैं जो शिव के नाम मुनि कहते हैं कोई २ वेद समुद्र के पारगामी ऋषि क्षेत्रज्ञ प्रकृति अव्यक्त औ कालात्मा उस महेश्वर को कहते हैं क्षेत्रज्ञ पुरुष को कहते हैं प्रकृति प्रधान का नाम है

प्रकृति के सब विकार व्यक्त कहाते हैं औ प्रकृति तथा व्यक्त के विस्तारका मुख्य कारण काल है ये चारों परमेश्वरके रूपहैं कोई आचार्य हिरण्यगर्भ, पुरुष, प्रधान औ व्यक्त ये चार रूप परमेश्वरके बताते हैं इस जगत्का कर्त्ता हिरण्यगर्भ अर्थात् ब्रह्मा है भोक्ता पुरुष अर्थात् विष्णु मुख्यकारण प्रधान औ सब विकार व्यक्तहैं ये चारों औ बुद्धि आदि चारों शिवके रूप हैं कोई शिवको पिंडस्वरूप औ जातिस्वरूप कहते हैं चराचर जगत् के शरीर पिंड कहाते हैं औ जाति शब्द उनके रूपोंका वाचक है यथा मनुष्यजाति पशुजाति इत्यादि कोई शिवको विराट् [illegible] के विराटहैं औ लोकक [illegible] शिव को सूत्ररूप कहते हैं क्योंकि संपूर्ण लोक मणियों की भांति उसमें प्रोत अर्थात् पिरोये हुये हैं कोई २ महात्मा स्वयंज्योति औ स्वयंवेद्य शिवको अंतर्यामी औ पर कहतेहैं सब जीवोंके शरीर में वर्त्तमान है इस कारण अंतर्यामी औ सबसे उत्तम है इस निमित्त पर कहाता है प्राज्ञ, तैजस औ विश्व ये तीनों रूप भी शिव के हैं इनकोही विराट् हिरण्यगर्भ औ अव्याकृत कहते हैं औ सुषुप्ति स्वप्न तथा जाग्रत् ये तीनों अवस्थाभी इनकी वाचक हैं तीनों अवस्थामें वर्त्तमान उस तुरीय रूप शिवके हिरण्यगर्भ पुरुष औ काल ये तीनों रूप जगत् की सृष्टि स्थिति औ संहार करते हैं रुद्र, विष्णु औ ब्रह्मा ये तीनों अवस्था शिवकीहैं इनकाही आराधन करके जीव मुक्ति पाते हैं कर्त्ता, क्रिया, कार्य्य औ

कारण ये चारों भी शिवके रूप हैं प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय औ प्रमिति येभी शिवके रूप हैं ईश्वर, अव्याकृत प्राण, विराट्, भूत, इन्द्रिय औ आत्मा ये सब शिव के ही विकार हैं जैसे समुद्र का तरंग ईश्वर जगत्‌का निमित्त कारणहै अव्याकृत प्रधान को कहते हैं प्राण हिरण्यगर्भ का नाम है बिराट् लोक का वाचकहै महाभूत ही भूत कहाते हैं औ कार्य इन्द्रिय हैं परमात्मा शिवसे भिन्न कोई नहीं है शिव से पच्चीस तत्त्व उत्पन्न भये हैं जिसभांति जलसे तरङ्ग उत्पन्न होते हैं परंतु शिवतत्त्व पच्चीस तत्त्वोंसेपर है तत्त्व शिवसे भिन्न नहीं जैसे कटक कुंडल आदि सुवर्ण से भिन्न नहीं हो सकते सदाशिव आदि तत्त्वभी शिवतत्त्व से ही उत्पन्न भये हैं माया, विद्या, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति औ क्रियामयी भी शिव से उत्पन्न भई हैं जिस प्रकार सूर्यसे किरण हैं सनत्कुमार जो सब प्रकारसे कल्याण चाहते हो तो सर्व्वात्मा औ सर्वाश्रय शिवको भजो उसके बिना जगत् में कोई दूसरी वस्तु नहीं है ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी पूछते हैं कि हे सवगणोंके स्वामी नंदिकेश्वरजी शिवजी शरीरी क्योंकरभये रुद्र कैसे हैं सर्वात्मा शिवजी किसभांतिहैं पाशुपतव्रत क्योंकरहै औ देवताओंने शिवजीको किसविधि सुना औ देखा यहआप वर्णन करैं आपके वचनामृत सुनने से मुझे तृप्ति नहीं होती है यह सनत्कुमारजी का प्रश्न सुन प्रसन्न हो नंदी

कहने लगे कि हे सनत्कुमार जी अव्यक्त अर्थात् पर-मात्मासे स्थाणु अर्थात् जगत् रूप मंडपके स्तम्भ औ मङ्गलमूर्त्ति शिवप्रकट भये उनने अपने मुख से उत्पन्न भये ब्रह्माजीको सम्मुख खड़े देखा औ जगत् रचनेकी आज्ञादी उसने भी परमेश्वरकी आज्ञापाय सब जगत् रचा वर्ण औ आश्रमोंकी व्यवस्थाकरी यज्ञकेलिये सोम उत्पन्न किया सोमनाम उमा सहित रुद्रकाहै सोमसे चरु, अग्नि, यज्ञ, इन्द्र औ विष्णु उत्पन्नभये इसकारण सब जगत सोमरूपहै सबदेवताओंने रुद्राध्यायसे रुद्र की स्तुति करी रुद्र भी सब देवताओं के ज्ञान को हर उन के मध्यमें स्थित हुये तब देवता मूढ हो उनसे पूछनेलगे कि तुम कौन हो तब रुद्रने कहा कि हे देवताओ मैं एक पुराण पुरुष हूं पूर्वकाल में मैंही था अब मैं हीं हूं औ आगेभी मैंहीं हूंगा मेरे बिना इस जगतमें कोई भी नहींहै नित्य, अनित्य, अनघ, ब्रह्म, ब्रह्मा का पति दिशा, विदिशा, प्रकृति, पुरुष, त्रिष्टुप, अनुष्टुप, जगती आदि छन्द, सत्य, सर्वगत, शांत, त्रेताग्नि, गौरव, गुरु पृथ्वी, गह्वर, गहन, गोचर, सब तत्त्वों में ज्येष्ठ, समुद्र जल, तेज, वेदी अर्थात् परिष्कृत यज्ञभूमि, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वण वेद, आकाश, इतिहास पुराणादि, कल्प, कल्पना, अक्षर, क्षर, क्षांति, क्षमा, शांति सब वेदोंमें गुप्त, पुष्कर, पवित्र, अंत मध्य बहिर्गत, पीछे आगे, अन्धकार, प्रकाश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, बुद्धि अहंकार, तन्मात्रा, इंद्रिय आदि सब पदार्थ मैं हीं हूं इस भांति सर्वत्र जो पुरुष मुझेही जाने वह सर्ववेत्ता

कहाता है सर्वात्मा परमेश्वर मैं हूं वाणी को वेदों कर-
के सब ब्राह्मण औ हविको ब्राह्मण्यकरके आयुषकर-
के आयुष को सत्यसे सत्य को धर्म करके धर्म को औ
अपने तेज से सब को मैंही तर्पित करताहूं इतनाकह
शिवजी वहांही अंतर्द्धान भये तब तो विष्णु आदि दे-
वता परम कारण रुद्र को न देख उनका ध्यान करने
लगे पीछे इन्द्रादि सब देवता औ मुनि ऊपरको भुजा
उठाय शिवकी स्तुति करने लगे॥

अठारहवां अध्याय॥

देवाऊचुः॥यएषभगवान्रुद्रो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरः॥
स्कंदश्चापितथाचेंद्रो भुवनानिचतुर्दश॥ अश्विनौग्रह
ताराश्चनक्षत्राणिचखन्दिशः १ भूतानिचतथासूर्यः सो
मश्चाष्टौग्रहास्तथा॥ प्राणःकालोयमोमृत्युरमृतःपरमे
श्वरः २ भूतंभव्यंभविष्यञ्च वर्त्तमानंमहेश्वरः॥ वि
श्वंकृत्स्नंजगत्सर्व्वं सत्यन्तस्मैनमोनमः ३ त्वमादौच
तथाभूतो भूर्भुवःस्वस्तथैवच॥ अंतेत्वंविश्वरूपोऽसि
शीर्षंतुजगतःसदा ४ ब्रह्मैकस्त्वंद्वित्रिधार्थमधश्चत्वंसु
रेश्वर॥ शांतिश्चत्वंतथापुष्टिस्तुष्टिश्चाप्यहुतंहुतम् ५
विश्वंचैवतथाविश्वंदत्तंवादत्तमीश्वरम्॥ कृतंचाप्यकृ
तंदेवं परमप्यपरंध्रुवम्॥ परायणंसतांचैव असतामपि
शंकरम् ६ अपामसोमममृताअभूमागन्मज्योतिरविदा
मदेवान्॥ किंनूनमस्मान्कृणवदरातिःकिमुधूर्त्तिरमृतम
र्त्यस्य ७ एतज्जगद्धितंदिव्यमक्षरंसूक्ष्ममव्ययम् ८ प्रा
जापत्यम्पवित्रंच सौम्यमग्राह्यमव्ययम्॥ अग्राह्येगा

पिबाम्यहं वायव्येनसमीरणम् ६ सौम्येनसौम्यंग्रसाति तेजसास्वेनलीलया ॥ तस्मैनमोपसंहर्त्रे महाग्रासायशूलिने १० हृदिस्थादेवताःसर्वा हृदिप्राणेप्रतिष्ठिताः ॥ हृदित्वमसियोनित्यं तिस्रोमात्राःपरस्तुसः ११ शिर [illegible] १२ [illegible] प्यतिष्ठति ॥ अनंतस्तारसूक्ष्मंच शुक्लंवैद्युतमेवच १३ परंब्रह्मसईशान एकोरुद्रःसएवच ॥ भवान्महेश्वरःसाक्षान्महादेवोनसंशयः १४ ऊर्ध्वमुन्नामयत्येवसओंकारः प्रकीर्त्तितः ॥ प्राणान्नवर्तियस्तस्मात्प्रणवःपरिकीर्त्तितः १५ सर्वंव्याप्नोतियस्तस्मात्सर्वव्यापीसनातनः ॥ ब्र [illegible] १६ [illegible] ॥ [illegible] १७ [illegible] तिष्ठति ॥ तस्मात्सूक्ष्मःसमाख्यातो भगवान्नीललोहितः १८ नीलश्चलोहितश्चैव प्रधानपुरुषश्चयः ॥ स्कंदतेऽस्ययतःशुक्रंतथाशुक्रमपैतिच १९ विद्योतयातियस्तस्माद्वैद्युतःपरिगीयते ॥ बृहत्वाद्बृहणत्वाच्च बृहतेचपरापरे २० तस्माद्बृहातियस्माद्धि परंब्रह्मेतिकीर्त्तितम् ॥ अद्वितीयोऽथभगवांस्तुरीयःपरमेश्वरः २१ ईशानमस्यजगतःस्वदृशांचक्षुरीश्वरम् ॥ ईशानमिन्द्रसूः [illegible] २२ [illegible] ॥ [illegible] २३ [illegible] ॥ [illegible] २४ [illegible]

क्रमेणैवयोगृह्णातिमहेश्वरः॥ विसृजत्येषदेवेशो वास
यत्यपिलीलया २५ एषोहिदेवःप्रदिशोऽनुसर्वाः पूर्वोहि
जातःसउगर्भेअंतः॥ सएवजातःसजनिष्यमाणःप्रत्य
ङ्मुखस्तिष्ठतिसर्वतोमुखः २६ उपासितव्यंयत्नेनतदे
तत्सद्भिरव्ययम् ॥ यतोवाचोनिवर्त्ततेअप्राप्यमनसास
ह २७ तदग्रहणमेवेहयद्वागवदतियत्नतः॥ अपरञ्चपरं
वेत्तिपरायणमितिस्वयम् २८ वदन्तिवाचःसर्वज्ञंशंकरं
नीललोहितम्॥ एषसर्वोनमस्तस्मै पुरुषःपिङ्गलःशि
वः २९ सएषसमहारुद्रो विश्वंभूतंभविष्यति॥ भुवनं
बहुधाजातं जायमानमितस्ततः ३० हिरण्यबाहुर्भग
वान् हिरण्यपतिरीश्वरः॥ अम्बिकापतिरीशानोहेमरे
ताव्रषध्वजः ३१ उमापतिर्विरूपाक्षो विश्वसृग्विश्ववा
हनः॥ ब्रह्माणंविदधेयोऽसौपुत्रमग्रेसनातनम् ३२ प्र
हिणोतिसमतस्यैव ज्ञानमात्मप्रकाशकम्॥ तमेकंपुरुषं
रुद्रं पुरुहूतंपुरुष्टुतम् ३३ बालाग्रमात्रंहृदयस्यमध्येवि
श्वंदेवंवह्निरूपंवरेण्यम्॥ तमात्मस्थंयेऽनुपश्यंतिधीरा
स्तेषांशांतिःशाश्वतीनेतरेषाम् ३४ महतोयोमहीयां
श्च अणोरप्यणुरव्ययः॥ गुहायांनिहितश्चात्माजंतोर
स्यमहेश्वरः ३५ वेश्मभूतोऽस्यविश्वस्यकमलस्थोहृदि
स्वयम्॥ गह्वरंगहनंतत्स्थंतस्यांतश्चाध्वंतःस्थितम्॥
३६ तत्रापिदह्रंगगनमोंकारंपरमेश्वरम्॥ बालाग्रमात्रं
तन्मध्ये ऋतंपरमकारणम् ३७ सत्यंब्रह्ममहादेवं पुरुषं
कृष्णपिङ्गलम्॥ ऊर्ध्वरेतसमीशानंविरूपाक्षमजोद्भव
म् ३८ अधितिष्ठतियोनियोऽयोनिंवाचैकईश्वरः॥ दे
हंपञ्चविधंयेन तमीशानम्पुरातनम् ३९ प्राणेष्वन्तर्म

नसोलिङ्गमाहुर्यस्मिन्नक्रोधोयाचतृष्णाक्षमाच॥ तृष्णां
छित्त्वाहेतु जालस्यमूलंबुद्धयाचित्तंस्थापयित्वाचरुद्रे ४०
एकन्तमाहुर्वैरुद्रंशाश्वतम्परमेश्वरम्॥ परात्परतरंवा
पिपरात्परतरंध्रुवम्॥ ब्रह्मणोजनकंविष्णोर्वह्नेर्वायोःसदा
शिवम् ४१॥ इति॥
हे सनत्कुमारजी इस भांति सब देवता जब स्तुति
कर चुके तब ब्रह्माजी ने कहा कि हे देवताओ शिवजी
की शीघ्र प्रसन्नता के लिये हम आप को पाशुपतव्रत
का उपदेश करते हैं जिसके करने से शिवजी आप के
ऊपर बहुत शीघ्र अनुग्रह करैंगे प्रथम तो पूर्वोक्त री-
तिसे अपने हृदय कमल में शिवका ध्यान करे अग्नि
वीज से भूतशुद्धि की रीति करके प्रत्येक अंगको शुद्ध
कर पांच भूतोंको शब्दादि गुणोंके क्रमसे एक दूसरे में
लीन करै पांचभूत क्रमसे पंचमात्र चतुर्मात्र त्रिमात्र
द्विमात्र औ एकमात्र है औ वह निर्गुणरूप अमात्र है
जो द्वादशांत में स्थित है इसविधि से भूतों का संहार
कर फिर उत्पन्न करै औ अपने अपने स्थानों में स्था-
पित कर अमृतरूपहो पाशुपतव्रतकरै प्रथम संकल्प
करै कि यह पाशुपतव्रत मैं करताहूं पीछे उपवासकर
पवित्रहो स्नानकर शुक्ल वस्त्र शुक्ल यज्ञोपवीत औ शुक्ल
माला आदिसे शोभितहो वेदत्रयोक्त मंत्रोंसे अग्निस्था-
पनकर हवन करै हवन के मंत्र यहैं॥ वायवःपंचशुध्य
तां वाङ्मनश्चरणादयः॥ श्रोत्रजिह्वाततःप्राणंततोबु
द्धिस्तथैवच १ शिरःपाणिस्तथापार्श्वेपृष्ठोदरमनंतरम्॥
जंघेशिश्नमुपस्थंचपायुमेढ्रन्तथैवच २ त्वचंमांसंचरु

धिरं मेदोऽस्थीनितथैवच ॥ शब्दस्पर्शौचरूपंचरसोगंधस्तथैवच ३ भूतानिचैवशुध्यंतांदेहमेदादयस्तथा ॥ अन्नंप्राणंमनोज्ञानंशुध्यंतांवैशिवेच्छया ४ ॥ घृत समिधा औ चरुकरके इनमंत्रोंसे हवनकर रुद्राग्निका विसर्जनकरै औ भस्म लेकर अग्निरिति भस्म इत्यादि मंत्रोंसे अभिमंत्रणकरे सब अंगों में धारै यह पाशुपतव्रत पशुपाशका दूर करनेहारा है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य औ विशेष करके संन्यासियोंको यह व्रत करना चाहिये इसविधिसे वानप्रस्थ गृहस्थ औ ब्रह्मचारी मुक्तिपाते हैं किसी अग्निहोत्रकी भस्मलेकर अभिमंत्रित कर धारै तो पातक उपपातक निवृत्त होजाते हैं अग्निकावीर्य भस्महै भस्मयुक्त अग्नि वीर्यवान् होताहै जो पुरुष भस्म से स्नानकरै भस्ममें शयनकरै औ जितेन्द्रिय रहै वह सब पापोंसे छूट शिवसायुज्यको जाताहै विभूति धारनेहारे मनुष्यका सदा आदर औ पूजा करै कभी उसको रे तू आदि कठोर शब्द न कहै इस अपराध को शिव जी क्षमा नहीं करते शिवजी ने यह कहा है कि भस्म धारणकरनेहारा हमारा पुत्रहीहै औ गणेशजी के तुल्य प्रिय है इसकारण भस्म धारण करनेहारे का कभी अप्रिय न करे अज्ञानी भी भस्मका त्रिपुण्डधार जो कर्म करै वह सफल होताहै औ भस्म धारण बिना ज्ञानी के भी कर्म व्यर्थ होते हैं इसकारण सब सत्कर्मोंमें भस्मका त्रिपुण्ड अवश्य धारण करना चाहिये नंदिकेश्वर कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी इतना सब देवताओंके प्रति उपदेशकर ब्रह्माजी भस्मधा-

रणा करते भये औ सब देवताओं को भी विभूति धारणा कराई तब श्रीमहादेवजी पार्वती औ गणों सहित देवताओं पर अनुग्रह करने के अर्थ वहां प्रकट भये सब देवताओं ने शिवजी को देख प्रसन्न हो रुद्राध्याय से स्तुतिकरी शिवजी ने प्रसन्न हो कृपादृष्टि से देवताओं की ओर देख कहा कि हम तुमसे प्रसन्न हैं वरमांगो॥

उन्नीसवां अध्याय॥

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी शिवजीकी अमृतमय वाणी सुन प्रसन्नहो प्रणामकर सब देवता पूछते भये कि हे महाराज आपकी पूजा किसविधि कहां औ किसरूप करके करनी चाहिये औ पूजा में किस २ को अधिकार है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री औ कुण्ड गोलक आदि वर्णसंकर किस भांति आपका यजन करें यह आप सब जगत्के हितके अर्थ हमको उपदेशकरें यह देवताओंका वचन सुन औ उनकी भक्ति देख सूर्य मंडल में स्थित श्रीमहादेवजी मेघगर्जन की भांति गंभीर शब्दसे कहतेभये उस अवसरमें देवताओंने शिवजीका रूपदेखा कि पार्वतीजी सहित सूर्य मण्डल में विराज रहे हैं कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान जिनके आठ भुजा चार मुख बारह नेत्र जटा औ मुकुट धारे संपूर्ण रत्नोंके भूषणोंसे भूषित रक्त वस्त्र रक्त चंदन औ रक्त पुष्पोंकी माला से अलंकृतहैं जिनका अति प्रसन्न पूर्व मुख पीतवर्ण औ तत्पुरुषरूप है दक्षिणमुख नील वर्ण बड़ी २ दंष्ट्राओं करके भयंकर रक्तवर्ण केशश्मश्रु

अर्थात् दाढ़ों करके युक्त औ अघोर रूप है उत्तर का मुख विद्रुमवर्ण अतिप्रसन्न वर देनेहारा वामदेव रूप है पश्चिम मुख गोदुग्ध की भांति शुक्लवर्ण मोतियों के हार औ तिलकसे भूषित सद्योजात रूपहै उनके चारों ओर चार २ मुखों करके युक्त आदित्य भास्कर भानु औ रवि हाथ जोड़े खड़े हैं औ इन के समीप क्रम से विस्तारा उत्तरा बोधनी औ आप्यायनी ये चार शक्ति एक २ मुख औ चार २ भुजाओं करके युक्त सब भूषणों से भूषित स्थितहैं जिनकी दाहिनी ओर ब्रह्मा औ बाई ओर विष्णु विराज रहे हैं धर्मज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य औ दीप्ता आदि नौ शक्तियां करकेयुक्त श्वेत कमल के ऊपर बैठे हैं जिन में दीप्ता दीप की शिखाके तुल्य सूक्ष्मा विद्युत् अर्थात् बिजलीके समान जया अग्नि की ज्वालाके सदृश प्रभा सुवर्णके तुल्य विभूति विद्रुम अर्थात् मूंगे के सम विमला कमल के तुल्य अमोघा कमलकी कर्णिकाके समानवर्ण विद्युत् अनेकवर्णों करके युक्त औ मध्यमें चार मुख औ चार वर्णोंकरके युक्त सर्वतोमुखी है चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र औ शनिश्चर शिवजीके चारों ओर स्थितहैं सूर्य साक्षात् शिव औ चन्द्रमा पार्वती औ बाकी के ग्रह पंच महाभूत हैं जिन से चराचर जगत् व्याप्तहै ऐसा शिवजी का रूप देख सब मुनि हाथ जोड़ भक्ति से स्तुति करनेलगे ॥

॥ ऋषयऊचुः ॥ नमः शिवायरुद्रायकद्रुद्रायप्रचेतसे ॥ मीढुष्टमायशर्वाय शिपिविष्टायरंहसे १ प्रभूतेविमले सारे आधारेपरमेसुखे ॥ नवशक्त्याटतंदेवं पद्मस्थंभा

स्करंप्रभुम् २ आदित्यंभास्करंभानुंरविंदेवंदिवाकरम्॥
उमांप्रभांतथाप्रज्ञां संध्यांसावित्रिमेवच ३ विस्तारामु
त्तमांदेवीं बोधनीम्प्रणमाम्यहम् ॥ आप्यायनींचवरदां
ब्रह्माणंकेशवंहरम् ४ सोमादिवृन्दंचयथाक्रमेण संपूज्य
मन्त्रैर्विहितक्रमेण॥ स्मरामिदेवंरविमण्डलस्थं सदाशि
वंशंकरमादिदेवम् ५ इन्द्रादिदेवांश्चतथेश्वरांश्च नारा
यणंपद्मजमादिदेवम् ॥ प्रागाद्यधोर्ध्वेचयथाक्रमेणवज्रा
दिपद्मंचतथास्मरामि ६ सिंदूरवर्णायसमण्डलाय सुव
र्णवज्राभरणायतुभ्यम् ॥ पद्माभनेत्रायसपंकजाय ब्रह्मे
न्द्रनारायणकारणाय ७ रथंचसप्ताश्वमनूरुवीरं गणंत
थासप्तविधंक्रमेण ॥ ऋतुप्रवाहेणचवालखिल्यां स्मरा
मिमंदेहगणंत्रयंच ८ हुत्वातिलाद्यैर्विविधैस्तथाग्नौ पु
नःसमाप्यैवतथैवसर्वम्॥ उद्वास्यहृत्पंकजमध्यसंस्थं स्म
रामिबिम्बंतवदेवदेव ९ स्मरामिबिम्बानियथाक्रमेण र
क्तानिपद्मामललोचनानि॥ पद्मंचसव्येवरदंचवामे करे
नभाभयदिनगणानि १० [illegible] वि
शुभ्रं [illegible] मंदे
हरत्नोगणभर्त्सनंच ११ सोमंसितंभूमिजमग्निवर्णं चा
मीकराभंबुधमिन्दुसूनुम् ॥ बृहस्पतिंकांचनसन्निकाशं
शुक्रंसितंकृष्णतरंचमन्दम् १२ स्मरामिसव्यमभयं वा
ममूरुगतंकरम् ॥ सर्वेषामन्दपर्यंतं महादेवंचभास्कर
म् १३ पूर्णेन्दुवर्णेनचपुष्पगंध प्रस्थेनतोयेनशुभेनपूर्ण
म् ॥ पात्रंदढंताम्रमयंप्रकल्प्यदास्येतवार्घ्यंभगवन्प्रसी
द १४ नमःशिवायदेवाय ईश्वरायकपर्दिने ॥ रुद्रायवि
ष्णवेतुभ्यंब्रह्मणेसूर्यमूर्त्तये १५ इति ॥

नन्दी कहते हैं कि सूर्यमण्डल में शिवजीकी पूजा कर जो पुरुष तीनकाल इस उत्तम स्तोत्र को पढ़े वह अवश्य शिवसायुज्यपावै ॥

बीसवां अध्याय ॥

नन्दिकेश्वर जी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी इस भांति मुनियोंसे स्तुति श्रवणकर प्रसन्नहो सूर्य्यमण्डल में स्थित महादेवजी ने कहा कि हमारी पूजाके अधिकारी ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य हैं शूद्रको पूजन का अधिकार नहीं शिवपूजन करनेहारे तीन वर्णोंकी सेवा से शूद्रको भी पूजा फल प्राप्त होता है अथवा स्त्री औ शूद्र ब्राह्मण द्वारा पूजन करावैं तौ भी उत्तम फल को प्राप्त होते हैं क्षत्रिय भी ब्राह्मणों से पूजन करावैं औ दक्षिणादे उनको प्रसन्न करैं तो पूर्णफल पाते हैं इतना कह श्रीशंकर अंतर्द्धान भये औ देवता तथा मुनि भी शिवजी का ध्यान करते औ प्रसन्नहोते अपने २ धाम को गये हे सनत्कुमार जी मन, वचन, कर्म करके धर्म अर्थ, काम औ मोक्ष की प्राप्ति के लिये आदित्य रूप सदाशिव का सदा भक्तिसे अर्चन करना चाहिये इतनी कथा सुन शौनक आदि मुनि पूछतेभये कि हे सूत जी बहुत काल तप करके षडंग वेद औ सांख्ययोगसे भक्तों के हितके लिये शिवजीने जो शास्त्र उद्धार किया है जो वर्णाश्रम धर्मोके समान औ कहीं २ विलक्षण है उस आग्नेयमें शिवजीका पूजा स्नान औ योग आदि किसविधि वर्णनकियेहैं यह आप वर्णनकर हमको अ-

वण करनेकी बहुत इच्छा है यह मुनियोंका वचन सुन सूतजीने कहा कि हे मुनीश्वरो यही बात नन्दीसे सनत्कुमारने भी पूछीथी उनने जो सनत्कुमार के प्रति उपदेश किया वह आपको सुनाते हैं मेरु पर्वत के ऊपर सनत्कुमारजी पूछते हैं कि हे नन्दिकेश्वरजी धर्म, काम [illegible] विधान [illegible] नन्दी कहने लगे कि हे ब्रह्मपुत्र गुरुसे औ शास्त्रसे जैसा हमने जाना है वैसा आप के प्रति कथन करते हैं शिव शास्त्र के आचार्य को गौरव अर्थात् बड़ाई से गुरु कहते हैं [illegible] करैं औ [illegible] वह आचार्य कहाता है कल्याण की इच्छावाला शिव भक्त प्रथम वेदार्थ के तत्त्व को जाननेहार प्रियदर्शन अर्थात् जिस के दर्शन से चित्त प्रसन्न होजाय श्रुति स्मृति; मार्गों में तत्पर लोलता औ चपलता से रहित आचारके पालनमें रत सब समयों में स्थित औ भस्म धारण करनेहारे गुरुको ढूंढे ऐसा गुरु पाय तन, मन, धन से निष्कपटहो इतनी सेवाकरै कि जिसमें वे प्रसन्नहो जायँ क्योंकि गुरुकी प्रसन्नता से पशुपाश बहुत शीघ्र कटजाते हैं गुरुमान्य, पूज्य औ साक्षात् सदाशिव हैं गुरूभी तीनवर्ष पर्यंत ब्राह्मण शिष्यकी परीक्षाकरै जो [illegible] अनेक भांति के [illegible] मको उत्तम काम में लगावै औ कभी क्रोध कर ताड़न

आदि भी करदेवै इतना होतेपर भी जो शिष्य विषाद को प्राप्त न होय औ पहिली भांति सेवामें तत्पररहै वह शिवधर्म्म का अधिकारी होता है शिवभक्त जितेन्द्रिय धर्मनिष्ठ शीत उष्ण आदि के सहनेहारा उद्योगी परोपकारमें निरत गुरु शुश्रूषामें परायण सरल औ मृदु स्वभाव स्वस्थचित्त गुरु के अनुकूल प्रिय बोलनेहारा अहङ्कारसे हीन स्पृहा औ स्पर्द्धासे रहित शौच आचार आदि गुणोंकरके युक्त दम्भ औ मात्सर्य्य से रहित औ श्रुति स्मृति मार्गपर चलनेहारा शिष्य अधिकारी है इसभांति के शिष्य को गुरु भी मन,वचन,कर्म करके तत्त्व शुद्धि के लिये शोधे जो शिष्य शुद्ध विनय करके युक्त मिथ्या औ कटुवचन कभी न बोलै औ गुरु की आज्ञा पालन करै उसपर अवश्य गुरु का अनुग्रह होना चाहिये गुरुभी शास्त्रवेत्ता तपस्वी बुद्धिमान् लोक प्रिय लोकाचार को जाननेहारा औ तत्त्ववेत्ता मोक्ष देनेमें समर्थ होता है सब लक्षणों से सम्पन्न सब शास्त्र जाननेहारा औ सब विधानोंमें कुशल भी गुरु होय परंतु तत्त्ववेत्ता अर्थात् आत्मज्ञानकरके युक्त न होय तो निष्फलहीहै जिसको आत्मज्ञान नहीं है वह शिष्य पर क्योंकर अनुग्रह करसकता है प्रबुद्ध अर्थात् ज्ञानी गुरु आप शुद्ध है औ शिष्य को शुद्ध कर सक्ता है आत्मज्ञानसे हीन गुरु केवल पशुहै औ उसके शिष्य भी सब पशुही हैं इस कारण तत्त्ववेत्ता आप मुक्त है औ शिष्य को मुक्त करसकता है अज्ञानी गुरु अज्ञानी शिष्य का उद्धार किस प्रकार करै क्योंकि एक

शिला दूसरी शिलाको नदीमें नहीं पार करसकती जो नाममात्र के ज्ञानी हैं उन के लिये मुक्ति भी नाममात्र ही है योगी गुरु के दर्शन, स्पर्श औ सम्भाषण से भी सब पाशों के भेदन करनेहारी आज्ञा अर्थात् अनुग्रह शीघ्र होती है अथवा योगमार्ग करके गुरु शिष्य के देह में प्रवेश कर [illegible] [illegible] है [illegible] थवा वैश्य शिष्य को भली भांति परीक्षाकर कर्ण परम्परागत अर्थात् एक गुरुसे दूसरे गुरु को प्राप्त ज्ञान से एक दीपकसे दूसरे दीपककी भांति गुरु चैतन्य करै भुवनाध्वा, कलाध्वा, मन्त्राध्वा, पदाध्वा औ तत्त्वाध्वा वर्णाध्वा ये षडध्व जिसके गुरु की सामर्थ्य औ आज्ञा मात्रसे भेदन होजाय उस गुरु की कृपा से सिद्धि औ मुक्ति मिलती है पृथ्वी आदि पंचभूत भुवनाध्वा है मनबुद्धि अहङ्कार औ अव्यक्त यह कलाध्वा है कर्मेन्द्रिय मन्त्राध्वा शब्द स्पर्श आदिक पदाध्वा ज्ञानेंद्रिय वर्णाध्वा पुरुषसे लेकर ब्रह्मापर्यंत सब तत्त्वोंके प्रकाश करने हारा ईशत्व औ उन्मत्व तत्त्वाध्वा है इस शिवात्मिका तत्त्व शुद्धिको योगी के बिना और कोई नहीं जानसक्ता॥

इकीसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो गंधवर्ण रसआदिकों से भूमिकी परीक्षाकर उसमें सुंदर मंडप रचे औ वितान पुष्प माला आदिसे भूषितकर उसके बीच परमेश्वर

के आवाहन योग्य एक हाथ की वेदीरच उसमें रत्नचूर्णोंकरके श्वेत अथवा रक्त अष्टदल कमलबनावे उसके बाहरशोभा उपशोभा द्वार आदि पंचरंगके रत्नचूर्ण से रचे इसभांति कमलरच उसकी कर्णिकामें शिवजी का आवाहन कर अपनी शक्तिके अनुसार पूजनकरै आठ दलोंमें अणिमाआदि आठसिद्धि स्थितिहैं वैराग्य औ ज्ञान रूप कमल का नालहै धर्म्ममय कंद अर्थात मूल है वामा, ज्येष्ठा, रौद्री, काली, विकरणी बलविकरणी ब-लप्रमथिनी औ सर्व्वभूतदमनी ये आठ शक्ति केसरों में औ नवीं मनोन्मनी शक्ति कर्णिका में, अर्थात् शिव जी के आसन स्थानमें ध्यान करै इन आठ शक्तियोंके साथ वामदेव आदि आठ मूर्त्तियों को मिलाय एक२ मिथुन का न्यास करै औ मनोन्मनी के संग मनोन्मत्त महादेव का योगकर मध्य में न्यास करै सोम सूर्य औ अग्नि के सम्बन्ध से प्रणव रूप औ सूर्य के तुल्य भा-समान तत्पुरुष को पूर्वपत्र में न्यास करै नील वर्ण अ-घोरको दक्षिण पत्र में जपा पुष्पके समान अरुण वर्ण वामदेव को उत्तर दल में गोदुग्ध के समान शुक्लवर्ण सद्योजात को पश्चिमदलमें औ शुद्ध स्फटिकके समा-न ईशानको कर्णिका में न्यास करै फिर 'चन्द्रमण्डल संकाशाय हृदयायनमः' इस मंत्रको अग्निकोण के दल में 'धूमवर्च्चसे शिरसे नमः' इस मंत्र को ईशान दलमें 'रक्ताभायै शिखायैनमः' इसको नैर्ऋत दलमें 'अंजना-भाय कवचायनमः' इसको वायव्यकोण के दलमें 'पिं-गलेभ्यो नेत्रेभ्योनमः' इस मंत्र को ईशान दल में औ

'अग्निशिखाभाय अस्त्रायनमः' इस मंत्र को चारों दिशाओंमें न्यास करे फिर सृष्टि मार्गसे शिव, सदाशिव, महेश्वर, रुद्र, विष्णु औ ब्रह्मा को भावनकरे औ ॥ शिवायरुद्ररूपाय शांत्यतीतायशंभवे ॥ शांतायेशांतदेव्यायनमश्चन्द्रमसेतथा । १ विद्यायविद्याधराय वह्नयेवह्निवर्चसे ॥ कालायेचप्रतिष्ठायै तारकायांतकायच २ निवृत्त्यैधनदेवाय धारायैधारणायच ॥ इन मंत्रों करके पंच महाभूत रूप सदाशिव का ध्यान करे जिन का ईशान मुकुट तत्पुरुषमुख अघोर हृदय वामदेव गुह्य सत् असत् की व्यक्ति के कारण सद्योजात संपूर्ण देह है पंच मुख दश भुजाओं करके युक्त अड़तीस कलारूप शिव का ध्यान करे जिन में आठ कला सद्योजात में तेरह कला वामदेव में आठ अघोर में चार तत्पुरुष में औ पांच कला ईशान में स्थित हैं हंस गायत्री करके ॐ कार रूप प्रकृति सहित जन्म मरण से रहित अकार स्वरूप औ आ ई ऊ ए अर्थात् देवी गणेश सूर्य विष्णु रूप अणुसे अणु औ महत्से महान् ऊर्ध्वरेता सनातन सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष सहस्रहस्त सहस्रचरण चन्द्र औ सूर्य के समान द्वादशान्त भ्रूमध्य तालुमध्य गल औ हृदयमें विराजमान आनन्द औ अमृत स्वरूप कोटि विद्युत् के तुल्य प्रकाशमान श्याम रक्त शक्तित्रयके ऊपर [illegible] तीन [illegible] करके [illegible]
[illegible]
[illegible]
दि आयुधों का पूजन करै फिर उत्तम चरु सिद्ध कर-

आधा शिवजीको निवेदन कर आधे चरु का हवनकरै औ हवन शेष चरु अघोर मंत्रसे अभिमंत्रण कर शिष्य को भोजन करावै शिष्यभी चरुको भक्षण कर आचमन करै औ शुचि होकर तत्पुरुष का यजनकरै औ ईशान मंत्रसे अभिमंत्रणकर पंचगव्य का प्राशन करै वामदेव मंत्र से सर्वांगमें भस्म धारै औ गुरु शिष्यके कर्णोंमें रुद्रगायत्री जपै फिर सूत्रसे वेष्टित पिधान अर्थात् ढँकने करके युक्त दो दो उत्तमवस्त्रोंसे आच्छादित औ सुवर्ण तथा रत्न जिनके बीच में पड़ेहुये ऐसे पांच सुवर्णके कलश स्थापनकरै औ पांच ब्राह्मणों से यथाशक्ति हवन करावै पीछे मंडल के दक्षिण ओर दर्भशय्याके ऊपर गुरु शिष्यको शयन करावै औ शिष्य भी शिवको स्मरण करताहुआ सोवै औ जो स्वप्नदेखै वह गुरुको प्रभात उठ कहै गुरुभी जो उस स्वप्नको दुःस्वप्न समझै तो शान्तिकेलिये अघोरमन्त्र करके घृत की अष्टोत्तरशत आहुति देवै इसभांति अधिवासनके अनंतर शिष्यको स्नान कराय उत्तम वस्त्र भूषणों से भूषित कर पगड़ी बँधवाय मंगल मनाय दुकूल आदि वस्त्रसे उसके नेत्र बांध गुरुमंडल में प्रवेश करावै वहां जाय सुवर्णपुष्पों करके युक्त पुष्पों से शिष्य की अंजलिभर उससे मंडल की प्रदक्षिणा करावै वह भी रुद्राध्याय अथवा प्रणव का उच्चारण करता हुआ तीन प्रदक्षिणाकर ईशान मंत्रसे पुष्पाञ्जलि को मण्डलमें गेरै वह पुष्पांजलि जिस मंत्रपर पड़े वही मंत्र उसको सिद्ध होता है फिर शुद्धजल औ अघोर मन्त्र से अभिमं-

त्रित भस्म लेकर शिष्यको स्पर्श करै औ शिष्यके मस्तकपर हाथधर गंध पुष्प आदिसे गुरु उसका पूजन करै पश्चिमद्वार प्रवेश करनेकेलिये सब वर्णोंको उत्तम है विशेष करके क्षत्रियोंके लिये बहुत श्रेष्ठ है फिर गुरु शिष्य के नेत्रखोल मंडलका दर्शन करावे औ दक्षिणा मूर्त्ति के समीप कुशासनपर बैठाय पंचतत्त्व प्रकार से तत्त्व शुद्धिकरै अहंकार पर्य्यन्त अण्डको निवृत्तिकला करके अहंकारसे प्रकृति पर्यन्त प्रतिष्ठाकला करके प्रकृति से पुरुष तक विद्याकला करके जान उसके ऊपर का मार्ग शिवभक्ति से शुद्धकर शिष्य को तुरीयशिवमें प्राप्तकरै औ योगेश्वर शिवके समर्चनके लिये प्रकृति, पुरुष, ईश्वर, रूपातीत तत्त्व अथवा अहंकारआदि चार तत्त्व के क्रम से शांत्यतीत कलामें स्थित सदाशिवको ईशानमंत्र से होमकरै सद्य आदि चारमंत्रों करके शांतिकला पर्यन्त होमकरै फिर ईशानमंत्रसे परम शिव को अष्टोत्तरशत आहुति देकर ऋत्विजोंसे दिग्देवताओं का होम करावे ईशान दिशा में ईशान मंत्र करके प्रधान याग करै समिधा, घृत, चरु, लाजा, सर्षप, जौ औ तिल इन सात द्रव्योंसे मंत्रके आदिमें प्रणव औ अन्तमें स्वाहा लगाय हवन करै औ ईशानमंत्र से पूर्णाहुति देवै हंसमंत्र सहित प्रणव आदि अघोरमंत्रसे प्रायश्चित्त कियाजाता है जयादिस्विष्ट पर्यंत तीन प्रकारका अग्निकार्य पूर्वोक्त प्रधान होमके साथ युक्तकरै फिर गुरु बीजादि पंचब्रह्ममन्त्रों करके पंचभूत औ ईशान मंत्र करके प्राण अपान का निरोध करै छठे मंत्र

अर्थात् नमोहिरण्यबाहवे इस मंत्र करके आतम प्राण वात कुलाकुल का भेदन करै फिर ब्रह्मा को विष्णु में विष्णुको हर में हरको रुद्र में, रुद्रको ईशान में औ ईशान को शिव में उपसंहार कर फिर सृष्टिक्रम से भव भयहरण रुद्रका चिंतनकरै पीछे शिष्य के जीवको रुद्र में स्थापन कर ताड़न, द्वारदर्शन, दीपन ग्रहण, पूजा सहित बंधन औ अमृतीकरण विधि पूर्वक करावे अघोर मंत्रके आदि में सद्योजात मन्त्र औ अंतमें 'नमो हिरण्यबाहवे' इत्यादि तथा सबके अंतमें फट् यह शब्द लगाकरके पृथिवी आदि पंचभूत प्रकार से संहार मन्त्र होता है सद्योजात आदि में 'नमो हिरण्यबाहवे' अन्तमें औ शिखा तथा फट् अन्तमें लगाने से ताड़न औ तत्त्वों के द्वार दर्शन का मन्त्र होताहै अघोर मन्त्र से सम्पुटित ईशानमन्त्र दीपन का मन्त्र है सद्योजात मन्त्र से पुटित ईशानमन्त्र ग्रहण औ बन्धन का मन्त्र होताहै औ त्र्यम्बक मंत्र अमृतीकरणका मन्त्र है फिर शांत्यतीता, शांति, विद्या, प्रतिष्ठा औ निवृत्ति कला का संक्रमण कर तत्त्व, वर्ण, कला, भुवनमन्त्र औ पद इन षडध्वोंका यथाविधि शोधनकरै पीछे प्रणव औ माया बीज पुटित मंत्रों करके स्तुतिकरै औ इन्हीं मन्त्रों करके पूजा, प्रोक्षण, ताड़न, हरण, संहत का संयोग, विलेप अर्चना, अग्निका गर्भधारण औ जननकरै भानु का अविद्या के लय करने में अधिकार है ईशान मन्त्र के अंतमें मायाबीज लगाने से उद्धार प्रोक्षण औ ताड़न का मंत्र होता है औ फडन्त अघोर मन्त्र करके संहार

होता है यह क्रम योगमार्ग करके प्रति तत्त्वमें है प्राणायाममें जितने काल स्थितरहे तबतक विषुव अर्थात् तत्त्वसंज्ञक योगकरके निवृत्तिसे शिव पर्यंत आत्मा को लेजाय नासाग्रमें दृष्टिसे अथवा द्वादशांतमें ध्यान करनेसे योगियोंका आत्मा समताको प्राप्तहोताहै और स्थानों में नहीं औ सुख दुःख आदि द्वन्द्वों को योगी सहै यह शिवजीका शासनहै इसके अनन्तर वस्त्र औ सूत्र से वेष्टित तीर्थ जलसे पूर्ण रत्नयुक्त सुवर्ण चांदी अथवा ताम्र का कलश लेकर संहिता मन्त्र औ रुद्राध्याय का पाठ करताहुआ कुशा के कूर्च से गुरु शिष्य का अभिषेककरै शिष्य भी शिव औ अग्निके सम्मुख दीक्षा ग्रहणकर नियम करै कि चाहै प्राणजायँ अथवा शिरश्छेदन होजाय परंतु शिवपूजन किये विना भोजन न करूंगा इसभांति दीक्षा ग्रहणकर औ नियमधार तीनकाल अथवा एककाल नित्य शिवपूजाकरै क्योंकि अग्निहोत्र वेदपाठ औ बड़ी २ दक्षिणा के यज्ञ शिव पूजा की एककला अर्थात् सोलहवें भाग के भी तुल्य नहींहैं सदा यज्ञकरै सदा दानदेवै और वायुभक्षण कर तप करै तौभी एकबार किये शिव पूजन के भी फलको नहीं प्राप्तहोता जो पुरुष एककाल दोकाल अथवा तीनकाल शिवपूजन करते हैं वे साक्षात् रुद्रही हैं रुद्रही रुद्रको स्पर्शकरै रुद्रही रुद्रको अर्चनकरै रुद्रही रुद्रको कीर्त्तनकरै और रुद्रही रुद्रको प्राप्त होय हे सनत्कुमार शिवार्चन के लिये यह अधिकारी और विधि का क्रम हमने संक्षेपसे कहा इससे चारों पुरुषार्थ प्राप्तहोतेहैं॥

बाईसवां अध्याय

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी प्रथम सौरस्नानादि कर्म करके शिवस्नान और भस्मस्नान करै पीछे शिवपूजन करै अब हम सौरस्नान की विधि कहते हैं ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐऋतम् ॐब्रह्म इन नौ मंत्रों में छठे मंत्र से मृत्तिका लेकर भक्ति से भूमिपर स्थापन करै दूसरे मंत्र से जल करके अभ्युक्षण कर तीसरेमंत्रसे शोधै चौथे मंत्रसे मृत्तिकाके भागकर प्रथम मन्त्र से शरीर का मल निवृत्त कर छठे मन्त्रसे स्नानकरै फिर स्नानकर शेष मृत्तिका को हाथ में ले छठे मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रण कर वाम हस्त को मूल मन्त्रसे शुद्ध करै छठे मंत्र को दश वारपढ़ दिग्बन्धन करै फिर वाम हस्त से तीर्थको स्पर्श कर दक्षिण हस्त से शरीर को लेपन कर सब मंत्रों से फिर स्नानकरै पीछे शृङ्गपलाश के पत्र अथवा दोने में जल लेकर सूर्यको स्मरण करताहुआ सब सिद्धि के देनेहारे सौर मंत्रों करके अभिषेककरै अब हम सब वेदके सार वाष्कल आदि मंत्र और अंगमन्त्र कहतेहैं ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐऋतम् ॐब्रह्म इस नवाक्षर मंत्र का नाम वाष्कलहै क्षरण न होने से सात लोक अक्षर कहाते हैं औ ऋत तथा ब्रह्मभी अक्षर अर्थात् नाश हीनहैं ॐभूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ॐनमःसूर्यायखखोल्कायनमः यह सूर्य भगवान् का

मूल मंत्र है पूर्वोक्त नवाक्षर मन्त्र औ इस मूल मंत्र से
सूर्यकी पूजाकरै अब हम क्रमसे अंगमंत्र कहतेहैं जिन
के आदि में प्रणव औ मध्य में व्याहृति है ॐभूः ब्रह्म
हृदयाय ॐभुवः विष्णुशिरसे ॐस्वः रुद्र शिखायै
ॐभूर्भुवःस्वः ज्वालामालिनी शिखायै ॐमहः महेश्व
रायकवचाय ॐजनः शिवायनेत्रेभ्यः ॐतपः पातकाय
अस्त्रायफट् ये सात अंगमन्त्र हैं इन सब मन्त्रों करके
ब्राह्मण क्षत्रिय अथवा वैश्य शृंग आदि पात्र अथवा
ताम्र पात्र में कुश औ पुष्प सहित जल लेकर अपना
[illegible]
[illegible]
दि मंत्र से सायंकाल औ आपःपुनन्तु इत्यादि मंत्र से
मध्याह्न के समय आचमन करै फिर छठे मंत्र से शुद्धि
कर वौषडन्त मूल औ नवाक्षर मंत्रका जपकरै सब अं
गुलि अंगुष्ठ मध्यमा अनामिका हस्ततल तर्जनी अंगु
ष्ठ औ मुष्टि करके क्रम से षडङ्ग न्यास करै इसभांति
न्यास करनेसे अति पवित्र देह को नवाक्षरमयकरै औ
यह भावना करै कि मैं साक्षात् सूर्य हूं फिर वाम हस्त
में गंध औ श्वेत सर्षप युक्त जल लेकर मूल औ अ
सहित आठ कुशाके कूर्च से इन मंत्रों करके तथा आ
पोहिष्ठादिमंत्रों करके मार्जनकरै पीछे शेष जलको बां
ओर के नासापुट से आघ्राणकर पाप पुरुष सहित श
रीर का अज्ञान धोय देहमें शिवका भावन करताहुआ
कृष्णवर्ण उस जलको दहिने नासापुट से निकाल शि
ला के ऊपर गेरै यह सब कर्म भावना से करै पीछे स

देवता ऋषि भूत औ पितरों का तर्पण करै प्रातःकाल मध्याह्न औ सायंकालमें व्यापिनी परा औ ज्योत्स्नासंध्या का उपासन करै औ सूर्य भगवान् को अर्घ्य देवै अर्घ्य की विधि यह है कि रक्त चन्दन के जल से भूमि पर एकहाथ का मंडल बनाय पूर्वाभिमुख बैठ सम्मुख ताम्रपात्र धरै उसमें रक्त चंदन सहित एक सेर जलभर के रक्तपुष्प तिल कुशा अक्षत दूर्वा औ अपामार्ग डाले अथवा केवल गोघृतसेही पात्र पूर्णकरै पीछे दोनों जानु भूमि पर टेक पात्रको दोनों हाथों से मस्तक पर्यन्त उठाय सूर्य भगवान्का स्मरण कर मूल मंत्र औ नवाक्षर मंत्र से अर्घ्य देवै दशहजार अश्वमेध यज्ञ करने से जो फल होता है वही इस अर्घ्यदानसे है इसभांति सूर्य भगवान्को अर्घ्यदेकर देवदेव श्री महादेवजी का अर्चनकरै अथवा सूर्य पूजन करके आग्नेय स्नान अर्थात् भस्म स्नान करै यही रीति शिव स्नानकी है केवल मंत्रों में भेदहै सौर स्नान औ शैव स्नानके प्रथम दंतधावन करना चाहिये स्नानकर गणपति वरुण औ गुरुको प्रणामकर पद्मासनसे बैठ तीर्थकी पूजाकरै पीछे तीर्थ जलसे पूर्णपात्र लेकर पादुका अर्थात् खड़ाऊं पहिन शुद्धमार्ग से पूजास्थान में आवै वहां आसन पर बैठ पहिली भांति करन्यास देहन्यास कर अर्घ्यपात्र स्थापनकरै औ विधिसे प्राणायाम भी करै कमल आदि रक्त पुष्प पूजन के लिये अपने दक्षिण भाग में औ जलपात्र वाम भाग में स्थापन करै सूर्य पूजा में ताम्र पात्रोंका विशेष फल है अर्घ्यपात्र ले जलसे धोय अस्त्र

मंत्र करके तीर्थजलसे पूर्णकर उसमें रक्त चंदन आदि सब अर्घ्य द्रव्य डाल पहिली भांति स्थापनकर कवच से अवगुण्ठन करे पीछे उस अर्घ्यपात्र के जलसे सब पूजा द्रव्यों का प्रोक्षणकर सूर्य भगवान्‌की पूजाकरे॥ आदित्योवैतेजऊजोंबलंयशोविवर्द्धति। इत्यादि यजुर्वेद की श्रुति करके सूर्य भगवान्‌को नमस्कार कर आसन देवै प्रभूत विमलसार आराध्य परम औ सुख को आग्नेय आदि कोण औ मध्यमें हृदय करके न्यासकरे औ इसीभांति षडङ्ग का भी न्यास करे पीछे बीज, अंकुर, छिद्र सहित नाल, सूत्र, कंटक, दल, दलों के अग्र कर्णिका औ केसरों सहित श्वेत रक्त अथवा सुवर्ण कमलका ध्यान करे कमल के आठों दलों में दीप्ता, सूक्ष्मा जया, भद्रा, विभूति, बिमला, अघोरा, विकृता औ मध्यमें सर्वतोमुखी को स्थापन करे ये नवों शक्ति सब भूषण पहिने हाथजोड़े सूर्य भगवान्‌की ओर मुख किये खड़ी हैं अथवा हाथों में कमल लिये हैं ऐसा ध्यान करे फिर नवाक्षर वाष्कल मंत्र से सूर्य भगवान्‌का आवाहन सन्निधापन आदि करे औ पद्ममुद्रा दिखावे फिर मूलमंत्र औ नवाक्षर मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, आचमन फिर अर्घ्यस्नान, रक्तचन्दन, रक्तकमल, धूप, दीप, नैवेद्य, मुखवास, तांबूल, आरती आदि उपचारों करके पूजन करे पीछे आग्नेय, ईशान, नैॠत्य, वायव्य पूर्व औ पश्चिम में प्रणव आदि नमोंत नेत्र पर्य्यंत छः अंगमंत्रों से पूजनकर कर्णिकामें सातवें मंत्र अर्थात् अस्त्रमंत्रसे पूजाकरे औ अपने हृदय में सूर्य भगवान् का ध्यान करे

हृदय आदि सब अंग देवता विद्युत्के समान वर्ण औ शांत स्वरूप हैं अस्त्र देवता का रौद्र स्वरूप औ दंष्ट्रा से भयानक मुखहै ये सब देवता दहिने हाथमें वर वाम हस्त में कमल धारे सब भूषणों से भूषित रक्त वस्त्र रक्तपुष्पों की माला औ रक्तचंदनसे अलंकृतहैं औ मंडलके मध्य में सिन्दूरकी भांति अरुणवर्ण दोनों हाथों में कमल धारण किये रक्तवस्त्र माला भूषण औ आलेपनसे शोभित सूर्य भगवान्का ध्यानकरै मंडलके चारों ओर सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु औ केतु का पूजनकरै ये सब ग्रह दो दो नेत्र औ दो दो भुजाओं करके युक्तहैं राहुका केवल ऊपरका शरीरहै शनैश्चर दंष्ट्रायुक्त भयंकर मुखखोले भृकुटी चढ़ाये हाथों में वर औ अभय धारे औ कुटिल दृष्टिहै इनसब ग्रहों के नामों के आदि में प्रणव औ अंत में नमः लगाकर पूजाकरै पीछे सूर्य्य भगवान् के ओर पास ऋषि, देव गंधर्व, नाग, अप्सरा, ग्रामणी, यक्ष औ राक्षस इनसात गणों की पूजाकर सूर्य भगवान् के आगे वेदमय सात अश्वों की पूजाकरै औ वालखिल्य गण तथा निर्माल्य ग्राहीका यजनकरै इन सब देवताओं की आसन आवाहन आदि उपचारों से पूजा करै औ अर्घ्य देवै औ उद्वासन अर्थात् विसर्जन के समय भी अर्घ्यदेवै पीछे एक सहस्र पांचसौ अथवा अष्टोत्तरशत वाष्कल मंत्र का जपकरै दशांश हवनकरै पश्चिम दिशामें वर्तुल कुण्ड एकमेखला करके युक्त बनावै नित्य नैमित्तिक कर्म में एकहस्त प्रमाण कुण्ड उत्तमहोताहै औ मेखलाकी

ऊँचाई औ चौड़ाईका प्रमाण चार अंगुलहै दशअंगुल प्रमाण अश्वत्थपत्रके आकार नाभि बनाय कुण्डमें स्थापनकरै औ पांच अंगुल प्रमाण हस्ती के ओष्ठ के समान आकार योनि अपने सम्मुख स्थापन करै एक अंगुल विस्तारका नालबनावै औ कुंडके चारोंओर दो अंगुल भूमि छोड़कर मेखलाकरै इसप्रकार यत्नसे रमणीय कुण्ड बनाय हवनकरै षष्ठमंत्रसे उल्लेखनकर जलसे कुण्डको प्रोक्षणकर प्रथम मंत्रसे मध्य में आसन कल्पना कर प्रथम मंत्र सेही प्रभावती शक्ति को आसनके ऊपर स्थापनकरै वाष्कल मंत्र करके गन्ध पुष्प आदिकोंसे पूजनकर अग्नि प्रज्वलितकरै उसका नाम सूर्याग्नि है पहिली भांति अग्नि में कमल की भावना कर मध्य में सूर्य भगवान् की पूजा करै पीछे वाष्कल मंत्र करके दश आहुति देवै औ अंगमन्त्रों करके एक एक आहुति देकर जयादिस्विष्ट पर्य्यन्त समिधा का प्रक्षेपकरै यह सब मार्गों में सामान्य विधि है मूलमंत्र का औ वाष्कलमंत्र का यथाशक्ति हवन कर पूर्णाहुति देवै औ पूजा हवन आदि सब सूर्य भगवान् को समर्पणकरै फिर अंगपूजाकर अर्घ्य दे प्रदक्षिणा कर नमस्कार करै औ विसर्जनकर सूर्य्य भगवान् को हृदय में स्थापनकरै इसभांति सूर्य्य पूजनकर धर्म्म अर्थ काम औ मोक्षकी प्राप्ति के लिये शिवपूजन करै यह सूर्य पूजनका विधान हमने संक्षेपसे वर्णन कियाहै इसविधि से जो पुरुष एकवारभी सूर्यपूजन करै वह सब पापोंसे मुक्तहोय औ पुत्र पौत्र धन धान्य मित्र बन्धु वाहन भू-

षण औ तेजसे युक्तहोय चिरकालतक सब भोग भोग कर सूर्य्यलोक में जाता है वहां बहुतकाल सूर्य्य भगवान्के समीप निवासकर फिर भूमिपर धर्मनिष्ठ राजा अथवा वेद वेदांग के जाननेहारा ब्राह्मण होता है औ पूर्व जन्मकी दृढ़ बासनासे फिर सूर्य भगवान्का आराधनकर सदा सूर्यभगवान्के समीप निवासकरताहै॥

तेईसवां अध्याय॥

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी अब हम आप को शिव पूजनका विधान बताते हैं तीनकाल शिव पूजन करे औ शक्ति होय तो अग्नि कार्य अर्थात् हवन भी करै पूर्वरीति से स्नान औ तत्त्वशुद्धि कर पुष्प औ जल लेकर पूजा स्थान में प्रवेश करै वहां आसन पर बैठ तीन प्राणायामकर भूतशुद्धिकी रीतिसे दहन आप्लावन आदि करके गन्ध आदिसे अपने हस्तोंको सुगंधितकर योगशास्त्रमें कहीहुई महायोनि मुद्रारचे औ अव्यक्त बुद्धि अहङ्कार औ तन्मात्राओं से उत्पन्न देह को ज्ञानाग्नि से दग्धकर शिवामृत से पवित्र नयाशरीर उत्पन्न करै ग्रीवा अर्थात् कण्ठ से एक वितस्ति नीचे औ नाभिसे एक वितस्ति प्रमाण ऊपर हृदय है वही विश्वका महत् आयतन अर्थात् बड़ाभारी स्थान है उस हृदयकमल की कर्णिकामें साक्षात् सदाशिव का ध्यानकरै कि जिनके पंचमुख प्रतिमुख में तीन २ नेत्र औ मस्तक पर चंद्रहै औ स्फटिकके समान जिनका वर्ण सब भूषणोंसे भूषित औ पद्मासन बांधे बैठे

हैं जिनका ऊर्ध्वमुख शुक्लवर्ण, पूर्वमुख कुंकुम अर्थात् केसरके समान वर्ण, दक्षिण मुख नीलवर्ण, उत्तर मुख अति अरुणवर्ण औ पश्चिम मुख गोदुग्ध के समान अतिश्वेत है जो शूल, परशु, खड्ग, वज्र औ शक्ति बाईं ओरके पांच हाथोंमें औ पाश, अंकुश, घण्टा, नाग औ बाण दहिनी ओर के पांचहस्तोंमें धारण किये हैं अथवा दोही भुजा ध्यान करै जिनसे वर औ अभय धारण कर रक्खे हैं सम्पूर्ण भूषणों से भूषित विचित्र वस्त्र पहिने पञ्चब्रह्मरूप जिनके अंग इसभांति सदा शिवका ध्यानकरै हे सनत्कुमार पञ्चब्रह्म औ शिवांग पहिले कहे हैं अब शक्तिभूत हृदयादिक सुनो॥ ॐ ईशानःसर्वविद्यानांहृदयायशक्तिबीजायनमः॥ ॐ ईश्वरःसर्वभूतानामसृतायशिरसेनमः॥ ॐ ब्रह्माधिपतयेकालाग्निरूपायशिखायैनमः॥ ॐ ब्रह्मणोऽधिपतयेकालचण्डमारुतायकवचायनमः॥ ॐ ब्रह्मणेबृंहणायज्ञानमूर्त्तयेनेत्रायनमः॥ ॐ शिवायसदाशिवायपाशुपतास्त्रायाप्रतिहतायफट्फट्॥ ॐ सद्योजातायभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायशिवमूर्त्तयेनमः॥ ॐ हंसशिखायविद्यादेहायआत्मस्वरूपाय परापरायशिवायशिवतमाय नमः॥ इनमें प्रथम छः मन्त्र षडंगके हैं सातवां मूर्त्ति मंत्र औ आठवां विद्यामंत्रहै ये सब शिवशास्त्रमें कहे हैं औ बाष्कल मन्त्र सूर्यका मूलमन्त्र औ अंगमन्त्र प्रथम वर्णन कर चुके हैं इसभांति मंत्रमय सदाशिवका अपने हृदयकमलमें यजनकरे नाभिस्थानमें शिवाग्नि वर्णनकर विधिपूर्वक हवनकरे रक्त कमलासन पर त्रि-

राजमान पंचब्रह्ममूर्त्ति सदाशिव को सकलीकरण अर्थात् उनके देहमें षडंगन्यास कर मूलमन्त्र, ब्रह्ममंत्र मूर्त्तिमंत्र औ अंगादि मन्त्रों से हवनकरै मनसेही घृत औ समिधा का हवनकर ज्ञानियों के लिये शिवशास्त्र में कहीहुई चंद्रमण्डल से उत्पन्न अमृतधारा का चिन्तनकर उसी से पूर्णाहुति करै औ शिवजी के मुखमें प्राप्तभई पूर्णाहुति का ध्यानकरै फिर सबकृत्य समाप्त कर शुद्ध दीपशिखाकार शैव तेजको ललाटमें, भ्रूमध्य में अथवा हृदयकमल में भावना करै औ लिंगमें तथा स्थंडिलमें वाह्य शिवपूजन करै ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

नंदी कहतेहैं कि हे सनत्कुमारजी शिवशास्त्रकी रीति से पूजाविधानकी व्याख्या हम संक्षेपकरके वर्णनकरते हैं जिसभांति पूर्वकालमें श्रीमहादेवजीने अपने मुखसे वर्णनकरी है शिवस्नान औ भस्मस्नानके अनंतर दोनोंहस्तोंको चंदनसे चर्चितकर वौषडंत मूलमंत्रसे अंजलिबांधि मूर्त्ति विद्या औ अंगमंत्रोंका जपकर अंगुष्ठ से कनिष्ठा पर्यन्त ईशानआदि पांचमंत्रों का न्यासकरै पूर्वोक्तांगमन्त्रोंमें से हृदयमंत्र आदि तीन मंत्र कनिष्ठा तर्जनी औ मध्यमामें न्यासकरै चौथे मंत्रको अंगुष्ठ में पांचवेंको अनामिकामें औ छठे मंत्रको दोनों हस्तों के तलद्वयमें न्यासकरै पीछे तर्जनी अंगुष्ठके योगसे छोटिका मुद्राकरके नाराच मुद्राकरके औ अस्त्रसे मूलमंत्रका जप करता हुआ विश्वोत्सारणकरै औ चतुर्थ मंत्र करके

अवगुण्ठन करै इसको शिवहस्त कहते हैं उसी हस्त से शिवपूजा करनी चाहिये तत्त्वों विषे विद्यमान आत्मा को स्थापन कर तत्त्वशुद्धि करै भूमि, जल, अग्नि, वायु औ आकाश पर्यन्त पञ्चकोशों को अतिक्रमण कर अहंकार महत्तत्त्व प्रकृतिका भी उल्लंघन कर शुद्ध कोटि अर्थात् ब्रह्मके समीप अमृतधारा सहित सुषुम्णा मार्ग करके आत्मा को स्थापन कर पहिले तत्त्वशुद्धि करै फडंत षष्ठ अर्थात् नमोहिरण्यबाहवे इत्यादि सद्योजात औ अघोर मंत्रकरके भूमिकी शुद्धि होतीहै षष्ठ सहित सद्योजात मन्त्र औ फडन्त अघोर मंत्र करके जल तत्त्व की शुद्धि होतीहै फडन्त आग्नेय तृतीय मंत्रसे अग्नि शुद्धि फडन्त औ षष्ठ सहित वायव्य चतुर्थ मन्त्र करके वायु शुद्धि षष्ठ औ फडन्त तथा सद्योजात मन्त्र सहित तृतीय करके आकाश तत्त्व की शुद्धि होती है इसभांति तत्त्वों का उपसंहार कर सद्योजात और षष्ठ सहित तृतीय करके तथा फडंत मूलमंत्र करके ताडन करै तृतीय मंत्र करके संपुटित मूलमन्त्र से ग्रहण औ मायाबीज पुटित मूलसे दिग्बंधनकरै इसीभांति शांत्यतीतासे निवृत्तिकला पर्यंत पहिली भांति ध्यानकर तत्त्वत्रय अर्थात् ब्रह्मा विष्णु औ रुद्र का ध्यानकरै औ दीपशिखाकार योगशास्त्र प्रसिद्ध पुर्य्यष्टक सहित औ त्रयातीत अर्थात् विश्व,प्राज्ञ, तैजस से पर आत्मा का ध्यान कर कुण्डली के प्रबोधसे उत्पन्न भई अमृतधारा को सुषुम्णा में ध्यान करै शांत्यतीता से निवृत्ति पर्यंत पांच कलाओं में नाद,विन्दु, अकार, उकार औ मकार

तथा शिव, सदाशिव, रुद्र, विष्णु औ ब्रह्मा का ध्यान सृष्टिक्रमसे करके अमृतीकरण औ ब्रह्मन्यासकर पंच मुखों में पंचदश नेत्रोंका न्यासकरै औ मूलमन्त्रसे पादादि केशांतन्यास करके महामुद्राको बांध 'शिवोऽहम्' अर्थात् मैं शिवहूं ऐसा ध्यानकरै फिर शक्त्यादिकों का न्यासकर हृदयमें शक्ति करके बीज, अंकुर, छिद्र, कंटक औ सूत्र सहित नाल, पत्र, केसर औ कर्णिकायुक्त कमलका ध्यानकर उसमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य औ सूर्य, सोम, अग्नि, मण्डल तथा दलोंमें वामा, ज्येष्ठा, रौद्री काली, कलविकरणी, बलविकरणी, बलप्रमथनी, सर्वभूतदमनी औ कर्णिकामें मनोन्मनीको ध्यावै इस आसनके ऊपर सदाशिवका ध्यानकरै फिर नाभिमें अग्नि कुंडके मध्य इसीभांति आसन के ऊपर शिवजीका चिन्तनकर ललाटमें दीपशिखाकार शिवका चिन्तन करै औ बिन्दुसे शिवमण्डल में गिरतीहुई अमृतधारा का ध्यानकरै यह आत्मशुद्धि है प्राण अपानका संयम कर सुषुम्णा में वायुको स्थापन करै षष्ठमन्त्र से तालुमुद्रा अर्थात् खेचरीमुद्रा औ दिग्बन्धन करै यह देहशुद्धि है वस्त्रसे सब पूजा पात्रों को पोंछ अर्घ्यपात्रादिकों में प्रणव से तत्त्वत्रय का न्यासकर उनके ऊपर विन्दुका ध्यान कर जलसे पूर्णकरै औ संहिता अर्थात् मंत्र समूह से अभिमन्त्रण कर प्रथम मंत्र से उनका अर्चन द्वितीय से अमृतीकरण तृतीय से शोधन चतुर्थ से अवगुंठन पंचम से अवलोकन औ षष्ठसे रक्षा करके चतुर्थ मन्त्र से कुशकूर्च करके सब पदार्थ औ आत्मा

का अर्घ्यपात्र के जल से प्रोक्षण करै औ प्रत्येक पदार्थ पर पुष्प रख उनका शोधन करै सद्योजातसे गन्ध वामदेव से वस्त्र, अघोर से भूषण, तत्पुरुषसे नैवेद्य औ [illegible] [illegible] द्रव्यों को ब्रह्ममन्त्र अंगमंत्र औ मूलमंत्रसे अभिमंत्रण कर प्रत्येक पदार्थ को मूलमन्त्र से धूपदीप आचमन देकर धेनुमुद्रासे अमृतीकरण कवचसे अवगुण्ठन औ अस्त्र से रक्षा करै यह द्रव्य शुद्धि है हृदय मन्त्रसे अर्घ्योदकयुक्त गंधलेकर द्रव्य शुद्धिकी भांति अस्त्रमंत्रसे सब शुद्धिकर पुष्पांजलि ग्रहणकर पूजा समाप्ति पर्यंत मौनि से प्रणव आदि नमोंत सब मंत्रों को जप पुष्पांजलि देवै यह मंत्रशुद्धि है अपने अग्रभागमें सामान्यार्घ पात्र को जल से पूर्णकर गंध पुष्प उसमें डाल सब मन्त्रों से अभिमन्त्रणकरै फिर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण कवचसे अवगुण्ठन औ अस्त्रसे रक्षाकरै पूर्वदिनके पूजित शिवलिंगको गायत्रीसे अर्चन कर सामान्यार्घ्य देकर गंध पुष्प धूप औ आचमनीय देवै प्रत्येक उपचार के अन्त में स्वधा अथवा नमःशब्दको उच्चारण करै फिर पंचब्रह्म मंत्रों से अलग २ पुष्पांजलि देकर फडंत अस्त्रसे निर्माल्य उतारकर ईशान दिशा में चंड की पूजाकरै पीछे लिंगपीठ अर्थात् जलहरी को सामान्य अस्त्र से औ शिवलिंग को पाशुपतास्त्र मंत्रसे शोधै औ लिंगके मस्तकपर पुष्प रखकर पूजाकरै यह लिंग शुद्धि है कूर्मशिला के ऊपर आसन उसके ऊपर क्रम

से बीज अंकुर ब्रह्मशिला छिद्र सहित औ कंटक तथा सूत्रयुक्त नाल, दल, कर्णिका, केसर, धर्म, ज्ञान, वैराग्य ऐश्वर्य, सूर्य्यादि तीनमण्डल, वामा आदि आठ शक्ति औ कर्णिका में मनोन्मनी औ मनोन्मन का ध्यान करे औ 'अनन्तासनायनमः' इस मंत्रसे आसन देकर उस के ऊपर निवृत्ति आदि कलायुक्त षट्कोश सहित वेद मूर्त्ति सदाशिव का ध्यानकरै दोनों हाथों में पुष्पलेकर दोनों अंगुष्ठों से पुष्प को दबाय आवाहनमुद्रा करके धीरे धीरे हृदयसे मस्तक पर्यंत आरोपणकर हृदयमंत्र सहित मूलमंत्र को प्लुतस्वर से उच्चारणकर त्रिदुस्थानसे दीपशिखाकार सर्व्वतोमुख हस्त व्याप्य व्यापक स्वरूप परमेश्वर को सद्योजात मन्त्र से आवाहन कर स्थापन करे पहिली भांति हृदयमन्त्र करके शिवशक्ति समवाय अर्थात् सामरस्यकरके परमीकरण अमृतीकरण आदि करै हृदय मन्त्रादि मूलमन्त्र युक्त सद्योजात मन्त्र से आवाहन हृदय औ मूलयुक्त वामदेव मन्त्र से स्थापन हृदय औ मूलसहित अघोर मन्त्र से सन्निरोधन हृदय औ मूलयुक्त तत्पुरुष से सान्निध्य औ हृदय औ मूलमन्त्र युक्त ईशानमन्त्र से पूजन करै यह उपदेश है जिसभांति पञ्चमन्त्रों करके पहिले अपने देह का निर्म्माणकिया इसीभांति देवता औ अग्निका भी देह निर्म्माणकरै शिवजी के रूपका ध्यान कर मूल से नमस्कारांत सब उपचार समर्पणकरै आचमनीय स्वधांत देवै अथवा सब उपचारोंके अन्तमें स्वाहा शब्द का उच्चारण करै वौषडन्त मूल करके पुष्पाञ्जलि देवै

सब उपचार हृदय मंत्रसे ईशान मंत्रसे रुद्र गायत्री से अथवा 'ॐनमः शिवाय' इस मूलमन्त्रसे परमेश्वर के अर्पण पाद्य अर्घ्य आचमनीय आदि करे फिर पुष्पांजलि देकर धूप आचमन दे छेठेमन्त्रसे पुष्पोंको उतार पूजाका विसर्जनकर मूलमंत्रकरके शुद्धजल औ पंचामृत आदि द्रव्योंसे स्नानकरावै प्रत्येक द्रव्यके स्नान में ईशानमन्त्रसे आठ आठ पुष्पांजलि देवै पीछे अर्घ्य गंध, पुष्प, धूप, आचमन आदि देकर फडंत अस्त्रमन्त्र से सब पूजा द्रव्योंको लिंगसे दूरकर शुद्धजल से स्नान कराय पिसेहुये आमलक हलदीका उवटना औ गरम जलसे जलहरी समेत शिवलिंगको शुद्धकर सुगंधयुक्त सुवर्ण जलसे रुद्राध्याय नीलरुद्र त्वरितसूक्त पञ्चब्रह्म मन्त्र औ 'नमः शिवाय' करके शिवलिंग को स्नान करावै स्नान कराय एक पुष्प शिवलिंग के मस्तक पर रक्खै कभी लिंगको शून्य मस्तक न करै क्योंकि जिस राजा के राज्यमें शिवलिंग शून्य मस्तकरहै वहां अलक्ष्मी महारोग दुर्भिक्ष औ वाहनों का क्षय होता है औ राजा तथा राष्ट्रका नाश होजाताहै इसकारण धर्म, काम अर्थ औ मोक्षकी सिद्धिके लिये कभी लिंगको शून्यमस्तक न रक्खै इसभांति लिंगको स्नानकराय शुद्धवस्त्र से पोंछ मूलमन्त्र करके गन्ध, पुष्प, वस्त्र, भूषण, धूप आचमन, दीप, नैवेद्य आदि देवै केवल प्रणवसे लिंग के ऊपर पूजन को पवित्रीकरण कहते हैं दीप औ आरातिक को धेनुमुद्रासे अमृतीकरण कवचसे अवगुंठन औ षष्ठमन्त्रसे रक्षणकर लिंगके ऊपर मध्यमें औ अ-

धोभागमें साधारणता से दिखावे औ मूलसे नमस्कार करे इसभांति आवाहन,स्थापन,निरोधन सान्निध्य,पाद्य,आचमनीय,अर्घ्य,गंध,पुष्प,धूप,दीप,नैवेद्य,आचमनीय,हस्तोद्वर्त्तन अर्थात् हाथधोने का उबटना मुखबास, तांबूल आदि उपचारों से ब्रह्ममंत्र औ अंगमंत्रों करके परमेश्वर का पूजन करे पूजा के अनन्तर सकलध्यान,निष्कलध्यान, परावरध्यान,मूलमन्त्र जप, ब्रह्ममन्त्र तथा अंगमंत्रोंका दशांश जप, जपसमर्पण,आत्मनिवेदन, स्तुति औ नमस्कार आदि करके पूर्वभाग में गुरुपूजा औ दक्षिणभागमें गणपति पूजाकरे सबकार्यों की सिद्धिके लिये आदिमें औ अंतमें देवता औ ब्राह्मणोंको गणपति पूजन अवश्यकरना चाहिये इसभांति एक वर्ष पर्यन्त लिंगमें अथवा स्थंडिलमें शिवपूजाकरते हारा निस्संदेह शिव सायुज्यपाता है परंतु लिंगमें छःमहीने शिवपूजन करने सेही शिवसायुज्यकी प्राप्ति होतीहै पूजनकर सात प्रदक्षिणाकरै औ दंडवत् प्रणामभीकरै प्रदक्षिणाके निमित्त एक २ पाद धरनेमें सौ२ अश्वमेध का फल होता है सब कामनाओं की सिद्धिके लिये नित्य शिवपूजन करै भोग की इच्छावाला भोग राज्य की कामनावाला राज्य औ पुत्रार्थी पुरुष इसविधि पूजनकरने से उत्तम पुत्रपाताहै औ रोगी असाध्य रोगसेभी मुक्तहोजाताहै इसभांति और भी जोजो कामना होयँ शिवपूजासे सब मिलती हैं॥

पच्चीसवां अध्याय॥

नंदीकहतेहैं किहेसनत्कुमारजी अब हम शैव अग्नि कार्य कहते हैं जैसा शिवजीने कहाहै प्रथम दिक्साधनकी रीति से पूर्वादिशाका साधनकर शुद्धभूमिमें तीन सूत्र पूर्वापर औ तीन याम्योत्तर देकर चतुरस्र क्षेत्रका निर्माणकरे उसमें सब कुण्ड बनतेहैं नित्यहोम के लिये हस्तमात्रका कुण्ड तीन मेखला करके युक्त बनाना चाहिये तीनों मेखला चार तीन औ दोअंगुल ऊँचाई की हस्तप्रमाण करके बनावे मेखलाओं के ऊपर अश्वत्थपत्राकार प्रादेशमात्रकी योनि बनावे कुण्ड के मध्यमें अष्टदल औ कर्णिकायुक्त नाभि स्थापनकरे नाभिकाप्रमाणभी एक प्रादेश है इसभांति कुण्ड रच अस्त्र मंत्रसे उल्लेखन औ कवच से प्रोक्षणकर कुण्डकोदेख छः रेखा करे पूर्वापर तीनरेखा ब्रह्म विष्णु महेश्वररूपहैं औ उत्तराग्ररेखा शिवहै फिर कवचसे प्रोक्षणकरे शमी अथवा पीपलके काष्ठकी षोडशअंगुल प्रमाण अरणी बनाय वह्निबीज औ हृदय मंत्रसे मथनकर अग्नि उत्पन्नकरे पीछे उस अग्निको कुंड में विधिपूर्वक रख एक २ प्रादेशके याज्ञिक काष्ठके टुकड़े उसके ऊपर रक्खे जलसे आठोंदिशाओंमें परि समूहन कर परिस्तरणकरे पूर्व में उत्तराग्र दक्षिणमें पूर्वाग्र पश्चिममें उत्तराग्र औ उत्तर में पूर्वाग्र कुशा बिछावे इसीका नाम परिस्तरण है पूर्व दिशामें ऐन्द्राग्न अर्थात् इन्द्र औ अग्निका दक्षिणमें याम्याग्न पश्चिममें वारुणाग्न औ उत्तरमें सौम्याग्न

पात्रकुशाओंके ऊपर अधोमुखरक्खै और द्रव्य उत्तर भागमें स्थापनकर उसकेऊपर दर्भ रक्खै दक्षिणभाग में शिवको स्थापनकर मूलमंत्र से पूजाकरै पीछे हवन करै प्रोक्षणी पात्रको जलसेभर प्रादेशमात्र दोकुशा उसके ऊपररख स्थापनकरै अग्नि औ सूर्यकिरणोंकरके कुशाओंको प्लावनकरै सब पात्रोंको फैलाय विधानसे प्रोक्षणकरै फिर प्रणीता पात्र को जल से पूर्णकर कुशाओंसे ढक दोनोंहाथोंसे नासिकापर्यंत उठाय ईशानदिशामें स्थापनकरै वायव्य कोणमें घृतका अधिश्रयणकरै भस्म सहित अंगार वायव्यकोणमें रख उनके ऊपर घृतको तपायले कुशाओं को प्रज्वलितकर अग्निके चारोंओर घुमाय कुण्ड में डालदे फिर घृत को सम्मुख स्थापनकर अंगुष्ठमात्र दोकुश विधिसे प्रक्षालनकर घृतमेंडाले फिर नौकुशाको प्रज्वलितकर चारों ओर घुमाय कुण्डमेंडाले इसभांति दोवार पर्यग्निकरै इसके अनंतर घृतको अग्निसे उतार वायव्यमें रखदे फिर काष्ठसे अग्निका प्रत्यूहनकर पश्चिममें स्थापन कर दो पवित्रोंसे घृतका उत्पवनकरै पीछे अंगुष्ठ औ अनामिकाकरके घृतमेंभीगेहुये दोनोंपवित्र दोनोंहाथों से अलग २ उठाय मूलमन्त्रका उच्चारणकर अग्नि में छोड़देवै अब स्रुक् स्रुवका विधानकहतेहैं एकहस्तप्रमाण सुवर्ण चांदी अथवा यज्ञवृक्षके काष्ठके स्रुक् स्रुवबनावै एक हस्त लम्बा स्रुक् जिसका मुख छः अंगुल चौड़ा मुख औ दंडनाल तथा तीनअंगुल चौड़ा कण्ठ नाल बनावै मुखमूलकी भांतिरचै दण्ड गोपुच्छके स-

मान अर्थात् ऊपरसे मोटा औ नीचे क्रमसे पतला औ अग्रभाग नासिका की भांति दोपुटों करके युक्त बनावै औ स्रुवं छत्तीस अंगुल लम्बा आठ अंगुल चौड़ा औ चार अंगुल मोटा चाहिये सात अंगुल चौड़ा औ बारह अंगुल लम्बा मुख बनावै उसका कण्ठ दो अंगुल चौड़ा औ चार अंगुल लम्बा आठ अंगुल लम्बी औ चौड़ी वेदी चार अंगुल वेदी के मध्यमें गोल बिल औ कर्णिका युक्त अष्टदल बनावै बिल के बाहर चारों ओर आधी अंगुल चौड़ी पट्टिका पट्टिका के बाहर विकसित कमल औ कमल के बाहर दो यव के तुल्य फिर पट्टिका बनावे वेदी के मध्य में कनिष्ठा अंगुलिके तुल्य मुख पर्यंत छिद्र बनावै दण्डके मूलमें छः अंगुलके बीच आधे अंगुलकी वृद्धिसे तीन गंडिका बनावे औ तेरह अंगुल का घट बनावै जिसका कण्ठ दो अंगुल नाभि अर्थात् मध्य दश अंगुल औ एक अंगुल पाद बनावै पद्मपृष्ठ के समान नाभि और कर्णिका तुल्य पाद बनावे हाथी के ओष्ठ समान स्रुवके पृष्ठकी आकृति होती है इसीभांति अभिचार आदि कर्मों में लोहेके स्रुक् स्रुव बनावे पच्चीस कुशासे स्रुक् स्रुवका शोधनकरे अग्रको अग्र से मध्य को मध्य से औ मूलको मूलसे शोधन कर हृदय मन्त्र से अग्नि में तपावे आज्यस्थाली प्रणीता औ प्रोक्षणी ये तीनों पात्र सुवर्ण चांदी तांबा अथवा मृत्तिका के बनावे शांतिक पौष्टिक कर्मों में औ किसी धातुके ये पात्र न चाहिये विशेषकरके अभिचार कर्म में लोह के औ शांति में मृत्तिका के उत्तम होते हैं

इन पात्रोंका मुख छः अंगुल चौड़ा होताहै प्रोक्षणी दो अंगुल ऊंची प्रणीता चारअंगुल औ आज्यस्थाली छः अंगुल ऊंचीचाहिये जिन समिधाओंसे हवनहोय उन सेही परिधि रचै सीधे छिद्र रहित सम औ बत्तीस २ अंगुल लम्बे तीन परिधि चाहिये चार अंगुल के बीच प्रदक्षिण क्रमसे बत्तीस २ अंगुल लंबे तीन दर्भोंसे परिस्तरणकरै आभिचारिक कर्म में शैव अग्न्याधान न करै औ समिधाभी कठोर औ दृढ़लेवै परन्तु साधारण कर्मों में कनिष्ठा अंगुलके तुल्य बारह २ अंगुल लम्बी सीधी, व्रण रहित औ स्निग्ध समिधा ग्रहण करै हवन में गोघृत उत्तमहै औ जो कपिला गौका होय तो बहुत ही उत्तम है घृत की आहुति का प्रमाण परिपूर्ण एक स्रुवहै अन्न अर्थात् भात एककर्ष तिल एक शुक्ति यव आधीशुक्ति औ फल एक २ प्रति आहुति में देनाचाहिये दूध दही औ शहदका प्रमाण घी के तुल्यहै चार स्रुवसे स्रुक् को पूर्णकर पूर्णाहुति देवै औ इससे आधा स्विष्टकृत औ सम्पूर्ण शेष कृत्य होता है शांतिक पौष्टिक आदि हवन शिवाग्नि में करै औ मोहन उच्चाटन आदि लौकिक अग्नि में करै सब कर्मों में शिवाग्नि को उत्पन्न कर सात जिह्वा कल्पनाकरै उनसे ही सब कार्य करै अथवा सब कार्य्य जिह्वाओं से ही करै औ जिह्वा मात्रकोही शिवाग्नि कल्पना करै अब सात जिह्वाओं के मन्त्र कहते हैं ॐ बहुरूपाये मध्यजिह्वाये अनेकवर्णाये दक्षिणोत्तरमध्यगाये शांतिकपौष्टिकमोक्षादिफल प्रदायैस्वाहा १ ॐ हिरण्यायैचामीकराभाये ईशानजि-

ह्वायैज्ञानप्रदायैस्वाहा २ ॐकनकायैकनकनिभायैरुद्रा येऐंद्रजिह्वायैस्वाहा ३ ॐरक्तायैरक्तवर्णायै आग्नेयजि ह्वायै अनेकवर्णायै विद्वेषणमोहनायैस्वाहा ४ ॐ कृ ष्णायैनैर्ऋतजिह्वायैमारणायैस्वाहा ५ ॐसुप्रभायैप श्चिमजिह्वायै मुक्ताफलायै शांतिकायैपौष्टिकायै स्वाहा ६ ॐअभिव्यक्तायैवायव्यजिह्वायैशत्रूच्चाटनायैस्वाहा ७ ये सात जिह्वा मंत्रहैं और ॐवह्नयेतेजस्विनेस्वाहा यह प्रधान मंत्रहै इतना अग्नि संस्कारहै अथवा नैमित्ति क अग्नि कर्मों में विधिसे शिवाग्निको उत्पन्नकर अ ग्नि संस्कारकरै फडन्त षष्ठ मन्त्र से निरीक्षण प्रोक्षण औ ताड़नकरै चतुर्थसे अभ्युक्षण खनन उत्किरण षष्ठ से पूर्ण समीकरण प्रथमसे सेचन वौषडंत प्रथमसे कु ट्टन षष्ठसे मार्जन उपलेपन चतुर्थ से कुण्ड परिकल्पन अघोर वामदेव औ सद्योजातसे कुण्डपरिधान चतुर्थ से कुंडका अर्चन प्रथम से रेखा चतुष्टयकरण फडन्त षष्ठसे वज्रीकरण अर्थात् दृढ करना औ प्रथम मंत्रसे ऐन्द्राग्नि आदि चारों पदों का स्थापनकरै ये अठारह कुण्ड संस्कार हैं इन संस्कारों के अनंतर षष्ठ मंत्र से अक्षपाटन अर्थात् इंद्रियोद्घाटन औ प्रथम मन्त्र से विष्टरका स्थापनकर वज्रासनके ऊपर वागीश्वर वागी श्वरीका आवाहनकरै वागीश्वरीके आवाहन औ पूजन के ये दो मंत्रहैं॥ ॐह्रींवागीश्वरीश्यामवर्णाविशालाक्षीं यौवनोन्मत्तविग्रहामृतमतीं वागीश्वरशक्तिमावाहयामि

दाभयहस्तं परशुमृगधरं जटामुकुटमण्डितं सर्वाभरण भूषितंवागीश्वरमावाहयामि १ ॐईंवागीश्वरायनमः २ इनमंत्रोंसे वागीश्वर वागीश्वरी का आवाहन स्थापन सन्निधान सन्निरोध आदि पूजा पर्यंत सब कर्मकर गर्भाधान आदि वह्नि संस्कारकरै अरणीसे उत्पन्न सूर्य कांतसे उत्पन्न अथवा अग्निहोत्रसे ताम्रपात्रमें अथवा शराव अर्थात् मृत्तिकाकी सराई में अग्निलाकर प्रथम मंत्रसे निरीक्षण ताड़न अभ्युक्षण प्रक्षालन औ क्रव्यादांशका त्यागकर जठर औ भ्रूमध्यसेवह्निके त्रैकारणका आवाहनकर वह्निमंत्रसे कारण मूर्त्तिमें आवाहन करै फिर प्रथम मंत्र से उद्दीपनकर तत्पुरुष से अमृतीकरण चतुर्थसेही अवगुण्ठन कर दोनों जानु भूमिपर टेक शरावको उठाय प्रदक्षिण क्रमसे कुंडके चारोंओर घुमाय वागीश्वरी को अपने सम्मुख ध्यानकर उनकी गर्भ नाड़ी विषे गर्भाधान की रीति से वौषडन्त प्रथम मन्त्र करके अग्निको कुण्ड में स्थापनकर कुशार्घ्य दे प्रथम मंत्र से इन्धन करके प्रज्वलितकरै सद्योजात से गर्भाधान प्रथमसे पूजन वामदेव से पुंसवन द्वितीय से पूजन अघोर से सीमन्त तृतीयसे पूजन औ अंगोंकी व्याप्तिकरै वक्रोद्घाटन औ वक्रनिष्कृति भी तृतीयसे करै जातकर्म चतुर्थ से षष्ठमन्त्रसे सूतक शुद्धिके लिये प्रोक्षण कुश औ अस्त्रकरके अग्निरूप पुत्रकी रक्षाकरै फिर अग्निकोणमें मूल ईशान में अग्र नैर्ऋत्य में मूल वायव्यमें अग्र औ वायव्य में मूल ईशान में अग्र इस भांति पूर्व रीतिसे कुशास्तरणकर घृत से भीगीहुई स-

मिधा अग्निकी ला ला निवृत्तिके अर्थ षष्ठमन्त्रसे हव-नकरै वामदेव आदि चारमंत्रों करके परिधि औ विष्ट-रका स्थापनकर विष्टरोंके ऊपर ब्रह्मा,रुद्र औ विष्णुकी पूजाकरै औ वज्रादि आवरण पर्यंत लोकपालों की भी पूजाकरै पीछे वागीश्वर वागीश्वरी का पूजनकर हवन करै अब स्रुक् स्रुव संस्कार कहते हैं पूर्वरीतिसे निरी-क्षण प्रोक्षण ताड़न,अभ्युक्षण आदि करके दोनोंहाथों में स्रुक्स्रुव ग्रहणकर प्रथम मंत्रसे ताड़न औ स्थापन कर कुशाओं करके मूलमध्य औ अग्रमें अनुलेखनकर स्रुक्को शक्ति औ स्रुवको शिवमान दक्षिणभाग में कु-शोंपर स्थापनकर 'शक्त्येनमः' 'शम्भवेनमः' इन मन्त्रों से पूजनकरै फिर चतुर्थमन्त्रसे सूत्र करके स्रुक् स्रुवको वेष्ठनकरै औ पूजन भी करै पीछे धेनुमुद्रासे अमृतीक-रण चतुर्थमंत्रसे अवगुंठन औ षष्ठसे रक्षाकरै यह स्रुक् स्रुव संस्कार है अब घृतका संस्कार कहतेहैं निरीक्षण प्रोक्षण ताड़न अभ्युक्षणआदि पहिली भांतिकर षष्ठ मंत्रसे ईशान कोणमें घृतको तपाय वेदी के ऊपर रख वितस्तिमात्र कुशाके पवित्रका अग्रवाम हस्तके अंगुष्ठ औ अनामिका से ग्रहणकर औ दक्षिण हस्तके अंगुष्ठ औ अनामिका से पवित्र का मूल ग्रहण कर स्वाहान्त चतुर्थमन्त्र से अग्निज्वाला विषे उत्पवन करै द्व:दर्भले कर स्वाहांत प्रथममंत्रसे पहिलीभांति संप्लवनकरै पी-छे दो कुशा का पवित्र बनाय प्रथममंत्रसे घृत में छोड़ै यह पवित्री करण है घृत प्लुत दो दर्भ प्रज्वलित कर घृतके ऊपर तीनबेर घुमाय अग्निमें गेरदेवै यहनीरा-

जनहै फिर दर्भलेकर घृतमें केशकीटआदि देख संप्रो-
क्षणकर दर्भोंको अग्निमें डालदेवे यहअवद्योतनहै दो
दर्भ प्रज्वलितकर घृतको देखै यह निरीक्षण है सद्यो-
जात मंत्रसें दर्भके अग्रकरके शुक्ल कृष्णपक्षरूप घृतके
दो भागकरै फिर कृष्णपक्षके घृतके तीनभागकर स्रुव
करके प्रथमभाग से घृत लेकर 'अग्नये स्वाहा' दूसरे
भागकरके 'सोमायस्वाहा' तीसरेभाग करके'अग्नीषो-
माभ्यांस्वाहा' औ सब भागके घृतकरके 'अग्नयेस्विष्ट
कृतेस्वाहा' इन मंत्रों करके चार आहुतिदेवै फिर कुशा
युक्त पवित्र लेकर नमोंत सब मंत्रों से घृतको अभिमं-
त्रण करै पीछे धेनुमुद्रा करके अमृतीकरण कवचकरके
अवगुण्ठन औ अस्त्र करके रक्षण करै औ पवित्रों को
अग्निमें डालदेवे यह घृतका संस्कार है स्रुवसे घृतले
मायावीजकरके आहुतिदेवै यह चक्षाभिधारण है फिर
ईशानमूर्त्तयेस्वाहा १ पुरुषवक्त्रायस्वाहा २ अघोरहृद-
यायस्वाहा ३ वामदेवायगुह्यायस्वाहा ४ सद्योजातमू-
र्त्तयेस्वाहा ५ इनपांच मंत्रोंसे आहुति देवै यह वक्त्रोद्-
घाटन है पीछे 'ईशानमूर्त्तयेतत्पुरुषवक्त्रायस्वाहा १ त-
त्पुरुषवक्त्रायअघोरहृदयायस्वाहा २ अघोरहृदयायवाम
गुह्यायसद्योजातमूर्त्तयेस्वाहा ३ इनमंत्रों से आहुतिदेवै
यह वक्त्रसंधानहै। ईशानमूर्त्तयेतत्पुरुषवक्त्रायअघोरहृद
यायवामदेवायगुह्यायसद्योजातायस्वाहा १ इस मंत्र से
आहुतिदेवै यह वक्त्रैक्यकरण है इसभांति शिवाग्निको
उत्पन्नकर सब कर्म साधनकरै अथवा केवलअग्नि जि-
ह्वाओंसेही शांति आदि कर्मकरै गर्भाधानआदि संस्का-

रों से मायाबीज करके दश २ अथवा पांच २ आहुति देवै शिवाग्निमें पहिलीभांति देवताका पीठ कल्पनाकर आवाहन न्यास पूजनआदि सबकरै औ मूलको जप देवताको प्रणामकरै फिर सगर्भ तीनप्राणायाम कर अग्निको घृत औ समिधाओं से प्रज्वलितकर हवनकरै घृतकरके अग्निमें आघारदेकर घृतके शुक्लकृष्णभाग से हवनकरै दोनोंभागनेत्रहैं उत्तरभागसे 'अग्नयेस्वाहा' दक्षिणभागसे 'सोमायस्वाहा' इनमंत्रोंसे आहुति देवै पश्चिमाभिमुख शिवाग्नि का दक्षिणभाग दक्षिण नेत्र औ उत्तरभाग वामनेत्रहै फिर मूलमंत्र से घृतकी दश आहुतिदेकर चरु औ समिधाकरके कल्पोक्त हवन करै पीछे मूलमंत्रसे पूर्णाहुतिदेवै सब आवरण देवताओंको पांच२ आहुति ईशानादिक्रमसे औ शक्तिबीज क्रम से देवै अघोरमंत्र से प्रायश्चित्तकर स्विष्ट पर्यंत सब कर्म पूर्ववत् करै हे सनत्कुमार यह तीनप्रकार का अग्नि कार्य हमने कहा इसमें जैसा अवसरहोय वैसा करै इसविधि से हवन करने हारा पुरुष कभी नरकको नहीं जाता अवश्यही स्वर्गवास पाताहै मुक्तिकी इच्छा वाला साधक हिंसारहित होमकरै मुमुक्षु पुरुष हृदय में शिवाग्नि का चिन्तनकर सर्व भूतपति अंतर्यामी सदा शिवकी प्रीतिके लिये ध्यानयज्ञ से हवन करै प्राणायामसे शिवको जान भक्ति से नित्य हवनकरै शिव ज्ञान बिना जो केवल बाह्य हवनकरै वह पाषाण दर्दुर अर्थात् पत्थर में मेंडक होय॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

नन्दी कहते हैं कि हे सनत्कुमारजी शिवभक्त औ शिवध्यान में परायण ब्राह्मण लिंगमें शिवपूजाकरे अग्निरिति भस्म इत्यादि मन्त्र से अग्निहोत्र की भस्म लेकर आपाद मस्तक उद्धूलनकरे अर्थात् सब अंगोंमें भस्मधारण करलेवे फिर उत्तराभिमुख बैठकर ब्रह्मसूत्री होकर ब्रह्मतीर्थ से आचमन कर ओं नमःशिवाय इस मन्त्रसे देह शुद्धकर मूलमन्त्र औ प्रणवसे अघोर परमेश्वरका यजनकरै क्योंकि सब से अधिक फल अघोर पूजनकाहै पूजन औ अग्निकार्य पहिली भांतिही है केवल मन्त्रोंमें औ ध्यानमें भेदहै। ओंअघोरेभ्योऽथ घोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः। यहमन्त्रहै औ अघोरेभ्यःप्रशांतहृदयायनमः १ अथघोरेभ्यः सर्वात्मब्रह्मशिरसेस्वाहा २ घोर घोरतरेभ्यो ज्वालामालिनीशिखायैवषट् ३ सर्वेभ्यःसर्व शर्वेभ्यः पिंगलकवचायहुम् ४ नमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यो नेत्रत्रयायवौषट् ५ सहस्राक्षायदुर्भेदायपाशुपतास्त्रायहुं फट्। इनछःमंत्रों से षडंगन्यासकरै स्नान, आचमन मार्जन, अघमर्षण, तर्पण,सूर्यार्घ्य औ सूर्य पूजन सब पहिली भांतिहै केवल अघोर पूजामें मन्त्र भेदहै मार्ग शुद्धि,द्वार पूजा,वास्तु पति पूजाकर शुद्धि आदि पहिली भांति सबकरके उत्तम आसनपर बैठ नासाग्र दृष्टि हो क्षुभिकाग्नि अर्थात् विरक्तिरूप अग्निकरके सबइन्द्रिय दग्धकर उस भस्म को वायु से प्रेरणकर जलसे

शोधै पीछे ब्रह्ममय उसदेह भस्ममें शक्ति सहित ब्रह्म कलाका कल्पनकरै अघोर मन्त्रके पांचखंडकर पंचांग सहित इच्छा ज्ञान औ क्रिया का न्यास करै इस भांति अघोरमूर्ति सहित न्यासकरके हृदयमें आसन के ऊपर स्थित नाभि में अग्नि मध्यस्थित औ भ्रूमध्य में दीप शिखाकार परमेश्वर का चिन्तनकरै शांति करके बीज अंकुर, अनन्त, सोम, सूर्य, अग्नि, तीनमूर्त्ति वामाआदि आठशक्ति औ मनोन्मनी सहित पीठका चिंतनकर उसके ऊपर शिवासन में विराजमान श्रीअघोरमूर्त्ति सदाशिव का ध्यान करै जिनका अड़तीस कलारूप औ तीन तत्त्वों करके सहित अक्षयाकार स्वरूप है जिनके अठारह भुज हैं जो अघोर हाथी का चर्म्म ओढ़े औ सिंहचर्म्मधारे सबभूषणोंसे भूषित सब देवताओं करके नमस्कृत बत्तीस अक्षररूप से बत्तीस शक्तियों करके वेष्टित कपालमालासे अलंकृत सर्प औ वृश्चिकों के गहने पहिने चन्द्रकला मस्तकपर धारे नीलरूप कोटि चन्द्रके समान देदीप्यमान चन्द्रवदन औ शक्ति सहित हैं जिनके दहिनीओर के हाथों में खड्ग खेटक अर्थात् ढाल, पाश, रत्नजटित अंकुश, नाग, धनुष, पाशुपतास्त्रदंड औ खट्वांग है बाईंओर के हाथों में बीणा घण्टा, शूल, डमरु, वज्र, टंक अर्थात् परशु, मुद्गर औ नवें हाथमेंबर औ अभय दोनों धारतेहैं इसभांति शिवका ध्यानकर हवन करै हवनका विधान सब पहिलीभांति है केवल मंत्रों में भेदहै अष्टपुष्पांजलि, गंध पुष्पआदि करके पूजा स्तुति, जप निवेदन, होमआदि

सब पहिली रीतिसे कर विधिपूर्वक मंडल बनाय इस मंत्रसे बलिदेवै। ॐरुद्रेभ्योमातृगणेभ्यो, यक्षेभ्योऽसुरेभ्यो, ग्रहेभ्यो, राक्षसेभ्यो, नागेभ्यो, नक्षत्रेभ्यो, विश्वगणेभ्यः, क्षेत्रपालेभ्यः। एषबलिः। यह बलिदेकर वायव्य अथवा पश्चिम में क्षेत्रपाल बलिदेवै अर्घ्य गंध, पुष्प धूप, दीप, नैवेद्य, मुखवास, तांबूल आदि उपचारों से विधिपूर्वक पूजनकर अष्टपुष्पांजलि देकर विसर्जनकरै यह सब पूजामें साधारण है इसभांति संक्षेप से हमने अघोर पूजनका विधानकहाहै स्थंडिल अथवा लिंगमें अघोर पूजनकरै परन्तु स्थंडिल पूजनसे कोटि गुणित पुण्य लिंग पूजामें होताहै लिंगपूजन करनेहारा ब्राह्मण पातक उपपातकों करके लिप्त नहीं होता जलमें पद्मपत्रकी भांति निर्लेप रहताहै लिंगका दर्शन पुण्य है दर्शनसे स्पर्श और स्पर्शसे पूजन अधिक पुण्यहै शिवलिंग पूजनसे अधिक पुण्यजनक कोई कर्म नहीं है हे सनत्कुमारजी यह अघोर परमेश्वर की पूजाका विधान हमने संक्षेप से वर्णन किया है विस्तार से तो करोड़ों वर्षों में भी वर्णन नहीं करसक्ते हैं॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी नन्दीका कहाहुआ वेदसम्मत लिंगपूजाका फल औ प्रभाव श्रवण किया अब मेरु शिखरपर मनुके प्रति क्षत्रियों के हितके लिये शिवजीने जो जयाभिषेकका विधान उपदेश किया वह हम श्रवण किया चाहते हैं औ षोड़श

महादानकी क्या विधि है यह भी सुननेकी इच्छाहै यह सब आप हमारे प्रति कथन करैं यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि पूर्वकालमें मनु अपना जीवच्छ्राद्ध करके मेरुपर्वत में जातेभये वहां जाय स्तुतिकर महादेवजी को प्रसन्नकिया औ उनके अनुग्रहसे दिव्य दृष्टिपाय साक्षात् महादेवजीके दर्शनपातेभये औ दर्शनपाय हाथजोड़ शिरनवाय गद्गदवाणी से बारम्बार प्रणामकर कहते भये कि महाराज आपके प्रसाद से मैंने जीवच्छ्राद्ध किया औ यहांआय आपके दर्शनपाये अब धर्म, अर्थ, काम औ मोक्षको देनेहारा जयाभिषेक जो आपने इन्द्रको कहाथा वह कृपाकर मुझे भी उपदेश कीजिये सूतजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो अपने परम भक्त मनुकी यह प्रार्थना सुन श्रीसदाशिव कहने लगे कि हेमनु राजाओंके हितके अर्थ तेरेको हम जयाभिषेक का विधान कहते हैं जिसके करने से अपमृत्यु दूरहोताहै औ शत्रुओंमें जय होताहै युद्धके समय इस भांति राजा अभिषेककर युद्धमें जाय तो अवश्यही जयपावै विधिपूर्वक मंडपबनाय वेदवेत्ता ब्राह्मण नौस्थानोंमें अग्नि स्थापनकर अभिषेककरैं प्रथम सब अभिषेकोंमें सूत्रपात करैं रँगेहुये पूर्व पश्चिम औ दक्षिणोत्तर सूत्र डालै जिसमें दोहजार चारसौ कोष्ठ भूमि पर बन जावैं इसभांति कोष्ठ बनाय मार्जन करै बाहरली वीथी में एकपद चारों ओर मार्जन करै फिर अलग २ अंग सूत्रोंका मार्जनकर पूर्वादि औ दक्षिणादि छत्तीस सूत्रों का मार्जन करै तब पूर्वादि सात पंक्ति औ दक्षिणादि

सात पंक्ति इस भांति उनचास पंक्ति होतीहैं उनमें म-
ध्यकी नौ पंक्ति सुगन्ध युक्त गोमय के जलसे लीप एक
हाथ के विस्तार में कर्णिका औ केसरों सहित शुक्लव-
र्ण अति मनोहर अष्टदल कमल रचै जिसमें आठ अं-
गुलकी कर्णिका औ चार अंगुल केसर बनावै आग्नेय
आदि चारों कोणों में धर्मज्ञान वैराग्य औ ऐश्वर्य को
प्रणव से स्थापन कर अव्यक्त नियतिकाल औ काली
को चारों दिशाओं में पीठ के गात्र रूपसे स्थापन करै
धर्म आदि के क्रमसे श्वेत रक्त पीत औ कृष्ण ये वर्ण
हैं औ गात्रोंका वर्ण हंस अथवा सुवर्णके समानहै आ-
धार शक्ति के मध्य सृष्टि कारण कमल कला मध्य में
बिन्दुमात्र औ नादाकारका ध्यानकर नादके ऊपर ओं-
कार रूप जगद्गुरु सदाशिवका ध्यान करै मनोन्मनी
औ पद्मवर्ण महादेव का मध्य में ध्यान कर पूर्वादि के-
सरोंमें वामा ज्येष्ठा रौद्री काली कलविकरणी बलविक-
रणी बलप्रमथिनी औ सर्वभूतदमनी इन आठ शक्ति-
योंको वामदेवआदि आठ शिवों सहित प्रणवसे न्यास
करै औ नमोऽस्तुवामदेवायनमोज्येष्ठायशूलिने। रुद्रा
यकालरूपायकलविकरणायच १ बलायचतथासर्वभूत
स्यदमनायच। मनोन्मनायदेवायमनोन्मन्यैनमोनमः २
इन मन्त्रोंसे पूजाकरै यह प्रथम आवरणहै सोलह श-
क्तियों करके दूसरा औ चौबीस शक्तियों करके तीसरा
आवरण है मध्य में पिशाच वीथी और पास नाभिवी-
थी का मंत्रों से पूजन करै फिर मण्डलके मध्यमें अष्ट
कोण एकहज़ार आठ स्थान बनाय उनमें कर्णिका के-

सर सहित अष्टदल कमल, शालि अर्थात् धान, गोधूम, यव, नीवार, चावल, तिल औ श्वेत सर्षप करके रचै अथवा जो अन्न उस समय होय उससे कमल रचै प्रति कमल के लिये शालि एक आढ़क अर्थात् चार सेर चावल दोसेर तिल औ यवआदि एक २ सेर लेवै प्रधान कलश के नीचे सोलह सेर शालि आठसेर चावल चार सेर तिल औ दोसेर यव रक्खै इसभांति कमल रच सबको प्रणव से प्रोक्षण कर सुवर्ण चांदी अथवा ताम्र के हजार कलश इस लक्षणसे बनावै कि वर्तुल उदर का विस्तार बारह अंगुल नाभि छः अंगुल कंठ दो अंगुल ऊंचा ओष्ठ दो अंगुल निर्गम अर्थात् जल निकलने का मार्ग दो अंगुल बनावै औ शिवकुंभ इस प्रमाणसे द्विगुण बनाय यव प्रमाण अन्तरसे सूत्र करके वेष्टित कर विधिपूर्वक कुशाके ऊपर रख अभ्युक्षण औ अवगुंठन कर गन्धयुक्त जलसे भर कूर्च औ अक्षतों सहित मध्य पद्मके ऊपर शिवकुंभको स्थापन करै औ दोवस्त्रोंसे उसको लपेट रत्नजटित सुवर्ण कमल से ढक देवै पीछे विधिसे वर्द्धनीपात्र स्थापनकर हजार कमलों में हजार कलश सुवर्ण कमलोंसे ढकके औ वस्त्रों से आच्छादित स्थापनकर शिवकुंभमें रुद्रगायत्री औ प्रणव करके शिवका स्थापन करै। ओं तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवायधीमहितन्नोरुद्रः प्रचोदयात्। इस रुद्र गायत्री करके सदाशिव का सान्निध्य होताहै औ देवी गायत्री करके वर्द्धनी में भगवतीका आवाहनकर पूजनकरै ॐगणाम्बिकायैविद्महेमहातपायै धीमहितन्नोगौ

रीप्रचोदयात्। यहदेवी गायत्री है इसभांति शिवपार्व-
तीकी पूजाकर वामाआदि आठशक्तियोंकी प्रथम आ-
वरण में पूजाकरै द्वितीय आवरणमें ऐंद्र व्यूह अर्थात्
पूर्व्वदिशा में सुभद्रा आग्नेय चक्रमें भद्रा दक्षिणमें क-
नकांडजा नैर्ऋत्य व्यूहमें अम्बिका पश्चिममें श्रीदेवी
वायव्यमें वागीशा उत्तरमें गोमुखी इनशक्तियों की म-
ध्य कुंभमें पूजाकर ईशानमें भद्रकर्णाकी पूजाकर फिर
पूर्व्व औ अग्निकोण के मध्य में अणिमा अग्निकोण
औ दक्षिणके मध्यमें लघिमा दक्षिण नैर्ऋत्यके मध्यमें
महिमा नैर्ऋत्य पश्चिमके मध्यमें प्राप्ति पश्चिम वाय-
व्यके मध्यमें प्राकाम्य वायव्य उत्तरके मध्यमें ईशित्व
उत्तर ईशानके मध्यमें वशित्व औ ईशान पूर्व के मध्य
में सर्व्वकामावसायित्व का पूजनकरै यह दूसरा आव-
रणभया फिर प्रधानकलशोंमें व्यूहके मध्य विधिपूर्वक
पहिलीभांति इनषोड़श देवोंकी पूजाकरै दक्ष दक्षायि-
का चंड चंडा हर हरायी शौण्ड शौण्डा प्रथम प्रथमा
मन्मथ मन्मथा भीम भीमायी शाकुन शाकुनायी इन
की पूजाकर सुमति सुमत्यायी गोप गोपायिका नंद नं-
दायी पितामह औ पितामहायीका विधिसे स्थापनकर
पूजनकरै इसभांति तीसरे आवरण की पूजाकर प्रथम
आवरण के सौभद्र व्यूह की आठ शक्तियों को पूर्वादि
दिशाओंमें स्थापनकर पूजाकरै और दूसरे आवरणमें
सोलहशक्तियों का पूजनकर पद्ममुद्रा दिखावै अब श-
क्तियोंके नामकहते हैं बिंदुका बिंदुगर्भा नादिनी नाद
गर्भजा शक्तिका शक्तिगर्भा परा औ परापरा ये पहि-

ले आवरणकी आठशक्ति हैं चंडा चंडमुखी चण्डवेगी मनोजवा चण्डाक्षी चंडनिर्घोषा भ्रुकुटी चण्डनायिका मनोत्सेधा मनोध्यक्षा मानसी माननायिका मनोहरी मनोह्लादी मनःप्रीति महेश्वरी ये सोलह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह सुभद्राका व्यूह है अब भद्राका व्यूह कहते हैं ऐंद्री होताशनी याम्या नैर्ऋती वारुणी वायव्या कौबेरी औ ऐशानी ये आठशक्ति प्रथम आवरण की हैं औ हरिणी सुवर्णा कांचनी हाटकी रुक्मिणी सत्यभामा सुभगा जंबुनायिका वाग्भवा वाक्पथा वाणी भीमा चित्ररथा सुधी वेदमाता औ हिरण्याक्षी ये दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यह भद्राका व्यूह है अब कनकांडजा का व्यूहकहते हैं वज्रशक्ति दंड खड्ग पाश ध्वजा गदा औ त्रिशूल ये प्रथम आवरणकी शक्तिहैं युद्वा प्रयुद्वा चंडा मुंडा कपालिनी मृत्युहंत्री विरूपाक्षी कपर्दी कमलासना दंष्ट्रिणी रंगिणी लंबाक्षी कंकभूषणी संभावा औ भाविनी ये सोलहशक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह कनकांडजा का व्यूहहै अब अम्बिकाका व्यूह कहते हैं खेचरी आत्मनाभा भवानी वह्निरूपिणी वह्निनी वह्निनाभा महिमा औ अमृतलालसा ये आठशक्ति प्रथम आवरणकी हैं औ क्षमा शिखरा देवी ऋतुरत्ना शिला भूतपनी धन्या इन्द्रमाता वैष्णवी तृष्णा रागवती मोहा कामकोपा महोत्कटा इन्द्रा औ बधिरा ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यह अम्बिका व्यूहहै अब श्रीव्यूह कहते हैं स्पर्शा स्पर्शवती गंधा प्राणा अपाना समाना उदाना औ व्याना ये आठशक्ति प्रथम आवरणकी हैं

औ तमोहता प्रभा अमोघा तेजनी दहनी भीमास्या ज्वालिनी उषाशोषणी रुद्रनायका बीरभद्रा गणाध्यक्षा चन्द्रहासा गह्वरा गणमाता औ अंबिका ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्ति हैं यह श्रीव्यूह है अव वागीशा का व्यूह कहते हैं धारा वारिधारा वह्निकी नाशकी मर्त्यातीता महामाया वज्रणी औ कामधेनु ये आठशक्ति प्रथम आवरणकी हैं औ पयोष्णी बारुणीशान्ता जयंती प्लाविनी जलमाता पयोमाता महाम्बिका रक्षा कराली चंडाली पयस्विनी माया विद्येश्वरी काली औ कालिका ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यह वागीशा का व्यूहहै अब गोमुखीका व्यूहकहते हैं शंकिनी हलिनी लंकावर्णा कल्किनी यक्षिणी मालिनी वमनी और सात्मनी ये आठ शक्ति प्रथमावरणकीहैं औ चंडा घंटा महानादा सुमुखी दुर्मुखी वला रेवती प्रथमा घोरा सैन्या लीना महावला जया विजया अजिता अपराजिता ये सोलह शक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह गोमुखी का व्यूह है अब भद्रकरणीका व्यूह कहते हैं महाजया विरूपाक्षी शुक्लाभा आकाशमातृका संहारी जातहारी दंष्ट्राली शुष्करेवती ये प्रथमावरण की आठ शक्ति हैं औ पिपीलिका पुण्यहारी अशनी सर्वहारिणी भद्रहा विश्वहारी हिमा योगेश्वरी छिद्रा भानुमती अच्छिद्रा सैंहिकी सुरभी समा सर्वभव्या वेगा ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं ये आठ महाव्यूह वर्णन किये अब अणिमादिकों के आठ उपव्यूह सुनो प्रथमआवरण में अणिमा व्यूह क्रमसे कहते हैं ऐन्द्रा चित्रभानु वारुणी

दंडी पूणरूपी हंस स्वात्मशक्ति औ पितामह ये आठ पृथमावरणके देवताहैं औ केशव रुद्र चंद्र सूर्यमहात्मा आत्मा अंतरात्मा महेश्वर परमात्मा जीव पिंगल पुरुष पशुभोक्ता भूतपति भीम येसोलह दूसरे आवरणके देवहैं यह अणिमाका व्यूहहै अब लघिमाका व्यूह कहते हैं श्रीकंठ सूक्ष्म त्रिमूर्ति शशक अमरेश स्थितीश दारत ये आठ पृथमावरण के देव हैं स्थाणु हर दंडेश भौतीस सद्योजात अनुग्रहेश क्रूरसेन सुरेश्वर क्रोधीश चंड पृचंड शिव एकरुद्र कूर्म एकनेत्र चतुर्मुख ये सोलह दूसरे आवरणके देव हैं यह लघिमाका व्यूहहै अब महिमाका व्यूह कहते हैं अजेश क्षेम रुद्र सोम अंश लांगली दण्डारु अर्द्धनारीश एकांत पाली भुजंग पिनाकी खड्गी कामईश श्वेत भृगु महिमा व्यूहमें एकही आवरण है यह महिमा व्यूहहै अब प्राप्तिका व्यूह कहते हैं संवर्त लकुलीश वाडव हस्ती चण्डयक्षगणपति महात्मा भृगुज ये आठ पहिले आवरण के देवताहैं त्रिविक्रम महाजिह्व ऋक्ष श्रीभद्र महादेव दधीचि कुमार परावर महादंष्ट्र कराल सूचक सुवर्द्धन महाध्वांक्ष महानन्द दण्डी गोपालक ये दूसरे आवरणके देवताहैं यह प्राप्ति व्यूह है अब प्राकाम्य व्यूह कहते हैं पुष्पदन्त महानाग विपुल नन्दकारक शुक्लविशाल कमलविल्व अरुण ये आठ पहिले आवरण के देवता हैं रतिप्रिय सुरेशान चित्रांग सुदुर्जय विनायक क्षेत्रपाल महामोह जङ्गल वत्सपुत्र महापुत्र ग्रामदेशाधिप सर्वावस्थाधिप देवमेघनाद प्रचण्डक कालदूत ये दूसरे आवरणके

देवताहैं यह प्राकाम्य व्यूह है अब ऐश्वर्य व्यूह कहते हैं मंगला चर्चिका योगेशा हरदायका भासुरा सुरमाता सुन्दरी मातृका ये प्रथमावरण के देवता हैं औ गणाधिप मंत्रज्ञ वरदेव षडानन विदग्ध विचित्र अमोघ मोघ अश्वीरुद्र सोमेश उत्तमोदुम्बर नारसिंह विजय इन्द्र गुह प्रभु अपांपति ये सोलह दूसरे आवरणके देवहैं यह ऐश्वर्य व्यूहहै अब वशित्व व्यूह कहतेहैं गगन भवन बिजय अजय महाजय अंगार व्यंगार महायशा ये आठ प्रथम आवरणके देवता हैं सुन्दर प्रचण्डेश महावर्ण महासुर महारोमा महागर्भ प्रथम कनक खरज गरुड़ मेघनाद गर्जक गज छेदकबाहु त्रिशिख मारि ये सोलह देव दूसरे आवरणके हैं यह वशित्व व्यूह है अब कामावसायित्व व्यूह कहतेहैं विनाद विकट वसन्तभय विद्युत् महाबल कमल दमन ये आठ पहिले आवरण के देवताहैं औ धर्म अतिबल सर्प महाकाय महाहनु सबलभस्मांगी दुर्जय दुरतिक्रम वेताल रौरव दुर्द्धर भोग वज्र कालाग्निरुद्र सघनाद महागुह ये दूसरे आवरणके सोलह देवता हैं यह कामावसायित्व व्यूहहै षोडशका पहिला आवरणहै अब दूसरा आवरण कहते हैं दूसरे आवरणमें दलव्यूह प्रथम है मनोहरा महानादा चित्रा चित्ररथा रोहिणी चित्रांगी चित्ररेखा विचित्रा ये आठ शक्ति प्रथम आवरण की हैं चित्रा विचित्ररूपा शुभदा कामदा शुभा क्रूरा पिंगलादेवी खड्गिका लंबिका सती दंष्ट्राली राक्षसी ध्वंसी लोलुपा लोहितामुखी ये सोलह दूसरे आवरण की श-

क्तिहैं यह दक्षव्यूह है अब दत्तायी व्यूह सुनो सर्वास
ती विश्वरूपा लंपटा आमिषप्रिया दीर्घदंष्ट्रा वज्रा लं
बोष्ठी प्राणहारिणी ये आठ प्रथम आवरणकी शक्तिहैं
गजकर्णा अश्वकर्णा महाकाली सुभीषणा वातवेग रव
घोरा घना घनरवा वरघोषा महावर्णा सुघण्टा घंटिका
घण्टेश्वरी महाघोरी घोरा अतिघोरा ये सोलह दूसरे
आवरण की शक्ति हैं यह दत्तायी व्यूह है अब चण्ड
व्यूह कहते हैं अतिघंटा अतिघोरा कराला करभा वि
भूति भोगदा कांति शंखिनी ये आठ पहिले आवरण
की शक्ति हैं पत्रिणी गांधारी योगमाता सुपीवरा रक्ता
साठांशुका वीरासंहारी मांसहारिणी फलहारी जीवहा
री स्वेच्छाहारी तुण्डिका रेवती रंगिणी संगा ये सोलह
दूसरे आवरणकी शक्ति हैं यह चंडव्यूह है अब चण्डा
व्यूह कहते हैं चण्डी चंडमुखी चंडा चण्डवेगा महारवा
भ्रुकुटी चण्डभू चण्डरूपा ये आठ प्रथम आवरण की
शक्ति हैं चन्द्रघ्राणा वलावलजिह्वा बलेश्वरी वलवेगा
महाकाया महाकोपा विद्युता कंकाली कलशी विद्युत
चंडघोषा महाघोषा महारावा चण्डभा अनंग चंडिका
ये सोलह शक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह चण्डाव्यूह है
अब हरव्यूह कहते हैं चन्द्राक्षी कामदा सूकरा कुक्कुटा-
नना गांधरी दुन्दुभी दुर्गा सौमित्री ये आठशक्ति पहि-
ले आवरणकी हैं मृतोद्भवा महालक्ष्मी वर्णदा जीवर-
क्षिणी हरिणी क्षीणजीवा दण्डवक्त्रा चतुर्भुजा व्योम-
चारी व्योमरूपा व्योमव्यापी शुभोदया गृहचारी सु-
चारी विषहारी विषार्तिहा ये सोलह शक्ति दूसरे आव-

रणकी हैं यह हरव्यूहहै अब हरायी व्यूह कहतेहैं जंभा अच्युता कंकारी देविका दुर्द्धरा वहा चंडिका चपला ये आठ शक्ति प्रथम आवरणकी हैं चंडिका चामरी भंडिका शुभानना पिण्डिका मुण्डिनी मुण्डा शाकिनी शांकरी कर्तरी भर्तरी भागिनी यज्ञदायिनी यमदंष्ट्रा महा दंष्ट्रा कराला ये सोलह शक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह हरायी व्यूह है अब शौण्ड व्यूह कहते हैं त्रिकराली कराली कालजङ्घा यशस्विनी वेगा वेगावती यज्ञा वेदांगा ये आठ शक्ति पहिले आवरणकी हैं वज्रा शङ्खा अतिशङ्खा बला अबला अंजनी मोहनी माया त्रिकटांगी नली गण्डकी दण्डकी घोणा शोणा सत्यवती कल्लोला ये सोलहशक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह शौण्ड व्यूह है अब शौंडा व्यूह कहतेहैं दंतुरा रौद्रभागा अमृता सकुला चलजिह्वा आर्यनेत्रा रूपिणी दारिका ये आठ शक्ति प्रथम आवरणकीहैं खादका रूपनामा संहारी क्षमा अन्तका कण्डिनी पेषणी महात्रासा कृतांतिका दण्डिनी किङ्किरी त्रिम्बा वर्णिनी अमलांगिनी द्रविणी द्राविणी ये सोलह शक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह शौंडाव्यूह है अब पृथम व्यूह कहते हैं प्लवनी प्लावनी शोभा मन्दा मदोत्कटा मंदा क्षेपा महादेवी ये आठ प्रथमावरणकी शक्ति हैं कामसंदीपनी अतिरूपा मनोहरा महावशा मदग्राहा विह्वला मदविह्वला अरुणा शोषणा दिव्या रेवती भांडनायका स्तंभिनी घोररक्ताक्षी स्मररूपा सुघोषणा ये दूसरे आवरण की सोलह शक्ति हैं यह पृथम व्यूह है अब प्रथमा व्यूह कहते हैं

घोरा घोरतरा अघोरा अतिघोरा घनायिका धावनी कोष्टुका मुण्डा ये आठ पृथम आवरणकी शक्ति हैं भीमा भीमतरा अभीमा सुवर्चुला स्तंभिनी रोदिनी रौद्रा रुद्रवती अचला चपला महाबला महाशांति शाला शांता शिवा अशिवा वृहत्कक्षा महानासा ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यह पृथम व्यूहहै अब मन्मथव्यूह कहते हैं तालकरणी बाला कल्याणी कपिला शिवाज्ञप्ति तुष्टि प्रतिज्ञा ये आठ पृथम आवरणकी शक्तिहैं ख्याति पुष्टिकरी तुष्टि जलाश्रुति धृति कामदा शुभदा सौम्या तेजनी कामतन्त्रिका धर्म्मा धर्म्मवशा धर्मशीला पापहा धर्मबर्धिनी ये सोलह शक्ति दूसरे आवरणकी हैं यह मन्मथ व्यूह है अब मन्मथा व्यूह कहते हैं धर्म्म रक्षा विधाना धर्मा धर्मवती सुमति दुर्मति मेधा ये आठ पहिले आवरण की शक्ति हैं शुद्धि बुद्धि द्युति कांति वर्तुला मोहवर्द्धिनी बला अतिबला भीमा प्राणवृद्धिकरी निर्लज्जा निर्घृणा मन्दा सर्वपापक्षयंकरी कपिला अतिविधुरा ये सोलह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह मन्मथा व्यूह है अब भीम व्यूह कहतेहैं रक्ता विरक्ता उद्वेगा शोकवर्द्धिनी कामा तृष्णा क्षुधा मोहा ये आठ पृथम आवरणकी शक्तिहैं जया निद्रा भया आलस्या जलतृष्णोदरीदरा कृष्णा कृष्णांगिनी वृद्धाशुद्धा उच्छिष्टा अशनी वृषा कामना शोभनी दग्धा दुःखदा सुखदावली ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्ति हैं यह भीम व्यूह है अब भीमाची व्यूह कहते हैं आनन्दा सुनन्दा महानन्दा शुभंकरी वीतरागा महोत्साहा जितरागा म-

नोरथा ये आठ शक्ति प्रथमावरणकी हैं मनोन्मनी म-नक्षोभा मदोन्मत्ता मदाकुला मंदगर्भा महाभासा का-मानन्दा सुविह्वला महावेगा सुवेगा महाभोगा क्षया वहाक्रमणी क्रामणीवका ये दूसरे आवरण की सोलह शक्ति हैं यह भीमायी व्यूह है अब शाकुन व्यूह कहते हैं योगा वेगा सुवेगा अतिवेगा सुवासिनी मनोरयावे-गा जलावर्ता धीमती ये आठ प्रथमावरण की शक्ति हैं रोधनी क्षोभणीबाला विप्रा शेपासुशोषणी विद्युता देवी भाषिनी मनोवेगा चापला विद्युज्जिह्वा महाजिह्वा भ्रुकुटी कुटिलानना फुल्लज्वाला महाज्वाला सुज्वाला क्षयांतिका ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यहशा-कुन व्यूह है अब शाकुनायी व्यूह कहते हैं ज्वालिनी भस्मांगी भस्मांत गातता भाविनी प्रजा विद्या ख्याति ये आठ प्रथम आवरण की शक्ति हैं उल्लेखा पताका भोगा भोगवती खगा भोगा भोगव्रता भोगख्या योग पारगा ऋद्धि बुद्धि धृति कांति स्मृति श्रुतिधरा ये सो-लह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह शाकुनायी व्यूहहै अब सुमति व्यूह कहते हैं परेष्टा परादष्टा अमृता फ-लनाशिनी हिरण्याक्षी सुवर्णाक्षी कपिञ्जला कामरेखा ये आठ प्रथमावरण की शक्तिहैं रत्नद्वीपा सुद्वीपा रत्न-दा रत्नमालिनी रत्नशोभा सुशोभा महाशोभा महाद्युति शांवरी वंधुराग्रंथि पादकर्णा करानना हयग्रीवा जिह्वा सर्व्वाभासा ये सोलह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह सुमति व्यूहहै अब सुमत्यायी व्यूह कहते हैं सर्व्वाशी महाभक्षा महादंष्ट्रा अतिरौरवा विस्फुलिंगा त्रिलिंगाक्ष-

तांता भास्करानना ये आठ प्रथमावरणकी शक्ति हैं रागा रंगवती श्रेष्ठा महाक्रोधा रौरवा क्रोधनी वसनी कलहा महाबला कलंतिका चतुर्भेदा दुर्ग्गा दुर्गमानिनी नाली सुनाली सौम्या ये सोलह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह सुमत्यायी व्यूहहै अब गोपव्यूह कहते हैं पाटली पाटवी पाटी बिटिपिटा कंकटा सुपटा प्रघटा घटोद्भवा ये आठ शक्ति पहिले आवरणकी हैं नादाक्षी नादरूपा सर्व्वकारी गमा अगमा अनुचारी सुचारी चण्डनाडी सुवाहिनी सुयोगा बियोगा हंसा विलासिनी सर्व्वगा सुविचारा वंचनी ये दूसरे आवरणकी शक्ति हैं यह गोप व्यूहहै अब गोपायी व्यूह कहते हैं भेदिनी छेदिनी सर्वकारी क्षुधाशनी उच्छुष्मा गांधारी भस्माशी बड़वानला ये आठ पहिले आवरण की शक्ति हैं अन्धा बाह्वा सिनीवाली दीपनामा अक्षा त्र्यक्षा हृल्लेखा हृद्गता मायिका आमयासादिनी भिल्ली सह्या सरस्वती रुद्रशक्ति महाशक्ति महामोहा गोनदी ये सोलह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह गोपायीव्यूहहै अब नन्दव्यूह कहते हैं नंदिनी निवृत्ति प्रतिष्ठा विद्या नासा खग्रासिनी चामुंडा प्रियदर्शिनी ये आठ शक्ति प्रथम आवरणकी हैं ब्राह्मा नारायणी मोहा प्रजा देवी चक्रिणी कंकटा काली शिवा घोषा विरामा वागीशी वाहिनी भीषणी सुगमा निर्दिष्टा ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्ति हैं यह नंदव्यूहहै अब नंदायी व्यूह कहते हैं विनायिकी पर्णिमा रंकारी कुण्डली इच्छा कपालिनी द्विपिनी जयन्तिका ये आठ पहिले आवरण की शक्ति हैं पावनी अंबिका सर्व्वात्मा

पूतना छंगली सोदिनी लम्बोदरी संहारी कालिनी कुसुमा शुक्रा तारा ज्ञाना क्रिया गायत्री सावित्री ये सोलह दूसरे आवरण की शक्ति हैं यह नन्दार्यी व्यूह है अब पितामहव्यूह कहते हैं नंदिनी फेत्कारी क्रोधा हंसा षडंगुला आनंदा वसुदुर्गा संहारा अमृता ये आठ प्रथमावरणकी शक्तिहैं कुलांतिका नला प्रचंडा मर्दिनी सर्वभूता भया दया वड़वामुखी लम्पटा पन्नगा कुसुमा विपुला अंतका केदारा कूर्मा दुरिता मंदोदरी खड्गचक्रा ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यह पितामह व्यूह हैं अब पितामहायी व्यूह कहते हैं वज्रा नन्दना शावा राविका रिपुभेदिनी रूपा चतुर्था योगा ये प्रथम आवरण की आठशक्ति हैं भूतनादा महाबला खर्परा भस्मा कांता दृष्टि ब्रह्मरूपिणी सह्या वैकारिका जाता कर्णमोटा महामोहा महामाया गांधारी शब्दायी महाघोषा ये सोलह दूसरे आवरणकी शक्तिहैं यह पितामहायी व्यूह है ये सब देवी दोनों भुजाओं में पद्म औ शंख धारण किये बालसूर्य के समान अरुणवर्ण शान्तस्वरूप रक्त वस्त्र औ संपूर्ण भूषणों से अलंकृत मोती औ भांति २ के रत्नोंसे जड़ेहुये मुकुटोंसे भूषित औ गौर वर्ण हैं ॥

इसभांति सुवर्ण आदि के हज़ार कलश रुद्रक्षेत्र में स्थापनकर प्रत्येक कलशमें विष्णुभगवान् के कहे हज़ार भव आदि नामोंकरके पूजनकर संमुखबाण लिंग स्थापनकर अभिषेक करै इन हज़ार कलशोंमें चालिस व्यूहोंकी पूजाकरै सवकलश सुगंधिजलसे पूर्ण पंचरत्न औ सुवर्णयुक्त चाहिये औ मध्यका मुख्यकलश गोघृत

से दुग्धसे अथवा दहीसे पूर्ण करनाचाहिये औ घृत द-
धि दुग्ध पंचगव्य अथवा ब्रह्मकूर्च करके रुद्राध्यायसे
रुद्रका अभिषेककर राजाका अभिषेककरै अघोरमंत्रसे
हवनकर इसीमंत्रसे राजाका अभिषेककरै देवकुंड अथ-
वा स्थंडिलमें समिधा घृतचरु लाजा शालि नीवारचा-
वलआदि करके अष्टोत्तर शतहवनकर पूर्वाभिमुख रा-
जाका अधिवासनकरै फिर पुण्याहवाचन औ स्वस्ति
वाचनकर सुवर्णका कंकणभस्म औमृणाल अर्थात् क-
मलकी जड़ सहित राजाके दहिने हाथमें धारण करावे
फिर त्र्यम्बक मंत्रसे हवनकर राजाका अभिषेक करै
फिर पंचब्रह्म मंत्रोंकरके सब द्रव्योंसे हवनकरै स्वाहांत
तत्पुरुष मंत्रसे पूर्वदिशाके कुंडमें होम करै कृष्णवस्त्र प-
हिन अघोर मंत्रसे दक्षिण कुंडमें होमकरै वामदेव मंत्र
से पश्चिमके कुंडमें औ सद्योजात मंत्रसे उत्तरदिशाके
कुंड में हवनकरै अग्निकोणके कुंडमें "योरुद्रोअग्नौ"
इत्यादि औ "जातवेदसेसुनवामसोमम्" इत्यादि मंत्र
करके हवनकरै नैर्ऋत्य कोणके कुंडमें निमि निशि दिश
स्वाहा खड्ग राक्षस भेदन "रुधिराज्यार्द्रनैर्ऋत्यैस्वाहा
नमःस्वधानमः" इस मंत्रसे सब द्रव्यों करके हवन करै
वायव्य कोणके कुंडमें "ईशानाय कद्रुद्रायप्रचेतसेत्र्यंब
कायशर्वायतन्नोरुद्रःप्रचोदयात्" इस मंत्रसे हवन करै
ईशान कुंडमें ईशान मंत्रसे हवनकर प्रधानकुंडमें भी
ईशान मंत्रसेही हवनकरै इस भांति प्रतिकुंडमें एक २
सहस्र हवन आचार्यकरै अथवा शिवभक्त राजा अपने
हाथसेही हवनकर अघोर मंत्रसे प्रायश्चित्त करै फिर

आचार्य्य ब्रह्मकूर्च के जलसे रुद्राध्याय करके राजाका अभिषेक करे अभिषेकके समय शंखभेरी आदि बाजों के शब्द वेदघोष औ जयशब्द होने चाहिये इसप्रकार रुद्राक्ष औ विभूतिसे भूषित राजाका अभिषेककर छत्र चामर ध्वजा पालकी शंख भेरी आदि उपकरणभी राजाके लिये विधिसे आचार्य साधनकरै येसब उपकरण राज्याभिषेक युक्त क्षत्रियके लियेहैं साधारण क्षत्रियको इनका अधिकार नहीं मण्डपकी चारों दिशाओं में पूर्व्वादि क्रम से पलाश गूलर पीपल औ वड़ के तोरण लगावै औ रेशम के वस्त्रकी पट्टिका अर्थात् पताकाओं से भूषित करै तोरणोंपर पलाश आदि वृक्षों की बारह बारह अंगुल की शाखा बांधै औ आठ आठ अंगुल के दर्भोंकी माला करके मण्डपको अलंकृत करै आठों दिशाओंमें ध्वजा पताका सुवर्ण के कलश आदिसे मण्डप को शोभित कर राजा का अभिषेक करै "तन्महेशायविद्महेवाग्विशुद्धायधीमहितन्नः शिवः प्रचोदयात्" इस मंत्र करके शिवकुंभके जलसे गौरी गायत्री करके वर्द्धनीके जलसे औ रुद्राध्याय तथा अघोर मंत्र करके और कुंभों के जलसे राजाका अभिषेक कर दिव्यवस्त्र भूषण मुकुट आदिसे राजा को अलंकृत करै राजा भी अड़सठपल सुवर्णका रत्न जटित सुदर्शन चक्र बनाय गुरुको दक्षिणादेवै औ दशउत्तम गौवस्त्र भूमिसौद्रोण तिल सौद्रोण चावल वाहनतकिये औ बिछौने सहित पलँग भी गुरुके अर्पणकरै और जो योगी होय उनको तीस तीस पल सुवर्ण तथा इससे आधी सामग्री देवै

और इस से भी आधी प्रत्येक साधारण शिवभक्त को देवै इसभांति सबको प्रसन्नकर श्रीमहादेवजी की महापूजाकरै यह जयाभिषेक का संक्षेप से विधान कहा है इस अभिषेकके करनेसे इंद्र ब्रह्मा विष्णुआदि देवता उत्तम २ अधिकारोंको प्राप्तभये पार्वती सावित्री लक्ष्मी आदि इसी अभिषेकसे परम सौभाग्यको प्राप्तभई नन्दीने रुद्राध्याय से यह अभिषेक कर मृत्यु को जीता तारक विद्युन्माली हिरण्याक्ष आदि बड़े २ प्रतापी दैत्य विष्णु भगवान् ने इसी अभिषेकके प्रभावसे जीते नृसिंहजीने हिरण्यकशिपु स्कंद ने तारकासुर औ भगवतीने सुन्द उपसुन्दके पुत्र बड़े वीर वसुदेव औ सुदेव इसी अभिषेकके बलसे मारे देवताओंने दैत्यों को इसीके सामर्थ्यसे जीता औरभी अनेक राजा तथा ब्राह्मण इसअभिषेकसे उत्तम सिद्धिको प्राप्तभये कहांतक इस अभिषेकका माहात्म्य वर्णन करें इससेही सिद्ध मृत्युको जीत अमरभये करोड़ों कल्पोंके संचित कियेहुये बड़े २ पाप इस अभिषेकके करनेसे क्षणमात्रमें निवृत्त होजातेहैं क्षयकुष्ठ आदि महारोग भी इस अभिषेक से निवृत्त होते हैं जिस राजा का इस विधि से अभिषेक कियाजावे वह सदा जय पावै औ पुत्र पौत्र धन धान्य आदिसे परिपूर्ण होजाय सब पाप निवृत्त होयँ प्रजाका उसमें दृढ़ अनुरागहोय औ साक्षात्इंद्रही होजाय शिवजी कहते हैं हे स्वायम्भुवमनु राजाओंके हितके अर्थ यह जयाभिषेक का विधान हमनेसंक्षेपसे वर्णन किया है इस अभिषेकसे अवश्यही शत्रुओंसे जय मिलताहै ॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो इसभांति श्रीशंकर से जयाभिषेक का विधान सुन स्वायम्भुव मनु अपना जयाभिषेक करताभया औ जयाभिषेककर महादेवजी के समीप जाय उनके दर्शनपाय भक्तिसे बारंबार शिर नवाय रुद्राध्याय से स्तुति करताभया शिवजीने मनुकी भक्ति देख कहा कि हे मनु बहुत काल निष्कंटक राज्य कर अन्तमें कर्मकरके तेरामोक्ष होगा इतना कह शिव जी अन्तर्द्धानभये और मनु शिवजी को प्रणामकर मेरु पर्वतको गये वहांजाय सनत्कुमारजीको देख भक्तिसे नमस्कार औ स्तुति करतेभये सनत्कुमारजीने भी मनुको देख कहा कि हे राजन् शिवजी के अनुग्रह से तुम्हारा जयाभिषेक भया अब और जो कुछ पूछनेकी इच्छाहोय पूछो हम कहेंगे यह सनत्कुमारजीका वचनसुन हाथ जोड़ नम्रता से मनुने कहा कि महाराज कर्म से क्योंकर मुक्ति होसक्ती है यह आप वर्णन करें कि कर्म्म से ज्ञान से अथवा कर्म्म औ ज्ञान दोनों मिलने से मुक्ति होती है यह मनुका वचन सुन वेदका सार जाननेहारे सनत्कुमार बोले कि हे मनु कर्म से औ मिश्र अर्थात् कर्मयुक्त ज्ञानसे क्रमकरके मुक्तिहोती है औ शुद्धज्ञान से क्षणमात्र में मुक्ति मिलती है॥

पूर्वकालमें नन्दीका अवमान करने से नंदीके शाप करके हम उष्ट्र होगये फिर बहुत काल पर्यन्त शिवजी का आराधन किया तब नन्दी के अनुग्रह से उष्ट्रयोनि

का त्यागकर ब्रह्मपुत्र भये और शिवधर्म्म की रीति से शिवजी का अर्चनकर उत्तमगति को प्राप्त भये नन्दि-केश्वर ने राजाओं को धर्म्म अर्थ काम और मोक्षकी प्राप्तिके लिये तुलादान आदि षोड़शदान कहे हैं उस दानरूप कर्मसे राजाओं की मुक्ति होतीहै अब हम पहिले तुलादान का विधान कहते हैं ग्रहण आदि पुण्य कालोंमें उत्तमक्षेत्रके ऊपर बीसहाथ अठारहहाथ अथवा सोलह हाथका मंडप अथवा चौतरा बनाय उस के मध्यमें नौहाथ की आठहाथकी सातहाथ की दोही हाथकी अथवा डेढ़हाथकी विस्तार वाली अतिसुन्दर वेदी बनावै जिसमें चारों ओर बारह स्तम्भ खड़ेहोंयँ इसभांति वेदीरच चारोंओर नौकुण्डरचै पूर्व औ ईशानके मध्यमें मुख्यकुंड चतुरस्र अथवा योनिके आकार बनावै स्त्रियों के लिये विशेष करके योनि कुण्डही बनाना चाहिये औ आठों दिशाओं में अर्द्धचन्द्र त्रिकोण वर्त्तुल षडस्र योनि पद्म अष्टास्र औ चतुरस्र बनावै जो कुंड न बनसकै तो स्थंडिलही बनालेवै चार द्वार चारतोरण आठध्वजा दर्भमाला वितान औ अष्ट मंगलों करके युक्त अति मनोहर मण्डप बनाय उसमें तुला स्तम्भ खड़े करै बिल्व पीपल अथवा खदिर का तुला स्तम्भ बनावै जिस काष्ठका स्तम्भ बनावै उसी काष्ठके सब उपकरण रचै अथवा मिश्र काष्ठके बनावै वा केवल बांसकीही सबवस्तु बनालेवै दश २ हाथ के दो स्तम्भ गोल औ निर्व्रण बनाय दोदो हाथ भूमिमें गाड़दे औ आठ हाथ बाहर रक्खै स्तम्भों का व्यास

अर्थात् मोटाई एक २ वितस्ति चाहिये नीचेसे स्तंभों का अंतर दो अंगुल न्यून छः हस्त औ ऊपरसे पूरे छः हस्त चाहिये अथवा चार हस्तही अंतर दोनों स्तंभों का रक्खै औ तुलादण्ड के मध्य में तथा दोनों अग्रों में सुवर्ण के छत्तीस वन्द लगावै औ सुन्दर गोल तुला दण्ड बनाय ताम्र अथवा पीतल के तीन अवलम्बन अर्थात् कड़े लगावै लोहे के न लगावै मध्यका अवलम्बन ऊर्ध्वमुख बनावै तुलाके मध्यमें एक जिह्वा लटकावै मध्य में दृढ़शंकु औ शंकुके ऊपर कड़ा लगाय उस कड़ेमें वितानसे ढकेहुये तुलादण्डको लटकावै दण्डके दोनों ओर दो छीके लगाय उनके नीचे शुभद्रव्य के दो पिण्ड अर्थात् गोले लगावै दो गोले एकहजारपल छः सौ पल अथवा अष्टोत्तर शत पलके बनावै उनका विस्तार चारताल अथवा साढ़ेतीन ताल चाहिये उस के ऊपर एक चारद्वार करके युक्त पञ्चपात्र बांधे द्वार एक २ अंगुल के बनावै चारोंद्वार अर्थात् छिद्रों में श्वेतवर्ण के कुण्डल अर्थात् कड़े लगाय उनमें शृङ्खला बांध उस शृङ्खलाके कड़ेको अवलम्बन में लटका देवै कि जिसमें भूमिसे एक प्रादेश अथवा चार अंगुल ऊंचा रहै पुरुष प्रमाण दोघट बनाय वालूरेतसे भर उन के ऊपर शिवजी का स्थापनकर दो हाथ गहरे गढ़े में उन घटों को रख चारोंओर वालूरेत भरदेवै जिससे वे निश्चल होजायँ फिर वेदीके ऊपर आठ अंगुल विस्तारकी भूमिको दर्पणके उदरकी भांति स्वच्छ कर उसके ओर पास मंगलांकुर धूप दीप पुष्प आदि रख पूर्वरी-

तिसे उस भूमि में चार द्वार शोभा उपशोभा युक्त औ कर्णिका केसर सहित मण्डललिख पांच रंगोंसे रंगकर पर्व्वदिशामें वज्र अग्निकोण में शक्ति दक्षिण में दण्ड नैर्ऋत्यमें खड्ग पश्चिममें पाश वायव्यमें ध्वजा उत्तर में गदा ईशानमें त्रिशूल औ त्रिशूलके बाईं ओर चक्र औ दहिनी ओर पद्मलिखै इस प्रकार मंडल रच हवन करै मुख्यहोम गायत्री मंत्रसेकर 'शक्रायस्वाहा' 'अग्नयेस्वाहा' इत्यादि मंत्रों से दिग्पाल हवन करै आदि में प्रणव औ अन्तमेंस्वाहा लगाय अपनी शाखाकी रीति से जयादि स्विष्ट पर्यंत विधिसे हवन करै इस होममें पलाशकी इक्कीस समिधा इसमंत्र करके हवन करै "ॐ अयन्तइध्मआत्माजातवेदस्तेनेद्धस्ववर्द्धस्वचेद्ध वर्द्धय चास्मान्प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येनसमेधयस्वाहा भूःस्वाहाभुवःस्वाहास्वःस्वाहाभूर्भुवःस्वःस्वाहा ॥ चरु घृतशुक्लान्न अर्थात् भातपायसमुद्गान्न सहित समिधा का हवन करै एकहजारपांचसौ अथवा अष्टोत्तर शत हवनकर अग्नआयूंषिपवसआसुवोर्ज्जमिषञ्चनः आरेवाधस्वदुच्छुनामग्निर्ऋषिः पवमानःपाञ्चजन्यःपुरोहितःतमीमहेमहागयमग्नेपवस्वस्वपाअस्मेवर्चःसुवीर्यंदधद्रयिंमयिपोषं प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वाजातानिपरिताबभूवयत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयंस्याम पतयोरयीणाम् ॥ इस मन्त्र से भी हवनकरै प्रधानहोम रुद्र गायत्री करके समिधाओंसे करै चरु करके इन्द्रादि दिग्पाल हवन औ घृत करके वज्रादिकोंको पांचसौ आहुति देवै ब्रह्मयज्ञे इत्यादि मन्त्र करके ब्रह्माको औ

"नारायणायविद्महे वासुदेवायधीमहि तन्नोविष्णुःप्रचोदयात्" इस नारायणगायत्री करके विष्णु भगवान् की प्रीतिके लिये हवनकरै फिर ॥ ॐत्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ इसमंत्र करके दुग्ध औ दूर्वाकी पचीस आहुतिदेवै यह दूर्वाहोम सबसे उत्तमहै औ वास्तुहोम भी उत्तमहै इसभांति हवनकर प्रायश्चित्तके लिये अघोर मंत्र करके घृतसे दशहजार हवनकरै पीछेदक्षिण भागमें ब्रह्मा वाम भागमें विष्णु मध्यमें पार्वती सहित सदाशिव जिनके चारोंओर इन्द्रादि देवताओंका पूजनकर आदित्य, भास्कर, भानु, रवि, दिवाकर, उषा, प्रभा, प्रज्ञा, सन्ध्या औ सावित्री की पंचप्रकार विधि से पूजाकर विष्टरा सुभगा वर्द्धनी, प्रदक्षिणा औ आप्यायिनीका यजनकरै फिर पूर्वदिशामें प्रभूत दक्षिणमें विमल पश्चिममें सार उत्तरमें आराध्य औ मध्य में सुख की पूजाकर केसरोंमें दीप्ता आदि आठशक्ति औ बीच में सर्वतोमुखी को पूजै औ सोम, भौम, बुध, बृहस्पति शुक्र, शनि, राहु औ केतुकाभी अर्चनकर हवनकरै पीछे शिवतत्त्व के जाननेहारे औ वेदाध्ययन में निपुण शिव योगियोंको भोजन करावै हवनके समय रुद्राध्याय का पाठ करताहुआ आचार्य राजाको तुलाके ऊपर चढ़ावै औ राजाभी एक घड़ी आधी घड़ी अथवा पावघड़ीही रुद्रगायत्री जपताहुआ तुलाके ऊपर बैठारहै औ राजा भूषण वस्त्रोंसे अलंकृत खड्ग औ खेटक अर्थात् ढाल धारण कर तुलापर चढ़े औ ब्राह्मण कुश कूर्च हाथमें

ले तुलाके ऊपर आरोहण करे इसभांति तुलापर चढ़ सूर्यविम्ब का दर्शन करे आदिमें तथा अन्तमें स्वस्ति वाचन पुण्याहवाचन जय मंगल शब्द वेद घोष औ नृत्यगीत आदिभी करावे उत्तर दिशाकी ओर तुला में सुवर्ण चढ़ावे औ दोनोंतुलाधार समान तथावर्त्तुल बनावे जिससे तुलाभार स्थिर रहै सौनिष्क अर्थात् मोहर का तुलापुरुष उत्तम पचास निष्कका मध्यम औ पचीस निष्कका कनिष्ठ होताहै धर्मकृत्यके आरंभमेंही दोवस्त्र पगड़ी,कटक,कुंडल,कंठ,भूषण,अंगुलीयकआदि भस्म धारण करनेहारे शैवाचार्यको देवै एक एक धोती जोड़ा पगड़ी औ भूषण सब ऋत्विजोंको देवै सौनिष्क अथवा पचास निष्क आचार्य को दक्षिणा देवै औ एक एक निष्क सब योगियोंको देवै तुलाका सुवर्ण प्रासाद मंडप भूषण सुवर्णके पुष्प खड्ग औ पटह आदि बाजे शिवजीके अर्पण करे औ जो कुछ शेष रहै वह आचार्य को देवै बन्दीघर में जितने बँधुवे होयँ सबको छोड़देवै औ जल, घृत, दुग्ध, दही सब द्रव्य ब्रह्मकूर्च अथवा पंचगव्यके हजार कलशों से शिवजी को स्नान करावै पंचगव्यमें गायत्रीसे गोमूत्र प्रणवसे गोबर आप्यायस्व इत्यादि मंत्रसे गोदुग्ध दधिक्राव्ण इत्यादि मंत्रसे गोदधि औ तेजोऽसि इत्यादि मंत्रसे गोघृत ग्रहण करे ईशान मंत्रसे शिवजीका अभिषेक करे औ देवस्यत्वा इत्यादि मंत्र करके कुशायुक्त जलसे सदाशिवको स्नानकरावै रुद्राध्यायसेभी परमेश्वरका अभिषेक करै औ विष्णुभगवान के कहे तण्डि ऋषि के कहे अथवा द-

त्तप्रजापतिके कहे हजार शिवनामों से हजार कलशों करके शिवजीका अभिषेक कर भक्तिसे पूजा करै परम शिवभक्त अपने गुरुको दक्षिणा देवै औ तुलाद्रव्य ऋत्विजोंको बांट देवै औ बाल,वृद्ध,दीन,अन्ध,दुर्बल आदिकोंको भोजन कराय दक्षिणादे प्रसन्न करै ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे मनु सबदानों में मुख्य तुलादान का विधान तो आप को श्रवण कराया अब हिरण्यगर्भ दानका वर्णन करते हैं एकपात्र हज़ार सुवर्ण अर्थात् मोहर का बनवाय पांचसौ सुवर्ण का उसके ऊपरकापात्र अर्थात् ढकना बनालेवै उनपात्रोंको सब अलङ्कारों से भूषितकरै नीचे के पात्रमें त्रिगुणात्मक ब्रह्म विष्णु अग्निस्वरूपा औ चतुर्विंशति तत्त्वरूपिणी भगवती का औ गुणातीत तथा षड्विंशतिक अर्थात् छब्बीसवें तत्त्वरूप सदाशिव का ध्यानकर आत्मा को पचीसवें तत्त्व पुरुषका ध्यानकरै पहिलीभांति वेदी औ मण्डल बनाय शालिके ऊपर उसपात्र को स्थापनकर नये वस्त्रोंसे ढक माष अर्थात् उड़द के उवटनेसे लीप ईशान आदि पांच मंत्रोंसे पंचोपचारों करके उसपात्र की पूजाकरै शिवपूजा औ होम भी पहिली भांति करै गायत्री का जप करता हुआ पूर्वाभिमुख बैठ विधि से गर्भाधान आदि सोलह संस्कारकरै दूर्वा के अंकुरोंकरके दक्षिण पुटमें सेचनकरै गूलर के फलों समेत इक्कीस कुशाके जल करके ईशान दिशामें सीमंत कर्मकरै तीस

निष्कसुवर्णकी कन्या बनाय उसको सब भांतिके भूष-ण वस्त्रोंसे अलंकृतकर हवनकर शिवजीको समर्पणकरै अन्नप्राशन संस्कारमें पायस आदि भोजन करावे इस भांति गर्भाधानसे विश्वजित् पर्यन्त सब संस्कार वेद-वेत्ता ब्राह्मण शक्तिबीजसे करै औ बाकी सब कृत्य तु-लादान की भांति इससे भी करै ॥

तीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहतेहैं कि हे मनु अब तिल पर्व्वत दानकी विधि कहते हैं पहिले स्थान औ काल में तिल पर्व्वत का दानकरै प्रथम भूमि को भली भांति गोबर आदि से लीप पञ्चगव्य से उस भूमिको प्रोक्षण कर चारों ओर मण्डल बनाय बीचमें दशताल ऊंचा एक बांस खड़ाकर उसके चारोंओर तिलोंके भार गेरै उस बांससे एक प्रादेश ऊपरतक तिल चढ़ जायँ तो उत्त-म प्रादेशसे चारअंगुल न्यून होयँ तो मध्यम औ बांस के तुल्यही तिलहोयँ तो निकृष्ट पक्ष है परन्तु बांसके प्रमाणसे तिल न्यून न होनेचाहिये इसभांति तिलोंका पर्वत बनाय नये वस्त्रोंसे वेष्टित कर सद्योजात आदि का न्यासकर विधिसे पूजाकरै औ तीन २ निष्कसुवर्ण की आठ मूर्त्ति पहिली भांति बनाय आठों दिशाओं में स्थापन करै दक्षिणा औ होम तुलादानकी भांति यहां भी है तिल पर्वतके मध्य में तिल पर्वत रूप सदाशिव का यजन करै औ लोकपालों की पूजा करै सहस्र घट आदि से शिवार्चन कर तिल पर्वत के मध्य में स्थित

देवदेव श्रीमहादेवजीका सबको दर्शन कराय विसर्जन करै औ वेदवेत्ता सदाचार औ दरिद्री ब्राह्मण को वह तिल पर्व्वतदेवै यह तिल पर्वत का दान सब दानों में प्रधान है॥

इकतीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहतेहैं कि हे राजामनु एक और तिल पर्वत के दानकी विधि कहते हैं जिससे द्रव्य का व्यय थोड़ासाहोय औ फल बहुतमिलै गोबरसे भूमिको लीप उसमें उत्तम वस्त्र विछाय उसके ऊपर तीन भार तिल गेरै औ दशनिष्क अथवा पांचनिष्क सुवर्णका कर्णिका औ केसरों सहित अष्ट दल कमल बनाय उन तिलों पर रक्खै पद्मके बीच शिवजीका स्थापनकरै औ तीन निष्क सुवर्ण की शक्ति प्रतिमाबनावै फिर वामदेव आदि अष्ट मूर्तियों सहित सदाशिवका पूजनकर आठों दिशाओं में अष्ट विनायकों की पूजाकरै विनायकोंकी मूर्तिभी तीन तीन निष्ककी बनावै इसभांति पूजाकर सब वस्तु दरिद्र ब्राह्मणको देवै तो बहुतफल होताहै॥

बत्तीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहतेहैं कि हे मनुजी अब सुवर्ण पृथ्वीके दानका विधान कहतेहैं पहिली भांति उत्तम स्थान औ उत्तम कालमें एकहजार मोहरकी चतुरस्र औ एक हाथ लंबी चौड़ी अतिसुन्दर भूमि बनावै उसके बीच सात समुद्र सात द्वीप संपूर्ण तीर्थ औ मध्यमें मेरु पर्वत बनावै अथवा मध्यखण्ड के नौभागकरै इसभांति सुवर्ण की पृथ्वी बनाय पहिलीभांति मंडल औ वेदीरच उस

भूमिका दानकर शिवभक्तको देवै औ हजार मोहरका सप्तमांश दक्षिणा देवै औ सहस्रघट आदिकरके भक्तिसे शिवजीकी पूजाकरै यहसुवर्ण मेदिनीदान सबदानों में श्रेष्ठहै औ इसके करनेसे बहुतउत्तम फल प्राप्तहोताहै ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे मनु अब कल्पवृक्ष के दानकी विधि कहतेहैं सौनिष्क सुवर्णका कल्पवृक्ष बनावै औ उसकी शाखाओंमें मोतियोंकी मालालटकावै मरकत अर्थात् पन्नेके अंकुर प्रवाल अर्थात् मूंगेके कोमल पत्र पद्मरागोंकेफल नीलमणिका मूल हीरोंके स्कन्ध वैडूर्यसे वृक्षका अग्र पुखराजसे मस्तक गोमेदरत्नसे स्कंध औ सूर्यकांत चन्द्रकांत अथवा स्फटिककी वेदी वृक्ष के चारोंओर बनावे इसभांति एक वितस्ति ऊंचा कल्प वृक्ष बनावै औ उसकी आठशाखा भी इसी प्रमाण सरचे वृक्षके मूल में लोकपालों सहित शिवजी को स्थापनकरै पहिली भांति मण्डल औ वेदीबनाय उसपर वृक्षस्थापनकर शिवजी की औ लोकपालों की पूजाकरै औ जप होम आदि तुलादानकी भांति सबकरै औइस वृक्षको दान करके शिवजी के अर्पणकरै अथवा भस्म धारण करनेहारे शिवयोगियोंको देवै इसदानका करनेहारा पुरुष दूसरे जन्ममें सार्वभौम राजा होताहै ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे मनु अब गणेशदान कहतेहैं पहिलीभांति मंडपबनाय लोकपालोंसहित सदा

शिवका पूजनकरै दशनिष्क सुवर्णके दशदिग्पाल शास्त्रकी रीतिसे बनाय सब भूषणों से भूषितकर विधिसे पूजनकरै आठोंदिशाओंके आठकुण्डोंमें पहिली भांति पंचावरणकी रीतिसे औ परंपराके क्रमसे हवनकर सात ब्राह्मण औ उत्तम दिशामें स्थित एककन्याकी पूजाकरै पीछे अपने२ मंत्रों करके क्रमसे सब देवता मूर्त्तियों का दानकरै इस विधिसे दान करनेहारा सब पापों से मुक्त होताहै ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे मनुजी सब पाप औ उपद्रव दूर करनेहारा औ ग्रहपीड़ा तथा दुर्भिक्षका निवारक सुवर्ण धेनुदान कहते हैं हजारमोहर पांचसौ मोहर अथवा सौ मोहरकी एक गौ बनावे जिसके खुरोंमें हीरे सींगोंमें पद्मराग भ्रू मध्यमें मोती दन्तोंमें पुखराज पुच्छमें इन्द्रनील औ चारों स्तनोंमें वैडूर्य मणि लगावै इसीभांति सब रत्नोंसहित दश निष्क सुवर्ण करके गौ का बछड़ा बनाय दोनोंको वेदीके मध्यमें रचे हुये मंडलके ऊपर स्थापनकर दोवस्त्रों से वेष्टितकरै पीछे गायत्री मन्त्रसे वत्स सहित गौका पूजनकर पहिली भांति हवनकरै औ घृत आदि से शिवजीको स्नानकराय गायत्री मन्त्रसे उसधेनुको शिवजी के अर्पणकरै औ तीस मोहर दक्षिणा देवै ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहते हैं कि राजामनु सब ऐश्वर्य्योंकी वृद्धि करनेहारे लक्ष्मीदान का विधान हम वर्णन कर-

तेहँ पहिली भांति मण्डप औ वेदी बनाय हजारमोहर पांचसौ मोहर अथवा एकसौ आठ मोहर की सब लक्षणों करके युक्त लक्ष्मी की मूर्त्ति बनाय वस्त्र भूषणोंसे अलंकृत कर वेदी के ऊपर मण्डल के मध्यमें स्थापन कर श्रीसूक्तसे पूजाकरे औ उसके दक्षिण भागमें स्थण्डिलके ऊपर विष्णु गायत्री करके विष्णु भगवान् का अर्चनकरै विधिपूर्वक लक्ष्मीका पूजनकर पहिली रीति से हवनकरे प्रथमें समिधा होमकर अष्टोत्तर शत आहुति घृतकी देवै फिर यजमान को बुलाय पूर्व दिशामें बैठाय विष्णु सहित लक्ष्मीका दर्शन करावै वहभी दर्शनकर दण्डवत् प्रणाम करे पीछे भक्ति से शिवपूजन कर उसमूर्त्तिका दानकरै औ मूर्त्तिके बीसवें भागके तुल्य आचार्य्य को दक्षिणा देवै औ और भी शिवभक्तों को यथायोग्य दक्षिणा देकर प्रसन्न करे आचार्य्य भी यजमान से शिवजी की प्रीतिके लिये हवन करावै इस दानके करने से ऐश्वर्य्य की वृद्धि होती है॥

सैंतीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार जी कहते हैं हे मनु अब हम तिलधेनु दानकी विधि कहते हैं पहिली भांति मंडप बनाय वेदी रच उसके मध्यमें मण्डल बनावै तीसनिष्क पंद्रहनिष्क अथवा साढ़ेसात निष्क सुवर्णकाही कमल बनाय मण्डल के मध्यमें स्थापनकर तिल पुष्प भी बनवाकर स्थापन करे पद्म के उत्तर की ओर ग्यारह ब्राह्मणोंको बैठाय उनका गंध पुष्प आदिसे पूजन करे और धोती

जोड़ा, दुपट्टा, पगड़ी, कुंडल, सुवर्ण की अंगूठी ब्राह्मणों को देवै और प्रतिब्राह्मण के आगे एक २ वस्त्र बिछाय उनपर तिल कांस्य पात्र, इक्षुदण्ड अर्थात् ईख उनके आगे रक्खे कांस्यके ग्यारह पात्र सौपल के बनावे दो निष्क सुवर्ण के गोशृङ्ग और दो निष्क चांदी के खुर बनाकर उन तिलोंपर रक्खे और रुद्रके ग्यारह मन्त्रों करके ग्यारह रुद्रोंको वे तिल धेनु समर्पणकरे इसीभांति पद्मके पूर्वकी ओर बारह ब्राह्मणों का पूजनकर द्वादश आदित्य के मंत्रों करके बारह आदित्यों को तिल धेनु अर्पण करे औ पद्मके दक्षिणभाग में सोलह ब्राह्मणों की पूजाकर पहिलीभांति अष्टमूर्त्ति औ अष्टविनायक मंत्रोंसे तिलधेनु का दानकरै इसप्रकार क्रम से यजमान दानकरै अथवा केवल रुद्रों को आदित्यों को वा अष्टमूर्त्ति औ अष्टविनायकों कोही देवै इसभांति पद्म स्थापनकर राजा दानकरै औ शेष कृत्य पूर्वरीति से कर पांचनिष्क सुवर्ण गुरुके अर्पणकरै॥

अड़तीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे राजा मनु अब हम गौ सहस्र दानकी विधि कहते हैं एक हजार सुलक्षण औ बछड़ों सहित गौ लाकर उनकी शास्त्ररीति से पूजाकरै औ उनमें से आठ गौओंके सींग एक २ निष्कसुवर्ण से खुर एक २ निष्क चांदीसे मढ़ एक २ निष्क सुवर्णका कण्ठ भूषण पहिनाय कानोंमें वज्राभरणसे भूषित कर शिवजी के अर्पणकरै औ ब्राह्मणों का पूजनकर

एक २ गौ दो २ वस्त्र औ दश २ पांच २ अथवा एक २ निष्कही सुवर्ण उनके अर्पणकरै इसभांति दानकर विधिसे शिवजी का अर्चन करै औ गौओं के आगे हाथ जोड़ यह श्लोकपढ़ै कि॥ गावोममाग्रतोनित्यं गावोनः पृष्ठतस्तथा । हृदयेमेसदागावो गवांमध्येवसाम्यहम् यहपढ़ प्रदक्षिणाकर ब्राह्मणोंको देवै तो जितनेगौओं के रोमहोयँ उतनेवर्ष स्वर्गमें आनन्दसे निवासकरै॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे राजामनु विजय को देनेहारे सुवर्णाश्वदानका विधान कथन करते हैं जिसदान के करनेसे अश्वमेध से भी अधिक फल प्राप्त होता है एक हजार आठ अथवा एकसौ आठ निष्कसुवर्ण का पञ्चकल्याण अर्थात् जिसके चारोंपाद औ मुख श्वेत वर्णहों औ सवभूषणोंसे अलंकृत उच्चैःश्रवानाम अश्व बनाय मण्डलके मध्य में स्थापनकर उसका पूजनकरै उसके पूर्वकी ओर एक शिवभक्त औ वेदवेत्ता ब्राह्मण को बैठाय उसको इन्द्रमान पूजनकर पांच निष्क सुवर्ण औ वह सुवर्णका घोड़ा उसके अर्पणकरै औ पांच निष्क सुवर्ण आचार्य को दक्षिणादेकर यथाशक्ति सब ब्राह्मणोंको दक्षिणा देवै औ दीन, अन्ध, कृपण, बालक, वृद्ध, दुर्बल, रोगी औ ब्राह्मणों को भोजन कराय संतुष्ट करै इसभांति जो पुरुष सुवर्णाश्वका दानकरै वह चिरकाल स्वर्गमें इंद्रके समान भोग भोगताहै॥

चालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहतेहैं कि हे राजामनु सबदानोंमें उत्तम कन्यादानका विधान हम वर्णन करतेहैं सबउत्तम लक्षणों करके युक्त एक कन्या देख उसके माता पिता को धनदेकर लेवै औ उसकेलिये वेदवेत्ता औशिवभक्त ब्राह्मण ढूंढ़ उत्तम दिन देख कन्याको स्नान कराय वस्त्र भूषण आदि से अलंकृतकर उसे ब्रह्मचारी ब्राह्मण को देवै औ दास, दासी, धन, घर, क्षेत्र, वस्त्र आदिभी यथाशक्ति देवै इसभांति जो पुरुष कन्यादान करै वह कन्याके औ उसकन्या की संतान के शरीरों में जितने रोम होयँ उतने वर्ष स्वर्ग में आनंदसे निवासकरै ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजी कहते हैं कि हे मनुजी अब संक्षेपसे सुवर्ण वृषके दानकी विधि वर्णनकरते हैं एकहजार निष्क सुवर्णका पांचसौका अथवा एक सौ आठ निष्क सुवर्ण का धर्मरूप वृष बनावै उस वृषके मस्तकमें स्फटिकका अर्धचंद्र बनाय लगावै चांदी के खुर पद्मरागकी ग्रीवा गोमेद रत्नकी ककुद् अर्थात् थुहीबनावै औ एकजड़ाऊ सुवर्णका घण्टा उसके गलेमें लटकावै औ अतिसुन्दर शिवजी की मूर्त्ति बनावै फिर उस वृषको मण्डलमें पश्चिमाभिमुख स्थापनकरै भक्तिसे शिवपूजाकर तीक्ष्णशृङ्गायविद्महेधर्मपादायधीमहि तन्नोवृषःप्रचोदयात् ॥ इस गायत्री से वृषका पूजनकरै औ यथाशक्ति घृत से अथवा अन्न आदिसे हवनकर वहवृष शिवजी के अ-

थवा सत्पात्र ब्राह्मण के अर्पण करै औ वित्तानुसार दक्षिणा देवै इसभांति जो दानकरै वह शिवजी का गण होकर शिवलोक में निवासकरै ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे मनु अबहम गजदानका विधान कहते हैं एक हजार पांचसौ अथवा अढ़ाईसौ निष्क सुवर्ण अथवा चांदी का हाथीबनाय विधिसे उसकी पूजाकर अष्टमीके दिन उस हस्तीको शिवजी के अर्पणकरै अथवा दरिद्र वेदपाठी औ अग्निहोत्री ब्राह्मणको देवै पहिली भांति शिवजीकी पूजाकर शिवजी के निमित्त यह दान देवै इसदान का करनेहारा पुरुष चिरकाल स्वर्गमें निवासकर गजपति राजाहोता है ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे राजामनु संपत्ति की वृद्धि, परचक्र आदि उपद्रवों का नाश अपने देश का रक्षण औ हाथी घोड़ोंकी बढ़ती करनेहारा अष्टलोकपाल दान ब्राह्मणों के कल्याण के लिये कहते हैं पहिली भांति वेदी के ऊपर मण्डल बनाय उसमें शिवजी को स्थापनकर आचार्य उनकी भक्तिसे पूजाकरै औ मंडलकी आठों दिशाओं में आठ स्थंडिल बनाय उनपर सुन्दर आसन बिछाय वेदके पारगामी जितेन्द्रिय उ-

वस्त्र भूषणों से उन ब्राह्मणों को अलंकृतकरै औ पूर्वा-
दि क्रमसे घृत औ समिधाओंका हवनकर यजमानको
बुलाय उन ब्राह्मणों का पूजन कराय दश २ निष्क सु-
वर्णका भूषण औ दश २ निष्कका आसन उनको दि-
लावै यजमानभी ब्राह्मणों का पूजनकर शिवजीको वि-
धिपूर्वक स्नान कराय आचार्य को यथाशक्ति दक्षिणा
देवै इसरीति से जो पुरुष भक्ति करके अष्ट लोकपाल
दानकरै वह चिरकाल लोकपालोंके समीप निवासकर
सार्वभौम राजा होता है ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहते हैं कि हे मनुजी अब हम सबदा-
नोंमें उत्तम त्रिमूर्त्ति दान कहते हैं पहिली भांति मंडप
औ बेदी बनाय कुण्डके समीप स्थण्डिलके ऊपर शि-
वजी को स्थापनकर पूर्व भाग में विष्णु औ पश्चिम
भागमें ब्रह्माजी को स्थापनकरै औ प्रणव आदि अ-
पने अपने मंत्रों करके उनका पूजनकरै (नारायणाय
विद्महेवासुदेवायधीमहितन्नोविष्णुःप्रचोदयात्) इस
मन्त्रसे विष्णुका पूजनकरै (ब्रह्मब्रह्मणरुद्रायब्रह्मणे
विश्ववेधसे) इसमंत्र से ब्रह्माजीका औ (शिवायहरये
स्वाहास्वधावौषट्वषट्तथा) इस मन्त्र से शिवजी का
पूजनकर ब्रह्मा औ विष्णु के कुण्डोंमें यथा विधि सब
हवन द्रव्योंसे होमकराय दोनों ऋत्विजों को आचार्य
दक्षिणा दिलावै दोनों ऋत्विक् औ तीसरा आचार्य्य
इन तीनों को ब्रह्मा विष्णु औ शिव मान वस्त्र भूषण

औ एकसौ आठ सुवर्ण अर्थात् मोहर प्रत्येक को देवै औ भक्तिसे शिवपूजन कर ब्राह्मण भोजन करावे इस विधिसे दान करनेहारा पुरुष सब सम्पत्ति औ अन्त में सद्गति पाता है॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि कहते हैं कि हे सूतजी षोड़श दान का विधान तो हमने श्रवण किया अब आप जीवत् श्राद्धकी विधि वर्णनकरैं यह मुनियों का प्रश्न सुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो जीवत् श्राद्धकी विधि ब्रह्माजीने मनु वशिष्ठ औ भृगुसे कथनकरीहै वही हम आपको श्रवण कराते हैं श्राद्ध मार्गकी क्रम श्राद्ध योग्य पुरुषोंकाक्रम औ जीवत् श्राद्ध विशेषका विधान हम विस्तारसे वर्णनकरतेहैं वृद्धावस्थामें पर्वत,नदी तीर, वन, देवस्थान आदि किसी उत्तम स्थानमें पुरुषों को जीवत् श्राद्धकरना चाहिये जीवत् श्राद्ध करनेहारा पुरुष जीवताही मुक्त होताहै वह पुरुष कर्मकरै अथवा न करै ज्ञानी हो अथवा अज्ञानी वेदवेत्ताहो चाहे मूर्ख ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि कोईहो जीवत् श्राद्ध करनेहारा योगीकी भांति मुक्ति पाताहै पहिले भूमिको गन्धवर्ण रस आदि से परीक्षाकर शल्यनिकाल सैकत अर्थात् बालू रेतकी वेदी बनावै वेदीके ऊपर एकहाथ लम्बा चौड़ा कुण्ड अथवा स्थंडिल रच गोबरसे लीप अग्नि स्थापनकर शास्त्रकी रीतिसे अग्नि संस्कारकर अपने शाखाक्रमसे परिस्तरणकरै पीछे अग्निकी पूजा

कर समिधा चरु औ घृतसे अलग इनमंत्रोंकरके हवन करै हवनके मन्त्र ये हैं। ॐभूःब्रह्मणेनमः १ ॐभूःब्रह्मणेस्वाहा २ॐभुवःविष्णवेनमः ३ ॐभुवःविष्णवेस्वाहा ४ ॐस्वःरुद्रायनमः ५ ॐस्वःरुद्रायस्वाहा ६ ॐमहःईश्वरायनमः ७ॐमहःईश्वरायस्वाहा ८ ॐजनःप्रकृतयेनमः ९ ॐजनःप्रकृत्यैस्वाहा १० ॐतपःमुद्गलायनमः ११ ॐतपःमुद्गलायस्वाहा १२ ॐऋतंपुरुषायनमः १३ ॐऋतंपुरुषायस्वाहा १४ ॐसत्यंशिवायनमः १५ ॐसत्यंशिवायस्वाहा १६ ॐशर्व्वधरांमेगोपायघ्राणेगन्धंशर्व्वायदेवायभूर्नमः १७ ॐशर्व्वधरांमेगोपायघ्राणेगन्धंशर्व्वायदेवायभूःस्वाहा १८ ॐशर्व्वधरांमेगोपायघ्राणेगंधंशर्वस्यदेवस्यपत्न्यैभूर्नमः १९ ॐशर्व्वधरांमेगोपायघ्राणेगन्धंशर्व्वस्यदेवस्यपत्न्यैभूःस्वाहा २० ॐभवजलंमेगोपायजिह्वायांरसंभवायदेवायभुवोनमः २१ ॐभवजलंमेगोपायजिह्वायांरसंभवायदेवायभुवःस्वाहा २२ ॐभवजलंमेगोपाय जिह्वायांरसम्भवस्यदेवस्यपत्न्यैभुवोनमः २३ ॐभवजलंमेगोपायजिह्वायांरसंभवस्यदेवस्यपत्न्यैभुवःस्वाहा २४ ॐरुद्राग्निंमेगोपायनेत्रेरूपंरुद्रायदेवायस्वरोंनमः २५ ॐरुद्राग्निंमेगोपायनेत्रेरूपंरुद्रायदेवायस्वःस्वाहा २६ ॐरुद्राग्निंमेगोपायनेत्रेरूपंरुद्रस्यदेवस्यपत्न्यैस्वरोंनमः २७ ॐरुद्राग्निंमेगोपायनेत्रेरूपंरुद्रस्यदेवस्यपत्न्यैस्वःस्वाहा २८ ॐउग्रवायुंमेगोपायत्वचिस्पर्शंउग्रायदेवायमहर्नमः २९ ॐउग्रवायुंमेगोपायत्वचिस्पर्शंउग्रायदेवायमहःस्वाहा ३० ॐउग्रवायुंमेगोपायत्वचिस्पर्शंउग्रस्यदेवस्यपत्न्यैमहरोम् ३१ ॐउ

अत्रायुंमेगोपायत्वचिस्पर्शं उग्रस्यदेवस्यपत्न्यैमहः स्वाहा ३२ ॐभीमसुषिरंमेगोपायश्रोत्रेशब्दंभीमायदेवायजनोनमः ३३ ॐभीमसुषिरंमेगोपायश्रोत्रेशब्दंभीमायदेवायजनःस्वाहा ३४ ॐभीमसुषिरंमेगोपायश्रोत्रेशब्दंभीमस्यदेवस्यपत्न्यैजनोनमः ३५ ॐभीमसुषिरंमेगोपायश्रोत्रेशब्दं भीमस्यदेवस्यपत्न्यैजनःस्वाहा ३६ ॐईशरजोमेगोपाय द्रव्येतृष्णामीशाय देवायतपोनमः ३७ ॐईशरजोमेगोपायद्रव्येतृष्णामीशाय देवाय तपःस्वाहा ३८ ॐईशरजोमेगोपायद्रव्येतृष्णामीशस्यदेवस्यपत्न्यैतपोनमः ३९ ॐईशरजोमेगोपायद्रव्येतृष्णामीशस्यदेवस्यपत्न्यैतपःस्वाहा ४० ॐमहादेवसत्यंमेगोपायश्रद्धांधर्मैमहादेवायऋतन्नमः ४१ ॐमहादेवसत्यंमेगोपायश्रद्धांधर्मैमहादेवायऋतंस्वाहा ४२ ॐमहादेवसत्यंमेगोपाय श्रद्धान्धर्म्मैमहादेवस्यपत्न्यैऋतन्नमः ४३ ॐमहादेवसत्यंमेगोपायश्रद्धांधर्मैमहादेवस्यपत्न्यैऋतंस्वाहा ४४ ॐपशुपतेपाशंमेगोपायभोक्तृत्वभोग्यंपशुपतयेदेवायसत्यन्नमः ४५ ॐपशुपतेपाशंमेगोपायभोक्तृत्वभोग्यंपशुपतयेदेवायसत्यंस्वाहा ४६ ॐपशुपतेपाशंमेगोपाय भोक्तृत्वभोग्यंपशुपतेर्देवस्यपत्न्यैसत्यन्नमः ४७ ॐपशुपतेपाशंमेगोपायभोक्तृत्वभोग्यंपशुपतेर्देवस्यपत्न्यैसत्यंस्वाहा ४८ ॐशिवायनमः ४९ ॐशिवायसत्यंस्वाहा ५० इन मंत्रोंसे मोक्षके लिये हवनकरै औ विरंचिआदि पचीस देवताओंका हवन पहिलीभांति सृष्टि क्रमसेकर पशुपति औ पशुपतिपत्नीका पूजनकर घृत समिधा औ चरु करके क्रमसे हवनकरै हवन

मंत्र ये हैं। ॐशर्व्वधरांमेच्छिंधिघ्राणोगंधंछिंधिमेऽघंजहि भूःस्वाहा १ भुवःस्वाहा २ स्वःस्वाहा ३ ॐभूर्भुवःस्वः स्वाहा ४ इन मंत्रोंकरके समिधा आदिसे अथवा केवल घृतसे एकसहस्र पांचसौ अथवा अष्टोत्तरशत आहुति देवै औ प्राणादि मंत्रोंकरके केवल घृतसे अष्टोत्तरशत हवनकरै प्राणादि मंत्र ये हैं। ॐप्राणेनिविष्टोऽमृतंजुहोमि शिवोमाविशाप्रदाहायप्राणायस्वाहा १ ॐप्राणाधिपतयेरुद्रायवृषांतकायस्वाहा २ ॐभूःस्वाहा ३ ॐभुवःस्वाहा ४ ॐस्वःस्वाहा ५ ॐभूर्भुवःस्वःस्वाहा ६ इन मंत्रों करके श्राद्धोक्त रीतिसे हवनकर सातवेंदिन शिव योगी औ श्राद्धयोग्य ब्राह्मणोंको भोजन करावै औ शर्व आदि अष्ट मूर्तियोंके नामसे आठ ब्राह्मणोंका पूजन कर उनको वस्त्र, भूषण, वाहन, शय्या, दास, दासी, सुवर्ण, चांदी, गौ, घर, तिल, क्षेत्र आदि देकर प्रसन्नकरै औ आठ पिण्डभी देवै इसभांति श्राद्धकर एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराय दक्षिणा देवै अथवा भस्म धारण करनेहारे औ जितेन्द्रिय एकही शिवयोगी को भोजन करायदे औ तीनदिन पर्यंत नित्य रुद्रको महाचरु निवेदन करै यह जीवत् श्राद्धका विधान है इसप्रकार श्राद्ध करनेहारा पुरुष नित्य नैमित्तिकआदि कर्म करै अथवा त्यागदे वह साक्षात् जीवन्मुक्त है इसकारण मरणके अनन्तर उसका श्राद्ध आदि होय अथवा न होय कुछ अपेक्षा नहीं औ जन्म मरण आदि अशौचभी उसको नहीं होता जीवत्श्राद्ध करने के अनन्तर जो पुत्र उत्पन्नहोय उसके सब संस्कार करनेचाहिये वह

पुत्र ब्रह्मवेत्ता होताहै औ कन्या उत्पन्न होय तो साक्षात् पार्वती के समान होती है जीवत् श्राद्ध करनेहारे पुरुष के पितरोंका भी मोक्ष होजाताहै औ जब उस पुरुषका मृत्यु होय तब दाहकरै अथवा भूमिमें गाड़ देवै श्राद्ध आदि कर्म से इसको कुछ प्रयोजन नहीं है मुनीश्वरो यह श्राद्धविधान ब्रह्माजी ने सनत्कुमार आदि मुनियों से कहा सनत्कुमारजी ने वेदव्यासजी से वर्णन किया वेदव्यासजीने हमको श्रवणकराया हमने उनकी आ-ज्ञा पाय अपना भी जीवत् श्राद्ध किया यह ब्रह्मसिद्धि अर्थात् मोक्षको देनेहारा रहस्य आप से कथन किया आपने भी इस विधान को किसी जितेन्द्रिय शिवभक्त औ व्रतनिष्ठ पुरुषको उपदेश करना औ श्रद्धाहीन म-नुष्यसे गुप्त रखना॥

छियालीसवां अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि कहते हैं कि हे सूतजी अज्ञा-नियों को भी मोक्ष देनेहारा जीवत् श्राद्धविधान आप ने वर्णनकिया अब यह कथनकरैं कि रुद्र, आदित्य, वसु विष्णु, ब्रह्मा, अग्नि, यम, निर्ऋति, बरुण, वायु, सोम, कुबेर ईशान, इन्द्र आदि देवता, पृथ्वी, लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती गणेश, स्कन्द, नन्दी आदि शिवजी के गण औ लिंग मूर्त्ति सदाशिवकी प्रतिष्ठा किसविधिसे होती है आप सब शास्त्रका तत्त्व जानतेहो परम शिवभक्त औ व्यास जीका साक्षात् दूसरा रूप तुम हो जैसे सुमंतु, जैमिनि पैल औ वैशंपायन व्यासजीके शिष्य हैं ऐसे ही आप

भी हो आपनेभी व्यासजीकी बहुतकाल भागीरथी के तटपर सेवाकरीहै हम आपको वैशंपायनकेसमान अ-थवा व्यासजीकेही तुल्य समझते हैं इसलिये यह सब आप विस्तारसे वर्णन करैं इतना कथनकर सब मुनि आनन्द में मग्नहो मौनहोगये तब आकाशवाणी भई कि यह मुनियोंका प्रश्न बहुत उत्तमहै सब लोक लिंग मय है औ लिंग से स्थित है इसकारण अवश्य लिंग स्थापन औ लिंग का पूजन सदा करना चाहिये लिंग स्थापनके पुण्यरूप खड्गसे ब्रह्माण्डको भेदकर पुरुष निःशंक मुक्तिमार्गको प्राप्तहोताहै विष्णु,ब्रह्मा,इन्द्र,यम वरुण,कुवेर आदि देवता शिवलिंग स्थापन करनेसेही इन उत्तम २ अधिकारोंको प्राप्तभयेहैं ब्रह्मा,विष्णु,रुद्र पृथ्वी, लक्ष्मी,धृति,स्मृति,प्रज्ञा,दुर्गा,शची,वसु,स्कन्द, विशाख, शाख, नैगमेय,लोकपाल,ग्रह,नंदी आदि गण पितर,गणपति,सवमुनि कुवेर आदि यक्ष,आदित्य,वसु साध्य, अश्विनीकुमार,विश्वेदेव, पशु, पक्षी, मृग, कीट पतङ्गआदि ब्रह्मासेलेकर स्थावरपर्यंत सबजगत् शिव लिंगमें प्रतिष्ठितहै इसकारण सब छोड़ शिवलिंगका स्थापनकरै शिवलिंगके स्थापनसे सबका स्थापन औ पूजनसे सबका पूजन होताहै ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

यह सूतजीका वचनसुन हाथजोड़ शिवजीको प्रणा-मकर सब मुनि शिवलिंग स्थापनकरनेकी इच्छा करते भये औ वहां कुलके मुनियोंने हर्ष से गद्गद वाणी हो

सूतजीसे लिंगप्रतिष्ठा का विधान पूंछा मुनियों का वचन सुन सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो धर्म, अर्थ, काम औ मोक्षकीप्राप्तिके अर्थ हम संक्षेपसे शिवलिंग प्रतिष्ठाकी विधि वर्णन करते हैं पाषाणका सुवर्णका अथवा ताम्र का जलहरी समेत ब्रह्म विष्णु शिवस्वरूप लिंगबनाय भलीभांति शोधनकर पंचसूत्रयुक्त विधिपूर्वक भक्ति से स्थापनकरे लिंगका मस्तक विस्तृत चाहिये लिंग साक्षात् शिव औ जलहरी पार्वती है उन दोनोंके स्थापन से पार्वती सहित शिवका स्थापन औ पूजने से पूजन होताहै इसकारण जलहरी सहित लिंग अवश्य स्थापन करना उचितहै लिंगके मूलमें ब्रह्मा मध्यमें विष्णु औ अग्रभाग में सदाशिव निवास करते हैं इसकारण जो पुरुष भक्ति से शिवलिंग को स्थापन करै अथवा पूजन करै उस पुरुषका सब देवता पूजन करते हैं औ वह शिवजीका गणहोता है जो पुरुष गन्ध,पुष्प,माला धूप,दीप,स्नान, हवन, बलि,स्तोत्र,मंत्र,उपहार आदि करके नित्य सर्व्वदेवमूर्त्ति शिवलिंग का पूजन करते हैं वे जन्म मरणके भयसे छूट शिवलोकमें निवास करतेहैं औ सब सिद्ध विद्याधर गन्धर्व आदिकों के पूज्य होतेहैं इसकारण सब मनोरथ सिद्ध होनेके लिये शिव लिंग का स्थापन कर पूजन करै उत्तम क्षेत्रमें जलहरी के ऊपर शिवलिंग स्थापन कर कुशा के कूर्च औ वस्त्र से ढक अक्षत औ कुशाकरके युक्त चित्रसूत्रसे वेष्टित वस्त्रोंसे आच्छादित औ वज्रादि आयुधों करके भूषित लोकपालोंके कलशोंकरके ईशानमंत्रसे प्रतिष्ठित शिव

लिंग का चारोंओर से रक्षण करे अर्थात् शिवलिंग के ओर पास लोकपालोंके कलश स्थापनकरे ऊपर विताज लगावै औ मंडपको लोकपालोंके ध्वज औ वाहनोंकी मूर्तियों करके शोभितकर चारोंओर दर्भमालासे वेष्टितकरे इसप्रकार मंडप को अलंकृत कर पांचदिन तीनदिन अथवा एकही दिन जलमें शिवलिंगको अधिवासन करे औनृत्य, गीत, वाद्य, वेदपाठ आदि करके प्रतिदिन उत्सवकरतारहै प्रतिष्ठा के समय शिवलिंग को जलसे निकालकर पुण्याहवाचनकरै औ नवकुण्डों करके युक्त अतिसुन्दर मण्डपके बीच बहुत उत्तम औ कोमल शय्या बिछाय उसके ऊपर ईशान मंत्रसे जलहरी सहित शिवलिंगको स्थापन करै लिंगका शिर पूर्व की ओर रक्खे औ वस्त्र तथा कूर्चकरके लिंगको ढकदे औ नवरत्न सहित कलश स्थापन करे औ धान्य तथा सुवर्ण भी कलश में छोड़े औ वामा आदि नवशक्तियों का न्यासकरे ब्रह्मरूप लिङ्गको शिवगायत्री अथवा प्रणव करके स्थापनकरै लिङ्गके ब्रह्मभागको ब्रह्मयज्ञान मन्त्र करके विष्णुभागको गायत्री करके औ शिवभाग को प्रणव करके स्थापन करे अथवा सम्पूर्ण लिंग को "नमःशिवाय" "नमोहंसःशिवाय" इन मंत्रों करके अथवा रुद्राध्याय करके शिवलिंगको शोधनकर स्थापन करे औ पहिलीरीतिसे पञ्चब्रह्म मंत्रोंकरके चारोंओर कलश स्थापनकरे मध्यके कलशमें शिव दक्षिण दिशा के कलशमें पार्वती दोनोंके बीचके कलशमें स्कंद स्कन्दके कलश मेंही ब्रह्मा शिवजीके कलशमें विष्णु का

स्थापनकर पूजन करे अथवा पंचब्रह्मकाही शिवकुम्भ में स्थापनकरै शिव, महेश्वर, रुद्र, विष्णु, ब्रह्मा औ पार्वती ये छः ब्रह्मांग हैं इनकी न्यासकरै औ वेदीके मध्य में प्रथम रीतिसे स्थापनकर गंधयुक्त जलसे पूर्ण वर्द्धनीपात्र में देवी का स्थापन करे औ शिवकुंभ में चांदी सोना तथा पंचरत्न डाले वर्द्धनीपात्र में गायत्री के अंगोंका औ दिशाओंके कुंभोंमें दिक्पालोंका स्थापनकर पूजनकरै औ अनन्त ईश आदि देवताओं के नाम के आदि में प्रणव औ अंतमें नमः लगाकर उनका भी पूजनकरे प्रत्येक कुंभको नये वस्त्रसे आच्छादित करै औ दिक्पालोंके कुंभोंमें भी सुवर्ण रत्नआदि डाले पीछे ईशानआदि मुख्य क्रमकरके औ गायत्रीके अंगमन्त्रों के क्रमकरके जयादिस्विष्ट पर्यंत हवनकर शिवकुम्भ, विष्णुकुम्भ, ब्रह्मकुंभ औ वर्द्धनीपात्र के जल से शिवजी का अभिषेककर लोकपाल कुम्भों के जलसे भी अभिषेककरे और पहिली भांति सब मंत्रों का न्यासकर सहस्र घटसे शिवजी को स्नानकराय भक्तिसे पूजन करै औ एकहजार पांचसौ अथवा अढ़ाई सौ मोहर दक्षिणा चढ़ावे औ वस्त्र, भूषण, क्षेत्र, गौ आदि भी अपने वित्तानुसार शिवजी के अर्पणकर नवदिन, सात दिन तीनदिन अथवा एकदिनही होम याग बलि औ बड़ा उत्सव करै नित्य शिवपूजनकर पहिलीभांति होम करै औ सूर्य आदि देवताओंका होमभी प्रथम रीतिसे करै औ बाह्य तथा आभ्यन्तर अग्निमें शिवकी पूजाकरै जो इसविधि से शिवलिंग स्थापन करे उसने सब देवता

ऋषि, रुद्र, अप्सरा औ चराचर त्रैलोक्य का स्थापन औ पूजन किया औ वही परमेश्वर हैं॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम सब देवताओं की प्रतिष्ठा का विधान कहते हैं अपने अपने मन्त्रों करके यागकुण्डका स्थापन कर देवता की प्रतिष्ठा करै औ उत्सव कर विधिसे पूजनकरै पञ्चाग्नि अथवा द्वादश अग्नि क्रम करके सूर्य्य का स्थापनकरै सूर्यभगवान् के स्थापन में सब कुण्ड पद्माकार बनावै और भगवतीके स्थापनमें योनिकुण्डबनावै और वर्द्धनी पात्र भी स्थापनकरै सबशक्तियोंके स्थापनमें योनिकुण्ड मुख्यहै शिवकी गायत्रीसेही सबका स्थापनकरै क्योंकि सब देवता सदाशिव के अंश सेही उत्पन्नहुये हैं अथवा सबकी भिन्न २ गायत्री कहते हैं जिनसे सब देवताओंका स्थापन होताहै॥ तत्पुरुषायविद्महेवाग्विशुद्धायधीमहितन्नःशिवःप्रचोदयात् १ गणाम्बिकायैविद्महेकर्मसिद्ध्यैचधीमहितन्नोगौरीप्रचोदयात् २ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहितन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ३ तत्पुरुषायविद्महेवक्रतुण्डायधीमहितन्नोदंतीप्रचोदयात् ४ महासेनायविद्महेवाग्विशुद्धायधीमहितन्नःस्कन्दःप्रचोदयात् ५ तीक्ष्णशृङ्गायविद्महेवेदपादायधीमहितन्नोवृषःप्रचोदयात् ६ हरिवक्त्रायविद्महेरुद्रवक्त्रायधीमहितन्नोनन्दीप्रचोदयात् ७ नारायणायविद्महेवासुदेवायधीमहितन्नोविष्णुःप्रचोदयात् ८ महाम्बिकायैविद्महेकर्म

सिद्धैचधीमहितन्नोलक्ष्मीःप्रचोदयात् ९ समुद्धृतायैवि
द्महेविष्णुनैकेनधीमहितन्नोराधाप्रचोदयात् १० वैनतेया
यविद्महेसुवर्णपक्षायधीमहितन्नोगरुडःप्रचोदयात् ११ प
द्मोद्भवायविद्महे वेदवक्त्रायधीमहि तन्नःस्रष्टाप्रचोदयात्
१२ शिवास्यजायैविद्महेदेवरूपायैधीमहितन्नोवाणीप्र
चोदयात् १३ देवराजायविद्महेवज्रहस्तायधीमहितन्नः
शक्रःप्रचोदयात् १४ रुद्रनेत्रायविद्महेशक्तिहस्तायधीम
हितन्नोवह्निःप्रचोदयात् १५ वैवस्वतायविद्महेदंडहस्ता
यधीमहितन्नोयमःप्रचोदयात् १६ निशाचरायविद्महेख
ड्गहस्तायधीमहितन्नोनिर्ऋतिःप्रचोदयात् १७ शुद्धह
स्तायविद्महेपाशहस्तायधीमहितन्नोवरुणः प्रचोदयात्
१८ सर्व्वप्राणायविद्महेयष्टिहस्तायधीमहितन्नोवायुःप्र
चोदयात् १९ यक्षेश्वरायविद्महेगदाहस्तायधीमहितन्नो
यक्षःप्रचोदयात् २० सर्वेश्वरायविद्महेशूलहस्तायधीम
हितन्नोरुद्रःप्रचोदयात् २१ कात्यायन्यैविद्महेकन्याकुमा
र्यैधीमहितन्नोदुर्गाप्रचोदयात् २२ ये बाईस गायत्री हैं इ-
नसे देवताओंका स्थापनकर पूजनकरै औप्रणवसे सब
के आसनकी कल्पनाकरै अथवा विष्णुभगवान्‌को पुरुष
सूक्त करके स्थापनकरै औविष्णु महाविष्णु औसदावि-
ष्णुकी कल्पनाकर विधिपूर्वक विष्णुगायत्रीसे स्थापन
करै वासुदेव,संकर्षण,प्रद्युम्न औ अनिरुद्ध ये चारमूर्त्ति
चतुर्व्यूह कहाताहै विष्णुभगवान्‌के प्रतियुगमें जगत्‌के
हितके लिये शापोंसे अनेक अवतार भये हैं जैसा मत्स्य
कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन,राम, परशुराम, कृष्ण, बौद्ध
कल्कि इत्यादि अनेकअवतार विष्णुभगवान् के हैं इन

की भी गायत्री कल्पनाकर इनसबका स्थापन औ पूज-
नकरै शिवजीके औ विष्णुभगवान्‌के गुप्तरूप यंत्र मंत्र
उपनिषद् औ पंचभूतमय पंचब्रह्मोंका भी स्थापन कर
पूजनकरै॥ "ओंनमोनारायणाय" इस मंत्र करके अथवा
"ओंनमोवासुदेवायनमः संकर्षणायचप्रद्युम्नाय प्रधाना
यअनिरुद्धायवैनमः" इसमन्त्र करके विष्णुभगवन् का
स्थापन करै औ शिवजी की मूर्त्तियों का भी शिवलिङ्ग
की भांति स्थापन करै विष्णु स्थापन में भी शिवस्था-
पनकी रीतिसे सबउत्सव आदि करै अचल प्रतिष्ठाकी
भांति चलमूर्त्तिकी भी प्रतिष्ठाकरै नेत्रमन्त्रसे मूर्त्तियों
का नेत्रोद्घाटनकरै आराम अर्थात् बाग औ नगरका
क्षेत्र प्रदक्षिण औ जलाधिवासन पूर्ववत्कहाहै औकुंड
मंडप रचनाभी पहिलीभांतिही है नवकुण्ड पांचकुण्ड
अथवा एकही प्रधानकुण्ड में हवन करै यह परम्परा
के क्रम से प्राप्त दिव्य प्रतिष्ठाका विधानकहाहै पाषाण
की मूर्त्ति जिनमें रंग लगाहोय औचित्र इनका जलाधि-
वासन न करै परंतु वृषका जलाधिवासन करनाचाहिये
प्रासादकी प्रतिष्ठा करनेसे प्रासाद के सबअंगोंकी भी
प्रतिष्ठाहोजाती है वृष, अग्निमातृका, गणपति, कुमार
ज्येष्ठा, दुर्गा, औ चण्डी ये आठ शिवप्रतिष्ठाके अंग
देवताहैं इसकारण इनकी भी अपनी २ गायत्री करके
प्रतिष्ठाकरै शिवजी के प्रासादके चारोंओर लोकपाल
औ गणोंकाभी स्थापनकरै औ उत्तरदिशासे लेकर क्रम
पूर्वक उमा, चण्डी, नंदी, महाकाल, लकुलीश, विघ्ने-
श्वर, भृङ्गी औ स्कन्दका स्थापन कर ब्रह्मा औ जना-

सिद्ध्यैचधीमहितन्नोलक्ष्मीःप्रचोदयात् ९ समुद्भूतायैवि
द्महेविष्णुनैकेनधीमहितन्नोराधाप्रचोदयात्१० वैनतेया
यविद्महेसुवर्णपक्षायधीमहितन्नोगरुडःप्रचोदयात्११प
द्मोद्भवायविद्महे वेदवक्त्रायधीमहि तन्नःस्रष्टाप्रचोदयात्
१२ शिवास्यजायैविद्महेदेवरूपायैधीमहितन्नोवाणीप्र
चोदयात् १३ देवराजायविद्महेवज्रहस्तायधीमहितन्नः
शक्रःप्रचोदयात् १४रुद्रनेत्रायविद्महेशक्तिहस्तायधीम
हितन्नोवह्निःप्रचोदयात् १५ वैवस्वतायविद्महेदंडहस्ता
यधीमहितन्नोयमःप्रचोदयात् १६ निशाचरायविद्महेख
ड्गहस्तायधीमहितन्नोनिर्ऋतिःप्रचोदयात् १७ शुद्धह
स्तायविद्महेपाशहस्तायधीमहितन्नोवरुणः प्रचोदयात्
१८ सर्व्वप्राणायविद्महेयष्टिहस्तायधीमहितन्नोवायुःप्र
चोदयात्१९ यक्षेश्वरायविद्महेगदाहस्तायधीमहितन्नो
यक्षःप्रचोदयात् २० सर्वेश्वरायविद्महेशूलहस्तायधीम
हितन्नोरुद्रःप्रचोदयात्२१ कात्यायन्यैविद्महेकन्या कुमा
र्यैधीमहितन्नोदुर्गाप्रचोदयात्२२ ये बाईस गायत्री हैं इ-
नसे देवताओंका स्थापनकर पूजनकरे औ प्रणवसे सब
के आसनकी कल्पनाकरे अथवा विष्णु भगवान्‌को पुरुष
सूक्त करके स्थापनकरे औ विष्णु महाविष्णु औ सदावि-
ष्णुकी कल्पनाकर विधिपूर्वक विष्णुगायत्रीसे स्थापन
करे वासुदेव,संकर्षण,प्रद्युम्न औ अनिरुद्ध ये चारमूर्त्ति
चतुर्व्यूह कहाताहै विष्णुभगवान्‌के प्रतियुगमें जगत्‌के
हितके लिये शापोंसे अनेक अवतार भये हैं जैसा मत्स्य
कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन,राम, परशुराम, कृष्ण, बौद्ध
कल्कि इत्यादि अनेकअवतार विष्णुभगवान के हैं इन

की भी गायत्री कल्पनाकर इनसबका स्थापन औ पूज-
नकरै शिवजीके औ विष्णुभगवान्के गुप्तरूप यंत्र मंत्र
उपनिषद् औ पंचभूतमय पंचब्रह्मोंका भी स्थापन कर
पूजनकरै॥ "ओंनमोनारायणाय" इस मंत्र करके अथवा
"ओंनमोवासुदेवायनमः संकर्षणायचप्रद्युम्नाय प्रधाना
यअनिरुद्धायवैनमः" इसमन्त्र करके विष्णुभगवन् का
स्थापन करै औ शिवजी की मूर्त्तियों का भी शिवलिङ्ग
की भांति स्थापन करै विष्णु स्थापन में भी शिवस्था-
पनकी रीतिसे सबउत्सव आदि करै अचल प्रतिष्ठाकी
भांति चलमूर्त्तिकी भी प्रतिष्ठाकरै नेत्रमन्त्रसे मूर्त्तियों
का नेत्रोद्घाटनकरै आराम अर्थात् बाग औ नगरका
क्षेत्र प्रदक्षिण औ जलाधिवासन पूर्ववत्कहाहै औकुंड
मंडप रचनाभी पहिलीभांतिही है नवकुण्ड पांचकुण्ड
अथवा एकही प्रधानकुण्ड में हवन करै यह परम्परा
के क्रम से प्राप्त दिव्य प्रतिष्ठाका विधानकहाहै पाषाण
की मूर्त्ति जिनमें रंग लगाहोय औचित्र इनका जलाधि-
वासन न करै परंतु वृषका जलाधिवासन करनाचाहिये
प्रासादकी प्रतिष्ठा करनेसे प्रासाद के सबअंगोंकी भी
प्रतिष्ठाहोजाती है वृष, अग्निमातृका, गणपति, कुमार
ज्येष्ठा, दुर्गा, औ चण्डी ये आठ शिवप्रतिष्ठाके अंग
देवताहैं इसकारण इनकी भी अपनी २ गायत्री करके
प्रतिष्ठाकरै शिवजी के प्रासादके चारोंओर लोकपाल
औ गणोंकाभी स्थापनकरै औ उत्तरदिशासे लेकर क्रम
पूर्वक उमा, चण्डी, नंदी, महाकाल, लकुलीश, विघ्ने-
श्वर, भृङ्गी औ स्कन्दका स्थापन कर ब्रह्मा औ जना-

देन सहित इन्द्रादि दिक्पालोंको अपनी २ दिशा में स्थापनकरै औ ईशानकोण में क्षेत्रपालको स्थापनकरै अनन्त आदिकों को औ वागीश्वरी को सिंहासन के ऊपर स्थापनकरै प्रणवसे धर्म आदिकोंका आसन कमलमें स्थापनकरै यह सबदेव औ देवियों के चलस्थापनका विधान संक्षेपसे वर्णन कियाहै ॥

उनचासवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी आपने अघोरेशका माहात्म्य पहिले वर्णनकिया अब हम उन की प्रतिष्ठाका विधान सुनना चाहते हैं आप वर्णनकरें यह मुनिका वचन सुन सूतजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो अंगयुक्त अघोर मन्त्रकरके शिवलिंग प्रतिष्ठा की रीति से अघोर परमेश्वरकी भी प्रतिष्ठा करनी चाहिये [illegible] परिलिप्तनाकर दधि मधु औ घृत [illegible] पांचसौ अथवा अष्टोत्तरशत आहुति अघोर मंत्रकरके देवै घृत,सत्तु औ शहदके अष्टोत्तरशत हवन करनेसे सबदुःख औ व्याधियों का नाश होता है तिलोंके अष्टोत्तरशत हवन से व्याधिनाश औ सहस्र हवनसे ऐश्वर्यकी प्राप्तिहोती है केवल अघोर मन्त्रके जपसे सबदुःखोंका निवारण होता है त्रिकाल अष्टोत्तरशत जपकरने से सब सिद्धियां मिलती हैं औ छः महीने पर्यन्त अष्टोत्तर सहस्र जप नियमकरै तो राज्य प्राप्तिहोय जिस पुरुषके निमित्त दुग्धसे एकहजार आहुतिदेवै उसका दारुण ज्वरभी छू-

टजाता हैं एक महीने पर्यंत नित्य दुग्ध की एकहजार आहुतिदेवै तो उत्तम सौभाग्यपावे औ इसीभांति एक वर्ष पर्यंत हवनकरे तो सब सिद्धि प्राप्तहोयँ शहद, घृत दधि, श्वेतवर्ण के चावल औ यव के हवनसे अघोर प-रमेश्वर प्रसन्नहोते हैं दधिके होमसे राजाओं को पुष्टि औ दुग्धके हवनसे शांति होती है छःमहीने पर्यंत घृत का हवन करने से सबरोग दूर होते हैं एकवर्ष पर्यन्त तिलोंका हवन करनेसे राजयक्ष्म अर्थात् क्षयरोग नि-वृत्तहोताहै यवके होमसे आयुष् औ घृतके होमसे जय मिलताहै शहदसे भीगेहुये चावलोंका छःमहीने पर्यंत होम करनेसे सबप्रकार का कुष्ठ मिटता है घृत दुग्ध औ शहद इनतीनोंका नाम मधुरत्रय है इनके हवनसे भगन्दररोग निवृत्त होताहैं औ सब जगत्की तुष्टिहो-तीहै केवल घृतका हवन भी सबरोगों का हरनेहारा है अघोर परमेश्वर का ध्यान स्थापन औ विधिसे पूजन सबरोग हरनेहारा है औ मुक्ति भी देताहै यह संक्षेपसे अघोर भगवान् के प्रतिष्ठा औ पूजनका विधान हमने कहा है यही विधान नन्दी ने सनत्कुमार को औ सन-त्कुमार ने वेदव्यासजी को उपदेश किया है औ व्यास जीसे हमने पाया है ॥

पचासवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी अपराधी पुरुषों को दंडदेने के लिये शिवजीने निग्रहका विधान कहा है वह आप हमको श्रवण करावें क्योंकि लौकिक

वैदिक श्रौत स्मार्त्तआदि कोई ऐसाकर्म नहीं जो आप को विदित न हो यह मुनियोंका प्रश्नसुन सूतजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो पूर्वकाल में भृगुके पुत्र औ अघोर परमेश्वरके शिष्य शुक्राचार्य ने निग्रहका विधान हिरण्याक्ष नामक दैत्यको उपदेश किया उसके प्रभाव से देवता दैत्य औ मनुष्यों सहित त्रैलोक्यको जीत बड़े पराक्रमी अंधक नाम पुत्रको उत्पन्न कर हिरण्याक्ष राज्य करता भया उसको विष्णु भगवान् ने वराहावतार धार मारा जो पुरुष इसविधानसे स्त्री बालक औ गौओंको पीड़ादेवे उसका कभी कल्याण नहीं होता है हिरण्याक्ष दैत्य पृथ्वीको रसातलमें लेगया औ ब्राह्मणोंको बहुत दुःख देने लगा इसकारण उसका निग्रह विधान निष्फलहोगया औ दिव्य हजारवर्षके अनंतर वराह भगवान्के हाथसे मारागया इसकारण ब्राह्मण गौ स्त्री आदिको अघोर मंत्रसे बाधा न करै इतनाकह सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो अब हम अतिगुप्त निग्रह विधान कहते हैं आततायी अर्थात् जो अपने को मारने के लिये आया हो उस शत्रुके लिये यह विधान करना चाहिये ब्राह्मणके ऊपर कभी यह प्रयोग न करै जब शत्रु अपने को दबालेवे औ अधर्म युद्ध होनेलगै तब राजा इस विधानको करावै तो बहुतशीघ्र शत्रुका निग्रह होजाय परन्तु इसप्रयोग को क्रूरस्वभाव अर्थात् दयाहीन ब्राह्मणद्वारा करावै प्रयोग करनेहारा ब्राह्मण पहिले एकलक्ष जप अघोर मंत्रका कर तिलोंका दशांश हवनकरै औ अघोर मन्त्र करके एकलक्ष श्वेत

पुष्प भी महादेवजी पर चढ़ावे तब उसको मंत्रसिद्धि होतीहै औ उसका किया विधानभी सफल होताहै बाण लिङ्ग अग्नि अथवा दक्षिणामूर्ति शिवपर लक्षपुष्प अर्पण करै इसप्रकार सिद्धमन्त्र औ शिवभक्त ब्राह्मण प्रेतस्थान में अथवा मातृकास्थान में बैठ अपने औ राजाके कल्याणके अर्थ इसविधि को करै पूर्वसे ईशान पर्यन्त आठों दिशाओं में आठ त्रिशूल गाड़कर आप भी अतिभयंकर वेषधार मध्य में बैठे औ सबके नाश करनेहारे अघोर परमेश्वरका ध्यानकरै औ अपने रूप कोभी करोड़प्रलयाग्निके समान प्रकाशमानध्यावे औ अघोर परमेश्वरकी आठों भुजाओं में त्रिशूल, कपाल पाश, दंड, धनुष, बाण, डमरू औ खड्ग का ध्यानकरै औ यह भी ध्यावे कि जिनका कंठ नीलवर्ण दृष्टि अति क्रूर मुख बड़ी २ दंष्ट्राओं से अति भयानक तीन नेत्र हुंफट्कारके शब्द से दशों दिशा भररही हैं नागपाश करके मुकुट बांध रक्खा है वृश्चिक औ सर्पोंके भूषण पहिनेहैं नीलांजन के पर्वतके समान जिनका वर्ण चिताकीभस्म शरीरमें लपेटे सिंहकाचर्म ओढ़े औ हाथी का चर्म पहिने हैं भूत, प्रेत, पिशाच औ डाकिनियां करके चारोंओर वेष्टितहैं इसभांति अति भयंकर अघोर परमेश्वर का ध्यानकर छत्तीस मात्रा करके प्राणायाम करै औ महामुद्रा बांध सब कर्मकरै प्रेतस्थान में पूर्वादि चारोंदिशा औ मध्यमें पांचकुण्ड बनाय चिताग्नि का स्थापनकरै मध्यके कुण्ड में सिद्धमन्त्र आचार्य औ दिशाओंके कुण्डों में चार साधक हवन करने बैठें औ

त्रिशूल चारों ओर गाड़लेवै बत्तीस अक्षरों करके युक्त अघोर परमेश्वर का ध्यानकर विभीतक अर्थात् बहेड़े के काष्ठकी द्वादशांगुल प्रमाण राजाके शत्रुकी मूर्त्तिबनाय कुण्डके नीचे उस मूर्त्तिको अति क्रोधसे गाड़देवै उस मूर्त्तिका शिर नीचे औ पादऊपरकरै औ तुषों सहित चिताकी अग्नि को कुण्डों में स्थापनकर प्रज्ज्वलितकरै औ सर्प, कंचुक, तुष, कर्पासके बीज, रक्त वस्त्र औ तैलका हवनकरै परन्तु तैल अपने हाथसे बनालेवै कोल्हूका निकला न ले कृष्ण चतुर्दशीसे अष्टमी पर्यंत नित्य अष्टोत्तरशत हवन प्रज्ज्वलित अग्निमें करै इस विधिके करने से राजा के सब शत्रु सकुटुम्ब यमलोक को जाते हैं इसी मंत्र से मनुष्यका कपाललेकर उसमें मनुष्यके नख, केश, अंगारसर्पका कंचुक, तुष, पुरानेवस्त्र का टुकड़ा, राजमार्गकी धूलि, घरमें झाड़ूकी धूलि, विष युक्त सर्पके दांत, वृषकेदांत, गौकेदांत, व्याघ्रके नख औ दन्त, बिडाल औ नकुलके दन्त, कृष्णमृगके दांत औ सूकरकी दंष्ट्रा स्थापनकर एकसौआठबार अघोर मंत्रसे उसकपाल को अभिमंत्रण कर मृतकके वस्त्र से वेष्टित करै औ जब शत्रुको अष्टम सूर्य अथवा अष्टम चन्द्रआवै तब उस कपाल को शत्रुके देश, नगर, घर क्षेत्र अथवा श्मशान में गड़वादेवै तो उस स्थान औ परिवार सहित शत्रुका नाश होजाय राजा जिससमय युद्धमें जाने लगै उससमय आचार्य्य राजा के शत्रुकी मूर्त्तिको अति उत्तम भूमिपर लिख वितान, तोरण, दर्भ माला आदिसे उस स्थानको शोभितकरै पीछे अघोर

मन्त्र पढ़ अपने दहिने चरणसे शत्रुकी प्रतिमा के मस्तकमें क्रोधसे ताड़नकरै इसविधिके करनेसे राजा के शत्रुका नाश होताहै परन्तु जो दुर्बुद्धि ब्राह्मण क्रोधसे अपने देशके राजापर यह अभिचार कर्मकरै वह अपना औ कुटुम्बका नाशकरताहै इसकारण मंत्र औषध आदिसे अपनेदेशके राजाकी भलीभांति रक्षाकरै सूत जी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो यह परमरहस्य हमने आप से कथन कियाहै इसको अतिगुप्त रखना चाहिये॥

इक्यावन का अध्याय॥

शौनक आदि ऋषि पूछतेहैं कि हे सूतजी अघोर मंत्र करके निग्रह विधानतो आपने कहा अब वज्रवाहनिका विद्या वर्णन कीजिये यह मुनियोंका प्रश्न सुन सूतजीबोले कि हे मुनीश्वरो सब शत्रुओंके क्षयकरनेहारी वज्रवाहनिका विद्याकी विधि यह है कि उस विद्या करके वज्र अर्थात् हीरेका अभिषेक करै औ उस वज्रको सुवर्ण में जड़ राजा को धारण करावै औ उस विद्याका वर्ण लक्षजपकर वज्राकार कुण्डमें घृत करके दशांश हवनकरै राजाभी उस वज्रको धारण कर युद्ध में जाय तो अवश्यही शत्रुओं का संहार करै पूर्वकाल में शिवजीसे इन्द्रके उपकारके लिये ब्रह्माजीने यह वज्रेश्वरी विद्या पाई जब त्वष्टाके पुत्र विश्वरूपको इन्द्र ने मारदिया तब त्वष्टाने अपने यज्ञमें इन्द्रको न बुलाया औ कहा कि इंद्रने मेरे पुत्रको मारा है इस कारण अपने यज्ञ में इन्द्र को सोमपान न करने दूंगा इतना कह अपने सम्पूर्ण आश्रमको माया से गुप्त करलिया

तब इन्द्रने उस मायाका संहारकर यज्ञमें आय बलात्कारसे सोम पानकरलिया औ अपनेगणों सहित स्वर्ग को चलागया त्वष्टाभी इंद्रका साहसदेख अति क्रोधकर जो थोड़ासा सोम शेष रहगया उसको लेकर (इन्द्रस्य शत्रोवर्द्धस्वस्वाहा) अर्थात् हे इंद्रके शत्रु तू वृद्धि को प्राप्तहो इसमंत्र से अग्नि में हवन करता भया हवन करते ही अग्निकुण्ड से कालाग्निके समान एक पुरुष उत्पन्नभया जिसकानाम वृत्रथा वह उत्पन्नहोतेही इन्द्र के पीछे दौड़ा इंद्र भी अतिभयंकर उस पुरुषको देख अति भयभीतहो स्वर्ग छोड़भगे औ सब देवताओंको संगले ब्रह्माजी के समीप पहुंचे ब्रह्माजीने भी उनको अतिव्याकुल देख कहा कि हे इन्द्र तुम्हारे वज्रसे वृत्र का संहार नहींहोगा इस कारण हमवज्रेश्वरी विद्याका तुमको उपदेश करते हैं इतना कह ब्रह्माजी ने इन्द्रको वज्रेश्वरी विद्याका उपदेशकिया इन्द्र ने भी उसविद्या के प्रभावसे शत्रुको मार फिर स्वर्गका राज्य पाया औ संदेहनाम राक्षस इसी विद्याके बलसेजीते हे मुनीश्वरो वह विद्या यह है "ॐभूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ॐफट्जहिहुंफट् छिंधिभिंधिजहिहनहनस्वाहा" यहवज्रेश्वरी विद्या सब शत्रुओंका संहार करनेहारी है शिवजी भी इसी विद्या से प्रलय के समय सब जगत् का संहार करते हैं॥

बावन का अध्याय॥

शौनकआदि ऋषिपूछते हैं कि हे सूतजी इन्द्र के ऊपर परम उपकार करनेहारी वज्रेश्वरी विद्या आपके

मुखसे श्रवण करी हमने यह सुनाहै कि राजाओंके सर्व कार्य इसविद्यासे सिद्धहोतेहैं इसकारण आप इस विद्याका विनियोग कहैं यह मुनि वचन श्रवणकर सूतजी बोले कि हे मुनीश्वरो वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण उच्चाटन, स्तंभन, मोहन, ताडन, उत्सादन, छेदन, मारण प्रतिबंधन, सेनास्तंभन आदि सब कर्म इसविद्यासे सिद्धहोते हैं ॥ आयातुवरदादेवी भूम्यांपर्वतमूर्द्धनि ॥ यह आवाहन का मंत्रहै ॥ ओं । ब्राह्मणेभ्योह्यनुज्ञाता गच्छदेवियथासुखम् ॥ यह विसर्जन का मंत्रहै वश्यआदि क्रिया करके इसमंत्र से देवी का विसर्जन करै पुरश्चरण के समय प्रतिदिन आवाहन कर पूजा औ जप करै तथा विधि से अग्नि स्थापन कर प्रतिदिन हवन करै औ पीछे देवीका विसर्जनकरै इस विधिसे वज्रेश्वरी विद्या करके सब कार्य साधै चमेली के पुष्पों की तीस हजार आहुति देने से वशीकरण घृतयुक्त करवीर पुष्पों के हवन से आकर्षण लांगली अर्थात् कलिहारी के पुष्पों के हवन से विद्वेषण तैलके हवनसे उच्चाटन शहद के अथवा सर्षपके हवन से स्तंभन तिलों के हवन से मोहन गर्दभ हाथी औ उष्ट्रके रुधिर के हवन से ताडन रोहीतके अर्थात् रुहीडा वृक्षके बीजों के हवन से मारण औ उच्चाटन, नागरबेलके पत्तोंके हवनसे बंधन औ कस्तूरी के हवन से निश्चय ही सेना का स्तम्भन होता है घृतके हवन से सर्वसिद्धि दुग्धके हवनसे पाप का नाश तिलके हवनसे रोगनाश कमल पुष्पोंके हवन से धन प्राप्ति औ मधूक अर्थात् महुवे के पुष्पों के हवन

से उत्तमकांति होतीहै इन सब प्रयोगोंमें तीस २ हज़ार हवन करै पूर्वोक्त रीति से जयादि स्विष्ट पर्यंत हवन करै हे मुनीश्वरो यह संक्षेप से हमने इस मंत्र का विनियोग वर्णन कियाहै हवन करने में समर्थ न होय तो पूजनकर केवल विद्याका जपकरै तौभी सबकार्य सिद्ध होते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ हमारे हितके लिये आप मृत्युंजयका विधान वर्णनकरैं यह सुन सूतजी कहते भये कि हे मुनीश्वरो मृत्युंजयका विधान यही है कि मृत्युंजय मंत्र करके अथवा केवल रुद्राध्याय करके विधि पूर्वक घृत तिल कमलपुष्प दूर्वा गोदुग्ध शहद घृतयुक्तचरु अथवा केवल गोदुग्धका ही हवन करै तो अवश्यही मृत्यु को जीते ॥

चौवनवां अध्याय ॥

सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो त्र्यम्बकमंत्र करके स्वयंभूलिङ्ग अथवा बाणलिङ्ग का पूजन आयुष्की वृद्धिके उपाय जाननेहारे ब्राह्मणद्वारा करावै एक हज़ार आठ पुण्डरीक अर्थात् श्वेतकमल एक हज़ार कमल औ इतनेही नीलोत्पल शिवजीपर चढ़ाय पायस घृत सहित भात मधुसहित मुद्गान्न औ अतिसुगन्ध युक्त भांति २ के भक्ष्य शिवजीको नैवेद्य लगावै औ पहिली रीति से पुण्डरीक आदि पुष्प औ चरु करके अग्निमें हवनकरै औ नियमपूर्वक एकलक्ष जपकरके हज़ार ब्रा-

ह्मणोंको भोजन करावै औ दक्षिणादेवै पीछे एकहज़ार गोदानकर सुवर्णदान भी करै यह बिधान मेरु पर्वतके ऊपर शिवजी ने स्कंदसेकहा स्कंदने सनत्कुमारसे औ सनत्कुमार ने व्यासजी को बताया इसभांति परम्परा क्रमसे यहबिधि चली आई है जब शिवजी का दर्शन पाय शुकदेव परमधामको गये उस समय स्कंदका संभव सुनकर स्थितहुये व्यासजीसे त्र्यम्बकमंत्रका माहात्म्य सनत्कुमारजी ने कहा वह हम आपको श्रवण करातेहैं शिवपूजनकर त्र्यम्बकमंत्रका जपकरै तो सात जन्मोंके पापोंसे मुक्तहोताहै औ संग्राममें जय पाय परम सौभाग्य को प्राप्तहोताहै एकलक्ष हवन से राज्य मिलताहै औ लक्षहवन सेही पुत्रप्राप्तिहोती है धनकी कामनावाला पुरुष दशलक्ष जपकरै तो धन धान्य आदिसे परिपूर्ण हो चिरकाल भूमिपर आनन्द करता है औ मृत्युके अनंतर स्वर्ग में वासपाताहै इसमंत्रके समान शास्त्र अथवा वेदमें कोई मंत्र नहीं है इस कारण शिवपूजनकर सदा इस मंत्रका जपकरै तो अग्निष्टोम यज्ञके फलसे आठगुणा अधिकफलपावै तीनलोक तीनगुण तीनवेद तीनदेव ब्राह्मण आदि तीनवर्ण अकार उकार मकार रूप प्रणवकी तीनमात्रा सूर्यचन्द्र अग्नि ये तीनतेज औ गार्हपत्य आदि तीन अग्नि इनसबकी माता पार्वती औ त्र्यम्बक अर्थात् पिता सदाशिव हैं इस कारण उनको त्र्यम्बक कहते हैं फूलेहुये वृक्षका सुगन्ध जिसभांति दूरतक पहुंचता है इसी भांति उस महात्मा सदाशिवका सुगन्धभी जगत्में व्याप्त होरहा

से उत्तमकांति होतीहै इन सब प्रयोगोंमें तीस२ हज़ार हवन करै पूर्वोक्त रीति से जयादि स्विष्ट पर्यंत हवन करै हे मुनीश्वरो यह संक्षेप से हमने इस मंत्र का विनियोग वर्णन कियाहै हवन करने में समर्थ न होय तो पूजनकर केवल विद्याका जपकरै तौभी सबकार्य सिद्ध होते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है॥

तिरपनवां अध्याय॥

शौनकआदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ हमारे हितके लिये आप मृत्युंजयका विधान वर्णनकरैं यह सुन सूतजी कहते भये कि हे मुनीश्वरो मृत्युंजयका विधान यही है कि मृत्युंजय मंत्र करके अथवा केवल रुद्राध्याय करके विधि पूर्वक घृत तिल कमलपुष्प दूर्वा गोदुग्ध शहद घृतयुक्तचरु अथवा केवल गोदुग्धका ही हवन करै तो अवश्यही मृत्यु को जीतै॥

चौवनवां अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हेमुनीश्वरो त्र्यम्बकमंत्र करके स्वयंभूलिङ्ग अथवा बाणलिङ्ग का पूजन आयुष्की वृद्धिके उपाय जाननेहारे ब्राह्मणद्वारा करावै एक हज़ार आठ पुण्डरीक अर्थात् श्वेतकमल एक हज़ार कमल औ इतनेही नीलोत्पल शिवजीपर चढ़ाय पायस घृत सहित भात मधुसहित मुद्गान्न औ अतिसुगन्ध युक्त भांति २ के भक्ष्य शिवजीको नैवेद्य लगावै औ पहिली रीति से पुण्डरीक आदि पुष्प औ चरु करके अग्निमें हवनकरै औ नियमपूर्वक एकलक्ष जपकरके हज़ार ब्रा-

ह्मणोंको भोजन करावै औ दक्षिणादेवै पीछे एकहज़ार गोदानकर सुवर्णदान भी करै यह विधान मेरु पर्वतके ऊपर शिवजी ने स्कंदसेकहा स्कंदने सनत्कुमारसे औ सनत्कुमार ने व्यासजी को बताया इसभांति परम्परा क्रमसे यहविधि चली आई है जब शिवजी का दर्शन पाय शुकदेव परमधामको गये उस समय स्कंदका संभव सुनकर स्थितहुये व्यासजीसे त्र्यम्बकमंत्रका माहात्म्य सनत्कुमारजी ने कहा वह हम आपको श्रवण करातेहैं शिवपूजनकर त्र्यम्बकमंत्रका जपकरै तो सात जन्मोंके पापोंसे मुक्तहोताहै औ संग्राममें जय पाय परम सौभाग्य को प्राप्तहोताहै एकलक्ष हवन से राज्य मिलताहै औ लक्षहवन सेही पुत्रप्राप्तिहोती है धनकी कामनावाला पुरुष दशलक्ष जपकरै तो धन धान्य आदिसे परिपूर्ण हो चिरकाल भूमिपर आनन्द करता है औ मृत्युके अनंतर स्वर्ग में वासपाताहै इसमंत्रके समान शास्त्र अथवा वेदमें कोई मंत्र नहीं है इस कारण शिवपूजनकर सदा इस मंत्रका जपकरै तो अग्निष्टोम यज्ञके फलसे आठगुणा अधिकफलपावै तीनलोक तीनगुण तीनवेद तीनदेव ब्राह्मण आदि तीनवर्ण अकार उकार मकार रूप प्रणवकी तीनमात्रा सूर्यचन्द्र अग्नि ये तीनतेज औ गार्हपत्य आदि तीन अग्नि इनसबकी माता पार्वती औ त्र्यम्बक अर्थात् पिता सदाशिव हैं इस कारण उनको त्र्यम्बक कहते हैं फूलेहुये वृक्षका सुगन्ध जिसभांति दूरतक पहुंचता है इसी भांति उस महात्मा सदाशिवका सुगन्धभी जगत्में व्याप्त होरहा

है इस कारण वह सुगन्धि कहाताहै अथवा गकार गीतका वाचकहै जो सुन्दर गीतको आप धारण करै औ देवताओंको भी धारण करावै वहभी सुगन्धि कहाताहै अथवा शिवका सुगन्ध अर्थात् वायु आकाश में तथा इसलोक में बहता है इसकारणसे भी शिवको सुगन्धि कहते हैं जिस शिवका वीर्य विष्णुरूप योनि में स्थित होकर ब्रह्माण्डरूपसे उत्पन्न होताभया औ सूर्य, चन्द्र नक्षत्र, भू आदि सातलोक पर्यंत जिसके वीर्यकी पुष्टिहै औ पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि प्रकृति आदि सब उसके बीजकी पुष्टि हैं इसकारण उसको पुष्टिवर्द्धन कहते हैं उस पुष्टिवर्द्धन देवका घृत, दुग्ध, शहद, यव, गोधूम उड़द, बिल्वफल, कुमुद, आक के फूल, शमीपत्र, श्वेत सर्षप औ शालि आदि करके शिवलिंग में भक्तिपूर्वक पूजन करै औ उसी की प्रीति के लिये अग्नि में हवन करै हे शिव इस ऋत अर्थात् सत्यकरके मुझको पाश से कर्मरूप बंधनसे औ मृत्युके बंधनसे अपने तेजकरके मुक्तकरदे जिसभांति पकाहुआ उर्वारुकफल अर्थात् ककड़ी बंधनसे मुक्त होजाती है इसी भांति मुझको बंधनसे मुक्तकर इसप्रकार जो मंत्रके अर्थको जान शिवलिंगका पूजनकर जपकरै वह मृत्युपाशसे मुक्त होजाय त्र्यम्बकदेवके समान दयालु औ शीघ्रही प्रसन्न होनेहारा कोई देवता नहीं है इसकारण सबको छोड़ त्र्यम्बक मंत्रमे सदा त्र्यम्बक देवका पूजन करतारहै शिवका ध्यान करनेहारा पुरुष किसी अवस्था में प्राप्तहो परन्तु वह सब पापोंसे मुक्त रहताहै औ साक्षात् रुद्रही

है अनेकजीवोंको मार कई प्राणियोंका छेदन भेदनकर अभक्ष्य भक्षणकरके जो पुरुष एकबार भी शिवस्मरण करै वह सब पापोंसे छूटजाता है ॥

पचपनवां अध्याय ॥

शौनक आदि ऋषि पूछते हैं कि हे सूतजी त्र्यम्बक देवको सबअर्थोंकी सिद्धिके लिये योगमार्गकरके किस विधिसे ध्यावे यह आप वर्णनकरैं यद्यपि आप विस्तार से प्रथम वर्णन करचुकेहैं परन्तु दृढ़ताके लिये फिर भी संक्षेपसे वर्णनकरैं यह मुनियोंका प्रश्नसुन सूतजी कहतेभये कि हे मुनीश्वरो यही प्रश्न मेरुपर्वतके ऊपर सनत्कुमारजी ने नंदिकेश्वरसे कियाथा तब नन्दिकेश्वर जीने जो उत्तर दिया वह हम आपसे कहते हैं सनत्कुमारजी का प्रश्न सुन नंदी कहनेलगे कि ब्रह्मपुत्र एक समय जगज्जननी श्रीपार्व्वतीजीने श्रीमहादेवजी से पूछा कि महाराज योग कितने प्रकारकाहै औ क्या है तथा मोक्षको देनेहारा ज्ञान क्या पदार्थहै यह आप वर्णन करैं यह पार्व्वतीजी का प्रश्न सुन श्रीमहादेवजी बोले कि हे प्रिये पहिला मंत्र योगहै दूसरा स्पर्शयोग तीसरा भावयोग चौथा अभावयोग औ पांचवां सब योगोंमें उत्तम महायोग है ध्यानयुक्त जपका अभ्यास मन्त्रयोग कहाता है सुषुम्णानाड़ी को अधिक शुद्ध करनेहारा रेचक आदि क्रमकरके युक्त समस्त व्यस्त योग करके वायुका जय करनेहारा बलकी स्थिरक्रिया करके युक्त सात्विक आदि तीनि धारणाकरके संदीप्त,

को प्राप्तहोय तप,यज्ञ,दान, अध्ययन, कर्म,विद्या आदि से जो फल प्राप्तहोता है वही इसपुराण के सुनने औ सुनानेसे होता है औ मोक्षकी प्राप्तिहोती है औ हमारे में तथा नारायण में दृढ़भक्ति होती है औ उसपुरुष के वंशमें कोई विद्याहीन अथवा प्रमादी नहीं उत्पन्नहोता है यह ब्रह्माजीने अपने मुखसे कहा है यह सूतजी का वचन सुन प्रीतिसे रोमांचितहो सब नैमिषारण्यके वासीमुनि शिवजीको प्रणामकर कहते भये कि हे सूतजी इसपुराणके श्रवण से जो आनन्द हमको औ तीर्थयात्रामें प्रवृत्त नारदमुनिको भयाहै वही आनन्द शिवजी की कृपासे सम्पूर्ण जगत् में होय इसभांति सब मुनियोंका वचन सुन नारदजीने प्रेमसे अपने हाथों करके सूतजीको स्पर्शकिया औ आशीर्वाद दिया कि हे सूत सदा सर्वदा शिव में तुम्हारी दृढ़श्रद्धा बनी रहे और तुम्हारा कल्याण होय इतनाकह नारदजी ने कहा कि हे शिव आपको हम बारम्बार प्रणामकर आपके चरणोंमें दृढ़भक्ति मांगतेहैं और यहभी चाहते हैं कि आपके प्रसादसे सब जगत्में निरन्तर मंगल होतेरहें ॥

दो० भाषामाहिं विचारिकै तजि मनको परमाद।
रचीरुचिरयहशिवकथा बुधदुर्गापरसाद॥१॥
हरनेहारी श्रवण ते भक्तन के भवफन्द।
बनीरहै यह भूमिपर जबलों सूरज चन्द॥२॥
दो० नवलकिशोर नियोगसे भाषा लिंगपुरान।
भयोविशदजगधर्महित देखैंसन्तसुजान॥१॥
इतिलिंगपुराण समाप्तिः॥